

# THE FREE INDOLOGICAL COLLECTION

[WWW.SANSKRITDOCUMENTS.ORG/TFIC](http://WWW.SANSKRITDOCUMENTS.ORG/TFIC)

---

## FAIR USE DECLARATION

This book is sourced from another online repository and provided to you at this site under the TFIC collection. It is provided under commonly held Fair Use guidelines for individual educational or research use. We believe that the book is in the public domain and public dissemination was the intent of the original repository. We applaud and support their work wholeheartedly and only provide this version of this book at this site to make it available to even more readers. We believe that cataloging plays a big part in finding valuable books and try to facilitate that, through our TFIC group efforts. In some cases, the original sources are no longer online or are very hard to access, or marked up in or provided in Indian languages, rather than the more widely used English language. TFIC tries to address these needs too. Our intent is to aid all these repositories and digitization projects and is in no way to undercut them. For more information about our mission and our fair use guidelines, please visit our website.

Note that we provide this book and others because, to the best of our knowledge, they are in the public domain, in our jurisdiction. However, before downloading and using it, you must verify that it is legal for you, in your jurisdiction, to access and use this copy of the book. Please do not download this book in error. We may not be held responsible for any copyright or other legal violations. Placing this notice in the front of every book, serves to both alert you, and to relieve us of any responsibility.

**If you are the intellectual property owner of this or any other book in our collection, please email us, if you have any objections to how we present or provide this book here, or to our providing this book at all. We shall work with you immediately.**

**-The TFIC Team.**





# શ્રી જૈનપ્રબોધ પુસ્તક

નાગ પહેલો

૧માં

સમસ્ત શ્રાવક જાણને અવશ્ય સ્વપમાં

આવવા યોગ્ય એવાં સ્તવનાદિકોને

યથાયોગ્ય ગુહ કરી

શ્રાવક જીમસિંહ માણકે

શ્રીમુંવાપુરી મધ્યે.

નિર્ણયસાગર મુદ્રાયંત્રમાં મુદ્રિત કરાવ્યાં છે.

સંવત્ ૧૯૪૬ ના સન ૧૮૮૯.

માવશુક્ર ૫ મી મંગલવાર.

આ ગ્રંથ છાપવાનો હક્ક, સન ૧૮૬૭ ના પચીશમા આ-  
કટમુજવ માલેકે પોતાને સ્વાધીન રાખેલો છે.



## प्रस्तावना.

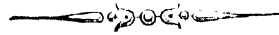
आ जैनप्रबोध नामक पुस्तकનો प्रथमभाग हा पी जाहेरमां मूकतां समस्त महारा साधर्मि नाश्या ने हुं सविनय प्रार्थना करुं हुं, के केटलाएक न्हाना महोटां स्तवनो, सद्गायो, प्रजातियां, चोढालीयां, ठंदो, लावणीयो, होरीथो अने अनेक प्रकारना तप कर वानो विधि, आर्दे देइने बीजा पण घणा प्रकारना बूटा बोल, जेवा के प्रत्येक वांचनार साहेबने अवश्य ख पमां आवे तेवा तेवा घणी सूक्ष्मताथी शोधीने आ पुस्तकमां बद्धा मली सुमारें साडा सातशें ग्रंथो दाखल करेला ठे. एटले प्रथम अढी रूपैयांनी किंमतनो जैनप्रबोध जे में ठापेलो हतो, तेमां जे जे स्तवना दिको हतां तें सर्व पूरे पूरां आ पुस्तकमां दाखल करीने वली. बीजां पण तेना पोणा नाग जेटलां नविन स्तवनादि वधारे दाखल करेलां ठे. तेमज आगला पुस्तकमां नारकी आदिकनां चित्रोनां काली शाश्वती ठापेलां मात्र चार पृष्ठोज आदिमां नारव्यां हतां, तेने स्थानकें हालमां जूदा जूदा पांचे रंगमां चित्रेलां शोल पृष्ठो आ ग्रंथनी आदिमां हकीगत सहित नारव्यां ठे. परंतु ते चित्र हालमां मात्र पांचशो पुस्तकोमांज नारवीने पुठां बंधावेलां ठे, माटें जे साहेबो लगजग एक वर्षनी अंदर ए पुस्तक खरीद करशे, ते साहेबोने ते रंगीन चित्र सार्थेंतुं पुस्तक मली शकशे.

તેમજ આ ગ્રંથ, સર્વ શ્રાવક મંદલને ઉપયોગી  
 હોવાથી એમાં કાંઈ પણ ફાયદો થવાની આશા ન  
 રાખતાં પુસ્તક ઢાપતાં જે સ્વરૂપ લાગ્યો છે, તેટલીજ  
 રકમ ઉપજાવવા માટે હાલમાં માત્ર એની કિંમત  
 રૂ૦૩) અંકે ત્રણજ રાખેલી છે. એ વાતનો નિશ્ચય  
 કરવા માટે પ્રથમ જે રત્નસાર નામે પુસ્તકનો બીજો  
 નાગ વાર રૂપેયાની કિંમતવાળો ઢાપાયો હતો, તેમાં  
 જેટલા શ્લોકસંખ્યાનો સમાવેશ કરેલો છે, તેટલાજ  
 શ્લોકસંખ્યાનો આમાં પણ સમાવેશ કહ્યા બતાં તેના  
 ચતુર્થાંશ જેટલી કિંમત રાખી છે. તે ઉપરથીજ સ્પષ્ટ  
 નોના મનમાં મહારૂં લેખવું સ્વરૂપ સમજાઈ જશે.

માટે હું આશા રાખું છું કે જે સાહેબો આ પુસ્તક  
 માં આવેલી સર્વ વાંચતો વાંચી જશે, તેમને આ ગ્રંથ  
 અવશ્ય પ્રિય લાગશે, તેથી તે ઉપકારી સ્પષ્ટનો બીજા  
 પણ પોતાના નિકટવર્તી બંધુઓને આ પુસ્તક સ્વરૂપ ક  
 રવાની જલામણ કરી પોતાની સુજનતા પ્રદર્શિત કરશે.

આ પુસ્તક ઢાપતાં આગલ માફક અજિતનાથનું  
 એક સ્તવન તથા શ્રીપાર્શ્વનાથનું એક સ્તવન બે વચ્ચે  
 ઢાપાઈ ગયેલું છે, તેમજ પ્રુફ તપાસતાં નજરદોષથી  
 તથા સ્થૂળ બુદ્ધિના પ્રસંગથી મહારાથી જે કાંઈ આ  
 ગ્રંથમાં અશુદ્ધતા રહેલી હોય, તે ગુણદોષે મહારા  
 ઉપર ક્રમા રાખી સુધારીને વાંચવું. હું આ ગ્રંથમાં થ  
 યેલી અશુદ્ધતા સંબંધી સમસ્ત વાંચક વર્ગની સાર્થે મિ  
 ઢામિ ડુકડં કરું છું. તે સ્વીકારશો.કિં વહ વિલેખનેન.

## ॥ अथास्य ग्रंथस्यानुक्रमणिका प्रारंभः ॥



॥ प्रथम चैत्यवंदनादिक ( १७ ) नी अनुक्रमणिका ॥

ग्रंथांक. ग्रंथोनां नाम. पृष्ठांक.

|    |   |     |
|----|---|-----|
| १  | नवकार पंच मंगलरूप. ....   | १   |
| २  | खमासमण. इहामि खमासमणो ॥ ....  | १   |
| ३  | इहं जय जय महाप्रभु. चैत्यवंदन. ....   | १   |
| ४  | उवसग्गहंर स्तवनं. ....  | ५   |
| ५  | अरिहंत चेश्याणं. ....   | ५   |
| ६  | नमुत्तुणं वा शक्रस्तव. ....   | ६   |
| ७  | जे अईआ तिब्बयरा. ....   | ६   |
| ८  | अष्टापदे श्रीआदिजिनवर, काव्य. ....  | ७   |
| ९  | अशोकवृद्धः सुरपुष्पवृष्टि, काव्य. ....                                      | ७   |
| १० | सकल कुशल वल्ली, काव्य. ....   | ७   |
| ११ | एस करेमि पणामं, तथा अन्नाण कोहमय<br>माण, इत्यादि अरिहंत स्तुतिनी गाथा. .... | ८   |
| १२ | जल नरी संपुट पत्रमां. जिनपूजाना दोहा. ....                                  | ११  |
| १३ | जीवडा जिनवर पूजीयें, दोहा. ....   | १२  |
| १४ | मंगलं जगवान् वीरो, मांगलिक काव्य. ....                                      | १३  |
| १५ | लोगस्स ॥ काउस्सग्ग करवानो. ....   | १३  |
| १६ | केवलनाणी श्रीनिरवाणी, चैत्यवंदन. ....                                       | १६२ |
| १७ | अरिहंतजीने खमावियें रे, पस्कीखामणां. ....                                   | ४१४ |

## ॥ आरति तथा मंगलीक दीपक ( ८ ) ॥

|   |  |     |
|---|--|-----|
| १ | पहेली आरति प्रथम जिणंदा. ....          | २४  |
| २ | आज घरे नाथ पधाख्या, कीजें मंगल चार.    | २५  |
| ३ | दीवो रे दीवो मंगलिक दीवो. ....         | २६  |
| ४ | महोटी आरति. आदिजिननी. ....             | २६  |
| ५ | जय जय आरति देवी तुमारी, चक्रेश्वरीनी.  | २७  |
| ६ | जाग नवियां धर्म वाहाणुं, प्रजाति मंगल. | ४१  |
| ७ | सिद्धास्थ नूपति सोहे, चार मंगल. ....   | ६५  |
| ८ | इहविध मंगल आरति कीजें, पंचण॥ ....      | ४१३ |

## ॥ श्रीसिद्धचक्रजीनां स्तवनो ( ११ ) ॥

|    |   |     |
|----|---|-----|
| १  | गोयम नाणी हो, के कहें सुणो प्राणी मण॥   | १६  |
| २  | नवपद महिमा सार, सांजलजो नर नार.         | १७  |
| ३  | श्रीवीरजिणंद वखाण्यो. ....              | १८  |
| ४  | सेवो रे नवि नावें नवकार, जंपे श्री० ॥   | १९  |
| ५  | नवियां श्रीसिद्धचक्र आराधो. ....        | २०  |
| ६  | श्री सिद्धचक्र आराधियें. शिवसुख० ॥....  | २०  |
| ७  | आराहो प्राणी साची नवपद सेवा. ....       | २१  |
| ८  | गौतमपूठत श्रीजिन जांखत, वचन० ॥ ....     | २१  |
| ९  | नवपद महिमा सांजलो, वीर जाखे० ॥          | २२  |
| १० | समरी शारदमाय, प्रणमीनिज गुरुपाय.        | ७१  |
| ११ | श्रीसिद्धचक्रने वंदोजी मनोहर० ॥ सी..... | २२४ |

## ॥ तूटक प्रजातीयां ( ३१ ) नी अनुक्रमणिका ॥

|   |                                     |    |
|---|-------------------------------------|----|
| १ | अब तुं चेतन चेत ले, कृण लाखीणो जाय. | १४ |
|---|-------------------------------------|----|

- १ जब जिनराज कृपा करे. तब शिवसुख पावे. १४  
 २ विषय वासना त्यागो चेतन, साचे मारग० १५  
 ४ पूरव पुण्य उदय करी चेतन. .... १५  
 ५ जब लगेँ समकित रत्नकूं. पाया नही० .... ४०  
 ६ मात पृथ्वीसुत. प्रात ऊठी नमो. .... २०६  
 ७ रे जीव जिनधर्म कीजीयें. धर्मना चा० .... २४४  
 ८ अजब ज्योति मेरे जिनकी, तुम देखो॥ २४६  
 ९ जब तुम नाथ निरंजना. तब में नक्त तुमारो. २४६  
 १० हम लोक निरंजन लालके. उरनके नाही. २४७  
 ११ जाग जाग रखण गई, जोर नयो प्यारे..... २५९  
 १२ रे मन लोनी तारे कोण पतियारो. .... २८१  
 १३ ओरनसुं रंग न्यारा न्यारा, तुमसुं० ॥ .... २८७  
 १४ बाणी हे विशाल तेरी अगम अगोचरी. .... २९०  
 १५ ऐसे सहेर बिच कौन दीवान हे रे. .... २९२  
 १६ श्री अरिहंत नमीजें चतुर नर, श्रीअरि० ॥ २९७  
 १७ परमेष्टी आराधि, सुगुणीजन, परमे० ॥ २९७  
 १८ आचारिज पदसेवा, चहत मन, आचा० ॥ २९८  
 १९ आतम गुण अजिज्ञाख्यो अनुंजवी, आ० ॥ २९८  
 २० में हुं मुसाफर आंया हो प्यारा, नहीं कोइ० ३०१  
 २१ जोवनीयांनी मोजां फोजां, जाय० ॥ .... ३०१  
 २२ आवी रूढी नगति में, पहेलां न जाणी..... ३१९  
 २३ कहा रे अज्ञानी जीवकूं, गुरु ज्ञान बतावे. ३३१  
 २४ आजको लाहो लीजीयें, काल कोणें रे दीठी. ३४४  
 २५ में परदेशी दूरका, प्रभु दरिसनकूं आया. ३४४

|    |   |     |
|----|---|-----|
| २६ | जागे सो जिनजक्त कहावे, सोवे सो० ....    | ३५० |
| २७ | देव निरंजन नवजय नंजन, तत्त्वज्ञानका०    | ३५२ |
| २८ | आतम तत्त्व विचारो रे जोगी, आतम०         | ४१० |
| २९ | स्वारथकी सब है रे सगाई, कुण माता० ....  | ४१२ |
| ३० | सोइ सोइ सारी रेन गुमाइ, बैरन निडा०      | ४१३ |
| ३१ | त्रेशठ शलाका पुरुषनुं प्रजातीयुं. ....  | ४९७ |
| ३२ | जाग जाग जीव तुं, उठ थयो प्रजात रे. .... | ५५० |

श्रीशत्रुंजयना स्तवनादिक ( २४ ) नी अनुक्रमणिका॥

|    |  |     |
|----|--|-----|
| १  | श्रीरेसिद्धाचल नेटवा, मुक्तमन अधिक उमाह्यो३९     |     |
| २  | ते दिन क्यारें आवरो, श्रीसिद्धाचल जायुं. ....    | ४०  |
| ३  | सिद्धाचलगिरि नेढ्यां रे, धन्य जाग्य हमारां. .... | ५४  |
| ४  | महारुं मन मोह्युं रे, श्रीसिद्धाचलें रे: ....    | ५७  |
| ५  | शेत्रुंजे रूपन समोसखा, नला गुण नखा रे. ....      | ६७  |
| ६  | आंखडीयें रे में आज शेत्रुंजो दीगो रे. ....       | ६८  |
| ७  | सिद्धगिरि थ्यावो नविका, सिद्धगिरि थ्यावो. ....   | ६९  |
| ८  | श्रीसिद्धाचल मंमण स्वामी रे, जगजीवन०             | २०७ |
| ९  | जात्रा नवाणुं करीयें शेत्रुंजा गिरि, जात्रा०     | २५२ |
| १० | संघ पूढे फूलवाडीयें, शेत्रुंजान्तीं मलण.....     | २५२ |
| ११ | सिद्धाचल वंदो रे नर नारी, हारे नर० ....          | २६० |
| १२ | शत्रुंजे जइयें ने पावन थइयें, जात्रा० ॥          | २८३ |
| १३ | चालो सखि सिद्धाचल जइयें, चालो० ....              | २८४ |
| १४ | श्री शत्रुंजय गिरि तीरथसार, थोइ. ....            | २८६ |
| १५ | गिरिराजकूं सदा मेरी वंदना, जिनजीकूं०             | २८७ |



|  |     |
|--|-----|
| १६ विवेकी विमलाचल वसीयें, तप जप करी०           | ३०० |
| १७ अखीयां सफल जइ में, चेटया नानिकुमार.         | ३०० |
| १८ ए तो सकल तीरथनो राय.                        | ३१७ |
| १९ चालो चालो सिद्धाचल जइयें रे, रूप०           | ३४५ |
| २० चालोने प्रीतमजी प्यारा शेत्रुंजे जइयें..... | ३५७ |
| २१ विमलाचल विमला प्राणी, शीतल०                 | ३६३ |
| २२ सिद्धाचल सिद्धि सुहावे, अनंत अनंत०.....     | ३६४ |
| २३ वीरजी आया रे विमलाचलके मेदान.               | ५५१ |
| २४ जे कोइ सिद्धगिरिराजने आराधने रे लो.         | ५५९ |

## ॥ श्री समेत शिखरादि तीर्थोनां स्तवनो ( ८ ) ॥

|   |     |
|---|-----|
| १ चालो चालो शिखरगिरि जइयें रे.          | ३०३ |
| २ शिखरजीकी नात्रा क्युं न करे.          | ३०९ |
| ३ तुंही नमो नमो समेत शिखरगिरि.          | ३३४ |
| ४ आबु पवेत रूयडो रे लाल.                | ३६१ |
| ५ श्रीराणकपुर रजियामणुं रे लाल.         | ३७० |
| ६ जगपति जयो जयो रूपनजिणंद, राणकपुरनुं   | ३३६ |
| ७ अष्टापद अरिहंतजी महारा बालाजी रे..... | ५९  |
| ८ तीरथ अष्टापद नित्य नमीयें.            | ८४  |

## ॥ बूटक न्हानां स्तवनो ( १७ ) नी अनुक्रमणिका ॥

|                                  |    |
|----------------------------------|----|
| १ श्रीगौतम पृढा करे, विनय करी० ॥ | २३ |
| २ प्रह समे जाव धरी घणो.....      | ३६ |
| ३ सिद्धनी शोना रे शी कहुं.....   | ७४ |

|   |     |
|---|-----|
| ४ एक वार बह्मदेश आवजो जिणंदजी. ....               | ८५  |
| ५ पंचमी तप तमें करो रे प्राणी. ....               | ९०  |
| ६ माता त्रिशलायें पुत्ररतन जाइयो, पाजणुं. ....    | १०८ |
| ७ माता त्रिशला जुजावे पुत्र पारणे. हाजरीयुं. .... | १११ |
| ८ सुणजो साजन संत पजूसण आव्यां रे. ....            | १५४ |
| ९ प्रभुजी रे प्रभुजी नाम जणुं मन माहरे. ....      | १५८ |
| १० खतरा दूर करनां दूर करनां. ....                 | १८९ |
| ११ अविनाशीनी सेजडीयें रंग लागो॥ ....              | ३५६ |
| १२ धन धन संप्रति साचो राजा, जेणें॥ ....           | ४११ |
| १३ जेहने जिनवरनो नहीं जाप, तेहनुं पासुं० ....     | ४२५ |
| १४ समकित द्वार गंजारें पेसतां जी. ....            | ४८१ |
| १५ लाज तेरे नैनोकी गतं न्यारी. ....               | ४९४ |
| १६ चोवीशे जिनगुण गाइयें. चोवीशीनो कलश. ....       | ५३२ |
| १७ रिसह जिनेसर प्रणमी पाय, चोवीश ती० ....         | ५६२ |

॥ महोटां स्तवनो तथा रास अने चोढाली

यां वगेरे ( १७ ) नी अनुक्रमणिका.

|  |     |
|--|-----|
| १ श्रीमहावीरना पंचकव्याणकनुं चोढालीयुं. .... | ४२  |
| २ पुण्यप्रकाशनुं आराधनानुं स्तवन. ....       | ७४  |
| ३ श्रीगोतम स्वामीनो महोटां रास. ....         | ९१  |
| ४ श्रीगोडीपार्श्वनाथजीनुं चोढालीयुं. ....    | १२७ |
| ५ सुर नर तिरियग योनिमें, ज्ञानपच्चीशी. ....  | १३३ |
| ६ बालचंद्र बत्रीशी, अजर अमर पद० ॥ ....       | ३०३ |
| ७ दान शीयल तप जावनानुं चोढालीयुं. ....       | ३२१ |

|  |     |
|--|-----|
| ८ हवे राणी पद्मावती, जीवराशि स्वमावे.....  | ३७४ |
| ९ आत्मशिक्षा जावनाना दोहा. (१८५)           | ३७७ |
| १० उत्पत्ति जो जो आपणी, जीवोत्पत्ति. ...   | ३९३ |
| ११ आदर जीव कृमागुण आदर, कृमावृत्तीशी.      | ३९९ |
| १२ वैकुण्ठपंथ वीहामणो, दोहिलो ठे घाट. .... | ४०३ |
| १३ जीव विचारनुं स्तवन नव ढालोनुं. ....     | ४१५ |
| १४ नव तत्त्वनुं स्तवन. अगीयार ढालोनुं..... | ४२५ |
| १.५ चोवीश दंमकनुं स्तवन ठ्वीश ढालोनुं..... | ४५१ |
| १६ स्वंधकमुनिनुं चोढालीयुं वैराग्यमय. .... | ५३३ |
| १७ आवकने त्रण मनोरथ जाववाना. ....          | ५४१ |

• ॥ ठंड (९) नी अनुक्रमणिका ॥

|  |     |
|--|-----|
| १ प्रभु पासजी ताहेरुं नाम मीतुं.....         | १०  |
| २ वीर जिनेसर केरो शिष्य, गौतमजीनो.....       | ६०  |
| ३ वंछित पूरे विविध परें, नवकारनो. ....       | ६१  |
| ४ आदिनाथ आदिजिनवर वंदि, शोलसतीनो. ....       | ६३  |
| ५ शारद मायं नमुं शिर नामी शांतिजिननो.....    | २२५ |
| ६ आपण घर वेठां लील करो, पार्श्वजिननो. ....   | २३२ |
| ७ जय जय जगनायक पार्श्वजिनं.....              | २३६ |
| ८ सकल सुखांकर जिनवर राय, पार्श्व जिननो. .... | २५९ |
| ९ श्रीसुमतिदायक ॥ चोत्रीश अतिशयनो. ....      | ३७२ |

॥ संघात (४९) नी अनुक्रमणिका ॥

|                                    |    |
|------------------------------------|----|
| १ लोचन न करीयें प्राणीया रे. ....  | २८ |
| २ शीलनी नववाडो. उदयरत्नजीकृत. .... | २९ |

|   |     |
|---|-----|
| ३ प्रीतमसेंती वीनवे, तमाकुनी. ....                | ३४  |
| ४ पुण्य संयोगें नरनव लाधो, रात्रि नोजननी. ....    | ३१३ |
| ५ निंदा मकरजो को इनी पारकीरे, निंदा वारकनी. ....  | ३१५ |
| ६ सुण सुण कंता रे शीख सोहामणी. ....               | ३१५ |
| ७ एक अनोपम शीखामण खरी.....                        | ३१८ |
| ८ कडवां फल ठे क्रोधनां, क्रोधनी.....              | ३२० |
| ९ रे जीव मान न कीजियें. माननी. ....               | ३२१ |
| १० समकितनुं वाज जाणीयें जो, मायानी. ....          | ३२१ |
| ११ तुमें लक्ष्मण जो जो लोचना रे, लोचनी. ....      | ३२२ |
| १२ आवक तुं उठे परजात, आवक करणीनी. ....            | ३२३ |
| १३ पीयुजी रे पीयुजी नाम, जपुं दिन रातीयां. ....   | ३२४ |
| १४ निड्डी वेरण दुई रहीं, निड्डीनी. ....           | ३२४ |
| १५ अरणिक मुनिनी सयाय.....                         | ३२५ |
| १६ मेघकुमारनी सयाय, धारणी मनावे रे.....           | ३२५ |
| १७ समकेतना शडशठ बोलनी. ....                       | ३२७ |
| १८ शामाटे बंधव मुखथी न बोलो, बलनइनी. ....         | ३२७ |
| १९ सुण चतुर सुजाण, परनारीचुं प्रीतण॥              | ३८० |
| २० नूलो मन नमरा तुं क्यां नम्यो, मननमरानी. ....   | ३८६ |
| २१ कर पडिक्कमणुं जावचुं, प्रतिक्रमणफलनी. ....     | ३३३ |
| २२ प्रभु साथें जो प्रीत वंठो तो नारीसंग निवा..... | ३३७ |
| २३ चोत्रीश अतिशयवंत, दाननी. ....                  | ३३९ |
| २४ शीयल समुं सुख को नही, शीयलनी.....              | ३४० |
| २५ कीथां कर्म निकंदवां रे, तपनी. ....             | ३४० |
| २६ रे नवि जाव हृदय धरो, जावनी. ....               | ३४१ |

- ३७ श्रीमहावीरें जाखीया, दानादिक चारनी. ३४३  
 ३८ हक मरनां हक जानां यारो, मत को करो ० ३४८  
 ३९ हो प्रीतमजी प्रीतकी रीत अनीत ० ॥ ३५१  
 ४० यां मेवासमें बे मरदो भगन जया मेवासी. ३५९  
 ४१ देव दानव तीर्थकर गणधर, कर्मनी. .... ३६५  
 ४२ जीव क्रोध म करजे, लोन म धरजे शीखाम ० ३६७  
 ४३ काउस्सगथकी रे रहं नेम राजुल ० ॥ ३६८  
 ४४ प्रथम गोवालीयातणेनवेंजीरे, शालिजदनी. ३६९  
 ४५ देखो बे यारो कूडो कलियुग आयो, कलियु ० ४८३  
 ४६ सरपत सांमिणि वीनतुं, जंगुस्वामीनी. .... ४८४  
 ४७ आज मारे एकादशी रे, एकादशीनी. .... ४८५  
 ४८ उंचा मंदिर मालीयां, सोडयवालीने सूतो. ४८६  
 ४९ अमल वज्जन स्वाध्याय. .... ४८७  
 ४० वीर कहें गौतम सुणो, पांचमा आरानी. ४८९  
 ४१ तुज साथें नही बोलुं रे रूपनजी, तें मुळ ० ॥ ४९१  
 ४२ श्रीगुरु चरण पसाउजे, शीखामएनी. .... ४९२  
 ४३ पडजो कुमति गढनां कांगरां, उपदेशनी. .... ५०४  
 ४४ महारुं महारुं म कर जीव तुं, उपदेशनी. .... ५५५  
 ४५ अंगस्फुरकण शुनाशुन फल सवाय. .... ६३०  
 ४६ ठींकविचारनी सवाय तथा तेना फलनो यंत्र ६३३  
 ४७ अष्ट महासिद्धिनी स्वाध्याय. .... ६६७  
 ४८ जुवटुं नही रमवा आश्रयी उपदेशनी. .... ६६८  
 ४९ रहनेमी अने राजिमतीजीनी. .... ६७०

## ॥ श्रीआदिजिननां स्तवनो (२१) नी अनुक्रमणिका ॥

|   |     |
|---|-----|
| १ आदिजिनं वंदे गुणसदनं.....                 | २   |
| २ आज तो क्याई राजा नाजिके दरबार रे.         | ३७  |
| ३ जीरे सफल दिवस आज माहरो.                   | ३७  |
| ४ प्रथम जिनेसर प्रणमीयें, जास सुगंधीरे काय. | ५०  |
| ५ जगजीवन जगवालहो. मरुवे जीनो नंद०           | ११४ |
| ६ रूपनजिणंदा रूपनजिणंदा, तुम दरिसन०         | १२९ |
| ७ उजगडी आदिनाथनी जो, कांई कीजें०            | १४७ |
| ८ बालपणे आपण ससनेही, रमता नव०               | १६७ |
| ९ प्रथम तीर्थकर सेवन साहिबा उदित०           | १६९ |
| १० आदीसर जगदीसरू रे, अवधारो अर०             | २०२ |
| ११ प्रथम जिणंद प्रणमुं पाया. जननी मरु०      | २०७ |
| १२ आज उजम ते रे अधिको, जोवा दरिसन०          | २४६ |
| १३ मोसें नेह धरी महाराज आज राज०॥            | २५७ |
| १४ जाग जाग मुकुटमणि नाजीजीके नंदा.....      | २७५ |
| १५ उठत प्रजात नाम जिनजीको गाइयें.           | २९३ |
| १६ जयो जयो नायक जगगुरु रे. आदीसर०           | ३१३ |
| १७ अंग उमाहो मुज्जे अति घणो: ....           | ३३२ |
| १८ नेनां सफल जइ में निरख्या नाजिकुमार.....  | ३६२ |
| १९ रूपन जिनेसर प्रीतम माहारा रे.....        | ४६० |
| २० वृषनलंठन दिन एटला, अतिपावन०              | ५०० |
| २१ रूपन जिणंदशुं प्रीतडी, किम कीजें हो०     | ५०७ |

## ॥ केशरीयाजीनां स्तवनो ( ६ ) ॥

|  |     |
|--|-----|
| १ प्रथम तीर्थकर रूपन जिणंदा. ....            | २४२ |
| २ आज सफल दिन माहरो रे. ....                  | २६० |
| ३ केशरीयामें लागुं मारुं ध्यान रे. ....      | २७६ |
| ४ घणुं मौंघुं नाम ठे रे, महारे तो कसरीया०    | ३४६ |
| ५ केसरीया वाजा, जो लज्जा राखणो तो रहेसो. ३४७ |     |
| ६ प्रचुनी मूरति मोहनवेजडी, जी तुमारी०        | ५०४ |

## ॥ श्रीअजितनाथनां स्तवनो ( ११ ) ॥

|  |     |
|--|-----|
| १ अजितजिणंदशुं प्रीतडी. ....             | ११४ |
| २ अजित जिनेसर चरणनी सेवा.....            | १३० |
| ३ अजित जिनेसर साहेबा रे लो, वीनतडी०      | १४८ |
| ४ उलग अजित जिणंदनी, माहारे मन०           | १७८ |
| ५ अजित अजितजिन अंतरजामी. ....            | १७१ |
| ६ प्रीतलडी बंधाणी रे अजित जिणंदशुं. .... | २०० |
| ७ पंथडो निहालुं रे बीजा जिन तणो रे.....  | ४६१ |
| ८ उलग अजित जिणंदनी, नवि कीधी हो०         | ४९९ |
| ९ अजित जिणंद जुहारीयें, साहेबा विज०      | ५०१ |
| १० ज्ञानादिकं गुण संपदा रे, तुऊ अनंत०॥   | ५०७ |
| ११ सरसति सांमिणी वीनवुं. ५०१ ....        | ६६९ |

## ॥ श्री संजवजिन्नां स्तवनो ( १० ) ॥

|  |    |
|--|----|
| १ हुं तो जावं रे जिनदरबार, प्रचुमुख जोवानें. | ५८ |
| २ साहेब सांजलो रे, संजव अरज हमारी.           | ७२ |

|    |  |     |
|----|--|-----|
| ३  | संज्ञवजिन र वीनति. ....                | ११७ |
| ४  | साहिब सानजो वीनंति, तुं ठो चतुर०       | १२२ |
| ५  | मने संज्ञवजिनशुं प्रीत, अविहड लागी रे. | १४० |
| ६  | समकित दाता समकित आपो, मन मागे०         | १७२ |
| ७  | समज जा गुमानी हो दिल जानी.....         | २०४ |
| ८  | मोहन तारा सुखडाने मटके, मोहन०          | २२० |
| ९  | संज्ञव देव ते धुर सेवो सवे रे. ....    | ४६२ |
| १० | श्रीसंज्ञवजिन राजजी रे, ताहरं अकल०     | ५०७ |

### ॥ श्री अजिनंदन जिननां स्तवनो ( .७ ) ॥

|   |   |     |
|---|---|-----|
| १ | दीठी हो प्रभु दीठी जगगुरु तुऊ.....        | ११६ |
| २ | प्रभु मुऊ दरिसन मलियो अलवे, मन थ०         | १२१ |
| ३ | श्री अजिनंदनजिन स्वामीने रे, सेवे. सुरकु० | १५१ |
| ४ | अकलकला अविरुद्ध, ध्यान धरे प्रतिबुद्ध.    | १७३ |
| ५ | अजिनंदन नाथ जुहारंजी, तीरथना०             | २३५ |
| ६ | अजिनंदन जिन दरिसन तरमीयें. ....           | ४६२ |
| ७ | कयुं जाणुं कयुं बनी आवशे, अजिनंदनरस०      | ५०९ |

### ॥ श्री सुमतिनाथनां स्तवनो ( .७ ) ॥

|   |  |     |
|---|--|-----|
| १ | सुमतिनाथ गुणशुं मलीजी, बाधें मुऊ० ....   | ११७ |
| २ | रूपअनूप निहाली सुमतिजिन ताहरं ह्यो०      | १२२ |
| ३ | पंचम सुमतिजिनेसर सामी के, सुणजि०         | १५१ |
| ४ | महारा प्रभुशुं बांधि प्रीतडी, ए तो जीवन० | १७४ |
| ५ | वाहाला सुमति जिनेसर सेवीयें रे. ....     | २४९ |



|  |     |
|--|-----|
| ६ सुमति चरन कज आतम अरपण.               | ४६३ |
| ७ अहो सिरिसुमति जिन शुद्धता ताहरी..... | ५१० |

### ॥ श्री पद्म प्रज्जिननां स्तवनो ( ८ ) ॥

|  |     |
|--|-----|
| १ पद्मप्रज्जिन जइ अलगा रह्या.                  | ११७ |
| २ श्रीपद्मप्रज्जना नाम्ने,हुं जाऊं बलिहार..... | १३३ |
| ३ पद्मप्रज्जिन सेवीयें रे, शिवसुंदरी ज०.....   | १५३ |
| ४ पद्मप्रज्ज तुम सेवना, साहेबजी.....           | १७५ |
| ५ परमरसजीनो महारो,निपुणनगीनो मा०               | १७५ |
| ६ कागलीयो किरतार जणी शी परें लखुं रे.          | ३५८ |
| ७ पद्मप्रज्जिन तुऊ मुऊ अंतरुं रे. ....         | ४६४ |
| ८ पद्मप्रज्ज जिन गुणनिधि रे लाल.....           | ५१२ |

### ॥ श्री सुपार्थ जिननां स्तवनो ( ९ ) ॥

|   |     |
|---|-----|
| १ श्री सुपार्थजिनराज,तुं त्रिचुवनशिरताज.  | ११८ |
| २ निरखी निरखी तुऊ बिबने, हरखित हो०        | १३४ |
| ३ सेवजो रे सामी सुपास जिनेसरु रे, लाल.    | १५३ |
| ४ बाब्हा मेह बपीयडा, अहिकुलने मृग०.....   | १७६ |
| ५ मुऊ मन जेमरो प्रभुगुण फूलडें रे. ....   | २९९ |
| ६ श्री सुपास जीन वंदीयें,सुखसंपतिने हेतु० | ४६५ |
| ७ श्री सुपास आनंदमें, गुण अनंतनो कंद०     | ५१३ |

### ॥ श्रीचंद्रप्रज्जिननां स्तवनो ( १० ) ॥

|   |     |
|---|-----|
| १ चंद्रप्रज्जिन साहेबा रे,तुमें ठो चतुर सुजा० | ११८ |
|---|-----|

- २ तूंहो साहिबा रे मन मान्या, तूंतो अकल० १३५  
 ३ जिनजी चंङ्प्रन अवधारो के, नाथ निहा० १५४  
 ४ श्री शंकर चंङ्प्रनु रे लो, तुं ध्याता जग० १७७  
 ५ चंदा प्रचुजीसें लाज रे मोरी लागी लगनवा. ३४७  
 ६ देखण दे रे सखी मुने देखण दे..... ४६५  
 ७ श्री चंङ्प्रन जिनपद सेवा, हेदायें जे० ५१४

॥ श्री सुविधि जिननां स्तवनो (१०) ॥

- १ लघु पण हुं तुम मन नवि मावुं रे..... १८९  
 २ तुज सेवा सारी रे, शिवसुखनी त्यारी रे. .... १३६  
 ३ सुविधि जिनेसर जागतो, जग मोहनसामी. १५५  
 ४ अरज सुणो एक सुविधि जिनेसर. .... १७८  
 ५ लागो लागो रे प्रचुखुं नेह, वसीयो हीयडामां. २७५  
 ६ मुजरा साहेव मुजरा साहेव, साहेव० ३३१  
 ७ अञ्चो असीं गरुण वेंधा, वंमैजे पेर पौधा. ३४३  
 ८ सूरत सुविधि जिणंदनी रे लोज. .... ३५५  
 ९ सुविधि जिनेसर पाय नमीने. .... ४६६  
 १० दीतो सुविधि जिनंद, समाधिरसें नख्यो हो० ५१५

॥ श्री शीतलनाथनां स्तवनो (१०) ॥

- १ वारी प्रचु दशमा शीतलनाथ, सुणो एक० ३  
 २ शीतल जिननी सेवा कीजें. .... ५५  
 ३ श्री शीतलजिन चेटीयें, करी चोखुं न० १२०  
 ४ तुज मुख सनमुख निरखतां, मुज लोचन० १३६

|  |     |
|--|-----|
| ५ श्रीचद्विजपुरना वासी रे,साहेब माहारा रे. | १५५ |
| ६ शीतल जिनवर सेवना साहेबजी, शीतल०          | १७७ |
| ७ महारे शीतलजिनशुं,लागी पूरण प्रीत जो.     | २४८ |
| ८ शीतल जिनवर सांजलो रे, गुणनिधि०           | ३१८ |
| ९ शीतल जिनपति ललितत्रिचंगी.                | ४६७ |
| १० शीतल जिनपति प्रचुता प्रचुनी.            | ५१६ |

### ॥ श्री श्रेयांसजिननां स्तवनो ( ७ ) ॥

|   |     |
|---|-----|
| १ तुमें वेहु मित्री रे साहेबा,महारे तो मन०  | १२० |
| २ श्रीश्रेयांसजिणंद, घनाघन गहगह्यो रे. .... | १३७ |
| ३ तारंक बिरुद सुणी करी, हुं आवी उजो द०      | १५६ |
| ४ श्रेयांसजिन सुणो साहिवा रे, जिनजी०        | १८० |
| ५ सहेर बंडा संसारका, दरवाजे जसु चार०        | ३०० |
| ६ श्री श्रेयांसजिन अंतरजामी. ....           | ४६८ |
| ७ श्री श्रेयांस प्रचु तणो, अतिअनुतसहे॥      | ५१७ |

### ॥ श्रीवासुपूज्य जिननां स्तवनो ( ६ ) ॥

|  |     |
|--|-----|
| १ स्वामी तुमें कांइ कामण कीधुं. ....       | १२१ |
| २ वासुपूज्य तुं साहिब साचो,जेहवो होये ही०  | १३८ |
| ३ श्रीवासुपूज्य नरिंदना,नंदनजन नयणा०       | १५७ |
| ४ प्रचुजीशुं लागी हो पूरण प्रीतडी, जीवन०   | १८१ |
| ५ वासुपूज्यजिन त्रिचुवनस्वामी. ....        | ४६९ |
| ६ पूजना तो कीजें रे बारमा जिनं तणी रे..... | ५१८ |

## ॥ श्री विमलजिननां स्तवनो ( ७ ) ॥

|   |     |
|---|-----|
| १ विमल विमल गुण राजता. ....                   | ३   |
| २ सेवो नवियां विमलजिनेसर, डुलहा० ॥            | १२१ |
| ३ जीहो विमल जिनेसर सुंदरु, लाला विम०          | १३७ |
| ४ जिन विमल वदन रजियामणुं, जाणे कन०            | १५७ |
| ५ विमल जिणंद सुम्यानविनोदी, मुख ठवी०          | १७२ |
| ६ दुःख दोहग दूरें टव्यां रे, सुख संपदगुं जेट. | ४६९ |
| ७ विमलजिन विमलता ताहरी जी.....                | ५१९ |

## ॥ श्री अनंत नाथनां स्तवनो ( १० ) ॥

|  |     |
|--|-----|
| १ श्रीअनंतजिनगुं करो, साहेजडीयां. ....   | १२२ |
| २ झान अनंतुं ताहरे रे, दरिसन ताहरे०      | १३९ |
| ३ सुजसानंदन जगदानंदन नाथ जो. ....        | १५९ |
| ४ अनंत जिणंदगुं वीनति, में तो कीधी हो०   | १७३ |
| ५ अनंत. जिणंद अवधारीयें, मेवकनी०         | १७४ |
| ६ प्रीतडी अनंतजिन राजनी, दर्शन०          | १७५ |
| ७ चित्त लागो अनंतजिन चरननमें. ....       | ३४५ |
| ८ हारे लाल चतुर शिरोमणी चौदमा. ....      | ३४७ |
| ९ धार तरवारनी सोहेजी दोहेजी. ....        | ४७० |
| १० मूरति हो प्रभु मूरति अनंत जिणंद. .... | ५२० |

## ॥ श्रीधर्मजिननां स्तवनो ( ८ ) ॥

|   |     |
|---|-----|
| १ थागुं प्रेम बन्यो ठे राज, निरवहेशो तो लेखे. | १२३ |
| २ श्रीधर्मजिणंद, दयालजी, धर्म तणो दाता.       | १४० |

३ श्रीधर्मजिनेसर सेवीयें रे, जानु नरेशर०॥ १६०  
 ४ हारे महारे धर्मजिणंदशुं लागी पूरण प्री०॥ १७६  
 ५ इम करियें रे नेडो इम करीयें रे, सुगुणाशुं०॥ १७७  
 ६ धर्म जिनेसर गाउं रंगशुं, जंग म पडशो०॥ ४७१  
 ७ धर्मजिणंदा हो, में तुऊ बंदा महारा लाल. ५०५  
 ८ धर्म जगनाश्वनों धर्मशुचि गाइयें. .... ५११

॥ श्रीशांतिनाथनां स्तवनो ॥ ११ ॥

१- शांतिजीनुं मुखडुं जोवा जणीजी, मुऊ म० ५१  
 २ शांति प्रभु वीनति एक मोरी रे..... ५४  
 ३ बेकर जोडी वीनवुं, सुणो जिनवर श्री शांति. ५६  
 ४ धन दिन वेला धन घडी तेह, अचिरारो० ११३  
 ५ श्रीशांति. जिनेसर साहिबा, तुऊ नाठे केम० १४१  
 ६ सुंदर शांति जिणंदनी, ठबि ठाजे ठे. .... १६०  
 ७ शोलमा श्रीजिनराज, उल्लग सुणो अमलणी. १७७  
 ८ शांतिजिणंद सोहामणा रे जोजो, शोलमा० १७८  
 ९ शांतिजिणंद महाराज, जगतगुरु शांति० १७९  
 १० तुं मेरे मनमें तुं मेरे दिलमें, नाम जपूं० .... २५७  
 ११ प्रभुजी शांतिजिणंदने नेटीयें, शांतिरस० २७८  
 १२ शांतिकरण प्रभु शांति जिनेश्वर, शांतिकर० २९१  
 १३ शांतिजिणंद सुखकारी सकलजन! शांति०॥ ३०२  
 १४ शांतिजिणंद नजो सदा, नवियण बहु जावें. ३०३  
 १५ सेवो नवि शांति जिणंद सनेहा, शांतिरस०॥ ३४९  
 १६ शांतिजिनेसर साहिबा रे, शांतितुणोदानार० ३५३

- १७ संकल सुखाकर, शांतिजिनेसर राय. .... ३६१  
 १८ शांति मिलनकी आश हो जीया मानुवे..... ३६२  
 १९ शांतिजिन एक मुऊ वीनति, सुणो त्रिचुण ॥ ४७२  
 २० जगत दिवाकर जगत कृपानिधि. .... ५२२  
 २१ शांतिजिनेसर सादेव वंदो, अनुचवरस ॥ ५६२

॥ श्रीकुंथुजिननां स्तवनो ॥ ७ ॥

- १ कुंथुजिनेरश्वदवरत्नदीपकअतिदीपतो हो ॥ १२४  
 २ कुंथुजिनेसरजाणजो रे, मुऊमननोअनिधायने. १४१  
 ३ रसीया कुंथु जिनेसर केसर, चीनी देहदी ॥ १५१  
 ४ कुंथुजिणंद करुणा करे, जाणीपोतानो दासू ॥ १९०  
 ५ मुऊअरज सुणो मुऊ प्यारां, साची नकि ॥ १९१  
 ६ कुंथुजिन मनडुं किमही न वाजे. . . . ४७४  
 ७ समवसरण बेसी करी रे, वरह परखद ॥ ५२३

॥ श्रीअरनाथजिननां स्तवनो ॥ ८ ॥

- १ श्रीअरजिन नवजलनो तारु. मुऊमनलागे ॥ १२५  
 २ श्रीअरनाथ उपासना, शुनवासना मूल. १४२  
 ३ गायजो रे धरी उल्लास, अरजिन वर ॥ १६२  
 ४ अरनाथ अविनाशी हो, सुबिजासी खा ॥ १९१  
 ५ धरम परम अरनाथनो, केम जाणुं न ॥ ४७५  
 ६ प्रणमो श्रीअरनाथ, शिवपुरसाथ खरो री. ५२४

श्री मल्लिजिननां स्तवनो ॥ १० ॥

- १ तुऊ मुऊ रीजनी रीज, अटपट एह खरीरी. १२५

- १ महिमा मल्लिजिणंदनो, एकै जीजें कह्यो ० १४३  
 २ मिथिला नयरी रे अवतस्था, याने कुंज ० ॥ १६३  
 ४ सुणी सुगुरु उपदेश. ध्यायो दिलमें धरी ० १९३  
 ५ चित्त को न गमे रे चित्त को न गमे, मल्लि ० ॥ २७६  
 ६ मोहे कैसें तारोगे दीनदयाल ॥ मोहे ० ॥ .... २८५  
 ७ जीरे महिमा. मल्लिजि णंदनी. .... ३५०  
 ८ सेवक किम अवगणीयें हो मल्लिजिन ० ॥ ४७६  
 ९ मनमोहन मल्लीनाथको, जस बोझेंगे. .... ५०६  
 १०-मल्लिनाथ जगनाथ चरणयुग ध्याइये. .... ५२६

॥ श्रीमुनिसुव्रतजिननां स्तवनो ॥ ६ ॥

- १ मुनि सुव्रत जिन वंदतां, अति उल्लसित त ० १२६  
 २ मुनि सुव्रत कीजें मया रे, मनमांही थ ० १४३  
 ३ आबों रे आबो रे सखी देहरे जइयें. .... १६४  
 ४ हो प्रभु मुऊ प्यारा, न्यारा थया केइ रीत जो. १९४  
 ५ मुनि सुव्रत जिनराय, एक मुऊ विनति ० ॥ ४७७  
 ६ उलंगडी उलंगडी तो कीजें श्रीमुनि सुव्रत ० ॥ ५२७

॥ श्रीनमिजिननां स्तवनो ॥ ६ ॥

- १ श्रीनमिजिननी सेवा करतां, अलियविध ० १२६  
 २ श्रीनमिनाथ जिनंदने रे, चरणकमल ० ॥ .... १४४  
 ३ कांइ विजयनरेशर नंदन लाल, वप्रा ० ॥ .... १६५  
 ४ आज नमिजिनराजने कहीयें, मीठे ० ॥ ... १९५  
 ५ षटदरिण जिन अंग जणीजें, न्यासपुडंग ० ॥ ४७८  
 ६ श्री नमिजिनवर सेव, घनाघन कुनम्यो ० ॥ ५२८

॥ श्री अरिष्ट नेमिनाथनां स्तवनो ॥ १५ ॥

- १ जइने रहेजो माहारा वालाजी रे. .... ८९
- २ तोरण आवी रथ फेरी गया रे हां, पशुआं दे० १२७
- ३ नेमिजिणंद निरंजणो, जइ मोहथलें० .... १४५
- ४ राजुल कहे पिया नेमजी, गुण जाणो ठो के० १६५
- ५ कांइ रथ वालो हो राज, साहामुं निहालो० १९६
- ६ राजुल कहे रथ वालो हो, नणदीरा वीरा० १९७
- ७ यादवजी हो समुद्रविजय कुल सेहरो हो० २०३
- ८ नेमजिणंद जुहारीयें, उज्ज्वलगढगिरनारो रे. २४०
- ९ माहारा सम जाउंमां रे वाला. चोमांसुं. .... २४३
- १० घरे आवोने नेम वरणागिया रे. .... २४५
- ११ नां करियें रे नेडो नां करियें, निगुणाछुं० ॥ २९४
- १२ नेम मिले तो वातां कीजीयें, वो प्यारे० ॥ ४१०
- १३ सखि नमीयें ते नेम जिनराज, गढगिरनारें रे. ४१३
- १४ अष्ट ज्वंतर वालही रे, तुं मुऊ आतग० ॥ ४७९
- १५ सुनो मेरे नेमजी प्यारे, इगनसैं मत रहो० ॥ ४९४
- १६ मत जाउं रे पिया तुमें पाहाडमां. .... ४९५
- १७ महारा सामलीयानी बात रे, दुं केहने पूछुं. ४९५
- १८ तोरण आवी कंत, पाठा बलीयां रे. .... ५०३
- १९ संयम लेउंगी साथ, पीया में तो संयम० ॥ ५०६
- २० नेमि जिणेसर निज कारज कछुं. .... ५२९
- २१ चेत्र मासैं ते चतुरा चिंते रे. बार मास. ५५६
- २२ रविवारें ते हो रढीयाला रे, साते बार. ५५७
- २३ पडवे. पियु प्रीतज पालो रे. पंदरतिथि. .... ५५८



१४ घरें आवो तो पूढुं एक वातडली रे. .... ५६४

१५ तोरण आवी रथ पाढो किम फेरो रे वा०॥ ५६४

॥ श्रीपार्श्व जिननां स्तवनो ॥ ४६ ॥

- १ चिंतामणि चिंता सवि चूरे, पूरे मनकी०॥ ३७
- २ परमात्म परमेश्वर, जगदीश्वर जिनराज. ५१
- ३ जिनपति अविनाशी काशीधणी रे. .... ५१
- ४ सुगुण सोनागी रे साहेब साहेब. .... ५३
- ५ लाखीणो सोहावे जिनजी, फूलांनो गजे हार. ५६
- ६ वामानंदन जिनवर मुनिमांहे वडो रे, के मु० १ १७
- ७ श्रीपासजी प्रगट प्रजावी, तुज मूरति० १४६
- ८ सेवो नविजन जिन त्रेवीशमा, लंठन० ॥ १६६
- ९ वामानंदन हो प्राणथकी ठो प्यारा. १९८
- १० प्राणथकी प्यारो मुने रे ॥ साहेबा० ॥ २०१
- ११ ठांजी ठांजी ठांजी बंदा ठांजी, में तो खा० २०२
- १२ पासजिनंदा माता वामाजीके नंदा रे. २०४
- १३ प्रभु जगजीवन जगबंधु रे, सांई सयाणो रे. २०५
- १४ शामाटे साहिब सामुं न जूवो. जीडनंजननुं. २४२
- १५ हो जिनराया जिनेसर, शिववधूना तमें जोगी. २४५
- १६ धृतकल्लोल प्रभु पास जिणंद, अश्वसेन०॥ २५५
- १७ लयलागिरे लयलागीरे, गोडीपास जिणंद० २५७
- १८ तुंही नाथ हमारो रे जिनपति, तुंही नाथ० २५९
- १९ पंथीडा पंथ चलेगो, प्रभु नज ले दिन. चार. २७७
- २० सहस्रफणा रे मोरा साहेबा, तेरी सामरी० २८२

- ११ तुमही जाके अश्व खेलावो, राउकी रीत० १९१  
 १२ प्रभुजीको दरिसन पायोरी आज में प्रभु० १९२  
 १३ को न गमे रे चित्त को न गमे, प्रभु पासजी वि० १९४  
 १४ जिनजी गोडी मंमणपास के, विनति सां० १९९  
 १५ बहाणलां बाह्यां रे प्रभु, बहाणलां बाह्यां. २१५  
 १६ मेरे ए प्रभु चाख्यें नित उठी दरिसण पाउं. २१६  
 १७ सुघड पास प्रभु रे दरिसन बेलडोनीदिऊ. २१७  
 १८ पास जिणंद सदांशिवगामी, बालोजी० २२०  
 १९ प्रभु तोरी ठकुराइकूं, गढ तीन बिराजे. २२२  
 २० तुम बिना कौन मेरी शुद्ध लेनहार दे. २२२  
 २१ कृपाकरोने गोडीपासजिनेसर, तुम सा० ॥ २२४  
 २२ तें मुऊ मोह महामद पांयो, तेणें हुं थयो० २४२  
 २३ अमां आउं नेहडो कंधी, गोडीचे पेर वैंधी. २४४  
 २४ आज रे में मुख देख्यो गोडी पारसको..... २४६  
 २५ प्रगट्या ते पूरण अविनाशी जीरे..... २४६  
 २६ जीरे आज दिवस जलें उगीयो, जीरे आ० २५२  
 २७ सजुरुने चरणे नमी, गायशुं गोडीराय०॥ २५४  
 २८ उठो उठो रे मोरा आतमराम, जिनमुख० २५७  
 २९ रातां जेवां फूलडां ने सामल जेवो रंग..... २६०  
 ४० लागो मेरो पारस प्रभुजीमें ध्यान. .... २६२  
 ४१ पास शंखेश्वरा सार कर सेवका, देव कां० ४०९  
 ४२ निर्मल होइ नजले प्रभु प्यारे, सवरे० ॥ ४१०  
 ४३ सहस फणा रे मोरा साहेबा, तोरी सा०॥ ४१२  
 ४४ जिनराज जोवानी तक जाय ठे रे. .... ४९६

४५ साहेबा श्रीसंखेसर पासजी. .... ५०२

४६ सहज गुण आगरो स्वामी सुख सागरो. ५३०

॥ अथ महावीर जिननां स्तवनो ॥ १७ ॥

- १ सिद्धारथना रे नंदन वीनतुं, वीनतडी० ॥ ३९
- २ जय जिनवर जग हितकारी रे, दीवालीनुं. ७३
- ३ मारग देशक मोक्षनो रे, दीवालीनुं. .... ९०
- ४ गिरुआ रे गुण तुम तणा, श्रीवर्द्धमान० ॥ १२८
- ५ शासन नायक साहिब साचो, अतुली० ॥ १४६
- ६ चरण नमी जिनराजनां रे, मायुं एक० ॥ १६७
- ७ कुंजन नव लहि दोहिलो रे, कहो तरी० ॥ १९९
- ८ प्रभुजी वीर जिणंदने वंदीयें, चोवीशमा० ॥ २४०
- ९ महारी वीर प्रभुजीने वंदना रे..... २४४
- १० रायरे सिद्धारथघरपटराणी. चौदसुपननुं स्तवन २४७
- ११ नारे प्रभुनहीमानुं, नहीमानुं रे अवरनी आण. २५०
- १२ वीरकुमरनी वातडी केने कहियें..... २५३
- १३ में नही जाण्यो रे नाथजी, मोसूं दूर पठाया. २६१
- १४ वंदो महावीर जिनेसर राया, माता त्रि० ॥ २७९
- १५ आज महारे आनंद ययो, प्रेमनां वादल० ॥ २८१
- १६ रे मन क्युं जिननाम विसाख्यो. ... २८२
- १७ आदि अंत जानुं नही, तुम हो अविनाशी. २९२
- १८ चउमासी पारणुं आवे, करि वीनति० ॥ ३१२
- १९ वीर जिणेसर साहिब मेरा, पार न लहुं० ॥ ३१५
- २० महावीर स्वामी मुगतें पढोता, गौतम० ॥ ३२१

- ११ जगपति तारक श्रीजिनदेव, दासनो० ॥ ३३६  
 १२ रे बंदन आयो, बाजत चेरी जुंगल० ॥ ३५४  
 १३ मुने ते दिननो वीशवास ते, प्रचुजी० ॥ ४००  
 १४ श्रीसिद्धारथ नंदन देवा, प्रचु सेव करुं० ॥ ४०२  
 १५ त्रिशला नंदन रे देहें, रचीयें पूजा अधिक० ४९४  
 १६ तार हो तार प्रचु मुज सेवक, जणी .... ५३१
- 

श्रीसीमंधरप्रमुखवीशविहरमानजिननां स्तवनां॥ १५१

- १ सुणोचंदाजी सीमंधर परमात्म पासें जाजो ॥ ४  
 २ मनहुं ते महारुं मोकले, माहारा वालाजी रे. ०३  
 ३ पुस्कजवऽ विजयें जयो रे, नयरी पुंमरी०॥ ९९  
 ४ चित्तहुं संदेशो मोकले महारा वालाजी रे. ३०२  
 ५ धनधनखेत्र माहाविदेहजी धनपुंमरीणि० ॥ ३१४  
 ६ श्री युगमंधरने केजो, के दधिसुत वीनतडीसु० ००  
 ७ श्री युगमंधर साहिवा रे, तुमहुं अविहड० १००  
 ८ साहेबं बाहु जिनेसर वीनहुं, वीनत० ॥ १००  
 ९ चतुर सनेही मोहना. .... १०१  
 १० साचो स्वामी सुजात, पूरव अरधजयोरी. १०२  
 ११ स्वामी स्वयंप्रज सुंदरू रे. मित्रनृ०॥ .... १०२  
 १२ श्री रूपनानन गुणनीलो. सौहे मृग० ॥ १०३  
 १३ जिममधुकर मन मालती रे. जिमकुमुदि०॥ १०४  
 १४ सूरप्रज जिनवर धातकी, पश्चिम अर्धजय० १०५  
 १५ धातकीखंमैं हो के, पश्चिम अर्ध जलो..... १०५  
 १६ शंखलंबन वज्रंधर स्वामी. मातासरस० .... १०६

- १७ नलिनावति विजयें जयकारी. चंझानन उ० १०७  
 १८ देवानंदन नरिंदनो रे ॥ जिनरंजना लाल. १०८  
 १९ जुजंगदेव जावें नजो, रायमहाबलनंद ॥ ला० १०८  
 २० नृपगजसेन यशोदामात, .... १०९  
 २१ पुस्करवर पूर्व अर्ध विराजे राजे रे साहे० ११०  
 २२ पश्चिम अर्ध पुस्करवरे. नंदनईश्वर० .... १११  
 २३ देवरायनो नंद, माता उमा मनचंद. .... १११  
 २४ देवयशा जिनराजीयो ॥ मनमोहन मेरे ॥ ११२  
 २५ दीव पुस्करवर पश्चिम अर्धें, विजयनलि० ११३

॥ लावणीयो १८ नी अनुक्रमणिका ॥

- १० श्रीजिनदासजी कृतजूदां जूदां घन दश. ४४०  
 ११ चल चेतन अब उठ कर अपने जिनमंदि० ॥ ४४१  
 १२ तुम नजों जिनेसुर देव, मुगतिपद पाइ. .... ४४२  
 १३ कब देखुं जिनवर देव, जगत गुरु ग्यानी. .... ४४५  
 १४ एक जिनवरका निज नाम, हियामें लेनां. .... ४४६  
 १५ खबर नही आ जुगमें पलकी रे, खबर० ॥ ४४७  
 १६ हारे तुं कुमति कलेसण नार लगी क्युं केडे. ४४८  
 १७ तुम तजो जगतका ख्याल इसका गानां. .... ४४९  
 १८ सुगुरुकी शीख. हिये धरनां रे, सुगुरुकी० ॥ ४५०

॥ होरी वसंत वगेरे ॥ ११ ॥ नी अनुक्रमणिका.

- १ ए कृतु रूडी रूडी माहारा वाला. .... ५४४  
 २ सुमति सदा सुखदाई हो, खेलन आये होरी. ५४४  
 ३ होरी खेलावत कानइआ, नेमीसर संगें० ॥ ५४५

- ४ नंदीरे नाहार नवरंग बनायो. .... ५४६  
 ५ वामा नंदन अंतरजामी, जीवन प्राण० ॥ ५४६  
 ६ नयरी वणारसी जाणीयें हो. अथसेन० ५४७  
 ७ श्री चिंतामणि पास प्रभु तारा मंदिर० ॥ ५४७  
 ८ ऐसैं होरी ते होय रही चंपा नगरीमें..... ५४८  
 ९ आदिजिनेसर गुरुजी, साहेब नेरी हो० ॥ ५४८  
 १० नमि निरंजन व्यावो रे, वनमें तप कीनो. ५४८  
 ११ सोरीपुर नगर मोहामणुं हो. समुद्र. .... ५४९

अथ प्रास्ताविक कवित, दोहा, चोपाइ वगैरे.

- १ सत्य स ठोडीश चतुरनर आदिक दोहा ११. ५५२  
 २ पहेलुं सुख जे दीजैं नरा, ए पांच चोपाइ. ५५२  
 ३ ते अजाण्यां माणसां रूपें जे राचंत, १२. ५५४  
 ४ सवे न सबजुग सरस हे. ए दोहो ॥ .... ५६४  
 ५ योगी सिद्ध कलंदर तापस इत्याद्यनेक० ६६५  
 ६ सज्जन हीरामें अधिक. इत्यादि सात दोहा ६७१

अथ बूटक बोलोनी अनुक्रमणिका.

- १ आठे कर्मनां उत्तरप्रकृति सहित नाम. ५६५  
 २ नवतत्त्वनां उत्तर जेद सहित नाम कहां ठे. ५६९  
 ३ चोवीश दंभकनां उत्तर जेद सहित नाम. ५७७  
 ४ प्रत्येक दंभकें विचारवाना चोवीश द्वारनां  
 उत्तर जेद सहित नाम कहां ठे. .... ५८२  
 ५ चौदमार्गणानां उत्तर जेद सहित नाम. ५८६  
 ६ वत्रीश अनंत काय अने बावीश अजह्य० ५८८

- ७ जुदा जुदा जीवोना आयुनुं प्रमाण कह्युं ठे. ५९०  
 ८ जिनजुवने थतीचोराशी आशातनानां नाम. ५९१  
 ९ सात नय, शर निक्षेप, आठ मद, आठ मांग  
 लिक, बार व्रत, चौद गुणठाणां, संमूर्द्धिम  
 मनुष्यने उपजवानां चौद स्थानक, साधु  
 ना सत्तावीश गुण, अकर्मजूमि कर्मजूमि  
 क्षेत्र, सिद्धना गुण, सात नय, सात सुख,  
 ठ दर्शन, ठ नापा, चक्रवर्तीनां चौद रत्न. ५९३  
 १० चारे गतिना जीवोना चेद अनेकरीतें देखा  
 डीने पठीं तेमनां आयु देहमानादिक कहां  
 ठे, तथा अढीक्षीप वर्णन, सिद्धना पन्नर चेद. ५९७  
 ११ समयादिक कालनां प्रमाण संहेषथी. .... ६०७  
 १२ चौद नियम, दश पञ्चस्काण, बार पर्पदा,  
 पांच समकेत, चार विकथा, पांच समवा  
 य, दश श्रावक तथा तेमना ग्रामादिकनां  
 नाम, तेर काठीया, पांच मिथ्यात्व, पांच  
 सवाय, पांच देवाधिदेव, पांच प्रमाद, पांच  
 अनिगम, पांच स्थानथी जीव निकले, सुल  
 नबोधी, दुर्जनबोधि थवानां कारण, त्रण  
 मुद्रा, त्रण आहार, साडा पञ्चीश आर्यदेश  
 नां नाम तथा ग्रामनी संख्या, दश दृष्टांत,  
 बार वानां पामवां दुर्जन, तूटक शीखामण. ६०८  
 १३ पांचमे आरे त्रीश बोल प्रवर्तज्ञे, तेनां नाम. ६१७  
 १४ पञ्चीश राजघर तथा राजस्थानादि कहां ठे. ६१९

- १५ चोराशी गह्वनां तथा सात निहवनां नाम. ६२१  
 १६ अयोध्यानुं प्रमाण प्रमाणांगुलादिनां स्वरूप. ६२४  
 १७ ठ ज्ञेय्या तथा माता पितादिना उपकार. ६२८  
 १८ चक्रवर्तीनी रुद्धिनुं प्रमाण कथ्यं ठे. .... ६३५  
 १९ पद्मीपतन फल नक्षत्र, वार, तिथि फल. ६३८  
 २० अढार वर्ण तथा १०८ वणिकजातिनां नाम. ६४०  
 २१ सूतक संबंधि सविस्तर विचार कह्यो ठे..... ६४३  
 २२ पीस्तालीश आगमनां नाम मूल तथा टीका,  
 निर्युक्ति, आदिकनी संख्या सहित एमां के  
 टलाएक टीका प्रमुखनां कर्ता मद्दान् आ  
 चार्यादिकोनां नाम पण दर्शाव्यां ठे. .... ६४५  
 २३ नारकीनी वेदनानुं संक्षेपथी वर्णन. .... ६५८  
 २४ पुरुष, तथा स्त्रीना शोल शणगारनां नाम. ६६५  
 २५ त्रिपष्टि शिलाका पुरुषना नामादिकनो यंत्र. ६७२  
 २६ नवपद आयंबिल तपनी उज्जीनो विधि. ६७५  
 २७ श्रीवीश स्थानक तपनो विधि सामान्यथी. ६७४  
 २८ जव्यजीवोने आदरवा योग्य १२३ प्रकारनां  
 तप तथा तेना उजमणादिकनो विधि. ७०६  
 २९ अजव्यजीव कये कये स्थानकें न उपजे? ७४७  
 ३० पूर्वोक्त तपमांहेजां केटलाएक तपना यंत्र. ७४९  
 ३१ पुस्तक समाप्त कथ्यं ठे. .... ७५६

ए पुस्तकमां सर्वमली ( ७५७ ) बाबतो ठे.

॥ इत्यनुक्रमणिका समाप्ता ॥





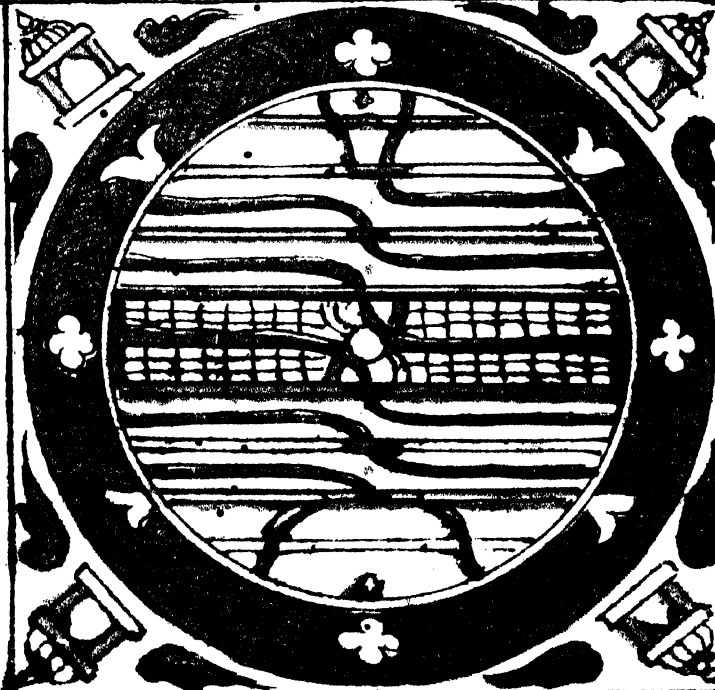
## ॥ અઢી દ્વીપ વર્ણનમ્ ॥

તીર્થ લોકના અસંખ્યાતા દ્વીપ સમુદ્ર છે, તેના મધ્યમાં પીસ્તાલીશ લાખ યોનન પ્રમાણ અઢી દ્વીપને વિષે મનુષ્યની વસ્તિ છે. તે અઢી દ્વીપમાં પણ પ્રથમ નંબુદ્વીપ મધ્યમાં ગોલ ચાલીને આકારે લાખ યોનનું છે. તેમાં સાત વાસ ક્ષેત્ર છે. તિહાં પહેલું દક્ષિણ દિશા તરફ તેમાં આપણે વસીયે છે એ તે ભરત ક્ષેત્ર છે, તેની ત્રણમાં વૈતાલ્ય પર્વત છે, તે પર્વતની દક્ષિણ ખાતુ ત્રણ ખંડ તથા ઊત્તર ખાતુ ત્રણ ખંડ મલી છ ખંડ ગંગા અને સિંધુ નદીથી થયેલા છે, તે છ એ ખંડમાં બ્રહ્મીશ હ્રસ્વ ર દેશ છે. એ ભરત ક્ષેત્રની સીમા ચુલ હિમવંત પર્વત સુધી છે. હિમવંત પર્વત પછી હિમવંત નામે યુગલિયાનું ક્ષેત્ર છે. તે પછી મહા હિમવંત પર્વત છે, તે પછી વાત્રી હરિવર્ષ નામે યુગલીયાનું ક્ષેત્ર છે. તે પછી નિર્ધવ પર્વત છે, પછી પૂર્વ પશ્ચિમ એવા બે બિલાગે વહેવાળું થું મહા વિદેહ ક્ષેત્ર છે. તેની વચ્ચેમાં મેરૂ પર્વત છે, અને મેરૂની ઊત્તર દક્ષિણે દેવકુડ તથા ઊત્તર કુડ એ બે યુગલીયાના ક્ષેત્ર છે, તથા ચાર મહોદાગ નદના પર્વત છે, પછી નીલવંત પર્વત છે, પછી રમ્યક નામે યુગલીયાનું ક્ષેત્ર છે, મછી રૂપી પર્વત છે, તે પછી હિરણ્યવંત નામે યુગલીયાનું ક્ષેત્ર છે, તે પછી શિખરી પર્વત છે, પછી છેહેલું ઊત્તર તરફ એ ભરત ક્ષેત્ર છે અને નંબુદ્વીપને ફરતો બે લાખ યોનન પહોલો લવણ સમુદ્ર છે. તેને ફરતો ચાર લાખ યોનન પહોલો ધાતકી ખંડ ચૂડીને આકારે છે તેને ફરતો આઠ લાખ યોનન પોહોળો કાલોદ સમુદ્ર છે. તેને ફરતો શોલ લાખ યોનન પહોલો પુષ્કર દ્વીપ છે તેને અર્ધ લાગે આઠ લાખ યોનન સુધીમાં મનુષ્ય છે, તેટલો ભાગ માનુષીતર પર્વતે કરી વીટેલો છે, પૂર્વે નંબુદ્વીપમાં ને પર્વત તથા વાસ ક્ષેત્ર કહ્યાં, તેથી બમણા ધાતકી ખંડમાં છે, અને પુષ્કર અર્ધ દ્વીપમાં પણ બમણાં છે. ઈતિ ૥

अदीदीव



अदीदीव

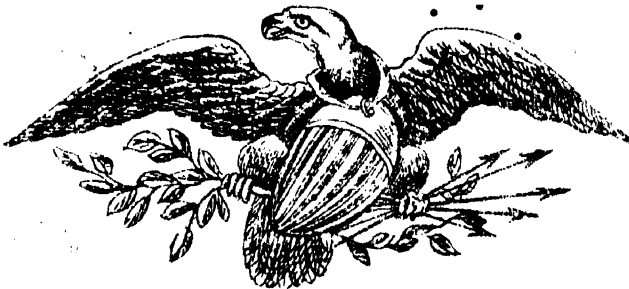


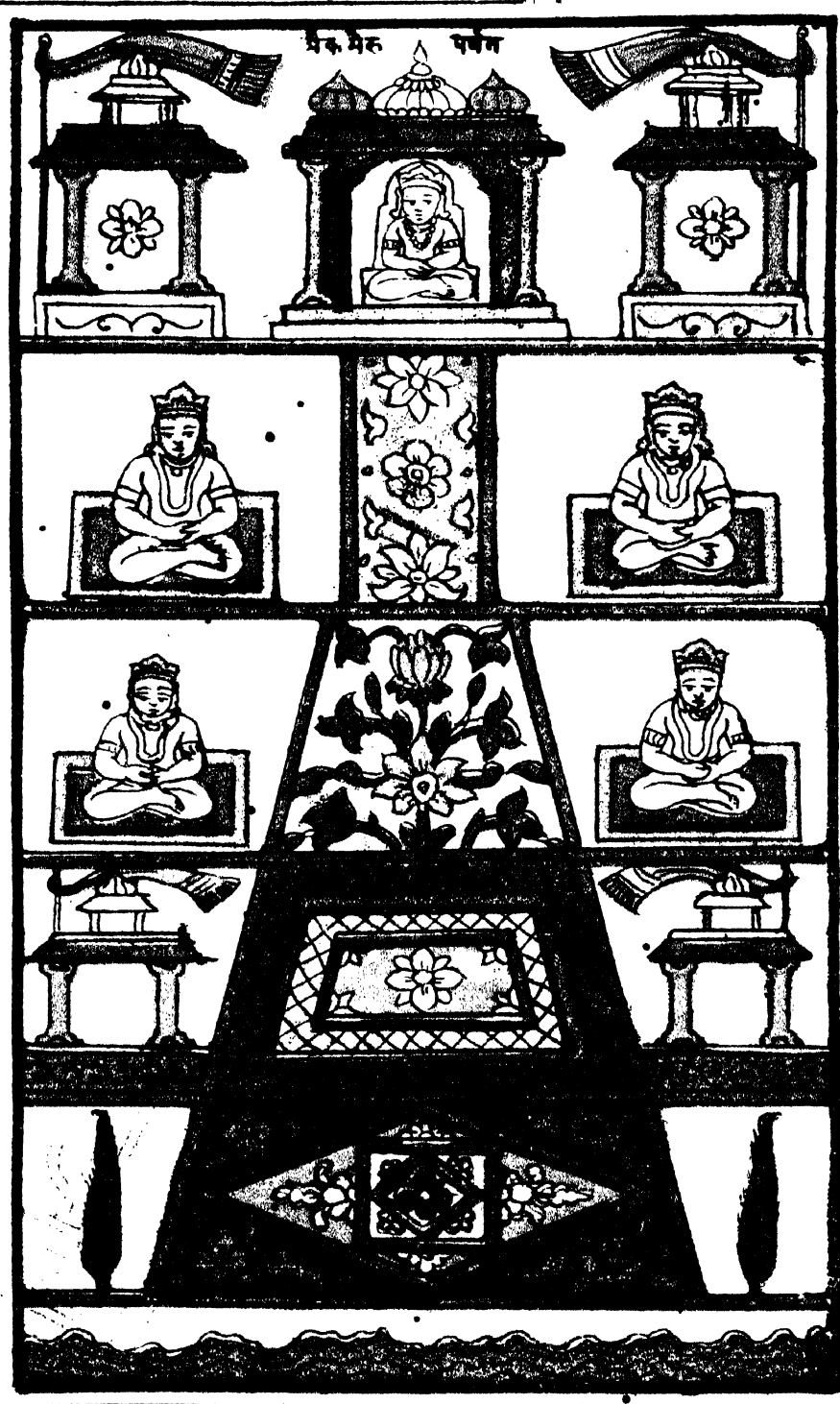
## ॥ મેરૂ પર્વત સંક્ષેપ વર્ણનમ્ ॥

મેરૂ પર્વત ઉનકમય વાટલો છે, તેની ઊંચાઈ લાખ યોજનની છે. તેમાં એક હબ્બર યોજનનો ડાંડ પૃથ્વી માટે છે, અને ઊપર નવાણું હબ્બર યોજન છે, તથા તે શિખરને વિષે એક હબ્બર યોજન પહોલો છે, અને નીચે ધરતીમાં તલીયે દશ હબ્બર નેવું યોજનની ઊપર વલી એક યોજનના અગીયાર ભાગ કરીયે તેવા દશ ભાગ બેટલો પહોલો છે, તે લાખ યોજનના ઊંચા મેરૂની ઊપર વલી આલીશ યોજનની ઊંચી ચૂલિકા છે, તે ચૂલિકાની ઊપર એક શાશ્વત બિનમંદિર છે.

તે મેરૂના શિખરને વિષે ચૂલિકાના તલીયામાં પંડક વન છે, તેમાં ચાર દિશાયે ચાર બિન લુબન છે. તિહાંથી નીચે વલી છત્રીશ હબ્બર યોજન આવીયે તેવાં મેરૂવાને વિષે સોમનસ્ય વન છે, તેમાં પણ ચાર શાશ્વત ચૈત્ય છે. તે સોમનસ્ય વનથી સાડા બાસઠ હબ્બર યોજન ફેદલ આવીયે તેવાં ચૂલુનદન વન છે, તેમાં પણ ચાર દિશાયે ચાર બિન લુબન છે. પછી તે મંદન વનથી પાંચશે યોજન ફેડે આવીયે તિહાં સમમૂતલ પૃથ્વી છે, તિહાં ભદ્રશાલ વન છે, તેને વિષે પણ ચાર બિન પ્રાસાદ છે, એમ સર્વ ખલી સત્તર બિન પ્રાસાદ છે.

મેરૂનો પહોલો ડાંડ હબ્બર યોજનનો ધરતીમાં છે, તે માટી પાષાણ, વજ્રચ્છતથા ડાંકરાનો છે, તેથી ઊપર જીન્ને સોમનસ્ય વન સુધી ડાંડ યોજનનો ડાંડ તે સ્ફાટિક રત્ન, અંકુર રત્ન, રૂપા તથા સોનાનો છે. તેથી ઊપર છત્રીશ હબ્બર યોજનનો ચૂલુનો ડાંડ તે રક્તવર્ણ કનકનો છે. ઈતિ





॥ अथ नरक दोहाभारंभः ॥

तिहां मेथम डयी नरक पृथ्वी सुधी डया प्रहारनी वेदना छे ते  
संजंधी दोहा

पापइर्मथी प्राणिया, जपन्या नरक मज्जार ॥ परमाधामी  
परस्पर, वेदन क्षेत्र विचार ॥ १ ॥ त्रिहुं नरके त्रण वेदना, जी  
ब त्रिउमां घोय ॥ सातमिये क्षेत्र दोहथी, क्षण अइसुभन  
हिं होय ॥ २ ॥ लाठी जंगर डोरडा, पाजक तूण प्रहार ॥ नठड  
पड्ड डर जांघिने, हे मुद्गरनी भार ॥ ३ ॥ सांडे घाली सामटा,  
मारे विविध प्रहार ॥ धोर अंधारे घालिया, पडिया डरे पु-  
डार ॥ ४ ॥

॥ अथ पेहेला अंडनां चित्र संजंधी दोहा ॥

तीक्ष्ण रौद्र परिणामथी, घण लव संहार ॥ वैर जांघिने जी  
पना, नरक गतीने द्वार ॥ १ ॥ परमाधामी घेरियो, सांडे  
घाल्यो सोय ॥ शस्त्र जघाटा तोजिने मारण लाग्यो नोय ॥ ५ ॥  
लुव हिंसा पापे डरी, जपन्यो नरक मज्जार ॥ परमाधामी ते  
हने, हणवा डरे होकार ॥ ६ ॥ न त न न न डता, यपल स्व-  
त्वावी लव ॥ माथे मुद्गर पाडता, जहुजी पाडेरीव  
॥ ७ ॥ अनुचित डारन न डरे, तेहना अह क्वाज ॥

॥ जीब अंडनां चित्रना दोहा ॥

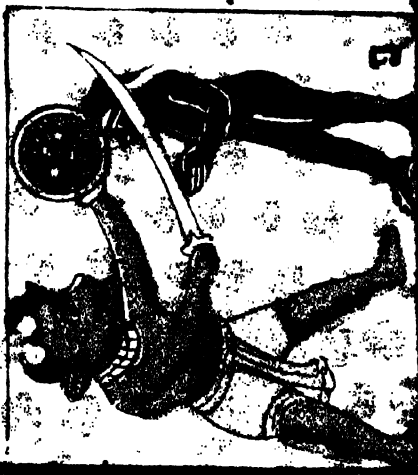
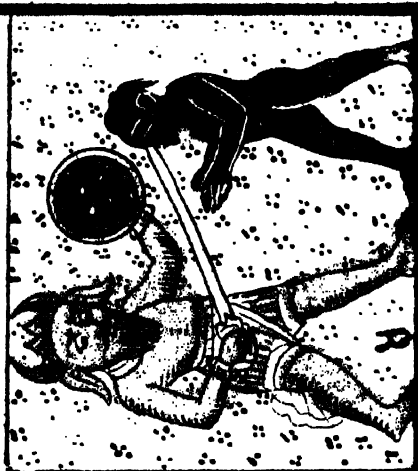
रगतण रसिया हूता, सुणि सुणि डरता तान ॥ धर्मस्थान विसां  
बखी, तेहना डपे डान ॥ ८ ॥

॥ त्रीन अंडनां चित्रना दोहा ॥

पर रमणीना डपनो, विषय बप्पाएयो नेछे ॥ देव गुड निर-  
भ्या नही, डडे अप्यो दोछे ॥ ९ ॥

॥ चौथा अंडनां चित्रना दोहा ॥

डायी डलियां तोडता, न गण्यो रातने दीडा ॥ न छे नरकमां जपना,  
डटे नाड अपीडा ॥ १० ॥ रीछाडि वन लवने, आही पाड्या ड्ड  
॥ नाड विधारी नाथिया, तेहना डरत निडंटा ॥ ११ ॥ सुरली गंध  
सूध्या घण, गुच्छा डूख डूराड ॥ अंतर डूजेज पडावीयां, छेने  
हनी नाड ॥ १२ ॥



## ॥ पांच्यमा अंकना चित्रना घोहा ॥

नृठ वचन ओव्या घण्टा, कुड कपटनी भाणा ॥ परमाधामी तेहनी, ७  
 ल कंडे नडताए ॥ ११ ॥ अंज डेल सुभ ओलता, डिहारी न डरे साण  
 ॥ साचो इदिय न ओलता, ७ ल कंडे नडताए ॥ १२ ॥

## ॥ छहा अंकना चित्रना घोहा ॥

घर घर लार नुता घण्टा, नडियो धर्म लगारा ॥ खूबसर तो चिंत्यो  
 नही, गाने धूसर सहे मार ॥ ३३ ॥ गाडी रथभां पेसिने, जलद घोडव्या  
 बाट ॥ अग्नि तपावी धूसरो, दई घोडवे घाट ॥ ३४ ॥ बनु डोहरसी रे-  
 नभां घोडवे दई मार ॥ जहिल घोडव्या बाटभां, तेहना अहं मकारा ॥  
 ३५ ॥ लाड डी लेई नारता, घण्टा घण्टा दोरा ॥ परमाधामी तेहने, आंधे  
 नेडा नेडाडा ॥ पापी पाप पूरा डव्या, खाव्यो खमाडी पास ॥ आंधे  
 धूसरो मेळीने, नारे सांडल रास ॥ ३६ ॥ आंधे सांडल मेळता, जेपर  
 मोरे मार ॥ पापी रथ पेच्या घण्टा, लोणवहु जने चार ॥ ३७ ॥

## ॥ सातुमा अंकना चित्रना घोहा ॥

रस्ते वृंथा रांकने, डरी डोप अन्याय ॥ मोडभाच्या तेहने, पीट्या घां-  
 एली मांथ ॥ ३८ ॥ काया डबला इल लज्यां, गान्धू भूला डंड ॥ ३९ ॥ धे मांथ  
 नाभिने, पीट्यां डरे आक्रंद ॥ ४० ॥ गरिज लुवने भारता, करना जहुं अ-  
 न्याय ॥ नू जिभ पण मारी घण्टी, पीट्या घाणी मांथ ॥ ४१ ॥

## ॥ आठमा अंकना चित्रना घोहा ॥

वनस्पति छेहन डसुं, काप्या तड वनराय ॥ घण्टा भूज डा डाडिया, झ-  
 पे तेहनी काय ॥ ४२ ॥ चटचट चट आभडी, अट अट अडिभासा ॥ तणा  
 भाडी ते नन्नभां, न्हाण डसीया डांस ॥ ४३ ॥ लाहुं जेभां सखरा,  
 न्यामे पडता लुवा ॥ अण्टा दीहा ते ओरतां, डरे नरकमे रीव ॥ ४४ ॥

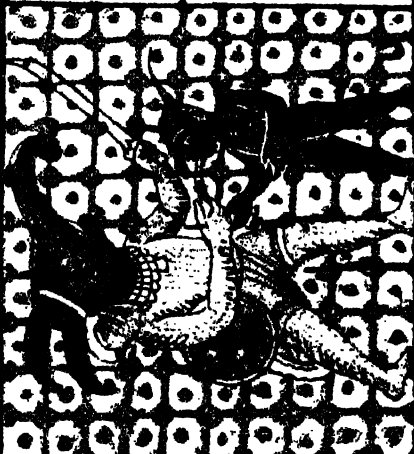
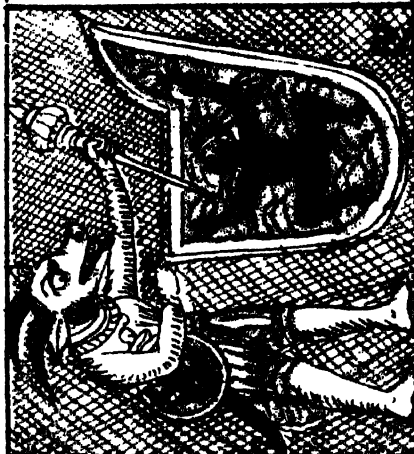
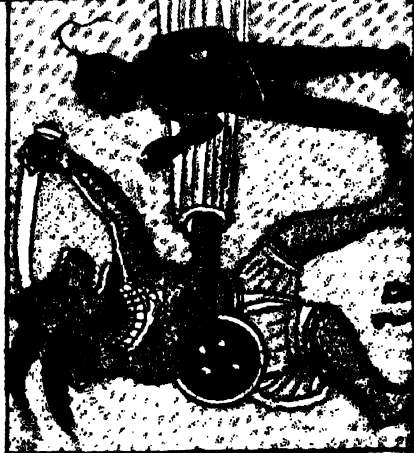
## ॥ नवमा अंकना चित्रना घोहा ॥

हलुवा छेवनने धिषे, कस्या पापने घोर ॥ परमाधामी तेहने, डेड डारभां ओलता ॥  
 ४५ ॥ कसाईने लव ने कस्या, हिंसा कर्म अघोर ॥ कुलीभां नर छेपना, डरता  
 जूआ रोला ॥ ४६ ॥ सव्या धान्य लस्या घण्टा, तडके नाभ्या लुवा ॥ कुली-  
 भां छेपना, पड्यो डरे छे रीव ॥ ४७ ॥ साहसि कु अछे भारता, सखलने व-  
 दिरोला ॥ कुलीभां नर छेपना, नमले ७ ॥ अर ने जेभां ॥ ४८ ॥ पारी पांडव्याला डी  
 या, रीड्या लुव विरीषा ॥ कुलीभां नर अवतल्या, छेडी पांडे सीरा ॥ ४९ ॥ कुली  
 जोह डादयतली, जलतां गरडा होय ॥ यज्ञ होम डीधा घण्टा, तेहना इलने जेय  
 ॥ ५० ॥ लांच लूंय भाधी घण्टी, डरता जेरा न्याय ॥ कुली भां न्हाणियां, छेपर छेघाय

## ॥ दशमा अंकना चित्रना घोहा ॥

इल नवास तोडता, दसरा बेगण गोर ॥ डंटा वीधे अंगभा, कांठनयाले नेर  
 ॥ ५१ ॥ इल नवारा दांडतां, इला सेनं भिछाय ॥ सुभ लोण विया तेहने, डां  
 टे च्यापे ॥ ५२ ॥ रागा सुर्घ्यां सहस्र तपाविने, तीभी अण्टीयां तोरता च्यापे ॥  
 ५३ ॥ अंगभां, डरता सौर अडोर ॥ ५४ ॥





## ॥ अंगी आरमा चित्रना होहा ॥

नामूल कलियां कुलनी, तोडी गुंथ्या हारा ॥ सामजी वृक्षे जाधिने, दे याजक-  
नी नार ॥ ११ ॥ होउ घणान होउता, तो ज्या तश्वर कुल ॥ आध्या वृक्षन  
सामजी, देजा न्यारा सुल ॥ १२ ॥ न्न न्न न्न उ न नेरीया, तो ज्या तश्वर  
पान ॥ १३ ॥ ॐ धे मस्तक जाधिने, ताणे कर हेहन ॥ १४ ॥ फुट सामजी  
मोटक जाधे तश्वर डाव ॥ १५ ॥ नीजा नेहन पानडा, नेसी आडा धार  
॥ १६ ॥

## ॥ आरमा चित्रना होहा ॥

मा आपे सुत मोहथी, मोढा डीधी पोप ॥ नारी बराधी नी बज्यो, हु-  
मराध दम शोष ॥ १७ ॥ छाती उपर वात दे, ताने धेई तार ॥ मान-  
पिता गुण आर ते सहता कष्ट अपार ॥ सुयरतुण मोहादु गीयु, दीया  
छातीर पाय ॥ वाते करीने नेहता, नी सरे कि से उपाय ॥ १८ ॥

## ॥ तेरमा आंकना चित्रना होहा ॥

डोत तमरोसा धेईने, कपट करघा घणी वार ॥ पवते पडता हुंज सहे,  
उपेर तरवारा री नार ॥ १९ ॥ वयन थुकाने नर हुवे, माया कपटी नेहा  
पटक पछाडी पवते, जंडजंड करे देहारा ॥ न्नुवा सोगद जावता, कर-  
ता युगली याड ॥ नेरावर यम हूत ते, करत पछाड पछाडा राग ॥

## ॥ चोद मा चित्रना होहा ॥

सामजी तशनें छाहउ, पापी जेणे न्यया ॥ पान कुप शस्त्र न मडे, जंड  
जंड होयु माया ॥ २० ॥ सासु बहु संतापति, करती तोड कपट ॥ परमाधामी  
तेहने देव हुंज स्पष्ट ॥ २१ ॥ करता जावत रागरा, धरधर त्रुज पाडा  
कहेता वाड कुलसणी, ते लहे हुंज अपार ॥ २२ ॥ नरक मोहथी ना  
शेता, हुट सामजी न्यया उपरधी पडे पानडा, न्नुवा मारया घाय ॥ २३ ॥

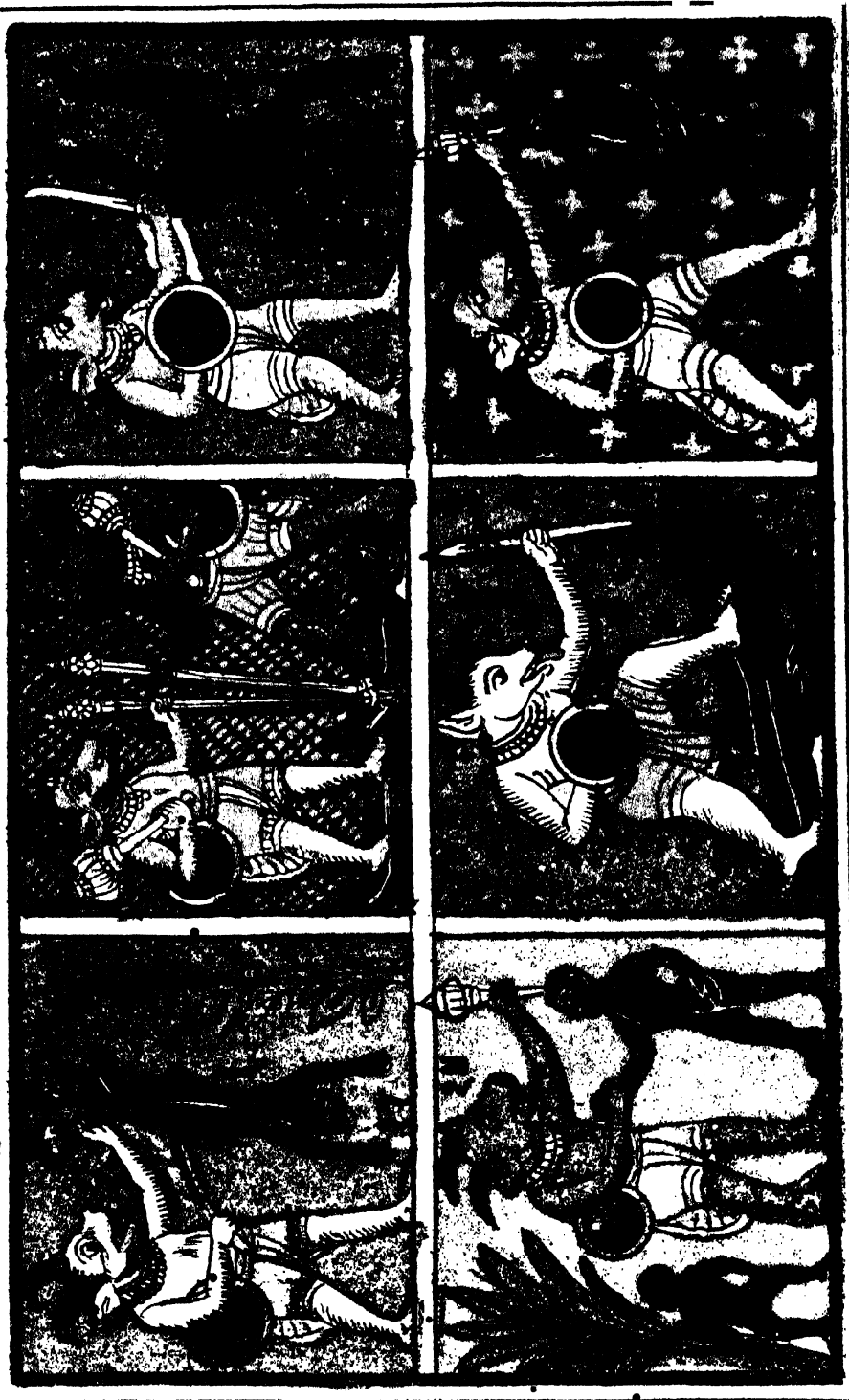
## ॥ पन्नर मा चित्रना होहा ॥

सासु बहु संतापति, हुंज घेती दिनरात ॥ न्नुवे नरक मा उपनी, न्यारी  
छातीपर वात ॥ २४ ॥ शोभ तणा सुत उपरे, धम डी धम धरना ॥ पाह  
भरार आहणी, उपर तार तरत ॥ २५ ॥ जंडती पोयर सासरे, देती  
सज्जल सराप ॥ हुडा कलक बढावती, अवगुण गाजी आपाण ॥  
घात करे विश्वास दे, छल करती छक माहा ॥ निज न्न नारी नेहने, दे  
वे हुंज अथाहापा ॥ अनुचित करन ने करे, तेहना छेद हवाला सा  
सामी धमन आधरे, पामे सुज रसाल ॥ २६ ॥ जंडती पोयर सासरे,  
करती कलेश कुडप ॥ वातेवात न्यजावती, न्नुवा त्रुं डीसे कुपण ॥

## ॥ शोल मा चित्रना होहा ॥

हुहाइ करी कापीयां, लीला मोहाय न्न ॥ परमाधामी तेहने, मस्त  
हु छेदे हुड ॥ २७ ॥ मोश मोहाला पावला, त्रुमि बिघारण नेहा ॥ पुन-  
थी काय आरामधी, पाम कष्ट अछेद ॥ २८ ॥





## ॥ स्वनरमा चित्रना घोहा ॥

नतां नड ननेरता, यपल स्वभावी लुब ॥ माथे इरसी पाडता,  
जहुली पाडे डीव ॥ ११ ॥ मित्र मांहे नता धडां, न्न न्न डापनां न्नडा  
परमाधामी तेहने, मारे इरसी मारापरा

## ॥ अदारमा चित्रना घोहा ॥

पूण्य वही प्रभवतो, उरतो अनरध मूला ॥ कामा ठरी गर्भ गलावतो  
तेहने प्रोयुं त्रिशूल ॥ ११ ॥ गुडरोही चेलो हुवे, वेप विराधड नेहा मार  
ग लोपी मत्तियो, पामे दुष्ट अछेह ॥ १२ ॥ मानवनी भव पात्रिने, हलि  
या नलयर लुब ॥ दया न आणी दि द्य मां, इरतो, पाप सदीबाडा  
निह्मछला कर्म डीया घणा पाप इत्या अति नेहा ॥ परमाधामी तेहने  
शूजे पराछे दैया ॥ १३ ॥ अग्नि आरंभ डिया घणा, डीया हिंसा धर्म ॥  
ते त्रिशूल ठीछाजीया, देप्रो आयां कर्म ॥ १४ ॥ कुसंगत डीधी घणीने  
ह सेवी परनार ॥ १५ ॥ उंधे शूजे पराछेया, दे वलि ठीपर मारापा

## ॥ योगाशीशमा चित्रना घोहा ॥

पाप प्रभावधी ठीपनो, कुली पाडनी माथे ॥ १६ ॥ चूटे डगडा मांहे  
डीडा जाय ॥ १७ ॥ वली ठीपर चूटे डगडा, त्रटत्रट चूटे डाय ॥ १८ ॥ मांहे प  
ज्योथडो, सहतो दुःख अपाय ॥ १९ ॥

## ॥ वीशमा चित्रना घोहा ॥

चोरी इरीने पारडी, वेता घननो राशि ॥ अथडेव व्यांधा इरी दैने  
हुजी त्राशा ॥ २० ॥ धर्मी धर्मे धूतिया, इरी डगाछे हरा परमाधामी ते  
दैता दुष्ट उर ॥ २१ ॥ पापे पेशी मेजतां, घणा डीया आंकं ॥ २२ ॥ न्न  
नरकमं ठीपनो, भरका पाडे अंध ॥ २३ ॥

## ॥ अडेवीशमा चित्रना घोहा ॥

वेर बिछेहा पाडीयां, जूझ्या इसाछे जाल ॥ यक ममाठी जरछीये  
पटके पछाडे जाल ॥ २४ ॥ जाला हरडी घरेणा लीया, जाल हत्या सु  
री अम ॥ २५ ॥ पटके जरछी परोछने, हेरवे इराने म ॥ २६ ॥ डीया निवछन  
गेरने, डाल्या नाणी आंधा ॥ २७ ॥ गगडावी गिरि ठीपर डेतेहनी साध ॥ २८ ॥  
हाली नणा नवने पिषे, दाज्या घरती पेट ॥ २९ ॥ परमाधामी तेहने मारे जर  
सी नेटागा

## ॥ आवीशमा चित्रना घोहा ॥

होका पीता होशरुं, दोव्या अणुगलनीरा तातुं ॥ ३० ॥ पावता, ठीडे जहुली  
पीर ॥ ३१ ॥ हिंसा धर्म न्न आदर्यो, जागो कुडम उडा ॥ ३२ ॥ परमाधामी तेहने,  
सुअमें शीशु रेड ॥ ३३ ॥ हणिया हुड्डा पीवतां, अग्नि नलादिड लुबा  
तातुं लोह तपावीने, सुअ व्याख्या डरे डीव ॥ ३४ ॥ डरी अंगार अग्नि तणा,  
यजमलरी यड, डोल ॥ ३५ ॥ न्न तमाडुने पीये, पामे नरकनी पोव ॥ ३६ ॥



## ॥ त्रैवीशमा चित्रना घोडा ॥

सम सोगुं वळी लांलुयां, सेव्या व्यसनन पारता जात योन गोवो  
करी, आपे मुजमे कर ॥ १ ॥ जीपर मुद्गर मारता, भूके मद्देरी पोडा  
करता किम येव्यो नही, अम कडे यम लाडाराता योधु व्रतन आदरी,  
जीया शीलना जंडा परमाधामी तेहने मारे सुद्धर दंडाडा अवे  
व्यसनन सेवता, धाम येद हवाज ॥

## ॥ चोवीशमा चित्रना घोडा ॥

टगा शेड करि दंडिया राख दुकुम मध जेत ॥ नर नरकमां जीपन्यो, माये  
घरी करोत ॥ १ ॥ अग्नी तपावी धरनिये, धिर्ध्व जेसाजी धारा ॥ जे नरा  
ताणे ताडिने, पापी करत पाडार ॥ २ ॥

## ॥ पंचवीशमा चित्रना घोडा ॥

अनाचार अति सेवतो, करतो घणा अन्याय ॥ वळ नला काय करी,  
वीधेला जागा पाय पांशा गजके शास्त्री घोरडे, घोडावे देई मारा ॥ हिंडतो  
हेड पडे, पगनी पीड अंपार ॥ धरती धुंभी अग्नि न्यु, तीभी करवत धार  
॥ तिहा जीपर अदावता, करतो जहू पाडारा ॥ ३ ॥ साधने संतापना, व  
अन कळ्यां अति घोर ॥ परमाधामी तेहने शास्त्री देई जेरां गा

## ॥ छवीशमा चित्रना घोडा ॥

उजाल धर्षने काडीयां हात्र लढी दाहा ॥ पापा रलधी पाभीये, नरक नि  
वासडी आहा ॥ १ ॥ इधिर रुप मंदिरा करी, प्याले अग्नि तपाया सुज  
जेने पावता, वेदने सही न नयारा ॥ मद्य पीधु मानवत्ववे, छया र  
हेन छयदा ॥ तरवा पाव लाव करी, तोहिन छूट गयल ॥ २ ॥

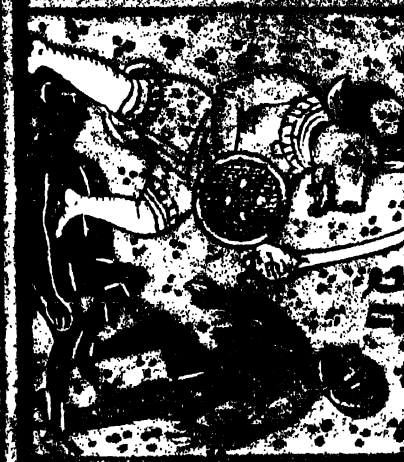
## ॥ सत्तावीशमा चित्रना घोडा ॥

निमनारीने परिहरि, पर रमली से नर ॥ सुला करे साधरे, घसे पाय  
संभार ॥ १ ॥ न्यु न्यु सुला जल जल, लु लु करे पुकार ॥ परमाधामी  
जोलीया, ताहारा कृत्य संभार ॥ २ ॥ पेजी पराई गोरजी, ने अनुराज  
घरंत ॥ सूडे हाडे श्वान निम, जाजे पेट भरंत ॥ ३ ॥ हिंसा करीने कुलता,  
नरा न्यु भाक्ष ॥ नेहने हिंसक गुड भव्या, पोहो न्या नरके गोक्ष ॥  
ने गुड जोलमी जपटी, तेहना भान्या वेला ॥ नर नरकमां जीपना, बा  
शामो नही क्षेला ॥ कोश पावड जीया घणा, दोव्या अणगज नीरा ॥  
परमाधामी तेहने पग पडजेने मीर ॥

## ॥ अष्टावीशमा चित्रना घोडा ॥

सूस जळने लांनिया, ना जोया गुड पास ॥ नर नरकमां जीपन्या, जंड  
जेडे कन्या तास ॥ १ ॥ विष दई आणस मारिया, करि करि कोध मयंडा  
परमाधामी तेहने, शरीर करे शतजंडा ॥ २ ॥





## ॥ अंगुलीसमाधिचित्रनाघोषा ॥

साधुनन संनापिया, निंदा द्विधी अपार ॥ तत्ति थंले जाधिने, दे सु-  
हृदी मार ॥ रा पांला देणी थर हरे ॥ कपला लागे देह ॥ हा हा मुळजा  
पोरजे, कधी न करुण तेह पारा ॥

## ॥ त्रीसमाधिचित्रनाघोषा ॥

चार स्नान कियानही ॥ अंतरगत भन लाय ॥ अंगुली पाणी  
ढोविया, पञ्चा नरकमां लय ॥ १० ॥ नलबेजीने, ७० भता, ३ घ्या मडीधी  
माय ॥ नलवे अग्नि नलभा, पड पाणीना पाय पारा ॥ साधु तणी  
निंदा करी, पूढे होधी गाल ॥ उंधे भस्तक तेहने, जाले अग्नी नल  
पाडा ॥ भुधु पुडा पाझा घेला, लोभ लान ने काळा ॥ भाजी सुंदे तेहने,  
दरिद्र कीधी मल ॥ हा दुगूर दव घाल्या घेला, जाळ्या वनथर नेह  
॥ परमाधामी नेहनी, जाले अग्नि देहापय ॥

## ॥ अष्टाश्रीसमाधिचित्रनाघोषा ॥

नलयूर लुब विरापिया, दिसा नगला ॥ अंग ॥ परमाधामी पटकता,  
नाहे वेतरणी माय ॥ ११ ॥ न्हावला घोबला जहु किंवा, ढोव्या अंगुली  
नीर ॥ उज्जरी मारी डोलिया, नदी सरोवर तीर पारा ॥ नाहे वेतरणी नीर  
नुं ॥ हेजो रुष्ट स्वकूप ॥ रसी दुधिर ने पायनो, कलकलतो रुह कूप ॥ उा  
जहु गुणीधिने, आये कांढे धाय ॥ नाजे पाछो साहिने परमाधामी  
पाय ॥ १२ ॥ मोयी लवमे ने कन्या, मान्य चरता लुब ॥ वेतरणीभा  
नाभिया, पली करावे रीष ॥ पा वलकु मुजधी, ठम को, नाहे वाक  
मारा लगार ॥ उंधे भस्तक जाधिने, ७० पर देवलि मारा ॥ १३ ॥

## ॥ अष्टाश्रीसमाधिचित्रनाघोषा ॥

बेश्या विषय विकारधी, अतिसेवी अनायास ॥ नष्ट नरकमां जीपनी  
सेहती दष्ट अपार ॥ १४ ॥ धूर्तपणी धन लेछीने, वली न नूवे वाटा हावे  
लाव नित हेजवी, मेजवि नेह निराट ॥ १५ ॥ बेश्या दुर्धमाया करी,  
सुज विजसे संसार ॥ नष्ट नरकमां जीपनी, घालो सहे यमभार ॥ १६ ॥

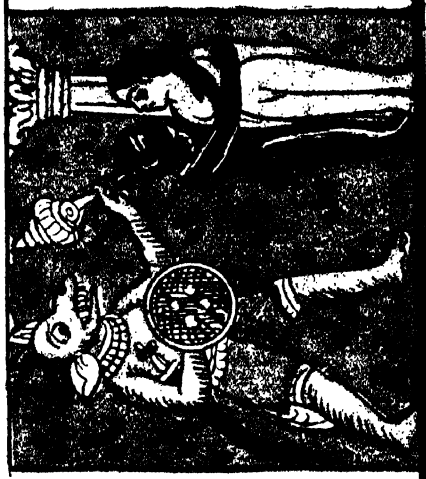
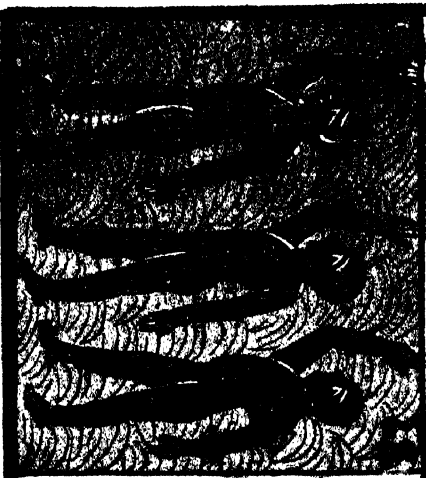
## ॥ तेजश्रीसमाधिचित्रनाघोषा ॥

छे पिउं कर मो हियो, संग कियो परनार ॥ अग्नि तपावी पूतणी, जो  
वे छाती जार ॥ १७ ॥ जलु मलु महाराज, भत घो मोटो आसा ॥  
जो हांसो कंनो, निम लेछी थोडी श्वास ॥ १८ ॥ परनारी ने घूटो नही  
तो लागे मोटो हाग ॥ परनारीने परिहरो, छिपर बजारी आंगा ॥  
रान्ने दडे जो कलेडे, नरक राय कुन्त ॥ निहने, यद्यो जार मो, तिने  
परनारी शुभीता ॥ १९ ॥ परनारीना नेहथी, पाणी उतरि नय ॥ थोडा  
सुजने कारणो, भार वरनो जाय ॥ २० ॥ घर हाणी हासी घाली, सुजे  
न सव आय ॥ २१ ॥ अग्नि यद्यो जार मो, परनारी घर नय ॥ २२ ॥

## ॥ अष्टाश्रीसमाधिचित्रनाघोषा ॥

कुडकुपट करी ओळवी, पर थापला धनराशा ॥ २३ ॥ विश्वासने वंशिया,  
सहे नरकमां त्रास ॥ २४ ॥ दिस घर्मन आदरी, हाथे चल्या नंता ॥ २५ ॥ नरक  
में जीपन्या, हेजो छेरा तंत पारा ॥





## ॥ પાંત્રીશામા ચિત્રનાદુહા ॥

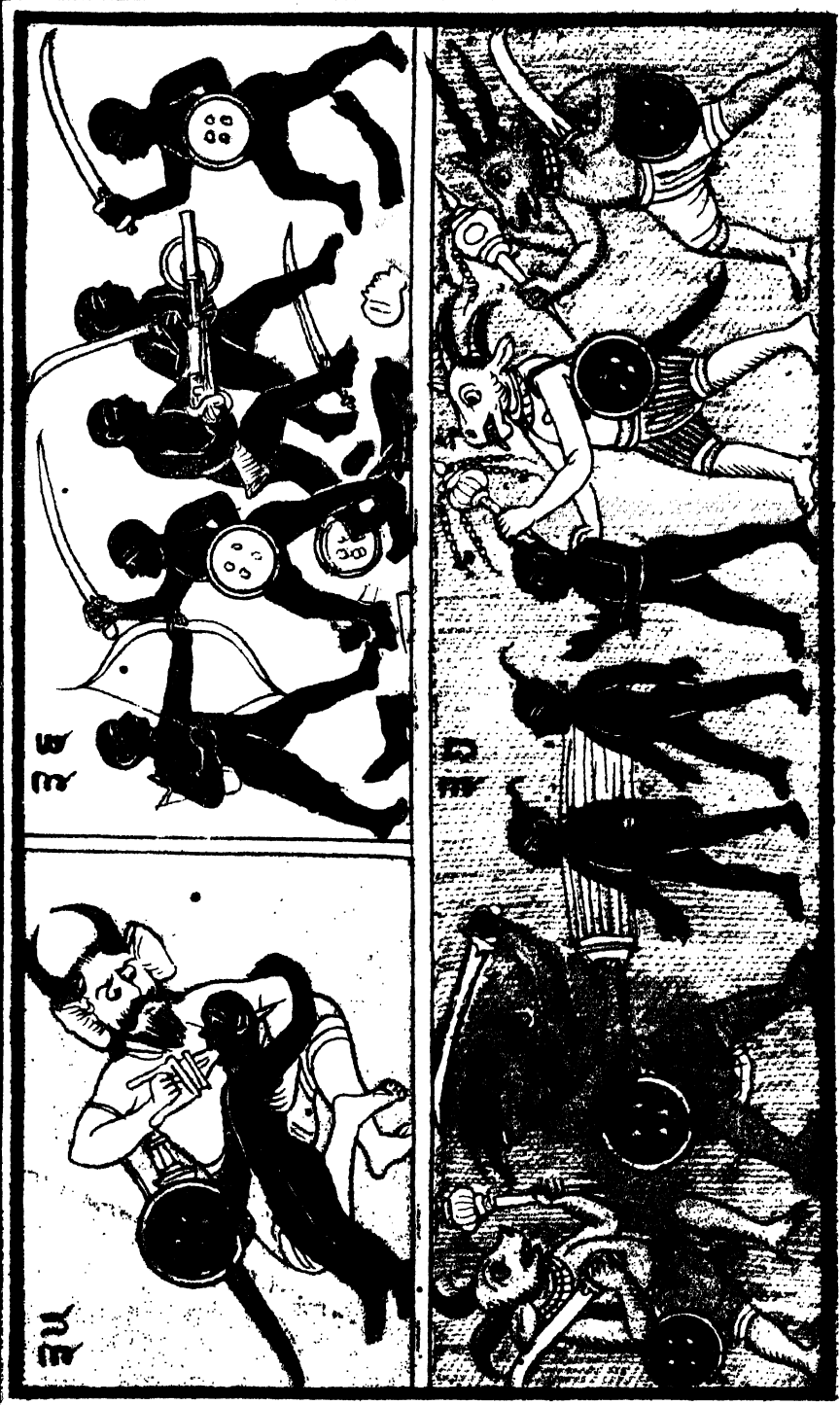
ધન દેતા ને ચારતા, કરતા રાગને દેષ ॥ પરમાધામી તેહને  
મુખમાં મારે મેખા ॥ ૧૧ ॥

## ॥ છત્રીશામા ચિત્રનાદુહા ॥

વસ્તુ વેચ્યા આપિયાં, ગાડા પોઠી ઊંટ ॥ સાહ કડીને તો  
જતાં, ચઢિટે માંડી વૂંટ ॥ ૧૧ ॥ એંધાણ પરાં ને મારતા, દેતા  
ઘડી ઊડાય ॥ ફૂડા બ્રજ બણાવતાં, પોહતા નરક મઝારા ॥ ૧૨ ॥  
ધગી ધગીશું વિણનતા, બેણ દેણરા ચોર ॥ ક્રિયા પમારા  
પાપના, ઠ્યૂં કરિ છૂટે કોર ॥ ૩૧ ॥ તાકી નીર કટારિયા, આ  
મા સામી ખાય ॥ પાપ ક્રિયા ભવ પાછલે, કોણ છુડવિઝા  
યા ॥ ૪૧ ॥ પૂરવ બચર સંબંધથી, કરે પરસ્પર ઘાત ॥ શસ્ત્ર  
ઝટોઝટ મારતા, રૂપે ભ્રસા કિહત ॥ ૫૧ ॥ પાપી પારાની પેરે,  
મળી મળીને ન્યયા ॥ કરડા વચન કહી ઘણા, ઊપર મેલે ઘાયા ॥ ૬૧ ॥

## ॥ સાડત્રીશામા ચિત્રનાદુહા ॥

ઘેરેયા હોલી તણા, હસતા પાણી દોલ ॥ પરમાધામી બોલિયા,  
ઘણી ઊડાવો રોલ ॥ ૧૧ ॥ તડ્યા તેલ ઊડાવિને, આણી કોપ  
અપાર ॥ પિયકારી ભરિ છાંદિને, ઊપર છાંટે ખાર ॥ ૨૧ ॥ ઓ  
છે પાણી માછલી, તરડડ કરતી તેહ ॥ ભરડો જચીને ફેંકતા,  
ઘાઝે ત્યાંરી દેહ ॥ ૩૧ ॥ પરમાધામી આગથી, તેલ તપ્ત કરેહ ॥  
ભરી પિયકારી તેહને, છાંટે વેદન અછેહ ॥ ૪૧ ॥ આલોરે વડ ઘેરિયા  
પાપકરમ હુશિયાર ॥ છાંચો તાતા તેંજશું, ઉપર લગાવ્યો ખાર  
પાપ ॥ માય સુણે ભગિની સુણે, સુણે વલિ જોડ બ્રજ ॥ ગાવે ઉ-  
ઘાડી ગાલિયા, લાને નહિય લગાર ॥ ૬૧ ॥ હોલી કલહનું મૂલ છે,  
લાન હીણ નર થાય ॥ બાલકનો ઓરે રહે, પણ અકલ બુઢાની નય ॥ ૭



## ॥ अउत्रीशमायित्रनाहोहा ॥

हरण शशाने जोकरा, डरता भमनी जहरा गरिजु लुबारे भारता,  
न्यत्रे लाज्यो पाछेवर ॥१॥ विया सिङ्गारा साङ्ग, डीबा लरनाडडा  
द्वललुबितने डारणे, डोए जगाया लड ॥२॥ सिंह सिङ्गार डीधा घण्टा,  
जाध्या वयुर अयाज ॥ पाप डुरभयी पाभियो, नरक निगोडडी नगपाउ ॥  
परमाधामी बाधना, डपकरी विकराव ॥ उछताडया डाडीने, सडरस  
जन्म विशाल ॥३॥ सिंह नलो लव सावन्, भान्या वनचर डुव ॥ हिंस  
ड लवभे हिंसिया, ते डरता जहु रीव ॥ पा ॥

## ॥ ओगाण याणीसमायित्रनाहोहा ॥

नुतो हतो शीङ्गरी, डीनी जहोत जुवारी ॥ डर डर लुबारी पोत, पडि-  
यो नरक भञ्जारा ॥ छेडारी भांस व्हवारे, सुला डरने प्रवावारे ॥ तरवो  
डर डर लाव, पडुड पापीने पावारे ॥ रा ॥

## ॥ याणीसमायित्रनाहोहा ॥

धोणीने लव घोषिया, वाड वस्तर वेशा ॥ नलयर लुव विण्ण सिया, ज  
एगल नीर अशेष ॥१॥ नरक वास प्रलावधी, नरकया ससी भाड ॥ न  
डुड पडुड यमुहुतते, डरत पछाड पछाड ॥ रा ॥ धोणी डपडा धो चाडरे, शिला  
जिपर पछाडरे ॥ त्यु परमाधामी पण पायड, पापीने पछाडरे ॥ रा ॥ अजिता  
मत्तभारारे, मा गरिजन तारारे ॥ बारबार डहुतुम अगेरे, मेलु ताशु  
विनती भारेरे ॥ रा ॥ तव जाले यभ रायार, पाप डीना सबाधार ॥ तु नरक  
तएाहु जेधारे, भोदु डुमु बिजजाधरे ॥ रा ॥ धिलमा ध्यान आणीरे,  
पाप डरी भोन्न भाणीरे ॥ तु नरक भा पडयार, परलवनी धितान न्मणीरे  
॥ रा ॥ पूरने घासको पाउता, डरी डुरि आजी डुरा ॥ नो जी शिला जिपर, ला-  
नि डुमो यडुयुर ॥ रा ॥ पथ्यर जिपर पडुडियो, छुटे लोही धारा ॥ डागा  
युटे तेहने धोणीनो अचतार ॥ रा ॥ यक्षु परल्लो धेजता, डुंजा माडा डप  
॥ शिला नले आपिया ॥ तार दछी लर पूरा ॥ रा ॥

## ॥ अउतालीसमायित्रनाहोहा ॥

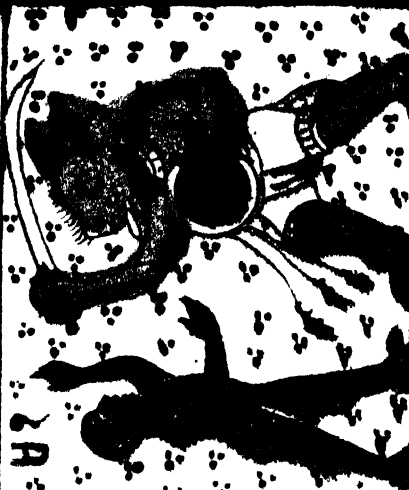
महभांस लक्षणा विपाड होहा ॥ पशु लुव भराधार, मधुभांस ते जायारे ॥  
ते डुम जोदये आचारि ड्यु रोवे पापी लुव डारे ॥ रा ॥ तव जाले डर न्मडीरे  
अज्जो भोडु छोडीराने लवभं न्मशुरे, श्री निनधर्म आदर शुरे ॥ रा ॥  
डीयो जिपडार न बीसार शुरे ॥ त जने तट डी ओल्यारे, सुपडो रहे मो  
हल्यारे नरनालव पायारे, ते ता युही गमायारे ॥ रा ॥ धीयो रोव्या  
शुं नह विसर गयारे ॥ रा ॥ जेस गलारा नडीतारे, डीया विण-  
नेही सरतारे ॥ ते तो हरि न त्यागीरे, ज्ञाने लय जागीरे ॥ रा ॥  
छेडारी जाल जितारारे, जिपर जार सयारारे ॥ रा ॥ हबे माडी माधर  
मुशालारे, वीधो तेने त्रिशुलारे ॥ रा ॥ भाङ्गार डरतारे, हीये रोप-  
रतारे ॥ त्यारे घड घड लागा पापी धुनवार ॥ डिया पाप डुरभने ज-  
ज्वारे ॥ छीपाना लवने धिष, डीबा रंगलापास ॥ परमाधामी ते  
हने घण्टो पभाडे बास ॥



३२.



३३



## ॥ जेतालिसमा यित्रना होहा ॥

हरो बुवने घरो मझरे, जेने परमाधामीरे ॥ वैक्रिय लब्धे जेना बरे, तो लुं लंडव  
गोयारे ॥ १ ॥ ठिक होय उं डालारे, लुज नृणा अं डालारे ॥ तोडे शरीने आयरे,  
खोबी चांय अनायरे ॥ २ ॥

## ॥ त्रेतालिसमा यित्रना होहा ॥

पोजी पाण्या पासभा, तेनर मोर यमरे ॥ नथे नरकभां छिपन्यो, जमतो छष्ट  
कठोर ॥ १ ॥ को को करता कागडा, त्रट भट तोडी जाय ॥ परमाधामी पापनि,  
धमडी ब्यार धाय ॥ २ ॥ नीयतणे लव नाजिया, नदी सरोवर नाल ॥ ध्या न आणी  
दिष्टभां, पोहो नरक बियाल ॥ ३ ॥ ती जी आया तुडना, करड करि करि कोपाव  
लुग्या गृधने पंजिया, उडि करि रगिया दोष ॥ ४ ॥ गुण दोष करि क्रोधसं दव जे महार ॥  
लीम लय कर नरकभां, नाजे नरक मळार ॥ ५ ॥ गुण कर मुराजीरे, जोल जाल  
विकराजीरे ॥ ६ ॥ उडि उडि जाही आयेरे, नाजे देह विदार ॥ ७ ॥ अंगा पांगे विलम्बा  
रे, आच न एा देछे एा करे ॥ बहन जहुली थायेरे, धर धर कोप जायेरे ॥ ८ ॥

## ॥ युगलिसमा यित्रना होहा ॥

जुयर होय दुःखावारे, कोलाने विकरावारे ॥ डाडे पापीने आयेरे, करि करि तुडणी  
लावारे ॥ १ ॥ ताती देलु धेज धेजे, न मोहे नाजे जाट ॥ परमाधामी तेहना, कटि घेन  
हाथ ॥ २ ॥ सूवर साबरे जो कडा, हरि एा दिडना लुवा ॥ मसल्या भाव्या अहो निरा  
करतो पाप सहीबा ॥ ३ ॥ परमाधामी तेहने, करी सूवरनां डपा ॥ हणाना हर्ष धरी प  
एा, करी जहु क्रोध कुडपा ॥ ४ ॥

## ॥ पिस्तालीसमा यित्रना होहा ॥

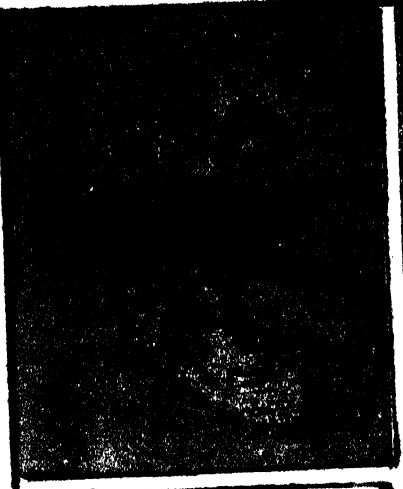
घाणा होडव्या घोडला, मान्या जखी आण ॥ ठरे शिकारो सामरी, नगणी धर्मनी  
भाण ॥ १ ॥ पीले बखो सोनेरीरे, कालि लीक डल केरीरे ॥ कधी बाधना दुपरे, झाडू  
ज केसरी विशपरा ॥ २ ॥ पाप कर्मभां माझिया, मरी नरकभां नय ॥ परमाधामी बाधनी  
डप करीने जाय ॥ ३ ॥ उछलता जो डालारे, गान करे अस्तरावारे ॥ अज करो कोठ  
वाहारे, पापीने पडो पछाडारे ॥ ४ ॥ जजिता घरसाणार ॥ मंत बावा लुगारे ॥  
न्यु परमाधामी हुंज टायड, दोषी आण बलगारे ॥ ५ ॥ दिन हसरा झुंजारे, नलो  
जोएने दुःखारे ॥ अज कोठ आध छुडवारे ॥ पज्यो कुहु आ करे पीडावारे ॥ ६ ॥ अ  
ज नहिं तोडि ओडरे, करे जाडने कोडरे ॥ परबरा पडियो आयेरे, मारे होडा होडरे ॥ ७ ॥  
मासमच्छर भाव्या घेला, केनी न भानी वात ॥ नथे छिपले ते नरकभां, घेणी पाभे  
छे त्रास ॥ ८ ॥

## ॥ छेतालिसमा यित्रना होहा ॥

सिंह शिकार क्रिया घेला, जाध्या वेंर जमणा ॥ पाप करीने छिपन्या, नरकभां हे ज  
लगा ॥ १ ॥ परमाधामी बाधनां, डप करी विकरा ॥ अंगा पांगे बहना, सहे लुव जहु मारना ॥ २ ॥

## ॥ सुडनालिसमा यित्रना होहा ॥

भार देवे यमराया रे, तपे तेने सुबायारे ॥ करी वैक्रिय सुडप, यिन्ता सरप जगा  
यारे ॥ १ ॥ तब करे हाथ हावारे, तोड पाळागा कायरे ॥ लुने लुज नदी डांहीरे, हुज दि  
ये छे घेला आछे ॥ २ ॥ झुंज कर होरो सुजेरे, परलुवमे दीधु हुंजरे ॥ ते तो धर्मन की  
घोरे, श्री नगनाधनोरे ॥ ३ ॥ अज झुंज करे वेरे, कीधा कर्मन ने वेरे ॥ अज घेन  
पणुं झुंज जाजेरे, पापी लुबडारे ॥ ४ ॥ करतो महारो महारो रे, कुटंजने परिवारोरे ॥  
अज तो डिणरो को नहीरे, नही कोठी ताहारे ॥ ५ ॥ सुसलमान तणे लवे, मान्या  
वीछी साप ॥ पाप कर्मभां पाभियो, नरक छष्ट महाताप ॥ ६ ॥ गुण दोष करि क्रोध  
भा, देवे दज महार ॥ लीम लय कर नरकभां, नाजे नरक मळार ॥ ७ ॥ सात व्यसन  
ने संभता, करता महोपा पाप ॥ नथे नरकभां छिपन्या, तेहने बीट्या साप ॥ ८ ॥  
भात पिताने पीडतो, करतो जगडा पाप ॥ नथे नरकभां छिपन्या, बीटी बजगा साप ॥ ९ ॥



## ॥ अउताजिसमा चित्रना होहा ॥

आपहुंभने करणे, कुन्या कोठि आरंभ ॥ माया अतिही झेल  
वी, रोप्यो पापनो धंल ॥ ११ ॥ कर्म अशुभ लोरे करी, लुब अघो-  
गति न य ॥ रोदन लेदन अहु सहे, कोठ सहाय न धाय ॥ १२ ॥

## ॥ योगलापयारामा चित्रना होहा ॥

पीछे पछताबो करे, कुमति मजीया आया ॥ ओटे गेलें घालियो  
जूंठ्यो बस्ती माया ॥ १३ ॥ माहों माहें जडाविया, करि हाकोरा  
हाड ॥ गयेडा मीठा मलग, सांड करी बाताड ॥ १४ ॥

## ॥ पयारामा चित्रना होहा ॥

हायमे पापी शुंड्युं, हारी मनुषा देह ॥ आडा कोठ न आवि-  
या, करता घणो सनेह ॥ १५ ॥

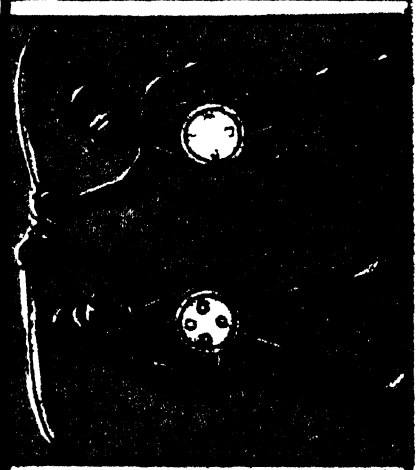
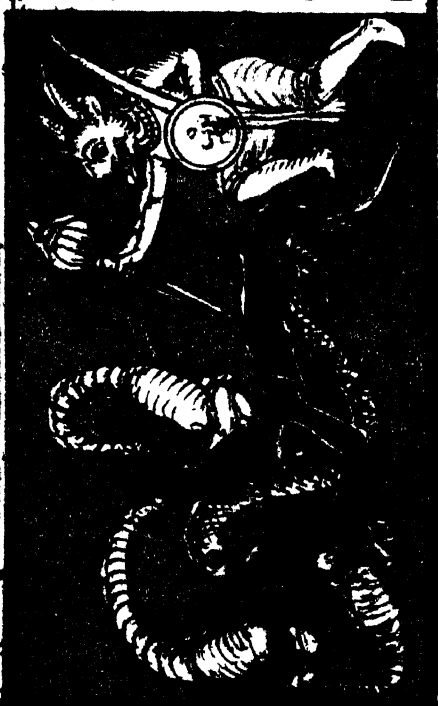
## ॥ अडेवाचनमा चित्रना होहा ॥

अहनिश परनिंदा करे, धर्मवयन न सुहाय ॥ पर परिवाधना  
योगथी, मरी नरडमां नय ॥ १६ ॥ परमाधामी तेहने, वेदना  
करे अपार ॥ अहि वीछी बलगाडिने, दिये बलि छीपर मारा ॥  
अण्ण दीही अण्ण सांभणी, करे पराई बात ॥ आम पिंड पापें  
लोरे, ते यंडाज उहात ॥ उता अतुली अल निंदा तणुं, जाण्युं  
व्यसन अछेह ॥ शोडतणी पुत्री परे, पामे अनरथ तेह ॥ १७ ॥  
गांडां गूंगां छेहतो, मान्या गरिआ रंडा ॥ नई नरडमां छिपन्या,  
तोडी आये उंभ ॥ पायाजी आधी योतरे, करत घणोरा पाप  
नई नरडमां छिपन्या, कोटे वीछू साप ॥ १८ ॥

## ॥ आवनमा चित्रना होहा ॥

मन मेलो मीठी मुखें, हुंड उपटनो कोश ॥ पाप करम पोते करी  
परना कोटे घोष ॥ १९ ॥ दुर्न सन्न न धूँ मले, ओले मधुरी  
वाण ॥ दुर्न कुटिलार्थ पडुं, नवी तने करे हाण ॥ २० ॥ पाप अन्न  
रे सेवतो, पहतो नरड मज्जार ॥ परमाधामी वेदना करे उट्यारी  
मार ॥ उता बीड्यो घाली आथमां, आरणी कोध कोडा ॥ कुटिब  
उटारी मास्ता, कांई न आले ओर ॥ २१ ॥





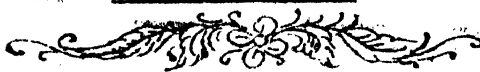
## ॥ त्रेपनमा चित्रना हुहा ॥

छत्रीश प्रहारें रसवती, निपन्नवेहु शिथार ॥ शाऊ पाऊ जहु सा  
 लणा, नित आरोगें सार ॥ १॥ ॥ शुभनला रसिया थडा, न करे  
 धर्म जगार ॥ लक्षा लक्ष न ओणंषे, माने धन्य अवतार ॥ २॥  
 पोतानो पिंड पोषियो, न दियुं सुपात्रें दान ॥ रसगारब डरि रा-  
 यियो, माय्यो मन धरि मान ॥ ३॥ ॥ हसतां आधा हो शशी, कंठ  
 मूल पशु मांस ॥ लोभन कीर्धां रात्रिनां, न गण्यो दोष दीसां-  
 स ॥ ४॥ ॥ छेदी कुमली डाडडी, आधां लक्ष अलक्ष ॥ परमा  
 धामी तेहने, देवे अहुजां दुःख ॥ ५॥ ॥ पाप सेवी नरकें गयो,  
 अशरणा थयो अनाथ ॥ परमा धामी तेहने, दुर्गंध उज्जदे  
 हाथ ॥ ६॥

## ॥ योपनमा चित्रना हुहा ॥

मेला माछी मेफडा, डोजि बाघरी नेहा ॥ श्वान शिडार घो-  
 डाबिने, लव हणान्या तेह ॥ १॥ ॥ ताडी मान्या निरडा, वि-  
 बिध बनयर लव ॥ हत्या करिने छिपन्यो, मरडे ऊरतो रीव  
 ॥ २॥ ॥ परमा धामी श्वाननां, उप डरी विकराज ॥ उस्तताडा  
 ग्याडाडिने, तड्डुडतानतडाज ॥ ३॥ ॥ पूरव पाप भन्नावथी, उ-  
 रता सोर जडोर ॥ परबश पडिया जापडा, जमता उष्ट उ-  
 डोर ॥ ४॥ ॥ पाप डरीने डूलता, जगार न आणी जाना ॥ प-  
 रमा धामी तेहने, उरता तीरन मारा ॥ ५॥ ॥ वारे न्ह नंनेर-  
 ता, घणाने उरता पीडा ॥ परमा धामी तेहने, ताडी मारे तीरा ॥  
 ६॥ ॥ तांडी देतां नीरडा, तड्डुड मरता लव ॥ छिज्या ते पाप  
 दलमां, शोये ऊरे सडीबाणा

छति नरड वेदना बर्णन हुहा समाप्त





વસ્તુપાલ તેનપાલ મંત્રીશ્વરે ને ને ધર્મ કાર્ય કર્યા છે તે  
નો સંસ્કૃત વર્ણન વિક્રમ સંવત ૧૨૭૮ ના વર્ષમાં એક પાંડિતે  
લખેલું છે તે નીચે પ્રમાણે લખીયે છે યે:

- ૧૩૦૦ તેરશે શ્રી નિન પ્રાસાદ શિખરજંધુ કરાવ્યા.
- ૩૨૦૨ ત્રણ હનર જશે ને જે પ્રાસાદ ગુણોધાર કરાવ્યા.
- ૨૩૦૦ બે હનર ને ત્રણશે મહેશ્વરનાં પ્રાસાદ કરાવ્યા.
- ૧૦૫૦૦૦ એક લાખ ને પાંચ હનર નવીન નિન બિંબ ત્રણ વ્યા.
- ૧૦૦૦૦૦ એક લાખ મહેશ્વરના લિંગ સ્થાપ્યાં.
- ૮૪ ચોરાશી પાષાણ બધે સરોવર કરાવ્યાં.
- ૮૮૪ નવશે ને ચોરાશી પૌષધ શાલા કરાવી.
- ૮૮૨ આઠશે ને બ્યાશી વેદશાલા કરાવી.
- ૭૦૧ તપસ્વીયોને રહેવા સાડે સાતશે ને એક મઠ કરાવ્યા.
- ૪૦૦ ચારશે પાણીનાં પર્વ કરાવ્યાં.
- ૧૩૫૦૦૦૦૦ છત્રીશ લાખ રૂબરૂ ખેરચીને જ્ઞાન પુસ્તકોના મંડારા  
કરાવ્યાં.
- ૩૦૦૦૦૦ ત્રણ લાખ રૂબરૂ ખેરચીને ખંખાયતમાં જ્ઞાન મંડાર  
કરાવ્યાં.
- ૧૮૮૫૦૦૦૦૦ ચમદાર કોડને છન્નુ લાખ રૂબરૂ શત્રુંગય તીર્થને વિષે  
ખેરચ્યાં.
- ૧૮૮૩૦૦૦૦૦ ચમદાર કોડને ત્ર્યાશી લાખ રૂબરૂનો શ્રીગિરનાર  
તીર્થ વ્યય કીધો.
- ૧૨૫૩૦૦૦૦૦ ખાર કોડને ત્રેપન લાખ રૂબરૂ આ જાગૃતીર્થ ખેરચું  
સંવત ૧૨૮૫ ના વર્ષે આજુયે પાયો નાખ્યો તે સંવત  
૧૩૮૨ ના વર્ષે આજુયે ધ્વજ મચાવી.
- ૫૦૦ પાંચશે સિંધાસન કાઢી ઘાતના કરાવ્યાં.
- ૫૦૫ પાંચશે ને પાંચ સર્પ સરણ કરાવ્યાં.
- ૭૦૦ સાતશે નીશાલ ભણવા માર કરાવી.
- ૭૦૦ સાતશે ધર્મ શાલા કરાવી.
- ૭૦૦ સાતશે શત્રુંકાર મંડાવ્યા, એટલે સદાગ્રત  
કરાવ્યાં.
- ૫૦૦ પાંચશે આમહણ ચાર વેદના ગ્નણ નિત્ય પ્રત્યેક વેદ  
ભણતા હતા. વર્ષ પ્રત્યે ત્રણ વાર સંઘ પૂજા સા  
દામાં વાતસાચ કરતા હતા.
- ૧૦૦૦ એક હનર કાપડી દિન પ્રત્યે ઘાન શાંતાયે આહાર  
લેતા હતા.
- ૧૨૧ સારી ખાણ વાત્રા શ્રી શત્રુંગયની કીધી.



श्री लक्ष्मी



मनुष्याकरे से



- २१ खेडवीश आचार्येने पदधापना करी.
- १००० खेड हन्नर सिद्धासन महात्मा निमित्ते कराव्या.
- ३५०० त्राण हन्नरने पांचशे तपोधन गच्छ संन्यासीनी धा-  
पना करी.
- १००० खेड हन्नर संघ पूज्ज करावी.
- १८०० खठारसे साधुजो खेडला महात्मा आहार बोहोरता.
- ८४ चोराशी मसीत तुरड जोडोनी करावी.
- ३०००० त्राण लाज स्वयं जेरयी श्री शत्रु नये तोरण जंघाव्यु.
- ४०० चारशे वरडन्या परणाव्या.
- ३०००० त्राण लाज स्वयं जेरयी हने तोरण जंघाव्यु.
- ३०००० त्राण लाज स्वयं जेरयीने द्वारिकाये तोरण जंघाव्यु.
- ४६४ चारशे चोराठ बाव्य करावी.
- ८०० नवशे डवा कराव्या.
- ३३३३३३०० सर्व मली त्राण खज्ज तहो नर कोड जहो तेर लाज अ-  
ठार हन्नर आठशे शोल लोढीये जीए खेटनु डव्य  
पुण्य माटे जेरय्यु संवत परज्जमा वस्तु पाते स्वर्गा-  
रोहण ड्यु.
- हवे तीर्थयात्राये गया तेवारे साथे ने परिवार जीयो  
ते डहे छे.
- २४ खेवीश नथ हाथी हांतना संघभां. हतां.
- ४५०० चार हन्नरने पांचशे सहै न वाला संघभां. हतां.
- ४५०० चार हन्नरने पांचशे गांडला संघभां. हतां.
- ११०० अगी आरशे वहेज.
- ५०५ पांचशेने पांच पालजी साथे हती.
- २००० जे हन्नर पीढी. हतां.
- ७०० सानशे खुजासनु.
- २२०० जे हन्नर जरी खलांजर साधु साथे हतां.
- ११०० अगीयांशे दिगम्बर वेषधारी साधु हतां.
- ४०८ चारशेने आठ छिट साथे हतां.
- ४५० चारशेने पन्नाशे ने न गायन डरनारा शोल डस  
घभां हतां.
- १००० खेड हन्नर डोढी श्री हाठ डरनारा साथे हतां.
- ३३०० त्राण हन्नरने त्राणशे चारण साथे हतां.
- ३३०० त्राण हन्नरने त्राणशे लाट साथे हतां.
- १३५० डुम्भार माटीना वासण जनावनारा साथे जीधा.
- ४००० चार हन्नर घोडा साथे हतां.

ॐ लेख्या उपर जावु वृक्ष नु दृष्टान्



૭૦૦૦૦ સાત લાખ માણસ સાથે હતા.

૫૦૦ પાંચસો સુતાર સાથે હતા.

૩૫૦ ત્રણસોને પચ્ચાશ દીવડિયાં સાથે હતા.

૧૦૦૦ એક હજાર સુહાર સાથે હતા.

એટલા સંઘના પરિવાર સહિત યાત્રાએ ફર્યા.  
હવે જીભ પણ મહોટા મહોટા સંસારી કામ કર્યા  
તેજીયે છે.

૩૬ છત્રીશ ગઢ કરાવ્યા.

૬૩ ત્રેશઠ વાંજત લઢાઈ ઠરવા માટે સંગ્રામ ચડીને જલ  
ફોરવ્યું.

૨૪ ચોવીશ ખિસ્મતની જોલાવી.

૧૮ અઢાર વર્ષ વ્યાપાર કર્યો.

૧૦૦૦ એક હજાર વર્ષ સન આપ્યા.

૪ ચાર રાત્ર સેવા કરતા હતા.

૧૮૦૦ અઢારસો વહાણ કરાવ્યા હતા.

વસ્તુપાલ તેજપાલની ઊદારતા આ પુસ્તકમાં મંગલિકા રૂપે આ  
પ્રમાણી છે. તે અન્ય યવનાદિકાના સ્થાનકોમાં કવ્ય વ્યય કર્યું છે  
તે પણ નૈનને દીપાવવા માટે ન છે તે એમનો ચારિત્ર વાંચવાથી સમ-  
જશે. વસ્તુપાલ સંવત ૧૨૯૮ માં સ્વર્ગારોહણ થયા અને તેજપાલ  
સંવત ૧૩૦૮ માં સ્વર્ગારોહણ થયા છે. ઇતિ શ્રેયં.

## ॥ રૂઝલેશ્યાસ્વભાવદોહા ॥

પટલેશ્યા કહિ હુવને, કૃષ્ણ નીલ કાપોતા ॥ તેને પદ્મ છટ્ટી રૂડલ,  
પરિણામે સજ હોત ॥ પા કઠિયારા પટ એકલા, કાષ્ઠ તારક કાન  
પા સૂજ લગી નખ આમ્રતર, દોજ્યો સફલ સમાન ॥ રાણા કૃષ્ણાથક  
કટણ કહે, કાલા કાટણ નીલ ॥ કહે કાપોતિ લઘુ કાલિ સજ ફલ  
વ્યા તેનલ લીન ॥ રાણા પદ્મ કહે પદ્મ ફલ લિયો, રૂડલ કહે સના  
ખા ધરતી પડિયા પદ્મ ફલ, વ્યો ખાવો કહે નખ ॥ શા નિનરી  
જે સી લેસિયા, તે સા જાધે ઈર્મ ॥ સદ્ગુરુ કી ગમ ને મિતે, નવ  
લગત કો ભર્મ ॥ પા ઇતિ પટલેશ્યા સ્વરૂપ દોહા ॥ સમાપ્ત ॥





॥ अथ ॥

## ॥ श्री नवकार मांगलिकरूप ॥

॥ ॐ नमो अरिहंताणं ॥ १ ॥ नमो सिद्धाणं ॥ २ ॥  
नमो आचरियाणं ॥ ३ ॥ नमो उवप्पायाणं ॥ ४ ॥  
नमो लोए सब सादूणं ॥ ५ ॥ एसो पंच नमुक्कारो  
॥ ६ ॥ सब पावप्पणासणो ॥ ७ ॥ मंगलाणं च स  
वेसिं ॥ ८ ॥ पढमं होइ मंगलं ॥ ९ ॥ इति पंच प  
रमेष्ठि मंगलम् ॥ एमां पद नव ठे, संपदा आठ ठे ॥

॥ अथ खमासमण अथवा प्रणिपात ॥

॥ इहामि खमासमणो वंदितं जावणिज्जाए  
॥ निसीहिआए ॥ मढएण वंदामि ॥  
॥ अथ चैत्यवंदन ॥

॥ इह्वाकारेण संदिसह जगवन् चैत्यवंदन करं ॥  
इहं, जय जय महाप्रभु ॥ देवाधिदेव, सर्वज्ञ श्रीवी  
तराग देव ॥ मुह दिठं परमेसर, सुंदर सोम सहाव,  
जूरि जवंतर संचित, नछो सो सवि पाव ॥ १ ॥ जे  
में पाप कियां बालां पणो, अहवा अन्नाणो ॥ अस्सुज  
वंतर ॥ सो सो खंम, जयो परमेसर ॥ तुह मुह  
दिठं सिरि पास-जिणोसर ॥ २ ॥ पास पसी पसाउं क  
रि, वीनतडी अवधार ॥ संसारडो बिहामणो, सामी  
आवागमण निवार ॥ ३ ॥ हब्बडा ले सुजरकणा, जे  
जिनवर पूजंत ॥ एके पुसैं बाहिरा, परघर काम करं

त ॥ ४ ॥ कवणें वाडी वावीयां, कवणें गूंथ्यां फूल ॥  
 कवणें जिनवर चढावियां, जाव सरीसां मूल ॥ ५ ॥  
 वाडी वेजो मोहोरीउं, सोवन कूंपली एण. ॥ पास  
 जिणोसर पूजियें, पंचे अंगुलीएण ॥ ६ ॥ दो धोला  
 दो सामला, दो रत्तोप्पलवन्न ॥ मरगयवन्ना डुन्नि  
 जिण, सोलस कंचनवन्न ॥ ७ ॥ नियनियमान क  
 राविया, जरहेसनयणानंद ॥ ते में जावें वंदिया, ए  
 चउवीस जिणंद ॥ ८ ॥ बहू ॥ कम्म नूमिहिं, कम्म  
 नूमिहिं, पढम संघयणि, उक्कोसो सत्तरिसउं जिणवरा  
 ण विहरंत लप्पइ, नव कोडी केवली, कोडि सहस्स  
 नव साहु गमइ ॥ संपइ जिणवर बीस मुणे ॥ विहुं  
 कोडीहिं वरनाण, समणह कोडी सहस्स डुअ, थु  
 णसुं निच्च विहाणि ॥ जयउ सामी. जयउ सामी,  
 रिसह सिरि सत्तुंजि, उच्चित पहु नेमिजिण ॥ जयउ  
 वीर सच्चउरिमंण ॥ जरुअब्बहिं मुणि सुवय, मुहरि  
 पास डुहडुरिय खंमण, अवर विदेहिं तिब्बयरा, चिहुं  
 दिसि विदिसि जिं केवि, तीआणागयसंपइ, वंडुं जिण  
 सबेवि ॥ सत्ताणवइ सहस्सा, लस्का ठप्पन्न अठ को  
 डीउं ॥ पंचसयं चउतिसा, तियलोए चैइए वंदे ॥ इति ॥

॥ अथ आदिजिन स्तवन ॥

॥ ते तरिया रे जाई ते तरिया ॥ ए देशी ॥

॥ आदिजिनं वंदे गुणसदनं, सदनंतामलबोधं  
 रे ॥ बोधंतागुण. विस्तृतकीर्ति, कीर्तितपथमविरो  
 धं रे ॥ आदि जिण ॥ १ ॥ रोधरहित विस्फुरडुपयो

गं, योगं दधतमजंगं रे ॥ जंगं नय ब्रजपेशलवाचं,  
 वाचं यमसुख संगं रे ॥ आदि० ॥ १ ॥ संगत  
 पद शुचिवचनतरंगं, रंगं जगति ददानं रे ॥  
 दान सुरदुम मंजुल हृदयं, हृदयंगम गुणजानं रे  
 ॥ आदि० ॥ ३ ॥ जानंदित सुरवर पुन्नागं, नागर  
 मानसहंसं रे ॥ हंसगतिं पंचमगति वासं, वासव  
 विहिताशंसं रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ शंसंतं नयवचनम  
 नवमं, नवमंगल दातारं रे ॥ तार स्वरमधधनपव  
 मानं, मानसुजट जेतारं रे ॥ आ० ॥ ५ ॥ इहं  
 स्तुतः प्रथमतीर्थपतिः प्रमोदा, ब्रूमद्यशोविजयवाच  
 कपुंगवेन ॥ श्रीपुंमरीकगिरिराज विराजमानो, मा  
 नोन्मुखानि वितनोतु सतां सुखानि ॥ ६ ॥ इति संपूर्णं  
 ॥ अथ शीतलजिन स्तवन ॥

॥ वारि प्रभु दशमा शीतल नाथ, सुणो एक वीन  
 ति रे लोल ॥ के वारि प्रभु माहारे तुमशुं प्रीत, के  
 अवरशुं आखडी रे लोल ॥ १ ॥ के वारि प्रभु नदिल  
 पुर अवतार, के दृढरथ राजियो रे लोल ॥ के वारि  
 प्रभु नंदा मात मलार, के कुलमां गाजीयो रे लोल  
 ॥ २ ॥ के वारि प्रभु श्रीवह्म लंढन पाय, के प्रभुजी  
 ने दीपतुं रे लोल ॥ के वारि प्रभु चंद कहे कर जोड,  
 के अविहड रंगशुं रे लोल ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ विमल जिनस्तवन ॥ कुंखडानी देशी ॥

॥ विमल विमल गुण राजता, बाह्य अन्यंतर  
 नेद ॥ जिणंद जुहारीएं ॥ सूची पुला दृष्टांतथी,

मन वंच काय निवेद ॥ जि० ॥ १ ॥ स्पष्ट बद्ध नि  
 यत्त ते, नीकाचित अतिशेष ॥ जि० ॥ आत्मप्रदे  
 शमांहे मल्या, मल ते कर्म प्रदेश ॥ जि० ॥ २ ॥  
 असंख प्रदेश, चिन्मयी, चेतन गुण संनार ॥ जि० ॥  
 प्रदेशों प्रदेशों रमी रही, वर्गणा कर्म अपार ॥ जि०  
 ॥ ३ ॥ पंच रसाग्रन नावना, जावित आतम तत्त्व  
 जि० ॥ उपलता वंभी कनकता, पामे उत्तम सत्त्व  
 ॥ जि० ॥ ४ ॥ प्रथम जावना श्रुततणी, तीजी तप  
 तिय सत्त्व ॥ जि० ॥ तुरीय एकता जावना, पंचम  
 नाव सुसत्त्व ॥ जि० ॥ ५ ॥ एम करी तर्व प्रदेशने,  
 विमल कखा जिनराय ॥ जि० ॥ नाम यथार्थ विचा  
 रीने, नमे स्वरूप नित्य पाय ॥ जि० ॥ ६ ॥ इति ॥  
 ॥ अथ सीमंधरजिन स्तवन ॥

॥ सुणो चंदाजी, सीमंधर परमातम पासें जाजो  
 ॥ मुज वीनतडी, प्रेम धरीनें इणि परें तुमें संजला  
 वजो ॥ ए आंकणी ॥ जे त्रण्य जुवननो नायक ठे,  
 जस चोशठ इंदर पायक ठे, नाण दरिसण जेहनें  
 खायक ठे ॥ सुणो ॥ १ ॥ जेनी कंचन वरणी  
 काया ठे, जस धोरी लंठन पाया ठें, पुंमरीगिणि नग  
 रीनो राया ठे ॥ सुणो ॥ २ ॥ बार पर्षदामांहि  
 विराजे ठे, जस चोत्रीश अतिशय ठाजे ठे, गुण पां  
 त्रीश वाणीयें गाजे ठे ॥ सुणो ॥ ३ ॥ जविजनने  
 ते पडिबोहे ठे, तुम अधिक शीतल गुण शोहे ठे,  
 रूप देखी जविजन मोहे ठे ॥ सुणो ॥ ४ ॥ तुम

सेवा करवा रसीयो बुं, पण जरतमां दूरें वसीयो  
 बुं, महा मोह राय कर फसीयो बुं ॥ सुणो ० ॥ ५ ॥  
 पण सद्धिव चित्तमां धरीयो ठे, तुम आणा खडग  
 कर ग्रथियो ठे, पण कांश्क मुजथी मरियो ठे ॥  
 सुणो ० ॥ ६ ॥ जिन उत्तम पूंठ हवे पूरो, कहे पद्मवि  
 जय थाउं शूरो, तो वाधे मुज मन अति नूरो ॥  
 सुणो ० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ उपसर्गहरस्तवनम् ॥

॥ उवसग्ग हरं पासं, पासं वंदामि कम्मघण  
 मुक्कं ॥ विसहर विस निन्नासं, मंगल कट्ठाण आ  
 वासं ॥ १ ॥ विसहर फुलिंग मंतं, कंठे धारेइ जो  
 सया मणुउ ॥ तस्स ग्गह रोगमारी, डुठ जरा जंति  
 उवसामं ॥ २ ॥ चिठ्ठ दूरे मंतो, तुळ्ळ पणामोवि  
 बहुफलो होइ ॥ नर तिरिएसुवि जीवा, पावंति न  
 डुक्क दोगच्चं ॥ ३ ॥ तुह सम्मत्ते लळे, चिंतामणि  
 कप्पपायवप्पहिण ॥ पावंति अविग्घेणं, जीवा अय  
 रामरं ठाणं ॥ ४ ॥ इअ संशुउ महा जस, नत्तिजर  
 निप्परेण हिअएण ॥ ता देव दिळ्ळ बोहिं, जवे जवे  
 पास जिणचंद ॥ ५ ॥ जिं किंचि नाम तिळं, सग्गे  
 पायालि तिरिय लोगंमि ॥ जाइं जिण बिंवाइं, ताइं  
 सवाइं वंदामि ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ अरिहंत चेइआणं ॥

॥ अरिहंत चेइआणं ॥ करेमि काउस्सग्गं ॥ १ ॥  
 वंदण वत्तिआए ॥ पूअण वत्तिआए ॥ सक्कार वत्ति

आए ॥ सम्माण वत्तिआए ॥ बोहिलाज वत्तिआए ॥  
 निरुवसग्ग वत्तिआए ॥ १ ॥ सद्धाए मेहाए धिईए ॥ धार  
 णाए अणुप्पेहाए ॥ वड्डुमाणीए ठामि काउस्सग्गं  
 ॥ ३ ॥ अन्नञ्ज उस्ससीएणं ॥ इति ॥

॥ अथ नमुत्तुणं वा शक्रस्तव ॥

॥ नमुत्तुणं, अरिहंताणं, जगवंताणं ॥ १ ॥ आइ  
 गराणं, तिब्बयराणं, सग्गं संबुद्धाणं ॥ २ ॥ पुरिसुत्त  
 माणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवर पुंमरीआणं, पुरिस  
 वर गंधहब्बीणं ॥ ३ ॥ लोगुत्तमाणं, लोग नाहाणं,  
 लोगहिआणं, लोग पईवाणं, लोग पङ्काअगराणं  
 ॥ ४ ॥ अन्नय दयाणं, चस्कु दयाणं, मग्ग दयाणं,  
 सरण दयाणं, बोहि दयाणं ॥ ५ ॥ धम्म दयाणं,  
 धम्म देसियाणं, धम्म नायगाणं, धम्म सारहीणं,  
 धम्म वर चाउरंत चक्क वट्टीणं ॥ ६ ॥ अप्पडिहय  
 वरणाणदंसण धराणं, विअट्ट ठऊमाणं ॥ ७ ॥ जि  
 णाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोह  
 याणं, मुत्ताणं मोअगाणं ॥ ८ ॥ सब्बनूणं मव्वदरि  
 सिणं, सिव मयल मरुअ मणंत मरुकय मवावाह  
 मपुणरावित्ति सिद्धि गइ नामधेयं, ठाणं संपत्ताणं,  
 नमो जिणाणं ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ तीर्थस्तुति ॥

॥ जे अइया तिब्बयरा, जे नविस्संति अणागए  
 काले ॥ जे आवि वट्टमाणा, ते सब्बे जावउ नमिमो  
 ॥ १ ॥ सुरकय मणुयकयं वा, चुवणतिगे सासयं च जं

तिष्ठं ॥ तं सयलमिह छिउवि हु, मण वयण तणुहिं  
पणमामि ॥ १ ॥ जळ य जिणाणं जम्मो, दिस्का  
नाणं च निसिहिया जळ ॥ जायं च समोसरणा,  
ताउ नूमिउ वंदामि ॥ ३ ॥ एवमसासय सासय,  
पडिमा शुणिया जिणंद चंदाणं ॥ सिरिमं महिंद  
जुवणिंद, चंदमुणि विंद शुअ महिआ ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ काव्यानि ॥

॥ अष्टापदे श्री आदि जिनवर, वीर पावा पुरि  
वरू ॥ वासु पूज्य चंपा नयरसिद्धा, नेम रेवागिरिवरू  
॥ १ ॥ समेत शिखरें वीश जिनवर, मोह पद्दोता  
मुनिवरू ॥ चोवीश जिनवर नित्य वंडुं, सयल संघ  
सुहंकरू ॥ २ ॥ इति ॥

॥ अशोकवृद्धः सुर पुष्पवृष्टि, दिव्यध्वनिश्चामर  
मासनं च ॥ नामंमलं डंडुनिरातपत्रं, सत्प्राति  
हार्याणि जिनेश्वराणाम् ॥ १ ॥ सकलकरमवारी मोह  
मार्गाधिकारी, त्रिजुवनउपकारी केवलज्ञानधारी ॥  
नवियण नित सेवो देव ए नक्ति जावें, ए जिन नजंतां  
सर्व संपत्ति आवे ॥ २ ॥ इति काव्यानि संपूर्णानि ॥

॥ अथ स्तुतिकाव्यानि ॥

॥ सकल कुशल वल्ली पुष्करावर्तमेघो, डुरित  
तिमिर जानुः कल्पवृक्षोपमानः ॥ नवजलनिधि  
पोतः सर्व संपत्तिहेतुः, स नवतु नवतां जो श्रेयसे  
पार्श्वनाथः ॥ १ ॥ दशावतारो जुवनैकमल्लो, गोपां  
गनासेवितपादपद्मः ॥ श्रीपार्श्वनाथः पुरुषोत्तमोऽयं,

ददांतु वः सर्वसमीहितानि ॥ १ ॥ श्रीपार्श्व  
नाथो नवपापताप, प्रशान्तधाराधरचारुरूप ॥ विघ्नो  
बहन्ता प्रणतोरगेंडः, समस्तकल्याणकरो . जिनेंडः  
॥ ३ ॥ वीरः सर्व सुरासुरेंडमहितो वीरं बुधाः सं  
श्रिताः, वीरेणानिहतश्च कर्मनिचयो वीर य नित्य  
नमः ॥ वीरात्तीर्थमिदं प्रवृत्तमतुलं वीर्य योः  
तपो, वीरे च धृति कीर्ति कांति निचय श्रीवीर  
नई दिश ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीअरिहंत स्तुति ॥

॥ एस करेमि पणां, जिणवर वसहस्स वड्ढमा  
णस्स ॥ सेसाणंच जिणाणं, सगणहराणं च मवेसिं  
॥ १ ॥ जग मब्बय ढीयाणं, वियंसिय वर नाण देवण  
धराणं ॥ नाणुक्कोयगराणं, लोगंमि नमो जिणवराणं  
॥ २ ॥ तिब्बयरे जगवंते, अणुत्तरे परक्कमे अमिय नाणी ॥  
तिन्ने सुगइ गइणए, सिद्धिपह देसियं वंदे ॥ ३ ॥ वंदामि  
महा जागं, महामुणिं महायसं महावीरं ॥ अमर नर  
राय महियं, तिब्बयरे मिमस्स तिब्बस्स ॥ ४ ॥ वयणा  
मएण चुवणं. निव्वावंता गुणेषु छावंता ॥ जिय लोग  
मुद्धरंता, अरिहंता हुंतु मेसरणं ॥ ५ ॥ उज्झिय जर म  
रणाणं, सम्मत्तदोसत्त सत्तसरणाणं ॥ तिद्दुयण जिण  
सुद्धियाणं, अरिहंताणं नमोत्ताणं ॥ ६ ॥ एवा श्रीअरि  
हंतने महारो नमस्कार होजो. श्रीअरिहंत कहेवाढे तो  
के जेणे राग द्वेष रूपीया वैरी जींत्या अने अठार दोपर  
हित थया ते अठार दोपनां नाम गाथायें करी कहे ठे.



॥ अन्नाण कोह मय माण, लोह माया रश्य  
 अरश्य ॥ निंदा सोग अलिय वयण, चोरिया मन्नर  
 नयाय ॥ १ ॥ पाणीवह पेम कीला, पसंग हा  
 साय जस्स ए दोसा ॥ अछारस विपणछा, नमामि  
 देवाहिदेवं तं ॥ २ ॥ एहवा देवाधिदेव, सुरासुर  
 विहितसेव, सर्वज्ञ नगवंत, जगन्नाथ जगज्जीवना  
 तारक, कुगति मार्ग निवारक, निरीह निरहंकार,  
 निःसंग निःप्रेम शांत दांत करुणा समुद्र, विश्वोपकार  
 सागर, अनंत गुणना आगर, चोशठ इंद्रना पूजनी  
 क, वज्ररूपजनाराचसंघयण, समचतुरस्र संस्थान,  
 एक हज्जाने आव वर प्रधान पुरुष लक्षणना धरण  
 हार, समुद्रनी परें गंजीर, मेरुपर्वतनी परें धीर,  
 शंखनी परें निरंजन, वायुनी परें अप्रति बह विहार,  
 आकाशनी परें निरालंब, जीवनी परें अप्रतिहतगति,  
 कूर्मनी परें गुप्तेन्द्रिय, खड्गी जीवना शृंगनी परें एक,  
 नारंग पंखीनी परें अप्रमत्त, सिंहनी परें डुर्धर्ष, वृष  
 जनी परें अठार सहस्स सीलांगरथना धुरंधर धोरी,  
 चंद्रमानी परें सौम्यकांति, सूर्यनी परें सतेज, पंखीनी  
 परें विप्रमुक्त, कुह्नी संबल, वसुंधरानी परें सर्व सहे, अ  
 नंतज्ञान, अनंतदर्शन, चोत्रीश अतिशयें करी संयुक्त पां  
 त्रीश जाषा गुण परिकलित, अष्ट महा प्रातिहार्यें विरा  
 जमान, पादपीठिकासहित सिंहासनासन, वत्रत्रय  
 चामर शोभायमान, पूंठ पाठल नामंमल दीपे, तेजें  
 करी श्रीसूर्यने जीपे, श्रीअरिहंत उपर अशोक वृद्ध

ढाया करतो संघातें चाले, धर्मध्वजा आगळे उती ल  
ह लहे, आकाश गतधर्मचक्र जल हले, देवडुंडुजि स्वा  
मीके आगें वाजे, श्री अरिहंतनी वाणी मेघनी परें  
गाजे, जोजन हारिणी वाणी अमृत समाणी, सर्व जा  
पानुगामिनी, सर्व लोकना संशयहरे, त्रिचुवनज  
ननां मनने उच्चाह करे, मुक्ति नगरी प्रतें सार्थवाह,  
एहवा देवाधिदेव ह रिहंत गुणवंत, जगवंत. वीतराग  
वीतस्पृही परमात्म. परमेश्वर परम निरंजन, तेदो  
नी गुण स्तुति जणुं ॥ इति अरिहंत स्तुतिः समाप्ता ॥

॥ अथ श्रीअंतरिक पार्श्वनाथ स्तुति वंद ॥

॥ प्रभु पासजी ताहरुं नाम मीतुं, त्रिवृं लोकमां  
एटलुं सार दीतुं ॥ सदा संमरतां सेवतां पाप नांतुं,  
मन माहरे ताहरुं ध्यान वेतूं ॥ १ ॥ मन तुम्ह पा  
सें वसे रात दीसें, मुखपंकज निरखवा हंस हीं  
से ॥ धन्य ते घडी जे घडी नयण दीसे, जली नक्ति  
जावें करी वीनवीसे ॥ २ ॥ अहो एह संसार ने  
डुःख दोरी, इंजालमां चित्त लागी उगोरी ॥ प्रभु  
मानियें विनती एक मोरी, मुंऊ तार तुं तार बलिहा  
रि तोरी ॥ ३ ॥ सही सुपन जंजालमां सब मोह्यो,  
घडीयालमां काल रमतो न जोयो ॥ सुधा एम सं  
सारमां जन्म खोयो, अहो घृत तणे .कारणें जल वि  
लोयो ॥ ४ ॥ एतो जमरजो केसुआं चांति धायो,  
जई शुक्र तणी चंचुमांहे जरायो ॥ शुके जंबु जाणी  
गळे डुःख पायो, प्रभु लालचें जीवडो एम बाह्यो ॥ ५ ॥

जन्म्यो नर्म नूलो रन्म्यो कर्म जारी, दयाधर्मनी श  
 र्म में नवि विचारी ॥ तोरी नर्मवाणी परम सुख  
 कारी, त्रिहुं लोकना नाथ में नवि संजारी ॥ ६ ॥ वि  
 षय वेलडी सेलडी करिय जाणी, नजी मोह तृष्णा  
 तजी तुल्ला वाणी ॥ एहवो नलो नूमो निज दास जा  
 णी, प्रभु राखीयें बांद्दिनी बांद्दि प्राणी ॥ ७ ॥ माहा  
 रा विविध अपराधनी कोडि सहीयें, प्रभु शरण आ  
 व्या तणी लाज वहीयें ॥ वली घणी घणी वीनति ए  
 म कहीयें, मुक्त मानसरें परम हंस रहीयें ॥ ८ ॥ कल  
 श ॥ ए कृपा मूरति पास स्वामी, मुगतिगामी ध्याईयें  
 ॥ अति भक्ति जावें विपति जावे, परम संपद पाईयें ॥  
 प्रभु महिम सागर गुण विरागर, पास अंतरिक जे स्तवे ॥  
 तस सकल मंगल जय जयारव, आनंद वर्द्धन वीनवे ॥

॥ अथ जगवंतनी पूजा करवा समयें नवे अं ॥

॥ गें तिलक करतां जे पाठ उच्चारवो, ते कहे छे ॥

॥ दोहा ॥ जल नरि संपुट पत्रमां, युगलिक  
 नर पूजंत ॥ रूपन चरण अंगुठडो, दायक नवजल  
 अंत ॥ १ ॥ जानु बलें काउसग्न रह्या, विचर्या दे  
 श विदेश ॥ खडां खडां केवल लह्युं, पूजो जानुं नरे  
 श ॥ २ ॥ लोकांतिक वचनें करी, वरस्या वरसी दा  
 न ॥ करकांमे प्रभु पूजना, पूजो नवि बहु मान ॥ ३ ॥  
 मान गयुं दोय अंशथी, देखी वीर्य अनंत ॥ छुजा  
 बलें नवजल तस्या, पूजो खंद महंत ॥ ४ ॥ रत्न  
 त्रयि गुण ऊजली, सकल सुगुण विशराम ॥ नानि

कमलनी पूजना, करतां अविचल धाम ॥ ५ ॥ हृ  
दय कमल उपशम बलें, बाव्या रागने रोष ॥ हिम  
दहे वन खंफनें, हृदय तिलक संतोष ॥ ६ ॥ शोल  
पोहोर देश देशना, कंठ विवर वचूँल ॥ मधुर ध्वनि सु  
रनर सुणे, तिणे गलें तिलक अमूल ॥ ७ ॥ तीर्थ  
कर पद पुण्यथी, विदुयण जन सेवंत ॥ त्रिचुवन  
तिलक समा प्रभु, लाल तिलक जयवंत ॥ ८ ॥ मि  
शिला गुण कजल लोकांतें जगवंत ॥ वसिया  
तिण कारण नवि, शिर शिखा पूजंत ॥ ९ ॥ उपदेश  
क नव तत्त्वना, तिणे नव अंग जिणंद ॥ पूजो बहु  
विध जावथी, कहे शुच वीर मुणंद ॥ १० ॥ इति  
॥ अथ दोहा ॥

॥ जीवडा जिनवर पूजियें, पूजानां फल जोष ॥  
राजा नमे प्रजा नमे, आण न लोपे कोय ॥ १ ॥ कुंजे  
बांध्युं जल रहे, जल विना कुंज न होय ॥ ज्ञानें बांध्युं  
मन रहे, गुरु विना ज्ञान न होय ॥ २ ॥ गुरु दीवो गुरु  
देवता, गुरु विना घोर अंधार ॥ जे गुरु वाणी वेगजा,  
ते रडवडिया संसार ॥ ३ ॥ जावें जावना जावियें,  
जावें दीजें दान ॥ जावें जिनवर पूजियें, जावें केव  
ल ज्ञान ॥ ४ ॥ प्रभु नामकी उषधी, खरे मन्त्रशुं  
खाय ॥ रोग पीडा व्यापे नही, महा दोष मिट जाय  
॥ ५ ॥ प्रभुजी पूजन हुं चळ्यो, केसर चंदन धनसा  
र ॥ नव अंगें पूजा करी, नव सायर पार उतार ॥ ६ ॥  
पांच कोडीनें फूलडे, पाम्या देश अढार ॥ कुमारपाल

राजा थयो, वत्थो जय जय कार ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ मांगलिक काव्यानि ॥

॥ मंगलं जगवान् वीरो, मंगलं गौतमः प्रभुः ॥ मं  
गलं स्थूलिजशाय्या, जैनो धर्मोऽस्तु मंगलं ॥ १ ॥ एक  
जंबु जग जाणियें, बीजा नेम कुमार ॥ त्रीजा वयर  
वखाणियें, चोथा गौतम धार ॥ २ ॥ अंगूठे अमृत  
वसे, लब्धि तणो चंमार ॥ जे गुरु गौतम समरियें,  
मन वंति फल दातार ॥ ३ ॥ अद्दीण महानिशि  
लब्धिः, केवलश्रोः करांबुजे ॥ नाम लक्ष्मीमुखे वाणी,  
तमहं गौतमं स्तुवे ॥ ४ ॥ इति काव्यानि ॥

॥ अथ लोगस्स काउस्सग्ग करवानो ॥

॥ लोगस्स उज्जोअगरें, धम्म तिब्बयरे जिणे ॥  
अरिहंते कित्तइस्सं; चउवीसंपि केवली ॥ १ ॥ उस  
जमजियं च वंदे, संजवमजिणंदणं च सुमइं च ॥  
पउमप्पहं सुयासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥  
सुविहिं च पुंफदंतं, सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च ॥  
विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥  
कुंथुं अरं च मत्तिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च ॥  
वंदामि रिठ्ठनेमिं, पासं तह वड्ढमाणं च ॥ ४ ॥ एवं  
मए अनिशुआ, विहुयरयमला पहीण जरमर  
णा ॥ चउवीसंपि जिणवरा, तिब्बयरा मे पसीयंतु  
॥ ५ ॥ कित्तिय वंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्त  
मा सिद्धा ॥ आरुग्ग बोहिलानं, समाहिवरमुत्तमं  
दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसुनिम्मजयरा, आइस्सेसु अहियं

पयासयरा ॥ सागर वर गंजीरा, सिद्धा सिद्धिं मम  
दिसंतु ॥ ७ ॥ इति ॥ लोगस्स समाप्तः ॥

॥ अथ प्रजाति स्तवन ॥

॥ अब तुं चेतन चेत जे, दूण लाखिणो जाहि ॥  
या जुगमें तेरो को नही, तुं किनको नांहि ॥ अब० ॥  
॥ १ ॥ जननी कामिनीने पिता, बेटा बेटाईने जाई ॥  
ज्युं पंखी टोलुं मित्रे, पीने कमी ते जाई ॥ अब०  
॥ २ ॥ अंजलि जल सम आउखुं, ऊरत क्युं जग  
दीमें ॥ संध्यारंग सम यौवनवय, अनित्य ए विसवा  
वीमें ॥ अब० ॥ ३ ॥ जिनदास कहे उन कारणों,  
ढोडो मोहको संग ॥ अनुचवकुं चित्त आदरी कर ल्यो  
सयगुरु संग ॥ अब० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ प्रजाती स्तवन ॥

॥ जब जिनराज कृपा करे, तब शिब सुख पावे ॥  
अद्वय अनुपम संपदा, नव निधि घर आवे ॥ जब० ॥  
॥ १ ॥ ऐसी वस्तु न जगतमें, दिल शाता आवे ॥  
सुरतरु रवि शशि प्रमुख जे, जिन तेजें ठिपावे ॥ ज० ॥  
॥ २ ॥ जनम जरा मरणा तणां, दुःख दूर गमावे ॥  
मन वनमां जिन ध्याननो, जलधर वरसावे ॥ ज० ॥  
॥ ३ ॥ चिंतामणि रखणें करी, कोण काग उडावे ॥  
तिम मूरख जिन ढोडीने, अवरों कूं ध्यावे ॥ ज० ॥  
॥ ४ ॥ ईली जमरी संगथी, जमरी पद पावे ॥ ज्ञान  
विमल प्रभु ध्यानथी, जिन उपमा आवे ॥ ज० ॥ ५ ॥

॥ अथ प्रजाती स्तवन ॥

॥ विषय वासना त्यागो चेतन, साचे मारग ला  
गो रे ॥ ए आंकणी ॥ तप जप संयम दानादिक  
सद्गु, गिनति एक न आवे रे ॥ इन्द्रिय सुखमां जों  
लौं ए मन, वक्र तुरंग जिम धावे रे ॥ विष० ॥ १ ॥  
एक एकके कारण चेतन, बहुत बहुत दुःख पावे  
रे ॥ तेतो प्रगट पणो जगदीसें, इणि विध जाव लखा  
वे रे ॥ विष० ॥ २ ॥ मन्मथ वश मातंग जगतमें,  
परवशता दुःख पावे रे ॥ रसना लुब्ध होय ऊख  
मूरख, जाल पड्यो पठतावे रे ॥ विष० ॥ ३ ॥ घ्राण  
सुवास काज सुन नमरा, संपुटमांहे बंधावे रे ॥ ते  
सरोज संपुट संयुत फुन, करटीके मुख जावे रे ॥  
विष० ॥ ४ ॥ रूप मनोहर देख पतंगा, पडत दीपमां  
जाई रे ॥ देखो याको दुख कारनमें, नयन नये हे  
सहाई रे ॥ विष० ॥ ५ ॥ श्रोतेन्द्रिय आसक्त मिर  
गलां, ठिनमें शीश कटावे रे ॥ एक एक आसक्त  
जीव इम, नानाविध दुःख पावे रे ॥ विष० ॥ ६ ॥  
पंच प्रबल वर्त्ते नित जाकुं, ताकुं कहा जु कहीयें रे ॥  
चिदानंद ए वचन सुणीनें, निज स्वभावमें रहीयें  
रे ॥ विष० ॥ ७ ॥ इति प्रजाती ॥

॥ अथ प्रजाती स्तवन ॥

॥ पूरवपुण्य उदय करी चेतन, नीका नरनव पा  
या रे ॥ ए आंकणी ॥ दीनानाथ दयाल दयानिधि,  
दुर्जन अधिक बताया रे ॥ दश दृष्टांतें दोहिला जाकुं,

उत्तराध्ययनें गाया रे ॥ पु० ॥ १ ॥ अवसर पाय  
 विषय रस राचत, ते तो मूढ कहाया रे ॥ काग  
 उमावन काज विप्र जिम, मार मणि पढताया रे ॥  
 पु० ॥ २ ॥ नदी घोल पापाण न्याय कर, अर्धवाट  
 तुं आया रे ॥ अर्ध सुगम आगल रही तिनकुं, जिन  
 कबु मोह घटाया रे ॥ पु० ॥ ३ ॥ चेतन चारण  
 तिमैं निश्चें, मोह द्वाग ए काया रे ॥ करत कामना  
 सुरपति याकुं, जिनकुं अनर्गल साया रे ॥ पु० ॥ ४ ॥  
 रोहणगिरि जिम रतन खाण तिम, गुण सह यामें  
 समाया रे ॥ महिमा मुखथी वर्णत जाकी, सुरपति  
 मन शंकाया रे ॥ पु० ॥ ४ ॥ कल्पवृक्ष सम्म संज  
 म केरी, अति शीतल जिहां ठाया रे ॥ चरण कर  
 ग गुण धार महामुनि, मधुकर-मन-लोनाया रे  
 ॥ पु० ॥ ६ ॥ या तन बिन तिहुं काल कहो किम,  
 जाचा सुख निपजाया रे ॥ अवसर पाय न चूक  
 चिदानंद, सदगुरु यों दरमाया रे ॥ पु० ॥ ७ ॥ इति  
 ॥ अथ आंबिलनी उलीनां नव स्तवन प्रारंभः ॥

॥ तत्र प्रथम स्तवनम् ॥

॥ केशर वरणो हो, के काढ कसूंबो माहारा लाल ॥  
 ॥ ए देशी ॥ गोयम नाणी हो, के कहे सुणो प्राणी  
 माहारा लाल ॥ जिनवर वाणी हो, के हियडे आणी  
 ॥ मा० ॥ आसोमासैं हो, के गुरुने पासैं ॥ म० ॥  
 नव पद ध्यासे हो, के अंग उछासैं ॥ मा० ॥ १ ॥  
 आंबिल कीजें हो, के जिन पूजीजें ॥ मा० ॥ जाप



जपीजें हो, के देव बांदीजें ॥ मा० ॥ जावना जावो  
 हो, के सिद्धचक्र ध्यावो ॥ मा० ॥ जिनगुण गावो  
 हो, के शिव सुख पावो ॥ मा० ॥ २ ॥ श्रीश्रीपात्रें  
 हो, के मयणा बाजें ॥ मा० ॥ ध्यानरसात्रें हो, के  
 रोग ज टात्रें ॥ मा० ॥ सिद्धचक्र ध्यायो हो, के रोग  
 गमायो ॥ मा० ॥ मंत्र आराध्यो हो, के नवपद पा  
 यो ॥ मा० ॥ ३ ॥ नामनी जोली हो, के पेहेरि प  
 टोली ॥ मा० ॥ सहियर टोली हो, के कुंकुम घोली  
 ॥ मा० ॥ थाल कचोली हो, के जिनवर खोली ॥  
 मा० ॥ पूजी प्रणमी हो, के कीजें उली ॥ मा० ॥ ४ ॥  
 चैत्रें आसो हो, के मनने उल्लासैं ॥ मा० ॥ नवपद  
 ध्याओ हो, के शिवसुख पासैं ॥ मा० ॥ उत्तम साग  
 र हो, के पंडितराया ॥ मा० ॥ सेवक कांतें हो, के  
 बहु सुख पाया ॥ मा० ॥ ५ ॥ इति समाप्त ॥ १ ॥

॥ अथ द्वितीय स्तवनम् ॥

॥ आठे लालनी देशी ॥ नवपद महिमा सार,  
 सांजलजो नर नार ॥ आठे लाल ॥ हेज धरी आरा  
 धीयें ॥ तो पामो नवपार, पुत्र कलत्र परिवार ॥ आ० ॥  
 नवपद मंत्र आराधी यें ॥ १ ॥ आंकणी ॥ आसोमास  
 विचार, नव आंबिल निरधार ॥ आ० ॥ विधिगुं जिनवर  
 पूजीयें ॥ अरिहंत सिद्ध पद सार, गणगुं जी तेर ह  
 जार ॥ आ० ॥ नवपदगुं ईम कीजीयें ॥ २ ॥ म  
 यण सुंदरी श्रीपाल, आराध्यो ततकाल ॥ आ० ॥  
 फल दायक तेहने थयो ॥ कंचन वरणी काय, देही

तेहनी आय ॥ आ० ॥ श्रीसिद्धचक्र महिमा कह्यो  
 ॥ ३ ॥ सांजलि सहु नर नार, आराध्यो नवकार ॥  
 आ० ॥ हेज धरी हियडे घणुं ॥ चैत्र मासें वली एह,  
 नवपदगुं धरो नेह ॥ आ० ॥ पूज्यो ये शिवसुख  
 घणुं ॥ ४ ॥ इणपरें गौतम स्वाम, नव निधि जेह  
 ने नाम ॥ आ० ॥ नवपद महिमा वखाणीयो ॥ उत्तम  
 सागर शिष्य, प्रणमे ते निश दीस ॥ आ० ॥ नव  
 पद महिमा जाणीयो ॥ ५ ॥ इतिद्वितीयस्तवनं ॥

॥ अथ तृतीय स्तवनं ॥

॥ सीतातो रूपें रूडी ॥ ए देशी ॥ श्री वीर  
 जिणंद वखाण्यो, तिहां गौतम गणधर जाण्यो हो ॥  
 नवपद ध्याईयें ॥ श्री श्रीपाल नरेशें, मयणायें गु  
 रु उपदेशें हो ॥ नव० ॥ १ ॥ श्रीसिद्धचक्र आरा  
 ध्यो, तो सयल पदारथ साध्यो हो ॥ न० ॥ आसो मा  
 सें कीजें, शुदि सातमे जिन पूजीजें हो ॥ नव० ॥ २ ॥  
 अष्ट कमल दल थापी, महिमा जस त्रिचुवन व्या  
 पी हो ॥ न० ॥ मध्यदलें जिन ध्याने, ध्यावो नवि  
 धवले वानें हो ॥ न० ॥ ३ ॥ पूरव दिशें सिद्ध ठा  
 जे, राते तनु तेज विराजे हो ॥ न० ॥ आचारिज  
 पद त्रीजे, जिम सोवन वान करीजें हो ॥ न० ॥ ४ ॥  
 पश्चिम दिश उवजाया, नीले तनु वान सोहाया हो  
 ॥ न० ॥ साधु सकल धनवानें, उत्तरदिशि ध्यावो  
 ध्यानें हो ॥ न० ॥ ५ ॥ नाण अग्नि कोणें ध्यावो,  
 जिम अत्यंत सुख तुमें पावो हो ॥ न० ॥ दंसण

( १९ )

आराहो प्राणी, नैरुत विदिशें मन आणी हो ॥ न० ॥  
॥ ६ ॥ वायव्यकोणें कहीजें, चारित्र ध्यायी सुख ली  
जें हो ॥ न० ॥ ईशाने तप ध्यावो, उज्जाल समकित  
सुख पावो हो ॥ न० ॥ ७ ॥ आसो चैत्रज मामें,  
जपतां रुद्रि आवे पासें हो ॥ न० ॥ विधिगुं देव  
वंदीजें, श्रीजिनवर पूजा रचीजें हो ॥ न० ॥ ८ ॥  
नव पद जाप जपीजें, आंखिल तप नव दिन कीजें हो  
॥ न० ॥ श्रीसिद्धचक्र सेवीजें, पंचामृत न्हवण करीजें  
हो ॥ न० ॥ ९ ॥ चउद पूरवनो सार, ए मंत्र वडो  
नवकार हो ॥ न० ॥ बुध उत्तम सागर राया, शिष्य  
कांतिसागर सुखपाया हो ॥ न० ॥ १० ॥ इति ॥ ४ ॥

॥ अथ चतुर्थे स्तवनं ॥

॥ किसके चेन्ने किसके पूत ॥ ए देशी ॥ सेवो रे  
नवि जावें नवकार, जंपे श्रीगौतम गणधार ॥ नवि  
सांजलो ॥ हारें संपद थाय ॥ न० ॥ हारें संकट  
जाय ॥ न० ॥ आशोने चैत्रें हरप अपार, आणी  
गणणुं किजें तेर हजार ॥ न० ॥ १ ॥ चार वरसने  
वली षट् मास, ध्यान धरो जावें धरी विश्वास ॥ न० ॥  
ध्यायो रे मयणसुंदरी श्रीपाल, तेहनो रोग गयो तत  
काल ॥ न० ॥ २ ॥ अष्टकमल दल पूजा रसाल,  
करी न्हवण ठांट्युं ततकाल ॥ न० ॥ सातगें मही  
पति तेहनें रे ध्यान, देही पामी कंचन वान ॥ न० ॥  
॥ ३ ॥ महिमा कहेतां एनो नावे पार, समरो तिणे  
कारण नवकार ॥ न० ॥ इह नव परनव ये सुख

वास, बहु पामे लह्मी लील विलास ॥ न० ॥ ४ ॥  
 जाणी रे प्राणी लाज अनंत, सेवो सुखदायक ए मंत  
 ॥ न० ॥ उत्तममागर पंडित शिष्य, सेवे कांतिसागर  
 निशदीस ॥ न० ॥ ५ ॥ इति चतुर्थस्तवनं ॥ ४ ॥

॥ अथ पंचम स्तवनं ॥

॥ नवियां श्रीसिद्धचक्र आराधो, तुमें मुक्ति मार  
 गनें साधो, इह नरनव दुर्जन लाधो हो लाज  
 ॥ १ ॥ नवपद जाण जपीजें ॥ त्रण टंक देववांदी  
 जें, त्रिहुं कालें जिन पूजीजें, आंबिल तण नव  
 दिन कीजें हो लाज ॥ न० ॥ २ ॥ रुदि आसो चे  
 त्रज मासें, तप सातमथी अन्यासें, पद मेव्यां पा  
 तक नासे हो लाज ॥ न० ॥ ३ ॥ मयणाने नृप  
 श्रीपालें, आराध्यो मंत्र उजमालें, एह दुःख दोह  
 गनें टाळे हो लाज ॥ न० ॥ ४ ॥ एहनी जे सेवा  
 सारे, तस मयगल गाजे बारें, इति नीति अनीति  
 निवारे हो लाज ॥ न० ॥ ५ ॥ मिथ्यात्व विकार  
 अनिष्ट, ह्य जाये दोषी दुष्ट, इणे सेव्या समकित  
 पुष्ट हो लाज ॥ न० ॥ ६ ॥ जसवंत जिनेंसु साखें,  
 नवि सिद्धचक्रना गुण नांखे, ते ज्ञान विनोद रस  
 चाखे हो लाज ॥ न० ॥ ७ ॥ इति ॥ ५ ॥

॥ अथ षष्ठस्तवनं ॥

॥ जग जीवन जग वालहो ॥ ए देशी ॥

॥ श्रीसिद्ध चक्र आराधीयें, शिव सुख फल सह  
 कार लाल रे ॥ ज्ञानादिक त्रण रत्ननुं, तेज चढा

वण हार लाल रे ॥ पाठांतरें ॥ श्री सि० ॥ १ ॥ गौतमें  
 पूढंता कह्यो, वीर जिणंद विचार लाल रे ॥ नवपद  
 मंत्र आराधतां, फल लहे नविक अपार लाल रे ॥  
 श्रीसि० ॥ २ ॥ धर्मरथनां चार चक्र ठे, उपशमनै  
 सुविवेक लाल रे ॥ संवर त्रीजुं जाणीयें, चोथुं  
 सिद्धचक्र ठेक लाल रे ॥ श्रीसि० ॥ ३ ॥ चक्री चक्र  
 रयण बलें, साधे सयल ठे खंम लाल रे ॥ तिम  
 सिद्धचक्र प्रजावथी. तेज प्रताप अखंम लाल रे  
 ॥ श्रीसि० ॥ ४ ॥ मयणाने श्रीपाल जी, जपतां  
 बहु फल लीध लाल रे ॥ गुण जसवंत जिनेंइनों,  
 ज्ञानविनोद प्रसिद्ध लाल रे ॥ श्रीसिद्ध० ॥ ५ ॥

॥ अथ सप्तम स्तवनं ॥

॥ चिंतामणि स्वामी सच्चा साहेब मेरा ॥ ए देशी ॥

॥ आराहो प्राणी साची नवपद सेवा ॥ ए आंकणी  
 ॥ नव निधि आपे नवपद सेवे, इम जांखे श्रीजिनदे  
 वा ॥ आ० ॥ १ ॥ श्रीसिद्धचक्र धरो नित्यदिलमें,  
 जैसें गज मन रेवा ॥ आ० ॥ २ ॥ अरिहंतादिक  
 एक पद जपतां, हारे लहीयें सुख सदैवा ॥ आ०  
 ॥ ३ ॥ समुदित जपतां किम करी न करे, सुरसुख  
 डुम फल लेवा ॥ आ० ॥ ४ ॥ जिनेंइ कहे इम, ज्ञान वि  
 नोदे, हर्षित द्यो नित मेवा ॥ आ० ॥ ५ ॥

॥ अथ अष्टम स्तवनं ॥

॥ राग सारंग ॥ गौतम पूढत श्रीजिन जांखत, व

चन सुधारस पानकी ॥ बलिहारी नवपद ध्यानकी  
 ॥ १ ॥ नवपद सवे नवमे स्वर्गे, पावत रुद्धि विमानकी ॥ ब० ॥ २ ॥ याकी महिमा वल्लभ हमकुं, जे  
 सैं जसोदा कानकी ॥ ब० ॥ ३ ॥ पावे रूप सरूप मदनसो, देही वानकी ॥ ब० ॥ ४ ॥  
 याको ध्यान हृदय जब आवत, उपजत लदेरी दानकी ॥ ब० ॥ ५ ॥ समकित ज्योति होवे दिल नी  
 तर, जेसैं लोकनमें जानकी ॥ ब० ॥ ६ ॥ जिनेंइ ज्ञान विनोद प्रसंगें, नक्ति करो जगवानकी ॥ ब० ॥ ७ ॥

॥ अथ नवम स्तवनं ॥

॥ पूज्य पधारो मरुदेशों ॥ ए देशी ॥

॥ नवपद महिमा सांजलो, वीर जांखे हो सुणो  
 पर्षदा बार के ॥ ए सरीखो जग को नहीं, आरा  
 ध्यो हो शिवपद दातार के ॥ न० ॥ १ ॥ नव उली  
 आंबिल तणी, नवी करीयें हो मनने उल्लास के ॥ नू  
 मी शयन ब्रह्म व्रत धरो, नित सुणीयें हो श्रीपालनो  
 रास के ॥ न० ॥ २ ॥ नव विधि पूर्वक तप करी, ऊ  
 जमणुं हो कीजें विस्तार के ॥ साहामी सामिणी  
 पोषियें, जेम लहीयें हो नवनो निस्तार के ॥ ॥ न०  
 ॥ ३ ॥ नरसुख सुरसुख पामीयें, वली पामे हो नव  
 नव जिनधर्म के ॥ अनुक्रमें शिवपद पण लहे, जिहां  
 मोहोटां हो अह्वय सुख शर्म के ॥ न० ॥ ४ ॥ सांजली  
 नवियण दिल धरो, सुखदायी हो नव पद अधिका  
 र के ॥ वचन विनोद जिनेंइनो, मुज होजो हो न

व नव आधार के ॥ नव० ॥ ५ ॥ इति ॥ ए ॥

॥ अथ सिद्धपद स्तवनं ॥

॥ श्रीगौतम पृष्ठा करे, वि० १ करी शीश नमाय  
प्रभुजी ॥ अविचल स्थानक मे सुख्युं, कृपा करी मोय  
बताय प्रभुजी ॥ शिवपुर नगर सोहामणुं ॥ १ ॥ ए  
आंकणी ॥ आठ कर्म अलगां करी, साखां आतम  
काम हो ॥ प्र० ॥ बूटा संसारनां दुःखयकी, तेणे रहे  
वाचुं किहां ठाम हो ॥ प्र० ॥ शि० ॥ १ ॥ वीर कहे  
ऊर्ध्व लोकमां, सिद्ध शिलातणुं ठाम हो गौतम ॥  
स्वर्ग ठवांशनी उपरें, तेहनां बारे नाम हो ॥ गौ० ॥  
शि० ॥ ३ ॥ लाख पिस्तालीश जोजना, लांबी पोहोली  
जाण हो ॥ गौ० ॥ आठ जोजन जाडी विच्चें, ठेडे  
मंख पंख ज्युं जाण हो ॥ गौ० ॥ शि० ॥ ४ ॥ उज्ज्वल  
हार मोती तणो, गोडुग्धशंख वखाण हो ॥ गौ० ॥ ते  
थकी कजली अति घणी, उलट ठत्र संगण हो  
॥ गौ० ॥ शि० ॥ ५ ॥ अर्जुन स्वर्णसम दीपती,  
गठारी मठारी जाण हो ॥ गौ० ॥ फटक रत्न थकी  
निर्मली, सुंआली अत्यंत वखाण हो ॥ गौ० ॥ शि० ॥  
॥ ६ ॥ सिद्धशिला उलंघी गया, अधर रह्या सिद्ध  
राज हो ॥ गौ० ॥ अलोकशुं जाई अज्या, साखां  
आतम काज हो ॥ गौ० ॥ शि० ॥ ७ ॥ जन्म नहीं  
मरण नहीं, नहीं जरा नहीं रोग हो ॥ गौ० ॥ वैरी  
नहीं मित्रज नहीं, नहीं संजोग विजोग हो ॥ गौ० ॥  
शि० ॥ ८ ॥ नूख नहीं तरषा नहीं, नहीं हर्ष नहीं

सोग हो ॥ गौ० ॥ कर्म नहीं काया नहीं, नहीं विष  
 या रस योग हो ॥ गौ० ॥ शि० ॥ ए ॥ शब्द रूप रस  
 गंध नहीं, नहीं फरस नहीं वेद हो ॥ गौ० ॥ बाले  
 नहीं चाले नहीं, मौनपणुं नहीं खेद हो ॥ गौ० ॥  
 ॥ शि० ॥ १० ॥ गाम नगर तिहां कोइ नहीं, नहीं  
 वसती न उजाड हो ॥ गौ० ॥ काल सुगल वचें  
 नहीं, रात दिवस तिथि वार हो ॥ गौ० ॥ शि० ॥  
 ॥ ११ ॥ राजा नहीं पंजा नहीं, नहीं ठाकुर नहीं दास  
 हो ॥ गौ० ॥ मुक्तिमां गुरु चेला नहीं, नहीं लघु बडाई  
 तास हो ॥ गौ० ॥ शि० ॥ १२ ॥ अनंता सुखमां  
 जीली रह्या, अरूपी ज्योति प्रकाश हो ॥ गौ० ॥  
 सद्गु कोईनैं सुख सारीखां, सघलानें अविचल दाम  
 हो ॥ गौ० ॥ शि० ॥ १३ ॥ अतंत सिद्ध मुगत  
 गया, बली अनंता जाय हो ॥ गौ० ॥ अवर जग्या  
 रुंधे नही, ज्योतिमां ज्योति समाय हो ॥ गौ० ॥  
 शि० ॥ १४ ॥ केवल ज्ञान सहित ठे, केवल दर्शन  
 खास हो ॥ गौ० ॥ स्वायक समकित दीपतुं कदीय  
 न होवे उदास हो ॥ गौ० ॥ शि० ॥ १५ ॥ सिद्ध  
 स्वरूप जे उलखे, आणी मन वैराग हो ॥ गौ० ॥  
 शिवसुंदरी वेगें वरे, नय कहैं सुख अथाग हो ॥  
 गौ० ॥ शिव० ॥ १६ ॥ इति श्री सिद्धस्तवनं संपूर्ण ॥

॥ अथ पंचतीर्थनी आरति लिख्यते ॥

॥ पेहेली आरती प्रथम जिणंदा, शेत्रुंजा मंम  
 ए रूपन जिणंदा ॥ श्रीसिद्धाचल तीर्थ आव्या, पूर्व



नवाणुं नविक मन जाव्या ॥ आरती कीजें श्रीजि  
नवरकी ॥ १ ॥ दुसरी आरती शांति जिणंदकी,  
शांति करे प्रभु शिव मारगकी ॥ पारैवो जिणे शर  
णे राख्यो, केवल पामीनें धर्म प्रकाश्यो ॥ आ० ॥  
२ ॥ तीसरी आरती श्रीनेमनाथ, राजुल नारी तारी  
निज हाथ ॥ सहस पुरुषगुं संयम लीधो, करी नि  
ज आतम कारज सीधो ॥ आ० ॥ ३ ॥ चोथी  
आरति चिहुं गति वारी, पारसनाथ नविक हितका  
री ॥ गोडी पास शंखेश्वरो पास, नविजनना पूरे मन  
आश ॥ आ० ॥ ४ ॥ पांचमी आरती श्रीमहावीर,  
मेरु परें, नाम रह्या धीर ॥ साडा बार वरस तप  
तपीया, कर्म खपावीनें शिव पुर वसिया ॥ आ० ॥  
॥ ५ ॥ इणि परें प्रभुजीनी आरती करजे,  
गुन परिणामे शिवपुर वरजे ॥ इणि परें जिनजी  
नी आरती गावे, गुन परिणामें शिवपुर जावे ॥  
आ० ॥ ६ ॥ कर जोडी सेवक हम बोले, नहीं कोइ  
माहारा जिनजीने तोले ॥ आ० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ चार मंगल ॥

॥ आज घरे नाथ पधाख्या, कीजें मंगल चार ॥  
आ० ॥ पहिले मंगल प्रभुजीने पूजुं, घसी केसर घ  
नसार ॥ आ० ॥ १ ॥ बीजे मंगल अगर उखेवुं,  
कंठे उवुं फूल हार ॥ आ० ॥ त्रीजे मंगल आर  
ती उतारुं, घंट वजावुं रणकार ॥ आ० ॥ २ ॥  
चोथे मंगल प्रभुगुण गाऊं ॥ नाटक थइ थइ कार

॥ आ० ॥ रूपचंद कहे नाथ निरंजन, चरण कमल  
जाउं वार ॥ आ० ॥ ३ ॥ इति चारमंगल ॥

॥ अथ मंगलिक दीपक ॥

॥ दीवो रे दीवो मंगलिक दीवो ॥ आरती उतारी  
ने बहु चिरंजीवो ॥ दी० ॥ सोहामणुं घर पर्व दिया  
ली, अंबर खेले अबला वाली ॥ दी० ॥ देपाल न  
णे इणें देव अजुआली, नावें नगतेँ विघ्न निवारी  
॥ दी० ॥ देपाल नणे इणें कली कालें, आरती उ  
तारी राजा कुंअरपालें ॥ दी० ॥ ते घर मंगलिक  
जे घर मंगलिक, चतुर्विध संघ घर मंगलिक दीवो ॥  
दी० ॥ इति मंगलिक दीपक संपूर्ण ॥

॥ अथ मोटी आरती ॥

॥ पेहेली रे आरती प्रथम जिणंदा, शत्रुंजा मं  
मण रूपन जिणंदा ॥ जय जय आरती आदिजिणंद  
की॥ए आंकणी॥दूसरी आरती मरुदेवी नंदा, जुगला रे  
धरम निवार करंदा ॥ ज० ॥ १ ॥ तीसरी आरती  
त्रिभुवन मोहे, रत्न सिंहासन मारा प्रभुजीने मोहे ॥  
ज० ॥ चोथी आरती नित नवी पूजा, देव रूपन  
देव अवर न दूजा ॥ ज० ॥ २ ॥ पांचमी आरती  
प्रभुजीनें नावे, प्रभुजीना गुण सेवक इम गावे ॥  
ज० ॥ ३ ॥ आरती कीजें प्रभुशांति जिणंदकी,  
मृगलंठनकी में जाउं बलिहारी ॥ जय जय आरती  
शांति तुमारी, विश्वसेन अचिरादेवीको नंदा, शांति  
जिणंद मुख पूनम चंदा ॥ ज० ॥ ४ ॥ आरती की

जें प्रभु नेम जिणंदकी, शंखलंठनकी में जाउं बलि  
हारी ॥ आ० ॥ समुद्रविजय शिवादेवीको नंदा,  
नेमजिणंद मुख पूनमचंदा ॥ आ० ॥ ५ ॥ आरती  
कीजें प्रभु पास जिणंदकी, फणिंद लंठनकी में जाउं  
बलिहारी ॥ आ० ॥ अश्वसेन वामा देवीको नंदा,  
पासजिणंद मुख पूनम चंदा ॥ आ० ॥ ६ ॥ आरती  
कीजें महावीर जिणंदकी, सिंह लंठनकी में जाउं  
बलिहारी ॥ आ० ॥ सिद्धारथराय त्रिशला देवीको  
नंदा, वीरजिणंद मुख पूनमचंदा ॥ आ० ॥ ७ ॥ आरती  
कीजें प्रभु चोवीश जिणंदकी, चोवीशे जिणंदकी में  
जाउं बलिहारी ॥ चोवीशे जिणंद मुख पूनमचंदा ॥  
आ० ॥ ८ ॥ कर जोडी सेवक इम बोले, नही कोइ माहारा  
प्रभुजीने तोले ॥ आ० ॥ ९ ॥ इति आरती संपूर्णा ॥

॥ अथ श्रीचक्रेश्वरी मातानी आरती ॥

॥ जय जय आरती देवी तुमारी, नित प्रणमुं हुं  
तुम चरणारी ॥ ज० ॥ १ ॥ श्रीसिद्धाचल गिरि  
रखवाली, नाम चक्रेश्वरी जग सौख्याली ॥ ज० ॥  
॥ २ ॥ विधि पद्मगङ्गानी शासन देवी, सकल आसं  
घने सुख करेवी ॥ ज० ॥ ३ ॥ नीलवट टीलडी रत्न  
बिराजे, कानें कुंमल दोय रवि शशि ठाजे ॥ ज० ॥  
॥ ४ ॥ बांहे बाजुबंध बेरखा सोहे, नीलवरण सु  
चके मन मोहे ॥ ज० ॥ ५ ॥ सोवन मय नित चू  
नडी खलके, पाये घुघरडा घम . घम घमके ॥ ज०  
॥ ६ ॥ वाहन गरुड चड्यां बहू प्रेमें, तुज गुण

पांर न पाउं केपे ॥ ज० ॥ ७ ॥ चूनडी जडामां देह  
 अति दीपे, नवसरा हारें जग सहु जीपे ॥ ज० ॥  
 ॥ ८ ॥ नित नित मानी आरती उतारे, रोग शोग  
 नय दूर निवारे ॥ ज० ॥ ९ ॥ तस घर पुत्र पौत्रा  
 दिक ठाजे, मनवंछित सुख संपद गाजे ॥ ज० ॥ १० ॥  
 देवचंद् मुनि आरती गावे, जयो जयो मंगल नित्य  
 वधावे ॥ ज० ॥ ११ ॥ इति संपूर्ण ॥

॥ अथ लोचनी सवाय ॥

॥ इमर आंबा आंबली रे ॥ ए देशी ॥

॥ लोच न करीएं प्राणीया रे, लोच बुरो संसार ॥  
 लोच समो जगमां नही रे, दुर्गतिनो दस्ता ॥  
 नविक जन, लोच बूरो रे संसार ॥ १ ॥ करजो तुमें  
 निरधार ॥ ज० ॥ जिम पामो नवफार ॥ ज० ॥ लोच  
 बूरो रे संसार ॥ ए आंकणी ॥ अति लोचें लखमी  
 पति रे, सागरनामें शेठ ॥ पूर पयोनिधिमां पड्यो  
 रे, जई बेठो तस हेठ ॥ ज० ॥ लो० ॥ २ ॥ सोवन  
 मृगना लोचथी रे, दशरथ सुत श्रीराम ॥ सीता  
 नारि गमावीने रे, नमीयो ठामो ठाम ॥ ज० ॥  
 ॥ लो० ॥ ३ ॥ दशमा गुणठाणा लगें रे, लोच  
 तणुं ठे जोर ॥ शिवपुर जातां जीवनें रे, एहज  
 मोहोढो चोर ॥ ज० ॥ लो० ॥ ४ ॥ क्रोध मान  
 माया लोचथी रे, दुर्गति पामे जीव ॥ परवश प  
 डीयो बापडो रे, अहोनिश पाडे रीव ॥ ज० ॥ लो०  
 ॥ ५ ॥ परियदना परिहारथी रे, लट्ठीयें शिवसख

सार ॥ देव दाणव नरपति थई रे, जागै मुक्ति मजार  
॥ ज० ॥ लो० ॥ ६ ॥ जावसागर पंमित जणे रे,  
वीरसागरबुध शिष्य ॥ लोज तणे त्यागें करी रे,  
पहोंचे सयल जगीश ॥ ज० ॥ लो० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ शीयलनी नववाड प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥ श्रीगुरुनें चरणे नमी, समरी शारद  
माय ॥ नवविध शीलनी वाडनो, उत्तम कहुं उपाय  
॥ १ ॥ ढाल पहेली ॥ वधावानी ॥ पहेलीने पासो  
होजी ॥ १ देशी ॥ पहेलीने वाडें होजी वीर जिनवरें  
कह्यो, सेवो सेवो हो वस्ति विचारीनें जी ॥ स्त्री  
पशु पमंग होजी वासो वसे जिहां, तिहां न रहेवुं हो  
शीलव्रत धारीनें जी ॥ २ ॥ जिम तरुमालें होजी  
वसतो वानरो, मनमां बिये रखे नूईं पडुं जी ॥  
मंजारी देखी होजी पिंजरमांहेथी, पोपट चिंते हो  
रखे मोटें चडूं जी ॥ ३ ॥ जिम सिंहलंकी होजी  
सुंदरी शिर धरी, जलनुं बेडुं हो जुगतिशुं जालवे  
जी ॥ तिम मुनि मनमें होजी राखे जालवी, नारीने  
निरखी होजी चित्त नवि चालवे जी ॥ ४ ॥ जिहां  
होवे वासो होजी सेहेजें मंजारनो, जोखम लागे हो  
मुषकनी जातने जी ॥ तेम ब्रह्मचारी होजी नारी  
नी संगतें, हारे हो हारे रे शीयल सूधातनें जी ॥  
५ ॥ त्रुटक ॥ एम वाड विघटे विषय प्रगटे, शंका कं  
खा नीपजे ॥ तीव्र कामें धातु बिगडे, रोग बहुविध उ  
पजे ॥ मन्नमांहे विषय व्यापे, विषयशुं मन रहे मली ॥

उदय रत्न कहे तिणे कारण, नव वाड राखो निर्मली ॥ ६ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ विदर्जदेश कुमन पुर नयरी ॥ ए देशी ॥

॥ सुरपति सेवित त्रिचुवन धणी अज्ञान तिमि  
र हर दिनमणि ॥ शील रत्ननां जनन तंतें, वाड  
जांखी बीजी जगवंतें ॥ १ ॥ त्रुटक ॥ जगवंत जांखे  
संघ साखें, शीयल सुरतरु राखवा ॥ पुक्ति माहाफ  
ल हेतु अद्भुत, चारित्र्यो रस चाखवा ॥ २ ॥ मीठें व  
चने माननीशुं, कथा करे कामनी ॥ वाड वि  
धिशुं जेह पाले, बलिहारी तस नामनी ॥ ३ ॥  
वात व्रतने घात कारी, पवन जिम तरुणातनें ॥  
वात करतां विषय जागे, तेमाटें तजो ए वातें  
॥ ४ ॥ लोंबु देखी दूरची जिम, खटाशें माढा गळे ॥  
गगनें गर्जारव सुणीनं, हडकवा जिम उडले ॥ ५ ॥  
तिम ब्रह्मचारीना चित्त विणसे, वयण सुंदरीनां  
सुणी ॥ कथा तजो तिणे कारण, एम प्रकारे त्रि  
चुवन धणी ॥ ६ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ त्रुट जमुनानुं रे अति रत्नीयामणुं रे ॥ ए देशी ॥

॥ बीजीनं वाडें रे त्रिचुवन राजीयो रे ॥ एणी प  
रें दीये उपदेश ॥ आसन ठंढोरे साधुजी नारीनो रे,  
मुहूर्तलगें सुविशेष ॥ हुं बलिहारी रे जावं तेहनी  
रे ॥ १ ॥ धन्य धन्य तेहनी हो मात ॥ शील सुरंगी रे  
रंगाणी रंगशुं रे, जेहनी साते हो घात ॥ हुं ० ॥

॥ १ ॥ शयनासनैं रे पाटीनैं पाटले रे, जिहां जिहां  
बेसे होनार ॥ बेघडी लगे रे तिहां बेसे नहीं रे, शील  
व्रत राखणहार ॥ हुं० ॥ ३ ॥ कोहेला केरीरे गंधसंजो  
गथी रे, जैम जाये कणकनो वाक ॥ तिम अबलानुं  
रे आसण सेवतां रे, विणसे शियल सुपाक ॥ हुं० ॥ ४ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ हुं वारी रंगढोलणा ॥ ए देशी ॥

॥ चोथीनी वाडे चेतजो हो राज, इम जांखे  
श्रीजिन जूप रे ॥ संवेगी सूधा साधु जी ॥ नयण  
कमल विकासीनैं हो राज, रखे निरखो रमणीनुं  
रूप रे ॥ सं० ॥ १ ॥ रूप जांतां रढ लागरो हो  
राज, देखो उद्वसरो अनंग रे ॥ सं० ॥ मनमांहे  
जागरो मोहनी हो राज, त्यारें होरो व्रतनो जंग रे ॥  
सं० ॥ २ ॥ दिनकर साहासुं देखेतां हो राज, नयण  
घटे जिम तेज रे ॥ सं० ॥ तिम तरुणी तन पेखतां  
हो राज, हीणुं थाये शीयलसुं हेज रे ॥ सं० ॥ ३ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ थांपरवारी मारा साहिबा कंवल मतचालो ॥ ए  
देशी ॥ पंचमी वाडी परमेसरें, वखाणी हो वारू ॥  
सांजलजो श्रोतातुमें, धर्मीव्रत धारू ॥ १ ॥ कूडांतर  
वरकामिनी, रमे जिहां रागें ॥ स्वरकंकणादिकनो  
सुणी, तिहां मन्मथ जागे ॥ २ ॥ तिहां वसवुं ब्रह्म  
चारीनैं, नकहुं वीतरागें ॥ वाड जांगे शील रत्ननी,  
जिहां लांठन लागे ॥ ३ ॥ अग्निपासें जिम उगले,  
जाजनमांहे जरिया ॥ लाखने मीण जाए गली, न

रहे रस जरिया ॥ ४ ॥ तिम हाव जाव नारी तणा,  
बली हांसुने रुदना ॥ सांजलतां शीयल वीधरे, मन  
बधे हो मदना ॥ ५ ॥

॥ ढाल ठछी ॥

॥ सहीयां मारा नयण समारो ॥ ए देशी ॥

॥ ठछीने वाडे ठयल ठवीलो, गुण रत्नें गाढो  
नखो जी ॥ सिद्धारथ कुल नंद नगीनो, वीरजिणंद  
५म उच्चखो जी ॥ १ ॥ अव्रतीपणे जे होय आगें,  
काम क्रीडा बहुविध करी जी ॥ व्रत जेइनें विलसि  
त पेहेलां, रखे संनारो दिल धरी जी ॥ २ ॥ अग्नि  
नखां जिम उपर पूलो, मेले जिम ज्वाला वमे जी ॥  
वरस दिवसें जिम विपथरनुं. शंकाये विप संक्रमे जी  
॥ ३ ॥ विषय सुख जे विलसित पेहेलां, तिम शियल  
व्रती संनारतो जी ॥ व्याकुल थइनें शीयल विराधे,  
पठें थाय बलि उरतो जी ॥ ४ ॥

॥ ढाल सातमी ॥ गढ बुंदीरा वाला ॥ ए देशी ॥

॥ सातमी वाडें वीर पयंपे, सुणो संजमना रागी  
हो ॥ शीलरथना हो धोरी ॥ सूधा साधु वैरागी,  
मुक्त आणाकारी, विषय रसना हो त्यागी ॥ सू० ॥  
॥ १ ॥ सरस आहार तजजो सेहेजें, विगय थोडी  
वावरजो हो ॥ शी० ॥ सू० ॥ २ ॥ मादक आहारें  
मन्मथ जागे, ते जाणी परिहरजो हो ॥ शी० ॥  
॥ सू० ॥ ३ ॥ सन्निपातें जिम धृत जोगें, अधिक  
करे उलाला हो ॥ शी० ॥ सू० ॥ ४ ॥ पांचे इंडिय



( ३३ )

तिम रस पोखे, चारित्रमां करे चाला हो ॥ शी ॥ सू ॥ ५

॥ ढाल आठमी ॥

॥ गोठण खोजो कमाड ॥ ए देशी ॥

॥ त्रिशला सुत हो त्रिगडे वेशी एम, आठमी  
वाड वखाणी शीलनी जी ॥ अतिमात्रा हो आहा  
र तजो अणगार, लालच राखो संयम शीलनी जी  
॥ १ ॥ अतिआहारें हो आवे उंघ अपार, स्वपनमां  
हे हो थाये शील विराधना जी ॥ बली थाये हो ते  
णे मदवंत देह, संजमनी हो नवि थाये आराधना  
जी ॥ २ ॥ जिम शेरना हो मापमां हि दोढ शेर, उरीने  
ऊपर दीजें ढांकणुं जी ॥ नांजे तोलडी हो खीचडी  
खेरु थाय, तेम अतिमात्राएं व्रत बिगडे घणुं जी ॥ ३ ॥

॥ ढाल नवमी ॥ गरबानी देशी ॥

॥ नवमी वाडें निवारजो रे, साधुजी शणगार ॥  
शरीर शोनाएं शोने नही, अवनीतलें अणगार  
॥ १ ॥ एम उपदेशे वीरजी, मुनिवर धरजो रे मन्न  
॥ शीखामण ए माहरी, करजो शील जतन्न ॥ २ ॥  
स्नान विलेपन वासना, उत्तम वस्त्र अपार ॥ तेल तं  
बोल आर्दे तजी, उझट वेश म धार ॥ ३ ॥ थोई नें  
धरणी धखो, जिम रत्न हाखो कुंजार ॥ तिम  
शीलरत्नने हारशो, जो करशो सिणगार ॥ ४ ॥

॥ ढाल दशमी ॥ नटीयाणी नी देशी ॥

॥ एकली नारी साथें, मारगें नवि जावुं हो,  
बली वात विशेष न कीजियें ॥ एक सेजें नर दोय,

शीलवंत नवि सुवे हो, वली सहेजें गाल न दीजियें  
 ॥ १ ॥ न सुवारे निज पास, साडा ठ वरसनी हो  
 कांइ, पुत्रीने पण हेजमां ॥ सात वरस उपरांत, सुतने  
 पण न सुवारे हो, कांइ शीलवंति तेम सेजमां ॥ २ ॥  
 स्त्रीसंगें नव लाख, जीव पंचेंडि हणाये हो, जगवंतें  
 नांखुं इस्थुं ॥ असंख्याता पण जीव, संमूर्धिम  
 पंचेंडिय हणाये हो, वली घणुं कहीएं किस्थुं ॥ ३ ॥  
 इम जाणी नर नार, शीयलनी मदहणा हो, सूधी  
 दिलमां धारजो ॥ एह डुर्गतिनुं मूल, अब्रह्म सेवा  
 मांहि हो, जातां दिलने वारजो ॥ ४ ॥ तपगढु गयण  
 दिणंद, मन वंठित फल दाता हो, श्री ह्रीरत्नसूरी  
 श्वरू ॥ पामी तास पसायं, वाडो एम वखाणी हो,  
 शीयलनी मनोहरू ॥ ५ ॥ खंजात रही न्योमास, सत्त  
 रशें त्रेशतें हो, श्रावण वदि बीज बुधें जणे ॥ उदय  
 रत्न कहे कर जोड, शियलवंत नर नारी हो, तेहनें  
 जाऊं नामणे ॥ ६ ॥ इति श्री नववाड संपूर्ण ॥

॥ अथ श्रीतमाकूनी सजाय लिख्यते ॥

॥ प्रीतमसेंती वीनवे, प्रेमदा गुणनी खाण ॥ मेरे  
 लाल ॥ मन मोहन एकण चित्तें, सांजलो चतुर सु  
 जाण ॥ मे० ॥ १ ॥ कंत तमाकू परिहरो ॥ ए आं  
 कणी ॥ मूको एहनो संग ॥ मे० ॥ पंचमांहे जस  
 लीजीयें, मीलें वाधे रंग ॥ मे० ॥ कं० ॥ २ ॥  
 तमाकू ते जाणियें, खुरासाणीनी आक ॥ मे० ॥ उ  
 त्तम जन ते इम कहे, पीवानी तलाक ॥ मे० ॥ कं० ॥ ३ ॥

॥ दूध दहीं ते पीजियें, वलि पीजियें साकर खांम ॥  
 मे० ॥ घृत पीधे तन उद्धसे, तमाकू परि ठांम  
 ॥ मे० ॥ कं० ॥ ४ ॥ मोहोटा साथें बोलतां, मन  
 मां आवे लाज ॥ मे० ॥ दिन पण एलें नीगमे, वि  
 णसाडे निज काज ॥ मे० ॥ कं० ॥ ५ ॥ होठ लि  
 हाजा सागिखा, श्वास गंधाये जेण ॥ मे० ॥ दांत  
 ते दीसे श्यामला, हैयडुं दाजे तेण ॥ मे० ॥ कं० ॥  
 ॥ ६ ॥ एठ पियारी आचरे, विटलावे निज जात  
 ॥ मे० ॥ व्यसनी वाखो नवि रहे, न गणे जात पर  
 जात ॥ मे० ॥ कं० ॥ ७ ॥ एके फूंकें जेटला, वा  
 युकाय हणाय ॥ मे० ॥ खस खस सम काया करे,  
 तो जंबु द्वीप न माय ॥ मे० ॥ कं० ॥ ८ ॥ गुडाकू  
 करी जे पीये, ते नर मूढ गमार ॥ मे० ॥ जल  
 नाखे जे जिहां कने, माखीनो संहार ॥ मे० ॥  
 ॥ कं० ॥ ९ ॥ चोमासाना कुंथुआ, ते किम शुद्ध  
 ज थाय ॥ मे० ॥ तमाकू पीतां थकां. पापें पिंम न  
 राय ॥ मे० ॥ कं० ॥ १० ॥ तलख तमाकू वापखां, परोणा  
 ने जाग ॥ मे० ॥ आगें करता लापसी, पढी ठीकरुं ने  
 आग ॥ मे० ॥ कं० ॥ ११ ॥ पाणी एकने बिंझुयें, जीव  
 कह्या जिनराय ॥ मे० ॥ वडबीज सम काया करे,  
 जंबुद्वीप न माय ॥ मे० ॥ कं० ॥ १२ ॥ अग्नि एक  
 ने खोडले, जीव कह्या जिनराय ॥ मे० ॥ सरशव  
 सम काया करे, तो जंबूद्वीप न माय ॥ मे० ॥  
 ॥ कं० ॥ १३ ॥ थूंकें संमूर्तिम ऊपजे, नर पचेंडिय जीव

॥ मे० ॥ एषण असंख्याता कहा, श्री जगदीश स  
 दैव ॥ मे० ॥ कं० ॥ १४ ॥ जलमां जीव कहा  
 घणा, संख्य असंख्य अनंत ॥ मे० ॥ नील फूल  
 तिहां कपजे, अग्नि प्रजादे जंत ॥ मे० ॥ कं० ॥  
 ॥ १५ ॥ तमाकू पीतां थकां, ए ठकाय हणाय  
 ॥ मे० ॥ ज्योति घटे नयणा तणी, श्वासें पिंम न  
 राय ॥ मे० ॥ कं० ॥ १६ ॥ घडी दोय जे व्रत करे,  
 सेवो श्रीजगवान ॥ मे० ॥ दया धर्म जाणी करी,  
 सेवो चतुर सुजाण ॥ मे० ॥ कं० ॥ १७ ॥ चतुर  
 विचारी समजीयें, धरीएं धर्मनुं ध्यान ॥ मे० ॥ आ  
 नंद मुनि एम उच्चरे, ते लहे कोडि कव्याण ॥ मे०  
 ॥ कं० ॥ १८ ॥ इति श्री तमाकूनी सजाय संपूर्णे ॥

॥ अथ चोवीशजिन स्तवनं ॥

॥ प्रहसमे नाव धरी घणो, प्रणमुं मन रे आपणं  
 दा ॥ धन वेला धन ते घडी, निरखुं प्रभु मुख चंदा  
 ॥ प्र० ॥ १ ॥ रूपन अजित संजव जला, अजिनं  
 दन वंडं ॥ सुमति पद्मप्रन जिनवरा, श्रीसुपार्श्व  
 जिनेंडु ॥ प्र० ॥ २ ॥ चंडप्रन सुविधि नमुं, शीतल  
 श्रेयांस ॥ वासुपूज्य विमल प्रभु, अनंत धर्म जिनेश  
 ॥ प्र० ॥ ३ ॥ शांति कुंथु अर जिनवरा, ए त्रण  
 चक्री कहीजें ॥ मल्ली मुनि सुव्रत प्रभु, नमि नेम  
 नमीजें ॥ प्र० ॥ ४ ॥ पार्श्व वीर नित्य वंदिएं, एहवा  
 जिन चोवीश ॥ ज्ञानविमल सूरि प्रणमतां, नित्य  
 होए जगीश ॥ प्र० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ ऋषज्जिन स्तवनं ॥

॥ आज तो वधाई राजा, नानीके दरबार रे ॥ मरु  
देवायें बेटो जायो, ऋषज कुमार रे ॥ आ० ॥ १ ॥  
अयोध्यामें उहव होवे, मुख बोले जयकार रे ॥  
घननन घननन घंटा वाजे, देव करे थेईकार रे  
॥ आ० ॥ २ ॥ इंडाणी मली मंगल गावे, लावे  
मोतीमाल रे ॥ चंदन चरचा पाए लागे, प्रभु जीवो  
चिरकाल रे ॥ आ० ॥ ३ ॥ नानीराजा दानज देवे,  
वरसे अखंड धार रे ॥ गाम नगर पुर पाटण देवे,  
देवे मणि जंमार रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ हाथी देवे साथी  
देवे, देवे रथ तूखार रे ॥ हीर चीर पीतांबर देवे,  
देवे सवि शणगार रे ॥ आ० ॥ ५ ॥ तिन लोकमें  
दिनकर प्रगळ्यो, घर घर मंगल माल रे ॥ केवल  
कमलारूप निरंजन, आदीश्वर दयाल रे ॥ आ० ॥ ६ ॥

॥ अथ श्रीचिंतामणि पार्श्वनाथ स्तवनं ॥

॥ चिंतामणि चिंता सवि चूरे, पूरे मनकी आशा  
रे ॥ जाव नक्तिशुं जे नर ध्यावे, पावे शिव सुख  
वासा रे ॥ चिंता० ॥ पूरे० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥  
उर देव सब दूर कीए हे, प्रभु गुनका में प्यासा रे ॥  
दिलनर दरिसण द्यो प्रभु प्यारे, दोहग दूर पलासा  
रे ॥ चिंता० ॥ २ ॥ प्रभुजीशुं मेरो चित्त चाहे,  
चकवा दिनकर जैसा रे ॥ चरणकमलकी गंध सुगंधें,  
मुऊ मन चमरा वैसा रे ॥ चिं० ॥ ३ ॥ जिन मुख  
वाणी गंग तरंगें, पाप पंकका नासा रे ॥ देखतहिं

मन विकसिन होवें, एहि अजब तमासा रे ॥ चिं० ॥  
 ॥ ४ ॥ पास जिनसर पल न विसारुं, जब जग तनमें  
 सासा रे ॥ ग्यानमहोदय चरण सरोजें, कसणोदधि  
 हे दासा रे ॥ चिं० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ रूपनजिन स्तवनं ॥

॥ जीरे सफल दिवस आज माहरो, दांजो प्रभु  
 नो देदार ॥ लय लागी जिनजीथकी, प्रगव्यो प्रेम  
 अपार ॥ घडी एक विसरो नहिं साहिवा, साहिवा  
 घणो रे सनेह ॥ अंतरनामी गो माहरो, मरुदं  
 वीना नंद ॥ घ० ॥ १ ॥ जीरे लघु यश्नें मनडुं रही,  
 प्रभु सेवानें काज ॥ ते दिन क्यारें आवजो, शिव  
 सुखना दातार ॥ घ० ॥ २ ॥ जीरे प्राणोसर प्रभुजी  
 तुमें, आतमना आधार ॥ माहारे मन प्रभु तुमें  
 एक गो, जाणजो जगदाधार ॥ घ० ॥ ३ ॥ जीरे  
 एक घडी प्रभु तुम विना, जाए वरस समान ॥  
 प्रेम विरह तुऊ केम खमुं, जाणो वचन प्रमाण  
 ॥ घ० ॥ ४ ॥ जीरे अंतरगतनी वातडी, कहो केने  
 कहेवाय ॥ वाजेसर विशवासीनें, कहेतां दुःख जाय  
 ॥ घ० ॥ ५ ॥ जीरे देव अनेक जगमांहे ठे, तेहनी  
 रीत अनेक ॥ तुऊ विना अवरनें नही नमुं, एवी  
 मुऊ मन टेक ॥ घ० ॥ ६ ॥ जीरे पंक्ति विवेकवि  
 जय तणो, नमे शुन मन जाय ॥ हर्षविजय श्रीरू  
 पनना, जुगते गुण गाय ॥ घ० ॥ ७ ॥ इति ॥

( ३९ )

॥ अथ श्रीशत्रुंजय स्तवनं ॥

॥ श्रीरे सिद्धाचल चेटवा, मुळ मन अधिक उमा  
हो ॥ रुषन जिणंद जुहारीनें, लीजें नव तणो लाहो  
॥ श्री० ॥ १ ॥ मणिमय मूरति रुषननी, निपाई  
अनिराम ॥ जुवन कराव्युं कनकमय, राख्युं नरतें  
नाम ॥ श्री० ॥ २ ॥ इण गिरि रुषन समोसखा, पूर्व  
नवाणुं वार ॥ राम पांढव मुगतें गया, पास्या नवनो  
पार ॥ श्री० ॥ ३ ॥ नेम विना त्रेवीश जिना, आव्या  
सिद्ध खेत्र जाणी ॥ शत्रुंजा समुं तीरथ नही, बोव्या  
सीमंधर वाणी ॥ श्री० ॥ ४ ॥ पूरव पुण्य पसायथी,  
विमलाचल पायो ॥ कांतिविजय हरपें करी, विमला  
चल गायो ॥ श्री० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ वीरजिन स्तवनं ॥

॥ जोलीडा हंसा रे विषय न राचीयें ॥ ए देशी ॥

॥ सिद्धारथना रे नंदन वीनबुं, वीनतडी अवधा  
र ॥ नवमंरुपमां रे नाटक नाचियो, हवे मुळ दान देव  
राव ॥ हवे मुज पारउतार ॥ सिद्धा० ॥ १ ॥ त्रण रतन मुळ  
आपो तातजी, जेम नावे रे संताप ॥ दान देयंतां रे  
प्रभुजी कसुर किसी, आपो पदवी रे आप ॥ सिद्धा० ॥  
॥ २ ॥ चरण अंगुठडे मेरु कंपावियो, सुरनुं मोडयुं रे  
मान ॥ अष्टकर्मनो रे ऊगडो जींतियो, दीधुं वरसीरे दान  
॥ सिद्धा० ॥ ३ ॥ शासन नायक सवि सुख दायक,  
त्रिशला कूखें रतन्न ॥ सिद्धारथनो रे वंश दीपावियो,  
प्रभुजी तमें धन्य धन्य ॥ साहेब तुमें धन्य धन्य

॥ सिद्धा० ॥४॥ वाचकशेखर कीर्तिविजय गुरु, पामी  
तास पसाय ॥ धर्म तणे रमें जिन चोवीशना, वि  
नय विजय गुण गाय ॥ सिद्धा० ॥ ५ ॥ इति वीरजिन ॥

॥ अथ प्रजाती ॥ रागवेलावल ॥

॥ जब लगें समकित रत्नकुं, पाया नही पाणी ॥  
तब लगें निज गुण नवि वधे, तरु विण जिम पाणी  
॥ ज० ॥ १ ॥ तप संयम किरिया करो, चित्त राख्यो  
ठाम ॥ दर्शन विण निष्फल होय, जिम व्योमें चि  
त्राम ॥ ज० ॥ २ ॥ समकित विरहित जीवनें, शिव  
सुख होये केम ॥ विण हेतु कार्य न नीयजे, मृदवि  
ण घट जेम ॥ ज० ॥ ३ ॥ परंपर कारण मोहको,  
ए ठे समकित मूल ॥ श्रेणिक प्रमुख तणी परें, होय  
सिद्धि अनुकूल ॥ ज० ॥ ४ ॥ चार अनंतानुबंधी  
आ, त्रिक दर्शन मोह ॥ ज्ञान कहे जे ह्य करे, वं  
दूं ते जितकोह ॥ ज० ॥ ५ ॥ इति संपूर्ण ॥

॥ अथ प्रजाति स्तवनं ॥ राग वेलावल ॥

॥ तेदिन क्यारें आवशे, श्रीसिद्धाचल जाशुं ॥  
रूपन जिणंदने पूजवा, सूरज कुंममां न्हाशुं ॥ ते०  
॥ १ ॥ समवसरणमां बेसीनें, जिनवरनी वाणी ॥  
सांजलशुं साचे मनें, परमारथ जाणी ॥ ते० ॥ २ ॥  
समकित व्रत सूधां धरी, सद गुरुने वंदी ॥ पाप स  
रव आलोश्नें, निज आतम निंदी ॥ ते० ॥ ३ ॥ प  
डिक्कमणा दोय टंकनां, करशुं मन कोडें ॥ विषय क  
पाय वीसारीनें, तप करशुं होडें ॥ ते० ॥ ४ ॥ वाहा



लाने वैरी विञ्चें, नवि करणुं वेहेरो ॥ परना अवगुण  
 देखीने, नवि करणुं चेहेरो ॥ ते० ॥ ५ ॥ धरम स्था  
 नक धन वावरी, ठक्कायनें हेतें ॥ पंच महाव्रत लेइ  
 नें, पालणुं मन प्रीतें ॥ ते० ॥ ६ ॥ कायानी माया  
 मेलीने, परीसहने सहेणुं ॥ सुख दुःख सघला विसा  
 रीनें, समजावें रहेणुं ॥ ते० ॥ ७ ॥ अरिहंत देवनें  
 उलखी, गुण तेहना गाणुं ॥ उदय रतन इम उच्चरे,  
 त्यारें निरमल आणुं ॥ ते० ॥ ८ ॥ इति संपूर्ण ॥

॥ अथ प्रजातें मंगल ॥ राग जैरव ॥

॥ जाग नविया धर्म वाहाणुं, साद सद्गुरुनो सु  
 णी ॥ काज कर जीव पुण्य केरां, मोह निडा पर  
 हरी ॥ जा० ॥ १ ॥ पूरवदिशें जिनतणी वाणी, ज्ञान  
 दिनकर उगीयो ॥ हर्ष हर्षडा कमल विकस्यां, पाप  
 तिमिर वही गयो ॥ जा० ॥ २ ॥ धर्म मारग हुउ  
 परगट, हृदय नयण निहालीएं ॥ ध्यान जल नव  
 कार दातण, करी वदन पखालीएं ॥ जा० ॥ ३ ॥  
 सूरजकुंम जई स्नान कीजें, निरमल धोती पेहेरीएं ॥  
 श्रीआदिनाथ युगादि वंदी, अष्ट कर्म निवारीएं ॥  
 ॥ जा० ॥ ४ ॥ शीयल समकित धोति पेहेरी, कुसुम  
 करणी कर धरी ॥ प्रह उठी प्रासाद जइं, श्रीजिन  
 पूजा इम करी ॥ जा० ॥ ५ ॥ सत्य वचन तंबोलना  
 रंग, शील सिणगार पेहेरीएं ॥ माय बाप देव गुरु  
 तेहनां, चरणकमल जुहाररिं ॥ जा० ॥ ६ ॥ गं  
 नारे जइ पूजा रचीएं, रंग मंमप रलियामणो ॥

नयणें निरखी नाथ निहालो, जावना इम आविएं  
 ॥ जा० ॥ ७ ॥ पहिले मंगल जिनचोवीशे, बीजे  
 गोयम गणहरू ॥ त्रीजे मंगल सहगुरु नामें, चौथो  
 जिन शासनवरू ॥ ८ ॥ मूलगां ए चार मंगल, सुप्र  
 नातें सोहामणां ॥ जणे नंदीसर सयल सुखकर, दीउ  
 हरष वधामणां ॥ जा० ॥ ९ ॥ इति मंगलम् ॥

॥ अथ श्री महावीर स्वामीनां पांच कव्या ॥

॥ गिकुं चोढालीयुं प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥ प्रेमें प्रणमुं सरसनी, मागुं अविरल  
 वाणि ॥ वीर तणा गुण गायकुं, पंच कव्याणि क जाणि  
 ॥ १ ॥ गुण गातां जिनजी तणा, लहीएं जवनो पार ॥  
 सुख समाधि होए जीवनें, सुणजो सहु नर नार ॥ २ ॥

॥ ढाल पहेली ॥ चालो गरबो रमीएं रूडा ॥

॥ रामकुं जो ॥ ए देशी ॥

॥ जंबूद्वीपना जरतमां जो, रुडूं माहणकुं ठे  
 गाम जो ॥ रुपनदत्त माहण तिहां वसे जो, तस  
 नारी देवानंदा नाम जो ॥ १ ॥ चरित्र सुणो जिनजी  
 तणां जो ॥ ए आंकणी ॥ जेम समकित निर्मल  
 थाय जो ॥ अष्ट माहासिद्धि संपजे जो, वली पा  
 तक दूर पलाय जो ॥ च० ॥ २ ॥ उजली ठठ आषा  
 ढनी जो, योगें उत्तराफाल्गुनी सार जो ॥ पुष्फोत्तर  
 सुविमानथी जो, चवी कूखें लीयो अवतार जो ॥ च० ॥  
 ॥ ३ ॥ देवानंदा तेणी रयणीएं जो, सूतां सुपन  
 लह्यां दश चार जो ॥ फल पूठे निज कंतने जो,

कहे रुषनदत्त मन धार जो ॥ च० ॥ ४ ॥ जोग अरथ  
 सुख पामशुं जो, तमें लेहेशो पुत्र रतन्न जो ॥ देवा  
 नंदा ते सांजली जो, कीधुं मनमां तहत्ति वचन्न जो  
 ॥ च० ॥ ५ ॥ सांसारिक सुख जोगवे जो, सुणो अच  
 रिज हूउ तिणि वार जो ॥ सुंधर्म इंदु तिहां कणो  
 जो, जोइ अवधि तणे अनुसार जो ॥ च० ॥ ६ ॥ च  
 रम जिणोसर ऊपना जो, देखी हरष्यो इंदु माहाराज  
 जो ॥ सात आठ पग साहामो जइ जो, एम वंदन करे  
 शुन साज जो ॥ च० ॥ ७ ॥ शक्रस्तव विधिगुं करी  
 जो, फरी ते गो सिंहासन जाम जो ॥ मन विमासण  
 मां पडशुं जो, चित्त चिंतवे सुरपति ताम जो ॥ च० ॥  
 ८ ॥ जिन चक्री हरि रामजी जो, अंतपंत माहण  
 कुल्ले जोय जो ॥ आव्या नही नही आवगे जो, एतो  
 उग्रजोग राजकुल होय जो ॥ च० ॥ ९ ॥ अंतिम जि  
 णोसर आविया जो, एतो माहणकुलमां जेण जो ॥  
 ए तो अठेरा जूत ठे जो ॥ थयुं दुंमाअवसरपिणी तेण  
 जो ॥ च० ॥ १० ॥ काल अनंत जाते थके जो, ए  
 हवां दश अठेरां थाय जो ॥ इण अवसरपिणीमां  
 थया जो, ते कहीयें जे चित्त लाय जो ॥ च० ॥ ११ ॥  
 गर्ज हरण उपसर्गनो जो, मूल रूपें आव्या रवि  
 चंद जो ॥ निष्फल देशना जे थई जो, गयो सौधमें  
 चमरेंड जो ॥ च० ॥ १२ ॥ ए श्री वीरनी वारमां  
 जो, कल अमर कंका गया जाण जो ॥ नेम नाथने  
 वारे सही जो, स्त्री तीर्थ मल्ली गुण खाण जो ॥ च० ॥

॥ १३ ॥ एक शो आठ सिद्धा रूपनने जो, वारें सु  
विधिनें असंयति जो ॥ शीतल नाथ वारें थयुं जो,  
कुल हरिवंशनी उत्पत्ति जो ॥ च० ॥ १४ ॥ एम  
विचार करे इंदलो जो, प्रभु नीच कुलें अवतार जो  
॥ तेहनुं कारण शुं अठे जो, इम चिंतवे हृदय  
मजार जो ॥ च० ॥ १५ ॥

॥ ढाल बीजा ॥ आशोमासें शरद पू ।

॥ नमनी रात जो ॥ ए देशी ॥

॥ जब मोहोटा कहीएं प्रभुना सत्तावीश जो, मरिची  
त्रिदंभी तेमांहे त्रीजे नवें रे जो ॥ तिहां जरत चक्रीसर  
र वांदे आवी जोय जो, कुलनो मद करी नीच गोत्र  
बांध्युं तेहवे रे जो ॥ १ ॥ एतो माहण कुलमां  
आव्या जिनवर देव जो, अति अणजुगतुं एह थयुं  
थाशे नही रे जो ॥ जे जिनवर चक्री नीच कुलमांहे  
जो, ठे माहारो आचार धरुं उत्तम कुलें सही रे जो  
॥ २ ॥ एम चिंतवी तेज्यो हरिणगमेषी देव जो, कहे  
माहण कुंमें जइने ए कारज करो रे जो ॥ ठे देवानं  
दानी कूखें चरम जिणंद जो, हर्ष धरीने प्रभुनें तिहां  
थी संहरो रे जो ॥ ३ ॥ नयर कृत्रीकुंम राय सिद्धा  
रथ गेह जो, त्रिशलाराणी तेहनी ठे रूपें नली रे जो  
॥ तस कुखें जइ संक्रमावो प्रभुनें आज जो, त्रिश  
लानो जे गर्न अठे ते माहणकुलें रे जो ॥ ४ ॥  
जेम इंदें कहुं तेम कीधुं ततहण तेण जो, व्याशी  
रातने अंतरे प्रभुनें संहखो रे जो ॥ माहणी सुपनां

जाणे त्रिशला हरीनें लीध जो, त्रिशला देखी चौद  
 सुपन मनमां धर्यां रे जो ॥ ५ ॥ गज वृषज अने  
 सिंह लक्ष्मी फूलनी माल जो, चंदो सूरज ध्वज कुंज  
 पद्मसरोवरु रे जो ॥ सागरने देवविमानज रत्ननी रा  
 शि जो, चौदमे सुपनें देखी अग्नि मनोहरु रे जो ॥ ६ ॥  
 शुन सुहणा देखी हरखी त्रिशला नार जो, परजातें  
 उठीने पीयु आगल कहे रे जो ॥ ते सांजली दिलमां  
 राय सिंघारय नेह जो, सुपन पाठक तेडीने पूढे  
 फल लहे रे जो ॥ ७ ॥ तुम होशे राज अरथनें  
 सुत सुख नोग जो, सुणी त्रिशला देवी सुखें गर्न पो  
 षण करे रे जो ॥ तव माता हेतें प्रजुजी रह्या सं  
 लीन जो, ते जाणीने त्रिशला डख दिलमां धरे रे  
 जो ॥ ८ ॥ में कीधां पाप अधोर नवो नव जेह  
 जो, दैव अटारो दोषी देखी नवि शके रे जो ॥ मुळ गर्न  
 हस्यो जे किम पामुं हवे तेह जो, रांक तणे घर रत्न  
 चिंतामणि किम टके रे जो ॥ ९ ॥ प्रजुजीएं जाणी  
 ततखिए डुःखनी वात जो, मोह विटंबन जालिम  
 जगमां जे लहुं रे जो ॥ जुठ दीग विण पण एवडो  
 जागे मोह जो, नजरें बांध्या प्रेमनुं कारण शुं कहुं  
 रे जो ॥ १० ॥ प्रजुगर्नयकी हवे अनिग्रह लीधो  
 एह जो, मात पिता जीवतां संमय लेशुं नही रे जो  
 ॥ एम करुणा आणी तुरत हलाव्युं अंग जो, माता  
 ने मन ऊपनो हर्ष घणो सही रे जो ॥ ११ ॥ अहो  
 नाग्य अमारुं जाग्युं सहियर आज जो, गर्न अमा

रो हाव्यो सहु चिंता गई रे जो ॥ एम सुखजर रहे  
तां पूरण हुवा नव मास जो, ते ऊपर वली साठी  
सात खणी थई रे जो ॥ १२ ॥ तव चैत्र तणी  
शुद्धि तेरस उत्तरा रिक्क जो ॥ जनम्या श्रीजिन वीर  
हुई वधामणी रे जो ॥ सहु धरणी विकसी जगमां  
थयो प्रकाश जो, सुर नरपति घर वृष्टि करे सोवन  
तणी रे जो ॥ १३ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ माहरी सही रे समाणी ॥ ए देखी ॥

॥ जनम समय श्रीवीरनो जाणी, आवी तप्यन  
कुमारी रे ॥ जग जीवन जिनजी ॥ जनम महात्सव  
करी गीतज गाये, प्रभुजीनी जावं बलिहारी रे  
॥ ज० ॥ १ ॥ ततक्षण इंद्र सिंहासन हाव्युं, घोष  
घंटा बजडावी रे ॥ ज० ॥ मलिया कोडि सुरासुर  
देवा, मेरु पर्वतें आवी रे ॥ ज० ॥ २ ॥ इंद्रो पंच  
रूपें प्रभुजीनें, सुरगिरि ऊपर लावे रे ॥ ज० ॥ यत्न  
करी हियडामां राखे, प्रभुनें शीश नमावे रे ॥ ज० ॥  
॥ ३ ॥ एक कोडी शाठ लाख कलशला, निरमल  
नीरें जरिया रे ॥ ज० ॥ नाहानो बालक ए किम  
सहेजे, इंद्रें संशय धरिया रे ॥ ज० ॥ ४ ॥ अतुलि  
बल जिन अवधें जोई, मेरु अंगुठें चंप्यो रे ॥ ज० ॥  
पृथिवी हाल कल्लोल थई तव, धरणीधर तिहां कंप्यो  
रे ॥ ज० ॥ ५ ॥ जिननुं बल देखीनें सुरपति, नक्ति  
करीने खमावे रे ॥ ज० ॥ चार वृषजनां रूप धरीनें,  
जिनवरनें नवरावे रे ॥ ज० ॥ ६ ॥ अमृत अंगुठे

थापीनें, माता पासें मेले रे ॥ ज० ॥ देव स  
 दु नंदीसर जाए, आवतां पातक ठेले रे ॥ ज० ॥  
 ॥ ७ ॥ हवे प्रजातें सिद्धारथ राजा. अति घणां  
 उठव मंमावे रे ॥ ज० ॥ चकले चकले नाच करावे,  
 जगतना दाण मंमावे रे ॥ ज० ॥ ८ ॥ बारमे दि  
 वसें सज्जन संतोषी, नाम दीधुं वर्द्धमान रे ॥ ज० ॥  
 अनुक्रमें वधता आठ वरपना, दुआ श्रीजगवान रे  
 ॥ ज० ॥ ९ ॥ एक दिन प्रभुजी रमवा चाब्या, तेव  
 तेवडा संघाती रे ॥ ज० ॥ १० ॥ मुखें परशंसा  
 निसुणी, आव्यो सुर मिथ्याती रे ॥ ज० ॥ १० ॥  
 पन्नगरूपें जाडें वलंगो, प्रभुजीएं नाख्यो जाली रे  
 ॥ ज० ॥ ताड समान वली रूप कीधुं, सुठीएं  
 नाख्यो उठाली रे ॥ ज० ॥ ११ ॥ चरणो नमीनें  
 खमावे ते सुर, नाम धरे महावीर रे ॥ ज० ॥ जेहवा  
 तुमनें इंदें वखाण्या, तेहवा ठो प्रभु धीर रे ॥ ज०  
 ॥ १२ ॥ मात पिता नीशालें जणवा, मूके बालक  
 जाणी रे ॥ ज० ॥ १३ ॥ आवी तिहां प्रभज पूठे,  
 प्रभु कहे अर्थ वखाणी रे ॥ ज० ॥ १३ ॥ जोवन  
 वय जाणी प्रभु परण्या, नारी जशोदा नामें रे ॥ ज० ॥  
 अठ्यावीशे वरपें प्रभुना, मात पिता स्वर्ग पामे रे  
 ॥ ज० ॥ १४ ॥ जाइजीनो आग्रह जाणी, दोय वरस  
 घर वासी रे ॥ ज० ॥ ते हवे लोकांतिक सुर बोले,  
 प्रभु कहो धर्म प्रकाशी रे ॥ ज० १५ ॥

॥ ढाल चौथी ॥

॥ तारेमाथे पंचरंगी पाग, सोनारो ढोगलो मारुजी ॥ एदेशी

॥ प्रभु आपी वरसी दान जलुं रवि ऊगते ॥ जिनव  
रजी ॥ एक कोडीने आठ लाख सोनइया दिन प्रते ॥  
जि० ॥ मागशिरवदि दशमी उत्तरा योगें मन धरी ॥ जि०  
जाईनी अनुमति मागी नें दीक्षा वरी ॥ जि० ॥ १ ॥ नेत्र  
दिवसथकी चउनाणी प्रभुजी थया ॥ जि० ॥ साधिक  
एक वरसते चीवर धारी प्रभु रह्या ॥ जि० ॥ पत्रें दी  
धुं बंजणने बे वार खंमो खंमैं करी ॥ जि० ॥ प्रभु वि  
हार करे एकाकी अनिग्रह जित्त धरी ॥ जि० ॥ २ ॥ सा  
डा बार वर्षमां घोर परीसह जे सह्या ॥ जि० ॥ शूलपा  
णीने संगम देव गोशालाना कह्या ॥ जि० ॥ चंद्रको  
शीने गोवाले खीर रांधी पग ऊपरें ॥ जि० ॥ काने खी  
ला खोस्या ते छुट सहु प्रभु उदरे ॥ जि० ॥ ३ ॥ जेइ  
अडदना बाकला चंदन बाला तारियां ॥ जि० ॥ प्रभु  
पर उपगारी सुक छुक सम धारिया ॥ जि० ॥ ठमासी  
बेनें नव चोमासी कहीएं रे ॥ जि० ॥ अढीमास त्रि  
मास मोढमास ए बे बे लहीएं रे ॥ जि० ॥ ४ ॥ षट  
कीधा बे बे मास प्रभु सोहामणा ॥ जि० ॥ बार मासनें  
पस्क बहोतर ते रलीयामणा ॥ जि० ॥ ठठ बसें उंग  
एत्रीश बार अठम वखाणीयें ॥ जि० ॥ जइादिक प्र  
तिमा दिन बे चौदश जाणीयें ॥ जि० ॥ ५ ॥ साडा बार  
वरपें तप कीधां विण पाणीयें ॥ जि० ॥ पारणा त्रण  
सें उंगण पंचास ते जाणीयें ॥ जि० ॥ तव कर्म खपावी



ध्यान शुंकल मन ध्यावता ॥ जि० ॥ वैशाख शु  
 दि दशमी उत्तरा जोगें सोहावता ॥ जि० ॥ ६ ॥  
 शालि वृद्ध तर्जें प्रभु पाम्या केवल नाण रे ॥ जि० ॥  
 लोकालोक तणां परकाशी थया प्रभु जाण रे ॥ जि० ॥  
 इंद्रूति प्रमुख प्रतिबोधी गण र कीध रे ॥ जि० ॥ सं  
 घ थापना करीनें धर्मनी देशना दीध रे ॥ जि० ॥ ७ ॥  
 चौद सहस जना अणगार प्रभुनें शोचता ॥ जि० ॥  
 वली साधवी सहस ठत्रीश कही निर्लोचता ॥ जि० ॥  
 उंगणशाठ सहस एकलाख ते श्रावक संपदा ॥ जि० ॥  
 तिन लाखनें सहस अठार ते श्राविका संमुदा ॥  
 जि० ॥ ८ ॥ चौद पूर्वधारी त्रणगें संख्या जाणीये  
 ॥ जि० ॥ तेरगें उहिनाणी सातगें केवली वखाणी  
 ये ॥ जि० ॥ लब्धि धारी सातगें विपुलमति वली पां  
 चगें ॥ जि० ॥ वली चारगें वादी ते प्रभुजी पासें वसे  
 ॥ जि० ॥ ९ ॥ शिष्य सातगेंनें वली चौदगें साधवी  
 सिद्ध थया ॥ जि० ॥ ए प्रभुजीनो परिवार कहेतां  
 मन गहगह्यां ॥ जि० ॥ प्रभुजीये त्रीश वरस घरवासें  
 जोगव्यां ॥ जि० ॥ ठदमस्थ पणामां बार वरस ते जो  
 गव्यां ॥ जि० ॥ १० ॥ त्रीश वरस केवल बेहेंतालीश  
 वरस संजम पणुं ॥ जि० ॥ संपूरण बहोत्तर वरस  
 आयु श्रीवीर तणुं ॥ जि० ॥ दीवाली दिवसें स्वाती न  
 क्खत्र सोहंकरु ॥ जि० ॥ मथ्यरातें मुक्ति पहोता प्रभु  
 जी मनोहरु ॥ जि० ॥ ११ ॥ ए पांच कल्याणक चोवी  
 शमा जिनवर तणां ॥ जि० ॥ ते जणतां गुणतां हर

સ્વ હોયે મનમાં ઘણા ॥ જિઠ ॥ જિનશાસન નાયક  
 ત્રિશલા સુત ચિત્ત રંજણો ॥ જિઠ ॥ નવિયણને શિવ  
 સુખ કારી નવનય નંજણો ॥ જિઠ ॥ ૧૨ ॥ કલશ ॥  
 જય વીરજિનવર સંઘ સુખકર, શુણ્યો અતિ ઉત્સુક થ  
 રી ॥ સંવત સત્તર એક્યાશીયે, સૂરન ચોમાસું કરી ॥ શ્રી  
 સહજસુંદર તણો મેવક, નતિશું ણી પરે કહે ॥ પ્ર  
 તુજીશું પૂરણ પ્રેમ પાવ્યો, નિવ્યલાન વંઝિત લહે ॥ ૧૩ ॥  
 ॥ અથ આદિનાથસ્તવનં ॥

॥ પ્રથમ જિણેસર પ્રણમીયે, જાસ સુગંધીમે કાર ॥  
 કલ્પવૃક્ષ પરે તાસ ડંડાણી નયણ જે, જંગ પરે લપટા  
 ય ॥ ૧ ॥ રોગ ઝરગ તુજ નવિ નહે, અમૃત જે આસ્વા  
 દ ॥ તેહથી પ્રતિહત તેહ માનું કોઈ નવિ કરે, જગમાં  
 તુમશું વાદ ॥ ૨ ॥ વગર થોઈ તુજ નિર્મલી, કાયા કં  
 ચન વાન ॥ નહી પ્રસ્વેદ લગાર તારે તું તેહને, જે થરે  
 તાહરું ધ્યાન ॥ ૩ ॥ રાગ ગયો તુજ મનથકી, તેહમાં  
 ચિત્ત ન કોઈ ॥ રુધિર આર્મ, પથી રોગ ગયો તુજ જન્મ  
 થી, દૂધ સહોદર હોઈ ॥ ૪ ॥ શ્વાસોશ્વાસ કમજ સ  
 મો, તુજ લોકોત્તર વાત ॥ દેસે ન આહાર નિહાર ચર્મ  
 ચક્રુધણી, એહવા તુજ અવદાત ॥ ૫ ॥ ચાર અતિશય  
 મૂલથી, ઝંગળીશ દેવના કીધ ॥ કર્મ સ્વપ્નાથી ઈગ્યાર  
 ચોત્રીશ, એમ અતિશય સમવાયંગે પ્રસિદ્ધ ॥ ૬ ॥  
 જિન ઉત્તમ ગુણ ગાવતાં, ગુણ આવે નિજ અંગ ॥ ૭  
 અવિજય કહે એમ સમય પ્રતુ પાલજો, જિમ થાઉં  
 અસ્વય અનંગ ॥ ૭ ॥ ઇતિ આદિનાથ સ્તવનં સંપૂર્ણ ॥

( ५१ )

॥ अथ पार्श्वजिनस्तवनं ॥

॥ परमातम परमेसरू, जगदीसर जिनराज ॥ ज  
गबंधव जगन्नाण वलिहारी तुम तणी, नवजलधिमां रे  
झिहाज ॥ १ ॥ तारक वारक मोहनो. धारक निज  
गुण रुद्धि ॥ अतिशय वंत नदंत रूपानी शिव बधू.  
परणी लही निज सिद्धि ॥ २ ॥ ज्ञान दर्शन अनंत  
ठे, बली तुऊ चरण अनंत ॥ इम दानादि अनंत द्वायि  
कनारिं थया, गुण ते अनंतानंत ॥ ३ ॥ बत्रीश  
वर्ण समा ठे, एकज श्लोक मजार ॥ एक वर्ण प्रभु  
तुऊ न माये जगतमां. केम करी शुणीएं उदार ॥ ४ ॥  
तुऊ गुण कोण गणी शक्रे, जो पण केवल होय ॥  
आविर्जाविं तुऊ सयल गुण माहरे, प्रबुद्ध नावथी  
जोय ॥ ५ ॥ श्रीपंचाशरा पासजी, अरज करुं एक  
तुऊ ॥ आविर्जावथी थाय दयाल रुपानिधि, करु  
णा कीजें जी मुऊ ॥ ६ ॥ श्रीजिन उत्तम ताहरी,  
आशा अधिक माहाराज ॥ पद्मविजय कहे एम लहुं,  
शिव नगरीनुं, अरुण्य अविचल राज ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ पार्श्वजिनस्तवनं ॥

॥ जिनपति अविनाशी काशी धणी रे, मननी  
आशा पूरणहार हो ॥ जिनपति चिंतामणि रे ॥ जि  
नपति अश्वसेन कुल चंदलो रे, वालो वामा मात  
मलार हो ॥ जि० ॥ १ ॥ जि० ॥ तीन जुवन शिर सेह  
रो रे, सेवे चोशठ सुरपति पाय हो ॥ जि० ॥ जि० ॥  
नाटक नव नव ठंडथी रे, सुरवधू मधुर स्वरें गुण

गाय हो ॥ जि० ॥ १ ॥ जि० ॥ तुज रूपें रतिपति धसे  
 रे, अंगथी लाजी रह्यो अनंग हो ॥ जि० ॥ जि० ॥  
 तुज उपमा कोई जग नहिं रे, तुं ठे गुणराशिनो संग  
 हो ॥ जि० ॥ २ ॥ जि० ॥ नागपति धरणीं इने रे, करु  
 णा करीने दीधो नवकार हो ॥ जि० ॥ जि० ॥ शोल  
 सहस अणगारना रे, साहुणी अडत्रीश सहस वि  
 स्तार हो ॥ जि० ॥ ४ ॥ जि० ॥ जादवनी नाठी जरा  
 रे, तो हवे अमनें करो सुपसाय हो ॥ जि० ॥ जि० ॥  
 धरणीधर पद्मावती रे, सेवे पार्थव्यद्व वलि पाय हो  
 ॥ जि० ॥ ५ ॥ जि० ॥ पास आश मुज पूरवा रे,  
 साचो शंखेश्वर महाराज हो ॥ जि० ॥ जि० ॥ श्रीगु  
 रूपद्विजय तणो रे, मार्गे रूपविजय शिवराज हो  
 ॥ जि० ॥ ६ ॥ इति पार्थजिनस्तवनं ॥

॥ अथ शांतिजिनस्तवनं ॥

॥ शांतिजीनुं मुखडुं जोवा नणी जी, मुऊमनडुं  
 रे लोनाय ॥ चितडुं जाणे रे ऊडी मलुं जी, पण  
 प्रनु किम रे मलाय ॥ शां० ॥ १ ॥ दैव न दीधी मु  
 जने पांखडी जी, आवुं हुं किम रे हजूर ॥ पण प्रनु  
 जाणजो वंदना जी, आतमराम सनूर ॥ शां० ॥ २ ॥  
 गजपुरी नगरीनो राजीयो जी, अचिरा देवी नंदन एह  
 ॥ जिम रे पारेवडुं राखीयुं जी, तिम प्रनु राखजो  
 नेह ॥ शां० ॥ ३ ॥ मस्तकें मुकुट सोहामणो जी,  
 कानें कुंमल श्रीकार ॥ बांहे बाजूबंध वेरखा जी, कंठ  
 डे नवसरो हार ॥ शां० ॥ ४ ॥ आज जलें रे दिन

ऊगीयो जी, दूधडे वूठडा मेह ॥ वाचक सहज सुंदर  
तणो जी, नित्यलान प्रनु गुणगेह ॥ शां० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ पार्श्वजिनस्तवनं ॥

॥ सुगुण सोनागी रे के साहेब माहेरा, श्रीचिंता  
मणि पाश ॥ पूरव पुण्ये रे के दरिसण देखीये, पूगी मा  
रा मनडानी आश ॥ हुं वलिहारी रे के जाचं तारा  
नामनी ॥ १ ॥ काशी देखें रे के नगरी वाराणसी, अ  
श्वसेम राया कुजचंद ॥ माता वामा रे के प्रनुजीने ज  
नमीया, दीठडे परमानंद ॥ हुं ० ॥ २ ॥ मूरत सूरत रे के  
निरखीने हरखीएं, सांजल मोरा स्वाम ॥ वान बधा  
रणरे के जगमां सुरतरु, तुं मुज आतम राम ॥ हुं ० ॥  
॥ ३ ॥ लाल सुरंगी रे के अंगी शोजती, सोहे सोहे  
प्रनुजीने अंग ॥ शिखर बनाव्युं रे के सुंदर कोरणी,  
दिसे दिसे नव नवा रंग ॥ हुं ० ॥ ४ ॥ शिरपर सो  
हे रे के मुकुट जडावनो, काने कुंमल श्रीकार ॥ केडें  
कणदोरो रे के बांहे वेरखा, कंठडे नवसरो द्वार  
॥ हुं ० ॥ ५ ॥ विधिपद् देहरे रे के मूल नायक  
प्रनु, जुज मंमण जिनराज ॥ नाविक आवक रे के  
नावे नावना, साहेब गरीब निवाज ॥ हुं ० ॥ ६ ॥  
कोइ कुमतिआ रे के प्रनुने माने नहिं, ते रडवडगे  
संसार ॥ नव दंमकमांहे रे के गति ठे तेहने, नहिं  
लीये जवनो पार ॥ हुं ० ॥ ७ ॥ सूत्र सिद्धातें रे के  
जिनप्रतिमा कही, जिन सरखी निरधार ॥ पूजो प्र  
णमो रे के नवियण नावगुं, जिम पामो शिव सुख

सार ॥ हुं० ॥ ७ ॥ संवत सत्तर रे के वरस चोराणुं  
 ए, रूडो रूडो जाइव मास ॥ स्तवना कीधी रे के पर  
 व पंजूसणे, नित्यज्ञान प्रभुजीनो दास ॥ हुं० ॥ ९ ॥  
 ॥ अथ शान्तिजिनस्तवनं ॥

॥ शान्ति प्रभु वीनति एक मोरी रे, नारी आंखडी  
 कामणगारी ॥ शान्ति० ॥ विश्वसेन राजा तुज ताय  
 रे, राणी अचिरा देवी माय रे ॥ तुंगो गजपुर नगरी  
 नो राय ॥ शां० ॥ १ ॥ प्रभु सोवन कांति विराजे  
 रे, मुकुटे हीरा मणि ठाजे रे ॥ तारी वाणी गंगापूर  
 गाजे ॥ शां० ॥ २ ॥ प्रभु चालीश धनुषनी काया  
 रे, नवि जनना दिलमां जाया रे ॥ कांई राज राजे  
 सर राया ॥ शां० ॥ ३ ॥ प्रभु माहारा ठो अंतर  
 जामी रे, करुं वीनति हुं शिर नामी रे ॥ चउद रा  
 जना ठो तुमें स्वामी ॥ शां० ॥ ४ ॥ प्रभु पर्षदा वारे  
 मांहे रे, दीए देशना अधिक उछाहें रे ॥ प्रभु अंगी  
 एं नेट्या उमाहे ॥ शां० ॥ ५ ॥ श्रावक श्राविका  
 बहु पुण्यवंतां रे, शुन करणी करे महंता रे ॥ शान्ति  
 नाथना दरिसण करता ॥ शां० ॥ ६ ॥ संवत अढा  
 र अछाणुउ सार रे, मास कल्प कस्यो तिणि वार रे ॥  
 सूरि मुक्तिपदना धार ॥ शां० ॥ ७ ॥ इति संपूर्ण ॥

॥ अथ सिद्धाचलस्तवनं ॥

॥ सिद्धाचल गिरि नेट्या रे, धन्य जाग्य हमारां  
 ॥ विमलाचल गिरि नेट्या रे, धन्य जाग्य हमारां ॥  
 ए गिरिवरनो महिमा मोहोटी, कहेतां नावे पार ॥ राय

ए रूख समोसखा स्वामी, पूर्व नवाणुं वार रें ॥ ध० ॥  
 ॥ १ ॥ मूल नायक श्रीआदि जिनेसर, चउमुख प्र  
 तिमा चार ॥ अष्ट डव्यगुं पूजो जावें, समकित मूल  
 आधार रे ॥ ध० ॥ २ ॥ जाव जगतिगुं प्रनुगुण गावे,  
 आपणा जनम सधाखा ॥ यात्रा करी जवि जन  
 गुन जावें, निरय तिर्यच गति वाखा रे ॥ ध० ॥ ३ ॥  
 दूर देशांतरथी हुं आव्यो, श्रवण सुणी गुण तारा ॥  
 पतित उधारण विरुद तुमारुं, ए तीरथ जग सारा  
 रे ॥ ध० ॥ ४ ॥ संवत अठार व्यासीएं मास आषा  
 ढे, वदि आठम जोमवारा ॥ प्रनुजीके चरणे प्रता  
 पके संघमें. खेम रतन प्रनु प्यारा रे ॥ ध० ॥ ५ ॥

॥ अथ शीतलजिनस्तवनं ॥

॥ शीतल जिननी सेवा कीजें, लीजें संपदा सारी  
 रे ॥ डव्य जाव जिन पूजा करतां, नासे दूरगति  
 नारी रे ॥ १ ॥ संसारी प्राणी देव पूजो, देव पूजो  
 हित आणी रे ॥ ज्ञान अनंतुं रूप अनंतुं, शक्ति अ  
 नंती कहीएं रे ॥ लोकालोक तणा परकाशी, तेहनी  
 आणज वहीएं रे ॥ संसा० ॥ २ ॥ नक्ति प्रनुनी ह  
 ड्डे धरतां, जव जव पातक हरीएं रे ॥ एहवो निश्चें  
 माहारा मनमां, प्रनु तारे तो तरीएं रे ॥ संसा०  
 ॥ ३ ॥ कर जोडी मद मठर मूकी, प्रनुजीने शिर  
 नामूं रे ॥ अनुजव पदनी लालच अमनैं, ते जिनव  
 रथी पामूं रे ॥ संसा० ॥ ४ ॥ सेवक ऊपर करुणा  
 करजो, वीनतडी चित्त धारी रे ॥ कहे नित्यलाज प्र

जुने प्रणमी, देजो सेव तुमारी रे ॥ संसा० ॥ ५ ॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवनं ॥

॥ लाखीणो सोहावे जिनजी, फूलांनो गले हार ॥  
 आणीने सोहावे जिनजी, अंगीअं जडाव ॥ मोरा  
 पासजी हो लाल, संकट ठोडाव स्वामी विघ्न निवा  
 र ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ पदमणी चाली पूजवाने,  
 करी शोल सिणगार ॥ पाए घमके घूघराने, नेजरने  
 ऊणकार ॥ मोरा० ॥ २ ॥ मेघमाली देवताने,  
 कीधो घमघोर ॥ गाजे गगन वीजलीने, पाणी वरपे  
 जोर ॥ मो० ॥ ३ ॥ ध्यानथकी नवी चूका, प्रजु  
 पास जिणंद ॥ देही कष्ट निवारवाने, आवा ठे धर  
 णिंद ॥ मो० ॥ ४ ॥ गोडी पारस पूजो जिम, होए  
 रंग रेल ॥ देखी मूर्ति पासजीनी, जाणीएं मोहन  
 वेल ॥ मो० ॥ ५ ॥ ठमक ठमक चालतीने, घूघर  
 डी घमकार ॥ ताताथेई ताल वाजे, देवतानी चाल  
 ॥ मो० ॥ ६ ॥ केशर चंदन वशी घणाने, कस्तूरी  
 घनसार ॥ जे नर जावें पूजणेने, उतारे जवपार  
 ॥ मो० ॥ ७ ॥ तुंहीं मारो साहेबो ने, तुंहीं जीवन  
 प्राण ॥ तुमने माने देवताने, मोहोटा राणो राण  
 ॥ मो० ॥ ८ ॥ पंढितमांहे शिरोमणिने, कनक वि  
 मल गुरु हीर ॥ चरण कमल सेवे सदाने, केसर क  
 वियण धीर ॥ मो० ॥ ९ ॥ इति पार्श्वजिन स्तवनं ॥

॥ अथ शांतिजिन स्तवनं ॥

॥ दोहा ॥ बे कर जोडी वीनवुं, सुणो जिनवर श्रीशां



ति ॥ पाप स्वमाबुं आपणां, जे कीधां एकांत ॥ १ ॥ ढाल ॥ एकांत कहुं सुणो स्वामी, हुंतो चरण तुमारा पामी ॥ मुज मांहे कपट ठे बहुलां, तेतो सुणतां मन थाये महुलां ॥ २ ॥ परठिङ् प्रगट में कीधां, पाठांतरे ॥ प्रहन्न प्रगट में कीधां, कूडां आल में परने दीधां ॥ तेथी ठोडावो मुज तात, शांतिनाथ सुणो मोरी वात ॥ ३ ॥ दोहा ॥ जव अनंत नमी आवियो, चरण तुमारे देव ॥ जिम राख्युं पारेवहुं, तिम राखो मुज हेव ॥ ४ ॥ ॥ ढाल ॥ हवे एकेंडियादिक जीव, डुहव्या करता अति रीव ॥ तस लाख चोराशी जेद, राग द्वेष पमाड्या खेद ॥ ५ ॥ मृषा बोलतां नावी लाज, तो किम सरशे आतम काज ॥ चोरी इण जव परजव कीधी, पररमणीशुं ठुष्टिज दीधी ॥ ६ ॥ दोहा ॥ मधु बिंडुसम विषय सुख, दुख तो मेरु समान ॥ मान विमज्ज चिंते नही, करतो क्रोड अज्ञान ॥ ७ ॥ ॥ ढाल ॥ अज्ञान पणे रुद्धि मेली, व्रतवाडि जली परें जेली ॥ हवे सार करो प्रभु मोरी, रात दिवस से वा करुं तोरी ॥ ८ ॥ बहु गुनही हुं श्रीशांति, मुज टालो जवनी चांति ॥ हुंतो मागुं हुं अविचल राज, इम पजणे श्रीजिनराज ॥ ९ ॥ इति संपूर्ण ॥

॥ अथ सिद्धाचल स्तवनं ॥

॥ महारुं मन मोह्युं रे श्रीसिद्धाचलें रे, देखीने हरषित थाय ॥ विधिगुं कीजें रे यात्रा एहनी रे, जव जवनां दुःख जाय ॥ मा ० ॥ १ ॥ पांचमे आरे रे पा

वन कारणे रे, ए समुं तीर्थ न कोय ॥ मोहोटो म  
हिमा रे महियल एहनो रे, आ जरतें इहां जोय ॥  
॥ मा० ॥ १ ॥ इणे गिरि आव्या रे जिनवर गणधरा  
रे, सीधा साधु अनंत ॥ कठिन करम पण इण  
गिरि फरसतां रे, होये कर्मनी शांत ॥ मा० ॥ ३ ॥  
जैन धरमनो जाचो जाणीयें रे, मानव तीर्थ ए यंज ॥  
सुर नर किन्नर नृप विद्याधरा रे, करता नाटारंज ॥  
॥ मा० ॥ ४ ॥ धन धन दाहाडो रे धन धन ए घडी  
रे, धरीयें ऋदय मजार ॥ ज्ञानविमल प्रभु एहना  
गुण घणा रे, कहेतां नाच पार ॥ मा० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ संजवजिन स्तवनं ॥ .

॥ हुं तो जाउं रे जिन दरबार, प्रभु मुख जोवाने ॥  
प्रभु आपे रे समकित सार, शिव-सुख होवाने ॥ १ ॥  
साथें लीधां रे निरमल नीर, प्रभुने पखालवा रे ॥  
शुद्ध कीधां रे प्रभुनां शरीर, नव दुःख टालवा रे ॥  
॥ २ ॥ घसी घसी रे केशर कपूर, नवे अंगें पूजियें ॥  
हसी हसी रे आणंद पूर, शिव सुख लीजियें ॥ ३ ॥  
एहवे आवी रे अमरनी नार, प्रभुजीने वीनवे ॥  
साथें लावी रे फूलडानो हार, प्रभुने कंठें ठवे ॥ ४ ॥  
आगल नाचे रे थड थड कार, सहु टोले मली ॥ दिल  
साचेरे करी शणगार, प्रणमे लली लली ॥ ५ ॥ हाथ  
जोडी रे प्रभुजीनी पास, नक्ति घणी करे ॥ मान मोडी  
रे गावे नास, प्रभु मनमां धरे ॥ ६ ॥ आलो आलो  
रे मुगतिनो वास, प्रभु करुणा करी ॥ टालो टालो रे न

वनो पास, विनति चित्त धरी ॥ ७ ॥ सेनाराणीना नं  
दन देव, गुणरत्नाकरू ॥ एवो जाणी रे कीधी में सेव,  
जयो जयो जिनवरू ॥ ८ ॥ सोहे सोहे रे सूरत म  
जार, विधिपद् देहरे ॥ मोहे मोहे रे बहु नर नार,  
देखी नयणां तरे ॥ ९ ॥ नामें नामें रे संजव नाथ,  
जिन रलियानणां ॥ पामे पामे रे सुख नित्य लाज,  
लेहुं नित्य नामणां ॥ १० ॥ इति संपूर्ण ॥

॥ अथ अष्टापदगिरि स्तवनं ॥

॥ अष्टापद अरिहंत जी, माहारा बालाजी रे ॥  
आदेशर अवधार, नमीयें नेहशुं ॥ मारा० ॥ दश  
हजार मुण्दिशुं ॥ मारा० ॥ बखा शिव बधू सार  
॥ नमी० ॥ १ ॥ नरतनूष जावें कखा ॥ मारा० ॥  
चिहुं मुख चैत्य उदार ॥ नमी० ॥ जिनवर चोवीशे  
जिहां ॥ मारा० ॥ थाप्या अति मनोहार ॥ नमी० ॥  
॥ २ ॥ वर्ण प्रमाणें विराजता ॥ मारा० ॥ लज्जन  
नें अलंकार ॥ नमी० ॥ सम नासाएण शोजता ॥  
॥ मारा० ॥ चिहुं दिशि चार प्रकार ॥ नमी० ॥ ३ ॥  
मंदोदरी रावण तिहां ॥ मारा० ॥ नाटक करतां  
विचाल ॥ नमी० ॥ त्रूटी तांत तिहां कणे ॥ मारा० ॥  
निज कर वीणा ततकाल ॥ नमी० ॥ ४ ॥ करी व  
जावी तिणे समे ॥ मारा० ॥ पण नवि तोड्युं ते  
तान ॥ नमी० ॥ तीर्थकर पद बांधीयुं ॥ मारा० ॥  
अद्भुत ध्यान सुगान ॥ नमी० ॥ ५ ॥ निज लब्धें गौ  
तम गुरु ॥ मारा० ॥ करवा आव्या ते यात्र ॥ नमी० ॥

जगचिंतामणि तिणो कखो ॥ मारा० ॥ तापस बोध  
 विख्यात ॥ नमी० ॥ ६ ॥ ए गिरि महिमा मोटको  
 ॥ मारा० ॥ तिण जव पामीजें सिद्धि ॥ नमी० ॥  
 निज लब्धें जिनवर नमी ॥ मारा० ॥ पामे शाश्व  
 त रुद्धि ॥ नमी० ॥ ७ ॥ पद्मविजय कहे एहनां  
 ॥ मारा० ॥ केतां करुं रे वखाण ॥ नमी० ॥ वीरें  
 स्वयंमुख वरणव्यो ॥ मारा० ॥ नमता कोड कल्या  
 ण ॥ नमी० ॥ ८ ॥ इति अष्टापद स्तवनं संपूर्ण ॥

॥ अथ श्री गौतमाष्टक ठेद ॥

॥ वीर जिणेसर केरो शिष्य, गौतम नाम जपो  
 निशिदीस ॥ जो कीजें गौतमनुं ध्यान, तो घर विल  
 से नवे निधान ॥ १ ॥ गौतमनामे गिरुअरि चढे,  
 मनवंठितहेला संपजे ॥ गौतम नामें नावे रोग,  
 गौतम नामें सर्व संजोग ॥ २ ॥ जे वैरी विरुआ वंकडा,  
 जस नामें नावे ढूकडा ॥ नूत प्रेत नवि मंढे प्राण,  
 ते गौतमनां करुं वखाण ॥ ३ ॥ गौतम नामें निर्म  
 ल काय, गौतमनामें वाधे आय ॥ गौतम जिनशा  
 सन शणगार, गौतमनामें जय जयकार ॥ ४ ॥  
 शाल दाल सुरहा धृत गोल, मनवंठित कापड तंबो  
 ल ॥ घरशुं घरणी निर्मल चित्त, गौतम नामें पुत्र  
 विनीत ॥ ५ ॥ गौतम उदयो अविचल जाण, गौत  
 म नाम जपो जग जाण ॥ मोहोटां मंदिर मेरु स  
 मान, गौतम नामें सफल विहाण ॥ ६ ॥ घर मय  
 गल घोडानी जोड, वारू पोहोंचे वंठित कोड ॥ म

हियैल माने मोहोटा राय, जो तूठे गौतमना पाय  
 ॥ ७ ॥ गौतम प्रणम्यां पातक टले, उत्तम नरनी  
 संगति मले ॥ गौतम नामें निर्मल ज्ञान, गौतम ना  
 में बाधे वान ॥ ८ ॥ पुण्यवंत अवधारो सद्गुरु, गुरु  
 गौतमना गुण ते बहु ॥ कहे लावण्य समय कर जो  
 ड, गौतम तूठे संपति कोड ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ नवकारनो ठंड ॥

॥ दोहा ॥ वंछित पूरे विविध परें, श्री जिन शा  
 सन सार ॥ निश्चें श्री नवकार नित, जपतां जय  
 जयकार ॥ १ ॥ अडसठ अक्षर अधिक फल, नव  
 पद नवे निधान ॥ वीतराग स्वयं मुख वदे, पंच पर  
 मेष्टि प्रधान ॥ २ ॥ एकज अक्षर एक चित्त, समस्यां  
 संपति थाय ॥ संचित सागर सातनां, पातक दूर प  
 लाय ॥ ३ ॥ सकल मंत्र शिर मुकुटमणि, सद्गुरु जा  
 पित सार ॥ सो नविया मन शुद्ध, नित जपीएं  
 नवकार ॥ ४ ॥ ठंड हाटकी ॥ नवकारथकी श्रीपाल नरे  
 शर, पाम्यो राज्य प्रसिद्ध ॥ समशान विपे शिव नाम  
 कुमरनें, सोवन पुरिसो सिद्ध ॥ नव लाख जपंतां न  
 रक निवारे, पामे नवनो पार ॥ सो नवियां नत्तें  
 चोखें चित्तें, नित्य जपीयें नवकार ॥ ५ ॥ बांधि वड  
 शाखा शिंके बेसि, देवल कुंठ दुताश ॥ तस्करनें मं  
 त्र समर्प्यो श्रावकें, ऊढ्यो ते आकाश ॥ विधिरीत  
 जप्यो विषधर विष टाले, ढाले अमृत धार ॥ सो  
 ॥ ६ ॥ बीजोरां कारण राय महाबल, व्यंतर डुष्ट

विरोध ॥ जेणें नवकारें हत्या टाली, पाम्यो यक्ष प्र  
 तिबोध ॥ नव लाख जपंतां थाए जिनवर, इस्यो ठे  
 अधिकार ॥ सो० ॥ ७ ॥ पद्धिपति शिख्यो मुनिवर  
 पामें, महा मंत्र मन शुद्ध ॥ परजव ते राजसिंह पृ  
 थिवीपति, पाम्यो परिगल रुद्ध ॥ ए मंत्रथकी अम  
 रापुर पोहोतो, चारुदत्त सुविचार ॥ सो० ॥ ८ ॥  
 संन्यासी काशी तप साधंतो, पंचाग्नि परजाल ॥ दीठो  
 श्रीपास कुमारें पन्नग, अधवलतो ते टाल ॥ संन  
 लाव्यो श्री नवकार स्वयंमुख, इंद्रुवन अवतार  
 ॥ सो० ॥ ९ ॥ मनशुद्धें जपतां मयणासुंदरी, पामो  
 प्रिय संयोग ॥ इण ध्यानें कष्ट टळ्युं उंबरनुं, रक्त  
 पित्तनो रोग ॥ निश्चैशुं जपतां नवनिधि थाये, धर्म  
 तणो आधार ॥ सो० ॥ १० ॥ बटमांहि कृष्ण जुजं  
 गम घाव्यो, घरणी करवा घात ॥ परमेष्टि प्रजावें  
 हार फूजनो, वसुधामांहि विख्यात ॥ कमलावतीयें  
 पिंगल कीधो, पाप तणो परिहार ॥ सो० ॥ ११ ॥  
 गयणांगण जाति राखी ग्रहिने, पाडी बाण प्रहार ॥  
 पद पंच सुणंतां पांशुपति वर, ते थड कुंता नार ॥  
 ए मंत्र अमूलक महिमा मंदिर, नव दुःख चंजण  
 हार ॥ सो० ॥ १२ ॥ कंबलने संबल कादव काढ्यां,  
 शकट पांचज्ञें मान ॥ दीधे नवकारें गया देव  
 लोके, विलसे अमर विमान ॥ ए मंत्रथकी संपति  
 वसुधातर्जे, विलसे जैन विहार ॥ सो० ॥ १३ ॥  
 आगें चोवीशी दुइ अनंती, होशे वार अनंत ॥ नव

कार तणी कोइ आदि न जाणै, इम जांखे अरि  
 हंत ॥ पूरव दिशि चारे आदि प्रपंचे, समखां संपति  
 सार ॥ सो० ॥ १४ ॥ परमेष्ठि सुरपद ते पण पामे,  
 जे कृतकर्म कठोर ॥ पुंनरगिरि ऊपर प्रत्यक्ष पेख्यो,  
 मणिधरने एक मोर ॥ सह गुरुने सन्मुख विधि सम  
 रंतां, सफल जनम संसार ॥ सो० ॥ १५ ॥ शूलिका  
 रोपण तस्कर कीधो, लोहखरो परसिद्ध ॥ तिहां जेठें  
 नवकार सुणाव्यो, पाम्यो अमरनी रुद्ध ॥ जेठने घर  
 आवी विघ्न निवाखां, सुरें करी मनोहार ॥ सो० ॥ १६ ॥  
 पंच परमेष्ठि ज्ञानज पंचह, पंच दान चारित्र ॥ पंच  
 सथाय महाव्रत पंचह, पंच सुमति समकित्त ॥ पंच  
 प्रमादह विषय तजो पंच, पालो पंचाचार ॥ सो० ॥  
 ॥ १७ ॥ कलश ठप्पय ॥ नित जपीयें नवकार,  
 सारसंपति सुखदायक ॥ शुद्ध मंत्र ए शाश्वतो, इम  
 जंपे श्री जगनायक ॥ श्री अरिहंत सुसिद्ध, शुद्ध  
 आचार्य जणीजें ॥ श्री उवथाय सुसाधु, पंच पर  
 मेष्ठि शुणीजें ॥ नवकार सार संसार ठे, कुशल जान  
 वाचक कहे ॥ एक चित्तें आराधतां, विविध रुद्धि  
 वंछित लहे ॥ १८ ॥ इति नवकार बंद ॥

॥ अथ श्री शोल सतीनो बंद ॥

॥ आदि नाथ आर्दे जिनवर वंदी, सफल मनो  
 रथ कीजियें ए ॥ प्रजातें उठी मंगलिक कामें, शोल  
 सतीनां नाम लीजियें ए ॥ १ ॥ बाल कुमारी जग  
 हितकारी, ब्राह्मी जरतनी बेहेनडी ए ॥ घट घट

व्यापक अक्षर रूपें, शोल सतीमांहि जे वडी ए ॥ १ ॥  
 बाहुबल जगिनी सतीय शिरोमणि, सुंदरी नामें कृष्ण  
 सुता ए ॥ अंगस्वरूपी त्रिचुवनमांहि, जेह अनुपम  
 गुणजुता ए ॥ २ ॥ चंदनबाला बालपणायी, शीज  
 वती शुद्ध श्राविका ए ॥ अडदना बाकुला वीर प्रति  
 लान्या, केवल लही व्रत नाविका ए ॥ ४ ॥ उग्र  
 सेन धुआ धारिणी नंदनी, राजिमती नम वल्लभा ए ॥  
 जोवन वेशें कामनें जीत्यो, संयम लेइ देव उल्लभा  
 ए ॥ ५ ॥ पंच जरतारी पांमव नारी दुपदतनया  
 वखाणीएं ए ॥ एक शो आठे चीर पूराणां, शियल  
 महिमा तस जाणीएं ए ॥ ६ ॥ दशरथ नृपती नारी  
 निरुपम, कौशल्या कुलचंडिका ए ॥ शियल सलूणी  
 राम जनेता, पुण्य तणी परनालिका ए ॥ ७ ॥ कोशं  
 विक ठामें संतानिक नामें, राज्य करे रंग राजीयो  
 ए ॥ तस घर घरणी मृगावती सती, सुरचुवनें जश  
 गाजीयो ए ॥ ८ ॥ सुलसा साची शियलें न काची,  
 राची नही विषयारसें ए ॥ मुखडुं जोतां पाप पलाए,  
 नाम लेतां मन उल्लसे ए ॥ ९ ॥ राम रघुवंश  
 तेहनी कामिनी, जनकसुता सीता सती ए ॥ जग  
 सहं जाणे धीज करंतां, अनल शीतल थयो शीय  
 लथी ए ॥ १० ॥ काचे तांतणे चालणी बांधी, कूवा  
 थकी जल काढीयुं ए ॥ कलंक उतारवा सतीय सुजडा,  
 चंपा बार उघाडीयुं ए ॥ ११ ॥ सुरनर वंदित शियल  
 अखंमित, शीवा शिवपदगामिनी ए ॥ जेहने नामें



निर्मल थड्यें, बलिहारी तस नामनी ए ॥ १२ ॥  
 हस्तिनागपुरें पांमुरायनी, कुंता नामें कामिनी ए ॥  
 पांमव माता दशे दशारनी, बेहिन पतिव्रता पदमिनी  
 ए ॥ १३ ॥ शीलवती नामें शीलव्रतधारिणी, त्रिविधें  
 तेहने वंदीयें ए ॥ नाम जपंतां पातक जाए, दरिम्पण  
 डुरित निकंदीयें ए ॥ १४ ॥ निषिधा नगरी नलह  
 नरिंदनी, दमयंती तस गेहिनी ए ॥ संकट पडतां  
 शीलज राख्युं, त्रिभुवन कीर्ती जेहनी ए ॥ १५ ॥  
 अनंग अजिता जगजन पूजिता, पुष्पचूला ने प्रजा  
 वती ए ॥ विश्वविख्याता कामित दाता, शोलमी सती  
 पदमावती ए ॥ १६ ॥ वीरें जांखी शाखें साखी, उद  
 यरतन जांखे मुदा ए ॥ बाहाणुं वातां जे नर जणशे,  
 ते जेहेशे सुख संपदा ए ॥ १७ ॥ इति शोलसतीनो बंद ॥

॥ अथ चार मंगल ॥

॥ सिद्धार्थ जूपति शोहे कृत्रियकुंमें, तस घेर त्रि  
 शला कामिनी ए ॥ गजवर गामिनी पोढीय जामिनी,  
 चउद सुपन लहे जामिनी ए ॥ १ ॥ त्रुटक ॥ जामिनी  
 मध्ये शोजतां रे, सुपन देखे बाल ॥ मयगल वृष  
 जने केसरी, कमला कुसुमनी माल ॥ २ ॥ इंडु दिन  
 कर ध्वजा सुंदर, कलश मंगल रूप ॥ पद्म सर जल  
 निधि उत्तम, अमरविमान अनूप ॥ ३ ॥ रत्ननो  
 अंबार उज्ज्वल, वन्हि निर्धूम ज्योत ॥ कल्याण मं  
 गलकारी माहा, करत जग उद्योत ॥ ४ ॥ चउद सु  
 पन सूचित विश्व पूजित, सकल सुख दातार ॥ मं

गल पेहेलुं बोलीएं, श्री वीर जगदाधार ॥ ५ ॥ म  
 गध देशमां नयरी राजगृही, श्रेणिक नामें नरेसरू  
 ए ॥ धणवर गोवर गाम वसे तिहां, वसुनूति विप्र  
 मनोहरू ए ॥ ६ ॥ त्रुटक ॥ मनोहरू तस मानिनी रे,  
 पृथिवी नामें नार ॥ इंदनूति आदेय ठे, त्रण पुत्र  
 तेहने सार ॥ ७ ॥ यज्ञकर्म तेणें आदखुं, बहु विप्र  
 ने समुदाय ॥ तिणे समे तिहां समोसखा, चोवीशमा  
 जिनराय ॥ ८ ॥ उपदेश तेहनो सांजली, लीधो सं  
 जम नार ॥ अगीयार गणधर थापीया, श्री वीरें  
 तेणी वार ॥ ९ ॥ इंदनूति गुरुनकें थयो, महा  
 लब्धिनो जंमार ॥ मंगल बीजुं बोलीयें, श्री गौतम  
 प्रथम गणधार ॥ १० ॥ नंद नरिंदनो पामली पुरव  
 रें, सकमाल नामें मंत्रीसरू ए ॥ लाठलदे तस नारी  
 अनुपम, शीलवती बहुसुखकरू ए ॥ ११ ॥ त्रुटक ॥  
 सुखकरू संतान नव दोय, पुत्र पुत्री सात ॥ शील  
 वंतमां शिरोमणि, थूलिजइ जग विख्यात ॥ १२ ॥  
 कर्मवशें वेश्या मंदिर, वस्या वर्षज बार ॥ जोग  
 जली पेरें जोगव्या, ते जाणे सहु संसार ॥ १३ ॥  
 शुद्ध संयम पामी विषय वामी, पामी गुरु आदेश ॥  
 कोश्या आवासें रह्या निश्चल, मग्या नहीं लवलेश  
 ॥ १४ ॥ शुद्ध शियल पाळे विषय टाळे, जगमां जे  
 नर नार ॥ मंगल त्रीजुं बोलीएं, श्री थूलिजइ अण  
 गार ॥ १५ ॥ हेम मणि रूप मय घडित अनुपम, ज  
 डित कोशीसां तेजें जगे ए ॥ सुरपति निर्मित त्रण

गढ शोजित, मध्यें सिंहासनें जगमगे ए ॥ १६ ॥ त्रु  
 टक ॥ जगमगे जिन सिंहासनें ए, वाजित्र कोडा  
 कोड ॥ चार निकायना देवता, ते सेवे बिहुं कर जोड  
 ॥ १७ ॥ प्रातिहारज आठशुं रे, चोत्रीश अतिशयवंत  
 ॥ समवसरणें विश्वनायक, शोजे श्री जगवंत ॥ १८ ॥  
 सुर नर किन्नर मानवी, वेठी ते पर्षदा बार ॥ उपदे  
 श दे अरिहंत जी, धर्मना चार प्रकार ॥ १९ ॥ दान  
 शील तप जावना रे, टालें सधलां कर्म ॥ मंगल  
 चोथुं बोलीयें, जगमांहे श्री जिनधर्म ॥ २० ॥ ए  
 चार मंगल गावशे जे, प्रजातें धरी प्रेम ॥ ते कोडि  
 मंगल पामशे, उदयरत्न जांखे एम ॥ २१ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री तीर्थमाला स्तवनं लिख्यते ॥

॥ शत्रुंजे ऋषज समोसखा, जला गुण जखा रे ॥  
 सीधा साधु अनंत ॥ तीरथ ते नमुं रे ॥ त्रण कव्या  
 णिक तिहां श्यां, मुगतें गया रे ॥ नेमीसर गिरनार  
 ॥ ती० ॥ १ ॥ अष्टापद एक देहरो, गिरि सेहरो रे ॥  
 जरतें जराव्यां बिंब ॥ ती० ॥ आबु चौमुख अतिज  
 लो, त्रिचुवन तिलो रे ॥ विमल वसहि वस्तुपाल ॥ ती०  
 ॥ २ ॥ समेतशिखर सोहामणो, रलीयामणो रे ॥  
 सीधा तीर्थकर वीश ॥ ती० ॥ नयरी चंपा निरखी  
 यें, हेंये हरखीयें रे ॥ सीधा श्री वासुपूज्य ॥ ती० ॥  
 ॥ ३ ॥ पूर्वदिशें पावा पुरी, रुद्धें नरी रे ॥ मुक्ति  
 गया महावीर ॥ ती० ॥ जेसलमेर जुहारीयें, दुःख  
 वारीयें रे ॥ अरिहंत बिंब अनेक ॥ ती० ॥ ४ ॥

विकानेरज वंदीयें, चिरनंदीयें रे ॥ अरिहंत देहरां  
 आठ ॥ ती० ॥ सोरिसरो संखेसरो, पंचासरो रे ॥ फ  
 लोधी थंजणपास ॥ ती० ॥ ५ ॥ अंतरिक अजाव  
 रो, अमीऊरो रे ॥ जीरावलो जगनाथ ॥ ती० ॥ त्रै  
 लोक्य दीपक देहरो, जात्रा करो रे ॥ राणपुरें रिस  
 हेस ॥ ती० ॥ ६ ॥ तारंगे अजित जुहारियें, दुःख  
 वारियें रे ॥ थराधें श्रीमहावीर ॥ ती० ॥ नवा रे नग  
 रनां देहरां, बावन जलां रे ॥ शा रायसी वर्द्धमानज  
 राव्यां बिंब ॥ ती० ॥ ७ ॥ श्रीनाकुलाइ जादवो, गोडि स्त  
 वो रे ॥ श्रीवरकाणो पास ॥ ती० ॥ नंदीश्वरनां देह  
 रां, बावन जलां रे ॥ रुचक कुंमलें चार चार ॥ ती०  
 ॥ ८ ॥ शाश्वती अशाश्वती, प्रतिमा ठती रे ॥ स्वर्ग  
 मृत्यु पाताल ॥ ती० ॥ तीरथ जात्रा फल तिहां,  
 होजो मुज इहां रे ॥ समयसुंदर कहे एम ॥ ती० ॥ ९ ॥

॥ अथ श्री सिद्धाचलजीनुं स्तवन लिख्यते ॥

॥ आंखडीयें रे में आज शेत्रुंजो दीगो रे, सवा  
 लाख टकानो दाहाडो रे, लागे मुने मीगो रे ॥ ए  
 आंकणी ॥ सफल थयो रे महारा मननो उमाहो,  
 बाहला मारा नवनो सांसो जांग्यो रे ॥ नरक तिर्यच  
 गति दूर निवारी, चरणे प्रभुजीने लाग्यो रे ॥ शेत्रुं  
 जो दीगो रे ॥ १ ॥ मानव नवनो लाहो लीजें  
 ॥ वा० ॥ देहडी पावन कीजें रे ॥ सोना रूपाने फू  
 लडे वधावी, प्रेमें प्रदक्षिणा दीजें रे ॥ शेत्रुं ० ॥ २ ॥  
 डुधडे पखालीने केशरें घोली ॥ वा० ॥ श्री आदीस

र पूज्या रे ॥ श्री सिद्धाचल नयणें जोतां, पाप में  
 वासी धूज्या रे ॥ शेत्रुं० ॥ ३ ॥ श्री मुख सौधर्मा  
 सुरपति आगें ॥ वा० ॥ वीर जिणंद इम बोले रे ॥  
 त्रण्य जुवनमां तीरथ महोटुं, नहिं कोइ शेत्रुंजा  
 तोले रे ॥ शेत्रुं० ॥ ४ ॥ इइ सरीखा ए तीरथनी  
 ॥ वा० ॥ चाकरी चित्तमां चाहे रे ॥ कायानी तो  
 कासल काढी, मूरज कुंममां नाहे रे ॥ शेत्रुं० ॥ ५ ॥  
 कांकरे कांकरे श्री सिद्धक्षेत्रें ॥ वा० ॥ साधु अनंता  
 सीधा रे ॥ ते माटे ए तीरथ महोटुं, उद्धार अनं  
 ता कीधा रे ॥ शेत्रुं० ॥ ६ ॥ नाजिराया सुत नय  
 णें जोतां ॥ वा० ॥ मेह अमीरस वूठा रे ॥ उदय  
 रतन कहे आज म्हारे पोतें, श्री आदीसर तूठा रे ॥  
 ॥ शेत्रुं० ॥ सवा० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ सिद्धाचलजीनुं स्तवन ॥

॥ देशी लालननी ॥

॥ सिद्धगिरि ध्यावो नविका, सिद्धगिरि ध्यावो ॥  
 घेर बेठां पण बहु फल पावो नविका, बहु फल पावो  
 ॥ ए आंकणी ॥ नंदीसर जात्रायें जे फल होवे, तेथी  
 बमणेरुं फल पुंमगिरि होवे ॥ न० ॥ पुं० ॥ १ ॥ तिगणुं  
 रुचकगिरि चोगणुं गजदंता, तेथी बमणेरुं फल जंबु  
 महंता ॥ न० ॥ जं० ॥ खटगणुं धातकी चैत्य जूहारे,  
 ठत्रीश गणेरुं फल पुस्कल विहारें ॥ न० ॥ पु० ॥  
 ॥ २ ॥ तेथी तेरसगणुं फल मेरु चैत्य जूहारे, सहस्र  
 गणेरुं फल समेत शिखरें ॥ न० ॥ स० ॥ लाख गणे

रुं फल अंजन गिरि जूहारें, दश लाख गणेरुं फल  
 अष्टापद गिरनारें ॥ न० ॥ अ० ॥ ३ ॥ कोडि गणेरुं  
 फल श्री सिद्धाचल जेठे, जेम रे अनादिनां डुरित  
 जमेठें ॥ न० ॥ दु० ॥ जाव अनंतें अनंत फल पावे,  
 ज्ञान विमल सूरि इम गुण गावे ॥ न० ॥ ६० ॥ ४ ॥

॥ अथ श्री राणकपुरजीनुं स्तवन ॥

॥ श्री राणकपुर रलीयामणुं रे लाल ॥ श्री आ  
 दीसर देव ॥ मन मोह्युं रे ॥ उत्तंग तोरण देहरुं रे  
 लाल, नीरखीजें नित्यमेव ॥ म० ॥ श्री० ॥ १ ॥ चउ  
 विस मंमप चिहुं दिशें रे लाल, चउमुख प्रतिमा चार  
 ॥ म० ॥ त्रिचुवन दीपक देहरुं रे लाल, समोवड  
 नहीं संसार ॥ म० ॥ श्री० ॥ २ ॥ देहरी चोराशी  
 दीपती रे लाल, मांमयो अष्टापद मेर ॥ म० ॥  
 जलें जुहायां जोयरां रे लाल, सूतां उठी सवेर  
 ॥ म० ॥ श्री० ॥ ३ ॥ देश जाणीतुं देहरुं रे लाल,  
 मोहोटो देश मेवाड ॥ म० ॥ लस्क नवाणुं लगावीयां  
 रे लाल, धन धरणें पोरवाड ॥ म० ॥ श्री० ॥ ४ ॥  
 खरतर वसही खांतशुं रे लाल, निरखंतां सुख थाय  
 ॥ म० ॥ पांच प्रासाद बीजां वली रे लाल, जोतां  
 पातक जाय ॥ म० ॥ श्री० ॥ ५ ॥ आज कृतारथ  
 हुं थयो रे लाल, आज थयो आणंद ॥ म० ॥ यात्रा  
 करी जिनवर तणी रे लाल, दूरें गयुं दुःख दंद ॥ म० ॥  
 ॥ श्री० ॥ ६ ॥ संवत शोलने गोंतरे रे लाल, माग

शिर मास मजार ॥ म० ॥ राणकपुरें यात्रा करी रे  
 लाल, समयसुंदर सुखकार ॥ म० ॥ श्री० ॥ ७ ॥ इति ॥  
 ॥ अथ श्रीसिद्धचक्रजीनुं स्तवन ॥ आठे लालनी देशी ॥

॥ समरी शारदा माय, प्रणमी निजगुरु पाय ॥  
 आठे लाल ॥ सिद्धचक्र गुण गायणुं जी ॥ ए सिद्ध  
 चक्र आधार, नवि उतरे नव पार ॥ आ० ॥ ते  
 नणी नवपद ध्यायणुं जी ॥ १ ॥ सिद्धचक्र गुणगेह,  
 जस गुण अनंत अहेह ॥ आ० ॥ समस्यां संकट  
 उपशमे जी ॥ लहियें वंछित जोग, पामी सवि सं  
 जोग ॥ आ० ॥ सुरनर आवी बहु नमे जी ॥ २ ॥ कष्ट  
 निवारे एह, रोगरहित करे देह ॥ आ० ॥ मयणा  
 सुंदरी श्रीपालने जी ॥ ए सिद्धचक्र पसाय, आपदा  
 दूरें जाय ॥ आ० ॥ आपे मंगलमालने जी ॥ ३ ॥  
 ए सम अवर न कोय, सेवे ते सुखीयो होय ॥  
 ॥ आ० ॥ मन वच काया वश करी जी ॥ नव  
 आंबिल तप सार, पडिक्कमणुं दोय वार ॥ आ० ॥  
 देववंदन त्रण टंकनां जी ॥ ४ ॥ देव पूजो त्रण  
 वार, गणणुं ते दोय हजार ॥ आ० ॥ स्नान करी  
 निर्मलपणे जी ॥ आराधे सिद्धचक्र, सान्निध्य करे  
 तेनी शक्र ॥ आ० ॥ जिनवर जन आगें नणे जी ॥  
 ॥ ५ ॥ ए सेवो निशि दीस, कहीयें वीशवा वीश ॥  
 ॥ आ० ॥ आल जंजाल सवि परिहरो जी ॥ ए  
 चिंतामणि रत्न, एहनां कीजें जत्त ॥ आ० ॥ मंत्र  
 नही एह उपरें जी ॥ ६ ॥ श्री विमलेश्वर जह्,

होजो मुऊ परतद्ध ॥ आ० ॥ हुं किंकर बुं ताहरो  
 जी ॥ पाम्यो तुंहिज देव, निरंतर करुं हवे सेव  
 ॥ आ० ॥ दिवस वल्यो हवे माहरो जी ॥ ७ ॥  
 विनति करुं बुं एह, धरजो मुजशुं नेह ॥ आ० ॥  
 तमनें शुं कहियें वली वली जी ॥ श्रीलक्ष्मीविजय  
 गुरु राय, शिष्य केसर गुण गाय ॥ आ० ॥ अमर  
 नमे तुज लली लली जी ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री संजवनाथजीनुं स्तवन ॥

॥ साहिब सांजलो रे, संजव अरज हमारी ॥  
 नवोनव हुं जम्यो रे, न लही सेवा तुमारी ॥ नरय  
 निगोदमां रे, तिहां हुं बहु नव जमीयो ॥ तुम विना  
 डुख सहां रे, अहोनिशि क्रोधें धमधमियो ॥ सा० ॥  
 ॥ १ ॥ इंदियवश पड्यो रे, पाट्यां व्रत नवि सुसें ॥  
 त्रस षण नवि गण्या रे, हणीया थावर हुंसें ॥ व्रत  
 चित्त नवि धर्यां रे, बीजुं साचुं न बोड्युं ॥ पापनी  
 गोठडी रे, तिहां में हड्डलुं खोड्युं ॥ सा० ॥ २ ॥  
 चोरो में करी रे, चउविह अदत्त न टाड्युं ॥ श्री जिन  
 आणशुं रे, में नवि संयम पाड्युं ॥ मधुकर तणी परें  
 रे, शुद्ध न आहार गवेख्यो ॥ रसना लालचें रे, नीर  
 स पिंम उवेख्यो ॥ सा० ॥ ३ ॥ नर नव दोहिलो रे,  
 पामी मोह वश बडियो ॥ परस्त्री देखिने रे, मुऊ  
 मन तिहां जइ अडियो ॥ काम न को सखां रे, पापें  
 पिंम में जरीउ ॥ सुध बुद्ध नवि रही रे, तेणें नवि  
 आतम तरीउ ॥ सा० ॥ ४ ॥ लक्ष्मीनी लालचें रे,



में बहु दीनता दाखी ॥ तोपण नवि मली रे, मली  
तो नवि रही राखी ॥ जे जन अजिलखे रे, ते तो  
तेहथी नासे ॥ तृण सम जे गणे रे, तेहनी नित्य  
रहे पासे ॥ सा० ॥ ५ ॥ धन्य धन्य ते नरा रे, एहनो  
मोह विठोडी ॥ विषय निवारीने रे, जेहने धर्ममां  
जोडी ॥ अजह्य ते में जर्यां रे, रात्रिनोजन काधां  
॥ व्रत ठ नवि पालियां रे, जेहवां मूलथी लीधां  
॥ सा० ॥ ६ ॥ अनंत जब हुं जम्यो रे, जमतां सा  
हिव मलियो ॥ तुम विना कोण दीये रे, बोध रयण  
मुक्त बलियो ॥ संजव आपजो रे, चरण कमल  
तुम्ह सेवा ॥ नय एम वीनवे रे, सुणजो देवाधि  
देवा ॥ सा० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री दीवालीनुं स्तवन ॥

॥ वाल्हाजीनी वाटडी अमें जोतां रे ॥ ए देशी ॥

॥ जय जितवर जग हितकारी रे, करे सेवा सुर  
अवतारी रे, गौतम षमुहा गणधारी ॥ १ ॥ सनेही  
वीरजी जयकारी रे ॥ ए आंकणी ॥ अंतरंग रिपुने  
त्रासे रे, तप कोपाटोपें वासे रे, लह्युं केवल नाण  
उल्लासें ॥ २ ॥ स० ॥ कटिलंकें वाद वदाय रे, पण  
जिनसार्यें न घटाय रे, तेणें हरिलंठन प्रभु पाय ॥ ३ ॥  
स० ॥ सवि सुरवहू येइयेइ कारा रे, जलपंकजनी  
परें न्यारा रे, तजी तृष्णा जोग विकारा ॥ ४ ॥ स० ॥  
प्रभुदेशना अमृत धारा रे, जिनधर्म विषे रथकारा  
रे, जेणें तास्या मेघकुमारा ॥ ५ ॥ स० ॥ गौतमने

केवल आली रे, वखा स्वातियें शिव वरमाली रे, करे  
उत्तम लोक दीवाली ॥ ६ ॥ स० ॥ अंतरंग अलह  
निवारी रे, गुन सङ्गनने उपगारी रे, कहे वीर विनु  
हितकारी ॥ ७ ॥ स० ॥ इति ॥

॥ अथ श्री सिद्ध जगवाननुं स्तवन ॥

॥ सिद्धनी शोभा रे शी कहुं ॥ ए आंकणी ॥  
सिद्ध जगत शिर शोभता, रमता आतमराम ॥ लक्ष्मी  
लीलानी लेहेरमां, सुखिया ठे शिव ठाम ॥ सि० ॥  
॥ १ ॥ महानंद अमृतपद नमो, सिद्धि कैवल्य नाम ॥  
अपुनर्नव ब्रह्मपद वली, अक्षय सुख विशराम ॥  
॥ सि० ॥ २ ॥ संश्रेय निःश्रेय अक्षरा, दुःख सम  
स्तनीहाण ॥ निवृत्ति अपवर्गता, मोक्ष मुक्ति निर  
वाण ॥ सि० ॥ ३ ॥ अचल महोदय पद लघुं, जोतां  
जगतना ठाठ ॥ निज निजरूपें रे जूजूआं, वीत्यां  
कर्म ते आव ॥ सि० ॥ ४ ॥ अगुरुलघु अवगाहना,  
नामें विकसे वदन्न ॥ श्री गुनवीरने वंदतां, रहियें  
सुखमां मगन्न ॥ सि० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री आराधनानुं स्तवन प्रारंभ ॥

॥ दोहा ॥ सकल सिद्धि दायक सदा, चोवीशे  
जिनराय ॥ सहगुरु सामिनि सरसति, प्रेमें प्रणमूं  
पाय ॥ १ ॥ त्रिभुवनपति त्रिशला तणो, नंदन गुण  
गंजीर ॥ शासन नायक जग जयो, वर्द्धमान वड  
वीर ॥ २ ॥ इक दिन वीर जिणंदने, चरणे करि प  
रणाम ॥ नविक जीवना हित नणी, पूछे गौतम

स्वाम ॥ ३ ॥ मुक्तिमार्ग आराधियें, कहो किए परें  
 अरिहंत ॥ सुधा सरस तव वचन रस, जांखे श्री न  
 गवंत ॥ ४ ॥ अतिचार आलोश्यें, व्रत धरीयें गुरु  
 साख ॥ जीव खमावो सयल जे, योनि चोराशी ला  
 ख ॥ ५ ॥ विधिगुं वली वोसिरावियें, पापस्थान अ  
 ढार ॥ चार शरण नित्य अनुसरो, निंदो डुरित आ  
 चार ॥ ६ ॥ गुनकरणी अनुमादियें, जाव जलो मन आ  
 ए ॥ अणसण अवसर आदरी, नवपद जपो सुजाण  
 ॥ ७ ॥ गुनगति आराधन तणा, ए ते दश अधिकार ॥  
 चित्त आणीने आदरो, जिम पामो नवपार ॥ ८ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ ए बिंदि किहां राखी ॥ ए देशी ॥

॥ ज्ञान दरिसण चारित्र तप वीरज, ए पांचे आ  
 चार ॥ एह तणा इह नव परजवना, आलोश्यें अ  
 तिचार रे ॥ १ ॥ प्राणी ज्ञान जणो गुणखाणी ॥ वीर  
 वदे एम वाणी रे ॥ प्राणी ॥ ज्ञा ॥ ए आंकणी ॥ गुरु उ  
 लवीयें नहिं गुरु विनयें, कालें धरी बहुमान ॥ सूत्र अर्थ  
 तडुनय करी सूधां, जणीयें वही उपधान रे ॥ २ ॥ प्राणी  
 ज्ञा ॥ ज्ञानोपकरण पाटी पोथी, ठवणी नोकरवाली ॥  
 तेह तणी कीधी आशातना, ज्ञान नक्ति न संजाली रे  
 ॥ ३ ॥ प्राणी ॥ ज्ञा ॥ इत्यादिक विपरीतपणार्थी, ज्ञान  
 विराध्युं जेह ॥ आ नव परजव वलिय नवोनव,  
 मिह्ठाडुक्कड तेह रे ॥ ४ ॥ प्राणी समकित ल्यो  
 शुद्ध जाणी ॥ ए आंकणी ॥ जिनवचनें शंका नवि की

जें, नवि परमत अजिलाख ॥ साधुतणी निंदा परिह  
 रजो, फलसंदेह म राख रे ॥ ५ ॥ प्राणी ॥ स० ॥ मूढपणं  
 ठंमो परशंसा, गुणवंतने आदरियें ॥ साहामीनें धर्मे  
 करी थिरता, नक्ति प्रभावना करीयें रे ॥ ६ ॥ प्राणी  
 ॥ स० ॥ संघचैत्य प्रासाद तणो जे, अवर्णवाद मन  
 लेख्यो ॥ इव्य देवको जे विणसाडयो, विणसंतां उ  
 वेख्यो रे ॥ ७ ॥ प्राणी ॥ स० ॥ इत्यादिक विपरीत  
 पणाथी, समकित खंमथुं जेह ॥ आ नव० ॥ मिह्ता० ॥  
 ० ॥ प्राणी ॥ चारित्र व्यो चित्त आणी ॥ ए आंकणी ॥ पांच  
 समिति त्रण गुप्ति विराधि, आठे प्रवचन माय ॥ सा  
 धुतणे धर्मे परमादे, अशुद्ध वचन मन काय रे ॥  
 ॥ ८ ॥ प्राणी ॥ चा० ॥ श्रावकने धर्मे सामायिक,  
 पोसहमां मन वाली ॥ जे जयणापूर्वक जे आठे,  
 प्रवचनमाय न पाली रे ॥ १० ॥ प्राणी ॥ चा० ॥  
 इत्यादिक विपरीतपणाथी, चारित्र मोड्युं जेह ॥ आ  
 नव० ॥ मिह्ता० ॥ ११ ॥ प्रा० ॥ चा० ॥ बारे जे  
 दें तप नवि कीधुं, ठते योगें निज शक्तें ॥ धर्मे मन  
 वच काया वीरज, नवि फोरविउं जगतें रे ॥ १२ ॥  
 ॥ प्राणी ॥ चा० ॥ तपवीरज आचारें एणि परें, वि  
 विध विराध्या जेह ॥ आ नव० ॥ मिह्ता० ॥ १३ ॥  
 ॥ प्राणी ॥ चा० ॥ वलीय विशेषें चारित्र केरा, अति  
 चार आलोश्यें ॥ वीर जिणेसर वयण सुणीनें, पाप  
 मयल सवि धोश्यें रे ॥ १४ ॥ प्राणी ॥ चा० ॥

॥ ढाल बीजी ॥ पामी सुगुरु पसाय ॥ ए देशी ॥

॥ पृथिवी पाणी तेउ, वाउ वनस्पति ॥ ए पांचे  
थावर कहां ए ॥ करि करसण आरंज, खेत्र जे खे  
डियां ॥ कूवा तलाव खणावीया ए ॥ १ ॥ घर आ  
रंज अनेक, टांकां नोंयरां ॥ मेडी माल चणावीया  
ए ॥ लीपण घुंण काज, इणी परें परपरें ॥ पृथिवी  
काय विराधिया ए ॥ २ ॥ धोयण नाहण पाणी,  
जीलण अपकाय ॥ ठोती धोती करी दूहव्यां ए ॥ ना  
ठीगर कुंजार, लोह सोवनगरा ॥ नाडजुंजा लिहालाग  
रा ए ॥ ३ ॥ तापण शेकण काज, वस्त्र निखारण ॥  
रंगण रांधण रसवती ए ॥ इणी परें कर्मादान, परें  
परें केलवं ॥ तेउ वाउ विराधिया ए ॥ ४ ॥ वाडी  
वन आराम, वावि वनस्पति ॥ पान फूल फल चूंटीयां  
ए ॥ पोहोंक पापडी शाक, शेक्यां शूकव्यां ॥ बुंद्यां ठेद्यां  
आश्र्यां ए ॥ ५ ॥ अलसीनें एरंम, घाणी घालीने ॥  
घणा तिलादिक पीलीया ए ॥ घाली कोलुमांहि,  
पीली शेलडी ॥ कंद मूल फल वेचीयां ए ॥ ६ ॥  
एम एकेंडिय जीव, हण्या हणावीया ॥ हणतां जे  
अनुमोदीया ए ॥ आनव परनव जेह, वलिय नवोन  
वें ॥ ते मुज मिळामि डुक्कडुं ए ॥ ७ ॥ कृमी सरमीयां  
कीडा, गामर गंमोला ॥ इयल पूरा अलसीयां ए ॥ वाला  
जलो चूडेल, विचलित रसतणा ॥ वली अथाणां प्रमुख  
नां ए ॥ ८ ॥ एम बे इंडिय जीव, जे में दूहव्या ॥ ते  
मुज ॥ उदेही जूलीख, मांकड मंकोडा ॥ चांच

ड कीडी कुंथुआ ए ॥ ए ॥ गद्दहीयां धीमेल, कान  
 खजूरडा ॥ गींगोडा धनेडीयां ए ॥ एम ते इंडिय  
 जीव, जे में दूहव्या ॥ ते मुऊ० ॥ १० ॥ माखी मत्सर  
 मांस, मसा पतंगीया ॥ कंसारी कोलिया वडा ए ॥ ढी  
 कण विंबु तीड, नमरा नमरीयो ॥ कौंता बग खड  
 मांकडी ए ॥ ११ ॥ एम चौरिंडिय जीव, जे में  
 दूहव्या ॥ ते मुऊ० ॥ जलमां नाखी जाल, जलचर दू  
 हव्या ॥ वनमां मृग रांतापीया ए ॥ १२ ॥ पीड्या  
 पंखी जीव, पाडी पाशमां ॥ पोपट घाव्या पांजरे ए ॥  
 एम पंचेंडिय जीव, जे में दूहव्या ॥ ते मुऊ० ॥ १३ ॥  
 ॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ प्रथम गोवाला तणे नवें जी ॥ ए देशी ॥

॥ क्रोध लोच नय हासथी जी, बोल्यां वचन अ  
 सत्य ॥ कूड करी धन पारकां जी, लीधां जेह अदत्त  
 रे ॥ जिनजी ॥ १ ॥ मिह्ठाडुकड आज ॥ तुम् साखें  
 महाराज रे ॥ जिनजी ॥ देइ सारुं काज रे ॥ जिनजी ॥  
 ॥ मि० ॥ ए आंकणी ॥ देव मनुज तीर्थचनां जी,  
 मैथुन सेव्यां जेह ॥ विषयारस लंपटपणे जी, घणुं  
 विमंब्यो देह रे ॥ जि० ॥ २ ॥ मि० ॥ परिग्रहनी मम  
 ता करी जी, नव नव मेली आय ॥ जे जिहांनी  
 ते तिहां रही जी, कोइ न आवी साथ रे ॥ जि०  
 ॥ ३ ॥ मि० ॥ रयणीनोजन जे कखां जी, कीधां न  
 द्य अन्नद्वय ॥ रसना रसनी लालचें जी, पाप क  
 खां प्रत्यक्ष रे ॥ जि० ॥ ४ ॥ मि० ॥ व्रत लेइ वी

सारियां जी, वली नांग्यां पञ्चस्काण ॥ कपटहेतु किरियां  
करी जी, कीधां आप वखाण रे ॥ जि० ॥ ५ ॥ मि० ॥ त्रण  
ढाल आठे डुहें जी, आलोया अतिचार ॥ शिवगति  
आराधन तणो जी, ए पहेलो अधिकार रे ॥ जि० ॥ ६ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ साहेलडीनी देशी ॥

॥ पंच महाव्रत आदरो ॥ साहेलडी रे ॥ अथ  
वा व्यो व्रत बार तो ॥ यथाशक्ति व्रत आदरी ॥ सा० ॥  
पालो निरतिचार तो ॥ १ ॥ व्रत लीधां संनारीयें  
॥ सा० ॥ हियडे धरिय विचार तो ॥ शिवगति आ  
राधन तणो ॥ सा० ॥ ए बीजो अधिकार तो ॥ २ ॥  
जीव सवे खमावियें ॥ सा० ॥ योनि चोराशी लाख  
तो ॥ मन शुद्धे करो खामणां ॥ सा० ॥ कोइशुं रो  
ष न राख तो ॥ ३ ॥ सर्व मित्र करी चिंतवो ॥ सा० ॥  
कोइ न जाणो शत्रु तो ॥ राग द्वेष एम परिहरो ॥  
सा० ॥ कीजें जन्म पवित्र तो ॥ ४ ॥ सामी संघ  
खमावियें ॥ सा० ॥ जे उपनी अप्रीति तो ॥ सज्ज  
न कुटुंब करी खामणां ॥ सा० ॥ ए जिनशासन री  
ति तो ॥ ५ ॥ खमियें अने खमावियें ॥ सा० ॥ एह  
ज धर्मनो सार तो ॥ शिवगति आराधन तणो ॥ सा० ॥  
ए बीजो अधिकार तो ॥ ६ ॥ मृषावाद हिंसा चो  
री ॥ सा० ॥ धन मूर्खी मेदुन्न तो ॥ क्रोध मान मा  
या तृष्णा ॥ सा० ॥ प्रेम द्वेष पैशुन्य तो ॥ ७ ॥  
निंदा कलह न किजीयें ॥ सा० ॥ कूडां न दीजें आ  
ल तो ॥ रति अरति मिथ्या तजो ॥ सा० ॥ माया

मोस जंजाल तो ॥ ८ ॥ त्रिविध त्रिविध वोसिरावि  
यें ॥ सा० ॥ पापस्थान अठार तो ॥ शिवगति आ  
राधन तणी ॥ सा० ॥ ए चोथो अधिकार तो ॥ ९ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ हवे निसुणो इहां आवीयाए ॥ ए देशी ॥

॥ जनम जरा मरणें करी ए, ए संसार असार  
तो ॥ कस्यां कर्म सहु अनुजवे ए, कोइ न राखणहार  
तो ॥ १ ॥ शरण एक अरिहंतनुं ए, शरण सिद्ध न  
गवंत तो ॥ शरण धर्म श्रीजैननो ए, साधु शरण गु  
णवंत तो ॥ २ ॥ अवर मोह सवि परिहरी ए, चा  
र शरण चित्त धार तो ॥ शिवगति आराधन तणो  
ए, ए पांचमो अधिकार तो ॥ ३ ॥ आ नव परनव  
जे कस्यां ए, पाप कर्म केइ लाख तो ॥ आत्मसाखें  
ते निंदीयें ए, पडिक्कमियें गुरु साख तो ॥ ४ ॥ मि  
थ्यामति वर्त्तावियां ए, जे नांख्यां उत्सूत्र तो ॥ कुमति  
कदाग्रहने वरों ए, बली आप्यां उत्सूत्र तो ॥ ५ ॥  
घज्यां घडाव्यां जे घणां ए, घंटी हल हथीया  
र तो ॥ नव नव मेली मूकीयां ए, करता जीव सं  
हार तो ॥ ६ ॥ पाप करीनें पोषिया ए, जनम जनम  
परिवार तो ॥ जनमांतर पोहोता पढी ए, कोइ न  
कीधी सार तो ॥ ७ ॥ आ नव परनव जे कस्यां ए,  
इम अधिकरण अनेक तो ॥ त्रिविध त्रिविध वोसि  
रावीयें ए, आणी हृदय विवेक तो ॥ ८ ॥ दुःकृत  
निंदा एम करी ए, पाप कस्यां परिहार तो ॥ शिवग



તિ આરાધન તણો એ, એ ઢઠો અધિકાર તો ॥ એ ॥

॥ ઢાલ ઢઠી ॥

॥ આદિ તું જોડને આપણી ॥ એ દેશી ॥

॥ ધન ધન તે દિન માહરો, જિહાં કીધો ધર્મ ॥  
 દાન શીયલ તપ આદરી, ટાલ્યાં ડુષ્કર્મ ॥ ધ૦ ॥ ૧ ॥  
 શેત્રુંજાદિક તીર્થની, જે કીધી યાત્ર ॥ યુગતેં જિન  
 વર પૂજીયા, વલી પોશ્યાં પાત્ર ॥ ધ૦ ॥ ૨ ॥ પુસ્તક  
 જ્ઞાન લેખાવીયાં, જિણહર જિણચેત્ય ॥ સંઘ ચતુર્વિધ  
 સાચવ્યા, એ સાતે સ્થેત્ર ॥ ધ૦ ॥ ૩ ॥ પડિક્કમણાં  
 સુપરેં કહ્યાં, અનુકંપા દાન ॥ સાધુ સૂરિ ઝવઝાયનેં,  
 દીધાં બહુમાન ॥ ધ૦ ॥ ૪ ॥ ધર્મકારજ અનુમોદિયેં,  
 ઇમ વારોવાર ॥ શિવગતિ આરાધન તણો, એ સાતમો  
 અધિકાર ॥ ધ૦ ॥ ૫ ॥ નાવ નલો મન આણીયેં,  
 ચિત્ત આણી ઠામ ॥ સમતા નાવેં નાવીયેં, એ આત  
 મરામ ॥ ધ૦ ॥ ૬ ॥ સુખ દુઃખ કારણ જીવને, કોડ  
 અવર ન હોય ॥ કર્મ આપ જે આચર્યાં, જોગવિયેં  
 સોય ॥ ધ૦ ॥ ૭ ॥ સમતા વિણ જે અનુસરે, પ્રાણી  
 પુણ્યનાં કામ ॥ ઠાર ઉપર તે લીપણું, જાંચર ચિત્રામ  
 ॥ ધ૦ ॥ ૮ ॥ નાવ નલો પરેં નાવીયેં, એ ધર્મનો સાર ॥ શિ  
 વગતિ આરાધન તણો, એ આઠમો અધિકાર ॥ ધ૦ ॥ ૯ ॥

॥ ઢાલ સાતમી ॥ રેવતગિરિ ઉપરેં ॥ એ દેશી ॥

॥ હવે અવસર જાણી, કરિયેં સંલેખણ સાર ॥ અ  
 ણસણ આદરીયેં, પચ્ચસ્કી ચાર આહાર ॥ લલુતા સચિ  
 મૂકી, ઢાંતી મમતા અંગ ॥ એ આતમ સ્થેત્રે, સમતા

ज्ञान तरंग ॥ १ ॥ गति चारें कीधा, आहार अनंत  
 निःशंक ॥ पण तृप्ति न पाम्यो, जीव लालचीउ रंक ॥  
 डुलहो ए वली वली, अणसणनो परिणाम ॥ एथी  
 पामीजें, शिवपद सुरपद ठाम ॥ २ ॥ धन धना  
 शालिजड, खंधो मन्कुमार ॥ अणसण आराधी,  
 पाम्या नवनो पार । शिवमंदिर जाशे, करी एक  
 अवतार ॥ आराधन केरो, ए नवमो अधिकार । ३ ॥  
 दशमे अधिकारें, महामंत्र नवकार ॥ मनथी नवि  
 मूको, शिवसुख फल सत्कार ॥ ए जयतां जाए,  
 डुरगति दोष विकार ॥ सुपर ए समरो, चउद पूरवनो  
 सार ॥ ४ ॥ जन्मांतरें जातां, जो पामे नवकार ॥  
 तो पातक गाली, पामे सुर अवतार ॥ ए नव पद  
 सरिखो, मंत्र न को संसार ॥ इह नव ने परनवें, सुख  
 संपति दातार ॥ ५ ॥ जुउ नीलने नीलडी, राजा  
 राणी थाय ॥ नवपद महिमाथी, राजसिंह महा  
 राय ॥ राणी रत्नवती बेहु, पाम्यां ठे सुरजोग ॥ एक  
 नवथी लेशे, सिद्धवधू संयोग ॥ ६ ॥ श्रीमतीने ए  
 वली, मंत्र फळ्यो ततकाल ॥ फणिधर फीटीने, प्रगट  
 थड फुलमाल ॥ शिवकुमरें योगी, सोवन पुरुसो कीध  
 ॥ इम एणे मंत्रें, काज घणानां सीध ॥ ७ ॥ ए दश  
 अधिकारें, वीर जिणोसर नांख्यो ॥ आराधन केरो,  
 विधि जिणें चितमां राख्यो ॥ तिणें पाप पखाली, नव  
 नय दूरें नाख्यो ॥ जिन विनय करंतां, सुमति अमृत  
 रस चाख्यो ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ ढाल आठमी ॥ नमो नवि नावहुं ए ॥ ए देशी ॥

॥ सिद्धारथ राय कुलतिलो ए, त्रिशला मात म  
ब्हार तो ॥ अवनीतलें तुमें अवतल्या ए, करवा अम  
उपकार ॥ १ ॥ जयो जिन वीरजी ए ॥ ए आंकणी ॥ में  
अपराध कल्या घणा ए, केहेतां न लहुं पार तो ॥ तुम  
चरणे आव्या नणी ए, जो तारे तो तार ॥ २ ॥ ज० ॥  
आश करीने आवीयो ए, तुम चरणे महाराज तो ॥  
आव्याने उवेसशो ए, तो किम रहेसो लाज ॥ ३ ॥  
ज० ॥ कर्म अलूजण आकरां ए, जनम मरण जंजाल  
तो ॥ हुं हुं एहथी उजग्यो ए, ढोडावो देवदयाल  
॥ ४ ॥ ज० ॥ आज मनोरथ मुज फट्या ए, नाठां  
डुख दंमोल तो ॥ तूठो जिन चोवीशमो ए, प्रगट्यो  
पुण्य कट्ठोल ॥ ५ ॥ ज० ॥ नव नव विनय तुमा  
रडो ए, नाव नगति तुम पाय तो ॥ देव दया करी  
दीजीयें ए, बोध बीज सुपसाय ॥ ६ ॥ ज० ॥ इति ॥

॥ कलश ॥ इय तरण तारण सुगति कारण, दुःख  
निवारण जग जयो ॥ श्रीवीर जिनवर चरण थुणतां,  
अधिक मन उलट थयो ॥ १ ॥ श्री विजयदेव  
सुरिंद पटधर, तीर्थ जंगम इणि जगें ॥ तप गह्वपति  
श्री विजयप्रज सूरि, सूरितेजें जगमगे ॥ २ ॥  
श्रीहीरविजय सूरि शिष्य वाचक, कीर्तिविजय सुर  
गुरु समो ॥ तस शिष्य वाचक विनयविजयें, थुण्यो  
जिन चोवीशमो ॥ ३ ॥ सय सत्तर संवत उगण  
त्रीशें, रही रांदेर चौमास ए ॥ विजय दशमी विजय

कारण, कियो गुणअन्यास ए ॥ ४ ॥ नरजव आरा  
धन सिद्धि साधन, सुकृत लीलविलास ए ॥ निर्जरा  
हेतें तवन रचियुं, नामें पुण्य प्रकाश ए ॥ ५ ॥ इति श्रु!  
आराधना रूप पुण्य प्रकाशस्तवनं संपूर्ण ॥ श्लोक १२७

॥ अथ अष्टापद तीर्थ स्तवन ॥

॥ तीरथ अष्टापद नित नमीयें, जिहां जिनवर चो  
वीश जी ॥ मणिमय बिंब जराव्यां जरतें, ते वंदूं  
नित दीस जी ॥ ती० ॥ १ ॥ निजनिज देह प्रमाणें  
मूरति, दीठडे मनडुं मोहे जी ॥ चत्तारि अठ दश  
दोय इणि परें, जिनचोवीशे सोहे जी ॥ ती० ॥ २ ॥  
बत्रीश कोशनो पर्वत उंचो, आव तिहां पावडीयो  
जी ॥ एकेकी चउकोश प्रमाणें, नवि जाये कोइ च  
डीयो जी ॥ ती० ॥ ३ ॥ गौतमस्वामी चडीया लब्धें,  
वांद्या जिन चोवीश जी ॥ जगचिंतामणि स्तवन त्यां  
कीधुं, पूगी मननी जगीश जी ॥ ती० ॥ ४ ॥ तद्वज्र  
वमोद्गामी जे मानव, ए तीरथने वांदे जी ॥ जंघा  
विद्याचारण वांदे, तेतो लब्धिप्रसादें जी ॥ ती० ॥ ५ ॥  
शाठ सहस सुत सगर चक्रीना, ए तीरथ सेवता  
जी ॥ बारमा देवलोकें ते पोहोता, लेहेगे सुख  
अनंतां जी ॥ ती० ॥ ६ ॥ कंचनमय प्रासाद इहां  
ठे, वंदन करवा योग्य जी ॥ ए अधिकार ठे आव  
श्यकसूत्रें, जो ज्यो दइ उपयोग जी ॥ ती० ॥ ७ ॥  
जिहां आदीसर मुक्तें पोहोता, अविचल तीरथ एह

जी ॥ जसवंतसागर शिष्य पर्यंते, जिनेंइ वधते नेह  
जी ॥ ती० ॥ ८ ॥ इति अष्टापद स्तवनं ॥

॥ अथ समवसरणनुं स्तवन ॥

॥ एक वार गोकुल आवजो गोविंदजी ॥ ए देशी ॥

॥ एक वार वल्ल देश आवजो, जिणंद जी, एक वार  
वल्लदेश आवजो ॥ दरिसण नयन ठेराव जो ॥ जिणंद  
जी, एकवार वल्ल देश आवजो ॥ जयंतीने पाय नमाव  
जो ॥ जि० ॥ एक० ॥ वली समोसरण देखावजो ॥ जि० ॥  
एक० ॥ ए आंकणी ॥ समोवसरण शोना जे दीठी,  
दूण दूण सांनरी आवजो ॥ जि० ॥ एक० ॥ नूतल  
सुगंधी जल वरसावे, फूलना पगर जरावजो ॥ जि० ॥  
॥ एक० ॥ १ ॥ कनक रतननो पीठ करीने, त्रिगडा  
नी शोना रचावजो ॥ जि० ॥ एक० ॥ रूपानो गढने  
कनक कोशीशां, वस्त्रें रतन जडावजो ॥ जि० ॥ एक०  
॥ २ ॥ रतनगढें मणिनां कोशीशां, जगमग ज्योति  
दीपावजो ॥ जि० ॥ एक० ॥ चारे डुवारें एंशी हजा  
रा, शिव सोपान चढावजो ॥ जि० ॥ एक० ॥ ३ ॥  
देव चार कर आयुद्ध धारी, द्वारें खडा करे चाकरी  
॥ जि० ॥ एक० ॥ दूर पासथी एक समे वंदे, जरं  
तीने लघु ठोकरी ॥ जि० ॥ एक० ॥ ४ ॥ सहस्स योजन  
ध्वज चार ते उंचा, तोरण चउ अठ वावडी ॥ जि०  
॥ एक० ॥ मंगल आवने धूप घटाली, फूलमाल कर  
पूतली ॥ जि० ॥ एक० ॥ ५ ॥ आव. सुरी बीजे गढ  
द्वारें, रत्न गढें चउ देवता ॥ जि० ॥ एक० ॥ जाति

बैर ठंढी पशु पंखी, तुज पद कमलने सेवता ॥ जि० ॥  
 एक० ॥ ६ ॥ पंचवरणमयी जल थल केरां, फूल  
 अमर वरसावता ॥ जि० ॥ एक० ॥ परखदा सात  
 ते ऊपर बेसे, मुनि नर नारी देवता ॥ जि० ॥  
 एक० ॥ ७ ॥ आवश्यक टीकायें पण उत्तर, थाये  
 न कुसुम किलामणी ॥ जि० ॥ एक० ॥ साधवी वैमा  
 निकनी देवी, उनी सुणे दोय चूरणी ॥ जि० ॥ एक०  
 ॥ ८ ॥ बत्रीश धनुष अशोक ते उंचो चामर ठत्र ध  
 रावजो ॥ जि० ॥ एक० ॥ चउमुख स्यण सिंहासन  
 बेसी, अमृत वयण सुणावजो ॥ जि० ॥ एक० ॥ ९ ॥  
 धर्मचक्र नामंमल तेजें, मिथ्या तिमिर हरावजो ॥ जि०  
 ॥ एक० ॥ गणधर वाणी जब अमें सुणीयें, तव  
 देवहंदें सुहावजो ॥ जि० ॥ एक० ॥ १० ॥ देवतासुरि  
 कवि साचुं बोले, जिहां जाशो तिहां आवशे ॥ जि०  
 ॥ एक० ॥ रंजादिक अपहरनी टोली, वंदी नमी गुण  
 गावशे ॥ जि० ॥ एक० ॥ ११ ॥ अंतरयामी दूरें  
 विचरो, मुजचित्त नीनुं ज्ञानशुं ॥ जि० ॥ एक० ॥  
 हृदयथकी जो दूरें जाउं, तो अमें कौतुक मानशुं  
 ॥ जि० ॥ एक० ॥ १२ ॥ सुलसादिक नव जिनपद  
 दीधुं, अमशुं अंतर एवडो ॥ जि० ॥ एक० ॥ वीत  
 राग जो नाम धरावो, सहुने सरिखा तेवडो ॥ जि०  
 ॥ एक० ॥ १३ ॥ ज्ञाननजरथी वात विचारो, रागद  
 शा अम रूअडी ॥ जि० ॥ एक० ॥ सेवक रागें साहेब  
 रीजो, धन धन त्रिशला मावडी ॥ जि० ॥ एक०

॥ १४ ॥ तुज विण सुरपति सघला तूसे, पण अमें  
 आमण दूमणां ॥ जि० ॥ एक० ॥ श्रीशुजवीर हजूरें  
 रहेतां, उहव रंग वधामणां ॥ जि० ॥ एक० ॥  
 ॥ १५ ॥ इति श्री समवसरण स्तवनं ॥ संपूर्ण ॥

॥ अथ श्री सीमंधरजिन स्तवनं ॥ रुपैय्यो ते  
 आलुं रोकडो, माहारा वाहालाजी रे ॥ ए देशी ॥

॥ मनडुं ते माहारुं मोकळे, महारा वाहालाजी रे ॥  
 ससिहर सायें संदेश, जश्ने कहेजो महारा वालाजी  
 रे ॥ ए आंकणी ॥ नरतना नक्तने तारवा ॥ मा० ॥  
 एकवार आवोने आ देश ॥ ज५० ॥ १ ॥ प्रचुजी वसो  
 पुष्कलावती ॥ मा० ॥ महाविदेह खेत्र मजार  
 ॥ ज५० ॥ पुरी राजे पुनरिणिणी ॥ मा० ॥ जिहां  
 प्रचुनो अवतार ॥ ज५० ॥ २ ॥ श्रीसीमंधर साहिबा  
 ॥ मा० ॥ विचरता वीतराग ॥ ज५० ॥ पडिबोहो  
 बहु प्राणीने. ॥ मा० ॥ तेहनो पामे कुण ताग  
 ॥ ज५० ॥ ३ ॥ मन जाणे कमी मलुं ॥ मा० ॥  
 पण पोतें नही पांख ॥ ज५० ॥ जगवंत तुम जोवा नणी  
 ॥ मा० ॥ अलजो धरे ठे बेहु आंख ॥ ज५० ॥ ४ ॥  
 डुर्गम महोटा मूंगरा ॥ मा० ॥ नदी नालानो नही पा  
 र ॥ ज५० ॥ घांटीनी आंटी घणी ॥ मा० ॥ अटवी पंथ  
 अपार ॥ ज५० ॥ ५ ॥ कोडी सौनैये काशीदी ॥ मा० ॥  
 करनारो नहीं कोय ॥ ज५० ॥ कागलीयो केम मोक  
 लुं ॥ मा० ॥ होंश तो नित्य नवली होय ॥ ज५०  
 ॥ ६ ॥ लखं जे जे लेखमां ॥ मा० ॥ लाख गमे अ

निजाप ॥ ज५० ॥ तमें लेजामां ते लहो ॥ मा० ॥  
 समय पूरे ठे साख ॥ ज५० ॥ ७ ॥ लोकालोक  
 सरूपना ॥ मा० ॥ जगमां तुमें ठो जाण ॥ ज५० ॥  
 जाण आगें छुं जणावियें ॥ मा० ॥ आखर अमें  
 अजाण ॥ ज५० ॥ ८ ॥ वाचक उदयनी वीनति  
 ॥ मा० ॥ ससिहर कहा संदेश ॥ ज५० ॥ मानी  
 लेजो माहरी ॥ मा० ॥ वसतां दूर विदेश ॥ ज० ॥ ए ॥  
 ॥ अथ श्री युगमंधर जिन स्तवनं ॥

॥ मधुकरनी देशीमां ॥

॥ श्रीयुगमंधरने केजो, के दधिसुत वीनतडी सुण  
 जो रे ॥ श्रीयुग० ॥ ए आंकणी ॥ काया पामी अति कूडी,  
 पांख नही रे आवुं उडी, लब्धि नही कोये रूडी रे ॥  
 श्रीयुग० ॥ १ ॥ तुम सेवामां हि सुर कोडी, ते इहां  
 आवे एक दोडी, आश फले पातक मोडी रे ॥ श्री  
 युग० ॥ २ ॥ दुखम समयमां इणें जरतें, अतिशय  
 नाणी नवि वरते, कहीयें कहो कोण सांजलते रे  
 ॥ श्रीयुग० ॥ ३ ॥ श्रवणें सुखीया तुम नामें, नयणां  
 दरिसण नवि पामे, ए तो जगडाने ठामें रे ॥ श्रीयु  
 ग० ॥ ४ ॥ चार आंगल अंतर रहेवुं, शोकडलीनी  
 परें दुख सहेवुं, प्रभु विना कोण आगल कहेवुं रे  
 ॥ श्रीयुग० ॥ ५ ॥ महोटा मेल करी आपे, बेहुने  
 तोल करी थापे, सज्जन जस जगमां व्यापे रे ॥ श्रीयु  
 ग० ॥ ६ ॥ बेहुनो एक मतो आवे, केवल नाण जुग  
 ल पावे, तो सविं वात बनी आवे रे ॥ श्रीयुग० ॥ ७ ॥



( ८९ )

गजलंठन गजगतिगामी, विचरे विप्रविजय स्वामी,  
नयरी विजया गुणधामी रे ॥ श्रीयुग० ॥ ८ ॥ मात  
सुतारायें जायो, सुदृढ नरपति कुल आयो, पंक्ति  
जिनविजयें गायो रे ॥ श्रीयुग० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ नेमिजिनस्तवनं ॥ गरबानी देशीमां ॥

॥ जइने रहेजो माहारा वालाजीरे, श्रीगिरनारने  
गोंख ॥ जइने०॥ए आंकण॥॥अमें पण तिहां आवशुं  
॥माहा०॥जिहारें पामीशुं जोख ॥ जइ०॥१॥ जान ले  
इ जूने गढें ॥ माहा०॥आवी तोरण आप ॥ जइ०॥  
पशुआं पेखी पाठा वल्या ॥ माहा० ॥ जातां न दीधो  
जवाप ॥ज०॥२॥ सुंदर आपण सारिखा ॥ माहा० ॥  
जोतां नहों मले जोड ॥ जइ० ॥ बोल्यां अणबोल्यां  
करो ॥ माहा० ॥.ए वातें तमने खोड ॥ जइ० ॥३॥  
हुं रागी तुं वेरागीउ ॥ माहा० ॥ जगमां जाणो सहु  
कोय ॥ जइ० ॥ रागी तो लागी रहे ॥माहा०॥ वेरागी  
रागी न होय ॥ जइ० ॥ ४ ॥ वर बीजो हुं नवि वरुं  
॥ माहा० ॥ सघला मेहेली सवाद ॥ जइ० ॥ मोहनी  
याने जइ मली ॥ माहा० ॥ महोटा साथें श्यो वाद  
॥ जइ० ॥५॥ गढ तो एक गिरनार ठे ॥ माहा० ॥नर  
तो ठे एक श्री नेम ॥ जइ० ॥ रमणी एक राजीमती  
॥ माहा० ॥ पूरो पाड्यो जेणें प्रेम ॥ जइ० ॥ ६ ॥ वा  
चक उदयनी वंदना ॥ माहा० ॥ मानी लेजो माहा  
राज ॥ जइ० ॥ नेम राजुल मुक्तें मल्यां ॥ माहा० ॥  
साखां आतमकाज ॥ जइ० ॥ ७ ॥ इति स्तवनं

॥ अथ पंचमीनुं लघु स्तवन लिख्यते ॥

॥ पंचमीतप तमें करो रे प्राणी, जिम पामो निर्म  
ल ज्ञान रे ॥ पहेलुं ज्ञानने पढी किरिया, नहिं कोइ  
ज्ञान समान रे ॥ पंचमी० ॥ १ ॥ नंदीसूत्रमां ज्ञान  
वखाण्युं, ज्ञानना पांच प्रकार रे ॥ मति श्रुत अवधिने  
मनःपर्यव, केवल ज्ञान उदार रे ॥ पंचमी० ॥ २ ॥ मति  
अष्टावीश श्रुत चउदह वीश, अवधि ठे असंख्य प्र  
कार रे ॥ दोय जेदे मनःपर्यव दाख्युं, केवल एक उ  
दार रे ॥ पंचमी० ॥ ३ ॥ चंड सूर्य ग्रह नक्षत्र तारा,  
ऐसो तेज आकाश रे ॥ केवल ज्ञान उद्योत जयो जब,  
लोकालोक प्रकाश रे ॥ पंचमी० ॥ ४ ॥ पारसनाथ  
प्रसाद करीने, म्हारी पूरो उमेद रे ॥ समय सुंदर कहे  
हुं पण पामुं, ज्ञाननो पंचमो जेद रे ॥ पंचमी० ॥ ५ ॥

॥ अथ श्रीवीरप्रभुनुं दीवालीनुं स्तवन लिख्यते ॥

॥ मारग देसक मोहनो रे, केवल ज्ञाननिधान ॥  
जाव दया सागरप्रभु रे, पर उपगारी प्रधानो रे ॥  
१ ॥ वीर प्रभु सिद्ध अया ॥ संघ सकल आधारो रे,  
हवे इण जरतमां ॥ कोण करशे उपगारो रे ॥ वी० ॥  
२ ॥ नाथ विद्वणुं सैन्य ज्युं रे, वीर विद्वणो रे  
संघ ॥ साधे कोण आधारथी रे, परमानंद अनंगो  
रे ॥ वीर० ॥ ३ ॥ माता विद्वणो बाल ज्युं रे, अ  
रहो परहो अथडाय ॥ वीर विद्वणा जीवडा रे, आ  
कुल व्याकुल आय रे ॥ वीर० ॥ ४ ॥ संशय ठेदक  
वीरनो रे, विरह ते केम खमाय ॥ जे दीठे सुख

ऊपजे रे, ते विण केम रद्देवायो रे ॥ वीर० ॥ ५ ॥  
 निर्यामक नव समुद्गो रे, नवअडवि सडवाह ॥  
 ते परमेश्वर विण मले रे, केम बाधे उत्साहो रे ॥  
 ॥ वीर० ॥ ६ ॥ वीरथकां पण श्रुत तणो रे, हतो  
 परम आधार ॥ हवे इहां श्रुत आधार ठे रे, अहो  
 जिनमुडा सारो रे ॥ वीर० ॥ ७ ॥ त्रण कालें सवि  
 जीवनें रे, आगमथी आणंद ॥ सेवो ध्यावो नवि  
 जना रे, जिनपडिमा सुखकंदो रे ॥ वीर० ॥ ८ ॥  
 गणधर आचारज मुनि रे, सद्धुने इणी परें सिद्ध ॥  
 नव नव आगम संगथी रे, देवचंड पद लीध रे ॥ ९ ॥

॥ अथ श्री गौतमस्वामीनो रास प्रारंभः ॥

॥ वीर जिणोसर चरणकमल, कमला कयवासो ॥ प  
 णमवि पज्जणि सुसामिसाल, गोयम गुरु रासो ॥ मणु  
 तणु वणय एकंत करवि, निसुणो जो नवियां ॥ जिम नि  
 वसे तुम्ह देह गेह, गुण गण गहगहिया ॥ १ ॥ जंबूदीव  
 सिरिजरह खित्त, खोणीतल मंमण ॥ मगधदेस सेणिय  
 नरेस, रिउदल बल खंमण ॥ धणवर गुवर गाम  
 नाम, जिहां गुणगणसङ्का ॥ विप्प वसे वसुजूइ त  
 ड, जसु पुहवी नङ्का ॥ २ ॥ ताण पुत्त सिरि इंद  
 नूइ, नूवल्लय प्पसिद्धो ॥ चउदह विद्या विविह रूव,  
 नारीरस लुद्धो ॥ विनय विवेक विचार सार, गुण  
 गणह मनोहर ॥ सात हाथ सुप्रमाण देह, रूवहिं  
 रंजावर ॥ ३ ॥ नयण वयण कर चरण जिणवि,  
 पंकजाल पाडिय ॥ तेजें ताराचंद सूर, आका

सं जमाडिय ॥ रूवें मयण अनंग करवि, मेढ्हि  
 उं निर धाडिय ॥ धीरम मेरु गंजीर सिंधु, चंगम  
 चयचाडिय ॥ ४ ॥ पेखवि निरुवम रूव जास, जिण  
 ऊंपे किंचिय ॥ एकाकी किल नीत इठ, गुण मेढ्हा  
 संचिय ॥ अहवा निचें पुव जम्म, जिणवर इण अं  
 चिअ ॥ रंजा पञ्जमा गवरी गंगा, रतिहा विधि वंचिय  
 ॥ ५ ॥ नहिं बुध नहिं गुरु कवि न कोइ, जसु आ  
 गल रहिउं ॥ पंचसया गुणपात्र ठात्र, हींमे परवरि  
 उं ॥ करय निरंतर यज्ञकर्म, मिथ्यामति मोहिय ॥ ६  
 ॥ ए ठल होसे चरम नाण, दंसणह विसोहिय ॥ ६ ॥  
 ॥ वस्तु ॥ जंबूदीवह जंबूदीवहनरह वासंमि, खोणीतल  
 मंमणो ॥ मगध देस सेणिय नरेसर, धण वरगुब्बर गा  
 तिहां ॥ विप्प वसे वसुनूइ सुंदर, तसु नज्जा पुहवी  
 सयल, गुण गण रूव निहाण ॥ ताण पुत्त विद्यानि  
 लउं, गोयम अतिहि सुजाण ॥ ७ ॥ नरपा ॥ चरम  
 जिणेसर केवलनाणी, चउव्हिह संघपइछा जाणी ॥  
 पावापुर सामी संपत्तो, चउव्हिह देवनिकायें जुत्तो  
 ॥ ८ ॥ देवें समवसरण तिहां कीजें, जिण दीठे मि  
 थ्यामति ठीजें ॥ त्रिचुवनगुरु सिंहासण बइछो, तत  
 खिण मोह दिगंतें पइछो ॥ ९ ॥ क्रोध मान माया  
 मद पूरा, जाये नाठा जिम दिन चोरा ॥ देवडंडहि  
 आकासें वाजी, धर्म नरेसर आव्यो गाजी ॥ १० ॥  
 कुसुमवृष्टि विरचे तिहां देवा, चोसठ इंडज मागे  
 सेवा ॥ चामर ठत्र सिरोवरि सोहे, रूपें ते जिणवर

जग सद्गु मोहें ॥ ११ ॥ उवसम रस नर नरी वरसं  
ता, जोजन वाणी वखाण करंता ॥ जाणवि वर्द्धमा  
ण जिण पाया, सुर नर किन्नर आवे राया ॥ १२ ॥  
कंतिसमूहें जलजलकंता, गयण विमाणें रण रणकं  
ता ॥ पेखवि इंदनूइ मन चिंते, सुर आवे अम ज  
गन होवेंते ॥ १३ ॥ तीर अरुंमक जिम ते वहता,  
समवसरण पुहता गह गहता ॥ तो अजिमानें गोथ  
म ऊंपे, इणि अवसरें कोपें तणु कंपे ॥ १४ ॥ मूढा  
लोक अजाणिउं बोले, सुर जाणंता इम कांइ मोले ॥  
मू आगल कोइ जाण जणीजें, मेरु अवर किम उप  
मा दीजें ॥ १५ ॥ वस्तु ठंद ॥ वीर जिणवर वीर  
जिणवर नाण संपन्न ॥ पावा पुरिसुर महिय, पत्तना  
ह संसार तारण ॥ तिहिं देवेहिं निम्मविय समवरा  
रण बहु सुख कारण ॥ जिणवर जग उद्योय करे,  
तेजें करि दिनकार ॥ सिंहासण सामिय ठविउं, दुउं  
सुजय जयकार ॥ १६ ॥ जाया ॥ तो चढिउं घण  
माण गजें, इंदनूइ नूयदेव तो ॥ हुंकारो करी संच  
रिउं, कवण सुजिणवर देव तो ॥ जोजन नूमि स  
मोसरण, पेखवी प्रथमारंन तो ॥ दह दिसि देखे वि  
बुधवधू, आवंती सुररंन तो ॥ १७ ॥ मणिमय तो  
रण दंम धजा, कोसीसैं नव घाट तो ॥ वैर विवर्जि  
त जंतुगण, प्रातिहारज आव तो ॥ सुर नर किन्नर  
असुरवर, इंड इंडाणी राय तो ॥ चित्त चमक्किय चिं  
तवे ए, सेवतां प्रभुपाय तो ॥ १८ ॥ सहसकिरण सम

वीर जिण, पेखवी रूप विशाल तो ॥ एह असंजव  
 संजव ए, साचो ॥ इंदजाल तो ॥ तो बोलावे त्रिजग  
 गुरु, इंदजूइ नामेण तो ॥ श्रीमुख संसाय सामि सवे,  
 फेडे वेदपण तो ॥ १९ ॥ मान मेळिह मद ठेलि  
 करे, जगतें नामें सीस तो ॥ पंचसयासुं व्रत लियो  
 ए, गोयम पहिलो सीस तो ॥ बंधव संजम सुणवि  
 करे. अगनि चुइ आवेइ तो ॥ नाम लेइ आजास करे,  
 तं पुण प्रतिबोधेइ तो ॥ २० ॥ इणि अनुक्रमें गण  
 हररण, थाप्या वीर इग्यार तो ॥ तो उपदेशे चु  
 वन गुरु, संयमसुं व्रत बार तो ॥ बिहु उपवासें पा  
 रणुं ए, आपणपें विहरंत तो ॥ गोयम संयम जग  
 सयल, जय जयकार करंत तो ॥ २१ ॥ वस्तु ठेद ॥  
 इंदजूइ इंदजूइ चढिय बहुमान ॥ हुंकारो करि संच  
 रिउं, समवसरण पुहतो तुरंतो ॥ इह संसा सामि  
 सवे, चरमनाह फेडे फुरंतो ॥ बोधबीज सज्जाय मने,  
 गोयम जवह विरत्त ॥ दिस्क लेइ सिस्का सहिय, ग  
 णहर पय संपत्त ॥ २२ ॥ जाषा ॥ आज हुउं सुविहा  
 ण, आज पचेलिमां पुस जरो ॥ दीठा गोयम सामि,  
 जो नियनयणें अमिय जरो ॥ सिरिगोयम गणधार,  
 पंचसया मुनि परवरिय ॥ नूमिय करय विहार, ज  
 वियां जन पडिबोह करे ॥ समवसरण मजार, जे जे  
 संसा उपजे ए ॥ ते ते पर उपगार, कारण पूढे मुनि  
 पवरो ॥ २३ ॥ जिहां जिहां दीजें दिस्क, तिहां तिहां  
 केवल उपजे ए ॥ आप कन्हे अण हुंत, गोयम दीजें

दान इम ॥ गुरु ऊपर गुरुनत्ति, सामी गोयम उप  
 नीय ॥ अण चल केवल नाण, रागज राखे रंग नरें  
 ॥ १४ ॥ जो अष्टापद शैल, वंदे चढि चउवीस जि  
 ण ॥ आतम लब्धि वसेण, चरमसरीरी सोइ मुनि ॥  
 इअ देसण निसुणेइ, गोयम गणहर संचलिउ ॥  
 तापस पन्नरसएण, तो मुनि दीगो आवतो ए ॥  
 ॥ १५ ॥ तवसोसिय निय अंग, अम्ह सक्ति नवि  
 ऊपजे ए ॥ किम चढो दृढकाय, गज जिम दीसे गा  
 जतो ए ॥ गिरुउ ए अजिमान, तापस जो मन चिं  
 तवे ए ॥ तो मुनि चढिउ वेग, आलंबवि दिनकर  
 किरण ॥ १६ ॥ कंचण मणि निप्पन्न, दंम कलस  
 धज वड सहिय ॥ पेखवि परमाणंद, जिणहर नर  
 हेसर महिअ ॥ निय निय काय प्रमाण, चिहुंदिसि  
 संठिय जिणहबिंब ॥ पणमवि मन उल्लास, गोयम  
 गणहर तिहां वसिय ॥ १७ ॥ वयर सामीनो जीव,  
 तिर्यक जुंनक देव तिहां ॥ प्रतिबोधे पुंमरिक, कंमरिक अ  
 ध्ययन नणी ॥ वलता गोयम सामि, सवि तापस प्रति  
 बोध करे ॥ लेइ आपणे साथ, चाले जिम जूयाधिपति  
 ॥ १८ ॥ खीर खंम घृत आणि, अमिअ वूठ अंगूठ ठवे ॥  
 गोयम एकण पात्र, करावे पारणुं सवे ॥ पंचसया सुज  
 नाव, उल्लल नरिउ खीरमीसें ॥ साचा गुरुसंजोग,  
 कवल ते केवल रूप दुआ ॥ १९ ॥ पंचसया जिण  
 नाह, समवसरण प्राकार त्रय ॥ पेखवि केवल नाण,  
 उप्पन्नो उल्लोय करे ॥ जाणे जिणह पीयूष, गाजंती

घण मेघ जिम ॥ जिणवाणी निसुणेइ, नाणी हूआ  
 पंचसया ॥ ३० ॥ वस्तु ठंद ॥ इण अनुक्रमें इण  
 अनुक्रमें नाण संपन्न ॥ पन्नरह सय परवरिय हरिय  
 डुरिय जिणनाह वंदे ॥ जाणवि जगगुरु वयण तिह  
 नाण अप्पाण निंदे ॥ चरम जिणेसर इम जणे. गो  
 मय म करिस खेउ ॥ ठेह जई आपण सदी, होसुं  
 तुह्वा बेउ ॥ ३१ ॥ जाणा ॥ सामिउं ए वीर जिणंद,  
 पूनिम चंद जिम उल्लसिअ ॥ विहरिउं ए जरवासम्मि,  
 वरिस बहुत्तर संवसिअ ॥ उवतो ए कणय पउमेण,  
 पाय कमल संघे सहिअ ॥ आविउं ए नयणाणंद,  
 नयर पावापुरिसुर महिय ॥ ३२ ॥ पेखिउं ए गोयम  
 सामी, देवशर्मा प्रतिबोध करे ॥ आपणो ए त्रिशला  
 देवि, नंदन पढोतो परम पए ॥ चलतो ए देव आ  
 कास, पेखवि जाण्यो जिणसमे ए ॥ तो मुनि ए  
 मन विखवाद, नाद जेद जिम उपनो ए ॥ ३३ ॥  
 इण समे ए सामिय देखि, आप कन्हे हुं टालिउं  
 ए ॥ जाणंतो ए तिहुअण नाह, लोक विवहार न  
 पालिउं ए ॥ अति जलुं ए कीधलुं सामि, जाणिउं  
 केवल मागरो ए ॥ चिंतविउं ए बालक जेम, अहवा  
 केडे लागरो ए ॥ ३४ ॥ हुं किम ए वीर जिणंद,  
 जगतें जोलो जोलव्यो ए ॥ आपणो ए अविहल  
 नेह, नाह न संपे साचव्यो ए ॥ साचो ए इह वीत  
 राग, नेह न जेणें लालिउं ए ॥ इण समे ए गोयम  
 चित्त, राग वैरागें वालिउं ए ॥ ३५ ॥ आवतो ए



जो जलट, रहेतो रागें साहिउ ए ॥ केवलु ए नाण  
उप्पन्न, गोयम सेहेजें उमाहिउ ए ॥ तिहुअण ए  
जय जयकार, केवल महिमा सुर करे ए ॥ गणहरु  
ए करय वखाण, नवियण नव जिम निस्तरु ए ॥  
॥ ३६ ॥ वस्तु ठंद ॥ पढम गणहर पढम गणहर  
वरस पंचास, गिहिवासें संवसिय ॥ तीस वरिस  
संजम विनूसिय ॥ सिरिकेवल नाण पुण बार वरिस  
तिहुअण नमंसिय ॥ रायगिरि नयरीहिं ठविअ बाण  
वइ वरिसान ॥ सामी गोयम गुण निलो होसे शिवपुर  
ठाउ ॥ ३७ ॥ जापा ॥ जिम सहकारें कोयल टढुके,  
जिम कुसुमवनें परिमल महके, जिम चंदन सुगंध  
निधि ॥ जिम गंगाजल लहेरें लहके, जिम कणया  
चल तेजें जलके ॥ तिम गोयम सोजागनिधि ॥ ३८ ॥  
जिम मानसरोवर निवसे हंसा, जिम सुरवर सिरि  
कणयवतंसा, जिम महुयर राजीववनी ॥ जिम रय  
णायर रयणें विलसे, जिम अंबर तारागण विकसे,  
तिम गोयम गुण केलि बनी ॥ ३९ ॥ पूनिम निसि  
जिम ससिहर सोहे, सुरतरु महिमा जिम जग मोहे,  
पूरव दिसि जिम सहसकरो ॥ पंचानन जिम गिरि  
वर राजे, नरवइ घर जिम मयगल गाजे, तिम जिन  
शासन मुनि पवरो ॥ ४० ॥ जिम सुरतरुवर सोहे  
शाखा, जिम उत्तम मुख मधुरी नाखा, जिम वनके  
तकी महमहे ए ॥ जिम नूमिपति जुयबल चमके,  
जिम जिनमंदिर घंटा रणके, तिम गोयमलब्धें गह

गहे ए ॥ ४१ ॥ चिंतामणि कर चढिउ आज, सुर  
 तरु सारे वंठिय काज, कामकुंज सवि वश हुउ ए ॥  
 कामगवी पूरे मनकामिय, अष्ट महासिद्धि आवे धा  
 मिय, सामिय गोयम अणुसरो ए ॥ ४२ ॥ पणव  
 स्कर पहेलो पनणीजें, मायाबीज श्रवण निसुणीजें,  
 श्रीमती शोभा संजवो ए ॥ देवह धुरि अरिहंत नमीजें,  
 विनयपदु उवप्राय शुणीजें, इण मंत्रें गोयम नमो  
 ए ॥ ४३ ॥ पुर पुर वसतां कांइ करीजें, देश देशां  
 तर कांइ नमीजें, कवण काज आयास करो ॥ प्रह  
 ऊठी गोयम समरीजें, काज समगल ततग्विण सीजे,  
 नवनिधि विलसे तास घरे ॥ ४४ ॥ चटदह सय  
 बारोत्तर वरसैं, गोयम गणहर केवल दिवसैं, किउं  
 कवित उपगार करो ॥ आदिहिं मंगल एह पनणीजें,  
 परव महोत्तव पहिलो लीजें, रुद्धि वृद्धि कछाण  
 करो ॥ ४५ ॥ धन माता जिणें उयसैं धरिया, धन  
 पिता जिण कुल अवतरिया, धन सहगुरु जिण दि  
 रकिया ए ॥ विनयवंत विद्याचंमार, जस गुण कोइ  
 न लपे पार, वड जिम साखा विस्तरो ए ॥ ४६ ॥  
 गौतमस्वामीनो रास नणीजें, चउव्विह संघ रलिया  
 यत कीजें, सयल संघ आणंद करो ॥ कुंकुम चंदन  
 ढडो देवरावो, माणक मोतीना चोक पुरावो, रयण  
 सिंहासण बेसणुं ए ॥ ४७ ॥ तिहां बेसी गुरु देसना  
 देसे, नविक जीवनां काज सरीसे ॥ उदयवंत मुनि  
 इम नणो ए ॥ गौतमस्वामी तणो ए रास, नणतां

( ९९ )

सुणतां लील विलास ॥ सासय सुख निधि संपजे  
ए ॥ ४७ ॥ एह रास जे नणे नणावे, वर मयगल  
लह्मी घर आवे ॥ मनवंठित आशा फले ए ॥ ४८ ॥  
इति श्री गौतमस्वामीनो रास संपूर्ण ॥ ५० ॥

अथ श्रीमद्यशोविजयजी उपाध्याकृत श्री  
वीश विहरमानजिन स्तवन प्रारंभः ॥

तत्र प्रथम

श्री सीमंधरजिन स्तवनं

॥ इमर आंबा आंबली रे ॥ ए देशी ॥

॥ पुस्कलवऽ विजयें जयो रे, नयरी पुंमरीगिणि  
सार ॥ श्री सीमंधर साहिबा रे, राय श्रेयांस कुमार  
॥ जिणंदराय धरजो धर्म सनेह ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥  
मोहोटा नाहना आंतरो रे, गिरुआ नवि दाखंत ॥  
शशि दर्शन सायर वधे रे, कैरव वन विकसंत ॥  
॥ जि० ॥ २ ॥ ठाम कुठाम नवि लेखवे रे, जग वर  
संत जलधार ॥ कर दोऽ कुसुमें वासीयें रे, ठाया  
सवि आधार ॥ जि० ॥ ३ ॥ राय रंक सरिखा गणे  
रे, उद्योतें शशि सूर ॥ गंगाजल ते बिहु तणो रे,  
ताप करे सवि दूर ॥ जि० ॥ ४ ॥ सरिखा सहुने  
तारवा रे, तिम तुम्हें ठो महाराज ॥ मुऊं अंतर  
किम करो रे, बांहे ग्रह्यानी लाज ॥ जि० ॥ ५ ॥  
मुख देखी टीलुं करे रे, ते नवि होय प्रमाण ॥ मु  
जरो माने सवि तणो रे, साहिब तेह सुजाण ॥ जि०

(१००)

॥ ६ ॥ वृषजलंढन माता सत्यकी रे, नंदन रुक्मिणी कंत ॥ वाचक जस इम वीनवे रे, जवजंजन जग वंत ॥ जिणंदराय धरजो धर्म सनेह ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री युगमंधर जिन स्तवनं ॥

॥ धणरा ढोला ॥ ए देशी ॥ श्री युगमंधर साहिवा रे, तुमहुं अविहड रंग ॥ मनना मान्या ॥ चोल मजीठ तणी परें रे, ते तो अचल अजंग ॥ गुणना गेहा ॥ १ ॥ जविजन मन त्रांबूं करे रे, वेधक कंचन वान ॥ म० ॥ फरि त्रांबूं ते नवि होये रे, ते तुम नेह प्रमाण ॥ गु० ॥ २ ॥ एक उइक लव जिम जय्यो रे, अखय जलधिमां होय ॥ म० ॥ तिम तुमहुं गुण नेहलो रे, तुम सम जग नहिं कोय ॥ गु० ॥ ३ ॥ तुमहुं मुऊ मन नेहलो रे, चंदन गंध समान ॥ म० ॥ मेल हुउं ए मूलगो रे, सहज स्वजाव निदान ॥ गु० ॥ ४ ॥ विप्र विजय विजयापुरी रे, मात सुतारा नंद ॥ म० ॥ गजलंढन प्रिय मंगला रे, राणी मन आणंद ॥ गु० ॥ ५ ॥ सुट्ट राय कुल दिनमणि रे, जयो जयो तुं जिनराज ॥ म० ॥ श्रीनय विजय विबुध तणो रे, शिष्यनें दियो शिवराज ॥ गु० ॥ ६ ॥

॥ अथ श्री बाहुजिन स्तवनं ॥

॥ नणदलनी देशी ॥ साहिब बाहुजिनेसर वीन बुं, वीनतडी अवधार हो ॥ साहिब जवजयथी हुं उन्नयो, हवे जव पार उतार हो ॥ सा० ॥ १ ॥ सा० ॥ तुम सरिखा मुऊ शिर ठते, कर्म करे केम जोर

हो ॥ सा० ॥ जुजंग तणो जय तिहां नहीं, जिहां  
 वन विचरे मोर हो ॥ सा० ॥ १ ॥ सा० ॥ जिहां  
 रवि तेजें ऊज हले, तिहां किम रहे अंधकार हो ॥  
 ॥ सा० ॥ केशरी जिहां क्रीडा करे, तिहां नहिं गज  
 नो प्रचार हो ॥ सा० ॥ ३ ॥ सा० ॥ तिम जो तुमें  
 मुऊ मन रमो, तो नासे डुरित संसार हो ॥ सा० ॥  
 वल्लविजय सुसिमा पुरी, राय सुग्रीव मल्हार हो ॥  
 ॥सा०॥ ४ ॥ सा० ॥ हरिण लंढन इम में स्तव्यो, मो  
 हना राणीनो कंत हो ॥ सा० ॥ विजया रे नंदन मुऊ  
 दीयो, जस कहै सुख अनंत हो ॥ सा० ॥ ५ ॥ इति॥

॥ अथ श्री सुबाहुजिन स्तवनं ॥

॥ चतुर सनेही मोहना ॥ ए देशी ॥ स्वामी सुबा  
 हु सुहंकरु, जूनंदामंदन प्यारो रे ॥ निसद नरेसर  
 कुलतिलो, किंपुरुषानो जरतारो रे ॥ स्वा० ॥ १ ॥  
 कपि लंढन नलिनावती, विप्रविजय अयोध्यानाहो  
 रे ॥ रंगें मिलिएं तेहगुं, एह मणुअ जनमनो लाहो  
 रे ॥ स्वा० ॥ २ ॥ ते दिन सवि एलें गया, जिहां प्रभु  
 गुं गोठ न बांधी रे ॥ जक्ति दूतिकाएं मन हस्युं, पण  
 वात कही ठे आधी रे ॥ स्वा० ॥ ३ ॥ अनुजव  
 मित्त जो मोकलो, तो ते सघली वात जणावे रे ॥  
 पण तेह विण मुऊ नवि सरे, कहो तो पुत्र विचार  
 ते आवे रे ॥ स्वा० ॥ ४ ॥ तेणे जइ वात सवे कही,  
 प्रभु मळ्या ते ध्यानने टाणो रे ॥ श्री नयविजय विबु  
 ध तणो, इम सेवक सुजस वखाणो रे ॥ स्वा० ॥ ५ ॥ इति॥

॥ अथ श्री सुजातजिन स्तवनं ॥

॥ रामचंद्रके बाग, चांपो महोरी रह्यो री ॥ ए देश ॥

॥ साचो स्वामी सुजात, पूरव अरध जयो री ॥  
धातकी खंम मजार पुस्कलवइ विजयो री ॥ १ ॥  
नयरी पुंमरीणिणिनाथ, देवसेन वंश तिलो री ॥ देव  
सेनानो पुत्र, लंठन जानु नलो री ॥ २ ॥ जयसेनानो  
कंत, तेहखुं प्रेम धख्यो री ॥ अवर न आपो दाय,  
तेणें वश चित्त कख्यो री ॥ ३ ॥ तुमें गत जाणो दूर,  
जइ परदेश रह्यो री ॥ ४ ॥ मुऊ चित्त हजूर, गुण संके  
त ग्रह्यो री ॥ ४ ॥ उगे जानु आकाश, सरवर कम  
ल हस्यो री ॥ देखी चंद चकोर, पीवा अमिय धस्यो  
री ॥ ५ ॥ दूर थकी पण प्रेम, प्रभुखुं चित्त मिथ्यो  
री ॥ श्री नयविजय सुशिष्य, कहे गुण हेज हि  
त्यो री ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री स्वयंप्रज जिन स्तवनं ॥

॥ पारधीयानी देशी ॥ स्वामी स्वयंप्रज सुंदरु रे,  
मित्रनृपति कुल हंस रे ॥ गुण रसिया ॥ मात सुमंगला  
जनमीया रे, शशि लंठन सुप्रशंस रे ॥ मन वसिया  
॥ १ ॥ वप्र विजय विजया पुरी रे, धातकी पूरव  
अर्द्ध रे ॥ गुण ॥ प्रियसेना प्रियपुण्यथी रे, तुऊ सेवा में  
लख रे ॥ मण ॥ २ ॥ चाखवी समकित सूखडी रे,  
हेलवीयो हुं बाल रे ॥ गुण ॥ केवल रतन दिया वि  
ना रे, न तजुं चरण त्रिकाल रे ॥ मण ॥ ३ ॥ एकने  
ललचावी रहो रे, एकने आपो राज रे ॥ गुण ॥ ए तु

म करवो किम घटे रे, पंति चेद जिनराज रे ॥  
 ॥ म० ॥ ४ ॥ केड न ठांहुं ताहरी रे, आप्या विण  
 शिव सूख रे ॥ गु० ॥ नोजन विण जांजे नहीं रे,  
 नामणडे जिम नूख रे ॥ म० ॥ ५ ॥ आसंगाय  
 त जे दुशे रे, ते केहेसे सो वार रे ॥ गु० ॥ नोली  
 नगतें रीऊसे रे, साहिब पण निरधार रे ॥ म० ॥  
 ॥ ६ ॥ सवि जाणे थोडुं कहे रे, प्रभु तुं चतुर सुजा  
 ण रे ॥ गु० ॥ वाचक जस कहे दीजियें रे, वंठित  
 सुख निर्वाण रे ॥ म० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री कृष्णानन जिन स्तवनं ॥

॥ बन्धो रे कुंअरजीनो सेहरो ॥ ए देशी ॥

॥ श्रीकृष्णानन गुणनीलो, सोहे मृगपति लंठन पा  
 य हो ॥ जिणंद ॥ मोहे मन तुं जग तणां, नलि वीर  
 सेना तुज माय हो ॥ जिणंद ॥ १ ॥ श्री० ॥ वल्ल वि  
 जय सुसीमा पुरी, खंम धातकी पूरव जाग हो ॥ जि० ॥  
 राणी जयावती नाहलो, कीरति नृपसुत बडजाग  
 हो ॥ जि० ॥ १ ॥ श्री० ॥ हुं पूहुं कहो तुमें किणि परें, दीयो  
 नगतने मुगति संकेत हो ॥ जि० ॥ रुसो नहिं निं  
 दा कारणें, तुसो नहिं पूजिया हेत हो ॥ जि० ॥ २  
 ॥ श्री० ॥ समकित विण फल को नवि लहे, ए ग्रंथें ठे अव  
 दात हो ॥ जि० ॥ तोय शावासी तुमने चढे, तुमें  
 कहेवाउ जगतात हो ॥ जि० ॥ ४ ॥ श्री० ॥ हवे जाण्युं  
 मन वंठित दिये, चिंतामणिने सुरकुंन हो ॥ जि० ॥  
 अग्नि मिटावे शीतने, जे सेवे थइ थिरं थंन हो ॥ जि० ॥

५॥श्री०॥ जिम ए वस्तु गुण स्वभावथी, जिम तुमथी  
मुक्ति उपाय हो ॥ जि० ॥ दायक नायक ऊपमा,  
नक्ति इम साची कहाय हो ॥ जि० ॥ ६ ॥ श्री० ॥ तप जप  
किरिया जे फल दिये, ते तुम गुण ध्यान निमित्त  
हो ॥ जि० ॥ श्री नयविजय विबुध तणो, सेवकने  
परम तुं मित्त हो ॥ जि० ॥ ७ ॥ श्री० ॥ इति ॥

॥ अथ श्री अनंतवीर्य जिन स्तवनं ॥

॥ नारायणानी देशी ॥ जिम मधुकर मन मालती  
रे, जिम कुमुदिनी चित्त चंद रे ॥ जिणंदराय ॥ जि  
म गजमन रेवा नदी रे, कमला मन गोविंद रे ॥ जि०  
॥ १ ॥ त्र्युं मेरे मन तुं वस्यो रे ॥ जि० ॥ ए आंक  
णी ॥ चातक चित्त जिम मेहलो रे, जिम पंथी मन गे  
ह रे ॥ जि० ॥ हंसा मन मानसरोवर रे, तिम मुक्त  
तुक्तुं नेह रे ॥ जि० ॥ २ ॥ जिम नंदन वन इंद्रने रे,  
सीताने वालो राम रे ॥ जि० ॥ जिम धर्मी मन संव  
रु रे, व्यापारी मन दाम रे ॥ जि० ॥ ३ ॥ अनंत  
वीर्य गुण सागर रे, धातकी खंभ मजार रे ॥ जि० ॥  
पूर्व अर्थ नलिनावती रे, विजय अयोध्या धार रे ॥  
॥ जि० ॥ ४ ॥ मेघराय मंगलावती रे, सुत विजयाव  
ती कंत रे ॥ जि० ॥ गज लंठन योगीसर रे, जिम स  
मरुं महामंत रे ॥ जि० ॥ ५ ॥ चाहे चतुर चूडामणि  
रे, कविता अमृतनी केल रे ॥ जि० ॥ वाचक जस  
कहे सुख दीयो रे, मुक्त तुक्त गुण रंग रेल रे ॥ जि० ॥ ६



॥ अथ श्री सुरप्रज जिन स्तवनं ॥

॥ रामपुरा बाजारमां ॥ ए देशी ॥ सुर प्रज जिनवर  
धातकी, पञ्चिम अरधें जयकार ॥ मेरे लाल ॥ पुंस्क  
लवइ विजय सुहामणो, पुरी पुंमरीणिणी सिणगार ॥  
मेरे० ॥ १ ॥ चतुर शिरोमणि साहिबो ॥ ए आंक  
णी ॥ नंदसेनानो नाहलो, हय लंठन विजय मल्हा  
र ॥ मे० ॥ विजयवती कुम्हें ऊपनो, त्रिचुवननो आ  
धार ॥ मे० ॥ च० ॥ २ ॥ अलवे जस साहामुं जुए, क  
रुणानर नयन विलास ॥ मे० ॥ ते पामे प्रचुता जग  
तणी, एहवो ठे प्रचु सुख वास ॥ मे० ॥ च० ॥ ३ ॥  
मुख मढके जग जन वश करे, लोयण लटके हरे  
चित्त ॥ मे० ॥ चारित्र चटके पातक हरे, अटके नहिं  
करतो हित ॥ मे० ॥ च० ॥ ४ ॥ उवयारी शिर सेह  
रो, गुणनो नवि आवे पार ॥ मे० ॥ श्री नयविजय सुशि  
ष्यने, होजो नित मंगल माल ॥ मे० ॥ च० ॥ ५ ॥ इति

॥ अथ श्री विशाल जिन स्तवनं ॥

॥ लूहारीनी देशी ॥ धातकी खंमें हो के पञ्चिम अ  
रध जलो, विजया नयरी हो के वप्र ते विजयतिलो ॥  
तिहां जिन विचरे हो के स्वामी विशाल सदा, नित  
नित वंदूं हो के विमला कंत मुदा ॥ १ ॥ नाग नरेसर  
हो के वंश ऊद्योत करु, नशानो जायो हो के प्रत्यरु देव  
तरु ॥ जानु लंठन हो के मलवा मन तरसे, तस गुण  
सुणियें हो के श्रवण अमिय वरसे ॥ २ ॥ आंखडी  
दीधी हो के जो मुऊ होय मनने, पांखडी दीधी हो के

अथवा जो तनने ॥ मनह मनोरथ हो के तो सवि तु  
 रत फले, तुज मुख देखी हो के हरखने हेज मिजे ॥ ३ ॥  
 आडा मुंगर हो के दरिया नदीय घणी, शक्ति न  
 तेहवी हो के आवुं तुज नणी ॥ तुज पाय सेवा हो के  
 सुरवर कोडि करे, जो एक आवे हो के तो मुज डःख  
 हरे ॥ ४ ॥ अति घणुं राति हो के अगनि मजीठ स  
 हे, घणुं हणियें हो के देह वियांग लहे ॥ पण गिरु  
 आणुं हो के राग ते डरित हरे, वाचक जस कहे हो के  
 धरीयें चित्त खरे ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री वज्रंधर जिन स्तवनं ॥

॥ देशी बिंदलीनी ॥ शंख लंठन वज्रंधर स्वामी,  
 माता सरसती सुत शिवगामी हो, जावें नवि वंदो  
 ॥ नरनाथ पदमरथ जायो, विजयावती चित्त सुहायो  
 हो ॥ जा० ॥ १ ॥ खंम धातकी पछिम जागें, प्रभु  
 धरम धुरंधर जागे हो ॥ जा० ॥ वल्ल विजयमां नय  
 री सुसीमा, तिहां आपे धर्मनी सीमा हो ॥ जा० ॥  
 ॥ २ ॥ प्रभु मन अमें वसवुं जेह, स्वपने पण दुर्जन  
 तेह हो ॥ जा० ॥ पण अम मन जो प्रभु वसजे, तो  
 धर्मनी वेलि उल्लसजे हो ॥ जा० ॥ ३ ॥ स्वपने प्रमुखें  
 निरखंतां, अमें पामुं सुख हरखंता हो ॥ जा० ॥ जेह  
 स्वप्न रहित कह्या देवा, तेहथी अमें अधिक कहेवा  
 हो ॥ जा० ॥ ४ ॥ मणि माणिक कनकनी कोडी,  
 राणिम रुधि रमणी जोडी हो ॥ जा० ॥ प्रभु दर्शनना  
 सुख आगें, कहां अधिकेरुं कोण मागे हो ॥ जा० ॥ ५ ॥

॥ प्रभु दूरथकी पण जेठ्या, तेणे प्रेमें दुःख सवि मेठ्यां  
हो ॥ जा० ॥ गुरु श्रीनयविजय सुशिष्य, प्रभुध्यानें  
रमे निस दीश हो ॥ जा०॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री चंडानन जिन स्तवनं ॥

॥ माहारी सहीरे समाणी ॥ ए देशी ॥

॥ नलिनावती विजयें जगकारी, चंडानन उपकारी  
रे ॥ सुणो वीनती मोरी ॥ पढिय अरथें धातकी खंमें,  
नयरी अयोध्या मंमे रे ॥ सु०॥ १ ॥ राणी लीलाव  
ती चित्त मृहायो, पदमावतीनो जायो रे ॥ सु०॥ नृप  
वाल्मिककुलें तुं दीवो, वृषज लंढन चिरंजीवो रे ॥  
सु० ॥ २ ॥ केवलज्ञान अनंत खजानो, नहिं तुज  
जगमांहे ठानो रे ॥ सु० ॥ तेहनो लव देतांशुं नासे,  
मनमांहि कांइ विमासे रे ॥ सु० ॥ ३ ॥ रयण एक  
दिये रयणें चरियो, जो गाजंतो दरीयो रे ॥ सु० ॥  
तो तेहने कांइ हाणी न आवे, लोक ते संपत्ति पावे  
रे ॥ सु०॥ ४ ॥ अलि माचे परिमल लव पामी, पंक  
जवनें नहिं खामी रे ॥ सु० ॥ अंब लुंब कोडी नवि  
ठीजे, एके पिक सुख दीजें रे ॥ सु० ॥ ५ ॥ चंड  
किरण विस्तारे ठोबुं, नवि होय अमियमां ओबुं रे ॥  
सु० ॥ आशाजर करे बहुत निहोरा, ते होये सुखि  
त चकोरा रे ॥ सु० ॥ ६ ॥ तेम जो गुणलव दियो  
तुमें हेजें, तो अमें दीपूं तेजें रे ॥ सु० ॥ वाचक  
जस कहे वंढित देशो, धर्मनेह निर्वहेशो रे ॥ सु०॥ ७ ॥

॥ अथ श्रीचंद्रबाहुजिन स्तवनं ॥

॥ मन मोहना लाल ॥ ए देशी ॥ देवानंदन न  
 रिंदनो रे ॥ जन रंजना लाल ॥ नंदन चंदन वाण रे ॥  
 डख चंजना लाल ॥ राणी सुगंधा वातहो रे ॥ ज० ॥  
 कमल लंठन सुख खाण रे ॥ ड० ॥ १ ॥ पुस्कर दीन  
 पुस्कलावड रे ॥ ज० ॥ विजय विजय जयकारी रे ॥ ड०  
 ॥ चंद्रबाहु पुंमरीगिणी रे ॥ ज० ॥ नगरीयें करे विहा  
 र रे ॥ ड० ॥ २ ॥ तस गुणगण गंगाजलें रे ॥ ज० ॥  
 मुक्त मन पावन कीध रे ॥ ड० ॥ फरि ते मेलु किम  
 हुवे रे ॥ ज० ॥ अकरण नियम प्रसिद्ध रे ॥ ड० ॥ ३ ॥  
 अंतरंग गुण गोठडी रे ॥ ज० ॥ निश्चय समकित तेह रे  
 ॥ ड० ॥ विरला कोशक जाणशे रे ॥ ज० ॥ तेतो अग  
 म अठेह रे ॥ ड० ॥ ४ ॥ नागर जननी चातुरी रे ॥  
 ॥ ज० ॥ पामर जाणे केम रे ॥ ड० ॥ तिम कुण जाणे  
 सांझुं रे ॥ ज० ॥ अम निश्चय नय प्रेम रे ॥ ड० ॥ ५ ॥  
 स्वाद सुधानो जाणतो रे ॥ ज० ॥ लालित होय एक  
 दिन रे ॥ ड० ॥ पण अवसरें जो जे लहे रे ॥ ज०  
 ॥ ते दिन माने धन रे ॥ ड० ॥ ६ ॥ श्रीनय विजय  
 विबुद्ध तणो रे ॥ ज० ॥ सेवक कहे सुणो देव रे ॥  
 ड० ॥ चंद्रबाहु मुक्त दीजियें रे ॥ ज० ॥ निज पय  
 पंकज सेव रे ॥ डख० ॥ ७ ॥

॥ अथ श्री जुजंगजिन स्तवनं ॥

॥ महाविदेह क्षेत्र सोहामणुं ॥ ए देशी ॥ जुजं  
 ग देव नारें नजो, राय महाबलनंद ॥ लाल रे ॥ म

हिमा कुखें हंसलो, कमल लंठन सुखकंद ॥ लाल रे  
 ॥ जु० ॥ १ ॥ वप्र विजय विजया पुरी, करे विहार उहा  
 ह ॥ लाल रे ॥ पूरव अरधें पुस्करें, गंधसेनानो नाह  
 ॥ लाल रे ॥ जु० ॥ २ ॥ कागल लिखवो कारमो,  
 आवे जो डुर्जन हाथ ॥ लाल रे ॥ अण मलवुं डुरं  
 तरें, चित्त फिरे तुम साथ ॥ लाल रे ॥ जु० ॥ ३ ॥  
 किसी इसारत कीजियें, तुमें जाणो ठो जग नाव ला  
 ल रे ॥ साहिब जाण अजाणनें, साहामुं करे प्रस्ताव  
 ॥ लाल रे ॥ जु० ॥ ४ ॥ खिजमतमां स्वामी नहिं,  
 मेल न मनमां कोय ॥ लाल रे ॥ करुणा पूरण लोयणें,  
 साहामुं कांहि न जोय ॥ लाल रे ॥ जु० ॥ ५ ॥ आसंगो  
 मोहोटा तणो, कुंजर ग्रहेवो कान ॥ लाल रे ॥ वाचकज  
 स कहे वीनति, नक्ति वशें मुऊ मान ॥ लाल रे ॥ जु०

॥ अथ श्री ईश्वर जिनस्तवनं ॥

॥ किसके चेले किसके पूत ॥ ए देशी ॥ नृप ग  
 जसेन जशोदा मात, नंदन ईश्वर गुण अवदात ॥  
 स्वामी सेवीयें ॥ पुस्करवर पूर्वार्ध कल्ल, विजय सु  
 सीमा नयरी अल्ल ॥ स्वा० ॥ १ ॥ शशि लंठन प्रचु  
 करे रे विहार, राणी नशावतीनो जरतार ॥ स्वा० ॥  
 जे पामे प्रचुनो दीदार, धन धन ते नरनो अवतार  
 ॥ स्वा० ॥ २ ॥ धन ते तन जिन नमियें पाय, धन  
 ते मन जे प्रचु गुण ध्याय ॥ स्वा० ॥ धन जे जिहां  
 प्रचुना गुण गाय, धन ते वेला जब वंदन थाय ॥ स्वा०  
 ॥ ३ ॥ अण मिलवे उतकंठा जोर, मिलवे विरह तणो

नय सोर ॥ स्वा० ॥ अंतरंग मिलवेजी उहाय, शोक  
 विरह जिम दूर पलाय ॥ स्वा० ॥ ४ ॥ तुं माता तुं  
 बांधव मुळ, तुंही पिता तुज्जुं मुळ गुळ ॥ स्वा० ॥  
 श्रीनयविजय विबुधनो शिष्य, वाचक जस कहे पुरो  
 जगीश ॥ स्वा० ॥ ५ ॥

॥ अथ श्रीनमि प्रभुजिन स्तवनं ॥

॥ थारे माथे पंचरंगी फाग, सोनारो ठो  
 गलो मारुजी ॥ ए देशी ॥

॥ पुस्करवर पूरव अरध दिवाजे राजे रे ॥ साहि  
 बजी ॥ नलिनावती विजयें नयरी आयोऱ्या ठाजे  
 रे ॥ सा० ॥ प्रभु वीर नरेंसर वंश दिणेंसर ध्याइए  
 रे ॥ सा० ॥ सेना सुत साचो गुणगुं जाचो गाइए रे  
 ॥ सा० ॥ १ ॥ मोहनी मन वद्वज्ज दर्शन दुर्जन  
 जास रे ॥ सा० ॥ रवि चरण उपासी किरण विला  
 सी खास रे ॥ सा० ॥ नविजनमन रंजन भव चंज  
 न जगवंत रे ॥ सा० ॥ नेमिप्रभु वंदूं पाप निकंदूं तंत  
 रे ॥ सा० ॥ २ ॥ घर सुरतरु फलियो सुरमणि  
 मलियो हाथ रे ॥ सा० ॥ करि करुणा पूरी अघ  
 चूरी जग नाथ रे ॥ सा० ॥ अमिएं घन वूठा  
 वली तूठा सवि देव रे ॥ सा० ॥ शिवगामी पामी  
 जो में तुज पय सेव रे ॥ सा० ॥ ३ ॥ गंगाजलें  
 नाह्यो हुं उमाह्यो आज रे ॥ सा० ॥ गुरु संगति  
 सारी मुळ अवधारी लाज रे ॥ सा० ॥ मुह माग्या  
 जाग्या पूर्व पुण्य अंकूर रे ॥ सा० ॥ मन लीनो

कीनो तुऊ गुण प्रेम पमूर रे ॥ सा० ॥ ४ ॥ तुं  
दोलत दाता तुंहिज त्राता महाराज रे ॥ सा० ॥ न  
व सायर तारो सारो वंढित काज रे ॥ सा० ॥ डुख  
चूरण पूरण कीजें सयल जगीश रे ॥ सा० ॥ अरदास  
प्रकाशे श्रीनयविजय सुशिष्य रे ॥ सा० ॥ ५ ॥

॥ अथ श्री वीरसेनजिन स्तवनं ॥

॥ रूपननो वंश रयणायरु ॥ ए देशी ॥ पण्डित अ  
रथ पुंकर वरें, विजय पुस्कल वड दीपें रे ॥ नयरी  
पुंमरीगिणी विहरता, प्रभु तेजें रवि जीपे रे ॥ श्री  
वीरसेन सुहंकरु ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ जानुसेन नू  
मिपालनो, अंगज गजगति वंदो रे ॥ राजसेना मन  
वालहो, वृषज लंठन जिन चंदो रे ॥ श्री० ॥ २ ॥ म  
शि विण जे लिखुं तुऊ गुणें, अक्षर प्रेमना चित्तें रे ॥  
धोइएँ तिम तिम ऊघडे, जगति जलें तेह नित्त रे ॥  
श्री० ॥ ३ ॥ चक्रवर्ति मनें सुख धरे, रूपन कूटें ल  
खि नामो रे ॥ अधिकारें तुऊ गुण तेहथी, प्रगट हु  
आ ठाम ठामो रे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ निज गुण गुंथित  
तें करी, कीर्ति मोतिनी माला रे ॥ ते मुऊ कंठें आरोप  
तां, दीसे जाक ऊमाला रे ॥ श्री० ॥ ५ ॥ प्रगट हुए  
जिम जगतमां, शोना सेवक केरी रे ॥ वाचक जस  
कहे तिम करो, साहिब प्रीति घणोरी रे ॥ श्री० ॥ ६ ॥ इति

॥ अथ श्री महाजइजिन स्तवनं ॥

॥ लाठलदे मात मल्हार ॥ ए देशी ॥ देवरायनो  
नंद, माता उमा मनचंद ॥ आज हो राणी रे सूरि

कंताकंत सुहामणो जी ॥ १ ॥ पुस्कर पङ्क्तिम अर्ध,  
 विजय ते वप्र सुबद्ध ॥ आज हो नगरी रे विजयायें  
 विहरे गुणनिलो जी ॥ २ ॥ माहाजड् जिनराय, गय  
 लंठन जस पाय ॥ आज हो सोहे रे मोहे मन लट  
 काले लोयणें जी ॥ ३ ॥ तेहसुं मुऊ अति प्रेम, पर  
 सुर नमवा नेम ॥ आज हो रंजे रे छुख चंजे प्रभु  
 मुऊ ते गुणें जी ॥ ४ ॥ धर्मजोबन नवरंग, समकित  
 पाम्यो चंग ॥ आज हो लाखिणी लाडी हवे मुक्तिने  
 मेलशे जी ॥ ५ ॥ चरण धर्म अवदात, ते कन्यानो  
 तात ॥ आज हो माहारा रे प्रभुजीने ते ठे वश सदा  
 जी ॥ ६ ॥ श्रीनयविजय सुशिष्ट, जस कहे सुणो जगदी  
 श ॥ आज हो ताहरो रे हुं सेवक देव करो दयाजी ॥ ७ ॥

॥ अथ श्री देवजसाजिन स्तवनं ॥

॥ कुमरी रोवे अक्रंद करे ॥ ए देशी ॥ देवयशा  
 जिन राजीयो ॥ मनमोहन मेरे ॥ पुस्कर दीप मऊार  
 ॥ म० ॥ पङ्क्तिम अरध सोहामणो ॥ म० ॥ वढ विजय  
 संजार ॥ म० ॥ १ ॥ नयरी सुसीमा विचरता ॥  
 म० ॥ सर्वनूति कुलचंद ॥ म० ॥ शशि लंठन पदमा  
 वती ॥ म० ॥ वद्धन गंगानंद ॥ म० ॥ २ ॥ कटि  
 लीलायें केशरी ॥ म० ॥ ते हाखो गयो रान ॥ म० ॥  
 हाखो हिमकर तुऊ मुखें ॥ म० ॥ हजिय वळे नहिं  
 वान ॥ म० ॥ ३ ॥ तुऊ लोचनथी लाजिया ॥ म० ॥  
 कमल गयां जल मांदि ॥ म० ॥ अहिपति पाताळें  
 गयो ॥ म० ॥ जींत्यो ललित तुऊ बांदि ॥ म० ॥ ४ ॥



जीत्यो दिनकर तेजशुं ॥ म० ॥ फिरतो रहे ते आकाश  
 ॥ म० ॥ निंद न आवे तेहने ॥ म० ॥ जेह मन खेद  
 अन्यास ॥ म० ॥ ५ ॥ इम जीत्यो तुमें जगतने  
 ॥ म० ॥ हरि लियो चित्त रतन ॥ म० ॥ बंधु क  
 हावो जगतना ॥ म० ॥ ते किम होय उपमन ॥  
 ॥ म० ॥ ६ ॥ गति तुम्हें जाणो तुम तणी ॥ म० ॥  
 हुं सेवुं तुम्ह पाय ॥ म० ॥ शरण करे बलिया तणुं  
 ॥ म० ॥ जस कहे तस सुख थाय ॥ म० ॥ ७ ॥

॥ अथ श्री अजित वीर्यजिन स्तवनं ॥

॥ ए ठिमी किहां राखी ॥ ए देशी ॥

॥ राग धन्याश्री॥ दीवपुस्कर वर पञ्चिम अरधें, विज  
 य नलिनावइ सोहे ॥ नयरि अयोध्या मंमन स्वस्तिक,  
 लंठन जिन जगमोहे रे ॥ नविया अजितवीरिय जिन  
 वंदो ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ राजपाल कुल मुकुट नगी  
 नो, मातृकनीनिका जायो ॥ रत्नमाळा राणीनो वल्ल  
 न, प्रत्यक्ष सुरमणि पायो रे ॥ न० ॥ १ ॥ दुरिजनस्तुति  
 करिजें हुउ दूषण, हुए तस शोषण ईहा ॥ एहवा सा  
 हिवना गुण गाइ, पवित्र करुं हुं जीहा रे ॥ न० ॥ ३  
 ॥ प्रभु गुण गण गंगाजल नाही, कीयो करम मल दूर  
 ॥ स्नातक पद जिन जगति लहियें, चिदानंद नर पूर  
 रे ॥ न० ॥ ४ ॥ जे संसर्ग अजेदारोपें, समापति मुनि  
 माने ॥ ते जिनवर गुण शुणतां लहियें, ज्ञान ध्यान  
 लयताने रे ॥ न० ॥ ५ ॥ स्पर्शी ज्ञान इणि परें अनुज  
 वतां, देखीजें निज रूप ॥ सकल जोग जीवन ते पामी,

निस्तरीयें नवकूप रे ॥ ज० ॥ ६ ॥ शरण त्राण आ  
लंबन जिनजी, कोई नहीं तस तोले ॥ श्री नयविज  
य विबुध पय सेवक, वाचक जस इम बोले रे ॥ ज० ॥ ७ ॥

॥ अथ श्रीमद्यशोविजयजी उपाध्याय ॥

॥ कृत चोवीशजिन स्तुति प्रारंभः ॥

॥ तत्र ॥

॥ प्रथम श्री रूपनदेव जिन स्तवनं ॥

॥ महाविदेह क्षेत्र सोहामणो ॥ ए देशी ॥ जगजीव  
न जगवालहो, मरुदेवीनो नंद लाल रे ॥ मुख  
दीठे सुख उपजे, दर्शन अतिहि आनंद लाल रे ॥  
जग० ॥ १ ॥ आंखडी अंबुज पांखडी, अष्टमी शशि  
सम जाल लाल रे ॥ वदन ते शारद चंदलो, वाणी  
अतिहि रसाल लाल रे ॥ जग० ॥ २ ॥ लक्षण अंगें  
विराजता, अडहिय सहस उदार लाल रे ॥ रेखा कर  
चरणादिकें, अन्यंतर नहिं पार लाल रे ॥ जग० ॥ ३  
॥ इंदु चंद्र रवि गिरि तणा, गुण लइ घडियुं अंग ला  
ल रे ॥ जाग्य किदांथकी आवियुं, अचरिज एह उत्तं  
ग लाल रे ॥ जग० ॥ ४ ॥ गुण सघला अंगें कखा, दूर  
कखा सवि दोष लाल रे ॥ वाचक यशविजयें शुण्यो, देजो  
सुखनो पोष लाल रे ॥ जग० ॥ ५ ॥

॥ अथ श्री अजितजिन स्तवनं ॥

॥ निंडडी वेरण होइ रइ ॥ ए देशी ॥ अजित जि  
एंदशुं प्रीतडी, मुंज न गमे हो बीजानो संग के ॥ मा

लती फूलें मोहीयो, किम बेसे हो बावल तरु चंग के  
 ॥ अजित० ॥ १ ॥ गंगा जलमां जे रम्या, किम छिन्न  
 र हो रति पामे मराल के ॥ सरोवर जलधर जल विना,  
 नवि चाहे हो जग चातक बाल के ॥ अ० ॥ २ ॥  
 कोकिल कल कूजित करे, पामी मंजरि हो पंजरी  
 सहकार के ॥ उठां तरुवर नवि गमे, गिरुआशुं हो  
 होये गुणनो प्यार के ॥ अ० ॥ ३ ॥ कमलिनी दिन  
 कर कर ग्रहे, बली कुमुदिनी हो धरे चंदशुं प्रीत के ॥ गौ  
 री गिरीश गिरिधर विना, नवि चाहे हो कमला निज  
 चित्त के ॥ अ० ॥ ४ ॥ तिम प्रभुशुं मुज मन रम्युं, बीजा  
 शुं हो नवि आवे दाय के ॥ श्रीनयविजय विबुध त  
 णो, वाचक जस हो नित नित गुण गाय के ॥ अ० ॥ ५ ॥

॥ अथ श्री संजव जिन स्तवनं ॥

॥ मज मधुकर मोही रह्यो ॥ ए देशी ॥ संजव  
 जिन वर वीनती, अवधारो गुण ग्याता रे ॥ स्वामी  
 नहीं मुज खिजमतें, कदीय होशो फल दाता रे ॥  
 संजव० ॥ १ ॥ कर जोडी उजो रहूं, रात दिवस तुम  
 ध्यानो रे ॥ जो मनमां आणो नहीं, तो शुं कहियें  
 ठानो रे ॥ सं० ॥ २ ॥ खोट खजाने को नहीं, दी  
 जें वंछित दानो रे ॥ करुणा नजर प्रभुजी तणी, वा  
 धे सेवक वानो रे ॥ सं० ॥ ३ ॥ काल लबध नहिं  
 मति गणो, जाव लबध तुम हार्थे रे ॥ लडथडतुं प  
 ण गय बचुं, गाजे गयवर सार्थे रे ॥ सं० ॥ ४ ॥ दे

शो तो तुमही ननुं, बीजा तो नवि जाचूं रे ॥ वाचक  
यश कहे सांश्चुं, फलशो ए मुक्त साचूं रे ॥ सं० ॥ ५ ॥

॥ अथ श्रीअजिनंदन जिन स्तवनं ॥

॥ सुणजो हो प्रभु ॥ ए देशी ॥ दीठी हो प्रभु  
दीठी जग गुरु तुफ ॥ मूरति हो प्रभु, मूरति मोहन  
वेलडी जी ॥ मीठी हो प्रभु, मीठी तादरी वाणी ॥ लागे  
हो प्रभु, लागे जेसी सेलडी जी ॥ १ ॥ जाणुं हो प्रभु,  
जाणुं जन्म कयत्त ॥ जोवं हो प्रभु, जोवं तुम साथें  
मिढ्योजी ॥ सुरमणि हो प्रभु, सुरमणि पाम्यो हत्त ॥  
आंगणे हो प्रभु, आंगणे मुक्त सुरतरु फल्यो जी ॥ २ ॥  
जाग्यां हो प्रभु, जाग्यां पुण्य अंकूर ॥ माग्या हो प्रभु,  
मुह माग्या पासा ढव्याजी ॥ वूठा हो प्रभु, वूठा अमि  
रस मेह ॥ नाठा हो प्रभु, नाठा अशुन शुन दिन व  
ढ्याजी ॥ ३ ॥ नूख्यां हो प्रभु, नूख्यां मढ्यां घृत पूर  
॥ तरश्यां हो प्रभु, तरश्यां दिव्य उदक मिढ्यां जी ॥  
थाक्यां हो प्रभु, थाक्यां मिढ्या सुख पाल ॥ चाहतां  
हो प्रभु, चाहतां सजन हेजें हढ्या जी ॥ ४ ॥ दीवो  
हो प्रभु, दीवो निशाविन गेह ॥ साथी हो प्रभु, साथी  
थलें जलनौका मलि जी ॥ कलि जुगें हो प्रभु, कलि  
जुगें डुल्लहो मुक्त ॥ दरिसन हो प्रभु, दरिसन लहुं  
आशा फली जी ॥ ५ ॥ वाचक हो प्रभु, वाचक यश  
तुम दास ॥ वीनवे हो प्रभु, वीनवे अजिनंदन सुणो  
जी ॥ कहियें हो प्रभु, कहियें म देशो ठेह ॥ देजो हो  
प्रभु, देजो सुख दरिसण तणो जी ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीसुमति जिन स्तवनं ॥

॥ जांऊरीया मुनिवरनी देशी ॥ सुमति नाथ गुणगुं  
मिलीजी, वाधे मुऊ मन प्रीति ॥ तेल बिंडु जिम वि  
स्तरे जी, जलमांहे नलि रीति ॥ सोजागी जिनगुं  
लागो अविहलरंग ॥ १ ॥ सङ्गनगुं जे प्रीतडीजी,  
ठानी ते न रखाय ॥ परिमल कस्तूरी तणोजी, महि  
माहें महकाय ॥ सोजागी ॥ २ ॥ आंगलियें  
नविमेरु ढकायें, ठावडियें रवि तेज ॥ अंजलिमां  
जिम गंग न माहे, मुऊ मन तिम प्रभु हेज ॥ सो ॥  
॥ ३ ॥ दुउ ठिपे नहिं अधर अरुण, जिम खातां  
पानसुरंग ॥ पीवत नर नर प्रभु गुणप्याला, तिम मुऊ  
प्रेम अजंग ॥ सो ॥ ४ ॥ ढांकी इहु पलालगुं जी,  
न रहे लहि विस्तार ॥ वाचक यश कहे प्रभु तणोजी,  
तिम मुऊ प्रेम प्रकार ॥ सो ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री पद्मप्रज जिन स्तवनं ॥

॥ सहज सखूणा हो साधुजी ॥ ए देशी ॥ पद्म  
प्रज प्रभु जिन जइ अलगा रह्या, जिहांथी नावे छेखोजी  
॥ कागलने मशि तिहां नवि संपजे, न चले वाट विशेषो  
जी ॥ सुगुण सनेहा रे कदिय न वीसरे ॥ ए आंक  
णी ॥ १ ॥ इहांथी तिहां जइ कोइ आवे नही, जेह  
कहे संदेशो जी ॥ जेहनुं मिलवुं रे दोहिलुं तेहगुं, ने  
ह ते आप किलेशो जी ॥ सुगुण ॥ २ ॥ वीतरागगुं रे  
राग ते एकपखो, कीजें कवण प्रकारो जी ॥ घोडो  
दोडे रे साहेब वाजमां, मन नाणें असवारो जी ॥

सु० ॥३॥ साची नक्ति रे जावन रस कह्यो, रस होय  
तिहां दोय रीजेजी ॥ होडा होडें रे बिहुं रसरिजथी,  
मनना मनोरथ सीजे जी ॥ सु० ॥४॥ पण गुणवंता  
रे गोठें गाजियें, मोहोटा ते विश्रामजी ॥ वाचक यश  
कहे एहज आशरे, सुख जुहुं ठामो ठामजी ॥ सु० ॥५॥

॥ अथ श्रीसुपास जिन स्तवनं ॥

॥ लाठलदे मात मलार ॥ ए देशी ॥ श्री सुपा  
स जिन राज, तुं त्रिभुवन शिर ताज ॥ आज हो ठा  
जेरे ठकुराई, प्रभु तुज पद तणीजी ॥ १ ॥ दिव्य ध्व  
नि सुर कूल, चामर ठत्र शमूल ॥ आज हो राजे रे  
नामंमल, गाजे डुंडुनि जी ॥ २ ॥ अतिशय सहजना  
चार, कर्म खप्याथी अग्यार ॥ आज हो कीधा रे उ  
गणीशे, सुर गण नासुरें जी ॥ ३ ॥ वाणी गुण पां  
त्रीश, प्रातिहारज जगदीश ॥ आज हो राजे रे दी  
वाजे, ठाजे आठशुं जी ॥ ४ ॥ सिंहासन अशोक, वे  
ठामांहे लोक ॥ आज हो स्वामी रे शिवगामीरे, वा  
चक यश शुण्योजी ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री चंडप्रज जिन स्तवनं ॥

॥ धणरा ठोला ॥ ए देशी ॥ चंडप्रज जिन साहेबा  
रे, तुमें ठो चतुर सुजाण ॥ मनना मान्या ॥ सेवा  
जाणो दासनी रे, देशो पद निरवाण ॥ मनना मान्या ॥  
आवो आवोरे चतुर सुख नोगी, कीजें वात एकांत  
अनोगी, गुण गोठें प्रगटे प्रेम ॥ मनना मान्या ॥ १ ॥  
ए आंकणी ॥ उठुं अधिकुं पण कहे रे, आसंगागत

जेह ॥ म० ॥ आपे फल जे अण कहे रे, गिरुत सा  
 हेब तेह ॥ म० ॥ १ ॥ दीन कहा विण दानथी रे,  
 दातानी वाधे माम ॥ म० ॥ जल दीये चातक खी  
 जवी रे, मेघ दुआ तिणें श्याम ॥ म० ॥ ३ ॥ पीउ पीउ  
 करी तुमने जपुं रे, हुं चातक तुमें मेह ॥ म० ॥ एक  
 लहेरमां दुःख हरो रे, वाधे बमाणो नेह ॥ म० ॥ ४ ॥  
 मोडुं वहेलुं आपवुं रे, तो शी ढील कराय ॥ म० ॥ वाच  
 क यश कहे जग धणी रे, तुम तूठे सुख थाय ॥ म० ॥ ५ ॥

॥ अथ श्री सुविधि जिन स्तवनं ॥

॥ सुण मेरी सजनी रजनी न जावे रे ॥ ए देशी ॥  
 लघु पण हुं तुम मन नवि मावुं रे, जगगुरु तुमने  
 दिलमां लावुं रे ॥ कुणनें ए दीजें शाबासी रे, कहो  
 श्री सुविधि जिणंद विमासी रे ॥ १ ॥ ल० ॥ मुऊ  
 मन अणुमांहें नक्ति ठे जाजी रे, तेह दरीनो तुं ठे  
 माजी रे ॥ योगी पण जे वात न जाणो रे, तेह अ  
 चरिज कुणथी हुत टाणो रे ॥ २ ॥ ल० ॥ अथवा  
 थिरमांहि अथिरन मावे रे, मोहोटो गज दर्पणमां आवे  
 रे ॥ जेहने ते जे बुद्धि प्रकाशी रे, तेहने दीजें ए शा  
 बासी रे ॥ ३ ॥ ल० ॥ ऊर्ध्व मूल तरुअर अर्थ शाखा  
 रे, ठंद पुराणो एहवी ठे नाखा रे ॥ अचरिज वाले अ  
 चरिज कीधुं रे, नक्तें सेवक कारज सीधुं रे ॥ ४ ॥  
 ल० ॥ लाड करी जे बालक बोले रे, मातपिता मन  
 अमियने तोले रे ॥ श्री नयविजय विबुधनो शिशो  
 रे, यश कहे इम जाणो जगदीशो रे ॥ ५ ॥ ल० ॥

॥ अथ श्री शीतल जिन स्तवनं ॥

॥ अलि अलिकें कदि आवेगो ॥ ए देशी ॥ श्री शीतल जिन जेठियें, करी चोखूं नकें चित्त हो ॥ ते हथी कहो ठानुं किरयुं, जेहने सोंया तन मन वित्त हो ॥ श्री० ॥ १ ॥ दायक नामें ठे घणा, पण तुं सायर ते कूप हो ॥ ते बहु खजुवा तग तगे, तुं दिन कर तेजसरूप हो ॥ श्री० ॥ २ ॥ मोहोटी जाणी आ दखो, दालिइ नांजो जगतात हो ॥ तुं करुणावंत शिरोमणि, हुं करुणा पात्र विख्यात हो ॥ श्री० ॥ ३ ॥ अंतरजामी सवि जहो, अम मननी जे ठे वात हो ॥ मा आगल मोसालना, श्या वरणववा अ वदात हो ॥ श्री० ॥ ४ ॥ जाणो तो ताणो किरयुं, सेवा फल दीजें देव हो ॥ वाचक यश कहे ढीलनी, ए न गमे मुज मन टेव हो श्री० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री श्रेयांस जिन स्तवनं ॥

॥ कर्म न तूटें रे प्रणिया ॥ ए देशी ॥ तुमें बहु मित्री रे साहेबा, मारे तो मन एक ॥ तुम विण बीजो रे नवि गमे, ए मुज मोहोटी रे टेक हो ॥ श्री श्रेयांस कृपा करो ॥ १ ॥ मन राखो रे तुमें सवि तणां, पण किहां एक मलि जाउ ॥ ललचावो लख लोकने, शाथी सहेज न थाउ ॥ श्री० ॥ २ ॥ राग जरें जन मन रहो, पण तिहुं काल वैराग ॥ चित्त तुमारो रे समुझनो, कोय न पामे ताग ॥ श्री० ॥ ३ ॥ एवा शुं चित्त मेलव्युं, केलव्युं पहेलां न कांइ ॥ सेवक निपट अबूज ठे, निर्व



हेशो तुमें सांइ ॥ श्री० ॥ ४ ॥ नीरागीशुं रे किम मले,  
पण मलवानो एकंत ॥ वाचक यश कहे मुऊ मित्यो,  
नक्तें कामण तंत ॥ श्री० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री वासुपूज्य जिन स्तवनं ॥

॥ साहेबा मोतीडो हमारो ॥ ए देशी ॥ स्वामी  
तुमें कांइ कामण कीधुं, चित्तडुं अमारुं चोरी लीधुं ॥  
साहेबा वासुपूज्य जिणंदा, मोहना वासुपूज्य ॥ ए  
आंकणी ॥ अमें पण तुमशुं कामण करशुं, नक्ति ग्रही  
मन घरमां धरशुं ॥ साहेबा० ॥ १ ॥ मन घरमां  
धरीया घरशोजा, देखत नित्य रहेशो थिरथोजा ॥  
मन वैकुंठ अकुंठित नक्तें, योगी नांखे अनुभव युक्तें ॥  
सा० ॥ २ ॥ क्लेशों वासित मन संसार, क्लेश रहित  
मन ते नवपार ॥ जो विशुद्ध मनघर तुमें आव्या,  
प्रभु तो अमें नव निधि रुद्धि पाव्या ॥ सा० ॥ ३ ॥  
सात राज्ञ अलगा जइ बेठा, पण नगतें अम म  
नमां पेठा ॥ अलगाने वलगा जे रहेवुं, ते  
जाणा खड खड दुःख सहेवुं ॥ सा० ॥ ४ ॥ ध्या  
यक ध्येय ध्यान गुण एकें, नेद ठेद करशुं हवे टेकें ॥  
खीर नीर परें तुमशुं मलशुं, वाचक यश कहे हेजें  
हलशुं ॥ सा० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री विमल जिन स्तवनं ॥

॥ नमो रे नमो श्री शेत्रुंजा गिरिवर ॥ ए देशी ॥

॥ सेवो नविया विमल जिणोसर, दुद्धहा सङ्गन  
संगाजी ॥ एवा प्रभुनुं दरिसन लेवुं, ते आलसमांहे

गंगाजी ॥ सेवो० ॥ १ ॥ अवसर पामी आलस क  
रजो, ते मूरखमां पेहेलोजी ॥ नूरख्याने जेम घेवर देतां,  
हाथ न मांमे घेलोजी ॥ सेवो० ॥ २ ॥ जब अनंत  
मां दर्शन दीतुं, प्रभु एहवा देखाडेजी ॥ विकट ग्रंथ  
जे पोलि पोलियो, कर्म विवर उघाडेजी ॥ सेवो०  
॥ ३ ॥ तत्त्व प्रीति करि पाणी पाए, विमला लोके  
आंजी जी ॥ लोयण गुरु परमान्न दिए तव, जर्म ना  
खे सवि जांजी जी ॥ सेवो० ॥ ४ ॥ जर्म जागो तव  
प्रभुं प्रेमें, वात करुं मन खोजीजी ॥ सरल तणे जे  
हड्डे आवे, तेह जणावे बोलो जी ॥ सेवो० ॥ ५ ॥  
श्री नय विजय विबुध पय सेवक, वाचक यश कहे  
साचुंजी ॥ कोडि कपट जो कोइ दिखावे, तो प्रभु विण  
नहिं राचुंजी ॥ सेवो० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीअनंत जिन स्तवनं ॥

॥ साहेलडियां ॥ ए देशी ॥ श्री अनंत जिनहुं  
करो ॥ साहेलडियां ॥ चोल मजीठनो रंग रे ॥ गुण  
वेलडियां ॥ साचो रंग ते धर्मनो ॥ साहेलडियां ॥ बीजो  
रंग पतंगरे ॥ गुण वेलडियां ॥ १ ॥ धर्म रंग जीरण  
नही ॥ सा० ॥ देह ते जीरण थाय रे ॥ गु० ॥ सोनुं  
ते विणसे नहिं ॥ सा० ॥ घाट घडामण जाय रे  
॥ गु० ॥ १॥ ॥ त्रांबुं जे रस वेधिउं ॥ सा० ॥ ते होय जाचुं  
हेम रे ॥ गु० ॥ फरि त्रांबुं ते नवि हुए ॥ सा० ॥  
एहेवो जग गुरु प्रेम रे ॥ गु० ॥ ३ ॥ उत्तम गुण  
अनुरागथी ॥ सा० ॥ लहियें उत्तम ठाम रे ॥ गु० ॥

उत्तम निज महिमा वधे ॥ सा० ॥ दीपे उत्तम  
धाम रे ॥ गु० ॥ ४ ॥ उदक बिंदु सायर नल्यो ॥  
सा० ॥ जिम होय अखय अचंग रे ॥ गु० ॥ वाचक  
यश कहे प्रभु गुणें ॥ सा० ॥ तिम मुऊ प्रेम प्रसंग  
रे ॥ गु० ॥ ५ ॥

॥ अथ श्री धर्मनाथ जिन स्तवनं ॥

॥ बेडले नारघणो ठे राज, थांता केम करो ठो ॥ ए देशी ॥

॥ थाशुं प्रेम बन्यो ठे राज, निरवहेसो तो लेखे ॥  
में रागी थें ठो नीरागी, अण जुडते होये हांसी ॥ एक  
पखो जे नैह निवहिशो, तेहमां शी साबाशी ॥ थां०  
॥ १ ॥ नीरागी सेवे कांइ होवे, इम मनमां नवि आ  
णुं ॥ फले अचेतन पण जिम सुरमणि, तिम तुम  
नक्ति प्रमाणुं ॥ था० ॥ २ ॥ चंदन शीतलता उपजावे,  
अग्नि ते शीत मिटावे ॥ सेवकनां तिम दुख गमावे,  
प्रभु गुण प्रेम स्वनावें ॥ था० ॥ ३ ॥ व्यसन उदय  
जे जलधि अणु हरे, शशीनुं तेज संबंधें ॥ अणुसंबंधें  
कुमुद अणु हरे, शुद्ध स्वनाव प्रबंधे ॥ था० ॥ ४ ॥ देव  
अनेरा तुमथी ठोटा, थें जगमां अधिकेरा ॥ यश कहे  
धर्म जिनेश्वर थाशुं, दिल मान्या हें मेरा ॥ था० ॥ ५ ॥

॥ अथ श्री शांतिनाथ जिन स्तवनं ॥

॥ रह्यो रे आवास डुवार ॥ ए देशी ॥ धन दिन  
वेला धन घडि तेह, अचिरारो नंदन जिन जदि ने  
टशुंजी ॥ लहिशुं रे सुख देखी मुखचंद, विरह व्य  
थानां दुःख सवि मेटशुं जी ॥ १ ॥ जाण्यो रे जेणें तुऊ

गुण लेश, बीजा रे रस तेहने मन नवि गमे जी ॥  
 चारव्यो रे जेणें अमिलवलेश, बाकश बुकश तस न  
 रुचे किमे जी ॥ १ ॥ तुऊ समकित रस स्वादनो  
 जाण, पाप कुनकें बहु दिन सेवीयुं जी ॥ सेवे जो  
 कर्मने जोगें तोहि, वांढे ते समकित अमृत धुरे लिख्युं  
 जी ॥ २ ॥ ताहरुं ध्यान ते समकित रूप, तेहज झा  
 न ने चारित्र तेहज ठेजी ॥ तेहथी रे जाए सघलां  
 पाप, ध्याता रे ध्येय स्वरूप होय पठें जी ॥ ३ ॥ दे  
 खी रे अदभुत ताहरुं रूप, अचरिज नविक अरूपी  
 पद वरे जी ॥ ताहरी भत तुं जाणे देव, स्मरण न  
 जन ते वाचक यश करे जी ॥ ४ ॥ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री कुंथुनाथ जिन स्तवनं ॥

॥ साहेलां हे ॥ ए देशी ॥ साहेलांहे ॥ कुंथु जिने  
 श्वर देव, रत्न दीपक अति दीपतो हो लाल ॥ सा० ॥  
 मुज मन मंदिरमांहि, आवे जो अरिबल फीपतो हो  
 लाल ॥ १ ॥ सा० ॥ भिटे तो मोह अंधार, अनु  
 नव तेजें जल हल्ले हो लाल ॥ सा० ॥ धूम कषाय  
 न रेख, चरण चित्रामण नवि चले हो लाल ॥ २ ॥  
 ॥ सा० ॥ पात्र करे नहिं हेठ, सूर्य तेजें नवि ठिपे हो  
 लाल ॥ सा० ॥ सर्व तेजनुं तेज, पहेलांथी वाधे पठें  
 हो लाल ॥ ३ ॥ सा० ॥ जेह न मरुतने गम्य, चंच  
 लता जे नवि लहे हो लाल ॥ सा० ॥ जेह सदा ठे  
 रम्य, पृष्ठ गुणें नवि कश रहे हो लाल ॥ ४ ॥ सा० ॥  
 पुजल तेल न खेप, तेह न शुद्ध दशा दहे हो लाल ॥

सा० ॥ श्री नयविजय सुशिष्य, वाचक यश इणि परें  
कहे हो लाल ॥ ५ ॥ सा० ॥ इति ॥

॥ अथ श्री अरनाथ जिन स्तवनं ॥

॥ आसणरा जोगी ॥ ए देशी ॥ श्री अर जिन  
नवजलनो तारु, मुऊ मन लागे वारु रे ॥ मन मो  
हन स्वामी ॥ बांह ग्रही ए नविजन तारे, आणे  
शिवपुर आरे रे ॥ मन० ॥ १ ॥ तप जप मोह महा  
तोफाने, नाव न चाले माने रे ॥ मन० ॥ पण नवि  
जय मुऊ हाथो हाथें, तारे ते ठे साथें रे ॥ मन० ॥  
॥ २ ॥ जगतने स्वर्ग स्वर्गशी अधिकुं, झानीने फल  
देइ रे ॥ मन० ॥ काया कष्ट विना फल लहियें, म  
नमां ध्यान धरेइ रे ॥ मन० ॥ ३ ॥ जे उपाय बहु  
विधनी रचना, योग-माया ते जाणो रे ॥ मन० ॥  
शुद्ध इव्य गुण पर्याय ध्यानें, शिव दिये प्रभु सप  
राणो रे ॥ मन० ॥ ४ ॥ प्रभु पद वलग्या ते रह्या  
ताजा, अलगा अंग न साजा रे ॥ मन० ॥ वाचक  
यश कहे अवर न ध्यावं, ए प्रभुना गुण गावं रे ॥  
मन० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री मल्लिजिन स्तवनं ॥

॥ नानि रायांके बाग ॥ ए देशी ॥ तुऊ मुऊ री  
जनी रीज, अटपट एह खरी री ॥ लटपट नावे काम,  
खटपट जांज परी री ॥ १ ॥ मल्लिनाथ तुऊ रीज, जन  
रीजें न हुए री ॥ दोय रीजण नो उपाय, साहामुं कांइ  
न जुए री ॥ २ ॥ डुराराध्य ठे लोक, सद्गुने सम न श

रीरी ॥ एक डुहवाए गाढ, एक जो बोले हसी री ॥  
 ॥ ३ ॥ लोक लोकोत्तर वात, रीऊवे दाय जुशरी ॥  
 तात चक्रधर पूज्य, चिंता एह दुशरी ॥ ४ ॥ रीऊववो  
 एक सांझ, लोक ते वात करे री ॥ श्री नयविजय  
 सुशिष्य, एहिज चित्त धरे री ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री मुनि सुव्रत जिन स्तवनं ॥

॥ पांढव पांचे वंदतां ॥ ए देशी ॥ मुनि सुव्रत  
 जिन वंदतां, अति उल्लसित तन मन थाय रे ॥ व  
 दन अनोपम निरखतां, माहारां नव नवनां छुख  
 जाय रे ॥ १ ॥ माहारां नव नवनां छुख जाय जग  
 तगुरु जागतो ॥ सुख कंद रे ॥ सुख कंद अमंद आ  
 णंद, परमगुरु जागतो ॥ सु० ॥ ए आंकणी ॥ निशि  
 दिन सूतां जागतां, हड्डायी न रहे दूर रे ॥ जब  
 उपगार संजारियें, तव उपजे आनंद पूर रे ॥ त० ॥  
 ज० ॥ सु० ॥ २ ॥ प्रभु उपकार गुणे नखा, मन अ  
 वगुण एक न समाय रे ॥ गुण गुण अनुबंधी दुआ,  
 तेतो अक्षय जाव कहाय रे ॥ ते० ॥ ज० ॥ सु० ॥ ३ ॥  
 अक्षय पद दीये प्रेम जे, प्रभुनुं ते अनुनव रूप रे ॥  
 अक्षर स्वर गोचर नही, ए तो अकल अमात्य अरूप  
 रे ॥ ए० ॥ ज० ॥ सु० ॥ ४ ॥ अक्षर थोडा गुण घणा,  
 सङ्कनना ते न लिखाय रे ॥ वाचक यश कहे प्रेमथी,  
 पण मनमांहे परखाय रे ॥ प० ॥ ज० ॥ सु० ॥ ५ ॥

॥ अथ श्री नमिनाथ जिन स्तवनं ॥

॥ श्रीनमि जिननी सेवा करतां, अलिय विघन सविदूरें

नासे जी ॥ अष्ट महासिद्धि नव निधि लीला, आवे  
बहु महमूर पासें जी ॥ श्री० ॥ १ ॥ मयमत्ता अं  
गण गज गाजे, राजे तेजी तुखार ते चंगा जी ॥ बेटा  
बेटी बंधव जोडी, लहियें बहु अधिकार रंगा जी ॥  
श्री० ॥ २ ॥ वद्वन संगम रंग लहीजें, अण वाहला  
होय दूर सहेजें जी ॥ वांछा तणो विलंबन न दूजो,  
कारज सीजे चूरि सहेजें जी ॥ श्री० ॥ ३ ॥ चंड किरण  
उज्ज्वल यश उलसे, सूरज तुल्य प्रतापी दीपे जी ॥  
जे प्रभु नक्ति करे नित्य विनयें, ते अरियण बहु प्र  
तापी जीपे जी ॥ श्री० ॥ ४ ॥ मंगल माला लह्मी  
विशाला, बाला बहुले प्रेम रंगें जी ॥ श्रीनय विजय  
विबुध पय सेवक, कहे लहियें सुख प्रेम अंगें जी ॥ ५ ॥

॥ अथ श्री तेमिनाथ जिन स्तवनं ॥

॥ आटला दिन हुं जाणतो रे हां ॥ ए देशी ॥  
तोरण आवी.रथ फेरि गया रे हां, पशुआं देइ दोश  
॥ मेरे वालमा ॥ नव नवनेह निवारियो रे हां, श्यो  
जोइ आव्या जोश ॥ मे० ॥ १ ॥ चंद कलंकी जेहथी रे  
हां, रामने सीता वियोग ॥ मे० ॥ तेह कुरंगने वयणडे  
रे हां, पति आवे कुण लोग ॥ मे० ॥ २ ॥ उतारी हुं  
चित्थी रे हां, मुक्ति धूतारी हेत ॥ मे० ॥ सिद्ध अ  
नंतें जोगवी रे हां, तेहशुं कवण संकेत ॥ मे० ॥ ३ ॥  
प्रीत करतां सोहिली रे हां, निरवहेतां जंजाल ॥ मे० ॥  
जेहवो व्याल खेलाववो रे हां, जेहवी अगननी जाल  
॥ मे० ॥ ४ ॥ जो विवाह अवसरें दिउ रे हां, हाथ उ

( १२७ )

पर नवि हाथ ॥ मे० ॥ दीक्षा अवसर दीजियें रे  
हां, शिर उपर जगनाथ ॥ मे० ॥ ५ ॥ इम बलवलती  
राजुल गइ रे हां, नेम कने व्रत लीध ॥ मे० ॥ वाचक  
यश कहे प्रणमियें रे हां ए दंपती दोय सिद्ध ॥ मे० ॥ ६ ॥

॥ अथ श्री पार्श्वनाथ जिन स्तवनं ॥

॥ देखी कामनी दोइ० ॥ ए देशी ॥ वामा नंदन  
जिनवर मुनिमांहे वडो रे, के मुनिमांहे वडो ॥ जिम  
सुरमांहि सोहे सुरपति परवडो रे के ॥ सुर० ॥ जिम  
गिरमांहि सुराचल मृगमांहे केसरी रे ॥ मृग० ॥ जिम  
चंदन तरुमांहि सुजटमांहिं शूरअरि रे ॥ १ ॥ सु० ॥  
नदीय मांहि जिम गंग अनंग सुरूपमां रे ॥ अन० ॥  
फूलमांहिं अरविंद जरत पति नूपमां रे ॥ जर० ॥  
ऐरावण गजमांहिं गरुड खगमां यथा रे ॥ गरुड० ॥  
तेजवंतमांहि जाण वखाणमांहिं जिन कथा रे ॥ व०  
॥ २ ॥ मंत्रमांहि नवकार रत्नमांहि सुरमणि रे ॥ र० ॥  
सागरमांहि स्वयंचु रमण शिरोमणि रे ॥ रम० ॥ शुक्ल  
ध्यान जिम ध्यानमां अति निर्मल पणे रे ॥ अति० ॥  
श्रीनय विजय विबुध पय सेवक इम नणे रे ॥  
सेवक० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री वर्द्धमान जिन स्तवनं ॥

॥ राग धन्याश्री ॥ गिरुआ रे गुण तुम तणा, श्री  
वर्द्धमान जिनराया रे ॥ सुणता श्रवणें अमी ऊरे,  
माहारी निर्मल थायें काया रे ॥ गि० ॥ १ ॥ तुम गुण  
गण गंगा जलें, ह्रीं जीली निर्मल थाउं रे ॥ अवर न



धंधो आदरुं, निशि दिन तोरा गुण गाउं रे ॥ गि० ॥  
 ॥ १ ॥ जीव्या जे गंगाजलें, ते ठिक्कर जल नवि  
 पेसे रे ॥ जे मालती फूलें मोहीया, ते बावल जइ  
 नवि बेसे रे ॥ गि० ॥ ३ ॥ एम अमें तुम गुण गो  
 ठगुं, रंगें राच्या ने वली माच्या रे ॥ ते केम परसुर  
 आदरुं, जे परनारी वश राच्या रे ॥ गि० ॥ ४ ॥ तुं गति तुं  
 मति आशरो, तुं आजंबन मुऊ प्यारो रे ॥ वाचक  
 यश कहे माहरे, तुं जीवन जीव आधारो रे ॥ गि० ॥  
 ॥ ५ ॥ इति ॥ उपाध्याय श्री मद्यशोविजयजी कृत  
 चोवीश जिन स्तवनं संपूर्णम् ॥

॥ अथ उपाध्याय श्री मानविजयजी कृत ॥

॥ चतुर्विंशति जिन स्तवनानि ॥

॥ तत्र ॥

॥ प्रथम श्रीरुषज देव जिन स्तवनं ॥

॥ राग प्रजाती ॥ रुषजजिणंदा रुषजजिणंदा, तुम  
 दरिसण हुवे परमाणंदा ॥ अह निशि चाउं तुम दीदा  
 रा, महिर करीने करजो प्यारा ॥ १ ॥ रु० ॥ आप  
 एनी पुंठे जे वलगा, किम सरे तेहने करतां अलगा ॥  
 अलगा कीधा पण रहे वलगा, मोर पीठ परें न हुए  
 उजगा ॥ २ ॥ रु० ॥ तुम्ह पण अलगे थये किम  
 सरशे, नक्ति नलि आकर्षी लेशे ॥ गगनें उमे दूर पडाइ,  
 दोर।बलें हाथे रहे आइ ॥ ३ ॥ रु० ॥ मुऊ मनडुं ठे च  
 पल स्वनावें, तोहे अंतर मुहूर्त प्रस्तावें ॥ तूं तो समय

समय बदलाये, इम किम प्रीति निवाहो थाये ॥४॥  
 रु० ॥ ते माटे तूं साहिब माहारो, हुं बुं सेवक नव  
 नव ताहारो ॥ एह संबंधमां म होजो खामी, वाचक  
 मान कहे शिर नामी ॥ ५ ॥ रुषन० ॥ इति॥ १ ॥

॥ अथ श्रीअजित जिन स्तवनं ॥

॥ आधा आम पधारो पूज्य० ॥ ए देशी ॥ अजित  
 जिणोसर चरणनी सेवा, हेवायें हुं हलियो ॥ कहि  
 एं अणचारव्यो पण अनुनव, रसनो टाणो मलियो  
 ॥ १ ॥ प्रचुज। महिर करीने आज, काज हमारां  
 सारो ॥ मुकाव्यो पण हुं नवि मूकुं, चूकुं, ए नवि  
 टाणो ॥ नक्ति जाव ऊठयो जे अंतर, ते किम रहे शरमा  
 णो ॥ २ ॥ प्र० ॥ लोचन शांति सुधारस सुजंगा, सु  
 ख मटकालुं प्रसन्न ॥ योगमुझानो लटको चटको,  
 अतिशयनो अति धन्न ॥ ३ ॥ प्र० ॥ पिंम पदस्थ रू  
 पस्थें लीनो, चरण कमल तुज्यहीयां ॥ जमर परें  
 रसस्वाद चखावो, विरसो कां करो महीयां ॥ ४ ॥ प्र०  
 ॥ बाल कालमां वार अनंती, सामग्रीयें नवि जा  
 ग्यो ॥ यौवनकालें ते रस चाखण, तुं समरथ प्रचु मा  
 ग्यो ॥ ५ ॥ प्र० ॥ तूं अनुनव रस देवा समरथ, हूं पण  
 अरथी तेहनो ॥ चित्त वित्तने पात्र संबधें, अजर रह्यो  
 हवे केहनो ॥ ६ ॥ प्र० ॥ प्रचुनी महेरें ते रस चा  
 ख्यो, अंतरंग सुख पाम्यो ॥ मानविजय वाचक इम  
 जंपे, हूउ मुज मन काम्यो ॥ ७ ॥ प्र० ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीसंजव जिन स्तवनं ॥

॥ सुमति सदा दिलमें धरो ॥ ए देशी ॥ साहिब  
सांजलो वीनति, तूं ठो चतुर सुजाण ॥ सनेही ॥ की  
धि सुजाणने वीनती, प्रायें चढे ते प्रमाण ॥ स०  
॥ १ ॥ संजव जिन अवधारीयें, महेर करी मेहेरबा  
न ॥ स० ॥ जवजय जावत जंजणो, नक्त वत्सल न  
गवान ॥ स० ॥ २ ॥ सं० ॥ तूं जाणे विणु वीनवे,  
तोहे में न रहाय ॥ स० ॥ अरथी होए उतावलो,  
दूण वरमां सो थाय ॥ स० ॥ ३ ॥ सं० ॥ तूं तो मो  
टपमां रहे, विनव्यो पण विलंबाय ॥ स० ॥ एक  
धीरो एक आकुलो, इम किम कारज थाय ॥ स०  
॥ ४ ॥ सं० ॥ मन मान्यानी वातडी, सघले दीसे  
नेट ॥ स० ॥ एक अंतर पेशी रहे, एक न पामे जेट ॥  
स० ॥ ५ ॥ सं० ॥ योग्य अयोग्य जे जोइवा, ते अपू  
रणनुं काम ॥ स० ॥ खाइना जलने पण करे, गंगा  
जलनिज नाम ॥ स० ॥ ६ ॥ सं० ॥ काल गयो बहु वा  
यदे, तेतो हवे न खमाय ॥ स० ॥ योगवाई ए फिरि  
फिरि, पामवि दुर्लेज थाय ॥ स० ॥ ७ ॥ सं० ॥ जेद  
जाव सूकी परो, मुऊशुं रमो एक मेक ॥ स० ॥ मान  
विजय वाचक तणी, ए वीनति ठे ठेक ॥ स० ॥ ८ ॥ सं० ॥

॥ अथ श्री अजिनंदन जिनस्तवनं ॥

॥ ढाल ॥ मोतीडानी देशी ॥ प्रभु मुऊदरिसन म  
लियो अलवे, मन थयुं हवे हलवे हलवे ॥ साहिबा  
अजिनंदन देवा, मोहना अजिनंदन ० ॥ पुण्योदय

एह मोहोटी माहारो, अणचिंत्यो थयो दरिसण ता  
 हारो ॥ १ ॥ सा० ॥ देखत देव हरी मन लीधुं, काम  
 एगारे कामण कीधुं ॥ सा० ॥ मनडूं जाये नही  
 को पासैं, रात दिवस रहे ताहरी आसैं ॥ २ ॥  
 सा० ॥ पहिलुं तो जाणुं हतुं सोहिलुं, पण मोहोटाछुं  
 मिलवुं दोहिलुं ॥ सा० ॥ सोहिलुं जाणि मनडुं वल  
 गूं, थाये नही हवे कीधुं अलगूं ॥ ३ ॥ सा० ॥  
 रूप देखाडी तुं होय अरूपी, किम ग्रहिवाये अकलस  
 रूपी ॥ सा० ॥ ताहरी धात न जाणी जाये, कहो  
 मनडानी शी गति थाये ॥ ४ ॥ सा० ॥ पहिलुं जाणी  
 पढे करे किरिया, ते परमारथ सुखना दरीया ॥ सा० ॥  
 वस्तु अजाणे मन दोडावे, तेतो मूरख बहु पिठतावे  
 ॥ ५ ॥ सा० ॥ ते माटे तूं रूपी अरूपी, शुद्ध बुद्धने  
 सिद्ध सरूपी ॥ सा० ॥ एह स्वरूप ग्रहीयुं जब तहारुं,  
 तव त्रम रहित थयुं मन महारुं ॥ ६ ॥ सा० ॥ तुज गुण  
 ग्यान ध्यानमां रहीरैं, इम हिलवुं पण सुलज्ज क  
 हीरैं ॥ सा० ॥ मानविजय वाचक प्रभु ध्यानें, अनु  
 जव रसमां हव्यो एकताने ॥ ७ ॥ सा० ॥ इति ॥

॥ अथ श्री सुमति जिन स्तवनं ॥

॥ थारा मोहोला उपर मे० ॥ ए देशी ॥ रूप अ  
 नुप निहालि, सुमति जिन ताहरुं ॥ हो लाल ॥ सु० ॥  
 ठंमी चपल स्वभाव, ठयुं मन माहरुं ॥ हो लाल ॥ ठ० ॥  
 रूपी सरूप न होत जो, जग तुज दीसतूं ॥ हो लाल ॥  
 जो० ॥ तो कुण उपर मन्न, कहो अम हींसतूं ॥ हो

लाल ॥ क० ॥ १ ॥ हींस्या विण किम शुद्ध, स्वभावनें  
 श्रुता ॥ हो लाल ॥ स्व० ॥ श्रुता विण तुज नाव, प्र  
 गट किम प्रीठता ॥ हो लाल ॥ प्र० ॥ प्रीठया विणु कि  
 म ध्यान, दिशामांहि लावता ॥ हो लाल ॥ दि० ॥ लाव्या  
 विण रस स्वाद, कहो किम पावता ॥ हो लाल ॥ क० ॥  
 ॥ २ ॥ नक्ति विना नवि मुक्ति, दुःकोऽनक्तने ॥ हो  
 लाल ॥ दु० ॥ रूपी विना तो तेह, दुबे किम व्यक्तने  
 ॥ हो लाल ॥ दु० ॥ न्हवण विलेपन माल, प्रदीपनें धू  
 पणां ॥ हो लाल ॥ प्र० ॥ नव नव नूषण जाल, तिलक  
 सिर खूपणा ॥ हो लाल ॥ ति० ॥ ३ ॥ अम सत्य पु  
 ण्यने योगें, तुमें रूपी थया ॥ हो लाल ॥ तु० ॥ अ  
 मिय समाणी वाणी, धर्मनी कहो गया ॥ हो लाल ॥  
 घ० ॥ तेह आलंबने जीव, घणाये बूझीया ॥ हो लाल ॥  
 घ० ॥ नावि नावने ज्ञानें, अमो पण रीजीया ॥ हो ला  
 ल ॥ अ० ॥ ४ ॥ ते माटे तुज पिंम, घणा गुण कारणो ॥  
 हो लाल ॥ घ० ॥ सेव्यो ध्यायो दुबे, महाजय वा  
 रणो ॥ हो लाल ॥ म० ॥ शांतिविजय बुध शिष्य, कहे  
 नविका जना ॥ हो लाल ॥ क० ॥ प्रभुनुं पिंमस्थ ध्यान,  
 करो थइ श्कमना ॥ हो लाल ॥ क० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री पद्मप्रज्जिन स्तवनं ॥

॥ वारि हुं गोडी पासनी ॥ ए देशी ॥ श्रीपदम  
 प्रज्जना नामने, हुं जावं बलिहार ॥ नविजन ॥ नाम  
 जपंतां दीहा गमुं, नवजय नंजन हार ॥ न० ॥ १ ॥  
 श्री० ॥ ए आंकणी ॥ नाम सुणत मन उल्लसे, लो

चन विकसित होय ॥ ज० ॥ रोमांचित दुवे देहडो,  
जाणे मिलियो सोय ॥ ज० ॥ १ ॥ श्री० ॥ पंचम  
कालें पामवुं, दुर्जन प्रभु दीदार ॥ ज० ॥ तोहे तेहना  
नामनो, ठे मोहोटी आधार ॥ ज० ॥ ३ ॥ श्री० ॥  
नाम ग्रहे आवी मिले, सज जंतर जगवान ॥ ज० ॥  
मंत्रवले जिम देवता, वहेलो कीधे आह्वान ॥ ज० ॥  
॥ ४ ॥ श्री० ॥ ध्यान पदस्य प्रजादयी, चारव्यो अनु  
जव स्वाद ॥ ज० ॥ मानविजय वाचक कहे. मूको  
बीजो वाद ॥ ज० ॥ ५ ॥ श्री० ॥ इति ॥ ६ ॥

॥ अथ श्री सुपार्श्व जिन स्तवनं ॥

॥रंगीजे आतमा॥ ए देशी॥निरखी निरखि तुज बिंबने,  
हरखित होय मुज मन्न ॥ सुपास सोहामणा ॥ निर्वि  
कारता नयनमां, सुखदूं सदा सुप्रसन्न ॥ १ ॥ सु० ॥  
जाव अवस्था सांजरे, प्रातिहारजनी शोज ॥ सु० ॥  
कोडि गमे देवा सेवा, करता मूकी जोज ॥ २ ॥  
सु० ॥ लोकालोकना सवि जावा, प्रतिजासे परतद्ध ॥  
सु० ॥ तोहे न राचे नवि रुसे, नवि अविरतिनो पद्ध  
॥ ३ ॥ सु० ॥ हास्य नरति अरति नहीं, नहीं जय  
शोक डुगंठ ॥ सु० ॥ नहीं कंदर्प कदर्थना, नही अंत  
रायनो संच ॥ ४ ॥ सु० ॥ मोह मिथ्यात निडा गइ,  
नाग दोष अठार ॥ सु० ॥ चोत्रीश अतिशय राजता,  
मूलातिशय चार ॥ ५ ॥ सु० ॥ पांत्रीश वाणी गुणें  
करी, देता जवि उपदेश ॥ सु० ॥ इम तुज बिंबें ता  
हरो, जेदनो नहिं लवलेष ॥ ६ ॥ सु० ॥ रूपथी प्रभु

गुण सांजरे, ध्यान रूपस्थ विचार ॥ सु० ॥ मानवि  
जय वाचक वदे, जिन प्रतिमा जयकार ॥ ७ ॥ सु० ॥

॥ अथ श्री चंडप्रज जिन स्तवनं ॥

॥ अलगी रेहेने ॥ ए देशी ॥ तूंही साहिबारे मन  
मान्या ॥ तूं तो अकल स्वरूपी जगतमां, मनमां केणे  
न पायो ॥ शब्दे बोलावी उलखायो, शब्दातीत  
उहरायो ॥ १ ॥ तूं ॥ रूप निहाली परिचय कीनो,  
रूपमांहि नहिं आयो ॥ प्रातिहारज अतिशय अहि  
नाणे, शास्त्रमां बुधें न लखायो ॥ २ ॥ तूं ॥ शब्द न  
रूप न गंध न रस नहीं, फरस न वरण न वेद ॥  
नहिं संज्ञा ठेदन चेदन नहिं, हास्य नहिं नहीं  
खेद ॥ ३ ॥ तूं ॥ सुख नहीं दुःख नहीं बली बांठा  
नहीं, नहीं रोग योग ने जोग ॥ नहीं गति नहीं स्थि  
ति नहीं रति अरति, नहीं तुळ हरषनै शोग ॥ ४ ॥  
तूं ॥ पुण्य न पाप न बंधन देह न, जनम मरण नहीं  
व्रीडा ॥ राग न द्वेष न कलह न जय नहीं, नहीं संता  
प न क्रीडा ॥ ५ ॥ तूं ॥ अलख अगोचर अज अ  
विनाशी, अविकारी निरुपाधि ॥ पूरण ब्रह्मचिदानंद  
साहिब, ध्याउं सहज समाधि ॥ ६ ॥ तूं ॥ जे जे पूजा  
ते ते अंगें, तूं तो अंगथी दूरें ॥ ते माटे पूजा उपचा  
रिक, न घटे ध्यानने पूरें ॥ ७ ॥ तूं ॥ चिदानंद  
घन केरी पूजा, निर्विकल्प उपयोग ॥ आत्म परमा  
त्मने अजेदें, नहीं कोइ जडनो जोग ॥ ८ ॥ तूं ॥  
॥ रूपातीत ध्यानमां रहेतां, चंडप्रज जिनराय ॥ मान

विजय वाचक इम बोले, प्रभु सरिखाइ आय ॥ ए॥ तूं॥

॥ अथ श्रीसुविधि जिन स्तवनं ॥

॥ राग सिंधुडो ॥ चित्रोडा राजा रे ॥ ए देशी ॥ तु  
ऊ सेवा सारी रे, शिव सुखनी त्यारी रे ॥ मुऊ लागे  
प्यारी रे, पण न्यारी ठे ताहरी प्रकृति सुविधिजिना  
रे ॥ १ ॥ हेजें नवि बोले रे, स्तवीयो नवि मोले रे  
॥ हीयडुं नवि खोले रे, तुऊ तोले त्रिणजगमां निःसं  
गी को नहीं रे ॥ २ ॥ न जूवे जोतानें रे, न रीजे  
ओतानें रे ॥ रहे मेळें पोताने रे, ओताने जोताने  
तोहे वालहो रे ॥ ३ ॥ नवि तूसे न रूसे रे, न वखा  
णे न दूसे रे ॥ नवि आपे न मूसे रे, नवि नूंसे न  
मंमे रे कोइने कदा रे ॥ ४ ॥ न जणा ए धात रे, ते  
हउं शी वात रे ॥ एह जाणुं कहेवात रे, रहिवात न  
तोहे तुऊ विणु मानने रे ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीशीतल जिन स्तवनं ॥

॥ मन रंग धरी० ए देशी ॥ तुऊ मुख सनमुख  
निरखतां, मुऊ लोचन अमीय उरंतां हो ॥ शीतल जि  
नवरजी ॥ तेहनी शीतलता व्यापे, किम रहेवायें कहो  
तपेंहो ॥ १ ॥ शी० ॥ तुऊ नाम सुणुं जव कानें, हि  
यडुं आवे तव शानें हो ॥ शी० ॥ मूरठायो माणस  
वाटें, जिम सज दुये अमृत ठांटे हो ॥ २ ॥ शी० ॥  
शुजगंधने तरतम योगें, आकुलता दुइ जोगें हो ॥ शी० ॥  
तुऊ अदभुत देह सुवासें, तेह मिटिगइ रहत उदासें हो  
॥ ३ ॥ शी० ॥ तुऊ गुण संस्तवने रसना, ठांमे अन्य



लवनी तृषना हो ॥ शी० ॥ पूजायें तुऊ तनु फरसे, फरस  
त शीतल थइ उल्लसे हो ॥ ४ ॥ शी० ॥ मननी चंचलता  
जागी, सवि ठंमी थयो तुऊ रागी हो ॥ शी० ॥ कवि  
मान कहे तुऊ संगें, शीतलता थइ अंगो अंगें हो ॥ ५ ॥

॥ अथ श्री श्रेयांस जिन स्तवनं ॥

॥ देशी वांहाणनी ॥ राग मल्हार ॥ श्रीश्रेयांस  
जिणंद, घनाघन गहगह्यो रे ॥ घना० ॥ वृद्ध अशोक  
नी ढायें, सुनर ठाइ रह्यो रे ॥ स० ॥ नामंमलनी  
ऊलक, ऊबूके वीजली रे ॥ ऊ० ॥ उन्नत गढ तिग इं  
इ, धनुष शोजा मली रे ॥ ध० ॥ १ ॥ देवडुंडुहिनी  
नाद, गुदिर गाजे घणुं रे ॥ गु० ॥ जाविक जननां  
नाटिक, मोर क्रीडा जणुं रे ॥ मो० ॥ चामर केरी  
हार, चलंती बगतति रे ॥ च० ॥ देशना सरस सुधारस,  
वरसे जिनपति रे ॥ व० ॥ २ ॥ समकित्ती चातक वृंद,  
तृपति पामे तिहां रे ॥ तृ० ॥ सकल कषाय दवानल,  
शांत दुवे जिहां रे ॥ शां० ॥ जन चित्तवृत्ति सुनू  
मि, त्रेहाली थइ रही रे ॥ त्रे० ॥ तिणे रोमांच अं  
कूर, वती काया लही रे ॥ व० ॥ ३ ॥ श्रमण कृषी  
बल सज्ज, दुवे तव ऊजमी रे ॥ दु० ॥ गुणवंत जन  
मनक्षेत्र, समारे संजमी रे ॥ स० ॥ करता बीजा धा  
न, सुधान नीपावता रे ॥ सुं० ॥ जेणें जगना लोक,  
रहे सवि जीवता रे ॥ र० ॥ ४ ॥ गणधर गिरितट सं  
ग, थइ सूत्र गुंथना रे ॥ थ० ॥ तेह नदी परवाहें, दुइ  
बहु पावना रे ॥ दु० ॥ एहज मोहोटी आधार, विषम

कालें लह्यो रे ॥ वि० ॥ मानविजय उवजाय, कहे  
में सद्दह्यो रे ॥ क० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री वासुपूज्य जिन स्तवनं ॥

॥ सीता तो रूपें रूडी ॥ ए देशी ॥ वासुपूज्य तुं  
साहिब साचो, जेहवो दुवे हीरो जाचो ॥ सुंदर सो  
जागी ॥ जस होये विरोधी वाचो, तेहनी करे मेवा  
काचो हो ॥ सु० ॥ १ ॥ अठति वात उपावे, वलि  
जाव ठताने ठिपावे हो ॥ सु० ॥ कांइनुं कांइ बोले,  
परनें निंदा करी मोले हो ॥ सु० ॥ २ ॥ इम चउ  
बिह मिथ्या जांखी, तेह देवनी कुण नरे साखी हो  
॥ सु० ॥ प्राणीना मर्मन धाती, हड्डामां मोटी कार्त  
हो ॥ सु० ॥ ३ ॥ गुण विण रह्या उंचे ठाणे, किम  
देव ठहराय प्रमाणें हो ॥ सु० ॥ प्रासाद शिखर  
रह्यो काग, किम पामे गरुड जस लाग हो ॥ सु० ॥  
॥ ४ ॥ तुं तो वीतराग नीरीह, तुज वचन यथारथ  
लीह हो ॥ सु० ॥ कहे मानविजय उवजाय, तुं साचो  
देव ठहराय हो ॥ सु० ॥ ५ ॥ इति ॥ १२ ॥

॥ अथ श्री विमल जिन स्तवनं ॥

॥ राग मल्हारनी देशी ॥ जिहो विमल जिनेसर  
सुंदरु, लाला विमल वदन तुज दिठ ॥ जिहो विमल  
दुउ मुज आतमा, लाला तेणें तुं अंतर पइठ ॥ १ ॥  
जिनेसर तुं मुज प्राण आधार ॥ जिहो सकल जंतु  
हितकार, जिनेसर तूं मुज प्राण आधार ॥ ए आंकणी  
॥ जिहो विमल रहे विमलें थलें, लाला समलें समल

रमेय ॥ जिहो मानसरें रमे हंसलो, लाला वायस खाइ  
जलेय ॥ जि० ॥ १ ॥ जिहो तिम मिथ्यात्वी चित्तमां,  
लाला तुऊ किम होये आजास ॥ जिहो तिहां कुदेव  
रंगें रमे, लाला समकित्त मन तुऊ वास ॥ जि० ॥ ३ ॥  
जिहो हीरो कुंदनशुं जडे, लाला दूधने साकर यो  
ग ॥ जिहो पलटे योगें वस्तुनो, लाला न होये गुण  
आजोग ॥ जि० ॥ ४ ॥ जिहो विमल पुरुष रहेवा  
तणुं, लाला थानक विमल करेय ॥ जिहो गृहपतिने  
तिहां शी तृपा, लाला नाटक उचित ग्रहेय ॥ जि० ॥  
॥ ५ ॥ जिहो तिम तें मुऊ मन निर्मलुं, लाला कीधुं  
करते रे वास ॥ जिहो पुष्टि शुद्धि नाटक ग्रही, ला  
ला हूं सुखीयो थयो खास ॥ ६ ॥ जिहो विमले विमल  
मिली रह्या, लाला जेद जाव रह्यो नांहिं ॥ जिहो  
मानविजय उवजायने, लाला अनुनव सुख थयो  
त्यांहिं ॥ जि० ॥ ७ ॥ इति ॥ १३ ॥

॥ अथ श्री अनंत जिन स्तवनं ॥

॥ राग मारु ॥ देशी करे लडानी ॥

॥ ज्ञान अनंतूं ताहरे रे, दरिसन ताहरे अनंत ॥  
सुख अनंतमय साहिबारे, विरज पण उल्लसुं अनं  
त ॥ १ ॥ अनंत जिन आपजो रें ॥ मुऊ एह अनंता  
चार ॥ अ० ॥ मुऊने नही अवरशुं प्यार ॥ अ० ॥  
तुऊने आपंतां शी वार ॥ अ० ॥ एह ठे तुऊ यशनो  
ठार ॥ अ० ॥ ए आंकणी ॥ आप खजीनो न खो  
लवो रे, नही मलवानी चिंत ॥ माहरे पोतें ठे सवे

रे, पण विचे आवरणनी जित्त ॥ अ० ॥ १ ॥ तप  
जप किरिया मोघरें रे, जांजी पण जांगी न जाय ॥  
एक तुज आण लगे थकी रे, हेलाभां परही थाय ॥  
अ०॥३॥ मातजणी मरुदेवीनें रे, जिन रूपजें कृणमां  
दीध ॥ आप पियारुं विचारतां रे, इम किम वीतरा  
गता सिद्ध ॥ अ० ॥ ४ ॥ तेमाटे तस अरथीया रे,  
तुज प्रार्थिता जे कोइ लोक ॥ तेहने आपो आपणी  
रे, तिहां न घटे कराववी टोक ॥ अ०॥ ५ ॥ तेहनें  
तेहनुं आपवुं रे, तिहां श्यो उपजे ठे खेद ॥ प्रार्थना  
करते ताहरे रे, प्रभुताइनो पण नही ठेद ॥ अ०॥६॥  
पाम्या पामे पामशे रे, ज्ञानादिक जेह अनंत. ॥ ते तुज  
आणायी सवे रे, कहे मानविजय उल्लसंत ॥ अ०॥७॥

॥ अथ श्री धर्म जिन.स्तवनं ॥

॥ मुखने मरकलडे ॥ ए दशी ॥ श्री धर्म जिणंद  
दयाल जी ॥ धरम तणो दाता ॥ सविजंतु तणो रख  
वाल जी ॥ धर्म तणो त्राता ॥ जस अमीय समाणी  
वाणी जी ॥ ध०॥ जेह निसुणे जवि प्राणी जी ॥ ध०  
॥ १ ॥ तेहना चित्तनो मल जाय जी ॥ ध० ॥ जिम  
कतकफले जल थाय जी ॥ ध० ॥ निर्मलता तेहज ध  
र्म जी ॥ ध० ॥ कलुषाइ मिठ्यानो मर्म जी ॥ ध० ॥  
॥ २ ॥ निज धर्म तो सहज सजाव जी ॥ ध० ॥ तो  
हि तुज निमित्त प्रजाव जी ॥ ध० ॥ वनराजी फूल  
न शक्ति जी ॥ ध० ॥ पण रुराजें होइ व्यक्ति जी  
॥ ध० ॥ ३ ॥ कमलाकरें कमल विकास जी ॥ ध०॥

सौरजता लखमी वास जी ॥ ४० ॥ ते दिनकर  
 करणी जोय जी ॥ ४० ॥ इम धर्मदायक तुं होय  
 जी ॥ ४० ॥ ४ ॥ ते माटे धर्मना रागी जी ॥ ४० ॥  
 तुऊ पद सेवे बडनागी जी ॥ ४० ॥ कहे मान  
 विजय उवजाय जी ॥ ४० ॥ निज अनुचव ज्ञान  
 पसाय जी ॥ ४० ॥ ५ ॥ ॥ इति ॥ १५ ॥

॥ अथ श्री शांति जिन स्तवनं ॥

॥ घरे आवो जी आंबो मोरियो ॥ ए देशी ॥ श्री  
 शांतिजिनेसर साहिबा, तुऊ नाठे किम बूटाशे ॥  
 में लीधी केडज ताहरी, तेह प्रसन्न थये मूकाशे ॥  
 श्री० ॥ १ ॥ तुं वीतरागपणुं दाखवी, जोला जनने  
 नूलावे ॥ जाणीमें कीधी प्रतिगन्या, तेहथी कहो को  
 ए मोलावे ॥ श्री० ॥ २ ॥ कोइ कोइ ने केडें मत पडो,  
 केडें पज्यां आणे वाज ॥ नीरागी पण प्रभु खेंचीयो,  
 नकें करी में सातराज ॥ श्री० ॥ ३ ॥ मनमांहि  
 आणी वासियो, हवे किम निसरवा देवाय ॥ जो  
 नेदरहित मुऊशुं मिले, तो पलकमांहि बूटाय ॥ श्री०  
 ॥ ४ ॥ कबजे आव्या किम बूटशो, कीधा विण क  
 हेण कृपाल ॥ तोशुं हववाद लेइ रह्या, कहे मान क  
 रो खुशीयाल ॥ श्री० ॥ ५ ॥ ॥ इति ॥ १६ ॥

॥ अथ श्री कुंथु जिन स्तवनं ॥

॥ योगीसर चैला ॥ ए देशी ॥ कुंथु जिनेसर  
 जाणजो रे, मुऊ मननो अनिप्राय रे ॥ जिनेसर ॥  
 तुं आतम अलवेसरु हो लाल, रखे तुऊ विरहो थाय

रे ॥ जि० ॥ १ ॥ तुऊ विरहो किम वेठीयें हो लाल,  
 तुऊ विरहो दुःखदाय रे ॥ जि० ॥ तुऊ विरहो न ख  
 माय रे ॥ जि० ॥ खिए वरसां शो आय रे ॥ जि० ॥  
 विरहो मोहोटी बलाय रे ॥ जि० ॥ कुं० ॥ ए आंक  
 णी ॥ ताहरी पासें आवबुं रे, पहिलां नावे तुं दाय  
 रे ॥ जि० ॥ आव्या पठी तो जायबुं हो लाल, तु  
 ऊ गुण वसे न सुहाय रे ॥ जि० ॥ कुं० ॥ २ ॥ न  
 मव्यानो धोखो नहीं रे, जस गुणनूं नहीं नाण रे ॥  
 जि० ॥ मलिया गुण कलिया पठें हो लाल, विठरत  
 जाये प्राण रे ॥ जि० ॥ कुं० ॥ ३ ॥ जातिअंधने दुः  
 ख नहीं रे, न लहे नयननो स्वाद रे ॥ जि० ॥ नय  
 ण सवाद लही करी हो लाल, हास्यां ने विखवाद रे ॥  
 जि० ॥ कुं० ॥ ४ ॥ बीजे पण किहां नवि गमे रे,  
 जिणे तुऊ विरह वंचाय रे ॥ जि० ॥ मालति कुसुमें  
 माव्हीयो हो लाल, मधुप करीरें न जाय रे ॥ जि० ॥  
 कुं० ॥ ५ ॥ वनदव दाधां खंडां रे, पाव्हवे बली  
 वरसात रे ॥ जि० ॥ तुऊ विरहानलना बव्या हो  
 लाल, काल अनंत गमात रे ॥ जि० ॥ कुं० ॥ ६ ॥  
 ताढक रहे तुऊ संगमें रे, आकुलता मिटि जाय रे  
 ॥ जि० ॥ तुऊ संगें सुखीयो सदा हो लाल, मान  
 विजय उवजाय रे ॥ जि० ॥ कुं० ॥ ७ ॥ इति ॥ १७ ॥

॥ अथ श्री अरजिन स्तवनं ॥

॥ उधव माधवने कहेजो ॥ ए देशी ॥ श्री अरना  
 थ उपासना, गुनवासना मूल ॥ हरिहर देव आशास

ना कुण आवे शूल ॥ श्री० ॥ १ ॥ दासना चित्तनी कुवा  
सना, उदघासना कीध ॥ देवाजासनी जासना, वीसारी  
दीध ॥ श्री० ॥ २ ॥ वली मिथ्या वासनतणा वासनारा  
जेह ॥ तेह कुगुरुनी शासना, हश्ये न धरेह ॥ श्री० ॥ ३ ॥  
सांसारिक आशंसना, तुज्जुं न कराय ॥ चिंतामणि  
देणहारने, किम काच मगाय ॥ श्री० ॥ ४ ॥ तिम क  
ल्पित गह्ववासना, वासना प्रतिबंध ॥ मान कहे एक  
जिन तणो, साचो संबंध ॥ श्री० ॥ ५ ॥ इति ॥ १० ॥  
॥ अथ श्री मल्लि जिन स्तवनं ॥

॥ सासू पूठे हे वहू ॥ ए देशी ॥ महिमा मल्लि  
जिणंदनो, एकें जीनें कह्यो किम जाय ॥ योग धरे  
निन्न योगजुं, चाला पण योगना देखाय ॥ म० ॥ १ ॥  
वयणे समजावे सजा, मन समजावे अनुत्तर देव ॥  
औदारिक काया प्रत्ये, देव समीपें करावे सेव ॥ म०  
॥ २ ॥ जाषा पण सवि श्रोताने, निज निज जाषायें  
समजाय ॥ हरखे निज निज रीजमां, प्रभु तो निर  
विकार कहाय ॥ म० ॥ ३ ॥ योग अवस्था जिनत  
णी, ज्ञाता हुये तिणे समजाय ॥ चतुरनी वात चतु  
र लहे, मूढ बिचारा देखी मुंजाय ॥ म० ॥ ४ ॥ मू  
रख जन पामे नहिं, प्रभु गुणनो अनुभव रस स्वाद  
॥ मानविजय उवजायने, ते रसस्वादें गयो वि  
खवाद ॥ म० ॥ ५ ॥ इति ॥ १० ॥

॥ अथ श्री मुनिसुव्रत जिन स्तवनं ॥

॥ इमर आंबा आंबली रें ॥ ए देशी ॥ मुनि सुव्र

त कीजें मया रे, मनमांहि धरी महेर ॥ महेर विहू  
 णा मानवी रे, कठिण जणायें कहेर ॥ १ ॥ जिणेसर  
 तुं जगन्नायक देव ॥ तुज जगहित करवा टेव ॥ जि० ॥  
 बीजा जूवे करता सेव ॥ जि० ॥ तुं० ॥ ए आंकणी ॥  
 अरहट खेत्रनी जूमिका रे, सींचे कृतारथ होय ॥ धा  
 राधर सधली धरा रे, उदरवा सङ्गजोय ॥ २ ॥  
 जि० ॥ ते माटे अश्व कारें रे, आणी मनमां महेर ॥  
 आपें आव्या आफणी रे, बोधवा जरुयच सहेर ॥  
 ॥ ३ ॥ जि० ॥ अण प्रारथता उदरवा रे, आपें करी  
 य उपाय ॥ प्रारथता रहे विलवता रे, ए कुण कहीयें  
 न्याय ॥ ४ ॥ जि० ॥ संबंध पण तुज मुज विचें रे,  
 स्वामी सेवक जाव ॥ मान कहे हवे महेरनो रे, न  
 रह्यो अजर प्रस्ताव ॥ ५ ॥ जि० ॥ इति ॥ २० ॥

॥ अथ श्री नमि जिन स्तवनं ॥

॥ कपूर होवे अति उजलो रे ॥ ए देशी ॥ श्री न  
 मिनाथ जिणंदनें रे, चरण कमल लय लाय ॥ मूकी  
 आपणी चपलता रे, तुह कुसुमें मत जाय रे ॥ १ ॥  
 सुण मनमधुकर माहरी वात ॥ म कर फोकट विलुपात  
 रे ॥ सु० ॥ ए आंकणी ॥ विषम काल वरषाकृतु रे, क्र  
 में क्रमें हुत व्यतीत ॥ ठेहलो पुगल परियटो रे, आ  
 व्यो शरद प्रतीत रे ॥ २ ॥ सु० ॥ ग्यानावरण वादल  
 फटे रे, ग्यान सूरज परकाश ॥ ध्यान सरोवर विक  
 शीयां रे, केवल लक्ष्मी वास रे ॥ ३ ॥ सु० ॥ नामें  
 ललचावे कोइ रे, कोइक नव नव राग ॥ एहवी वास



( १४५ )

ना नही बीजे रे, शुद्ध अनुभव सुपराग रे ॥ ४ ॥  
जमत जमत कहावियें रे, मधुकरनो रसस्वाद ॥ मा  
नविजय मनने कहे रे, रस चाखो आल्हाद रे ॥ ५ ॥

॥ अथ श्री नेमिजिन स्तवनं ॥

॥ अब प्रनुशुं इतनी कहूं ॥ ए देशी ॥ नेमिजिणं  
द निरंजणो, जइ मोहथलें जलकेली रे ॥ मोहना उद  
जटगोपी, एकलमधें नाख्या ठेली रे ॥ १ ॥ सामि  
सजूणा साहिबा ॥ अतुलीबल तुं वडवीर रे ॥ सा० ॥  
ए आंकणी ॥ कोइक ताकी मूकती, अति तीखां कटा  
हनां बाण रे ॥ २ ॥ सा० ॥ अंगुली कटारी घोंचती,  
उहालति वेणी कृपाण रे ॥ सिंघो जालां उगामती,  
सिंगी जलनरे कोकबाण रे ॥ ३ ॥ सा० ॥ फूलदडा  
गोला नाखे, जे सत्त्व गढें करे चोट रे ॥ कुचसुं  
ग करि कुंजस्थलें, प्रहरती हृदयकपाट रे ॥ ४ ॥  
सा० ॥ शील सन्नाह उन्नत सत्त्वं, अरि शस्त्रना गोला  
न लागा रे ॥ सोर करी मिथ्या सवे, मोह सुनट दहो  
दीसे जागा रे ॥ ५ ॥ सा० ॥ तव नव जव योद्धो मं  
मयो, सजी विवाह मंमप कोट रे ॥ प्रभु पण तस स  
न मुख गयो, नीसाणें देतो चोट रे ॥ ६ ॥ सा० ॥ चा  
करी मोहनी ठोडवी, राजुजने शिवपुर दीध रे ॥ आपे  
रैवत गिरि चढी, नीतर संयम गढ लीध रे ॥ ७ ॥  
सा० ॥ श्रमणधरम योद्धा लडे, संवेग खड्ग धृति ढा  
ल रे ॥ जाल केश उखाडतो, शुभ जावना गडगडे

नाल रे ॥ ७ ॥ सा० ॥ ध्यान धाराशर वर्षतो, दणी  
मोह थयो जगनाथ रे ॥ मानविजय वाचक वदे, में  
ग्रह्यो ताहरो साथ रे ॥ ८ ॥ सा० ॥ इति ॥

॥ अथ श्री पार्श्वनाथ जिन स्तवनं ॥

॥ देहु देहु नणद हठीली ॥ ए देशी ॥ श्री पा  
सजी प्रगट प्रजावी, तुफ मूरति मुऊ मन जावी रे ॥  
मनमोहना जिनराया ॥ सुर नर किन्नर गुण गाया रे ॥  
म० ॥ जे दिनथी मूरति दीठी, ते दिनथी आपद  
नीठी रे ॥ १ ॥ म० ॥ मुख मटकाळुं सुप्रसन्न, देख  
त रीजे जविमन्न रे ॥ म० ॥ समतारस केरां कचोलां,  
नयणां दीठे रंगरोलां रे ॥ २ ॥ म० ॥ हाथें न धरे  
हथीयार, नही जपमालानो प्रचार रे ॥ म० ॥ उ  
त्संगें न धरे वामा, जेहथी उपजे सवि कामा रे ॥  
॥ ३ ॥ म० ॥ न करे गीत नृत्यना चाला, एतो प्र  
त्यक्ष नटना ख्याला रे ॥ म० ॥ न वज्रवे आपें  
वाजां, न धरे वस्त्र जीरण ताजां रे ॥ ४ ॥ म० ॥  
इम मूरति तुऊ निरुपाधि, वीतरागपणे करी साधी  
रे ॥ म० ॥ कहे मानविजय उवजाया, में अवलंब्या  
तुऊ पाया रे ॥ ५ ॥ म० ॥ १३ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री महावीर जिन स्तवनं ॥

॥ हेमराज जग जस जीत्यो ॥ ए देशी ॥ शा  
सन नायक साहिव साचो, अतुली बल अरिहंत ॥  
कर्म अरिबल सबल निवारी, मारीय मोह महंत ॥  
॥ १ ॥ महावीर जगमां जीत्यो जी ॥ हांजी जीत्यो

जीत्यो आप सहाय, हांजी जीत्यो जीत्यो ग्यान प  
 साय, हांजी जीत्यो जीत्यो ध्यान दशाय, हांजी  
 जीत्यो जीत्यो जग सुखदाय ॥ म० ॥ अनंतानुबंधी वड  
 योद्दा, हणीया पहिली चोट ॥ मंत्री मिथ्यात पठें  
 तिगरूपी, तव करी आगल दोट ॥ ३ ॥ म० ॥ नांजि  
 हेड आयुष तिग केरी, इग विगलिनंदिय जाति ॥ एह  
 मेवासि नांज्यो चिरकाली, नरकयुगल संघाति ॥ ३ ॥  
 म० ॥ थावर तिरि डुगजांसि कटावी, साहारण हणी  
 धाडी ॥ थोण्हीतिग मदिरा वयरी, आतप उद्योत उ  
 खाडी ॥ ४ ॥ म० ॥ अपच्चस्काणा अने पच्चस्काणा,  
 हणीया योद्दा आव ॥ वेद नपुंसक स्त्री सेनानी, प्रति  
 बिंबित गया नाठ ॥ ५ ॥ म० ॥ हास्य रति अरति शोक  
 डुगंठा, जय एह मोहखवास ॥ हणीया पुरुष वेद फोज  
 दारा, पठें संजलनो नाश ॥ ६ ॥ म० ॥ निडा दोय मोह  
 पटराणी, वरमांथी संहारी ॥ अंतराय दरिसणने ग्याना,  
 वरणीय लडतां मारी ॥ ७ ॥ म० ॥ जय जय हुउं  
 मोहज मुउं, दूउं तूं जगनाथ ॥ लोकालोक प्रकाश थयो  
 तव, मोह चलावे साथ ॥ ८ ॥ म० ॥ जीत्यो तिम  
 जगतने जीतावे, मूकायो मूकावे ॥ तरण तारण सम  
 रथ ठे तूंही, मानविजय नित्य ध्यावे ॥ ९ ॥ म० ॥  
 ॥ इति महावीर जिन स्तवनम् समाप्तम् ॥ तत्समा  
 स्तोयं उपाध्याय श्री मानविजयजी कृत चोवीशी  
 संपूर्णा ॥

॥ अथ श्री रामविजयजीकृत चोवीश जिन ॥

॥ स्तवन प्रारंभः ॥



॥ तत्र ॥

॥ प्रथम श्री रूपन जिन स्तवन ॥

॥ योग माया गरवे नमो जो ॥ ए देशी ॥ उलगडी  
आदिनाथनी जो, कांइ कीजिये मनने कोम जो ॥  
होड करे कोण नाथनी जो, जेहना पाय नमो सुर  
कोड जो ॥ उल० ॥ १ ॥ बाहालो मरुदेवीनां नाडलो  
जो, राणी सुनंदाना हस्तानो हार जो ॥ त्रण्य चुव  
ननो नाहलो जो, महारा प्रण तणो आधार  
जो ॥ उल० ॥ २ ॥ बाहाले वीश पूरव लख नोगव्युं  
जो, रूडुं कुमरपणुं रंगरेल जो ॥ मनहुं मोह्युं  
रे जिन रूपव्युं जो, जाणे जगमां मोहन वेल जो ॥  
उल० ॥ ३ ॥ प्रभुनी पांचरों धनुषनी देहडी जो,  
लख पूरव त्रेश्वराज जो ॥ लाख पूरव समता वरी  
जो, थया शिव सुंदरीवरराज जो ॥ उल० ॥ ४ ॥  
एना नामथी नव निधि संपजे जो, वली अलिथ  
विघन सवि जाय जो ॥ श्री सुमतिविजय कविराजनो  
जो, एम रामविजय गुण गाय जो ॥ उल० ॥ ५ ॥ इति

॥ अथ श्री अजित जिन स्तवनं ॥

॥ सोना ते कैरुं महारुं बेडलुं रेलो, रूपला इंदोणी

(१४९)

हाथ, महारा वाहालाजी रे ॥ हवे नही जाउं मही  
वेचवा रेलो ॥ ए देशी ॥

॥ अजित जिनेसर साहिबा रेलो, वीनतडी अव  
धार ॥ महारा वाहालाजी रे ॥ हवे नही ठोडुं तारी  
चाकरी रेलो ॥ तुं मनरंजन महारो रेलो, दील  
डानो जाणणहार ॥ म० ॥ ह० ॥ १ ॥ लाख चो  
राशीहुं जम्या रेलो, काल अनंतो अनंत ॥ म० ॥ उ  
लग लीधी में ताहेरी रेलो, जांगी ठे जव तणी च्रांत ॥  
म० ॥ ह० ॥ १॥ करि सुनजर हवे साहिबा रेलो, दास  
धरो दीलमांहि ॥ म० ॥ लाख गुण हीन पण ता  
हरो रेलो, सेवक हुं महाराज ॥ म० ॥ ह० ॥ २॥ अव  
गुण गणतां माहारा रेलो, नही आवे प्रभु पार ॥  
म० ॥ पण जिन. प्रवहणनी परें रेलो, तुमें ठो  
तारण हार ॥ म० ॥ ह० ॥ ४॥ नयरी अजोय्यानो धणी  
रेलो, विजय उयरें सरहंस ॥ म० ॥ जितशत्रु रा  
यनो नंदनो रेलो, धन इहवाकुनो वंश ॥ म० ॥ ह० ॥  
॥ ५ ॥ धनु सय साढा चारनी रेलो, देहडी रंग स  
नूर ॥ म० ॥ बोहोतेर पूरव लाखनुं रेलो, आयु अ  
धिक सुख पूर ॥ म० ॥ ह० ॥ ६॥ पंचम आरे तुं मळ्यो  
रेलो, प्रगट्या ठे पुण्य निधान ॥ म० ॥ सुमति सुगुरु  
पद सेवतां रेलो, राम अधिक तनुवान ॥ म० ॥ ह० ॥ ७॥

॥ अथ श्री संजव जिन स्तवनं ॥

॥ तुने गोकुल बोलावे कहान, गोविंद गोर। रे ॥  
आलोने महीनां दाण, न करो चोरी रे ॥ ए देशी ॥

॥ मने संजव जिनछुं प्रीत, अविहड लागी रे ॥  
 कांइ देखत प्रभु मुखचंद, जावठ जागी रे ॥ १ ॥ जिन  
 सेनानंदन देव, दीजडे वसीया रे ॥ प्रभु चरण नमै कर  
 जोड, अनुजव रसीया रे ॥ २ ॥ तोरी धनुसय चार  
 प्रमाण, उंची काया रे ॥ मनमोहन कंचन वान,  
 लागी तोरी माया रे ॥ ३ ॥ प्रभु राय जितारी नंद,  
 नयणें दीगो रे ॥ सावढी पुर शणगार, लागे मुने  
 मीगो रे ॥ ४ ॥ प्रभु ब्रह्मचारी जगवान, नाम सुणा  
 वे रे ॥ पण मुक्तिवधू वशी मंत्र, पाठ जणावे रे ॥ ५ ॥  
 मुऊ रढ लागी मनमांहे, तुऊ गुण केरी रे ॥ नहीं  
 तुऊ मूरतिने तोल, सुरत जखेरी रे ॥ ६ ॥ जिन मद्देर  
 करी जगवान, वान वधारो रे ॥ श्री सुमति विजय  
 गुरु शिष्य, दिलमां धारो रे ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री अजिनंदन जिन स्तवनं ॥

॥ घम घम घमके घूघरा रे, घूघरे हीरनी दो  
 रके घमके ॥ ए देशी ॥ श्री अजिनंदन जिन स्वा  
 मीने रे, सेवे सुर कुमरीनी कोड के ॥ प्रभुनी चाकरी  
 रे ॥ सुख मटके मोही रही रे, उजी आगल बे कर  
 जोड के ॥ प्रभु ॥ १ ॥ स्वर जीणे आलापती रे,  
 गाती जिन गुण गीत रसाल के ॥ प्रभु ॥ ताल मृदं  
 ग वजावती रे, देती अमरी नमरी बाल के ॥ प्रभु ॥  
 ॥ २ ॥ घम घम घमके घूघरी रे, खलके कटिमेखल  
 सार के ॥ प्रभु ॥ नाटिक नव नव नाचती रे, बो  
 ले प्रभु गुण गीत उच्चार के ॥ प्र ॥ ३ ॥ सुत सिद्धा

रथ मातनो रे, संवर नृपति कुल शणगार के ॥ प्र०  
 ॥ धनु शत साडा त्रणनी रे, प्रभुजीनी दीपे देह अ  
 पार के ॥ प्र० ॥ ४ ॥ पूरव लाख पचासनुं रे, पाली  
 आय लहुं शुन ठाण के ॥ प्र० ॥ नयरी अयोध्यानो  
 राजीयो रे, दरिसण नाण रयण गुण खाण के ॥ प्र०  
 ॥ ५ ॥ सेवो समरथ साहिबो रे, साचो शिवरमणीनो  
 साथ के ॥ प्र० ॥ मुऊ हीयडा मांहि वस्यो रे, वाहा  
 लो लीन चुवननो नाथ के ॥ प्र० ॥ ६ ॥ इणी परें  
 जिन गुण गावतां रे, लहिणं अनुभव सुख रसाल के  
 ॥ प्र० ॥ रामविजय प्रभु सेवतां रे, करतां नित नित  
 मंगलमाल के ॥ प्र० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री सुमतिनाथ जिन स्तवनं ॥

॥ गरबो कोणेने कोराव्यो के, नंदजीना लाल रे ॥  
 ए देशी ॥ पंचम सुमति जिनेसर सामी के ॥ सुण  
 जिन राय रे ॥ तुमथी नवनिधि रुद्रि में पामी के ॥  
 शिव सुख दाय रे ॥ तुं तो पावन परम नगीनो के  
 ॥ सु० ॥ अहनिश समता रसमां जीनो के ॥ सुरगुण  
 गाय रे ॥ १ ॥ मंगला मावडीयें प्रभु जाया के ॥  
 सु० ॥ ठप्पन दिशि कुंमरी दुलराया के ॥ हरख न  
 माय रे ॥ ताहरुं सुख लखमीनो वीरो के ॥ सु० ॥  
 तुं तो मेघनृपति कुल हीरो के ॥ हरि नत पाय रे  
 ॥ २ ॥ त्रणज्ञें धनुषनी लंची काया के ॥ सु० ॥ चा  
 लीश पूरव लाखनुं आयु के ॥ नागर राय रे ॥ तहा  
 री सेव करे सुरसामी के ॥ सु० ॥ तुंतो शिव सुंदरी

सुखकामी के ॥ निर्मल काय रे ॥ ३ ॥ तुंतो नक्त  
वत्सल जय टाले के ॥ सु० ॥ तुं तो त्रण चुवन अ  
जूआले के ॥ जिम दिनराय रे ॥ तुं तो मुनिजन मा  
नस दीवो के ॥ सु० ॥ अविचल ध्रुवमंमल चिरंजी  
वो के ॥ जिम गिरिराय रे ॥ ४ ॥ प्रभुजीनी वाणी  
अमीरस मीठी के ॥ सु० ॥ जिनजीनी मोहन मूर्ति  
दीठी के ॥ अति सुख आय रे ॥ श्री गुरु सुमतिवि  
जय कविराया के ॥ सु० ॥ सेवक रामविजय गुण  
गाया के ॥ जयो जिन राय रे ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री पद्मप्रज्जिन स्तवनं ॥

जूंखाडानी देशी ॥ श्री पद्मप्रज्ज जिन सेवियें  
रे, शिवसुंदरी जरतार ॥ कमल दल आंखडीयां ॥ मो  
हनखुं मन मोही रह्युं रे, रूप तणो नहिं पार ॥ नमुह  
धनु वांकडियां ॥ १ ॥ अरुण कमलसम देहडी रे,  
जगजीवन जिनराया ॥ वयण रस शेरडियां ॥ त्रीश पूरव  
लख आऊखुं रे, सारे वंछित काज ॥ मोहन सुखेलडि  
यां ॥ २ ॥ सहियरो सवि टोले अइ रे, शोले सजी शण  
गार ॥ मिलि सखि शेरडियां ॥ गुण गातो घुमरी दी  
ये रे, करी चूडी खलकार ॥ कमलमुख गोरडियां ॥ ३ ॥  
मात सुसीमा उरें धख्यो रे, मुऊ दिलडामांहे देव ॥  
वस्यो दिनरातडियां ॥ कोसंबी नयरी तणो रे, नाथ  
नमो नित्यमेव ॥ सुणो सखि वातडीयां ॥ ४ ॥ धनुष  
अढीशय शोजिती रे, उंच पणो जगदीश ॥ नमो साहे



लडियां ॥ रामविजय प्रभु सेवतां रे, लहियें सयल  
जगीश ॥ वधे सुख वेलडियां ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री सुपार्थ जिन स्तवनं ॥

॥ नायता रे तुमें चाव्या गढ आगरे रे  
लाल ॥ ए देशी ॥

॥ सेवजो रे सामी सुपास जिणैसरु रे ॥ लाल, पू  
जीयें धरी म रंग रे लाल ॥ मोरे मन मान्यो सा  
हेबो-रे लाल, प्रेमथी रे प्रीति बनी जिन राजशुं रे ॥  
लाल ॥ जेहवो चोलनो रंग रे लाल ॥ १ ॥ मोरे मन  
मान्यो साहबो रे लाल ॥ ए आंकणी ॥ धरजो रे  
धन पृथिवी राणी सती रे ॥ लाल ॥ जायो जेणें रतन  
रे लाल ॥ मोरे ॥ दीपती रे दिसिकुमरी आवी  
तिहां रे ॥ लाल, कइती कोडी जतन रे लाल ॥ मो ॥  
॥ २ ॥ जोरथी रे जिनमुख निरखी नाचती रे ॥ ला  
ल, हर्षती दीये आशीष रे लाल ॥ मो ॥ चाहती  
रे चिरंजीवो तुं बालुडा रे ॥ लाल, त्रण चुवनना ईश  
रे लाल ॥ मो ॥ ३ ॥ फावती रे फरती फूदडली  
दीये रे ॥ लाल, मदजर माती जेह रे लाल ॥ मो ॥  
नाथने रे नेह नयण जरी जोवती रे ॥ लाल, गुण  
गाती ससनेह रे लाल ॥ ४ ॥ आदरें रे एम दुल  
रावी बालने रे लाल, पोहोती ते निज गेह रे ला  
ल ॥ मो ॥ प्रेमशुं रे प्रभु वाधे मन मोहता रे ॥  
लाल, दोयसैं धनुषनी देह रे लाल ॥ मो ॥ ५ ॥  
रागथी रे राजकुमरी रलीयामणी रे ॥ लाल, परण्या

प्रभु सुविजास रे लाल ॥ मो० ॥ मानजो रे मोह  
तणे वरों माहरो रे लाल, नाथ रहे गृहवास रे ॥  
लाल ॥ मो० ॥ ६ ॥ नावथी रे जोग तजी दीक्षा  
वरी रे ॥ लाल, वीश पूरव लेख आय रे लाल ॥ मो० ॥  
जागतो रे ज्योति सरूपी जगदीसरू रे ॥ लाल, रामवि  
जय गुण गाय रे लाल ॥ मो० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री चंद्रप्रज जिनजीनुं स्तवन ॥

॥ रायजी अमें तो हिंडुआणी के, राय गराशीया  
रे लो ॥ ए देशी ॥ जिनजी चंद्रप्रज अवधारे के,  
नाथ नीहालजो रे लो ॥ के बमणी बिरुद गरीब  
नीवाजनी, वाचा पालजो रे लो ॥ १ ॥ हरखें हुं  
तुम शरणें आयो के, मुऊने राखजो रे लो ॥ चो  
रटा चार चुगल जे नूमा, ते दूरें नाखजो रे लो ॥  
॥ २ ॥ प्रभुजी पंचतणी परशंसा के, रूडी थापजो रे  
लो ॥ मोहन महेर करीने दरिसन, मुऊने आपजो  
रे लो ॥ ३ ॥ तारक तुम पालव में जाव्यो के, हवे  
मुने तारजो रे लो ॥ कुतरी कुमति थइ ठे केडें के,  
तेहने वारजो रे लो ॥ ४ ॥ सुंदरी सुमति सोहागण  
सारी के, प्यारी ठे घणुं रे लो ॥ तातजी तेविण  
जीवें चउद, जुवन कछुं आंगणुं रे लो ॥ ५ ॥ लेख  
गुण लेखमणा राणीना जाया के, मुऊ मन आवजो  
रे लो ॥ अनुपम अनुभव अमृत मीठी के, सुखडी  
लावजो रे लो ॥ ६ ॥ दीपती दोढशो धनुष प्रमाण  
के, प्रभुजीनी देहडी रे लो ॥ देवनी दश पूरव

लखमान के, आयुष्य बेलडी रेलो ॥ ७ ॥ निर्गुण  
निरागी पण हुं रागी के, मनमांहे रह्यो रे लो ॥  
शुनगुरु सुमतिविजय सुपसाय के, रामें सुख लह्यो  
रे लोल ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री सुविधि जिन स्तवनं ॥

॥ सोवन लोटा जलें नखा कुडाली दोरी ॥ शां शां  
दातण लेश रे, व्योने राम व्योने दोरी ॥ ए देशी ॥

॥ सुविधि जिणोसर जागतो, जग मोहन सामी ॥  
राय सुग्रीवनो नंद रे, वंदो लाल अंतरजामी ॥ १ ॥  
नरीय कचोली कुमकुमें, मांहे मृगमद घोली ॥ पूजो  
प्रभु नव अंग रे, रंगें लाल सह्यीर टोजी ॥ २ ॥  
केशरनी आंगी रची, मांहे हीरा दीपे ॥ जोर बन्यो  
जिनराज रे, तेजें लाल सूरज जीपे ॥ ३ ॥ मुकुट  
धख्यो शिर शोजतो, मणि रयण विराजे ॥ जलके कुं  
मल जोडी रे, हैयडे द्वार निर्मल बाजे ॥ ४ ॥ करी  
पूजा मन जावशुं, प्रभु हैयडे धरती ॥ धरती ठवती  
पाय रे, जोवे लाल जिनमुख फरती ॥ ५ ॥ काकंदी  
नयरी धणी, शत धनुषनी काया ॥ लाख पूरव दोय  
आय रे, नवमो लाल ए जिनराया ॥ ६ ॥ श्री सुमति  
विजय गुरुनामथी, नित्य मंगल माला ॥ रामविजय  
जयकार रे, जपतां लाल जिनगुण माला ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री शीतल जिन स्तवनं ॥

॥ पाटणनी पटोली रे, राजिंद लावजो रे लो ॥  
ए देशी ॥ श्री नदिलपुरना वासी रे, साहेब माहेरा रे ॥

श्रवणो ने सुणिया रे, गुण बहु ताहेरा रे ॥ सुण मोरा मीठडा सिरि जगवंत, केवल कमलाना हो कंत, सेवकने निज चरणे रे राजिंद राखजो रे ॥ १ ॥ साते ने वली राज रे, राजिंद अलगो वसे रे ॥ तिहां किए ने आवणने रे, मनहुं नहसे रे ॥ सुण मोरा साहे ब लाल गुलाल, सेवक नेह नयणें निहाल, नयणें नी लीला रे तारी तारण रे ॥ २ ॥ श्री शीतल जिन मुऊ मन, मंदिर आवजो रे ॥ शिवरमणीना रसीया रे, दिलमां लावजो रे ॥ प्रभुजी मोरा ताहं अकल सरूप, तुऊथी अगम नहिं मनरूप जीवडलो लल चाणो रे, प्रभुजीनी सूरतें रे ॥ ३ ॥ नेवुं धनुष परिमाणें रे, नंदा मातनो रे ॥ श्रीवज्रजंठन रे, दृढस्थ तातनो रे ॥ प्रभु मोरा अवधारो गुण गेह, जिनजी तुजशुं मुज मन नेह, नेहडलानी वातो रे, राजिंद दोहजी रे ॥ ४ ॥ वीनतडी सांजलीने रे, साहामुं जालजो रे ॥ जव जवनां पातकडां रे, अलगां टालजो रे ॥ प्रभु मोरा तुमें हो गरीब नीवाज, श्री गुरु सुमति विजय कविराज, बालक सेवकने रे, लेखे आणजो रे ॥ ५ ॥ इति शीतल जिन स्तवनं ॥

॥ अथ श्री श्रेयांस जिन स्तवनं ॥

॥ विजल बोलावा हुंगइ, कांइ उजी सेरी विच्च ॥

विजल वालमा ॥ ए देशी ॥

॥ तारक बिरुद सुणी करी, हुं आवी उजो दरबार ॥ श्रेयांस साहेबा ॥ प्रभु ताणो ताण नकी

जिएं ॥ मुज उत्तारो नवपार ॥१॥ श्रेयांस साहेबा ॥  
 कालादिक दूषण दाखतां, दातारपणुं केम थाय ॥  
 श्रे० ॥ जो विण अवलंबन तारीएं, तो जग सघलुं  
 जश गाय ॥ श्रे० ॥२॥ श्रेयांस० ॥ बालकने समजा  
 ववा, कदेशो जोलामणे वा ॥ श्रेयांस० ॥ पण ह्व  
 लीधो मुकीश नही, विणतारे त्रिचुवन तात ॥ श्रे०  
 ॥ ३ ॥ श्रे० ॥ जो मन तारणनुं अठे, तो ढील तणुं  
 शुं काम ॥ श्रे० ॥ चातक निरमुख दूषणे, थइ मेघ  
 घटा जग श्याम ॥ श्रे० ॥ ४ ॥ श्रे० ॥ तुज दरि  
 सनथी ताहेरो, हुं कहेवाणो जगमांहे ॥ श्रे० ॥  
 ॥ हवे मुक्त कोण लोपी शके, बलीयानी जाली  
 बांह ॥ श्रे० ॥ ५ ॥ श्रे० ॥ विष्णुकुमर वाले  
 सरू, प्रनु सिंहपुरीनो राय ॥ श्रे० ॥ लाख चोराशी  
 वरसनं, प्रनु पाव्युं पूरण आय ॥ श्रे० ॥ ६ ॥ श्रे०  
 ॥ धनुष अंशी तनु शोचतुं, खडगी लंठन जगदीश ॥  
 श्रे० ॥ हरख धरीने वीनवे, श्री सुमतिविजय गुरु  
 शिष्य ॥ श्रे० ॥ ७ ॥ इति ॥ श्रेयांस स्तवनं

॥ अथ श्री वासुपूज्य जिन स्तवनं ॥

॥ नंदना गोवालीया ॥ ए देशी ॥ श्री वासुपूज्य  
 नरिंदना, नंदन जन नयणानंद ॥ श्री जिन वालहा ॥  
 प्रभु किम आवुं तुम उलगें, मारे कूडो कुटुंबनो फंद  
 ॥ १ ॥ श्री जिन सांजलो ॥ कुमति रमणी मोहनं  
 दनी, मुज केड न मूके तेह ॥ श्री जि० ॥ मित्र मिल्यो  
 ते लोनीउ, लागो तेहशुं बहुनेह ॥२॥ श्री जिन०॥

त्रेवीश मित्या धूतारडा, तेहना वली नव नवा रंग ॥ श्री  
 जिन० ॥ अह निश तेणे हुं नोलव्यो, न धव्यो प्रभु सार्थे  
 रंग ॥ ३ ॥ श्री जिन० ॥ प्रभु दरशनें तरसे घणुं,  
 जिन मुज मनहुं दिन रात ॥ श्री जिन० ॥ पण दश  
 त्रण आमा रहे, जे नीच घणुं कमजात ॥ ४ ॥ श्री  
 जिन० ॥ कूडो कलियुग आजनो, बहु गामरीयो पर  
 वाह ॥ श्री० ॥ ताहरुं रूप न उलखे, नही शुद्ध धर  
 मनी चाह ॥ ५ ॥ श्री० ॥ प्रभु दरशन विण जीव  
 डा, करता दीसे व्यवहार ॥ श्री० ॥ तेणे जग्मे जूला  
 घणा, प्रभु दोहिलो लोकाचार ॥ ६ ॥ श्री जिन० ॥  
 वरस बहोंतेर लख आउखुं, नोरी सीतेर धनुष्य तटु  
 सार ॥ श्री० ॥ श्री रामविजय करजोडीने, कहे उ  
 तारो नवपार ॥ ७ ॥ श्री जिन० ॥ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री विमलनाथ जिन स्तवनं ॥

॥ फूल बारीयां बारीयां शुं करो, फूल नोजन करता ॥

॥ जाउ रे ॥ बारीयां फूलजी ॥ ए देशी ॥

॥ जिन विमलवदन रलीयामणुं, जाणे कनक  
 कमलनो राय रे ॥ विमल जिणंदजी ॥ जिन अधर  
 अमीरस नूमिनो, प्रतिबिंबित बिंब सुहाय रे ॥ १ ॥  
 विमल जिणंदजी ॥ जिन अनुपम रूपनी रेखमां,  
 नवि आवे सुरना इंद रे ॥ विमल० ॥ जिन मुख टी  
 को नीको बन्यो, मानुं उग्यो उज्ज्वल चंद रे ॥ २ ॥  
 विमल० ॥ जिन दाडिम कली जेम उपती, अति दीपे  
 दंतनी उल रे ॥ विमल० ॥ ए अरुण अधर ठवीथी

मल्या, मानुं मुक्ताफल समतोल रे ॥ ३ ॥ विमल० ॥  
 जिन अकल अरूपी रूप ठे, पण सकल सरूपी जाण  
 रे ॥ विमल० ॥ जिन अगणित गुणना दोरथी,  
 मन मांकडुं बांध्युं ताण रे ॥ ४ ॥ विमल० ॥ जिन  
 शिव सुखदायक सांजली, हुं हरख्यो हैडा मांहे  
 रे ॥ विमल० ॥ जिन इकतारी तुज शुं करी, जिम  
 चंदचकोरी चाहे रे ॥ ५ ॥ विमल० ॥ प्रभु एवडी  
 विमासण शुं करो, नही खोट खजाने तुज रे ॥  
 विमल० ॥ जो नापो तो सहामुं जूउ, तो वंढित  
 फलझे मुज रे ॥ ६ ॥ विमल० ॥ सुत कृतवर्मा श्यामा  
 तणो, शाठ लाख धनुष तनु आय रे ॥ विमल० ॥  
 श्री सुमतिविजय कविरायनो, एम रामविजय गुण  
 गाय रे ॥ विमल० ॥ ७ ॥ इति विमल० ॥

॥ अथ श्री अनंत जिन स्तवनं ॥

॥ सावर मलीयें आव्या ठे नरपूर जो ॥ ए देशी ॥

॥ सुजसा नंदन जगदानंदन नाथ जो, नेहें रे  
 नव रंगें नित नित नेटीयें रेलो ॥ नेख्याथी शुं थाये  
 मोरी सहीयो जो, नव नवनां पातिकडां अलगां  
 मेटीयें रेलो ॥ १ ॥ सुंदर साडी पेहेरी चरणा चीर  
 जो, आवोने चढुवटडे जिनगुण गाइयें रेलो ॥ जिन  
 गुण गाये शुं थाय मोरी बहेनी जो, परनव रे  
 सुरपदवी सुंदर पामीयें रेलो ॥ २ ॥ सहीयर टोली  
 नोली परिगल नावें जो, गावे रे गुणवंती हैयडे गह  
 गही रेलो ॥ जय जग नायक शिव सुखदायक देव

जो, लायक रे तुज सरिखो जगमां को नही रेलो ॥  
 ॥ ३ ॥ परम निरंजन निर्जित जय जगवंत जो, पा  
 वन रे परमात्म श्रवणें सांजव्यो रेलो ॥ पामी हवे  
 में तुऊ शासन परतीत जो, ध्यानें रे एकतानें प्रभु  
 आवी मव्यो रेलो ॥ ४ ॥ उंचपणो पंचाश धनुपनुं  
 मान जो, पाव्युं रे वली आयुष लाखज त्रीशनुं रे  
 लो ॥ श्रीगुरु सुमति विजय कविराय पसायें जो, अहो  
 निश रे दिल ध्यान वसे जगदीशनुं रेलो ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री धर्म जिन स्तवनं ॥

॥ बाइ रे गरबडो ॥ ए देशी ॥ धर्म जिनेसर सेवीयें  
 रे, जानु नरेशर नंद ॥ बाइ रे जिन वडो ॥ जिन  
 ध्यानें दुःख वीसखुं रे, हुं पामी परमानंद ॥ बा० ॥  
 ॥ १ ॥ रत्नजडित सिंहासनें रे, बेसे श्री जगवान ॥  
 बा० ॥ मुह आगल नाचे सुरी रे, इंद करे गुण  
 गान ॥ बा० ॥ २ ॥ प्रभु वरसे तिहां देशना रे, जिम  
 आपाढो मेह ॥ बा० ॥ ताप टले तननो परो रे, वाधे  
 वमणो नेह ॥ बा० ॥ ३ ॥ अणवायां गयणो घुरे  
 रे, वाजित्र कोडा कोड ॥ बा० ॥ ताथेइ नाचे  
 किन्नरी रे, हींमे मोडामोड ॥ बा० ॥ ४ ॥ आयु  
 वरष दश लाखनुं रे, धनु पण चालिश मान ॥  
 बा० ॥ रामविजय जिन नामथी रे, लहीयें नवे  
 निधान ॥ बा० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री शांति जिन स्तवनं ॥

॥ सुंदर शांति जिणंदनी, ठबि ठाजे ठे ॥ प्रभु गंगा



जल गंजीर, कीर्ति गाजे ठे ॥ गजपुर नयर सोहामणुं,  
 घणुं दीपे ठे ॥ विश्वसेन नरिंदनो नंद, कंदर्प जीपे  
 ठे ॥ १ ॥ अचिरा मातायें उर धख्यो, मन रंजे ठे ॥  
 मृगलंठन कंचन वान, जावठ चंजे ठे ॥ २ ॥ प्रभु  
 लाख वरस चोथे जागें, व्रत लीधुं ठे ॥ प्रभु पाम्या  
 केवल ज्ञान, कारज सीधुं ठे ॥ ३ ॥ धनुष चालीशनुं  
 ईशनुं, तनु सोहे ठे ॥ प्रभु देशना धुनि वरसंत, नवि  
 पडिबोहे ठे ॥ ४ ॥ नक्तवत्सल प्रभुता नणी, जन तारे  
 ठे ॥ बूडंतां नवजल मांहि, पार उतारे ठे ॥ ५ ॥ श्री सु  
 मति विजय गुरुनामथी, दुःख नासे ठे ॥ कहे रामवि  
 जय जिन ध्यान, नवनिधि पासें ठे ॥ ६ ॥ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री कुंशुनाथ स्तवनं ॥

॥ देशी रसीयाना गीतनी ठे ॥ रसीया कुंशु जिने  
 सर केसर, जीनी देहडी रे लो ॥ मारा नाथजी रे लो ॥  
 रसीया मन चंढित वर पूरण, सुरतरु वेलडी रे लो ॥  
 महारा० ॥ रसीया अंजन रहित निरंजन, नाम हृष्ट  
 धरो रे लो ॥ महारा० ॥ रसीया जुगतें करी मन जगतें,  
 प्रभु पूजा करो रे लो ॥ १ ॥ महारा० ॥ रसीया श्री नंदन  
 आनंदन, चंदनथी सिरे रे लो ॥ महारा० ॥ रसीया  
 ताप निवारण तारण, तरण तरीपरें रे लो ॥ महा  
 रा० ॥ रसीया मनमोहन जग सोहन, कोह नहि कि  
 स्यो रे लो ॥ महारा० ॥ रसिया कूडा कलियुग मांहे,  
 अवर न को इस्यो रे लो ॥ महारा० ॥ २ ॥ रसीया  
 गुण संजारी जाउं, बलिहारी नाथनें रे लो ॥ महारा० ॥

रसीया कोण प्रसादें ठांमे, शिवपुर साथनें रे लो ॥  
 महारा० ॥ रसीया काच तणे कोण कारण, नाखे सुर  
 मणि रे लो ॥ महारा० ॥ रसीया कोण चाखे विष फल  
 ने, मेवा अवगणी रे लो ॥ ३ ॥ महारा० ॥ रसीया  
 सूर नृपति सुत ठावो, चावो चिहुं दिशे रे लो ॥  
 महारा० ॥ रसीया वरस सहस पंचाणुं, जिन पुहवी  
 वसे रे लो ॥ महारा० ॥ रसीया त्रीश धनुष पण उपर,  
 उंचपणे प्रभु रे लो ॥ महारा० ॥ रसीया त्रण जुवन  
 नो नाथ के, थइ बेगो बिभु रे लो ॥ ४ ॥ महारा० ॥  
 रसीया अजलंढन गत लंढन, कंचनवान ठे रे लो ॥  
 महारा० ॥ रसीया रुद्रि पूरे दुःख चूरे, जेदने ध्या  
 न ठे रे लो ॥ महारा० ॥ रसीया बुध श्री सुमति विज  
 य कवि, सेवक बीनवे रे लो ॥ महारा० ॥ रसीया  
 राम कहे जिनशासन, नवि मूकुं हवे रे लो ॥ ५ ॥

॥ अथ श्री अरनाथ जिन स्तवनं ॥

॥ सींचजो रे वाडीमांनी वेज, सींचजो कटारो केवडो ॥  
 ॥ रे ॥ ए देशी ॥

॥ गायजो रे धरी उद्धास, अर जिनवर जगदीस  
 रू रे ॥ मानजो रे एह महंत, महीयल मांहे वालेस  
 रू रे ॥ १ ॥ ध्याइजो रे दृढ करी चित्त, मन वंछित  
 फल पूरजे रे ॥ वारजो रे अवरनी सेव, एहिज शंका  
 चूरजे रे ॥ २ ॥ सींचजो रे सुमतीनी वेज, जिन गुण  
 ध्यान नीरें घणुं रे ॥ संपजे रे समकित फूल, के  
 वल फल रलियामंणुं रे ॥ ३ ॥ पुण्यथी रे देवी नंद, नय

ऐं निरख्यो नेहथी रे ॥ उपनो रे अति आनंद, दुःख  
अलगां थयां जेहथी रे ॥ ४ ॥ शोजती रे त्रीश धनु  
पनी काय, राय सुदर्शन वंशनो रे ॥ आउखुं रे जि  
नजीनुं सार, सहस चोराशी वरसनुं रे ॥ ५ ॥ जिन  
राजने रे करुं परणाम, काज सरे सवि आपणुं रे ॥  
जावथी रे नक्ति प्रमाण, दरिसन फल पामे घणुं  
रे ॥ ६ ॥ सेवजो रे अरपद अरविंद, जो शिव सुख  
नी कामना रे ॥ राखजो रे प्रभु हृदय मोऊार, राम  
वधे जग नामना रे ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री मल्लीनाथ जिन स्तवनं ॥

॥ एक अंधारी रे रातडी ॥ ए देशी ॥ मिथिला  
नयरी रे अवतखा, याने कुंज नरेशर नंद ॥ लंठन  
शोहे रे कलश तणुं, ने नील वरण सुखकंद ॥ १ ॥  
मल्ली जिनेसर मन वस्यो ॥ ने उगणीशमो अरिहंत,  
कपट धर्मना रे कारणथी, प्रभु कुमरी रूप धरंत ॥  
म० ॥ २ ॥ सहस पंचावन रे वरस सुणो, ने आ  
युतणुं परिमाण ॥ मात प्रजावती रे उर धस्यो, पण  
वीश धनुषतनु मान ॥ म० ॥ ३ ॥ सहस पंचावन रे  
साधवीयो, ने मुनि चालीस हजार ॥ समेतशिखरें  
रे मुगतें गया, ने त्रण जुवन आधार ॥ म० ॥ ४ ॥  
अड नय टाली रे आपयकी, ने जेणे बांधी अवि  
हड प्रीत ॥ रामविजयना रे साहेबनी, ठे अविच  
ल एहज रीत ॥ म० ॥ ५ ॥ इति मल्लिजिन० ॥

॥ अथ श्री मुनिसुव्रत जिन स्तवनं ॥

॥ हरनी ह्मची रे ॥ ए देशी ॥ आवो रे आवो  
 रे सखी देहरे जइएँ, प्रभु दरिसन करी निरमल थइ  
 एं ॥ गावो गावो रे हरख अपार, जिन गुण गरवो रे  
 ॥ तुमें पेहेरो शोल शणगार ॥ जिन गुण गरवो रे ॥  
 मारे लाखेणो ए वार ॥ जिन० ॥ दोहेलो मानव अ  
 वतार ॥ जिन० ॥ १ ॥ पद्मा देवी नंदन नीको ठे  
 प्रभु राय सुमित्र कुल टीको ठे ॥ नमो नमो रे एही  
 ज नाथ ॥ जिन० ॥ फोगट शी करवी वात ॥ जिन० ॥  
 कूडो लागे नेहनी लात ॥ जिन० ॥ २ ॥ कञ्ज लंठन  
 प्रभु पाया ठे, जिन वीश अनुपनी काया ठे ॥ त्रीश  
 सहस वरसनुं आय ॥ जिन० ॥ मारे हइडे हरख न  
 माय ॥ जिन० ॥ एहनी सेवाथी सुख थाय ॥ जिन० ॥  
 मारा दुःखडां दूरें जाय ॥ जिन० ॥ ३ ॥ प्रभु श्याम  
 वर्ण विराजे ठे, मुखडुं देखी विधु लाजे ठे ॥ एने  
 मोही मोही हरिनी नार ॥ जिन० ॥ जे करे लुंठणडां  
 सार ॥ जिन० ॥ प्रभु नयण तणे मटकार ॥ जिन० ॥  
 तेथी लागो प्रेम अपार ॥ जिन० ॥ ४ ॥ प्रभु हृदय  
 कमलनो वासी ठे, शिवरमणी जेहनी दासी ठे ॥  
 हुंतो तेह तणोबुं दास ॥ जिन० ॥ मारी पूरे मन  
 डानी आश ॥ जिन० ॥ प्रभु अविचल लीलविलास ॥  
 जिन० ॥ रामविजय कहे उल्लास ॥ जिन० ॥ ५ ॥

(१६५)

॥ अथ श्री नमी जिन स्तवनं ॥

॥ दोशीडाने हाटें जाजो लाल, लाल कसुंबो ॥

॥ जीजे ठे ॥ ए देशी ॥

॥ कांइ विजय नरेशर नंदन लाल, विप्रा सुत  
मन मोहे ठे ॥ निखुत्पललंठन पाए लाल, सोवन  
वान तनु शोहे ठे ॥ १ ॥ मिथिला नयरीनो वासी  
लाल, शिवपुरनो मेवासी ठे ॥ मुनि वीशसहस जश  
पासैं लाल, तेज कला सुविलासी ठे ॥ २ ॥ प्रभु पंदर  
धनुष परिमाणे लाल, जगमां कीरति व्यापी ठे ॥ प्रभु  
जीवदयाने आपो लाल, सुमति लता जिणें थापी  
ठे ॥ ३ ॥ नमीनाथ नमो गुण खाणी लाल, अक्य  
वली अविनाशी ठे ॥ तेणें वात सकल ए जाणी ला  
ल, जेहने आशा दासी ठे ॥ ४ ॥ श्री सुमति विजय गुरु  
नामें लाल, कीर्ति कमला बाधी ठे ॥ कहे रामविजय  
जिन ध्यानैं लाल, अविचल लीला लाधी ठे ॥ ५ ॥

॥ अथ श्री नेमीनाथ जिन स्तवनं ॥

॥ अमें तुमारा ठोरुडां गुण जाणोठो के ना ॥

॥ ए देशी ॥

॥ राजुज कहे पिया नेमजी, गुण जानो ठो के  
ना ॥ केम ठोडी चाल्या निरधार, हे गुण मानो ठो  
के ना ॥ पुरुष अनंते जोगवी ॥ गुण० ॥ पीयु शुं  
मोही रह्या तेणे नार, हे गुण० ॥ १ ॥ कोडी गमे  
जेहने चाहे ॥ गुण० ॥ श्यो ते नारीथी रंग ॥ हे गु  
ण० ॥ पण जग उखाणो कह्यो ॥ गुण० ॥ होवे

सरिस्ता सरिसो संग ॥ हे गुण० ॥ १ ॥ हुंगुण  
 वंती गोरडी ॥ गुण० ॥ ते निर्गुण निहेजी नार ॥  
 हे गुण० ॥ हुं सेवक हुं राउली रे ॥ गुण० ॥ ते सामुं  
 न जुवे लगार ॥ हे गुण० ॥ ३ ॥ जगमां ते गुण  
 आगली ॥ गुण० ॥ जेणे वश कीधो नरतार ॥  
 हे गुण० ॥ मन वैरागें वालीयुं ॥ गुण० ॥ जे रा  
 जुल संजम नार ॥ हे गुण० ॥ ४ ॥ बहेनीने मलवा  
 नणी ॥ गुण० ॥ पीयु पेहेली तेह जाय ॥ हे गु  
 ण० ॥ संग लइ ते नारने ॥ गुण० ॥ रही अनुनव  
 गुं लयलाय ॥ हे गुण० ॥ ५ ॥ समुद्र विजय कुल  
 चंदलो ॥ गुण० ॥ शिवादेवी मात मलार ॥ हे गु  
 ण० ॥ वरस सहस एक आउखुं ॥ गुण० ॥ सोरी  
 पुरनो सिएगार ॥ हे गुण० ॥ ६ ॥ देह धनुष दश दीपती ॥  
 गुण० ॥ प्रभु ब्रह्मचारी जगवंत ॥ हे गुण० ॥ राजु  
 लवर मुने वालहो ॥ गुण० ॥ कहे रामविजय जयवंत ॥  
 हे गुण० ॥ ७ ॥ इति नेमिजिनस्तवनं ॥

॥ अथ श्री पारसनाथ जिन स्तवनं ॥

॥ ऊटणीना गीतनी देशी ॥ सेवो नविजन जिन  
 त्रेवीशमा, लंठन नाग विख्यात ॥ जलधर सुंदर  
 प्रभुजीनी देहडी, वामा राणीनो जात ॥ सेवो नवि  
 जन जिन त्रेवीशमा ॥ १ ॥ चिहुं दिशें घोरघटा  
 धनगुं मव्यो, कमठें रच्यो जलधार ॥ मुशल धारें जल  
 वरसे घणुं, जल थल न लहुंजी पार ॥ सेवो० ॥ २ ॥  
 वड हेठल वाहालो काउस्सग रह्यो, मेरुतणी परें

धीर ॥ ( ध्यान शुक्ल बीजुं पद ध्यावतो ) ध्यान  
तणी धारा वाधे तिहां, चढियां उंचांजी नीर ॥ से  
वो० ॥ ३ ॥ अचल न चलियो प्रभुजी माहरो, पाम्यो  
केवल ज्ञान ॥ समवसरण सुरकोडी मिठ्या तिहां,  
वाज्यां जीत निशाण ॥ सेवो० ॥ ४ ॥ नव कर ऊंच  
पणे प्रभु शोजता, अश्वसेन रायनो नंद ॥ प्रगट पर  
ता पूरण पासजी, दीठे होवे आनंद ॥ सेवो० ॥ ५ ॥  
एक शत वरसनुं आउखुं जोगवी, पाम्या अविचल रुद्ध  
॥ श्रीसुमतिविजय गुरु नामथी, राम लहे वर सिद्ध ॥  
सेवो० ॥ ६ ॥ इति पार्श्वजिनस्तवनं ॥

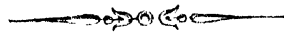
॥ अथ श्री महावीर जिन स्तवनं ॥

॥ गरबी पूठे रे महारा गरबडा रे ॥ ए देशी ॥

॥ चरण नमी जिनराजनां रे, मागुं एक पमा  
य ॥ महारा लाखेणा स्वामी रे तुने वीनवुं रे ॥ म  
हेर करो मारा नाथजी रे, दास धरो दिलमांहे ॥  
महारा० ॥ १ ॥ पतित घणा तें उद्धर्या रे, बिरुद्ध  
गरीब निवाज ॥ महारा० ॥ एक मुजने वीसारतां  
रे, शे नावे प्रभु लाज ॥ महारा० ॥ २ ॥ उत्तम  
जन धनसारीखा रे, नवि जोवे ठाम कुठाम ॥ म  
हारा० ॥ प्रभु सुनजरें करुणाथकी रे, लहीयें अ  
विचल धाम ॥ महारा० ॥ ३ ॥ सुत सिद्धारथ रा  
यनो रे, त्रिशलानंदन वीर ॥ महारा० ॥ वरस  
बोहोंतेर आउखुं रे, कंचनवान शरीर ॥ महारा० ॥  
॥ ४ ॥ मुख देखी प्रभु ताहरुं रे, पाम्यो परमा

नंद ॥ महारा० ॥ हृदय कमलनो हंसलोरे,  
 मुनिजन कैरव चंद ॥ महारा० ॥ ५ ॥ तुं समरथ  
 शिर नाहलो रे, तो बाधे जशपूर ॥ महारा० ॥  
 जीत निशानना नादथी रे, नाठा डुशमन दूर ॥ म  
 हारा० ॥ ६ ॥ श्री सुमति सुगुरु पद सेवना रे, कल्प  
 तरुनी बांहे ॥ महारा० ॥ रामप्रभु जिन वीरजी रे,  
 ठे अवलंबन बांहे ॥ महारा० ॥ ७ ॥ इति ॥ कलश ॥  
 एम जुवन जाषण डुरित नाशन, विमल शासन  
 जिनवरू ॥ नव नीति चूरण आशपूरण, सुमति का  
 रण शंकरू ॥ में घुण्यो जगनें विविध जुगतें, नगर म  
 हीराणे रही ॥ श्रीसुमति विजय गुरु चरण सानि  
 धि, रामविजय जयश्री लही ॥ १ ॥ इति पंक्ति श्री  
 रामविजय कृत चोवीशी संपूर्ण ॥

॥ अथ पंक्ति श्री मोहनविजयजीकृत  
 चोवीसजिनस्तवनं प्रारंभः ॥



॥ तत्र प्रथम ॥ श्रीरुबनजिन स्तवनं ॥

त्रीजे नव वरथानक तप करी ॥ ए देशी ॥  
 बालपणे आपण ससनेही, रमता नव नव वेशें ॥  
 आज तुमें पाय्या प्रभुताइ, अमें संसार निवे  
 शेंहो प्रभुजीओलंजमे मत खीजो ॥ ए आंकणी ॥  
 ॥ १ ॥ जो तुम ध्यातां शिव सुख लहीयें,  
 तो तुमने केइ ध्यावे ॥ पण नव स्थिति परिपाक



थया विण, कोइ न मुगति जावे हो ॥ १ ॥ प्र० ॥  
 सिद्ध निवास लहे नवि सिद्धि, तेमां शो पाड तुमा  
 रो ॥ तो उपगार तुमारो वहिएं अजब्य सिद्धने तारो  
 हो ॥ ३ ॥ प्र० ॥ नाण रयण ामी एकंतें, थइ बेठा  
 मेवासी ॥ ते मांहेलो एक अंश जो आपो, ते वातें शा  
 वासी हो ॥ ४ ॥ प्र० ॥ अक्षय पद देतां नवि जनने,  
 संकीर्णता नवि थाय ॥ शिव पद देवा जो समरथ ठो,  
 तो जस लेतां शुं जाय हो ॥ ५ ॥ प्र० ॥ सेवा गुण  
 रंज्यो नविजनने, जो तुमें करो वडनागी ॥ तो तुमें  
 स्वामी केम कहावो, निरमम ने नीरागी हो ॥ ६ ॥  
 प्र० ॥ नाजिनंदन जनवंदन प्यारो, जग गुरु जग ज  
 यकारी ॥ रूपविबुधनो मोहन पनणे, वृषज लंठन ब  
 लिहारी हो ॥ ७ ॥ प्र० ॥ इति ॥

॥ अथ श्री कृष्ण जिन स्तवनं ॥

॥ आज हजारी ठोलो प्रादुणो ॥ ए देशी ॥ प्रथम  
 तीर्थंकर सेवना, साहिबा उदित हृदय ससने ह ॥ जिणंद  
 मोरा हे ॥ प्रीत पुरातन सांजरे, साहिबा रोमांचित  
 शुचिदेह ॥ जि० ॥ १ ॥ आदिजिणंद जुहारीयें ॥ साहि  
 बा कृष्णजी० ॥ ए आंकणी ॥ अगम अलौकिक पंथडो,  
 साहिबा कागल पण न लखाय ॥ जि० ॥ अंतरगत  
 नी वातडी, साहिबा जण जणनें न कहाय ॥ जि० ॥  
 आदि० ॥ २ ॥ कोडि टकानी हो चाकरी, साहिबा प्रा  
 पति विण न लहाय ॥ जि० ॥ मनडुंजी मलवाने उ  
 महे, साहिबा किम करी मेजो थाय ॥ जि० ॥ आ०

॥ ३ ॥ दूरथकां पण साजनां, साहिबां सांनरे नव  
 रंग रीत ॥ जि० ॥ पूरवपुण्यें पामियें, साहिबा परम पुरु  
 षणुं प्रीत ॥ जि० ॥ आ० ॥ ४ ॥ मत मत नय नय  
 कल्पना, साहिबा इतरेतर परिमाण ॥ जि० ॥ रूप  
 अगोचर नवि लहे, साहिबा विवदे मां हि अयाण ॥  
 जि० ॥ आ० ॥ ५ ॥ सम दम शुद्ध स्वभावमां सा  
 हिबा प्रनु तुम रूप अखंम ॥ जि० ॥ जगत वंदित  
 संलीनता, साहिबा एहथी प्रगट प्रचंम ॥ जि० ॥ आ०  
 ॥ ६ ॥ करुणा रस संज गथी, साहिबा दीगो नवल  
 दिदार ॥ जि० ॥ रूप विबुध कविराजनो, साहिबा  
 मोहन जय जय कार ॥ जि० ॥ आ० ॥ ७ ॥ इति  
 ॥ अथ श्री अजित जिन स्तवनं ॥

॥ कांवल रोपाणी लागणो ॥ ए देशी ॥

॥ उलग अजित जिणंदनी, माहारे मन मानी ॥  
 मालती मधुकरनी परें, बनी प्रीत अबानी ॥ १ ॥  
 वारी हुं जित शत्रु सुत तणा, मुखडाने मटके ॥ ए  
 आंकणी ॥ अवर कोइ जाचूं नही, विण सामी सुरं  
 गा ॥ चातक जिम जलधर विना, नवि सेवे गंगा ॥  
 २ ॥ वा० ॥ ए गुण प्रनु केम वीसरे, सुणी अन्य  
 प्रशंसा ॥ ठीलर जल किणविध रति धरे, मान  
 सरना हंसा ॥ ३ ॥ वा० ॥ शिव एक चंदकला  
 थकी, लही ईश्वरताइ ॥ अनंत कलाधर में धखो,  
 मुज अधिक पुण्याई ॥ ४ ॥ वा० ॥ तुं धन तुं मन  
 तन तुंही, ससमेहा स्वामी ॥ मोहन कहे कवि

रूपनो, जिन अंतरजामी ॥ वा० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री अजित जिन स्तवनं ॥

॥ मोतिडानी देशी ॥

॥ अजित अजित जिन अंतर जामि, अरज करुं  
 बुं प्रचु शिर नामि ॥ साहिबा ससनेही सुगुणनी, वा  
 तडी कहुं केही ॥ आपण बालपणाना स्वदेशी, तो हवे  
 किम थाउं ठो विदेशी ॥ सा० ॥ १ ॥ पुण्य अधिक तुमें  
 हुआ जिणंदा, आदि अनादि अमें तो बंदा ॥ सा० ॥  
 जो प्रचु पाम्या ठो प्रचुताइ, दास निवाजियें तो ठे व  
 डाइ ॥ सा० ॥ २ ॥ ताहरे आज मणा ठे शानी, तुंदिज ली  
 लावंत तुं झानी ॥ सा० ॥ तुजविण अन्यने कां नथी  
 ध्याता, तो जो तुं ठे लोक विख्याता ॥ सा० ॥ ३ ॥  
 एकने आदर एकने अनादर, इम किम घटे तुजने कर  
 णाकर ॥ सा० ॥ दक्षिण वाम नयन बिहुं सरखी, कुण  
 उठी कुण अधिकी परखी ॥ सा० ॥ ४ ॥ सामता मुजथी  
 न राखो स्वामी, शी सेवकमां देखो ठो स्वामी ॥ सा० ॥  
 जे न लहे सनमान स्वामिनो, तो तेहने कहे सहुको  
 कमिनो ॥ सा० ॥ ५ ॥ रूपातीत जो मुजथी आशो,  
 ध्याशुं रूप करी किहां जाशो ॥ सा० ॥ जडपरमाणु  
 अरूपी कहीयें, महत् संजोगेंशुं, रूपी न यश्यें ॥  
 सा० ॥ ६ ॥ धन जो उलगें किमपि न देवे, जो दिन  
 मणि कनकाचल सेवे ॥ सा० ॥ एहवुं जाणीहुं तुजने  
 सेवुं, ताहरे हाथ ठे फलनुं देवुं ॥ सा० ॥ ७ ॥ तुज  
 पय पंकज मुज मन वलशुं, जाये किहां ठंमीने अ

लगुं ॥ सा० ॥ मुकर मयगलमद पी राचे, पण शुने  
मुखें लालच नवि माचे ॥ सा० ॥ ७ ॥ तारक विरुद क  
हावो ठो मोहोटा, तो मुज्जयी किम थाउं ठो खोटा ॥  
सा० ॥ रूपविबुधनो मोहन नांखे, अनुजव रम आ  
णंदशुं चाखे ॥ सा० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री संजव जिन स्तवनं ॥

॥ आधा आम पधारो पूज्य० ॥ ए देश ॥

॥ समकितदाता समकित आपो, मन मागे थड  
धीतुं ॥ ठति वस्तु देतां शुं शोचो, मीतुं जे सहुएं  
दीतुं ॥ १ ॥ प्यारा प्राण यकी ठो राज, संजव जिन  
वर मुज्जने ॥ ए आंकणी ॥ इम जाणो जे आपें लहीएं,  
ते लाधुं शुं लेवुं ॥ पण परमारथ प्रीढी आपे, तेहज  
कहीयें देवुं ॥ प्या० ॥ २ ॥ अर्थी हुं तुं अर्थ सम  
र्पक, इम मत करजो हांसुं ॥ प्रगट न हतुं तुमने  
पण पहिलां, ए हांसानुं पासुं ॥ प्या० ॥ ३ ॥ परम  
पुरुष तुमें प्रथम नजीने, पाम्या ए प्रचुताई, तिण  
रूपें तुमने इम नजीयें, तिणें तुम हाथ वडाइ ॥  
प्या० ॥ ४ ॥ तुमे स्वामी हुं सेवा कामी, मुज्जरे स्वामी  
निवाजे, नहि तो हठ मांझी मागतां, किएविध सेदक  
लाजे ॥ प्या० ॥ ५ ॥ ज्योतें ज्योति मिले मत प्रीढो,  
कुण लहेशे कुण नजशे ॥ साची नक्ति ते हंसतणी  
परें, खीर नीरमय करशे ॥ प्या० ॥ ६ ॥ उलंग कीधी  
जे लेखें आवी, चरण नेट प्रचु दीधी ॥ रूपविबुधिनो  
मोहन पनणो, रसना पावन कीधी ॥ प्या० ॥ ७ ॥

॥ अथ श्री अजिनंदन जिन स्तवनं ॥

॥ आठे लालनी देशी ॥

॥ अकल कला अविरुद्ध, ध्यान धरे प्रतिबुद्ध ॥  
 आठे लाल, अजिनंदन जिन चंदना जी ॥ रोमांचित  
 थइ देह, प्रगट्यो पूरण नेह ॥ आ० ॥ चंड ज्युं वन  
 अरवंदना जी ॥ १ ॥ एको खिए मन रंग, परम  
 पुरुषनो संग ॥ आ० ॥ प्राप्ति होवे तो पामीयें जी ॥  
 सुगुण सजूणी गोठ, जिम साकर नरी पोठ ॥ आ० ॥  
 विण दामे विवसाइयें जी ॥ २ ॥ स्वामी गुण मणि  
 तुऊ, निवसे मनडे मुऊ ॥ आ० ॥ पण कहियें ख  
 टके नही जी ॥ जिम रज नयणे विलग्न, नीर ऊरे निर  
 वग्न ॥ आ० ॥ पण प्रतिबिंब रहे सासही जी ॥ ३ ॥  
 में जाच्या केइ लक्ष; तारक जोले प्रत्यक्ष ॥ आ० ॥ पण  
 को साच नाव्यो वर्गे जी ॥ मुऊ बहु मैत्री देख, प्रभु  
 मत मूको उवेख ॥ आ० ॥ आतुर जन बहु उलगे  
 जी ॥ ४ ॥ जग जोतां जगनाथ, जिम तिम आव्या  
 हाथ ॥ आ० ॥ पण रखे हवे कुमया करो जी ॥  
 बीजा स्वारथी देव, तुं परमारथ हेव ॥ आ० ॥ पा  
 म्यो हवे हुं पटंतरो जी ॥ ५ ॥ तें ताखा केइ कोड,  
 तो मुऊथी शी होड ॥ आ० ॥ में एवहुं शुं अलेहणुं  
 जी ॥ मुऊ अरदास अनंत, नविनी ठे जगवंत ॥  
 आ० ॥ जाणने शुं कहेवुं घणुं जी ॥ ६ ॥ सेवाफल  
 द्यो आज, जुलवो कां माहाराज ॥ आ० ॥ नूख  
 न जांगे नामणे जी ॥ रूपविबुध सुपसाय, मोहन ए

जिनराय ॥ आ० ॥ जांखे मन उमहे घणे जी ॥ ७ ॥

॥ अथ श्री सुमति जिन स्तवनं ॥

॥ वारी हुं उदयापुर तणे ॥ ए देशी ॥

॥ महारा प्रनुजीशुं बाधी प्रीतडी, ए तो जीवन ज  
गदाधार ॥ सनेही ॥ साचो ते साहिब सांजरे, खीण  
मांहे कोटिक वार ॥ सनेही ॥ १ ॥ वारी हुं सुमति  
जिणंदनी ॥ ए आंकणी ॥ प्रनु थोडाबोला ने गुण  
घणा, एतो काज अनंत करनार ॥ स० ॥ उलग  
जेहनी जेवडी, फल तेहसां तस देनार ॥ स० ॥  
२ ॥ वा० ॥ प्रनु अति धीरो लाजें नखो, जिम सिं  
च्यो सुरुत घनसार ॥ स० ॥ एकज करुणात्रेहेरमां,  
सुनिवाजे करे निहाल ॥ स० ॥ ३ ॥ वा० ॥ प्रनुजव  
स्थिति पाकें नक्तने, प्रनु कहे व्यो सुपसाय ॥  
स० ॥ इतु विण कहो किम तरुवरें, फल पाकीने सुं  
दर थाय ॥ स० ॥ ४ ॥ वा० ॥ अति नूख्यो पण  
शुं करे, कांइ बेहु हाथे न जमाय ॥ स० ॥ दास त  
णी उतावळें, प्रनु क्णविध रीऊयो जाय ॥ स० ॥  
॥ ५ ॥ वा० ॥ प्रनु लखित होय तो लानीयें, मन  
मान्यो माहाराज ॥ स० ॥ फल तो सेवाथी संपजे,  
विण खणण न जांजे खाज ॥ स० ॥ ६ ॥ वा० ॥  
प्रनु वीसाख्या नवि वीसरो, साहामुं अधिक होवे ठे  
नेह ॥ स० ॥ मोहन कहे कवि रूपनो, मुज वालो ठे  
जिनवर एह ॥ सं० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री सुमति जिन स्तवनं ॥

॥ घोडी तो आइ थारा देशमां मारुजी ॥ ए देशी ॥

॥ पदमप्रज तुम सेवना ॥ माहेवजी ॥ तेहज सम  
कित बीज हो ॥ ससनेहा ॥ अरज सुणो एक मा  
हरी ॥ सा० ॥ ए आंकणी ॥ ए तो मेलो दोहिलो,  
सा० ॥ जिम तेरशने त्रीज हो ॥ सा० ॥ १ ॥ अ० ॥  
प्रचुविण अवर देवाथकी ॥ सा० ॥ किम मन पूगे  
कोड हो ॥ स० ॥ उसतणे कणे किम दूवे, सा० ॥  
मुक्ताफलनी दोड हो ॥ स० ॥ २ ॥ अ० ॥ दूर  
थकी पण सांजरो, सा० ॥ समयमें सो सो वार हो ॥  
स० ॥ दर्शणीयानो उमाहलो, सा० ॥ पूरे तुं किर  
तार हो ॥ स० ॥ ३ ॥ अ० ॥ बंधाणुं मन नक्तिथी,  
सा० ॥ ते अलगुं नवि थाय हो ॥ स० ॥ विमल  
कमल मकरंद हे, सा० ॥ तजी मधुकर किम जाय  
हो ॥ स० ॥ ४ ॥ अ० ॥ प्रचु सुपसायथी पामीयें,  
सा० ॥ ज्ञानसदन गुणगेह हो ॥ स० ॥ मोहन  
कहे कवि रूपनो, सा० ॥ निर्वदेशो साचो नेह हो ॥  
स० ॥ ५ ॥ अ० ॥ इति ॥

॥ अथ श्री पद्मप्रज जिन स्तवनं ॥

॥ ढोला मारु घडी एक करहो फुकाव हो ॥ ए देशी ॥

॥ परमरस जीनो माहारो, निपुण नगीनो माहारो  
साहेबो, प्रचु मोरा पदम प्रज प्राणाधार हो ॥ ए  
आंकणी ॥ ज्योति रमा आलिंगीने ॥ प्र० ॥ अठक  
ठक्यो दिन रात हो, उलग पण नविं सांजले ॥ प्र० ॥

तो शी दरिसण वात हो ॥ १ ॥ प० ॥ नी० ॥ प्र० ॥  
 निरजय पद पाम्या पढी ॥ प्र० ॥ जाणुं न होवे  
 तेह हो ॥ तो नेह लागे आगळे ॥ प्र० ॥ अलगा ते  
 निसनेह हो ॥ २ ॥ प० ॥ नि० ॥ प्र० ॥ पद जेहतां तो  
 लखुं विजु ॥ प्र० ॥ पण निज इव्य कहाय हो ॥  
 अमें सुइव्य सुगुण घणुं ॥ प्र० ॥ सहि तो तिणे सग  
 माय हो ॥ ३ ॥ प० ॥ नि० ॥ प्र० ॥ तिहां रद्यां करुणा  
 नयणथी ॥ प्र० ॥ जोतां शुं उं शुं आय हो ॥ जिहां  
 तिहां जीत लावण्यता ॥ प्र० ॥ दोहली दीपक न्याय  
 हो ॥ ४ ॥ प० ॥ नि० ॥ प्र० ॥ जो प्रनुता अमें  
 पामता ॥ प्र० ॥ केहवुं निपट न पडे एम हो, जो  
 देशो तो जाणुं अमें ॥ प्र० ॥ दरिसण दरिइता केम  
 हो ॥ ५ ॥ प० ॥ नि० ॥ प्र० ॥ हाथे तो नावि  
 शको ॥ प्र० ॥ न करो कोइनो विश्वास हो ॥ पण जो  
 लयीयें जो नक्तिथी ॥ प्र० ॥ कहेजो तो शाबास हो ॥  
 ॥ ६ ॥ प० ॥ नि० ॥ प्र० ॥ कमल लंठन कीधी मया ॥  
 प्र० ॥ गुनह करी बगसीस हो ॥ रूपविबुधना मो  
 हन तणी ॥ प्र० ॥ पूरजो सकल जगीस हो ॥ ७ ॥  
 प० ॥ नि० ॥ प्र० ॥ इति ॥

॥ अथ श्री सुपास जिन स्तवनं ॥

॥ जीणा मारुजीनी करहलडी ॥ ए देशी ॥

॥ वाढ्हामेह बपीयडा, अहिकुलनें मृगकुलने ति  
 म वलि नार्दे वाह्या हो राज ॥ मधुकरने नवमल्लिका,  
 तिम मुफने घणी वाहली सातमा जिननी सेवा हो



राज ॥ १ ॥ अन्य उन्निक सुर ठे घणा, पण मुज  
मनडुं तेहथी नावे एकण रागें हो राज ॥ राच्यो हुं  
रूपातीतथी, कारण मन मान्यानुं गुं कोइनुं इहां लागे  
हो राज ॥ २ ॥ मूलनी नकें रीजगे, नहि तो अव  
रनी रीतें क्यारें पण नवि खीजे हो राज ॥ उल  
गडी मौंघी थगे, कंबल ठोवे जारी जिम जिम ज  
लथी नीजें हो राज ॥ ३ ॥ मनथी निवाजस नहि  
करे, जो कर ग्रहिने लीजें आवगे ते लेखें हो राज ॥  
मोहोटांनं कहेवुं किस्थुं, पगदोडी अनुचरनी अंतर  
जामी देखे हो राज ॥ ४ ॥ एहथी गुं अधिकुं अठे,  
आवी मज्जडे वसीयो साहामो सुगुण सनेही हो रा  
ज ॥ जे वश आव्या आपणे, तेहने माग्युं देतां अ  
जर रहे कहो केही हो राज ॥ ५ ॥ अति परचे विरचे  
नही, नित नित नवलो नवलो प्रजुजी मुज्जथी जासे हो  
राज ॥ ए प्रजुता ए निपुणता, परम पुरुष जे जेहवा  
तेहवा किहांथी कोइ पासें हो राज ॥ ६ ॥ चीनो परम  
महारसें, माहारो नाथ नगीनो तेहने कहो कुण  
निंदे हो राज ॥ समकित दृढता कारणें, रूपविबुधनो  
मोहनस्वामी सुपासने वंदे हो राज ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री चंडप्रज जिन स्तवनं ॥

॥ नंदसलूणा नंदना रेलो ॥ ए देशी ॥

॥ श्री शंकरचंड प्रजु रे लो, तुं ध्याता जगनो विजु  
रेलो ॥ तुं परब्रह्म तुं श्रीपति रे लो, तुं अविनाशी अ  
विगति रे लो ॥ १ ॥ समकित तत्त्व जगावीयो रे लो,

( १७८ )

तिणो हुं उलगें आवियो रे लो ॥ तुमें पण मुऊने म  
या करी रे लो, दीधी चरणनी चाकरी रे लो ॥ ३ ॥  
हुं सेवुं हरषें करी रे लो, ध्यावं तुमने दील धरी रे  
लो ॥ साहिब साहामुं नीहालजो रे लो, नव समुझी  
तारजो रे लो ॥ ३ ॥ अगणित गुण गणवा तणी रे लो,  
मुऊ मन हौंश धरे घणी रे लो ॥ जिम नजने पाम्या  
पंखी रे लो, दाखे बालक करथी लखी रे लो ॥ ४ ॥  
जो जिन तुं ठे पांशरो रे लो, करम तणो शो आशरो  
रे लो ॥ जो तुमें राखशो गोदमां रे लो, तो किम  
जाशुं निगोदमां रे लो ॥ ५ ॥ जब ताहरी करुणा  
थइ रे लो, कुमति कुगति दूरें गइ रे लो ॥ अध्यात्म  
रवि उणीयो रे लो, पाप तिमिर किहां पूर्णीयो रे लो ॥  
॥ ६ ॥ तुऊ मूरति माया जिसी रे लो, उर्वशी थइ उयरें  
वसी रे लो ॥ शुं जिनवादल बांहडी रे लो, रखे  
प्रनु टालो एक घडी रे लो ॥ ७ ॥ ताहरी नक्ति  
नली बनी रे लो, जिम औषधि संजीविनी रे लो ॥  
तन मन आणंद उपनो रे लो, कहे मोहन कवि  
रूपनो रे लो ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीसुविधि जिनस्तवनं ॥

॥ मोतीडानी देशी ॥

॥ अरज सुणो एक सुविधि जिणोसर, परम रूपानिधि  
तुमें परमेसर ॥ साहिबा सुग्यानी जोवो तो, वात  
ठे मान्यानी ॥ ए आंकणी ॥ कहेवाउ पंचम चरणना  
धारी, किम आदरी अश्वनी असवारी ॥ सा ७ ॥ १ ॥

ठो त्यागी शिव वास वसो ठो, दृढरथसुत रथें कैम  
 बेसो ठो ॥ सा० ॥ आंगी प्रमुख परिग्रहमां जो  
 पडशो, हरिहरादिकने किए विध नडशो ॥ १ ॥  
 सा० ॥ धुरथी सकल संसार निवाखो, किम फरि  
 देवइव्यादिक धाखो ॥ सा० ॥ तजी संयमनें आशो  
 गृहवासी, कुण आशातना तजरो चोराशी ॥ सा० ॥ ३ ॥  
 समकित मिथ्यामतिमें निरंतर, इम किम जांजरो प्र  
 चुजी अंतर ॥ सा० ॥ लोक तो देखरो तेहवुं कहेरो,  
 इम जिनता तुम किए विध रहेरो ॥ सा० ॥ ४ ॥  
 पण हवे शास्त्रगतें मति पोहोंची, तेहथी जोयुं में  
 उंहुं आलोची ॥ सा० ॥ इम कीधे तुम प्रचुताइ न  
 घटे, साहामो इम अनुभव गुण प्रगटे ॥ सा० ॥ ५ ॥  
 हयगय यद्यपि तुं आरोपाए, तोपण सिद्धपणुं न लो  
 पाए ॥ सा० ॥ जिम मुकुटादिक नूषण कहेवाए, प  
 ण कंचननी कंचनता न जाए ॥ सा० ॥ ६ ॥ नक्त  
 नी करणीयें दोष न तुमने, अघटित केहवुं अजुक्त ते  
 अमने ॥ सा० ॥ लोपाए नहि तुं कोईथी स्वामी, मो  
 हनविजय कहे शिर नामी ॥ सा० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री शितलजिन स्तवनं ॥

॥ घोडी तो आइ थारा देशमां मारूजी ॥ ए देशी ॥

॥ शीतल जिनवर सेवना साहेबजी, शीतल जिम  
 शशिविंब हो ॥ ससनेही ॥ मूरत माहरे मन वसी ॥  
 सा० ॥ शा पुरुषांछुं गोठडी ॥ सा० ॥ मोहोटो ते आला  
 लूंब हो ॥ सा० ॥ १ ॥ कृण एक मुजने न बीसरे ॥ सा० ॥

तुज गुण परम अनंत हो ॥ स० ॥ देव अवरने शुं करुं  
 ॥ सा० ॥ जेट थइ जगवंत हो ॥ स० ॥ १ ॥ तुमें गो मुकुट  
 त्रिहुं लोकना ॥ सा० ॥ हुं तुम पगनी खेह हो ॥ स० ॥  
 तुमें गो सधन रुतु मेहूला ॥ सा० ॥ हुं पश्चिमदिशि त्रे  
 ह हो ॥ स० ॥ ३ ॥ नीरागी प्रनु रीऊवुं ॥ सा० ॥  
 ते गुण नहि मुऊमांदि हो ॥ स० ॥ गुरु गुरुता सा  
 हामुं जूउ ॥ सा० ॥ गुरुता ते मुके नांदि हो ॥ सु० ॥  
 ४ ॥ मोहोटासेंती बरोबरी ॥ सा० ॥ सेवकें किणविध  
 थाय हो ॥ स० ॥ आसंगो किम कीजियें ॥ सा० ॥  
 जिहां रह्या आलुंजाय हो ॥ स० ॥ ५ ॥ जगगुरु क  
 रुणा कीजियें ॥ सा० ॥ न लहो आचार बिचार हो  
 ॥ स० ॥ मुजने जो राज निवाजशो ॥ सा० ॥ तो  
 कुण वारणहार हो ॥ स० ॥ ६ ॥ उलग अनुजव जाव  
 थो ॥ सा० ॥ जाणो जाण सुजाण हो ॥ स० ॥  
 मोहन कहे कवि रूपनो ॥ सा० ॥ जिनजी जीवन  
 प्राण हो ॥ स० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री श्रेयांस जिनस्तवनं ॥

॥ कंकण मोही रह्यो ॥ ए देशी ॥

॥ श्रेयांस जिन सुणो साहिबा रे, जिनजी दास तणी  
 अरदास ॥ दिलडे वसी रह्यो ॥ दूर रह्यां जाणुं नहि  
 रे, प्रनु तुं माहरे पास ॥ दि० ॥ १ ॥ हारे मृगने ज्युं म  
 धुर आलाप ॥ दि० ॥ मोरनें पिहकलाप ॥ दि० ॥ दूर  
 रह्या जाणुं नही रे, प्रनु तुं माहरे पास ॥ दि० ॥ जल  
 थलमहियल जोवतां रे ॥ जि० ॥ चिंतामणि चढयो

हाथ ॥ दि० ॥ उठपशी हवे माहरे रे ॥ जि० ॥ निर  
ख्यो नयणें नाथ ॥ दि० ॥ २ ॥ चरणे तेहने विलं  
बीयें रे ॥ जि० ॥ जेहथी सीते काम ॥ दि० ॥ फो  
कट गुं फेरो तिहां रे ॥ जि० ॥ पूठे नहि पण नाम  
॥ दि० ॥ ३ ॥ कूडो कलियुग ठोडिने रे ॥ जि० ॥ आ  
प रह्या एकंत ॥ दि० ॥ आपोपुं राखे घणा रे ॥  
जि० ॥ पर राखे ते संत ॥ दि० ॥ ४ ॥ देव घणा  
में देखिया रे ॥ जि० ॥ आमंवर पटराय ॥ दि० ॥  
निगय नहि पण सोडथी रे ॥ जि० ॥ आधा पसा  
रे पाय ॥ दि० ॥ ५ ॥ सेवकने जो निवाजीयें रे ॥ जि०  
॥ तो तिहां शानें जाय ॥ दि० ॥ निपट नीरागी हो  
वतां रे ॥ जि० ॥ स्वामिपणुं किम आय ॥ दि० ॥  
६ ॥ मेंतो तुऊने आदख्यो रे ॥ जि० ॥ जावें तुं जाण  
मजाण ॥ दि० ॥ रूपविजय कविरायनो रे ॥ जि० ॥  
मोहनवचन ग्रमाण ॥ दि० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री वासुपूज्य जिन स्तवनं ॥

॥ चूनडी तो नीजे हो साहिबाजी प्रेमनी ॥ ए देशी ॥

॥ प्रभुजीगुं लागी हो पूरण प्रीतडी, जीवन प्रा  
ण आधार ॥ गिरुआ जिनजी हो राज, साहिब सुण  
जो हो माहरी वीनति ॥ दरिसण देजो हो दिल नरी,  
श्यामजी अहो जगगुरु शिरदार ॥ १ ॥ सा० ॥ चा  
हीने दीजें हो चरणोनी चाकरी, यो अनुभव अम  
साज ॥ गि० ॥ इम नवि कीजें हो साहिबाजी सां  
नलो, कांइ सेवकने शिवराज ॥ २ ॥ गि० ॥ चूपगुं

ठाना हो साहिबा न बेसीयें, कांइ शोना न लहेशो  
 कोय ॥ गि० ॥ दास उधारो हो साहिबाजी आपणो,  
 ज्युं होवे सुजस सवाय ॥ गि० ॥ ३ ॥ सा० ॥ अरुण  
 जो उगे हो साहिबाजी अंबरें, नासे तिमर अंधार ॥  
 गि० ॥ अवरदेव हो साहिबाजी किंकरा, मिलियो तुं  
 देव मुनें सार ॥ गि० ॥ ४ ॥ सा० ॥ अवर न चाहुं हो  
 साहिबाजी तुम ठते, जिम चातक जलधार ॥ गि० ॥  
 खटपद चीनो हो साहिबाजी प्रेमशुं, तिम तुं हृदय  
 मजार ॥ गि० ॥ ५ ॥ सा० ॥ सात राजने हो साहि  
 बाजी अंतें जइ वस्या, हं कहियें तुम प्रीत ॥ गि० ॥  
 निपट नीरागी हो जिनवर तुं सही, ए तुम खोटी  
 रीति ॥ गि० ॥ ६ ॥ सा० ॥ दिलनी जे वातां हो कि  
 एने दाखवुं, श्री वासुपूज्य जिनराय ॥ गि० ॥ स्वीण  
 एक आवि हो पंमंजी सांजलो, कांइ मोहन आवेजी  
 दाय ॥ गि० ॥ ७ ॥ सा० ॥ इति ॥

॥ अथ श्री विमल जिन स्तवनं ॥

॥ ते तरीया जाइ ते तरीया ॥ ए देशी ॥

॥ विमलजिणंद सुग्यान विनोदी, मुख ठबिशशी  
 अविहेलें जी ॥ सुरवर निरखी रूप अनुपम, हजीय  
 निमेष न मेले जी ॥ वि० ॥ १ ॥ विष्णु वराह यइ धर वसु  
 धा, एहवुं कोइक केहे ठे जी ॥ तो वराह लंठन मिशें  
 प्रचुने, चरणे शरण रहे ठे जी ॥ २ ॥ वि० ॥ लीला अकल  
 ललित पुरुषोत्तम, सिद्ध वधू रसजीनो जी ॥ वेधक  
 स्वामीथी मलवुं सोहिलूं, जे कोइ टाले कीनो जी ॥

॥ ३ ॥ वि० ॥ प्रसन्न थइ जगनाथ पयास्था, मन मं  
 दिर मुऊ सुयख्यो जी ॥ हुं नटनवल विविध गति जाणुं,  
 खिण एक तो ल्यो मुजरौ जी ॥ ४ ॥ वि० ॥ चोरा  
 शी लख वेश हुं आणुं, कर्म प्रतीत प्रमाणे जी ॥ जो  
 अनुजव दान गमे तो, ना रुचे तो कहो मआणे  
 जी ॥ ५ ॥ वि० ॥ जे प्रजुनक्तिविमुख नर जगमें, ते  
 चम नूख्यो नटके जी ॥ संगत तेह न विगत लहीयें,  
 पूजादिकथी जे चटके जी ॥ ६ ॥ वि० ॥ कीजें प्रसाद  
 उचित ठाकुराइ, स्वामी अखय खजानो जी ॥ रूपवि  
 बुधनो मोहन पनणे, सेवक विनति मानोजी ॥ ७ ॥

॥ अथ श्री अनंतनाथजिनस्तवनं ॥

॥ वीर सुणो मोरी वीनति ॥ ए देशी ॥

॥ अनंत जिणंदखुं वीनति, में तो कीधी हो त्रिकरण  
 थी आज के ॥ मिलता निज साहेबजणी, कुण आणे  
 हो मूरख मन लाज के ॥ १ ॥ अ० ॥ मुखपंकजमनम  
 धुकरु, रह्यो लुब्धि हो गुणग्यानैं लीण के ॥ हरि हर  
 आवल फूल ज्यों, ते देख्यां हो किम चित्त होवे प्रीण के  
 ॥ २ ॥ अ० ॥ नव फरीयो दरीयो तख्यो, पण कोइ  
 हो अणुसरीयो न द्वीप के ॥ हवे मन प्रवहण माहरुं,  
 तुम पद जेटें हो में राख्युं द्वीप के ॥ ३ ॥ अ० ॥ अं  
 तरजामी मिले थके, फले माहरुं हो सहि करीने जाग  
 के ॥ हवे वाही जावा तणी, नथी प्रजुजी हो कोइ इहां  
 लाग के ॥ ४ ॥ अ० ॥ पालव ग्रही रठ लेख्युं, नही में  
 लो हो ज्यारें तुमें मीट के ॥ आतम अंबरें जो थई, किम

उबटे हो करारी ठीट के ॥ ५ ॥ आ० ॥ नायक न  
जरेँ निवाजीयेँ, हवे लाजीयेँ हो करता रस लूट के ॥  
अध्यातम पद आपतां, कांइ नही पडे हो खजाने  
खूट के ॥ ६ ॥ अ० ॥ जिम तुमें तस्या तिम तारजो,  
शुं वेसे हो तुमने कांइ दाम के ॥ नही तारो जो मुऊने,  
तो किम तुम हो तारक कहेरो नाम के ॥ ७ ॥ अ० ॥  
हुं तो जिन रूपस्थयी, रुहुं होइ इहां हो अहोनिश  
अनुकूल के ॥ चरण तजी जइयेँ किहां, ठे मादारी हो  
वातडलीनुं मूल के ॥ ८ ॥ अ० ॥ अष्टापद पदमा  
करे, अन्य तीरथ हो जारे जिम हेड के ॥ मोहन कहे  
कवि रूपनो, विण उपशम हो नवि मूकुं केड के ॥  
॥ ९ ॥ अ० ॥ इति ॥

॥ अथ श्री अनंतजिनं स्तवनं ॥

॥ सुमति सदा ।दलमें धरो ॥ ए देशी ॥

॥ अनंत जिणंद अवधारीयेँ, सेवकनी अरदास ॥  
जिनजी ॥ अनंत अनंत गुण तुम तणा, सांजरे सा  
सो सास ॥ जि० ॥ १ ॥ सुरमणिसम तुम सेवना,  
पामी में पुण्य पमूर ॥ जि० ॥ किम प्रमाद तणे वशें,  
मूकुं अधखिण दूर ॥ जि० ॥ २ ॥ जगति जुगति म  
नमें वस्यो, मनरंजन महाराज ॥ जि० ॥ सेवकनी  
तुमने अठे, बांह ग्रह्यानी लाज ॥ जि० ॥ ३ ॥ मुह  
मीग धीग हीये, तेहवो नहि हूं दास ॥ जि० ॥ साचो  
सेवक संजवी, कीजें ज्ञान प्रकाश ॥ जि० ॥ ४ ॥



जाणने शुं कहेवुं घणुं, एक वचनमें लाख ॥ जि० ॥  
मोहन कहे कवि रूपनो, नक्ति मधुर जिम डाख ॥  
जि० ॥ ५ ॥ इति अनंतनाथ जिन स्तवनं ॥

॥ अथ अनंतजिन स्तवन प्रारंभः ॥

॥ वालम वेहेला रे आवजो ॥ ए देशी ॥

॥ प्रीतडी अनंत जिनराजनी, दर्शन जावथी जावे  
रे ॥ पयडी बंधादि स्वजावथी, अनुभव परम रस  
आवे रे ॥ प्री० ॥ १ ॥ स्मृतिव्यतिरिक्त आस्वादमां,  
प्रगट चिहुनूप अतिरुद्ध रे ॥ सांख्य बोधादि संबो  
धथी, निन्न प्रचुरूप अतिशुद्ध रे ॥ प्री० ॥ २ ॥ विमुख  
सोपाधि अन्यासथी, संमुख अनुपाधि अनुयोग रे ॥  
लीनता साध्य ठे सहजथी, जावठ परिपाक अनिजो  
ग रे ॥ प्री० ॥ ३ ॥ सिद्धसंस्कार संसारमें, अनिमित्त  
ए किस्यो ख्याल रे ॥ निन्न अनिन्न बिहुं किम घटे, के  
हेनो सेंथो केहेनी टाल रे ॥ प्रा० ॥ ४ ॥ नव्य ताख्या  
प्रचुने घणुं, हुं नवि सदहुं वाच रे ॥ तारे जो मुळ  
तृपातीतने, तारक विरुद्ध तो साच रे ॥ प्रा० ॥ ५ ॥  
दान अथ हरण हिंसा दया, जोगके जोग अनिराम  
रे ॥ इम किम तुमने संजवे, कीजियें जेम ते काम रे ॥  
प्री० ॥ ६ ॥ अनंत पयथी उपपत्तिनो, असंख्य ठे  
आत्मप्रदेश रे ॥ तेह रे स्वामीने संजव्यो, जाणवुं एह  
विशेष रे ॥ प्रा० ॥ ७ ॥ चतुरप्रतें तुज पद क्रिया, हुती  
होये बंध निबंध रे ॥ प्रकृति ध्रुवबंध लहे वक्रता,  
होय वली अनुगमखंध रे ॥ प्री० ॥ ८ ॥ सप्तनय

चारुनिरीक्षणें, उन्नख्यो परम जिनराज रे ॥ मोहन  
कहे कविरूपनो, सफल हुवां आज सवि काज रे ॥  
प्री० ॥ ए ॥ इति अनंत जिन स्तवनं ॥

॥ अथ श्री धर्म जिन स्तवनं ॥

॥ हारे मारे जीवनीयांनो लटको दहाडा  
चार जो ॥ ए देशी ॥

॥ हारे मारे धर्मजिणंदशुं लागी पूरण प्रीत जो, जी  
वडलो ललचाणो जिनजीनी उलगें रेलो ॥ हारे  
मुने थाशे कोइक समय प्रभुजी प्रसन्न जो, वातडली  
तव माहारी सवि थाशे जगें रेलो ॥ १ ॥ हारे कोइ  
डुरिजननो चंनेख्यो माहारो नाथ जो, उलतशे नही  
क्यारें कीधी चाकरी रेलो ॥ हारे माहारा स्वामी सरिखो  
कुण ठे डुनीयांमांहि जो, जइयें रे जिम तेहने घर  
आशा करी रेलो ॥ २ ॥ हारे जस सेवासेंती स्वास्थ न  
होवे सिद्ध जो, गाली रे शी करवी तेह्यी गोठडी रे  
लो ॥ हारे कोइ जूतुं खाये ते मीठाइने माट जो,  
कोइ रे परमारथविण नही प्रीतडी रेलो ॥ ३ ॥ हारे प्र  
भु अंतरजामी जीवन प्राण आधार जो, वाह्यो रे न  
वि जाणे कलियुग वायरो रे लो ॥ हारे माहारा लायक  
नाथक नगत वत्सल नगवान जो, वारु रे गुणकेरो सा  
हिव सायरो रे लो ॥ ४ ॥ हारे प्रभु लागी मुज्जने  
ताहरी माया जोर जो, अलगारे रह्यथी होय उ  
सिंगलो रे लो ॥ हारे कुण जाणे अंतर्गतनी  
विण महाराज जो, हेजें रे हसी बोलो ठांमी आमलो

रे लो ॥५॥ हारे तहारे मुखने मटके अटक्यु माहारुं  
मन्न जो, आंखडली अणीयाणी कामणगारीयुं रे लो  
॥ हारे मारे नयणां लंपट जो, खिण खिण तुझ जो,  
रातां रे प्रचुरूपें न रहे वायुं रे लो ॥ ६ ॥ हारे  
प्रनु अलगा तो पण जाणजी करीने हजूर जो, ताहा  
री रे बलिहारी हुं जावं वारणे रे लो ॥ हारे कवि रूप  
विबुधनो मोहन करे अरदास जो, गिरुआथी मन  
आणी उलट अति घणे रे लो ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री शान्तिजिन स्तवनं ॥

॥ इण सरवरीयारी पा० ॥ ए देशी ॥

शोलमा श्री जिनराज, उलग सुणो अम तणी ॥  
ललना ॥ जगतथी एवडी केम, करो ठो नोलाम  
णी ॥ ल० ॥ चरणे विलग्यो जेह, आवीने थइ खगे ॥  
ल० ॥ निपट तेहथी कोण, राखे रस अंतरो ॥ ल०  
॥ १ ॥ में तुज कारण स्वामी, उवेख्या सुर घणा ॥  
ल० ॥ माहरी दिशायी में तो, न राखी कांइ मणा ॥  
ल० ॥ तो तुमें मुज्यी केम, अपूठा थइ रहो ॥ ल० ॥  
चूक होवे जो कोय, सुखें मुखथी कहो ॥ ल० ॥ २ ॥ तुज्यी  
अवर न कोय, अधिक जगतीतलें ॥ ल० ॥ जेहथी  
चित्तनी वृत्ति, एकांगी जइ मले ॥ ल० ॥ दीजें दरि  
सन वार, घणी न लगावीएं ॥ ल० ॥ वातडली अ  
ति मीठीयें, किम विरमावीएं ॥ ल० ॥ ३ ॥ तुं जो  
जल तो हुं कमल, कमल तो हुं वासना ॥ ल० ॥  
वासना तो हुं नमर, न मूकुं आसना ॥ ल० ॥ तुं ठो

डे पण हुं केम, ठोडीश तुऊ जणी ॥ ल० ॥ लो  
 तर कोइ प्रीति, आवी तुऊथी बनी ॥ ल० ॥ ४ ॥ धुर  
 थी शाने समकित. देइने जोलव्यो ॥ ल० ॥ हवे किम  
 जाउं खोटे, दिलासे उलव्यो ॥ ल० ॥ जाणी खा  
 सो दास, विमासो ठो किस्थुं ॥ ल० ॥ अमें पण  
 खिजमतमांदि, के खोटा किम थगुं ॥ ल० ॥ ५ ॥  
 बीजी खोटी वानें, अमें राबुं नही ॥ ल० ॥ में तुम  
 आगल माहरा, मनवाली कही ॥ ल० ॥ राखो पूरण  
 प्रीति, विमासो गुं नमें ॥ ल० ॥ अवसर लही एकांत,  
 विनवीएं ठे अमें ॥ ल० ॥ ६ ॥ अंतरजामी स्वामी,  
 अचिरानंदना ॥ ल० ॥ शान्तिकरण श्रीशान्तिजी, मा  
 नजो वंदना ॥ ल० ॥ तुऊ स्तवनाथी तन मन, आ  
 एंद उपन्यो ॥ ल० ॥ कहे मोहनसनरंग, सुपंथितरूप  
 नो ॥ ल० ॥ ७ ॥ इति शान्तिजिनस्तवनं ॥

॥ अथ श्री शान्तिनाथ जिन स्तवनं ॥

॥ नंदसलूणा नंदनारे लो ॥ ए देशी ॥

॥ शान्तिजिणंद सोहामणा रे जोजो, शोलमा श्री  
 जिनराय ॥ मोरा साहिबा रे ॥ ठकुराइ त्रिहुलोकनी  
 रे जोजो, सेवे सुरनर पाय ॥ १ ॥ मो० ॥ शां० ॥  
 मुख शारदको चंदलो रे जोजो, हसत ललित निश  
 दीस ॥ मो० ॥ आंखडी अमीय कचोलडी रे जोजो,  
 पूरवो सकल जगीश ॥ मो० ॥ २ ॥ शां० ॥ आंगी  
 अनुपम हेमनी रे जोजो, जगमग विविध जडाव ॥  
 मो० ॥ देखी मूरति सुंदरु रे जोजो, जजे अनिमिषता

नाव ॥ मो० ॥ ३ ॥ शां० ॥ ठत्रत्रयशिर शोचतां  
 रे जोजो, महिमानो अद्वंस ॥ मो० ॥ अजूआव्युं ती  
 रथ आपणुं रे जोजो, विश्वसेननृपनो वंश ॥ मो० ॥  
 ॥ ४ ॥ शां० ॥ अकलकला जिनजी तणी रे जोजो,  
 मनोहररूप अमीत ॥ मो० ॥ शांतलपुरवर शोचतुं  
 रे जोजो, जगवित्तवत्सल जगवंत ॥ मो० ॥ ५ ॥ शां० ॥  
 केवलनाण दीवाकरु रे जोजो, समकित गुणजंमार ॥  
 मो० ॥ पारेवुं ते उगारीयुं रे जोजो, एम अनेक उप  
 गार ॥ मो० ॥ ६ ॥ शां० ॥ हूं बलिहारी ताहरी रे  
 जोजो, जिन तुमें देवाधिदेव ॥ मो० ॥ मोहन कहे  
 कवि रूपजो रे जोजो, नवोन्नव देजो सेव ॥ मो० ॥  
 ॥ ७ ॥ शां० ॥ इति शांति जिन स्तवनं ॥

॥ अथ श्री शांतिनाथ जिन स्तवनं ॥

॥ राग सारंग ॥ शांतिजिणंद महाराज ॥ जगत  
 गुरु शांतिजिणंद महाराज ॥ अचिरानंदन जवि मन  
 रंजन, गुणनिधि गरीब निवाज ॥ ज० ॥ १ ॥ गर्ज  
 थकी जिणे ईति निवारी, हर्षित सुरनर कोडी ॥ ज  
 नम थये चोशठ इंडादिक, पद प्रणमे कर जोडी ॥  
 ज० ॥ २ ॥ मृगलंठन जविकतुषगंजन, कंचन वान  
 शरीर ॥ पंचमनाणी पंचम चक्री, सोलशमो जिन  
 धीर ॥ ज० ॥ ३ ॥ रत्नजडित नूषण अति सुंदर,  
 आंगी अंग उदार ॥ अति उठरंग जगतिनौतन गति,  
 उपशमरस दातार ॥ ज० ॥ ४ ॥ करुणा निधि जग  
 वान कृपाकर, अनुन्नव उदित आवास ॥ रूपविबु

धनो मोहन पनणो, दीजें ज्ञान विलास ॥ ज० ॥ ५ ॥

॥ अथ श्री कुंशुनाथ जिन स्तवनं ॥

॥ चंदनरी कटकी जली ॥ ए देशी ॥

॥ कुंशुजिणंद करुणा करो, जाणी पोतानो नास  
॥ साहिवा मोरा ॥ शृं जाणी अलगा रह्या, जाण्युं कोइ  
आवरो पास ॥ सा० ॥ १ ॥ अजब रंगीला प्यारा, अ  
कल अलङ्क न्यारा, परम ससनेही माहारी विनली ॥  
ए आंकणी ॥ अंतरजामी वाहाला, जोवो मीट मिना  
य ॥ सा० ॥ खिण महसो खिणमां हसो, इम प्रीत नि  
वाहो किम थाय ॥ सा० ॥ २ ॥ ५० ॥ रूपी दुवो  
तो पालव ग्रहूं, अरूपीनें शृं कहेवाय ॥ सा० ॥ कान  
मांमया विना वारता, कहोने जी केम बकाय ॥ सा० ॥  
॥ ३ ॥ ५० ॥ देव घणा डुनीयामां अढे, पण दिल  
मेलो नवि थाय ॥ सा० ॥ जिण गामें जावुं नही,  
ते वाट कहो शृं पूठाय ॥ सा० ॥ ४ ॥ ५० ॥ मुळ  
मन अंतर मुहूर्तनो, में ग्रह्यो चपलता दाव ॥ सा० ॥  
प्रीतिसमे तो जुठ कहो, ए शो स्वामी स्वजाव ॥  
सा० ॥ ५ ॥ ५० ॥ अंतरसोमलीयां पठें, नवि म  
लीयें प्रनु मूल ॥ सा० ॥ कुमया किम करवी घटे,  
जे थयो निज अनुकूल ॥ सा० ॥ ६ ॥ ५० ॥ जागी  
हवे अनुनवदिशा, लागी प्रनुशृं प्रीति ॥ सा० ॥ रूप  
विजय कविरायनो, कहे मोहन रस रीति ॥ सा० ॥  
॥ ७ ॥ ५० ॥ इति श्री कुंशुजिन स्तवनं ॥

( १९१ )

॥ अथ श्री कुंशुजिन स्तवनं ॥

॥ जादवपति तोरण आव्या ॥ ए देशी ॥

॥ मुऊ अरज सुणो मुऊ प्यारा, साची जगतिथी  
किम रहो न्यारा रे ॥ सनेही मोरा ॥ कुंशुजिणंद क  
रो करुणा ॥ १ ॥ हुं तो तुम दरिसणनो अर्थी, घटे  
किम करी शके करथी रे ॥ स० ॥ थइ गिरुआ एम जे  
विमासो, तेतो मुऊने होये ठे तमासो रे ॥ स० ॥  
॥ १ ॥ ललचाविनें जे कीजें, किम दासने चित्त पतीजें  
रे ॥ स० ॥ पद मोहोटे कहावो मोहोटा, जिणतिण  
वातें न हुउ खोटा रे ॥ स० ॥ ३ ॥ मुऊ नाव महे  
लमें आतो, उपशमरस प्यालो चखावो रे ॥ स० ॥  
सेवकनुं तो मन रीजे, जो सेवक कारज सीजे रे ॥  
स० ॥ ४ ॥ मनमेनु थई मन मेलो, ग्रहे आवो  
मग अवहेलो रे ॥ स० ॥ तुमें जाणो ठो ए करुं  
लोला, पण अर्थी सर्दहे करी शिला रे ॥ स० ॥ ५ ॥  
प्रभुचरण सरोरुह लेहवुं, फल प्रापति लेहणुं लेवुं रे ॥  
स० ॥ कवि रूपविबुध जयकारी, कहे मोहन जिन  
बलिहारी ॥ स० ॥ ६ ॥ इति कुंशुजिन० ॥

॥ अथ श्री अरनाथ जिन स्तवनं ॥

॥ नटीयाणीनी देशी ॥

॥ अरनाथ अविनाशी हो, सुविजासी खासी  
चाकरी ॥ कांइ चाहूं अमें निशदीस ॥ अंतरायने रागें  
हो अनुरागें किएपरें कीजीयें ॥ कांइ गुननावें सुज  
गीश ॥ १ ॥ अ० ॥ सिद्ध स्वरूपी स्वामी हो, गुण

धामी अलख अगोचरु ॥ कांइ दीठा विण दीदार ॥  
 केम पतीजें कीजें हो किम लीजें फल सेवा तणुं ॥  
 कांइ दीसे न प्राण आधार ॥ अ० ॥ १ ॥ ज्ञानवि  
 नाकूं पेखे हो संखेपें सूत्रें सांजव्यो ॥ कांइ अथवा  
 प्रतिमारूप ॥ सांगें जो संपेखुं हो प्रभु देखुं दिलजर  
 लोयणें, कांइ तो मन मढूचे चूप ॥ २ ॥ अ० ॥  
 जगनायक जिनराया हो मन जाया मुऊ आवी म  
 व्या, कांइ महेर करी महाराज, सेवक तो ससनेही  
 हो निसनेही प्रभु किम कीजियें ॥ कांइ इसडोइ वहीयें  
 रे लाज ॥ ४ ॥ अ० ॥ नक्तिगुणें नरमावी हो सम  
 जावी प्रभुजीने जोलवी, कांइ राखुं हृदयमऊर ॥  
 तो कहेजो शाबासी हो प्रभु नासी जाणी सेवना  
 कांइ ए अमचो एक तार ॥ ५ ॥ अ० ॥ पाणी नी  
 रने मेले हो किए खेले एकंत होइ रहूं, कांइ नहिरे  
 मीलणनो जोग ॥ जो प्रभु देखुं नयणें हों कहि व  
 यण समजावुं सहि, कांइ ते न मिले संजोग ॥ ६ ॥  
 अ० ॥ मनमेळु किम रीऊं हो शुं कीजें अंतर एव  
 डो, कांइ निपट निहेजा नाथ ॥ सात राजने अंतें हो  
 किए पाखे ते आवीनें मिलुं, कांइ विकट तुमारो जी  
 साथ ॥ ७ ॥ अ० ॥ उलग ए अनुनवनी हो मुऊ  
 मननी वातां सांजली, कांइ कीजें आज निवाज ॥  
 रूपविबुधनो मोहन हो मनमोहन सांजल वीनति,  
 कांइ दीजें शिवपुरराज ॥ ८ ॥ अ० ॥ इति ॥



॥ अथ श्री मद्धिनाथस्तवनं ॥

॥ थारा मोहोला ऊपर मेह० ॥ ए देशी ॥

॥ सुणी सुगुरु उपदेश, ध्यायो दिलमें धरी ॥ हो  
लाल ॥ ध्या० ॥ कीधी जगति अनंत, चवि चवि चा  
तुरी ॥ हो लाल ॥ च० ॥ सेव्यो विशवावीश, उलट  
धरी उलंग्यो ॥ हो लाल ॥ उ० ॥ दीगो नवि दीदार,  
कान कीणही लग्यो ॥ हो लाल ॥ का० ॥ १ ॥ परमे  
सरशुं प्रीत, कहो किम कीजीयें ॥ हो लाल ॥ क० ॥  
निमिष न मेले मीट, दोष किण दीजीयें ॥ हो ला  
ल ॥ दो० ॥ कोण करी तकसीर, सेवामां साहिबा ॥ हो  
लाल ॥ से० ॥ कीजें न ठोकरवाद, जगत जरमायवा ॥  
हो लाल ॥ ज० ॥ २ ॥ जाण्युं तमारुं जाण, पुरुष  
ना पारिखुं ॥ हो लाल ॥ पु० ॥ सुगुण नीगुणनो न्या  
य, करो शुं सारिखुं ॥ हो लाल ॥ क० ॥ दीधो दी  
लासो दीन, दयाल कहावशो ॥ हो लाल ॥ द० ॥  
करुणारस जंमार, बिरुद किम पावशो ॥ हो० ॥  
बि० ॥ ३ ॥ शुं निवस्या तुमें सिद्ध, सेवकने अव  
गुणी ॥ हो० ॥ से० ॥ राखो अविहड प्रीति, जावा  
यो जोलामणी ॥ हो० ॥ जा० ॥ जो कोइ राखे राग,  
नीराग न राखीएं ॥ हो० ॥ नी० ॥ गुण अवगुणनी  
वात, कही प्रनु जांखीएं ॥ हो० ॥ क० ॥ ४ ॥ अ  
मचा दोष हजार, तिके मत जालजो ॥ हो० ॥ ति० ॥  
तुमें ठो चतुर सुजाण, प्रीति गुण पालजो ॥ हो० ॥  
प्री० ॥ मद्धिनाथ महाराज, म राखो अंतरो ॥ हो० ॥

म० ॥ द्यो दरिसिण दिल धार, मिटे ज्यूं खांतरो ॥  
 हो० ॥ मि० ॥ ५ ॥ मनमंदिर महाराज, बिराजो  
 दिल मली ॥ हो० ॥ बि० ॥ चंझातप जिम कमल,  
 हृदय विकसे कली ॥ हो० ॥ हृ० ॥ कविरूपविबुधसुप  
 साय, करो अमरंग रली ॥ हो० ॥ कहे मोहन कवि  
 राय, सकल आशा फली ॥ हो० ॥ स० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री मुनिसुव्रत जिनस्तवनं ॥

॥ हो पीयूष पंखीअडा ॥ ए देशी ॥

॥ हो प्रजु मुऊ प्यारा न्यारा थया केइ रीत जो,  
 उलगूआने आलालुंबन माहरो रे लो ॥ हो० ॥  
 नक्तिवड्डल नगवंत जो, आय वस्यो मन मंदिर सा  
 हिव माहरो रे लो ॥ १ ॥ हो० ॥ खिण न विसारुं  
 तुऊ जो, तंबोलीना पान तणी परें फेरतो रे लो ॥  
 हो० ॥ लागी मुने माया जोर जो, दिणयरवासी  
 सुसाहिव तुमने हेरतो रे लो ॥ २ ॥ हो० ॥ तुं नि  
 सनेही जिनराय जो, एरूपखी प्रीतलडी किण परें  
 राखीयें रे लो ॥ हो० ॥ अंतर्गतनी महाराज जो,  
 वातडली विण साहिव केहने दाखीयें रे लो ॥ ३ ॥  
 हो० ॥ अलख रूप थइ आप जो, जाइ वस्यो शिव  
 मंदिरमांहे तुं जई रे लो ॥ हो० ॥ लाधो तुमारो  
 नेद जो, सूत्र सिद्धांतें गतिमें साहिव तुम लइ रे  
 लो ॥ ४ ॥ हो० ॥ जग जीवन जिनराय जो, मुनि  
 सुव्रत जिन मुजरो मानजो माहरो रे लो ॥ हो० ॥  
 पय प्रणमी जिनराय जो, चप नवसरणो साहिव

स्वामी ताहरो रे लो ॥ ५ ॥ हो० ॥ राखुं हृदय  
मजार जो, आपोने शामलीया पदवी ताहरी रे लो ॥  
हो० ॥ रूपविजयनो शिष्य जो, मोहनने मन लागी  
माया ताहरी रे लो ॥ हो० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री नमिनाथजिनस्तवनं ॥

॥ आसणरा योगी ॥ ए देशी ॥

॥ आज नमिजिनराजने कहीयें, मीठे वचने प्रभु  
मन लहीयें रे ॥ सुखकारी साहेबजी ॥ प्रभु ठे निपट  
निसनेही नगीना, अमें भुं सेवक आधीना रे ॥ सु० ॥  
॥ १ ॥ सूनजर करशो तो वरशो वडाई, सुकहि  
शे प्रभुने लडाई रे ॥ सु० ॥ तुमें अमने करशो मोहो  
टो, कुण कहेशे प्रभु तुने खोटो रे ॥ सु० ॥ २ ॥ निः  
शंक थइ गुनवचन कहेशो, जगशोना अधिकी जेहे  
शो रे ॥ सु० ॥ अमें तो रह्या भुं तुमने राची, रखे  
आप रहो मन खांची रे ॥ सु० ॥ ३ ॥ अम्हें तो  
किस्थुं अंतर नवि राखुं, जे होवे हृदय कही दाखुं  
रे ॥ सु० ॥ गुणियल आगल गुण कहेवाये,  
ज्यारें प्रीत प्रमाणें थाये रे ॥ सु० ॥ ४ ॥ विषधर  
ईशहृदय लपटाणो, तेहवो अमने मित्यो ठे टाणो रे  
॥ सु० ॥ ५ ॥ निरवदेशो जो प्रीत हमारी, कली कीरत  
थाशे तुमारी रे ॥ सु० ॥ धूर्ताई चित्तडे नवि धरश्यो, कांइ  
अवलो विचार न करशो रे ॥ सु० ॥ जिम तिम जाणी  
सेवक जाणेजो, अवसर लही सुधि लहेजो रे ॥ सु०  
॥ ६ ॥ आसंगें कहीएं ठे तुमने, प्रभु दीजें दिलासो अमने

( १९६ )

रे ॥ सु० ॥ मोहनविजय सदामन रंगें, चित्त लाग्युं  
प्रचुने संगें रे ॥ सु० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री नेमिनाथ जिनस्तवनं ॥

॥ दक्षिण दोहिलो हो राज ॥ ए देशी ॥

॥ कांइ रथ वालो हो राज, साहामुं नीहालो हो राज,  
प्रीति संजालो रे वाह्ला यडकुलसेहरा ॥ जीवन मीठा  
हो राज, मत होजो धीठा हो राज, दीठा अलजे रे  
वाह्ला निवहो नेहरा ॥ १ ॥ नव नव नज्जा हो  
राज, तिहां शी लज्जा हो राज, तजत नज्जा रे कांसैं  
रणका वाजीया ॥ शिवादेवी जाया हो राज, मां मेलो  
माया हो राज, किमहिक पाया रे वाह्ला मधुकर रा  
जीया ॥ २ ॥ सुणी हरणीनां हो राज, वचन कामी  
नां हो राज, सही तो बीना रे वाह्ला आधा आ  
वतां ॥ कुरंग कहाणो हो राज, चूके न टाणो हो राज,  
जाणो वाह्ला रे देखी वर्ग वरंगनो ॥ ३ ॥ विण गुन्हे  
चटकी हो राज, ठांमो मां ठटकी हो राज, कटकी न कीजें  
रे वाह्ला कीडीथी घणुं ॥ रोष निवारो हो राज, महेज  
पधारो हो राज, कांइ विचारो रे वाह्ला माबुं जीमणुं  
॥ ४ ॥ एसी हांसी हो राज, होए विखासी हो  
राज, जुठ विमासी रे अतिही रोष न कीजियें ॥ आ चि  
त्रशाली हो राज, सेज सुंआली हो राज, वात हेताली  
रे वाह्ला महारस पीजीयें ॥ ५ ॥ मुगतिवहिता हो  
राज, शाम वर्दीता हो राज, तजी परिणीता रे वाह

ला कां तुमें आदरो ॥ तुमने जे जावे हो राज, कुण  
समजावे हो राज, किम करी आवे रे ताण्यो कुंजर  
पाधरो ॥ ६ ॥ वचनें न चीनो हो राज, नेम नगीनो  
हो राज, परम खजीनो रे वाहला नाण अनूपनो ॥  
व्रतशिरसामी हो राज, राजुल पामी हो राज, कहे  
हितकामी रे मोहन पंमित रूपनो ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ द्वितीयं श्रीनेमिनाथजिनस्तवनं ॥

॥ अंवरीयोनें गाजे हो जटियाणी वड चूए ॥ ए देशी ॥

॥ राजुल कहे रथवालो हो, नणदीरा वीरा हठ तजो,  
कांइ पालो पूरव प्रीत ॥ मूको किम विण गुनहे हो नण  
दीरा वीरा विलपतां, कांइ ए शी शीख्या रीत ॥ रा० ॥ १ ॥  
हुंतो तुम चरणारी हो, नणदीरा वीरा मोजडी, कांइ  
सांजलो आतमराम ॥ तो मुजने उवेखो हो नणदीरा  
वीरा शा वती, कांइ नही ए सुगुणनां काम ॥ रा० ॥ २ ॥  
पशुआने. करी करुणा हो, नणदीरा वीरा मूकीया,  
कांइ में शी चोरी कीध ॥ पशुआंशी शुं हीणी हो, नण  
दीरा वीरा त्रेवडी, कांइ मुजनें विठोहो दीध ॥ रा० ॥ ३ ॥  
एहवुं तुम मन खोटुं हो, नणदीरा वीरा जो हतुं, तो  
पाडी कां नेहने फंद ॥ उलफे ते नवि सुलफे हो, नणदी  
रा वीरा मनडुं, कांइ कोडि मिले जो इंद ॥ रा० ॥  
॥ ४ ॥ मुज उपर कांइ थाउ हो, नणदीरा वीरा निर्दयी,  
कांइ नजर न मेलो केम ॥ ठेलीजें नहि पाये हो, न  
णदीरा वीरा बलगती, कांइ नेह न गाले हेम ॥ रा० ॥ ५ ॥  
मेंतो कहो किण वार्ते हो, नणदीरा वीरा दूहव्या,

ते कांइ राखो ठो रोष ॥ महारे तो हरो तुमशुं हो, न  
 एदीरा वीरा अलेहणुं, तो केहने दाखुं दोष ॥ रा० ॥  
 ॥ ६ ॥ तांत त्रूव्यानी परें हो, नएदीरा वीरा जो  
 डीयें, कतुआरीनी जेम ॥ ठेलाजें नहि पाये हो, न  
 एदीरा वीरा वलगतां, कांइ नेह न चाले एम ॥ रा०  
 ॥ ७ ॥ इम कहेती व्रत लेती हो, नएदीरा वीरा ज  
 इ चढा, कांइ शिवमहोले कीयो वास ॥ धन धन ते जग  
 मांहे हो, नएदीरा वीरा प्रीतडी, कांइ मोहन कहे  
 शाबास ॥ रा० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री पार्श्वनाथ जिनस्तवनं ॥

॥ कानुडो वीण वजावे रे, कालिंदीने कांठे ॥ ए देशी ॥

॥ वामानंदन हो प्राणथकी ठो प्यारा, नांही कीजें  
 हो नयणथकी पण न्यारा ॥ ए आंकणी ॥ पुरिसा दाणी  
 शामल वरणो, शुद्धसमकितने नासे ॥ शुद्धपुंज जिणें  
 कीधो तेहने, उज्ज्वलवरण प्रकासे ॥ १ ॥ वा० ॥ तु  
 मचरणे विषधर पण निरविष, दंसणे थाए वीडो ॥  
 तो अम शुद्ध स्वभाव न दूवे, ए अमें ग्रहो निवीडो  
 ॥ २ ॥ वा० ॥ कमठ राथ मद किण गणतीमां,  
 मोह तणा मद जोतां ॥ ताहरी शक्ति अनंती आगल,  
 केई तरि गया गोता ॥ ३ ॥ वा० ॥ तें जिम ताखा ति  
 म कुण तारे, कुण तारक कहूं एहवो ॥ सायरमान ते  
 सायर सरिखुं, तिम तुं पण तुं जेहवो ॥ ४ ॥ वा० ॥  
 किमपि न बेसे करुणा करते, पण मुक्त प्राप्ति अनंती ॥  
 जेम पडे कण कुंजर मुखथी, कीडी बहु धनवंती

॥ ५ ॥ वा० ॥ एक आवे एक मोजां पावे, एक करे  
उलगडी ॥ निजगुण अनुनव देवा आगल, पडखे  
नही तुं बे घडी ॥ ६ ॥ वा० ॥ जेहवी तुमथी माह  
री माया, तेहवी तुमें पण धरजो ॥ मोहन कहे क  
विरूपविबुधनो, परतहू करुणा करजो ॥ ७ ॥ वा० ॥

॥ अथ श्री महावीरस्वामिस्तवनं ॥

॥ पठेवडानी देशी ॥

॥ दुर्लभ नव लही दोहिनो रे, कहो तरीयें केण उ  
पाय रे ॥ प्रभुजी ने वीनवुं रे ॥ ए आंकणी ॥ समकित  
साचुं साचवुं रे, ते करणी किम थाय रे ॥ प्र० ॥ १ ॥  
अगुनमोह जो मेटीयें रे, कांइ गुनप्रभुकने जाय रे  
॥ प्र० ॥ नीरागें प्रभु ध्याइयें रे, कांइ तो पण रागें क  
हाय रे ॥ प्र० ॥ २ ॥ नाम ध्याता जो ध्याइयें रे,  
कांइ प्रेम विना नवि तान रे ॥ प्र० ॥ मोहविकार जि  
हां तिहां रे, कांइ किम तरीयें गुणधाम रे ॥ प्र०  
॥ ३ ॥ मोहबंध जगबंधियो रे, कांइ बंध जिहां नही शोष  
रे ॥ प्र० ॥ कर्मबंध न कीजीयें रे, कर्मबंधन गये जो  
श रे ॥ प्र० ॥ ४ ॥ तेहमां शो पाड चढावीयें रे, कां  
इ तुमें श्रीमहाराज रे ॥ प्र० ॥ विण करणी जो ता  
रशो रे, कांइ तो साचा श्रीजिनराज रे ॥ प्र० ॥ ५ ॥  
प्रेममगननी जावना रे, कांइ जाव तिहां नववार रे ॥  
प्र० ॥ जाव तिहां जगवंत ठे रे, कांइ उलसे आतम  
सार रे ॥ प्र० ॥ ६ ॥ पूरणघट जीतर नखो रे, कांइ अ  
नुनव अनुहार रे ॥ प्र० ॥ आतमध्यानें उलखी रे,

(१००)

कांइ तरशुं जवनो पार रे ॥ प्र० ॥ ७ ॥ वर्द्धमान सु  
ऊ वीनति रे, कांइ मानेजो निशदीस रे ॥ प्र० ॥  
मोहन कहे मनमंदिरें रे, कांइ वसियो तुं विशवावी  
श रे ॥ प्र० ॥ ८ ॥ इति श्री मोहनविजजीकृत  
चोवीशी आदिकना स्तवनं संपूर्ण ॥

॥ अथ अजित जिन स्तवनं ॥

॥ प्रीतलडी बंधाणी रे अजित जिणंदशुं, कांइ प्रभु  
पाखे कृण एके मन न सुहाय जो ॥ ध्याननी ताली रे  
लागी नेहशुं, जलद घटा जिम शिवसुतवाहन दाय  
जो ॥ प्री० ॥ १ ॥ नेह घेलुं मन माहारुं रे प्रभु  
अलजे रहे, नन धन मन ए कारणथी प्रभु मुऊ जो ॥  
मारे तो आधार रे साहिब रावानो, अंतर्गतनुं प्रभु  
आगल कहुं गुळ जो ॥ प्री० ॥ २ ॥ साहेब ते साचो रे  
जगमां जाणीएं. सेवकनां जे सहेजें सधारे काज जो ॥  
एहवे रे आचरणे किम करीने रहुं, बिरुद तुमारो ता  
रण तरण जिहाज जो ॥ प्री० ॥ ३ ॥ तारकता तुऊ  
मांहे रे श्रवणें सांजली, ते नणी हुं आव्यो हुं दीन  
दयाल जो ॥ तुऊ करुणानी लेहरे रे मुऊ कारज सरे,  
शुं घणुं कहीएं जाण आगल कृपाल जो ॥ प्री० ॥ ४ ॥  
करुणादिक कीधी रे सेवक उपरें, नव नय नावठ  
नांगी नक्ति प्रसन्न जो ॥ मन वंछित फलियां रे जिन आ  
लंबने, कर जोडीने मोहन कहे मनरंग जो ॥ प्री० ॥ ५ ॥



( १०१ )

॥ अथ गोप्नी पार्श्व जिन स्तवनं ॥

॥ राणीजीना देशमां रे ॥ ए देशी ॥

॥ प्राणथकी प्यारो मुने रे ॥ साहेबा ॥ पुरुषादा  
णी पास ॥ प्रचुनें उलगुं रे ॥ अंतरजामी आगले रे  
॥ साहेबा ॥ उजो करुं उदास ॥ प्रचु० ॥ १ ॥  
मनमंदिर अंदर वस्यो रे ॥ साहेबा ॥ मुजरो व्यो  
महाराज ॥ प्रचु० ॥ रहेशो जो टालो करी रे ॥  
साहेबा ॥ तो केम सररो काज ॥ प्रचु० ॥ २ ॥ उजां  
उलगडी करुं रे ॥ साहेबा ॥ द्यो दरिसणनुं दान  
॥ प्रचु० ॥ नीपट कां करीनें रह्या रे ॥ साहेबा ॥ आं  
खो आडां कान ॥ प्रचु० ॥ ३ ॥ इम नाठां केम  
बूटरो रे ॥ साहेबा ॥ दासथी दीनदयाल ॥ प्रचु० ॥  
में पालव पकड्यो खरो रे ॥ साहेबा ॥ करुणावंत  
रुपाल ॥ प्रचु० ॥ ४ ॥ हुंतो रागी ताहेरो रे ॥ सा  
हेबा ॥ नीरागी ठे लोक ॥ प्रचु० ॥ हवे तुम अम  
मेलावडो रे ॥ साहेबा ॥ नाव नदी संयोग ॥ प्रचु०  
॥ ५ ॥ अकलकला कांइ ताहरी रे ॥ साहेबा ॥  
मुजथी तो न कलाय ॥ प्रचु० ॥ पूबुं हुं शीखवतां  
कला रे ॥ साहेबा ॥ मुजथी तो न शीखाय ॥ प्रचु०  
॥ ६ ॥ तुं पण एक न वीसरे रे ॥ साहेबा ॥ थलप  
ति प्राण आधार ॥ प्रचु० ॥ मोहन कहे कवि रूप  
नो रे ॥ साहेबा ॥ आशरो इणे संसार ॥ प्रचु०  
॥ ७ ॥ इति गोडी पार्श्वनाथ स्तवनं ॥

॥ अथ आदि जिन स्तवनं ॥ फुमखडानी देशीमां ॥

॥ आदीसर जगदीसरू रे, अवधारो अरदास ॥ मनोहर साहेबा ॥ साचो मनमेलो मळ्यो रे, पलक न ठोडुं पास ॥ मनो० ॥ १ ॥ डुहव्यो पण खीजे नही रे, प्रजु तुं गिरिमा महंत ॥ मनो० ॥ नयनबे ए सडुको कहे रे, खंत सूरु अरिहंत ॥ मनो० ॥ २ ॥ नयन अंतर प्रजु ताहरे रे, अविगत खेल अनंत ॥ मनो० ॥ इहानीथी कांइ ठानी नही रे, अनंतिमा नहितवंत ॥ मनो० ॥ ३ ॥ जाणपणुं तो जाणुं खरुं रे, अहो मरुदेवाजात ॥ मनो० ॥ दीजें समकित वासना रे, शो वार्ते एक वात ॥ मनो० ॥ ४ ॥ डुर्जन जेट सुजज थइ रे, जमन जमत संसार ॥ मनो० ॥ मोहन कहे कवि रूपनो रे, जिनतूं प्राण आधार ॥ मनो० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ पंचासराजीतुं स्तवन ॥ .

॥ ठां जी ठां जी ठां जी बंदा ठां जी, मेंतो खासी दाढीवाला ॥ बंदा० ॥ मेंतो अनुजवरस मतवाला ॥ बंदा० ॥ ए आंकणी ॥ चंडकिरणसम तुम गुण स्तवना, गंगा रंग तरंगा ॥ अम मन बाल मराल तिहां जीले, नलिनी जक्ति प्रसंगा ॥ बंदा० ॥ १ ॥ जागी शुद्ध दिशा जयो रागी, जागी जवजय ठेड ॥ जागी लगन मगन जयो तोडुं, नाखी कुगति उखेड ॥ बंदा० ॥ २ ॥ ज्ञान अनंतुं शक्ति अनंती, लीला सहेज अनंती ॥ देजो मुजने एहवा तुमनें, राख्या हृदय एकंती ॥

बंदा० ॥ ३ ॥ परम मूरति कोइ प्रजुनी कहेशे, हियडे  
 केम न समाणी ॥ जेम मुकुरमें कुंजर काया, तेम वली  
 मणिमय माणी ॥ बंदा० ॥ ४ ॥ तुं घटप्रजृति प  
 दार्थथी न्यारो, तो केम सहुनें प्यारो ॥ कोइक अक  
 लकला तुम पासें, तुं जसवेली क्यारो ॥ बंदा० ॥  
 ॥ ५ ॥ कृपाकटाक्षनी कणिका ताहरी, निरखी ह  
 रख्यो हूं तो ॥ तुं अविनाशी ज्योतिविलासी, प्रगट  
 जिहां तिहां तूं तो ॥ बंदा० ॥ ६ ॥ पंचासर श्रीपास  
 प्रजाकर, ध्याताध्येयें ध्यायो ॥ रूपविबुधनी करुणायें  
 स्वामी, मोहनविजयें गायो ॥ बंदा० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ नेम जिन स्तवनं ॥

॥ वींजा सेण मारु ॥ ए देशी ॥

॥यादवजी हो॥समुद्रविजय कुल सेहरो हो॥साहेबा  
 माहारी वीनतडी अवधार ॥ मीठा सेण वारु ॥या०॥  
 विण अक्युण केम ठांमियें हो. साहेबान वचन निरुप  
 म नार ॥ मीठा० ॥ १ ॥ या० ॥ तुमथी रूडां पारे  
 वडां हो, साहेबा जोड न खंमे किवार ॥ मीठा० ॥  
 या०॥ उलंजडे लाजो नही हो, साहेबा एहवा श्या  
 नितुर विचार ॥ मीठा० ॥ २ ॥ या० ॥ विषमा  
 मूंगर सेववा हो ॥ साहेबा परिहरि सुंदरी सेज ॥मी  
 ठा० ॥ या० ॥ मोहोटा पण खोटा सही हो ॥ सा  
 हेबा निपट न तजीयें हेज ॥ मीठा० ॥ ३ ॥ या० ॥  
 पावस ऋतुपरें तोरणें हो॥साहेबा आव्या करिय अमं  
 ग ॥ मीठा० ॥ या० ॥ पण थया शारद मेहुला हो ॥

साहेबा ए श्या सूरिजन ढंग ॥ मीठा० ॥ ४ ॥ या० ॥  
 निसुण्या कहीयें प्रसंगमें हो ॥ साहेबा तुम सरिखा  
 निसनेह ॥ मीठा० ॥ या० ॥ एम पशुआने कारणें हो ॥ सा  
 हेबा कोण गयो परिहरि गेह ॥ मीठा० ॥ ५ ॥ या० ॥ वीसर  
 गया तुमने खरा हो ॥ साहेबा पूरव विविध विनो  
 द ॥ मीठा० ॥ या० ॥ आवो प्रीतम पातला हो ॥  
 साहेबा कहुं तुं बिठावी गोद ॥ मीठा० ॥ ६ ॥ या० ॥  
 नेम पहेलां राजीमती हो ॥ साहेबा पोहोती सुगति  
 डुवार ॥ मीठा० ॥ या० ॥ मोहन कहे कवि रूपनो  
 हो ॥ साहेबा शिवादेवी मात मलार ॥ मी० ॥ ७ ॥

॥ अथ ख्याल ॥

॥ समज जा गुमानी हो दिलजानी ॥ हारे तुं तो संज  
 व जिनने नज ले, हारे तुं तो क्रोध कषायनें तज ले  
 ॥ सम० ॥ १ ॥ हारे तुं तो फरि पदवी नवि पावे, हारे तुज  
 मूरख कुन समजावे ॥ सम० ॥ २ ॥ हारे मोहननो  
 माणक बोले, नही कोइ जैनधरमने तोले ॥ स० ॥ ३ ॥

। अथ ख्याल ॥

॥ पासजिनंदा माता वामाजीके नंदा रे, तुम पर  
 वारी जाउं खोल खोल रे ॥ हारे दरवाजे टेडे खोल  
 खोल रे, हम दरसन आये तोल तोल रे ॥ दर० ॥  
 ॥ १ ॥ पूजा करुंगी मेंतो धूप धरुंगी रे, फूल चडा  
 उंगी बहु मोल मोल रे ॥ दर० ॥ २ ॥ तें मेरा ठा  
 कर में तेरा चाकर, एकवार मोसुं बोल बोल रे ॥  
 दर० ॥ ३ ॥ सुरतमंमण सुंदर मूरत, मुखडुं ते जाकम

( १०५ )

जोल जोल रे ॥ दर० ॥ ४ ॥ रूप विबुधनो मोहन  
पनणे, रंग लागो चित चोल चोल रे ॥ दर० ॥ ५ ॥

॥ अथ शंखेश्वरस्तवनं ॥

॥ आंखडीयें में आज शेत्रुंजो दीठो रे ॥ ए देशी ॥

॥ प्रभु जगजीवन जगबंधु रे, सांईं सयाणो रे ॥  
ताहारी मुझायें मन मान्युं रे, जूठ न जाणो रे ॥  
ए आंकणी ॥ तुं परमात्म तुं पुरुषोत्तम, वाला  
मारा तुं परब्रह्म सरूपी रे ॥ सिद्धसाधक सिद्धांत  
सनातन, तुं त्रय नावें प्ररूपी रे ॥ सांईं सयाणो रे ॥  
॥ १ ॥ ताहरी प्रभुता त्रिहुं जगमांहे ॥ वा० ॥ पण  
मुळ प्रभुता महोटी रे ॥ तुळ सरिखो महारे महा  
राजा, ताहरे नही कांई खोटी रे ॥ सांईं० ॥ २ ॥  
तुं निरड्व्य परमपद वासी ॥ वा० ॥ हुंतो ड्व्यनुं  
जोगी रे ॥ तुं. निरगुण हुंतो गुणधारी ॥ हुं करमी तुं  
अजोगी रे ॥ सांईं० ॥ ३ ॥ तुंतो अरूपी हुंतो रूपी ॥  
वा० ॥ हुं रागी तुं निरागी रे ॥ तुं निरविष हुंतो  
विषधारी, हुं संग्रही तुं त्यागी रे ॥ सांईं० ॥ ४ ॥  
ताहरे राज नही कोई एके ॥ वा० ॥ चउदराज  
ढे माहरे रे ॥ माहरी लीला जोतां प्रभुजी, अधिकुं  
शुं ढे ताहरे रे ॥ सांईं० ॥ ५ ॥ पण तुं महोटो हुंतो  
ढोटो ॥ वा० ॥ फोकट फूले शुं थाय रे ॥ खमजो  
ए अपराध अमारो, नक्तिवशें कहेवाय रे ॥ सांईं० ॥  
॥ ६ ॥ श्री शंखेश्वर वामानंदन ॥ वा० ॥ उजा

उलंग कीजें रे ॥ रूपविबुधनो मोहन पनणे, चरणनी  
सेवा दीजें रे ॥ सांई० ॥ ७ ॥ इति शंखेश्वर० ॥

॥ अथ गौतम प्रजातिस्तवनं ॥ प्रारंभः ॥

॥ राग प्रजाती ॥ मात पृथ्वीसुत प्रात ऊठी नमो,  
गणधर गौतम नाम गेलें ॥ प्रह समे प्रेमगुं जेह ध्या  
तां सदा, चढती कला होय वंशवेले ॥ मा० ॥ १ ॥  
वसुनूति नंदन विश्वजन वंदन, डुरित निकंदन नाम  
जेहनुं ॥ अजेदगुदें करी नविजन जे नजे, पूर्ण  
पोहोंचें सही जाग्य तेहनुं ॥ मा० ॥ २ ॥ सुरमणि  
जेह चिंतामणि सुरतरु, कामित पूरण कामधेनु ॥  
एहज गौतमतणुं ध्यान ददयें धरो, जेहथर्का अधि  
क नहीं माहात्म्य केहेनुं ॥ मा० ॥ ३ ॥ ज्ञान बल  
तेज ने सकल सुखसंपदा, गौतमनामथी सिद्धि पामे ॥  
अखंभ प्रचंभ प्रताप होय अवनिमां, सुर नर जेह  
नें शीश नामे ॥ मा० ॥ ४ ॥ प्रणव आर्दे धरी माया  
बीजें करी, स्वमुखें गौतमनाम ध्याये ॥ कोडि मनका  
मना सफल वेगें फले, विघन वैरी सवे दूर जाये ॥  
मा० ॥ ५ ॥ डुष्ट दूरें टले स्वजन मेलो मले, आधि  
उपाधि ने व्याधि नासे ॥ नूतनां प्रेतनां जोर जांजे व  
ली, गौतमनाम जपतां उद्भासें ॥ मा० ॥ ६ ॥ तीर्थ  
अष्टापदे आप लब्धें जइ, पन्नरशें त्रण ने दिस्क दीधी ॥  
अछम पारणे तापस कारणें, क्षीरलब्धें करी अखु  
ट कीधी ॥ मा० ॥ ७ ॥ वरस पच्चास लगें गृहवासें  
वस्या, वरस वली त्रीश करी वीरसेवा ॥ बार वरसां

लगेँ केवल जोगव्युं, नक्ति जेहनी करे नित्य देवा ॥  
 मा० ॥ ८ ॥ महियल गौतम गोत्रमहिमा निधि, गु  
 एनिधि रुद्धिने सिद्धि दाई ॥ उदय जस नामथी अ  
 धिक लीला लहे, सुजस सौनाग्य दोलत सवाई ॥  
 मा० ॥ ९ ॥ इति गौतम प्रजातिस्तवनं ॥

॥ अथ श्रीसिद्धाचलस्तवनं ॥ गरबानी देशीमां ॥

॥ श्रीसिद्धाचल मंमण स्वामी रे, जगजीवन अं  
 तर जामी रे, एतो प्रणमुं हुं शिरनामी ॥ जात्रीडा  
 जात्रा नवाणुं करियें रे, करियें तो नवजल तरियें ॥  
 जात्री० ॥ १ ॥ श्रीरूपन जिनेश्वरराया रे, जिहां पू  
 र्व नवाणुं. आया रे, प्रभु समवसख्या सुखदाया ॥  
 जात्री० ॥ २ ॥ चैत्री पूनम दिन वखाणुं रे, पांच  
 कोडी पुंमरीक जाणुं रे, जे पाम्या पद निरवाणुं ॥  
 जात्री० ॥ ३ ॥ नमि विनमि राजा सुख सातें रे,  
 बे कोडी साधु संघातें रे, एतो पहोता पद लोकांतें  
 ॥ जात्री० ॥ ४ ॥ काति पूनिमें कर्मने तोडी रे, जिहां  
 सीधा मुनि दश कोडी रे, तेतो वंदो बे कर जोडी ॥  
 जात्री० ॥ ५ ॥ एम जरतेसरने पाटें रे, असंख्याता  
 मुनि वाटें रे, पाम्या मुगतिरमणी ए वाटें ॥ जात्री० ॥  
 ॥ ६ ॥ दोय सहस मुनि परिवार रे, यावच्चा सुत सुखकार  
 रे, सयपंच सेलंग अणगार ॥ जात्री० ॥ ७ ॥ वली  
 देवकीसुत सुजगीश रे, सीधा बहु यादववंश रे,  
 ते प्रणमो रे मन हंस ॥ जात्री० ॥ ८ ॥ पांच पांम  
 व इणें गिरि आव्या रे, सिद्धा नव नारद रुषि राया

रे, वली सांब प्रद्युम्न कहाया ॥जात्री०॥९॥ ए ती  
 रथ महिमावंत रे, जिहां सीधा साधु अनंत रे, इम  
 नांखे श्रीजगवंत ॥ जात्री० ॥ १० ॥ उज्ज्वलगिरि  
 समो नहीं कोय रे,तीरथ सघला में जोय रे, जे फर  
 स्यां पाप न होय ॥ जात्री० ॥ ११ ॥ ( १ ) एकल  
 आहारी ( २ ) सचित्त परिहारी रे, ( ३ ) पदचारी ने  
 ( ४ ) जूमि संथारी रे ( ५ ) शुद्ध समकित ने ( ६ )  
 ब्रह्म चारी ॥ जात्री० ॥ १२ ॥ एम ठहरी जे नर  
 पाले रे, बहुदान सुपात्रें आले रे, ते जनम मरण न  
 य टाले ॥ जात्री० ॥ १३ ॥ धन्य धन्य ते नरने नारी  
 रे, जेते विमलाचल एक नारी रे, जाउं तेहनी हुं ब  
 लिहारी ॥ जात्री० ॥ १४ ॥ श्रीजिनचंडसूरि सुपसा  
 यें रे, जिनहर्ष होय उहायें रे, इम विमलाचल गुण  
 गाये ॥ जात्री० ॥ १५ ॥ इति विमलाचल० ॥

॥ अथ श्रीमहावीर स्वामीनुं पालणुं प्रारंभः ॥

॥ माता त्रिशलायें पुत्र रतन जाइउं, चोशठ इंद्र  
 नां आसन कंपे सार ॥ अवधिज्ञानें जोइ धायो श्री  
 जिन वीरने, आवे कृत्रियकुंभ नयर मजार ॥ माता०  
 ॥ १ ॥ वीर प्रतिबिंब मूकी माता कने, अवसर्पिणी  
 निडा दीए सार ॥ एम मेरुशिखरें जिनने लावे न  
 क्तिशुं, हरि पंच रूप करी मनोहार ॥ माता० ॥ २ ॥  
 एम असंख्य कोटा कोटी मली देवता, प्रभुने उहव  
 मंमाणे लइ जाय ॥ पांरुक वन शिलायें जिनने लावे  
 न्क्तिशुं, हरि उठंगें थापे इंद्र घणुं उहाय ॥ माता०



॥ ३ ॥ एक कोडी शाठ लाख कलशें करी, वीरनो  
सनात्र महोत्सव करे सार ॥ अनुक्रमें वीर कुमरने  
लावे जननी मंदिरें, दासी प्रियंवदा जई तेणी वार  
॥ माता० ॥ ४ ॥ राजा सिद्धारथने दीधी वधामणी,  
दासीने दान अने बहु मान दिए मनोहार ॥ द्वित्रय  
कुंममांहे उहव मंमावियो, प्रजा लोकने हरष अपार  
॥ माता० ॥ ५ ॥ घर घर श्रीफल तोरण त्राटज बांधियां,  
गोरी गावे मंगल गीत रसाल ॥ राजा सिद्धारथें जनम  
महोत्सव कखो, माता त्रिशला थई उजमाल ॥ मा  
ता० ॥ ६ ॥ माता त्रिशला फूलावे पुत्र पारणे ॥ ए  
आंकणी ॥ फूले लाडकडा प्रभुजी आनंद नेर ॥ हर  
खी निरखिने इंडाणीयो जाए वारणें, आज आनंद  
श्रीवीरकुमरने घेर ॥ माता० ॥ ७ ॥ वीरना मुख  
डा उपर वारुं कोटी चंद्रमा, पंकज लोचन सुंदर वि  
शाल कपोल ॥ शुकचंचू सरिखी दीसे निर्मल नासि  
का, कोमल अधर अरुण रंगरोल ॥ माता० ॥ ८ ॥  
औषधि सोवनमढी रे शोने हालरे, नाजुक आज  
रण सघलां कंचन मोतीहार ॥ कर अंगुठो धावे वी  
रकुमर हर्षें करी, कांइ बोलावतां करे किलकार ॥ मा  
ता० ॥ ९ ॥ वीरने लिलाडें कीधो ठे कुंकुम चांदलो,  
शोने जडित मर्कत मणिमां दीसे लाल ॥ त्रिशलायें  
जुगतें आंजी अणियाली बेहु आंखडी, सुंदर कस्तू  
रीनुं टबकुं कीधुं गाल ॥ माता० ॥ १० ॥ कंचन शो  
ले जातनां रत्नें जडियुं पालणुं, फुलावती वेला थाए

घुघरनो घमकार ॥ त्रिशला विविध वचनें हरखी गा  
 ये हालरुं, खेंचे फूमतिआली कंचन दोरी सार ॥ मा  
 ता० ॥ ११ ॥ मारो लाडकवायो सरखा संगें रमवा  
 जशे, मनोहर सुखडली हुं आपिश एहने हाथ ॥  
 नोजन वेला रम ऊम रम ऊम करतो आवशे, हुं तो  
 धाऱ्ने जीडावीश हृदया साथ ॥ माता० ॥ १२ ॥  
 हंस कारंभव कोकिल पोपट पारेवडां, मांही बप्पैया  
 ने सारस चकोर ॥ मेनां मोर मेथ्यां ठे रमकडां  
 रमवा तणां, घम घम घुघरा वजावे त्रिशला कि  
 शोर ॥ माता० ॥ १३ ॥ मारो वीरकुमर निशालें न  
 एवा जायशे, साथें सज्जन कुटुंब परिवार ॥ हाथी  
 रथ घोडा पालायें नखुं शोजतुं, करी निशालगरणुं  
 अति मनोहार ॥ माता० ॥ १४ ॥ मारा वीर समा  
 णी कन्या सारी लावशुं, मारा कुमरने परणावीश  
 मोहोटे घेर ॥ मारो लाडकडो वर राजा घोडे बेसशे,  
 मारो वीर करशे सदाय लीला लहेर ॥ माता० ॥  
 ॥ १५ ॥ माता त्रिशला गावे वीर कुमरतुं हालरुं, मा  
 रो नंदन जीवजो कोडी वरीस ॥ ए तो राजराजेसर  
 थाशे नलो दीपतो, मारा मनना मनोरथ पूरशे जगी  
 श ॥ माता० ॥ १६ ॥ धन्य धन्य द्दत्रीकुंम गाम म  
 नोहरु, जिहां वीरकुमरनो जनम गवाय ॥ राजा सि  
 ष्ठारथना कुलमांहे दिनमणि, धन्य धन्य त्रिशला राणी  
 जेहनी माय ॥ माता० ॥ १७ ॥ एम सहीयर टोली  
 नोली गावे हालरुं, थाशे मनना मनोरथ तेहने घेर ॥

अनुक्रमें महोदय पदवी रूपविजय पद पामरो, गाए  
अमिय विजय कहे थारो लीला लहेर ॥माता०॥१७॥

॥ अथ श्री महावीर स्वामीनुं हालरियुं प्रारंजः ॥

॥ माता त्रिशला जुलावे पुत्र पालणे, गावे हालो  
हालो हालरुवानां गीत ॥ सोना रूपाने वली रत्नें  
जडियुं पालणुं, रेशम दोरी घूघरी वागे बुम बुम री  
त ॥ हालो हालो हालो हालो मारा नंदने ॥ १ ॥  
जिनजी पास प्रचुथी वरस अढीशें अंतरें, होशे चो  
वीशमो तीर्थंकर जितपरिमाण ॥ केशी स्वामी मुख  
थी एवी वाणी सांजली, साची साची दुः ते मारे  
अमृत वाण ॥ हा० ॥ २ ॥ चौदे स्वपनें होवे चक्रा के  
जिनराज, वीता बारे चक्री नहिं हवे चक्री राज, जि  
नजी पास प्रचुना श्री केशी गण धार, तेहने वचनें  
जाण्या चोवीशमा जिन राज, मारी कूखें आव्या ता  
रण तरण ऊहाज, मारी कूखें आव्या त्रण्य चुवन  
शिरताज, मारी कूखें आव्या संघ तीरथनी लाज,  
हुंतो पुण्य पनोती इंदाणी थः आज ॥ हा० ॥  
॥ ३ ॥ मुज्जे दोहोलो उपन्यो जे बेसुं गज अंबा  
डीयें, सिंहासनपर बेसुं चामर ठत्र धराय ॥ सहु  
लक्ष्ण मुज्जे नंदन ताहारा तेजनां, ते दिन संजारुं  
ने आनंद अंग न माय ॥ हा० ॥ ४ ॥ करतल पगतल  
लक्ष्ण एक हजारने आव ठे, तेहथी निश्चय जाण्या  
जिनवर श्री जगदीश ॥ नंदन जमणी जंघें लंठन  
सिंह बिराजतो, में पहेले सुपनें दीगो विशवा वीश ॥

हा० ॥ ५ ॥ नंदन नवला बंधव नंदीवर्द्धनना तमें,  
 नंदन जोजाश्योना देयर ठो सुकुमाल ॥ हसरो जो  
 जाश्यो कही दीयर माहारा लाडका, हसरो रमरो  
 ने वली चूँटी खणरो गाल, हसरो रमरो ने वली तुं  
 सा देरो गाल ॥ हा० ॥ ६ ॥ नंदन नवला चेडा रा  
 जाना जाणेज ठो, नंदन नवला पांचरो मामीना  
 जाणेज ठो, नंदन मामलीयाना जाणेजा सुकुमाल  
 ॥ हसरो हाथे उहाली कहीने नाहाना जाणेजा,  
 आंगव्यो आंजी ने वली टबकुं कररो गाल ॥ हा० ॥  
 ७ ॥ नंदन मामा मामी लावरो टोपी आंगलां, रत  
 ने जडीयां जालर मोती कशबी कोर ॥ नीलां पीलां ने  
 वली रातां सरवे जातिनां, पहेरावरो मामी माहारा नं  
 दकिशोर ॥ हा० ॥ ८ ॥ नंदन मामा मामी सुखड  
 ली सहु लावरो, नंदन गजुवे नररो लाडु मोतीचूर  
 ॥ नंदन सुखडां जोशने लेशे मामी जाभणां, नंदन  
 मामी कहेरो जीवो सुख नरपूर ॥ हा० ॥ ९ ॥ नंद  
 न नवला चेडा मामानी साते सती, मारी नत्रीजी ने  
 बेन तमारी नंद ॥ ते पण गुंजे नरवा लाखणसाई  
 लावरो, तुमने जोइ जोइ होरो अधिको परमानंद ॥  
 ॥ हा० ॥ १० ॥ रमवा काजें लावरो लाख टकानो  
 घूघरो, वली शूडा मेनां पोपट ने गजराज ॥  
 सारस हंस कोयल तीतरने वली मोर जी, मामी  
 लावरो रमवा नंद तमारे काज ॥ हा० ॥ ११ ॥ ठप्प  
 न कुमरी अमरी जलकलशें नवराविया, नंदन तमने

अमने केलीघरनी मांहे ॥ फूलनी वृष्टि कीधी योजन ए  
 कने मंमलें, बहु चिरंजीवो आशीष दीधी तुमने त्यांहे  
 ॥ हा० ॥ १२ ॥ तमने मेरुगिरि पर सुरपतियें नवरा  
 विया, निरखी निरखी हरखी सुकृत लान कमाय ॥  
 मुखडा उपर वारुं कोटि कोटि चंडमा, वली तन पर  
 वारुं ग्रहगणनो समुदाय ॥ हा० ॥ १३ ॥ नंदन नव  
 ला नणवा नीशालें पण मूकशुं, गजपर अंबाडी बे  
 साडी मोहोटे साज ॥ पसली नरशुं श्रीफल फोफल  
 नागरवेलशुं, सुखडली जेशुं नीशालीयाने काज ॥  
 हा० ॥ १४ ॥ नंदन नवला मोहोटा आशो ने परणा  
 वशुं, वटूवर सरखी जोडी लावशुं राजकुमार ॥ स  
 रखा वेवाई वेवाणुंने पधरावशुं, वरवहु पोंखी जेशुं  
 जोइ जोइने देदार ॥ हा० ॥ १५ ॥ पीअर सासर  
 माहारा बेहु पख नंदन कजला, महारी कूखें आव्या  
 तात पनेता नंद ॥ महारे आंगण वूठा अमृत दूधें  
 मेहुला, महारे आंगण फलिया सुरतरु सुखना कंद  
 ॥ हा० ॥ १६ ॥ इणि परें गाथुं माता त्रिशला सुतनुं  
 पालणुं, जे कोइ गाशे जेशे पुत्र तणा साम्राज ॥  
 बीलीमोरा नगरें वरणव्युं वीरनुं हालरुं, जय जय  
 मंगल होजो दीपविजय कविराज ॥ हा० ॥ १७ ॥ इति ॥

॥ अथ रात्रिजोजननी सवाय प्रारंभः ॥

॥ पुण्यसंजोगें नरनव लाधो, साधो आतम का  
 ज ॥ विषया रस जाणो विष सरिखो, एम नांखे  
 जिनराज रे ॥ प्राणी रात्रिजोजन वारो ॥ आगम

વાણી સાચી જાણી, સમકિત ગુણ સહી નાણી રે ॥  
 પ્રાણી ॥ રાત્રી ૦ ॥ ૧ ॥ એ આંકણી ॥ અજદ્ય બાવી  
 શમાં રચણીજોજન, દોષ કહ્યા પરધાન ॥ તેણેં કાર  
 ણ રાતેં મત જમજો, જો હુવે હશ્ડે શાન રે ॥ પ્રા ૦  
 ॥ ૨ ॥ દાન સ્નાન આયુધ ને જોજન, એટલાં રાતેં  
 ન કીજેં ॥ એ કરવાં સૂરજની સાચેં, રીતિવચન ન  
 મજીજેં રે ॥ પ્રા ૦ ॥ ૩ ॥ ઉત્તમ પશુ પંચી પણ રા  
 તેં, ટાલે જોજન ટાણો ॥ તુમેં તો માન રી નામ ધરા  
 વો, કેમ સંતોષ ન આણે રે ॥ પ્રા ૦ ॥ ૪ ॥ માચી જૂ કી  
 ડી કોલીઆવડો, જોજનમાં જો આવે ॥ કોઢ જલોદર  
 વમન વિકલતા, એવા રોગ ઉપાવે રે ॥ પ્રા ૦ ॥ ૫ ॥ નરું  
 જવ જીવહત્યા કરતાં, પાતક જેહ ઉપાવ્યું ॥ એક ત  
 લાવ ફોડંતાં તેટલું, દૂષણ સુગુરુ બતાવ્યું રે ॥ પ્રા ૦  
 ॥ ૬ ॥ ॥ એકલોત્તર જવ સર ફોડ્યા સમ, એક દવ દે  
 તાં પાપ ॥ અઠલોત્તર જવ દવ દીધા જિમ, એક કુવ  
 ણિજ સંતાપ રે ॥ પ્રા ૦ ॥ ૭ ॥ એક શો ચુમ્માલીશ  
 જવ લગેં કીધા, કુવણિજના જે દોષ ॥ કૂડું એક  
 કલંક દિયંતાં, તેહવો પાપનો પોષ રે ॥ પ્રા ૦ ॥ ૮ ॥  
 એકશો એકાવન જવ લગેં દીધાં, કૂડાં કલંક અપાર ॥  
 તેવું રે એક શીયલ સ્વંમયામાં, દોષ કહ્યો નિરધાર રે  
 ॥ પ્રા ૦ ॥ ૯ ॥ એક શો નવાણું જવ લગેં સ્વંમયા,  
 શીયલ વિષય સંબંધ ॥ તેહવો એક રાત્રિ જમવામાં,  
 કર્મ નિકાચિત્ત બંધ રે ॥ પ્રા ૦ ॥ ૧૦ ॥ રાત્રિજોજન  
 માં દોષ ઘણા હેં, કહેતાં નાવે પાર ॥ કેવલી કહેતાં

पार न पावे, पूरव कोडी मज्जार रे ॥ प्रा० ॥ ११ ॥  
 एवं जाणीने उत्तम प्राणी, नित चौविहार करीजें ॥  
 मासैं मासैं पासखमणनो, जान एणें विधें लीजें रे  
 ॥ प्रा० ॥ १२ ॥ मुनि वसतानी एह शिखामण, जे  
 पाळे नर नारी ॥ सुर नर सुख विलसीनें होवें, मोह  
 तणा अधिकारी रे ॥ प्रा० ॥ १३ ॥ इति ॥

॥ अथ निंदावारकसंज्ञाय ॥

॥ निंदा म करजो कोइनी पारकी रे, निंदानां बो  
 व्यां महापाप रे ॥ वैर विरोध वाधे घणो रे, निंदा  
 करतो न गणो माय बाप रे ॥ निं० ॥ १ ॥ दूर बलंती  
 कां देखो. तुम्हें रे, पगमां बलती देखो सहु कोय रे ॥  
 परना मेलमां धोयां लूगडां रे, कहो केम ऊजलां हो  
 य रे ॥ निं० ॥ २ ॥ आप संजालो सहुको आपणो  
 रे, निंदानी मूको पडी टेव रे ॥ थोडे घणो अवगु  
 णें सहु नख रे, केहनां नलियां चुए केहनां नेव  
 रे ॥ निं० ॥ ३ ॥ निंदा करे ते थाये नारकी  
 रे, तप जप कीधुं सहु जाय रे ॥ निंदा करो तो क  
 रजो आपणी रे, जेम लुटकवारो थाय रे ॥ निं० ॥  
 ॥ ४ ॥ गुण ग्रहेजो सहु को तणा रे, जेहमां देखो  
 एक विचार रे ॥ कृष्णपरें सुख पामशो रे, समयसुं  
 दर सुखकार रे ॥ निंदा० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ शीयलविषे पुरुषने शिखामणनी संज्ञाय ॥

॥ चाल ॥ सुण सुण कंता रे, शीख सोहामणी ॥  
 प्रीत न कीजें रे, परनारी तणी ॥ उथलो ॥ परनारी

साथें प्रीत पियुडा, कहो किण परें कीजीयें ॥ ऊंध  
 वेची आपणी, उजागरो केम लीजीयें ॥ काढडी  
 बूटो कहे लंपट, लोकमांहे लाजीयें ॥ कुल विषय  
 खंपण रखे लागे, सगामां केम गाजीयें ॥ १ ॥  
 ॥ चाल ॥ प्रीति करंतां रे, पेहेलां बीहीजीयें ॥ रखे  
 कोइ जाणे रे, मनशुं धूजीयें ॥ उथलो ॥ धूजीयें म  
 नशुं फूरीयें पण, जोग मलवो ठे नही ॥ रात दिन  
 विलपंतां जाये, अवटाई मरवुं सही ॥ निज नारीथी  
 संतोष न वळ्यो, परनारीथी कहो शुं हरो ॥ जो नरे  
 जाणे तृप्ति न वली, तो एउ चाटे शुं हरो ॥ २ ॥  
 ॥ चाल ॥ मृगतृष्णाथी रे, तृष्णा नवि टळे ॥ वेळु  
 पीव्यां रे, तेल न नीसरे ॥ उथलो ॥ न नीसरे  
 पाणी वलोवतां, लव लेश माखणनो वली ॥ बूडतां  
 बाचक जरीया केणें, ते तखा वात न सांजली ॥ तेम  
 नार रमतां परतणी, संतोष न वळ्यो एक घडी ॥  
 चित चटपटी उच्चाट थाये, नयणें नावें निड्डी ॥ ३ ॥  
 ॥ चाल ॥ जेवो खोटो रे, रंग पतंगनो ॥ तेवो चटको  
 रे, परस्त्रीसंगनो ॥ उथलो ॥ परनारी साथें प्रेम पि  
 युडा, रखे तुं जाणे खरो ॥ दिन चार रंग सुरंग रूडो,  
 पढी नही रहे निर्धरो ॥ जे घणा साथें नेह मांमे,  
 ठांम तेहशुं वातडी ॥ एम जाणी म म कर नाह  
 ला, परनारी साथें प्रीतडी ॥ ४ ॥ चाल ॥ जे पति  
 वाहालो रे, वंचे पापिणी ॥ परशुं प्रेमें रे, राचे सा  
 पिणी ॥ उथलो ॥ सापिणी सरखी वेण निरखी, रखे



शियलथकी चले ॥ आंखने मटके अंग लटके, देव  
 दानवने ठले ॥ मनमांहे काली अति रसाली, वाणि  
 मीठी जेलडी ॥ सांजली जोला रखे नूलो, जाणजो  
 विषवेलडी ॥ ५ ॥ चाल ॥ संग निवारो रे, पररामा  
 तणो ॥ शोक न कीजें रे, मन मलवा तणो ॥ उ  
 थलो ॥ शोक शाने करो फोगट, देखवुं पण दोहिलुं ॥  
 कृण मेडियें कृण जेरीयें, जमतां न लागे सोहिलुं ॥  
 उन्हासने निःश्वास आवे, अंग जांजे मन जमे ॥  
 वली काभिनी देखी देह दाजे, अन्न दीतुं नवि गमे  
 ॥ ६ ॥ चाल ॥ जाये कलामी रे, मनशुं कल मले ॥  
 उन्मत्त थऽनें रे, अलल पलल लवे ॥ उथलो ॥ लवे  
 अलल पलल जाणो, मोहघेलो मन रडे ॥ महाम  
 दन वेदन कठिन जाणी, मरण वारु त्रेवडे ॥ ए दश  
 अवस्था काम केरी, कंत कायाने दहे ॥ एम चित्त  
 जाणी तजे राणी, पारकी ते सुख लहे ॥ ७ ॥ चाल ॥  
 परनारीना रे, पराजव सांजलो ॥ कंता कीजें रे, जाव  
 ते निर्मलो ॥ उथलो ॥ निर्मलें जावें नाह समजो,  
 परवधूरस परिहरो ॥ चांपीयो कीचक जीमसेनें, शि  
 ला हेठल सांजरो ॥ रण पड्यां रावण दशे मस्तक,  
 रडवड्यां ग्रंथें कह्यां ॥ तेम मूंजपति दुःखपुंज पा  
 म्यो, अपजश जगमांहे लह्या ॥ ८ ॥ चाल ॥ शिय  
 ल सलूणा रे, माणस सोहीयें ॥ विण आचरणें रे,  
 जग मन मोहीयें ॥ उथलो ॥ मोहीयें सुर नर करे  
 सेवा, विष अमिय थऽ संचरे ॥ केसरी सिंह शियाल

थाये, अनल अति शीतल करे ॥ माप थाए फूल  
माला, लह्मी घर पाणी नरे ॥ परनारी परिहरी शि  
यल मन धरी, मुक्ति वधू हेला वरे ॥ ए ॥ चाल ॥  
ते माटे हुं रे, वालम वीनवुं ॥ पाय लागीने रे, म  
धुर वयणें स्तवुं ॥ उथलो ॥ वयण महारुं मानीयें,  
परनारीथी रहो वेगला ॥ अपवाद माथे चढे मोहो  
टा, नरकें थश्यें दोहिला ॥ धन्य धन्य ते नर नारी  
जे जग, शियल पाले कुलतिलो, ते पामरो यश जगत  
मांही, कुमुदचंद सम ऊजलो ॥ १० ॥ इति ॥

॥ अथ शियलविषे नारीने शीखामणनी सखाय ॥

॥ चाल ॥ एक अनोपम, शीखामण खरी ॥ सम  
जी लेजो रे, सघली सुंदरी ॥ उथलो ॥ सुंदरी सहेजे  
हृदय हेजे, पर सेजे नवि वेसीयें ॥ चित्तथकी चूकी  
लाज मूकी, पर मंदिर नवि पेसीयें ॥ बहु घेर हींमी  
नार निर्लज, शास्त्रें पण तजवी कही ॥ जेम् प्रेत दृष्टें  
पड्युं नोजन, जमवुं ते जुगतुं नही ॥ १ ॥ चाल ॥  
परखुं प्रेमें रे, हसीय न बोलीयें ॥ दांत देखाडी रे,  
गुह्य न खोलीयें ॥ उथलो ॥ गुह्य घरनुं परनी आगे,  
कहोने केम प्रकाशीयें ॥ वली वात जे विपरीत जा  
से, तेहथी दूरें नाशीयें ॥ असुर सवारा अने अगो  
चर, एकलां नवि जाश्यें ॥ सहसातकारें काम कर  
तां, सहेजे शियल गमावीयें ॥ २ ॥ चाल ॥ नट  
विट नरखुं रे, नयण न जोडीयें ॥ मारग जातां रे,  
आघुं उढीयें ॥ उथलो ॥ आघुं ते उढी वात करतां,

घणुंज रूडा शोनीयें ॥ सासू अने माना जण्या विण,  
 पलक पास न थोनीयें ॥ सुख दुख सरज्युं पामीयें  
 पण, कुलाचार न मूकीयें ॥ परवश वसतां प्राण तज  
 तां, शियलथी नवि चूकीयें ॥ ३ ॥ चाल ॥ व्यसनी  
 सार्थे रे, वात न कीजीयें ॥ हाथो हाथे रे, तालि न  
 लीजीयें ॥ उथलो ॥ ताली न लीजें नजर न दीजें,  
 चंचल चाल न चालीयें ॥ एक विषय बुद्धें वस्तु केह  
 नी, हाथे पण नवि जालीयें ॥ कोटि कंदर्प रूप सुंदर,  
 पुरुष पेखी न मोहियें ॥ तृणखलां तोले गणी तेहने,  
 फरिय सामुं न जोड्यें ॥ ४ ॥ चाल ॥ पुरुष पियारो  
 रे, बलि न वखाणीयें ॥ वृद्ध ते पिता रे, सरखो जाणी  
 यें ॥ उथलो ॥ जाणीयें पियु विण पुरुष सघला, स  
 होदर समोवडे ॥ पतिव्रतानो धर्म जोतां, नावे कोऽ  
 तडोवडें ॥ कुरूप कुष्ठी कूबडो ने, दुष्ट दुर्बल निर्गु  
 णो ॥ जरतार पामी जामिनी ते, इंध्यी अधिको गु  
 णो ॥ ५ ॥ चाल ॥ अमर कुमारें रे, तजी सुरसुंद  
 री ॥ पवनंजयें रे, अंजना परिहरी ॥ उथलो ॥ परि  
 हरि सीता रामें वनमां, नले दमयंती बली ॥ महा  
 सती माथे कष्ट पड्यां पण, शियलथी ते नवि चली ॥  
 कसोटीनी परें कसीय जोतां, कंतछुं विहडे नही ॥  
 तन मन वचनें शियल राखे, सती ते जाणो सही ॥ ६ ॥  
 ॥ चाल ॥ रूप देखाडी रे, पुरुष न पाडीयें ॥ व्याकुल  
 थडने रे, मन न बगाडीयें ॥ उथलो ॥ मन न बगाडीयें  
 पर पुरुषनुं, जोग जोतां नवि मले ॥ कलंक माथे चढे

कूडां, सगां सहु दूरें टले ॥ अणसरज्यो उच्चाट था  
 ये, प्राण तिहां लागी रहे ॥ इह लोक पामे आप  
 दा, परलोक पीडा बहु सहे ॥ ७ ॥ चाल ॥ रामने  
 रूपें रे, शूर्पनखा मोही ॥ काज न सीधुं रे, अने ईज  
 त खोइ ॥ उथलो ॥ ईजत खोइ देख अजया, गीत सु  
 दर्शन नवि चव्यो ॥ जरतार आगल पडी नौतो, अ  
 पवाद सघले उह्वयो ॥ कामनी बुद्धें कामिनी, व  
 कचूल बाह्यो घणुं ॥ पण शियलथी चूकी नही, द  
 टांत एम केतां नणुं ॥ ८ ॥ चाल ॥ शियल प्रनावें  
 रे, जुवो शोले सती ॥ त्रिभुवनमांहे रे, जे थई ठती  
 ॥ उथलो ॥ ठती थइने शियल राख्युं, कल्पना की  
 धी नही ॥ नाम तेहनां जगत जाणे, विश्वमां जगी  
 रही ॥ विविध रत्नं जडित नूपण, रूपसुंदरी किन्नरी  
 ॥ एक शियल विण शोने नही, ते सत्य गणजो सुं  
 दरी ॥ ९ ॥ चाल ॥ शियल प्रनावें रे, सहु सेवा क  
 रे ॥ नवे वाडें रे, जेह निर्मल धरे ॥ उथलो ॥ धरे  
 निर्मल शियल उज्जल, तास कीर्ति जलहले ॥ मन  
 कामना सवि सिद्धि पामे, अष्ट जय दूरें टले ॥ धन्य  
 धन्य ते जाणो धरा, जे शियल चोखुं आदरे, आनं  
 दना ते उध पामे, उदय महाजस विस्तरे ॥ १० ॥

॥ अथ क्रोधनी सन्नाय ॥

॥ कडुवां फल ठे क्रोधनां, झानी एम बोले ॥ री  
 शतणो रस जाणीयें, हालाहल तोलें ॥ १० ॥ १ ॥  
 क्रोधें क्रोड पूरव तणुं, संजम फल जाय ॥ क्रोध स

हित तप जे करे, ते तो लेखें न थाय ॥ क० ॥ १ ॥  
 साधु घणो तपीयो दुतो, धरतो मन वैराग ॥ शिष्य  
 ने क्रोधथकी थयो, चंमकोशियो नाग ॥ क० ॥ ३ ॥  
 आग उठे जे घरथकी, पहेलुं ते घर बाळे ॥ जलनो  
 जोग जो नवि मळे, तो पासेंनुं प्रजाळे ॥ क० ॥ ४ ॥  
 क्रोध तणी गति एहवी, कहे केवलनाणी ॥ हाण क  
 रे जे हेतनी, जालवजो प्राणी ॥ क० ॥ ५ ॥ उद  
 यरतन कहे क्रोधने, काढजो गळे साई ॥ का  
 या करजो निर्मली, उपशम रस नाई ॥ क० ॥ ६ ॥

॥ अथ माननी सज्ञाय ॥

॥ रे जीव मान न कीजीयें, मानें विनय न आवे  
 रे ॥ विनय विना विद्या नहीं, तो किम समकित पावे  
 रे ॥ रे० ॥ १ ॥ समकित विण चारित्र नहीं, चारित्र  
 विण नहीं मुक्ति रे ॥ मुक्ति विना सुख शाश्वतां, केम ल  
 हियें युक्ति रे ॥ रे० ॥ २ ॥ विनय वडो संसारमां, गुण  
 मां अधिकारी रे ॥ गर्वे गुण जाये गली, चित्त जूठ विचा  
 री रे ॥ रे ० ॥ ३ ॥ मान कखुं जो रावणें, ते तो रामें  
 माखो रे ॥ डुर्योधन गरवें करी, अंतें सवि हाखो रे ॥  
 रे० ॥ ४ ॥ शूकां लाकडां सारिखो, दुखदायी ए खो  
 टो रे ॥ उदयरत्न कहे मानने, देजो देशोटो रे ॥ रे० ॥ ५ ॥

॥ अथ मायानी सज्ञाय ॥

॥ समकितनुं बीज जाणीयें जी, सत्य वचन सा  
 द्दात ॥ साचामां समकित वसे जी, कूडामां मिथ्या  
 त रे ॥ प्राणी ॥ मकरो माया लगार ॥ १ ॥ ए

आंकणी ॥ मुख मीठो जूठो मनै जी, कूड कपटनो  
 रे कोट ॥ जीजै तो जी जी करे जी, चित्तमांहे ताके  
 चोट रे ॥ प्रा० ॥ १ ॥ आप गरजै आघो पडे जी,  
 पण न धरे विश्वास ॥ मेल न ठामे मन तणो जी, ए  
 मायानो पास रे ॥ प्रा० ॥ २ ॥ जेहखुं मांमे प्रीतडी  
 जी, तेहखुं रहे प्रतिकूल ॥ मन नवि मूके आमलो जी,  
 ए मायानुं मूल रे ॥ प्रा० ॥ ४ ॥ तप कीधुं माया  
 करी जी, मित्रखुं राख्यो रे जेद ॥ मल्ली जिने  
 श्वर जाणजो जी, तो पाम्या स्त्रीवेद रे ॥ प्रा० ॥  
 ॥ ५ ॥ उदयरत्न कहे सांजलो जी, मेलो मायानी  
 बुद्ध ॥ मुक्तिपुरी जावा तणो जी, ए मारग ठे शुद्ध  
 रे ॥ प्रा० ॥ ६ ॥ इति मायानी सञ्ज्ञाय ॥

॥ अथ लोचनी सञ्ज्ञाय ॥

॥ तुमें लक्ष्मण जो जो लोचनां रे, लोचै जन  
 पामे ह्योचना रे ॥ लोचै माह्या मन मोह्या करे रे,  
 लोचै दुर्घट पंथे संचरे रे ॥ तु० ॥ १ ॥ तजे लोच  
 तेहनां लेउं जामणां रे, बली पाय नमीने करुं खा  
 मणां रे ॥ लोचै मर्यादा न रहे केहनी रे, तुमें संगत  
 मेलो तेहनी रे ॥ तु० ॥ २ ॥ लोचै घर मेहली  
 रणमां मरे रे, लोचै ऊंच ते नीचुं आचरे रे ॥ लोचै  
 पाप जणी पगलां जरे रे, लोचै अकारज करतां न  
 उंसरे रे ॥ तु० ॥ ३ ॥ लोचै मनहुं न रहे निर्मखुं  
 रे, लोचै सगपण नासे वेगखुं रे ॥ लोचै न रहे प्री  
 ति ने पावतुं रे, लोचै धन मेले बहु एकतुं रे ॥ तु० ॥

॥ ४ ॥ लोचें पुत्र प्रत्यें पिता हणो रे, लोचें हत्या  
पातक नवि गणो रे ॥ ते तो दाम तणे लोचें करी  
रे, उपर मणिधर याये ते मरी रे ॥ तु० ॥ ५ ॥  
जोतां लोचनो थोच दिसे नहीं रे, एवुं सूत्र सिद्धांतें  
कथुं सही रे ॥ लोचें चक्री सज्जम नामें जुठ रे,  
ते तो समुद्रमांहे मूबी सुवो रे ॥ तु० ॥ ६ ॥ एम जा  
णीने लोचने ठंमजो रे, एक धर्मेशुं ममता मंमजो  
रे ॥ कवि उदयरत्न नांखे मुदा रे, वंदूं लोच तजे  
तेहने सदा रे ॥ तु० ॥ ७ ॥ इति लोचनी सद्याय ॥

॥ अथ श्री श्रावक करणीनी सद्याय ॥

॥ चोपाई ॥ श्रावक तुं ऊठे परजात, चार घडी  
ले पाठली रात ॥ मनमां समरे श्री नवकार, जिम  
पामे नव सायर पार ॥ १ ॥ कवण देव कवण गुरु  
धर्म, कवण अमारुं ठे कुलकर्म ॥ कवण अमारो  
ठे व्यवसाय, एवुं चिंतवजे मन मांय ॥ २ ॥ सामा  
यिक लेजे मन शुद्ध, धर्मनी हैडे धरजे बुद्ध ॥ पडिक्क  
मणुं करे रयणी तणुं, पातक आलोई आपणुं ॥ ३ ॥  
कायाशक्तें करे पञ्चस्काण, सूधी पाले जिननी आण ॥  
नणजे गुणजे स्तवन सद्याय, जिणहुंती निस्तारो  
थाय ॥ ४ ॥ चीतारे नित्य चउदे नीम, पाले दया  
जीवंतां सीम ॥ देहरे जाई जुहारे देव, इव्यनावथी  
करजे सेव ॥ ५ ॥ पूजा करतां लान अपार, प्रभु  
जी महोटा मुक्ति दातार ॥ जे उठापे जिनवर देव,  
तेहने नव मंमकनी टेव ॥ ६ ॥ पोशालें गुरु वंदजे

जाय, सुणजे वखाण सदा चित्त लाय ॥ निर्दूषण सू  
 जंतो आहार, साधुने देजे सुविचार ॥ ७ ॥ साहामिवत्स  
 ल करजे घणुं, सगपण मोहोदू सहामीतणुं ॥ दुःखीया  
 हीणा दीनने देख, करजे तास दया सुविशेष ॥ ८ ॥  
 घर अनुसारें देजे दान, मोहोटाणुं म करे अजिमा  
 न ॥ गुरुने सुख लेजे आखडी, धर्म न मूकीश एके  
 घटी ॥ ९ ॥ वारु शुद्ध करे व्यापार, उठा अधिका  
 नो परिहार ॥ म नरजे केनी कूडी साख, कूडा ज  
 नणुं कथन म जांख ॥ १० ॥ अनंतकाय कहा बत्री  
 श, अजह्य बावीशे विश्वावीश ॥ ते नहण नवि  
 कीजें किमे, काचां कूणां फल मत जिमे ॥ ११ ॥ रा  
 त्रीनोजनना बहु दोष, जाणीने करजे संतोष ॥ सा  
 जी साबू लोह ने गली, मधु धावडी मत वेचो वली  
 ॥ १२ ॥ वली म करावे रंगण पास, दूषण घणां  
 कहां ठे तास ॥ पाणी गलजे बे बे वार, अणगल  
 पीतां दोष अपार ॥ १३ ॥ जीवाणीनां करजें यत्न,  
 पातक ठंढी करजे पुण्य ॥ ठाणां श्रंण चूलो जोय,  
 वावरजे जिम पाप न होय ॥ १४ ॥ घृतनी परें वा  
 वरजे नीर, अणगल नीर म धोश चीर ॥ वारे व्रत  
 सूधां पालजे, अतीचार सघला टालजे ॥ १५ ॥ क  
 ह्यां पन्नरे कर्मादान, पापतणी परहरजे खाण ॥ मा  
 थें म लेजे अनरथ दंम, मिथ्या मेल म नरजे पिंम  
 ॥ १६ ॥ समकित शुद्ध हैडे राखजे, बोल विचारी  
 ने जांखजे ॥ पांच तिथि म करो आरंज, पालो



शीयल तजो मन दंज ॥ १७ ॥ तेल तक्र घृत दूध  
 ने दहिं, उघाडां मत मेलो सही ॥ उत्तम ठामें खर  
 चो वित्त, पर उपगार करो शुजचित्त ॥ १८ ॥ दिव  
 स चरिम करजे चोविहार, चारे आहार तणो परि  
 हार ॥ दिवस तणां आलोए पाप, जिम नांजे सघ  
 ला संताप ॥ १९ ॥ संध्यायें आवश्यक साचवे, जि  
 नवर चरण शरण नवजवे ॥ चारे शरण करी दृढ  
 होय, सागारी अणसण ले सोय ॥ २० ॥ करे म  
 नोरथ मन एहवा, तीरथ जेठुंजे जायवा ॥ समेत  
 शिखर आबू गिरनार, जेटीश हुं धन धन अवतार  
 ॥ २१ ॥ श्रावकनी करणी ठे एह, एहथी थाये न  
 वनो ठेह ॥ आठे कर्म पडे पातलां, पाप तणा बूटे  
 आमला ॥ २२ ॥ वारु लहियें अमर विमान, अनु  
 क्रमें पामे शिवपुर ठाम ॥ कहे जिनहर्ष घणो ससने  
 ह, करणीं दुःखहरणी ठे एह ॥ २३ ॥ इति ॥

॥ श्रीनेम राजुलनी सवाय ॥

॥ नदी जमुनाके तीर, उमे दोय पंखीयां ॥ ए देशी ॥

॥ पियुजी पियुजी रे नाम, जपुं दिन रातियां ॥  
 पियुजी चाट्या परदेश, तपे मोरी ठातीयां ॥ पग प  
 ग जोती वाट, वालेसर कब मिले ॥ नीर विठोयां  
 मीन, के ते ज्युं टलवले ॥ १ ॥ सुंदर मंदिर सेज,  
 साहिब विण नवि गमे ॥ जिहां रे वालेसर नेम,  
 तिहां मारुं मन नमे ॥ जो होवे सज्जन दूर, तोही  
 पासें वसे ॥ किहां पंकज किहां चंद, देखी मन उल्लसे

॥ १ ॥ निःस्नेहीशुं प्रीत, म करजो को सही ॥ पतंग  
जलावे देह, दीपक मनमें नही ॥ बाहाला माणस  
नो विजोग, म होजो केहने ॥ साले रे साल समा  
न, हश्यामां तेहने ॥ ३ ॥ विरह व्यथानी पीड, जो  
बन वय अति दहे ॥ जेनो पियु परदेश, ते माणस  
डुःख सहे ॥ फुरि फुरि पंजर कीध, काया कमलज  
जिसी ॥ हजिय न आव्यो नेम, मलि न नयणें ह  
सी ॥ ४ ॥ जेहने जेहशुं राग, टाव्यो ते नवि टले ॥  
चकवा रयणी विजोग, ते तो दिवसें मले ॥ आंवा  
केरो स्वाद, लिंबू ते नवि करे ॥ जे नाह्या गंगा नी  
र, ते बिछर किम तरे ॥ ५ ॥ जे रम्या मालती फू  
ल, धतूरे किम रमे ॥ जेहने घृतशुं प्रेम ते, तेले  
किम जिमे ॥ जेहने चतुरशुं नेह ते, अवर ने शुं  
करे ॥ नवजोबन तजी नेम, वैरागी थड फरे ॥  
॥ ६ ॥ राजुल रूपनिधान, पहोती सहसाव  
ने ॥ जड वांघ्या प्रभु नेम, संजम लेड एक मनै ॥ पा  
म्यां केवल ज्ञान के, पहोती मननी रली ॥ रूपविजय  
प्रभु नेम, जेटे आशा फली ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ निडडीनी सिखाय प्रारंभः ॥

॥ निडडी वेरण दुड रही, किम कीजें हो सा पु  
रुष निदान के ॥ चोर फरे चिहुं पासथी, किम सूता  
हो कांइ दिन ने रात के ॥ नि० ॥ १ ॥ वीर कहे सु  
णो गोयमा, मत करजो हो एक समय प्रमाद के ॥  
जरा आवे यौवनं गले, किम सूता हो कांइ कवण

सवाद के ॥ नि० ॥ १ ॥ चउद पूरवधर मुनिवरा,  
निझ करता हो गया नरक निगोद के ॥ अनंतो अ  
नंत काल तिहां रहे, इम बगडे हो कांइ धरमनो मो  
द के ॥ नि० ॥ ३ ॥ जोरावर घणा जालमी, यमरा  
जा हो कांइ सबल करूर के ॥ निजसेन्या लइ चिहुं  
दिशैं, किम जागता हो नर कहीयें शूर के ॥ नि० ॥  
॥ ४ ॥ जागतडां गंजे नही, ठेतराये हो नर सूतो  
नेट के ॥ सूतारिणी पाप्मा जण्णा, किम कीजैं हो  
शा पुरुषनी जेट के ॥ नि० ॥ ५ ॥ श्रीवीरें इम  
जाखीयुं, पंखी नारंम हो न करे परमाद के ॥ तेह  
तणीपरें विचरजो, परिहरजो हो गोयम परमाद के  
॥ नि० ॥ ६ ॥ वीर वचन इम सांजली, परिहरियो  
हो गोयमें परमाद के ॥ लीला सुख लाथां घणां, थि  
र रहियो हो जगमां जसवाद के ॥ नि० ॥ ७ ॥ निंद  
निंझडी मंत आणजो, सुइ रहेजो हो सहुको सा  
वधान के ॥ ध्यान धरम हिये धारजो, इम जाखे हो  
मुनि कनकनिदान के ॥ नि० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ सिद्धचक्रजीनुं स्तवन ॥

॥ तुमें पीतांबर पहेछां जी, मुखने मरकलडे ॥ ए देशी ॥

॥ श्रीसिद्धचक्रने वंदोजी, मनोहर मनगमता ॥  
जे अविचल सुखनो कंदोजी ॥ मनो० ॥ मास आ  
शायें मधुरें सोहावे जी ॥ मनो० ॥ नवि आदरो  
तमें जले जावें जी ॥ मनो० ॥ १ ॥ नव आंबिल तप  
कीजें जी ॥ म० ॥ तो अविचल सुखडां लीजें जी ॥

॥ म० ॥ शुदि सातमथी तमें मांमो जी ॥ मनो० ॥  
 घरनां आरंज सवि ठांमो जी ॥ म० ॥ १ ॥ पहेले  
 पदे अरिहंत सेवो जी ॥ म० ॥ आपे मुक्तिनो मेवो  
 जी ॥ म० ॥ बीजे पदे सिद्ध सोहावे जी ॥ मनो० ॥  
 मनशुद्धे पूजो जले जावें जी ॥ म० ॥ ३ ॥ आचार्य  
 त्रीजे पदे नमो जी ॥ म० ॥ तमें क्रोध कषायने दमो  
 जी ॥ म० ॥ उवझाय ते चोथा वंदो जी ॥ मनो० ॥  
 साधु पांचमे देखो आणंदो जी ॥ म० ॥ ४ ॥ ठठे  
 दरिसन पद जाणो जी ॥ म० ॥ श्रीज्ञानने सातमे  
 वखाणो जी ॥ म० ॥ चारित्र पद आठमे सोहे जी  
 ॥ म० ॥ वली नवमे तप मन मोहे जी ॥ मनो० ॥  
 ॥ ५ ॥ रस गारव आंबिल कीजें जी ॥ म० ॥ तो  
 मुक्ति तणां फल लीजें जी ॥ म० ॥ संवत्सर शुगषट  
 मासें जी ॥ म० ॥ तप कीजे मनने उद्धासें जी ॥  
 ॥ म० ॥ ६ ॥ ए तो मयणा ने श्रीपाल जी ॥ म० ॥  
 तप कीधुं थइ उजमाल जी ॥ म० ॥ तेनो कोढ श  
 रीरनो टाव्यो जी ॥ म० ॥ जगमां जस वास प्रगटा  
 यो जी ॥ म० ॥ ७ ॥ पंचम काले तुमें जाणो जी ॥  
 ॥ म० ॥ परगट परतो परमाणो जी ॥ म० ॥ एनुं  
 गणणुं तेर हजार जी ॥ म० ॥ तमें धारो हृदय म  
 जार जी ॥ म० ॥ ८ ॥ नरनारी ए पद ध्यावे जी ॥  
 ॥ मनो० ॥ तेतो संपद सघली पावे जी ॥ मनो० ॥  
 मुनि रत्नसुंदर सुपसाय जी ॥ म० ॥ सेवक मोहन  
 गुण गाय जी ॥ मनो० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री शान्तिजिन विनतिरूप ठेद ॥

॥ शारद माय नमुं शिर नामि, हुं गावं त्रिभुव  
नको स्वामी ॥ शान्ति शान्ति जपे सब कोइ, ता घर  
शान्ति सदा सुख होइ ॥ १ ॥ शान्ति जपी जे कीजें  
काम, सोइ काम होवे अजिराम ॥ शान्ति जपी पर  
देश सिधावे, ते कुशजें कमला जेइ आवे ॥ २ ॥ गर्न  
थकी प्रभु मारि निवारी, शान्तिजी नाम दियो हित  
कारी ॥ जे नर शान्ति तणा गुण गावे, रुधि अचिं  
ती ते नर पावे ॥ ३ ॥ जा नरकूं प्रभु शान्ति सहाइ,  
ता नरकूं क्या आरति जाइ ॥ जो कबु वंठे सोई पूरे,  
दारिद्र्य दुख मिथ्यामति चूरे ॥ ४ ॥ अलख निरं  
जन ज्योत प्रकाशी, घट घट अंतरके प्रभु वासी ॥  
स्वामी स्वरूप कह्युं नवि जाय, कहेतां मोमन अच  
रिज थाय ॥ ५ ॥ मार दीए सबहीं हथियारा, जी  
त्यां मोह-तणा दल सारां ॥ नारि तजी शिवहुं रंग  
राचे, राज तज्युं पण साहेव साचे ॥ ६ ॥ महा  
बलवंत कहिजें देवा, कायर कुंथु न एक हणेवा ॥  
रुद्धि सयल प्रभु पास लहीजें, निह्वा आहारी नाम  
कहीजें ॥ ७ ॥ निंदक पूजककूं सम नायक, पण  
सेवकहीकूं सुख दायक ॥ तजी परिग्रह नये जगना  
यक, नाम अतिथि सवि सिद्धि लायक ॥ ८ ॥ शत्रु  
मित्र सम चित्त गणीजें, नामदेव अरिहंत नणीजें ॥  
सयल जीव हितवंत कहिजें, सेवक जाणी माहापद  
दीजें ॥ ९ ॥ सायर जैसा होत गंजीरा, दूषण एक

न मांहे शरीरा ॥ मेरु अचल जिम अंतरजामी, पण  
 न रहे प्रभु एकण ठामी ॥ १० ॥ लोक कहे जिन  
 जी सब देखे, पण सुपनांतर कबहुं न पेखे ॥ रीश  
 विना वावीश परीसा, सेना जीती ते जगदीशा ॥ ११ ॥  
 मान विना जग आण मनाई, माया विना शिवशुं  
 लय लाई ॥ लोच विना गुणराशि ग्रहीजें, निष्कु  
 नये त्रिगडो सेवीजें ॥ १२ ॥ निर्ग्रथपणें शिर ठत्र  
 धरावे, नाम यति पण चमर ढलावे ॥ अजयदान  
 दाना सुख कारण, आगल चक्र चले अरिहारण  
 ॥ १३ ॥ श्रीजिनराज दयाल जणीजें, करम सबें  
 को मूल खणीजें ॥ चउविह संघह तीरथ थापे,  
 लह्मी घणी देखे नवि आपे ॥ १४ ॥ विनयवंत जगवं  
 त कहावे, न काहूकूं शीश नमावे ॥ अकिंचनको बिरु  
 द धरावे, पण सोवनपद पंकज ठावे ॥ १५ ॥ राग  
 नहीं पण सेवक तारे, द्वेष नहीं निगुणा संग वारे ॥  
 तजी आरंज निज आत्म ध्यावे, शिव रमणीको  
 साथ चलावे ॥ १६ ॥ तेरो महिमा अद्भुत कहि  
 यें, तोरा गुनको पार न लहीयें ॥ तुं प्रभु समरथ  
 साहेब मेरा, हुं मनमोहन सेवक तेरा ॥ १७ ॥  
 तूं रे त्रिलोकतणो प्रतिपाल, हूं रे अनाथी तुं रे द  
 याल ॥ तुं शरणागत राखणधीरा, तुं प्रभु तारक ठो  
 वड वीरा ॥ १८ ॥ तुंहि समोवड जागज पायो, तो  
 मेरो काज चढ्यो रे सवायो ॥ कर जोडी प्रभु विनवूं  
 तोसुं, करो कृपा जिनवरजी मोसुं ॥ १९ ॥ ॥ जनम

मरणना दोष निवारो, नव सागरस्थी पार उतारो ॥  
 श्री हृदिणाउरमंमण सोहे, तिहां श्री शांति सदा  
 मन मोहे ॥ १० ॥ पद्मसागर गुरुराज पसाया,  
 श्री गुणसागरके मन जाया ॥ नरनारी जे चित्तें  
 गावे, ते मनोवंडित निश्चै पावे ॥ ११ ॥ इति ॥

॥ अथ ॥

॥ श्री गोडीपार्श्वनाथजीनुं चोढालीयुं प्रारंभः॥

॥ पासजिणंद प्रसिद्ध सिद्ध, गोडीपुरमंमण ॥  
 महिमामंदिर मोह मयण, मिथ्यात विहंमण ॥ ए  
 कल मल्ल अनेक रूप, अगणित गुण आगर ॥ त्रिचु  
 वन बंधव धवलधिग, करुणा रस सागर ॥ १ ॥ जिन  
 तुम अजब सरूप सकल, कल अकल अगोचर ॥ न  
 लहे अलहे उत्पति अगित, थिति नटके जो चर ॥  
 वृद्ध वचन जीरण लिखित, अनुसारें जाणी ॥ शुणचुं  
 स्वामीनिरीह पणें, सुणजो नवि प्राणी ॥ २ ॥ वि  
 धिपट्ट गह्व महेन्द्र सूरि, गह्वेश निर्देशें ॥ शाखाचारज  
 अजयसिंह, सूरि उपदेशें ॥ गोत्र मीठडीया उंसवंश,  
 पाटणपुरवासी ॥ शाह मेघो जेणें सात धात, जिण  
 धर्म वासी ॥ ३ ॥ चौद बत्रीशें फागणचुदि, बीजने  
 नृगुवारें ॥ खेता नोडी तात मात, निज सुकृत सा  
 रे ॥ तेणें पइछो पास बिंब, लेहवा नरनव फल ॥  
 चउव्विह संघ हजूर हरखें, खरची धन परिगल ॥ ४ ॥  
 नक्ति युक्ति अति थकित चित्त, नित्य निर्मल

सारी ॥ पण पसताले तुरक नयें, प्रतिमा चंमारी ॥  
 मलक महाबल दुसन खान, कीधो उतारो ॥ पांशवे  
 तेणें ठाम जोर, गुजराती वारो ॥ ५ ॥ तरल तुरंग  
 किशोर असुर, करता हय हणता ॥ केइ एराकी  
 उठलंत, खुरीयें चूइ खणता ॥ बांधण त्यांहि घोडार  
 मांहि, खीली खोसंतां ॥ प्रगट थया तिहां पास बिं  
 व, सुख दायक संता ॥ ६ ॥ खिजमत गार नफर  
 फजर, नजरें गुजरावे ॥ दोइ खुशाल निहाल मलक,  
 या कोण कहेलावे ॥ बान पडिल कोइ वणिक सु  
 ता, तसु दुरम नणो इम ॥ कीजें इसकूं दंमवत, सदा  
 ताजिम दाजिम ॥ ७ ॥ यद मजबूत बहुत कौत, हे  
 नूत हिंडुका ॥ धरियें इस शिर जाफरान, सिंदलका  
 नूका ॥ इणी परें रहेतां तेणे. ठामें, वोहोव्या दिन  
 केइ ॥ सिंतेरे जे वात दुइ, सुणजो मन देइ ॥ ८ ॥

॥ ढाल पहेली ॥ चूनडीनी देशीमां ॥

॥ इणे अवसरें पुर पारकरें, राणो खेंगार राजान  
 रे ॥ तेहने दरबारें दीपतो, संघवी काजल परधान  
 रे ॥ इणे ० ॥ १ ॥ तस बन्हेवी निज कुलतिलो, देवा  
 एंद शा बेदयाल रे ॥ मेघो खेताउत पाटणे, व्यापार  
 करे धूताल रे ॥ इणे ० ॥ २ ॥ सुपनंतर सुर कहे  
 शाहने, ठे म्ळेष्ठ महोल जिनबिंब रे ॥ तस दाम  
 सवासो देइने, लेजो म करजो विलंब रे ॥ इणे ० ॥ ३ ॥  
 प्रतिमा लेइ आवे गुरु कन्हे, जोइ कहे श्रीमेरुतुंग  
 रे ॥ तुम देखें ए अति अतिशयी, तीरथ थाशे उत्तंग रे



॥ इणे० ॥ ४ ॥ करियाणुं लइ पोहोंचें घरें, मूरति राखे रू  
 मांहे रे ॥ पंथें कोइ न गणे पोठीआ, वाध्यो घणो  
 मोह उच्चाहें रे ॥ इणे० ॥ ५ ॥ समजावे नामुं जे  
 ठने, जंपे देजो मुळ रास रे ॥ मांमो ए नामें महारे,  
 प्रतिमा रहेजो अम पास रे ॥ इणे० ॥ ६ ॥ मेघो  
 कहे लेखो राखणुं, पण ते सबलो तिण ठाम रे ॥  
 गाडुं नरी चाले थल दिजें, वासो वसे गोडी गाम  
 रे ॥ इणे० ॥ ७ ॥ सुहणे सुर कहे गहुंली जिहां,  
 मांमो प्रासाद मंमाण रे ॥ नाणुं तिहां धन श्रीफल  
 तलें, मीतुं जल पाहाणनी खाण रे ॥ इणे० ॥ ८ ॥

॥ ढाल बीजी ॥ निडडी वेरण हुइ रही ॥ ए देशी ॥

॥ हांजी उदयपाल ठाकुर तिहां, जोरावर हो खे  
 तशी जूंणोत के ॥ इहां रहो निरनय शाहजी, आद  
 रणुं हो कहे देइ महोत के ॥ धन धन गोडी जग ध  
 णी, पोहकी पाले हो प्राजो जस पीठ के ॥ धन० ॥ १ ॥  
 ए आंकणी ॥ आवे शिलाट देशांतरी, यद्द प्रेखो हो  
 करे प्रथम तैयार के ॥ नूमि करुं प्रभु वेसवा, रहे  
 चिहुं दिशि हो लशकर हुशीयार के ॥ धन० ॥ २ ॥  
 पुखती बंधावी पीठिका, वर दिवसें हो जाणे अहि  
 नाण के ॥ सखर गंजारो शिखरणुं, मध्य मंरुप हो  
 सवि मोह मंमाण के ॥ धन० ॥ ३ ॥ पवासणें बेठा  
 पासजी, नरेउ करी हो पूजे जलें जाव के ॥ सजल  
 मधुरजल लहकती, वरदायी हो बंधावी वाव्य के ॥  
 धन० ॥ ४ ॥ एहवे चउद चोराणुयें; आयुयोगें हो

कस्यो मेघें काल के ॥ नाणेजो आणी घरे, काजलशा  
 हो करे चैत्यनी चाल के ॥ धन० ॥ ५ ॥ रंग मंमप  
 रचना बनी, अति कंचा हो थंज ठामोठाम के ॥  
 कोमें करावे कोरणी, वित्त वावरी हो थिर कीधुं ठे  
 नाम के ॥ धन० ॥ ६ ॥ वली रे महाजनना सहा  
 यशुं, मेघना हो सुत चत्रवे काम के ॥ मुख्य मंमप  
 शुन मांमणी, करी जिनहा हो ठो बंध अनिराम के ॥  
 धन० ॥ ७ ॥ चोवीशवट्टो पंचाणुए, तेणें थाप्पो हो  
 आगल रही जेह के ॥ चोवीश गात्रनी देहरी, महा  
 जननी हो फरती ठे तेह के ॥ धन० ॥ ८ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ धणरा ढोला ॥ ए देशी ॥

॥ इणी परें वत्तें बेहुने रें, मांहो मांहे विवाद ॥  
 गिरुठ घोडी ॥ घोडी गाजेजी जिणंद, तेजें दीपे जी  
 दिणंद, जग महिमा अगम अपार ॥ गिरु० ॥ ए  
 आंकणी ॥ पण सरखा राखे प्रभु रे, बधवा न दीए  
 विषवाद ॥ गिरु० ॥ १ ॥ बनेवी महोटो हशे रे, ए  
 ठे पूजक प्राय ॥ गिरु० ॥ मेघानां संतत हजी रे, ते  
 णें गोठी कहेवाय ॥ गिरु० ॥ २ ॥ शिखर दंम वडी ध्व  
 जा रे, चढतां करे रे कलेश ॥ गिरु० ॥ आज लगें  
 ठे एहने रे, स्म बहु वचन विशेष ॥ गिरु० ॥ ३ ॥  
 अंगुली बांधी एकठी रे, पूजन लीजें कदाप ॥ गिरु० ॥  
 गकुर ले नही मूंमळुं रे, ए बिदुनुं अद्याप ॥ गिरु० ॥  
 ॥ ४ ॥ उदयवंत अति ऊजला रे, विधिपद्द श्रावक  
 बेह ॥ गिरु० ॥ तेखदार दिल दोलती रे, प्रभुजीशुं

पूरण सनेह ॥ गिरु० ॥ ५ ॥ समकेतधारी जागतो  
 रे, धिंग धवल धर धीर ॥ गिरु० ॥ साह्य करी आग  
 ल रह्यो रे, खगधर खेतलवीर ॥ गिरु० ॥ ६ ॥ अधिकुं उ  
 ठुं जे कह्युं रे, ते खमजो महाराज ॥ गिरु० ॥ ठेकाणा  
 बंध पण खरी रे, वात ठे गरिब निवाज ॥ गिरु० ॥  
 ॥ ७ ॥ पहेजां तवन जण्यां पणां रे, तिहां जाजा सं  
 वाद ॥ गिरु० ॥ सक्कन साचा सदहजो रे, श्यो रे जू  
 ठामां सवाद ॥ गिरु० ॥ ८ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ राग धन्याश्री अशवा अशावरी ॥

॥ जयो जयो गोडीपास जिनेसर, नक्तवत्सल जगवा  
 न रे ॥ देवल बार ने बीजी रे प्रतिमा, विषमा थल  
 विच थान रे ॥ जयो० ॥ १ ॥ आयुध धारी नीले  
 घोडे, आप थई असवार रे ॥ किहां रे बालक अवधू  
 त चुयंगम, देखाडे दीदार रे ॥ जयो० ॥ २ ॥ आवे  
 संघ अनेक विदेशी, निरुपम महिमा माट रे ॥ चोर  
 चरडनुं कांही न चाले, विघ्न निवारे वाट रे ॥ जयो०  
 ॥ ३ ॥ जंगल जूला रात्रें जात्रु, ततकृण लेता नाम  
 रे ॥ देवी रे धरी मार्ग देखाडे, मूके चिंतित ठाम रे ॥  
 जयो० ॥ ४ ॥ दरिया विचमांहे वाहाण मोलंता,  
 समरंता दीये साद रे ॥ सयल असुर सुर नरवर से  
 वे, नवि लोपे मरजाद रे ॥ जयो० ॥ ५ ॥ ॥ विष  
 हर वैरी व्याधि वैश्वानर, जय जांजे हरि चान्त रे ॥  
 प्रायें केहने अधिक न राखे, पंच दिवस उपरांत रे ॥  
 जयो० ॥ ६ ॥ आ नवें वंठित सकल होवे पण, क

मै निबिडबंध कोय रे ॥ ध्यान शुद्धें समकित निर्मल  
ता, स्वर्ग मुगति फल होय रे ॥ जयो० ॥ ७ ॥ इव्य  
नाव विधि पूजो प्रणमो, नाम जपो नर नार रे ॥ स्तव  
न जणो मद मत्तर मूकी, उतपति साची मन धार  
रे ॥ जयो० ॥ ८ ॥ कलश ॥ इम शुण्यो गोडीपास  
स्वामी, हुकुम पामी जेहनो ॥ विशदिशें पमरतो अ  
रति हरतो, प्रगट परतो जेहनो ॥ श्री अमरसागर सूरि  
अंचल, गठपतिराउ पसाउलें ॥ पय नमी लखमीचं  
इवाचक, शिष्य लावण्य इम जणे ॥ ९ ॥ इति श्री  
गोडीपारसनाथजीनुं चोढालीयुं संपूर्ण ॥

॥ अथ पारसनाथनो ठंड प्रारंजः ॥

॥ आपण घर बेठा लील करो, निज पुत्र कलत्र  
शुं प्रेम धरो ॥ तमें देश देशांतर कांइ दोडो, नित्य  
पास जपो श्रीजिन रूडो ॥ १ ॥ मनोवंठित संघलां  
काज सरे, शिर उपर चामर ठत्र धरे ॥ कलमल चाले  
आगल घोडो, नित्य पास जपो श्रीजिन रूडो ॥ २ ॥  
नूतने प्रेत पिशाच वली, सायणी ने दायणी जाय ट  
ली ॥ ठल ठिड न कोइ लागे जूडो ॥ नित्य० ॥ ३ ॥  
एकांतर ताव सीयो दाह, उषध विण जाये खणमांह ॥  
नवि दुःखे माथुं पग गूडो ॥ नित्य० ॥ ४ ॥ कंठमा  
ला गडगुंबड सबला, तस उदर रोग टले सघला ॥  
पीडा न करे फिन गल फोडो ॥ नित्य० ॥ ५ ॥ जा  
गतो तीर्थकर पास बहू, एम जाणे सघलो जगत  
सहू ॥ ततरुण अशुंन कर्म तोडो ॥ नित्य० ॥ ६ ॥

पास वणारसि पुरि नगरी, तिहां उदयो जिनवर उदय  
करी ॥ समयसुंदर कहे कर जोडो ॥ नित्य ० ॥ ७ ॥

॥ अथ ज्ञानपञ्चीशी प्रारंभः ॥

॥ सुर नर तिरि जग योनिमें, नरक निगोद जमं  
त ॥ महामोहकी निंदमें, सोवे काल अनंत ॥ १ ॥  
जैसें ज्वरके जोरमें, जोजनकी रुचि जाय ॥ तैसें  
कुकर्मके उदय, धर्मबचन न सुहाय ॥ २ ॥ लगे नूख  
ज्वरके गये, रुचिशुं लेत आहार ॥ अशुजहीन  
शुजके जगे, सो जाने धर्म बिचार ॥ ३ ॥ जैसें पवन  
ऊकोलथें, जलमें उठे तरंग ॥ त्यों मनसा चंचल  
जये, परिग्रहके परसंग ॥ ४ ॥ जिहां पवन नहि  
संचरे, तिहां नही जलकल्लोल ॥ त्यों सब परिग्रह  
त्यागथें, मनसा होय अमोल ॥ ५ ॥ ज्यों काहु वि  
पथर मसे, रुचिशुं निंब चबाय ॥ त्यों तुम ममता  
शुं मढे, मगम विषय सुख थाय ॥ ६ ॥ निंबरस  
फरसे नही, निर्विषतनु जव होय ॥ मोह घटे ममता  
मिटे, विषय न बंधे कोय ॥ ७ ॥ ज्यों सठिड नौका  
चढे, बूडे अंध अदेख ॥ त्यों तुम नवजलमें पडे,  
बिनु विवेक धरी नेख ॥ ८ ॥ जिहां अखंमित गुण  
लगें, खेवट शुद्ध विचार ॥ आतमरुचि नौका चढे,  
पावही नवजल पार ॥ ९ ॥ ज्यों अंकुश माने नही,  
महा मतंग गजराज ॥ त्यों मन तृष्णामें फिरे, गिने  
न काज अकाज ॥ १० ॥ ज्यों नर दाय उपाय करि,  
गही आने गजराज ॥ त्यों मन या वश करनकूं, नि

मेल ग्यान समाज ॥ ११ ॥ तिमिर रोगसें नयन  
 ज्युं, लखे उरकी उर ॥ त्युं मन संशयमें परे, मिथ्या  
 मतकी दोर ॥ १२ ॥ ज्युं औषध अंजन कीए, ति  
 मिर रोग मिट जाय ॥ त्युं सदगुरु उपदेशयें, संशय  
 वेग पलाय ॥ १३ ॥ जैसें सब जाडु जरे, धारामति  
 की आग ॥ त्युं मायामें तुम पड़े, कहां जाउंगे जाग  
 ॥ १४ ॥ वैपायनसों ते बचे, जे तपसी निर्ग्रथ ॥  
 तजी माया समता ग्रहो, एह मुगतको पंथ ॥ १५ ॥  
 ज्युं कुधातुके नेटशुं, घटबध कंचन कंत ॥ पाप पुण्य  
 करतो नवें, मूढमति बहु जंत ॥ १६ ॥ कंचन निज  
 गुण नही तजे, वान हीन नही होत ॥ घट घट अं  
 तर आतमा, सहज स्वभाव उद्योत ॥ १७ ॥ पना  
 पीठ पक्काइयें, शुद्ध कनक ज्युं होय ॥ त्युं परगट प  
 रमातमा, पुण्य पाप मल धोय ॥ १८ ॥ पर्व राहुके  
 गहनसें, सूरसोमठवि ढीन ॥ संगत पाइ कुसाधुकी,  
 सज्जन होत मलीन ॥ १९ ॥ निंबादिक चंदन करे,  
 मलयाचलकी वास ॥ दुर्जन थें सज्जन नये, रहत  
 साधुके पास ॥ २० ॥ जैसें तलाव सदा जरे, जल  
 आवत चिहुं उर ॥ तैसें आश्रव द्वारथें, करम बंधको  
 जोर ॥ २१ ॥ ज्युं जल आवत मूदीयें, सूके सरवर  
 पान ॥ तैसें संवरके कीयें, करम निरजरा जान ॥ २२ ॥  
 ज्युं बूटी संयोगथें, पारा मूर्छित होय ॥ त्युं पुजलशुं  
 तुम मिले, आतमशक्ति समोय ॥ २३ ॥ मेल खटा  
 इ मांजीयें, पारा परगट रूप ॥ शुकल ध्यान अन्यास

थें, दर्शन ज्ञान अनूप ॥ १४ ॥ कहे उपदेश बनार  
सी, चेतन अब कबु चेत ॥ आप बुजावत आपकूं,  
उदय करनके हेत ॥ १५ ॥ इति ज्ञानपञ्चीशी ॥

॥ अथ अरणिक मुनिनी सञ्ज्ञाय ॥

॥ अरणिक मुनिवर चाव्या गोचरी, तडके दाजे  
शीशो जी ॥ पाय अणवाणे रे वेळू परजले, तनु सुकु  
माल मुनीशो जी ॥ अरणि० ॥ १ ॥ मुख करमाणुं  
रे मालती फूल ज्युं, उजो गोंखनी हेतो जी ॥ खरेरे ब  
पोरें रे दीठो एकलो, मोही माननी दीठो जी ॥ अर  
णि० ॥ २ ॥ वयण रंगीली रे नयणें वेधियो, रुषि थं  
न्यो तेणें ठामो जी ॥ दासीने कहे जारे उतावली,  
ए रुषि तेडी आणो जी ॥ अरणि० ॥ ३ ॥ पावन कीजें  
रे रुषि घर आगणुं, वोहोरो मोदक सारो जी ॥  
नवयौवनरस काया कां दहो, सफल करो संसारो  
जी ॥ अरणि० ॥ ४ ॥ चंदावदनी रे चारित्र चूकव्युं,  
सुख विलसे दिन रातो जी ॥ वेठो गोंखें रे रमतो सों  
गठे, तव दीठी निज मातो जी ॥ अरणि० ॥ ५ ॥  
अरणिक अरणिक करती मा फिरे, गलियें गलियें  
तिवारो जी ॥ कहो केणें दीठो रे महारो अरणीलो,  
पूठें लोक हजारो जी ॥ अरणि० ॥ ६ ॥ उत्तखो ति  
हांथी रे जननी पाय पड्यो, मनशुं लाज्यो अपा  
रो जी ॥ वड्ड तुज न घटे रे चारित्र चूकवुं, जेहथी  
शिवसुख सारो जी ॥ अरणि० ॥ ७ ॥ एम समजावी  
रे पाठो वालीयो, आण्यो गुरुने पासो जी ॥ सह

गुरु दीए रे शीख जली परें, वैरागें मन नास्यो जी ॥  
 अरणि० ॥ ७ ॥ अग्नि धत्तंती रे शिला ऊपरें, अर  
 णिकें अणसण कीधो जी ॥ रूपविजय कहे अन्य  
 ते मुनिवरू, जिणें मनवंठित लीधो जी ॥ अ० ॥ ८ ॥

॥ अथ पार्श्वनाथनो वंद ॥

॥ जय जय जगनायक पार्श्वजिनं, प्रणताखिल  
 मानवदेवगनं ॥ जिनशासन मंमन स्वामि जयो, तुम  
 दरिस्तन देखी आनंद जयो ॥ १ ॥ अश्वसेन कुलं  
 वरजानुनिजं, नव हस्तशरीर हरितप्रतिजं ॥ धर  
 णिं सुसेवित पादयुगं, जर नासुरकांति सदा सुजगं  
 ॥ २ ॥ निज रूपविनिर्जित रंजपतिं, वदनोद्युति शा  
 रद सौमतरतिं ॥ नयनांबुज दीप्ति विशालतरा, तिल  
 कुसुम सन्निज नासा प्रवरा ॥ ३ ॥ रसनामृत कंद  
 समान सदा, दशनावलि अनार कली सुखदा ॥ अ  
 धरारुण विडुम रंगधनं, जय शंखपुराजिध पार्श्व  
 जिनं ॥ ४ ॥ अतिचारु मुकुट मस्तक दीपे, कानें  
 कुंमल रवि शशि जीपे ॥ तुम महिमा महि मंमल  
 गाजे, नित्य पंच शब्द वाजां वाजे ॥ ५ ॥ सुर किन्नर  
 विद्याधर आवे, नर नारी तोरा गुण गावे ॥ तुज सेवे  
 चोशठ इंद्र सदा, तुज नामें नावे कष्ट कदा ॥ ६ ॥  
 जे सेवे तुजने जाव घणे, नवनिधि थाये घर तेह  
 तणे ॥ अडवडियां तुं आधार कह्यो, समरथ साहिव  
 में आज लह्यो ॥ ७ ॥ डुखीयाने सुखडां तुं दा  
 खे, अशरणने शरणे तुं राखे ॥ तुज नामें संकट



विकट टले, वीढडीयां वालां आवि मले ॥ ७ ॥ नट  
 विट लंपट दूरें नासे, तुऊ नामें चोर चरड त्रासे ॥  
 रण राउल जय तुऊ नाम थकी, सघले आगल तुऊ  
 सेवथकी ॥ ८ ॥ यद्ध राहुस किन्नर सवि उरगा,  
 करी केशरी दावानल विहगा ॥ वध बंधन जय सघ  
 लां जाये, जे एक मनां तुनने ध्याये ॥ १० ॥ नूत  
 प्रेत पिशाच ठनी न शके, जगदीश तवानिध जाप  
 थके ॥ महोटा जोटिंग रहे दूरे, दैत्यादिकना तुं मद  
 चूरे ॥ ११ ॥ मायणी सायणी जाए हटकी, जगवं  
 त थाय तुऊ नजनथकी ॥ कपटी तुऊ नाम लीया  
 कंफे, दुर्जन मुखथी जीजी जंपे ॥ १२ ॥ मानी मठ  
 राला मुह मोडे, तेपण आगलथी कर जोडे ॥ दुर्मु  
 ख दुष्टादिक तुंही दमे, तुऊ जापे महोटा म्नेह  
 नमे ॥ १३ ॥ तुऊ नामें माने नृप सबला, तुज जश  
 उज्ज्वल जेम चंडकला ॥ तुऊ नामें पामे रुद्रि घणी,  
 जय जय जगदीश्वर त्रिजग धणी ॥ १४ ॥ चिंताम  
 णि कामगवी पामे, हयगय रथ पायक तुऊ नामें ॥  
 जन पद ठकुराई तुं आपे, दुर्जन जननां दारिद्र कापे  
 ॥ १५ ॥ निर्धनने तुं धनवंत करे, तूठो कोठार नंदा  
 र नरे ॥ घर पुत्र कलत्र परिवार घणो, ते सहु महि  
 मा तुम नाम तणो ॥ १६ ॥ मणि माणक मोती रत्न  
 जड्या, सोवन नूषण बहु सुघड घड्या ॥ वली पेहे  
 रण नवरंग वेश घणा, तुम नामें नवि रहे कांइ म  
 णा ॥ १७ ॥ वैरी विरुड नवि ताकि सके, वली चा

ड चुगल मनथी चमके ॥ ठल बिड़ कदा केहनो न  
 लगे, जिनराज सदा तुऊ ज्योति जगे ॥ १७ ॥ ठग  
 ठाकुर सवि थर हर कंपे, पाखंमी पण को नवि फर  
 के ॥ लूँटादिक सहु नामी जाए, मारग तुऊ जपतां  
 जय थाए ॥ १८ ॥ जड मूरख जे मति हान बली,  
 अज्ञान तिमिर तसु जाय टली ॥ तुऊ समरणथी  
 माह्या थाये, पंमित पद पामी पूजाये ॥ १९ ॥ ख  
 स खांशि खयन पीडा नासे, डुबल मुख दीनपणुं  
 त्रामे ॥ गड गुंवड कुष्ठ जिके सबलां, तुज जापें रोग  
 समे सघला ॥ २० ॥ गहिला गूगा बहिरा य जिके,  
 तुऊ ध्यानें गतडुख थाय तिके ॥ तनु कांति कला  
 सुविशेष वधे, तुज समरणगुं नवनिधि सधे ॥ २१ ॥  
 करि केसरी अहि रणबंध सया, जल जलण जलोद  
 र अष्ट जया ॥ रांगण पमुहा सबि जाय टली, तुज ना  
 में पामे रंग रली ॥ २२ ॥ ॐ ह्रीं श्रीपार्श्व नमो,  
 नमिऊण जपंतां डुष्ट दमो ॥ चिंतामणि मंत्र जिके  
 ध्याये, तिण घर दिन दिन दोलत थाये ॥ २३ ॥ त्रि  
 करण गुहें जे आराधे, तस जश कीर्ति जगमां वा  
 धे ॥ वली कामित काम सवे साधे, समहित चिंता  
 मणि तुऊ लाधे ॥ २४ ॥ मद मल्लर मनथी दूर त  
 जे, जगवंत जली परें जेह नजे ॥ तसघर कमला कछो  
 ल करे, वली राज्य रमणी बहु लील वरे ॥ २५ ॥  
 जय वारक तारक तुं त्राता, सज्जन मन गति मतिनो  
 दाता ॥ मात तात सहोदर तुं स्वामी, शिवदायक

( १३९ )

नायक हितकामी ॥ १७ ॥ करुणाकर ठाकुर तुं म  
हारो, निशिवासर नाम जपुं ताहारो ॥ सेवकगुं पर  
म कृपा करजो, वाजेसर वंठित फल देजो ॥ १८ ॥  
जिनराज सदा तुं जयकारी, तुज मूर्ति अति मोहन  
गारी ॥ गुर्जर जनपदमांहे राजे, त्रिभुवन ठकुराई  
तुज ठाजे ॥ १९ ॥ इम जाव जने जिनवर गायो,  
वामासुत देखी बहु सुख पायो ॥ रवि मुनि शशि  
संवहर रंगें, जयदेवसूरमां सुख संगें ॥ २० ॥ जय  
शंखपुराजिध पार्श्व प्रजो, सकलार्थ समीहित देहि  
विजो ॥ बुध हर्षरुचि विजयाय मुदा, तप लब्धि  
रुचि सुख दाय सदा ॥ २१ ॥ कलश ॥ इहं स्तुतः  
सकलकामितसिद्धिदाता, यद्वाधिराजनतशंखपुराधि  
राजः ॥ स्वस्ति श्रीहर्षरुचिपंकजसुप्रसादात्, शिष्येण  
लब्धरुचिनेति मुदा प्रसन्नः ॥ २२ ॥ इति पार्श्व ॥

॥ अथ मेघ कुमारनी सन्धाय प्रारंभः ॥

॥ धारणी मनावे रे मेघकुमारने रे, तुं मुज ए  
कज पुत्त ॥ तुज विण सुनां रे मंदिर मालियां रे,  
राखो राखो घर तणां सूत ॥ धारणी ॥ १ ॥ तुजने  
परणावुं रे आठ कुमारिका रे, सुंदर अति सुकुमा  
ल ॥ मलपति चाले रे वन जेम हाथणी रे, नयण  
वयण सुविशाल ॥ धारणी ॥ २ ॥ मुज मन आशा  
रे पुत्र हती घणी रे, रमाडीश बहूनां रे बाल ॥  
देव अटारो रे देखी नवि शक्यो रे, उपायो एह  
जंजाल ॥ धारणी ॥ ३ ॥ धण कण कंचन रे रुद्धि

घणी अठे रे, जोगवो जोग संसार ॥ ठती रुद्धि  
विलसो रे जाया घर आपणे रे, पठें लेजो संयम  
नार ॥ धारणी० ॥ ४ ॥ मेघकुमारें रे माता प्रत्ये  
बूऊवी रे, दीक्षा लीधी वीरजीनी पास ॥ प्रीतिवि  
मल रे इणि परें उच्चरे रे, पोहोती महारा मनडानी  
आश ॥ धारणी० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री महावीर स्वामी स्तवनं ॥

॥ प्रभुजी वीरजिणंदने वंदियें, चोवीशमा जिन  
राय हो ॥ त्रिशलाना जाया ॥ प्रभुजीने नामें ते नव  
निधि संपजे, नवमुख सवि मिटि जाय हो ॥ त्रिश  
लाना जाया ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ प्रभुजी कंचन  
वान कर सातनुं, जग तातनुं एटलुं मान हो ॥ त्रि० ॥  
प्रभुजी मृगपति लंठन गाजतो, नांजतो मदगज मा  
न हो ॥ त्रि० ॥ २ ॥ प्रभुजी सिद्धारथ जगवंत ठो,  
सिद्धारथ कुल चंद हो ॥ त्रि० ॥ प्रभुजी चक्रवत्सल  
नव दुःखहरु, सुरतरु सम सुखकंद हो ॥ त्रि० ॥  
॥ ३ ॥ प्रभुजी गंधार बंदर गुणनिलो, जगतिलो जिहां  
जगदीस हो ॥ त्रि० ॥ प्रभुजीनुं दर्शण देखिने चित्त  
वखुं, सखुं मुळ वंढित ईश हो ॥ त्रि० ॥ ४ ॥ प्रभुजी  
शिवनगरीनो राजीयो, जगतारण जिन देव हो ॥ त्रि० ॥  
प्रभुजी रंगविजयने आपजो, नवोनव तुम पाये सेव  
हो ॥ त्रि० ॥ ५ ॥ इति श्रीवीरजिनस्तवनं संपूर्णम् ॥

॥ अथ नेमनाथ स्तवनं ॥

॥ नेम जिणंद जुहारीयें, उज्ज्वल गढ गिरनारो

जी ॥ बलवंत जिन बावीशमो, जलें जेठ्यो जगवंतो  
 जी ॥ नेम० ॥ १ ॥ श्यामलवर्ण सोहामणो, मुख  
 सोहे पूनमचंदो जी ॥ यादववंशी जग जयो, जेहने  
 सेवे सुरनर इंदो जी ॥ नेम० ॥ २ ॥ पशुअ देखी  
 पाठा वल्ल्या, दिल दया बहु आणी जी ॥ जाल वि  
 षय ऊंपी करी, तजी राजिमती राणी जी ॥ नेम० ॥  
 ॥ ३ ॥ समुद्रविजयसुत सुखकरु, माता शिवादेवी  
 मलारो जी ॥ दान संवत्सरी देई करी, पोहोता गढ  
 गिरनारो जी ॥ नेम० ॥ ४ ॥ चोपन दिन चोखे  
 चितें, प्रभु मौनपणें तप कीधो जी ॥ कर्म खपावी  
 केवल लक्ष्मी, जगमां बहु जश लीधो जी ॥ नेम० ॥  
 ॥ ५ ॥ समवसरण सुरपति रच्यो, आणी मन आणंदो  
 जी ॥ त्रिगडो तेजें ऊगमगे, तिहां नाटक नव नव ठंडो  
 जी ॥ नेम० ॥ ६ ॥ योजन नूमि जगतगुरू, उचरे अ  
 मृत वाणी जी ॥ नवोदधिशोषण नयहरु, जेहना  
 गुण गावे इंडाणी जी ॥ नेम० ॥ ७ ॥ इम महीमंजल  
 विचरता, अनेक जीव उद्धास्या जी ॥ पोहोता बहु प  
 रिवारशुं, मुक्ति मोहोल पधास्या जी ॥ नेम० ॥ ८ ॥  
 विघ्नहरण नित वंदियें, राणी राजिमती जरतारो  
 जी ॥ दुःख दारिद्र्य दूरें हरे, ऊतारे नवपारो जी ॥  
 नेम० ॥ ९ ॥ संवत सत्तर अग्यारोत्तरें, आशो बीज  
 अजुआली जी ॥ कहे जिनदास यात्रा करी, नेम हसी  
 दीयो ताली जी ॥ नेम० ॥ १० ॥ इति श्रीनेमिनाथ० ॥

॥ अथ केसरियाजीनुं स्तवन ॥

॥ प्रथम तीर्थकर रूपन जिणंदा, नाजिराया मरुदे  
 वीको नंदा ॥ सो श्यामला गुणवंता ॥ लाख चोराशी  
 पूरवनुं रे आय, धनुष पांचजे सोवनमय काय ॥  
 सो० ॥ १ ॥ जुगलारे धर्म निवारण स्वामी, नगर धूलेवे  
 वसे धननामी ॥ सो० ॥ सखतें रे वेठा केसरियोजी  
 सोहे, दरिसण देखीने मनहुं मोहे ॥ सो० ॥ २ ॥  
 मुखहुं रे सोहे पूनमकेरो चंदा, सुर नर मुनिवर सेवे  
 वंदा ॥ सो० ॥ मुकुट कुंमल शिर ठत्र विराजे,  
 ठकुराई केसरियाने ठाजे ॥ सो० ॥ ३ ॥ देश देशना  
 संघज आवे, वस्तु अमूलक नेटणुं लावे ॥ सो० ॥  
 पूजा जणावे ने अंगी रचावे, केसरकेरा कींच मचा  
 वे ॥ सो० ॥ ४ ॥ अगरबत्तीना धूप करावे, फूलडां  
 केरा मुकुट जरावे ॥ सो० ॥ नाटक नाचे ने जावना  
 जावे, हरखें केसरियाना गुण गावे ॥ सो० ॥ ५ ॥  
 जिहाज तारे वालो बेडीयो कापे, मुह माग्यां वंडित  
 फल आपे ॥ सो० ॥ रोग सोग जय दूर निवारे,  
 जव सायरथी पार उतारे ॥ सो० ॥ ६ ॥ जे कोई  
 गाशे ने जे सांजलशे, तेहना मनना मनोरथ फल  
 शे ॥ सो० ॥ कपूर कहे तमें प्रत्यक्ष देवा, जवोजव  
 मागुं हूं तुम पय सेवा ॥ सो० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ चीडनंजनपार्श्वजिनस्तवनं ॥

॥ शामाटे साहिब सामुं न जूवो, हुं तो रह्यो हुं तु  
 म गुण हेरी ॥ प्रभुजी रे ॥ बीजा रे सार्थें बोल न

बोलुं, मुने न गमे वात अनेरी ॥ प्रचुजी रे ॥ शा० ॥  
 ॥ १ ॥ जोरे पोतानो करीने रे जाणो, तो मुऊ स  
 मकित वासो ॥ प्रचुजी रे ॥ जलो चुंमो पण नक्त  
 तुं ताहारो, एवं जाणीने देउ दिलासो ॥ प्रचुजी रे  
 ॥ शा० ॥ २ ॥ ठेल ठबीलो देव ठोगालो, अलवे  
 सर अंतरजामी ॥ प्रचुजी रे ॥ हृदयनो वासी प्रचु  
 मुऊने मलियो, तेहने नित्य नमुं गिर नामी ॥ प्रचु  
 जीरे ॥ शा० ॥ ३ ॥ हजूर सेवानी रे होंश हैयामां,  
 हुंतो राखुं तुं गुणरागी ॥ प्रचुजी रे ॥ चीडनंजन  
 प्रचु नक्तिने जोरें, जालम वासना जागी ॥ प्रचुजी रे  
 ॥ शा० ॥ ४ ॥ आप स्वरूप देखाडो ने आठो, पडदो खो  
 लीने पाठो ॥ प्रचुजी रे ॥ प्रेमउदय पद पगठीये चढ  
 तां, तिहां न रह्यो लाज्जनो लाठो ॥ प्रचुजी रे ॥ शा० ॥ ५ ॥

॥ अथ नेमप्रचुनुं चोमासुं ॥

॥ माहरासम जाउ मां रे वाला, लालच लागी तु  
 मशुं लाला, लालच लागी नेम लटकाला ॥ लालच  
 लागी केशरीया वाला ॥ मा० ॥ श्रावण वरसे रे  
 स्वामी, मेली म जाशो अंतरजामी ॥ मा० ॥ १ ॥  
 माथे मेढुला रे वरसे, एणी कृतु प्रीतम किम पर व  
 रसे ॥ जाड्वडो रे नडाजड गाजे, नदीयें नीर खडा  
 खड वाजे ॥ मा० ॥ २ ॥ धरती सोहियें रे नीला व  
 रणी, साहिबा संजम लेजो परणी ॥ आसोयें आश  
 घणोरी अमने, जीवन जावुं न घटे तुमने ॥ मा० ॥  
 ॥ ३ ॥ आनूषण पेरीने परवरजो, सलुणा साहिबा रंग

जर रमजो ॥ कार्तिकें कंतजी कां मूको ठो, चतुर थ  
 ईने शुं चूको ठो ॥ मा० ॥ ४ ॥ जेठजीने शोलशें रे रा  
 णी, तुमथी एक नहि निर्वाणी ॥ रूपचंद गाएठे रे  
 चोभासुं, नेमजीशुं मलवानुं दिल ठे साचुं ॥ मा० ॥  
 ॥ ५ ॥ इति श्री चतुर्मासो संपूर्ण ॥

॥ अथ दान, शील, तप अने जावनुं प्रजातियुं ॥

॥ रे जीव जैन धर्म कीजीयें, धर्मना चार प्रकार ॥  
 दान शीयल तप जावना, जगमां एठलुं सार ॥ रे  
 जी० ॥ १ ॥ ॥ वरस दिवसने पारणे, आदीसर सु  
 खकार ॥ शोलडी रस वोराचियो, श्रीश्रियांस कुमार ॥  
 रे जी० ॥ २ ॥ ॥ चंपापोल उघाडवा, चारिणीयें  
 काढ्यां नीर ॥ सतीय सुजडा जश थयो, शियलें सु  
 र नर धीर ॥ रे जी० ॥ ३ ॥ ॥ तप करि काया शोष  
 वी, सरस नीरस आहार ॥ वीरजिणंद वखाणियो,  
 धन धनो अणगार ॥ रे जी० ॥ ४ ॥ ॥ अनित्य जावना  
 जावतां, धरतां निर्मल ध्यान ॥ जरत आरीसा  
 चुवनमां, पाम्या केवल ज्ञान ॥ रे जी० ॥ ५ ॥ ॥ जैन  
 धर्म सुरतरु समो, जेहनी शीतल ठाया ॥ समय सुं  
 दर कहे सेवतां, वंछित फल पाया ॥ रे जी० ॥ ६ ॥

॥ अथ श्री महावीरजिन गीत ॥

॥ माहारी वीर प्रभुजीने वंदना रे, एनी वंदना ते  
 पापनिकंदना रे ॥ मा० ॥ ॥ हारे हुंतो कलश जरुं ते  
 गंगानीरना रे, हुं तो नवण करुं महावीरनां रे ॥  
 ॥ मा० ॥ १ ॥ ॥ हुंतो प्याला जरुं केसर घोलना रे,



मांहे मृगमद नेलुं बहु मूलना रे ॥ मा० ॥ १ ॥ हुं तो  
 तिलक करुं नवे अंगनां रे. हुं तो फूल चढावुं पंचरंग  
 नां रे ॥ मा० ॥ २ ॥ हुं तो पूजा करीनें थाउं पाव  
 ना रे, हुं तो जावूं ते आगल जावना रे ॥ मा० ॥ ४ ॥ ए  
 वा जाव जला सुंदरा शेहेरना रे, तिहां वीर बिराजे ज  
 य जय कारना रे ॥ मा० ॥ ५ ॥ तिहां संव सदा आनंद  
 ना रे, तिहां करे कल्याण नित्य वंदना रे ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ नेमजिनस्तवनं ॥

॥ घरे आवोने नेम वरणागिया रे, घरे आवोने  
 श्याम वरणागिया रे ॥ ए आंकणी ॥ गुं कहीयें ते  
 मोहोटा जूपने रे, हुं तो मोही हुं तमारा रूपने रे ॥  
 ॥ घ० ॥ १ ॥ वालाना मुखनां ते मीठां वेण ठे रे,  
 वालानी आंखडलीमां चेन ठे रे ॥ घ० ॥ २ ॥ वा  
 लो चित्ततणो ते चोर ठे रे, मारा काजजडानी कोर  
 ठे रे ॥ घ० ॥ ३ ॥ वाहाले पशु उपर करुणा करी रे,  
 वाहाले जीवदया मनमां धरी रे ॥ घ० ॥ ४ ॥ वाहा  
 ला तोरणथी पाठा वळ्या रे, वाहाला गढगिरनारे  
 जड चढया रे ॥ घ० ॥ ५ ॥ वाहाला गढ निरनारना  
 घाटमां रे, मुनें नेमजी मळ्या ठे वाटमां रे ॥ घ० ॥  
 ॥ ६ ॥ एहवा रूपचंद रंगें मळ्या रे, माहारा मनना  
 मनोरथ सवि फळ्या रे ॥ घ० ॥ ७ ॥ इति संपूर्ण ॥

॥ अथ धृतकध्नोल पार्श्वजिन स्तवनं ॥

॥ हो जिनराया जिनेसर, शिव वधूना तमें जो  
 गी ॥ पास जिनेसर अति अजवेसर, संसार सुखना

त्यागी ॥ हो जिनराया जिनेसर, शिव वधूना तमें जो  
गी ॥ एआंकणी ॥ १ ॥ वंठित पूरण चिंता चूरण, मन शु  
द्ध समरे लोगी ॥ राग द्वेष टाली कर्मने गाली, शिव  
पंथें थया योगी ॥ हो ॥ १ ॥ नविजन नावें यात्रा  
आवे, प्रणमे लली पाय लागी ॥ नवि पर मेहेरें करुणा  
लेहेरें, नाग्य दशा जस जागी ॥ हो ॥ २ ॥ सुथरी  
गामें वसे शुन ठामें, तस चरणांजुज रागी ॥ मेघ  
लाज कहे प्रभु घृत कछोलजीने, नामें नवनिधि  
जागी ॥ हो ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ प्रजाति स्तवनं ॥

॥ राग रामकली ॥ अजब ज्योति मेरे, जिनकी,  
तुम देखो माई ॥ अजब ज्योति ॥ ए टेक ॥ कोडी  
सूरज जब एकठा कीजें, होड न. आवे मेरे जिनकी ॥  
तुम दे ॥ १ ॥ जगमग ज्योति जलामल जलके,  
काया नील वरणकी ॥ तुम दे ॥ २ ॥ हीर विजय प्रभु  
पास शंखेश्वर, आशा पूरो मेरे मनकी ॥ तुम दे ॥ ३ ॥

॥ अथ प्रजाति स्तवनं ॥

॥ राग बेलावल ॥ जब तुम नाथ निरंजना, तब  
में नक्त तुमारो ॥ कल्पवृक्ष जब तुम नए, युगला  
धर्म हमारो ॥ जब तु ॥ १ ॥ जब तुम सायर साहि  
बा, तब हूं सरिता समाना ॥ तुं दाता हूं याचका,  
बोले बिरुदिवाना ॥ जब तु ॥ २ ॥ तुं तीरथ महिमा  
बडो, तब हूं यात्रा हो आयो ॥ तुं हीरो मेरे कर  
चङ्ग्यो, तो हूं ऊबेरी कहायो ॥ जब तु ॥ ३ ॥ जब

तुं तखत त्रिभुवन तणो, हुं टंकशाली रूपैया ॥ दीया  
ठाप रूपचंदशिरें, गया शिक्का लहिया ॥ जब० ॥ ४ ॥

॥ अथ प्रजाति स्तवनं ॥

॥ राग वेलावल ॥ हम लोक निरंजन लालके, उ  
रनके नांही ॥ देश वसुं मेरे नाथके, नक्ति नगरी  
मांही ॥ हम० ॥ १ ॥ बनज करुं प्रभु नामके, जि  
तनो मुख आवे ॥ सबही नाम सोदा करुं, पाठो  
फेर न आवे ॥ हम० ॥ २ ॥ निशिदिन नाम सोदा  
करे, साचो सो व्यापारी ॥ हृदय कमल मंजूषमें,  
राखे गुण धारी ॥ हम० ॥ ३ ॥ रूपचंद कहे राम  
कूं, बनज दूजो न जावे ॥ नाथ निरंजन नामके, ह  
रखें गुण गावे ॥ हम० ॥ ४ ॥ इति

॥ अथ वीरजीन चउद सुपननुं स्तवनं ॥

॥ राय रे सीधारथ घर पटराणी, नामें त्रिशला सु  
लक्षणी ए ॥ राज भुवनमांहे पलंगें पोढंतां, चउद सु  
पन राणीयें लह्या ए ॥ १ ॥ पहेजे रे सुपनमें गयवर  
दीठो, बीजे वृषन सोहामणो ए ॥ त्राजे सिंह सुलक्ष  
णो दीठो, चोथे लखमी देवता ए ॥ २ ॥ पांचमे पां  
च वरणनी माला, छठे चंड अमिय ऊरे ए ॥ सातमे  
सूरज आठमे ध्वजा, नवमे कज्जल अमिय नखो ए  
॥ ३ ॥ पद्मसरोवर दशमे दीठो, क्षीर समुद्र दीठो अग्यार  
मे ए ॥ देवविमान ते बारमे दीठुं, रणजण घंटा वाज  
तां ए ॥ ४ ॥ रतननो राशि ते तेरमे दीठो, अग्निशिखा  
दीठी चउदमे ए ॥ चउद सुपन लक्ष राणीजी जाग्यां,

राय समोवड पोहोतलां ए ॥ ५ ॥ सुणो रे स्वामी मेंतो  
सुहणलां लाधां, पावली रात रत्नीयामणी ए ॥ रायरे  
सिद्धारथ पंमित तेड्या, कहो रे पंमित फल एहनुं  
ए ॥ ६ ॥ अम कुल मंमण तुम कुलदीवो, धन रे म  
हावीर स्वामी अवतखा ए ॥ जे नर गावे ते सुख पावे,  
आनंद संग वधामणां ए ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ शीतलनाथजीनुं स्तवन ॥

॥ माहारें शीतल जिअं जुं लागीं पूरण प्रीत जो, सा  
हिवजीनी सेवा नयडुख नांजरो रे जो ॥ हारे जिन  
प्रतिमा जिनवर सरखी दिलमां जोय जो, नक्ति कर  
तां प्रभुजी खूब निवाजरो रे जो ॥ १ ॥ जेणे जोतां  
लाधो रत्नचिंतामणि हाथ जो, तेहने रे मूकीने कुण  
ग्रहे काचनें रे जो ॥ जेणे मनसुं कीधां जूठानां प  
च्चस्काण जो, ते नर बोले सो वातें पण साचने रे  
जो ॥ २ ॥ जे पाम्या परिगल प्रीतें अमृत पान जो,  
खारुं जल ते पीवा कहो कुण मन करे रे जो ॥ जे  
घरमां वेठां पाम्यां लखमी जोर जो, धनने काजें दे  
श देशांतर कोण फरे रे जो ॥ ३ ॥ जेणें सेव्या पूर  
ण चित्तें अरिहंत देव जो, तेहना रे मनमांहे केम  
बीजा गमे रे जो ॥ एतो दोष रहित निकलंकी गुण  
नंदार जो, मनडूं रे अमारुं प्रभु साथें रमे रे जो  
॥ ४ ॥ मुने मलिया पूरण जाग्यें शीतल नाथ जो,  
देखीने हूं हरख्यो तन मन रंजियो रे जो ॥ एतो दो  
लतदायी प्रभुजीनो देदार जो, में तो जोतां प्रभुने क

( १४ए )

मंदल गंजीयो रे जो ॥ ५ ॥ श्रीविधिपद्धें देहरे सुंदरा  
नयर मजार जो, आंगी रे नवरंगी शिखर सोहा  
मणी रे जो ॥ ए तो तेजें दीपे जग मग ज्योति विशा  
ल जो, सोहें रे मनमोहे मूर्ति रलियामणी रे जो  
॥ ६ ॥ श्रीसत्तरएकाशीं रूअडो जाइव मास जो,  
स्तवन रच्युं ए प्रेमें पर्व पजूसणे रे जो ॥ श्रीसहज  
सुंदर शिष्य बोले एणी परें वाणी जो, जावें रे नित्य  
लान्न कहे हरषे घणे रे जो ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ सुमतिजिन स्तवनं ॥

॥ वाला सुमति जिणोसर सेवीएं रे, वाला सुम  
ति तणा.ळो दातार रे ॥ वाजां रे वाजे धर्मनां रे ॥ वा  
ला मेघराया सुत सुंदरू रे, वाला मंगला मात म  
व्हार रे ॥ वाजां रे.वाजे धर्मनां रे ॥ ए आंकणी ॥  
॥ १ ॥ वाला मंगलवेल वधारवा रे, वाला उमह्यो  
ढे ए जलधार रे ॥ वा० ॥ वाला रूप अनोपम जि  
नतणुं रे, वाला मनमोहन सुखकार रे ॥ वा०  
॥ २ ॥ वाला सोवन वान शरीरनो रे, वाला इहवा  
कुवंश वधार रे ॥ वा० ॥ वाला देई प्रभुदान संबहरी  
रे, वाला लीधो ढे संजमजार रे ॥ वा० ॥ ३ ॥  
वाला आठ करम अरि जींतिने रे, वाला पोहोता ढे  
मुक्तिमजार रे ॥ वा० ॥ वाला पूरव लाख चालीश  
नुं रे, वाला जीवित जेहनुं सार रे ॥ वा० ॥ ४ ॥  
वाला माणक मुनिमन रंगशुं रे, वाला चाहे ढे सुमति  
देदार रे ॥ वा० ॥ वाला एहवा प्रभु गुण गायवा

( १५० )

रे, वाला उपजे हवे अपार रे ॥ वा० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीवीरजिन स्तवनं ॥

॥ नारे प्रभु नही मानुं ॥ नही मानुं रे अवरनी  
आण ॥ नारे प्र० ॥ महारे ताहारुं वचन प्रमाण ॥ ना  
रे प्रभु० ॥ ए आंकणी ॥ हरिहरादिक देव अनेरा,  
ते दीठा जगमांय रे ॥ नामिनी जरम नृकुटीयें नूल्या,  
ते मुजने न सुहाय ॥ नारे० ॥ १ ॥ केशक रागीने  
केशक छेपी, केशक लोजी देव रे ॥ केशक मदनाया  
मां जरिया, केम करीएं तसु सेव ॥ नारे० ॥ २ ॥  
मुझा पण तेमां नवि दीसे प्रभु, तुजमांहेजी तिल मा  
त रे ॥ ते देखी दिलडुं नवि रीजे, शी करवी तेहनी  
वात ॥ नारे० ॥ ३ ॥ तुं गति तुं मति तुं मुज प्रीतम,  
जीव जीवन आधार रे ॥ रात दिवस स्वपनांतर  
तुंही, तुं माहारे निरधार ॥ नारे० ॥ ४ ॥ अवगुण  
सहु उवेखीने प्रभु, सेवक करीने निहाल रे ॥ जग  
बंधव ए विनती मोरी, माहारां सवि दुःख दूरें टाल  
॥ नारे० ॥ ५ ॥ चोवीशमा प्रभु त्रिभुवन स्वामी, सि  
द्धारथना नंद रे ॥ त्रिशलाजीना न्हानडीया प्रभु, तुम  
दीठे अति आणंद ॥ नारे० ॥ ६ ॥ सुमति विजय  
कवि रायनो रे, रामविजय कर जोड रे ॥ उपगारी  
अरिहंतजी, माहारा नव नवना बंध ठोड ॥ नारे० ॥ ७ ॥

॥ अथ रुषन देवजीनो वारमासो ॥

॥ प्रथम जिणंद प्रणमुं पाया, जननी मरुदेवी  
जाया ॥ रुषनजी धूलेवा नगर राया, जगत गुरु

( १५१ )

जिनवरने जजीएं ॥ विषय कषाय कपट तजीएं ॥ ज  
गत ० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ कार्तिकें केसरीयो मलशे,  
जनम जनमनां दुःख टलशे, माहारा मन वंठित  
फलशे ॥ जग ० ॥ २ ॥ मागशिरे मन मोह्युं माहारुं, के तुरत  
दरिसण थयुं ताहारुं, ताहरी सूरत पर वारु वारु ॥ ज  
ग ० ॥ ३ ॥ पोपें प्रीतडली पालो, त्रण चुवनमांहे  
अजुआलो, तुमे ठो दीन तणा दयालो ॥ जग ० ॥ ४ ॥  
माहा शुदि पंचमी दिन आवे, मोरली सहुको बंधावे,  
गुणी जन राग वसंत गावे ॥ जग ० ॥ ५ ॥ फागुणे फा  
ग खेलूं तुमशुं, केसर कस्तूरीयें रमशुं, विलेपन  
करी सदा नमशुं ॥ जग ० ॥ ६ ॥ चैत्रें चित्त लागुं चर  
णे, फूल गुलाल मुगट नरणे, सेवा तारण ने तरणे ॥  
जग ० ॥ ७ ॥ वैशाखें फूली वनराई, त्रीजनी आखा  
त्रीज आई, केशरीआशुं साची सगाई ॥ जग ० ॥  
८ ॥ जेठें-जिन्न पासें आवुं, के शीतल जल लई न्हवरा  
वुं, पंखो करतां पुण्य पावुं ॥ जग ० ॥ ९ ॥ आपाढें मे  
घ घणा गाजे, ढोल मृदंग तिहां वाजे, एणे दरवारें  
सदा ठाजे ॥ जग ० ॥ १० ॥ श्रावण वरसे अति सारो,  
बपैया मोर दाडुर प्यारो, गुणीयल गाये मली सारो  
॥ जग ० ॥ ११ ॥ श्रावणे सरवडियां वरसे, बपैया  
मोर दाडुर पीसे, गुणिजन राग मढ्हार गाशे ॥  
जग ० ॥ १२ ॥ नाइवे नविक करो जगति, परव पजू  
सण करो जुगति, पूजा नणावो नलि युगति ॥ जग ० ॥  
॥ १३ ॥ आशोयें पूरीजें आशा, घर घर दीपक बहु आ

शा, हरपें गाये ऋषजदासा ॥ जग० ॥ १४ ॥ बारे  
मास करुं सेवा, ऋषजदेव मागुं मेवा, देजो दीनत  
णा देवा ॥ जग० ॥ १५ ॥ इति बारमासो संपूर्ण ॥

॥ अथ सिद्धाचलस्तवनं ॥

॥ जात्रा नवाणुं करीएं शेत्रुंजा गिरि, जात्रा न  
वाणुं करीएं ॥ सहस्रकोडि जव पातक बूटे, शेत्रुंजा  
सामो मग जरीएं ॥ शे० ॥ जा० ॥ पूरव नवाणुं वार  
॥ शे० ॥ जा० ॥ ऋषज जिणंद समोसरीएं, पुंमगिरि  
॥ जा० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ पुंमरीक पद जपी मन हर  
खे, अथ्यवसाय शुज धरीयें ॥ शे० ॥ जा० ॥ सात ठठ  
दोय अठम तपस्या, करी चट्टीएं गिरिवरीयें ॥ शे० ॥  
जा० ॥ २ ॥ पडिक्कमणां दोय विधिंशुं करीएं, पाप  
पमल परिहरीएं ॥ शे० ॥ जा० ॥ जूमि संथारो ना  
री तणो संग, दूरथकी परिहरीएं ॥ शे० ॥ जा०  
॥ ३ ॥ एकल आहारी ने सचित्त परिहारी, गुरु साथें  
पद चरीएं ॥ शे० ॥ जा० ॥ कलिकालें ए तीरथ मो  
होटुं, प्रवहण जेम जर दरीएं ॥ शे० ॥ जा० ॥ ४ ॥  
उत्तम ए गिरिवर सेवतां, पद्य कहे जव तरीएं ॥  
शे० ॥ जा० ॥ ५ ॥ इति संपूर्ण ॥

॥ अथ मालणनुं गीत प्रारंजः ॥

॥ संघ पूढे फूल वाडीयें, मालण कवण सो मा  
गैनां फूल ॥ कवण सुगंधा जाणीएं, मालण कवण  
सो फूलनुं मूल ॥ तुं ठे मालण कोण राजनी ॥ १ ॥  
चंपक केतकी केवडो, मालण सेवंत्री ने जासूल ॥ मा



लती मलकंतो मोधरो, मालण जाई अशोक अ  
 मूल ॥ तुं ठे मालण ॥ २ ॥ कवणें रे चंपो वावीयो,  
 मालण कवणें गुंथ्यां एनां फूल ॥ कवण मला  
 रें लइ मूलव्यां, मालण केणें चढाव्यां अमूल ॥ सा  
 ची मालण जिनराजनी ॥ ए आंकणी ॥ ३ ॥ मा  
 लियें चंपो वावीयो, मालण चतुरें गुंथ्यां एनां फूल ॥  
 नविक मलारें लइ मूलव्यां, मालण प्रचुने चढाव्यां  
 अमूल ॥ साण ॥ ४ ॥ कहे रे मालण सुणो नविजनो,  
 एणी वाडीएं ठे बहु फूल ॥ सरस सुगंधां जाणीएं,  
 तेहमां चंपक कली ठे अमूल ॥ साण ॥ ५ ॥ शेत्रुं  
 जा गिरिवर जेटवा, मालण आव्यो ठे कड्डनो संघ ॥  
 देशावडी श्रावक वसे, तेहमां संघमुखी मानसिंघ ॥  
 साण ॥ ६ ॥ नरनव दोहिलो पामीने, मालण पूज  
 वा आदि जिणंद ॥ सफल जनम करी सुल्लहो, माल  
 ण लेखो परमनंद ॥ साण ॥ ७ ॥ सत्तरजेद सुविधें  
 करी, मालण साहामिवत्सल सोजाय ॥ सौजाग चंड  
 सुगुरु लही, मालण स्वरूपचंड गुण गाय ॥ साण ॥ ८ ॥  
 ॥ अथमहावीरजिनस्तवनं ॥

॥ वीर कुमरनी वातडी, केने कहियें ॥ हारे केने क  
 हियें रे केने कहियें ॥ नवि मंदिर बेसी रहियें, हारे सु  
 कुमार शरीर ॥ वीण ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ बालपणा  
 थी लामको नृप जाव्यो, हारे मली चोशठ इंडें मल्हा  
 व्यो ॥ इंडाणी मली दुलराव्यो, हारे गयो रमवा  
 काज ॥ वीण ॥ २ ॥ ठोरु उठां ठलां लोकनां केम र

हियें, हारे एनी मावडिं शुं कहियें ॥ कहियें तो अ  
 देखां थइयें, हारे नाशि आव्यां बाल ॥ वी० ॥ ३ ॥  
 आमलकी क्रीडा वशें वींटाणो, हारे मोटो जोरिंग रो  
 पें नराणो ॥ वीरें हाथे जानीने ताण्यो, हारे काढी  
 नाख्यो दूर ॥ वी० ॥ ४ ॥ रूप पिशाचनुं देवता करी  
 चलियो, हारे मुऊ पुत्रने लेइ उठलियो ॥ वीर मु  
 ष्टि प्रहारें बलियो, हारे सांजलीयें एम ॥ वी०  
 ॥ ५ ॥ त्रिशला माता मोजमां एम कहेती, हारे  
 सखीयोने उलंजा देती ॥ कृणकृण प्रभु नाभज ले  
 ती, हारे तेडावे बाल ॥ वी० ॥ ६ ॥ वाट जोवंतां  
 वीरजी घरे आव्या, हारे माता त्रिशलाएं नवरा  
 व्या ॥ खोले बेसारि हुजराव्या, हारे आंलिंगन दे  
 त ॥ वी० ॥ ७ ॥ यौवन दप प्रभु पामतां परणावे,  
 हारे पढी संजमशुं दील लावे ॥ उपसर्गनी फोज ह  
 ठावे, हारे लीधुं केवल नाण ॥ वी० ॥ ८ ॥ कर्म  
 सूडन तप नांखियुं जिनराजें, हारे त्रण लोकनी ठ  
 कुराई ठाजे ॥ फूल पूजा कही शिव काजें, हारे न  
 विने उपगार ॥ वी० ॥ ९ ॥ शाता अशाता वेदनी क  
 य कीधुं, हारे आपें अकृय पद लीधुं ॥ शुनवीरनुं  
 कारज सीधुं, हारे नांगे सादि अनंत ॥ वी० १० ॥

॥ अथ श्रीपर्युषणनुं स्तवन ॥

॥ आंखडीयें अमें आज शत्रुंजो दीठो रे ॥ ए दे  
 शी ॥ सुणजो साजन संत, पजूसण आव्यां रे ॥ तुमें  
 पुण्य करो पुण्यवंत, नविक मन जाव्यां रे ॥ वीर जिणे

सर अतिअलवेशर ॥ वाला मारा ॥ परमेश्वर एम बोले  
 रे ॥ पर्वमांहे पजूसण मोहोटां, अवर न आवे तोले  
 रे ॥ पजू ० ॥ तुमें ० ॥ ज ० ॥ १ ॥ चौपगमांहे जेम केशरी मो  
 होटो ॥ वा ० ॥ खगमां गरुड ते कहियें रे ॥ नदीमांहे जेम  
 गंगा मोहोटी, नगमां मेरु लहियें रे ॥ पजू ० ॥ तु ० ॥ ज ०  
 ॥ २ ॥ नूपतिमां नरतेसर जांख्यो ॥ वा ० ॥ देवमांहे सुरेंड  
 रे ॥ तीरथमां शेत्रुंजो दाख्यो, ऋगणमां जेम चंड रे ॥ प  
 जू ० ॥ तु ० ॥ ज ० ॥ ३ ॥ दसरा दीवालीने होली ॥ वा ० ॥  
 अखात्रीज दीवासो रे ॥ बलेव प्रमुख बहुला ठे बीजा,  
 पण ए मुक्तिनो वासो रे ॥ पजू ० ॥ तु ० ॥ ज ० ॥ ४ ॥ ते मा  
 टे अमार पलावो ॥ वा ० ॥ अछाई महोत्सव कीजें रे ॥  
 अठम तपं अधिकांश्यें करीने, नरनव लाहो लीजें रे  
 ॥ पजू ० ॥ तु ० ॥ ज ० ॥ ५ ॥ ढोल ददामा जेरी नफेरी ॥ वा ० ॥  
 कल्पसूत्रने जगावो रे ॥ जांजरना ऊमकार करीने, गो  
 रीनी टोली. मल्ली आवो रे ॥ पजू ० ॥ तु ० ॥ ज ० ॥ ६ ॥  
 सोनारूपाने फूलडे बधावो ॥ वा ० ॥ कल्पसूत्रने पूजो  
 रे ॥ नव वखाण विधियें सांजलतां, पापमेवासी धूजो  
 रे ॥ पजू ० ॥ ७ ॥ तु ० ॥ ज ० ॥ ८ ॥ ए अछाइनो मेहोत्सव  
 करतां ॥ वा ० ॥ बहु जिन जगउद्धरा रे ॥ विबुध  
 विनीत वर सेवक एहथी, नवनिधि रुद्रि सिद्धि वखा रे  
 ॥ पजू ० ॥ तु ० ॥ ज ० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ धृतकध्नोल पार्श्वजिन स्तवनं ॥

॥ धृतकध्नोल प्रभु पासजिणंद, अश्वसेनरायाकु  
 ल उपना दिणंद ॥ मोरा पासजी हो लाल, प्रभुमुख

( ३५६ )

देखी मारो मन हीसे राज ॥ ए आंकणी ॥ माता  
 वामादेवि जायो पुत्र रतन, जेणें नाग नागणीना  
 कीधां ठे जतन ॥ मोरा० ॥ प्रचु० ॥ १ ॥ कमठनो  
 मद गाव्यो वाले कीधां रूडां काज, कलिकालमांहे जेनो  
 परतो ठे आज ॥ मो० ॥ मारग चूलाने वालो आपे  
 ठे साद, वली आपे संपदाने टाले विषवाद ॥ मो०  
 ॥ प्रचु० ॥ २ ॥ वेडीयो कापेने वालो तारे ठे जिहा  
 ज, समस्यां आपे वालो दंठित काज ॥ मो० ॥ देशी  
 विदेशी आवे संघ अनेक, सुथरीमां वास कीथो राखी  
 वाले टेक ॥ मो० ॥ प्रचु० ॥ ३ ॥ मोणसी अंचल  
 जीनुं जात्रानुं मन्न, संघ लश्ने आव्या सुथरी प्रसन्न  
 ॥ मो० ॥ संवत अठार बेआसीयें जाण, फागुण  
 वदि चोथे गायो गुणखाण ॥ मो० ॥ प्रचु० ॥ ४ ॥  
 जेठ्या श्री घृत कछोल जिनराज, पूजा सत्तर जेदी  
 करे शुन काज ॥ मो० ॥ मेघ शेखर गुरुना सुपसाय,  
 शिष्य गुलाब शेखर गुण गाय ॥ मो० ॥ प्रचु० ॥ इति ॥

॥ अथ कृष्णजिन स्तवनं ॥

॥ आज उजम ठे रे अधिको, जोवा दरिसण आ  
 दीसरको ॥ ते मुने लागे रे मीतुं, प्रचुजीनुं ज्यारें द  
 रिसण दीतुं ॥ आज० ॥ केशर चंदन रे लीजें, घसी  
 करी जिनजीनी पूजा कीजें ॥ आज० ॥ १ ॥ पूजानां  
 फल ठे रे रूडां, तेहथी आठ कर्म खपे कूडां ॥  
 नावें नावना रे नावो, वली प्रचुना गुण रंगें  
 गावो ॥ आज० ॥ २ ॥ आजूनी आंगीनो रे लटको,

माहारा प्रभुजीना मुखनो मटको ॥ मटकें मोह्या रे इं  
दा, वदन कमल जाणे पूनम चंदा ॥ आज० ॥ ३ ॥  
मिठडी मूरति रे तारी, ते घणुं मुऊने लागे ठे प्यारी ॥  
नाजिराया नंदन रे नीको, माहारा प्रभुजीनो सबलो  
टीको ॥ आज० ॥ ४ ॥ विवेक विजयनो रे शिष्य, हर्षे  
हुं प्रणमुं निश दीस ॥ पूर्व पुण्ये रे पामी, नेव्यो हुं  
मोरा अंतरजामी ॥ आज० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवनं ॥

॥ लय लागी रे लय लागी रे, गोडी पासजिणंदगुं  
लय लागी ॥ आतम रूपीने अकल सरूपी, लोकालोक  
प्रकाशी रे ॥ गो० ॥ १ ॥ चोशठ इंद्र करे तोरी सेवा,  
इंदाणी ललि ललि पाय लागी रे ॥ गो० ॥ २ ॥ ज्ञानविम  
लसूरी इणी परें बोले, प्रभुआवागमण निवारी रे ॥ ३ ॥

॥ अथ शांतिजिन स्तवनं ॥

॥ तुं मेरेमनमें तुं मेरे दिलमें, नाम जपूं पल पल  
में हो ॥ प्रभुजी ॥ तुं० ॥ शांतिजिणेसर साहेब सा  
चो, शांतिकरण एक पलमें हो ॥ प्रभुजी ॥ तुं० ॥ १ ॥  
निर्मल ज्योति वदन पर सोहे, निकस्यो ज्युं चंद बा  
दलमें हो ॥ प्रभुजी ॥ तुं० ॥ मेरो तो मन प्रभु तुमसें  
लीनो, मीन वसत जिम जलमें हो ॥ प्रभुजी ॥ तुं०  
॥ २ ॥ जव जव जमतां में दरिसण पायो, आशा  
पूरो एक पलमें हो ॥ प्रभुजी ॥ तुं० ॥ जिनरंग कहे  
प्रभु शांतिजिणेसर, देख्यो ज्युं देव सकलमें हो  
॥ प्रभुजी ॥ तुं० ॥ ३ ॥ इति शांतिजिन स्तवनं ॥

॥ अथ अरिहंत स्तवनं ॥

॥ प्रभुजी रे प्रभुजी नाम जपुं मन माहरे, पण  
सेवकनी चित्त नही को ताहरे ॥ नीरागी जिनराज  
निरागीछुं मले, तुमसेंती एक बार थाये नवडुख  
टले ॥ १ ॥ रूपरहित जिनराज कहो किहं देखी  
एं, विण देखे दोय नेत्र सफल केम लेखिएं ॥ जेहने  
रे नेत्र हजार ते नर पण ताहरो, देखे नही देदार  
किस्यो बल माहरो ॥ २ ॥ पंचम ज्ञान प्रकाश शुद्ध  
होय जेहने, अरिगंजन अरिहंत प्रगट ठे तेहने ॥  
तेहनो तो लव लेश नही को इण समे, एहवो को  
न उपाय जे जिन तुमथी मले ॥ ३ ॥ कुगुरु कुदेव  
कुधर्म तणे वश हूं पड्यो, जग गुरु ताहरो धर्म महा  
रे कर नवि चड्यो ॥ आपणगे. अहंकार तणे वश वा  
हियो, तेणे करी तुम दरिसण, उदय नवि आवियो  
॥ ४ ॥ तरण तारण जिहाज समो जिनजी मल्यो, नागी  
मननी चांति सहु संशय टल्यो ॥ क्रिया डुकर कार न  
थाए आजने, सद्गति लहीएं ताम प्रसादे राजने  
॥ ५ ॥ अमची विनति एह तमें अवधारजो, कठिन  
ते आठे कर्मने दूरें वारजो ॥ विनति वाचक नक्ति  
सागरनी जाणवी, तिम करो त्रिभुवन स्वामी, सेवा  
तारी पामवी ॥ ६ ॥ इति संपूर्ण ॥

॥ अथ रूपनजिन स्तवनं ॥

॥ मोसें नेह धरी महाराज आज राजराज दर्श  
दीजीए, दर्श दीजीएं रे नव डुख ठीजीएं ॥ मो० ॥

( ३५ए )

ए टेक ॥ रे तुम झानी जगत तात त्रात तुम सरन री  
जीएं, शरन रीजीएं तो नव दुख ठीजीएं ॥ मो०  
॥ १ ॥ नरप नाजिजीके नंद चाहत इंद चंद विंद,  
जयो जयो जिणंद नित्य वंद कीजीएं ॥ मो० ॥ २ ॥  
तुम धूलेवा नाथ मोक्ष साथ अचल आदिब्रह्म, य  
ही हाथ प्रभु रतनको उद्धार कीजीएं ॥ मो० ॥ ३ ॥

॥ अथ प्रजाति स्तवनं ॥

॥ जाग जाग रयण गई, जोर जयो प्यारे ॥ पंच  
कूं प्रपंच कर, वशकर यारे ॥ जाग जाग रयण गई,  
जोर जयो प्यारे ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ तृपानामें मी  
न मरे, जोगमें मत्तंगा ॥ श्रवणमें कुरंग मरे, नयन  
में पतंगा ॥ जा० ॥ २ ॥ वासनामें नमर मरे, नासा  
रस लेतां ॥ एक एक इंडीसंग, मरे जिउ केता ॥  
जा० ॥ ३ ॥ पंचके पड्यो तुं फंद, क्युं कर वश  
आवे ॥ मार तुं मन इहा नूत, ज्युं निरंजन पावे  
॥ जा० ॥ ४ ॥ इति संपूर्ण ॥

॥ अथ प्रजाति स्तवनं ॥

॥ तुं हि नाथ हमारो रे ॥ जिनपति ॥ तूं हि नाथ हमा  
रो ॥ योग हेमंकर नविक सकलके, सेवक हैयामांहे  
धारो रे ॥ जि० ॥ तूं० ॥ १ ॥ ए टेक ॥ जो गुन पाए  
नही सो मिलावत ॥ पाए गुनकूं सुधारो ॥ अनजि  
राम कलिमल करो दूरें, अब मोहे पार उतारो रे  
॥ जि० ॥ तूं० ॥ २ ॥ त्रिभुवन नाथ सार करो मोरी,  
करुणा नजर निहालो ॥ पास चिंतामण जानुचंदकी,

एहि विनति अवधारो रे ॥ जि० ॥ तूं हि० ॥ ३ ॥

॥ अथ सिद्धाचल स्तवनं ॥

॥ सिद्धाचल वंदोरे नर नारी, हारे नरनारी हो  
नर नारी, सिद्धाचल वंदो रे नर नारी ॥ नानिराया  
मरु देवा नंदन, रूपनदेव सुखकारी ॥ सि० ॥ १ ॥  
पुंमरिक पमुहा मुनिवर सीधा, आत्मतत्त्व विचारी  
॥ सि० ॥ २ ॥ शिवसुखकारण नवदुख दारण,  
त्रिचुवन जग हितकारी ॥ सि० ॥ ३ ॥ समकित  
शुद्ध करण ए तीरथ, मोह मिथ्यात निवारी ॥ सि०  
॥ ४ ॥ ज्ञान उद्योत प्रहृ केवल धारी, नक्ति करं  
एक तारी ॥ सि० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ केशरीयाजीनुं स्तवन ॥

॥ नमरो उमेरे रंग मोहोलमारे ॥ ए देशी ॥ आ  
ज सफल दिन माहरो रे, वांघ्यां श्री धूलेवा राय  
रे ॥ केशरीयोजी जेटियो रे ॥ मेवाड वांगड विच्चे शो  
नतो रे, बावन जिनालो प्रासाद रे ॥ के० ॥ १ ॥ मे  
रु सम उत्तंग देहरो रे, कोरणी अतिहि श्रीकार रे  
॥ के० ॥ थंजे थंजे शोजे पूतली रे, जाणीयें देव  
विमान रे ॥ के० ॥ २ ॥ सुवर्णनो दंम कलश अढे  
रे, रूप कपाट जोडि दोय रे ॥ के० ॥ रत्नें जडित  
सुवर्ण अंगिका रे, तेजें जलामल जाण रे ॥ के० ॥  
॥ ३ ॥ प्रजुजोनी मूरति मोहनी रे, तृप्ति न पामे नय  
ण रे ॥ के० ॥ महिमावंत मोहोटा तुमें रे, जग सद्गु  
नमे जस, पाय रे ॥ के० ॥ ४ ॥ नित पूजे प्रहृ नाव



शुं रे, वंछित फल लहे ताम रे ॥ के० ॥ आश धरी  
 ने हुं आवीयो रे, द्यो दरिसण महाराज रे ॥ के०  
 ॥ ५ ॥ देशावरी संघ आवे घणा रे, यात्रा करण नि  
 तमेव रे ॥ के० ॥ केशरना कीच मची रह्या रे, नि  
 त होए मंगलमाल रे ॥ के० ॥ ६ ॥ गोमुख यक्ष च  
 केसरी रे, शासन देवता एह रे ॥ के० ॥ कलियुगमां  
 साचो धणी रे, परता पूरणहार रे ॥ के० ॥ ७ ॥  
 शैव नरसिंहनाथाना संघमां रे, वर्त्ते ठे जयजयकार  
 रे ॥ के० ॥ संवत उगणीश बारोत्तरे रे, वैशाख वदि  
 बीज सार रे ॥ के० ॥ ८ ॥ तिणे दिन प्रभुजीने वां  
 दिया रे, संघ सर्वे गहघट रे ॥ के० ॥ पूजा साहामि  
 वल्लन नित प्रते रे, खरचीने लाहो लीध रे ॥ के०  
 ॥ ९ ॥ आठ दिवस करी जातरा रे, संघ सहू हर्षे  
 ण रे ॥ के० ॥ सौजाग्येंडुशिष्य देवचंङ्गे रे, यात्रा  
 थई सुखकार रे ॥ के० ॥ १० ॥ इति संपूर्ण ॥

॥ अथ वीरजिन स्तवनं ॥

॥ में नही जाण्यो नाथजी, मोसुं दूर पठाया ॥  
 पीठेंसें वर्द्धमान जी, शिवमेहेल सधाया ॥ में० ॥  
 ॥ १ ॥ वचन तुमारो मानकें, में दीक्षा लीनी ॥ लो  
 क लाज सब त्यागके, घर घर जिह्वा कीनी ॥ में०  
 ॥ २ ॥ दरस तुमारो देखतो, रहेतो रंग रातो ॥ व  
 चन तुमारो शिर धरी, गुण तोरा गातो ॥ में० ॥ ३ ॥  
 जिहां जिहां संशय उपजे, तो शुं पूढी लीजें ॥ ज्ञान  
 सुधारसकी कथा, कहो कोणशुं कीजें ॥ में० ॥ ४ ॥

सही सही तूं वीतराग हे, नही रागकी रेखा ॥ शत्रु  
मित्र ते रे सम नए, सो में नजरें देखा ॥ में० ॥  
॥ ५ ॥ शुक्लध्यान श्रेणें चढ्या, गुरु गौतम राया  
॥ अनित्य जावना जावतां, केवल पद पाया ॥ में०  
॥ ६ ॥ पूरन ब्रह्म प्रगट जया, नवि जाये ठिपाया ॥  
रूपचंद नक्ते करी, चरणे शिर लाया ॥ में० ॥ ७ ॥

॥ अथ श्रीवृद्धचैत्यवंदन प्रारंभः ॥

॥ ढाल पेहेली ॥ केवलनाणी श्रीनिरवाणी, सा  
गर महाजस विमल ते जाणी ॥ सर्वानुजृति श्रीधर  
गुण खाणी, दत्त दामोदर गूढं प्राणी ॥ १ ॥ सुतेज  
स्वामी मुनिसुव्रत जाणी, सुमतिने शिवगति पंचम ना  
णी ॥ अस्तांग नेमीसर अनित्य ते जाणी, यशोधर से  
वो मनमांहि आणी ॥ २ ॥ कृतारथ जपतां नवि हो  
य हाणी, धमीसर पाम्या शिवपुर राणी ॥ शुद्धमति  
शिवकर स्यंदन गाणी, संप्रतिना गुण गाए इंद्राणी  
॥ ३ ॥ वाचक मूला कहे उगते जाणी, तवन जणो  
जिम थाउं नाणी ॥ ए चोवीशी नित नित गाणी,  
मुक्ति तणां सुख जिम ल्यो ताणी ॥ ४ ॥ ढाल बीजी ॥  
आर्दे अजितज रे, संजव अजिनंदन जणुं ॥ श्री सु  
मतिज रे, पद्मप्रज्जनीना गुण थुणुं ॥ श्री सुपारस रे,  
चंद्रप्रज जग जाणीयें ॥ सुविधि शीतल रे, श्रेयांस ह  
रखें वखाणीयें ॥ १ ॥ त्रुटक ॥ वखाणीयें श्री वासपू  
ज्य, विमल अनंत धर्म शांति ए ॥ कुंथु अर मल्लि सु  
नि सुव्रत, नमि नेम ध्याउं चित्त ए ॥ सूर धीर पार्श्व

( १६३ )

वीर, वर्तमानें जिनवरा ॥ कर जोड़ी वाचक जणो  
मूला, स्वामी सेवक सुखकरा ॥ १ ॥ ढाल त्रीजी ॥  
पद्मनाभ सूरदेव, सुपार्श्व स्वयंप्रज होइ ॥ सर्वानुनूति  
देवसुत, उदय पेढालज जोइ ॥ १ ॥ पोटिल सत्की  
र्त्ति, मुनिसुव्रत अमम निःकषाय ॥ निपुलायक निर्म  
म, चित्रगुप्ति वंदूं पाय ॥ २ ॥ समाधि सुसंवर, यशो  
धर विजय मल्ली देव ॥ अनंत वीरज नष्टकृत, तेहनी  
कीजें सेव ॥ ३ ॥ अनागत जिनवर, होशे तेहनां ना  
म ॥ जणो वाचक मूला, तेहने करुं प्रणाम ॥ ४ ॥  
॥ ढाल चौथी ॥ महाविदेह पंच मजार, प्रत्येकें जि  
न चार ॥ सीमंधर जुगमंधर, बाहु सुबाहु अ सुखक  
र ॥ १ ॥ सुजात स्वयंप्रज स्वामी, उसजानन लेहुं ना  
मी ॥ अनंतवीरज देव, सूरप्रभु करुं अ सेव ॥ २ ॥  
विशाल वज्रंधर साहु, चंझानन चंडबाहु ॥ जुजंग ई  
श्वर गाउं, नेमी प्रभु चित्त ए लाउं ॥ ३ ॥ वीरसेन  
महान्द्र वंदूं, देव जसा दीते आनंदूं ॥ अजितवीरि  
य वंदन, शाश्वता रुषजाचंझानन ॥ ४ ॥ वर्द्धमान  
वारिषेण ईश, ए दुआ जिनचोवीश ॥ एवा ठनु ए  
जिनवर, वाचक मूला कहे सुखकर ॥ ५ ॥ ढाल पां  
चमी ॥ हवे पायालें लोक मय, जिहां असुर कुमार  
॥ लाख चोशठ जिनभुवन अठे, तिहां करुं जूहार ॥  
॥ १ ॥ नागकुमारमांहि कह्या, तिहां लाख चोराशी  
॥ एता जिनहर तिहां नमुं, थाउं समकितवासी ॥  
॥ २ ॥ सोवन कुमार मय लाख, बहुंतेर प्रासाद ॥

ठहुं लाख वायुमय, सुणियें सुरनाद ॥ ३ ॥ दीपकु  
 मार दिशाकुमार, वली उदधिकुमार ॥ विद्युत स्तनितकु  
 मार अने, वली अग्निकुमार ॥ ४ ॥ ए ठ ए स्थानक जाणि  
 यें, प्रत्येकें जिनहर ॥ ठहुंतेर ठहुंतेर लाख तिहां, नवि  
 अण जिनसुखकर ॥ ५ ॥ एंवकारें सवि मली, बहु  
 तेर तिहां लाख ॥ साठ कोडि जिनहर नमुं, श्री जि  
 नवर नांख ॥ ६ ॥ लाख साठ निव्यासी कोडी, अने  
 तेरशें कोडी ॥ जिन पडिमा श्रीजिन तणी, वंदूं बे  
 कर जोडी ॥ ७ ॥ असंख्या व्यंतर जोइशी, असं  
 ख्या जिनहर ॥ असंख्य पडिमा जिन तणी, नमिय  
 नहिं डुर्गति मर ॥ ८ ॥ वाचकमूला कहे देव, देउ  
 सुमति सदा मुज ॥ जिनवचनें हुं लीन थइ, गाउं  
 जिनजी तुज ॥ ९ ॥ ढाल ठही ॥ सोहम ईशान स  
 नतकुमार ए, माहिंद बंजरें जांतक सार ए ॥ त्रुटक ॥  
 सार शुक्र अने सहसारह, आनत प्राणत -आरण ॥  
 अञ्जुत नवग्रैवेयक त्रिक तिहां, पंच अनुत्तर तार  
 ए ॥ अनुक्रमें प्रासाद कहीयें, लाख सहस शत सं  
 खया ॥ बत्तीस अठावीस बारह, अठ चउ लाख अ  
 रकया ॥ १ ॥ चाल ॥ पन्नास चालीश ठ सहस जिनहरा,  
 दोदो दोढज दोढज सतवरा ॥ त्रुटक ॥ वरा सत्तवर  
 इग्यारोत्तर, सत्तोत्तर शो जाणीयें ॥ एकशो ऊपर  
 पंच अनुत्तर, अनुक्रमें वखाणीयें ॥ सवे मलि जि  
 नहर जिनहर, लाख चोराशी साख ए ॥ सहस स  
 ताणुं आगला, तिहां वीश ने त्रण दाख ए ॥ २ ॥ चा

ल ॥ एक सो कोडी रे, बावन कोडी ए ॥ लाख चोरा  
 णुं रे, संख्या जोडीएं ॥ त्रुटक ॥ जोडीएं चोशठ स  
 हस एकशो, चालीशें तिहां आगली ॥ जिनप्रासाद  
 एकसो असिअ लेखें, वंदूं प्रतिमा उज्जली ॥ चैत्यसं  
 ख्या ऊर्ध्व लोकें, वीर वचनविख्यात ए ॥ वाचक मू  
 ला कहे नणजो, स्तवन ए परनात ए ॥ ३ ॥  
 ॥ ढाल सातमी ॥ वेयढगिरि सितिर सय जिनहर,  
 वृषधरना तिहां त्रीश जी ॥ कुरुडुमनां दश जिनहर  
 बोल्या, गजदंतें तिहां वीशजी ॥ १ ॥ असिअ ते  
 जिनहर कुरुडुम परिधें, असिअ वखारे जाणुं जी ॥  
 मेरुतणा पंचाशी जिनहर, श्खुकारें चार वखाणुं जी  
 ॥ २ ॥ मानुषोत्तर पर्वत तिहां चारज, नंदीसरना वी  
 श जी ॥ कुंमल रुचक तिहां चार चार जिनहर. रुष  
 नादिक तिहां ईश जी ॥ ३ ॥ पंचसया श्ग्यारें अ  
 धिका, जिनहर तिठें लोकें जी ॥ पडिमा एकशठ स  
 हस चारसैं, बोली सघले थोकें जी ॥ ४ ॥ अधो  
 ऊर्ध्वने तिठें लोकें, सवे मली कोडी आतें जी ॥ ला  
 ख ठप्पन्न ने सहस सत्ताणुं, पणसय चोत्रीश पातें  
 जी ॥ ५ ॥ जिन पडिमा पन्नरसैं कोडी, बेंतालीश  
 वली कोडी जी ॥ लाख पंचावन सहस पणविस, प  
 णसय चालीश जोडी जी ॥ ६ ॥ एतां तवन नणे  
 जे नावें, प्रह उगमते सूरें जी ॥ वाचकमूला कहे  
 गुण गातां, दुर्गति नासे दूरें जी ॥ ७ ॥ ढाल आठ  
 मी ॥ अछावय समेत शिखरगिरि ॥ साजनजिअ ॥

रेवत गिरि सितुंज ॥ गजपद धम्म चक्र कहुं ॥ सा० ॥  
 वैजारगिरि उत्तंग ॥ १ ॥ रावते कुंजरावते ॥ सा० ॥  
 तिहुंअणगिरि ग्वात्रेर ॥ काशी अवंती जाणीयें ॥  
 सा० ॥ नागोर जेसलमेर ॥ २ ॥ सोरिपुर हड्डिणाउ  
 रें ॥ सा० ॥ अवल ईरावण पास ॥ पीरोज पुरें नू  
 अड जलो ॥ सा० ॥ फलोधि पूरे आश ॥ ३ ॥ वि  
 कानेरने मेडते ॥ सा० ॥ सीरोही आबू शृंग ॥ राण  
 ग पुरने सादडी ॥ सा० ॥ वरकाणे मनरंग ॥ ४ ॥  
 निन्नमालने कोटडे ॥ सा० ॥ बाहडमेर मोजार ॥  
 रायधणपुर रलियामणुं ॥ सा० ॥ शांतिनाथ दयोड  
 जूहार ॥ ५ ॥ साचोर जालोर राडें ॥ सा० ॥ गो  
 डीपुरवर पास ॥ पाटण अमदावाद वली ॥ सा० ॥  
 संखेसर दीजें नास ॥ ६ ॥ अमी ऊरे नवपल्लवे ॥ सा० ॥  
 नवखंम थलाईं ठाम ॥ तारंगे बुरहानपुरें ॥ सा० ॥  
 वंदूं माणक शाम ॥ ७ ॥ खंजायतने तारापुरें ॥  
 सा० ॥ मातर ने गंधार ॥ लोमण चिंतामणि व  
 रुं ॥ सा० ॥ सूरत मनोई जूहार ॥ ८ ॥ देवक पा  
 टण देवगिरि ॥ सा० ॥ नवे नगर वंदी जोय ॥ दीवा  
 दिक सवि बंदरे ॥ सा० ॥ अंतरिक सिरिपुर होय ॥  
 ॥ ९ ॥ वडनगरने रुंगरपुरें ॥ सा० ॥ इमर मालव दे  
 श ॥ कव्याणक जिहां जिन तणुं ॥ सा० ॥ मन सूधे  
 प्रणमेश ॥ १० ॥ गाम नगर पुर पाटणे ॥ सा० ॥ जि  
 न मूरति जिहां होय ॥ वाचकमूला कहे मुऊ ॥ सा० ॥  
 वंदतां शिवसुख होय ॥ ११ ॥ कलश ॥ ठनुए जिन

वर ठबुए जिनवर, अधो ऊर्ध्वने लोक तीर्थे जाणुं  
 ए ॥ सासय असासय जैनपडिमा, ते सवे वखाणुं  
 ए ॥ गह्वविधिपद् पूज्य परगट, श्री धर्ममूर्ति सूरिंड  
 ए ॥ वाचकमूला कहे नणतां, रुद्धि वृद्धि आणंड  
 ए ॥ १ ॥ इति वृद्धचैत्यवंदनं संपूर्णम् ॥

॥ अथ सम्यक्त्वना सडशठ बोलनी सङ्काय प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥ सुकृतवह्निकादंबिनी, समरी सर  
 सति मात ॥ समकित सडशठ बोलनी, कहिंशुं मधु  
 री वात ॥ १ ॥ समकित दायक गुरुतणो, पञ्चवया  
 र न थाय ॥ नव कोडाकोडें करी, करतां सर्व उपा  
 य ॥ २ ॥ दानादिक किरिया न दिये, समकित वि  
 ण शिवशर्म ॥ तेमाटे समकित वडूं, जाणो प्रवचन  
 मर्म ॥ ३ ॥ दर्शन मोह विनाशथी, जे निर्मल गुण  
 ठाण ॥ ते निश्चय समकित कह्यो, तेहनां ए अहि  
 ठाण ॥ ४ ॥ ढाल ॥ देइ देइ दरिसण आपणुं ॥ ए  
 देशी ॥ चउ सदहणा तिलिंग ठे, दशविध विनय  
 विचारो रे ॥ त्रण शुद्धि पण दूषण, आव प्रजाविक  
 धारो रे ॥ ५ ॥ त्रुटक ॥ प्रजाविक अड पंच नूषण,  
 पंच लहण जाणियें ॥ षट जयण षट आगार ना  
 वन, ठबिहा मन आणियें ॥ षट ठाण समकित त  
 णा सडसठ, नेद एह उदार ए ॥ एहनुं तत्त्व वि  
 चार करतां, लहीजें नवपार ए ॥ ६ ॥ ढाल ॥ चहु  
 विह सदहणा तिहां, जीवादिक परमढो रे ॥ प्रव  
 चनमां जे नांखिया, लीजे तेहनो अढो रे ॥ ७ ॥

॥ त्रुटक ॥ तेहनो अर्थ विचार करियें, प्रथम सद्दह  
 णा खरी ॥ बीजी सद्दहणा तेहना जे, जाण मुनि  
 गुण ऊवहरी ॥ संवेग रंग तरंग जीले, मार्ग शुद्ध कहे  
 बुधा, तेहनी सेवा कीजियें जिम, पीजियें समता  
 सुधा ॥ ७ ॥ ढाल ॥ समवेग जेणे ग्रही वमिगुं, नि  
 न्दव न अहाबंदा रे ॥ पासडा ने कुशीलिया, वेष वि  
 मंवर मंदा रे ॥ ८ ॥ त्रुटक ॥ मंदा अनाणी दूर  
 बंमो, बीजी सद्दहणा ग्रही ॥ परदर्शनीनो संग त  
 जियें, चोथी सद्दहणा कही ॥ हीणातणो जे संग  
 न तजे, तेहनो गुण नवि रहे ॥ ज्युं जलधि जलमां  
 नव्युं गंगा, नीर लूणपणू लहे ॥ ९ ॥ ढाल ॥ क  
 पूर होवे अति ऊजलो रे ॥ ए देशी ॥ त्रण लिंग सम  
 कित तणां रे, पहिलो श्रुत अनिलाष ॥ जेहथी श्रो  
 ता रस लहे रे, जेहवी साकर डाख रे ॥ प्राणी धरियें  
 समकित रंग, जिम लहियें सुख अचंग रे ॥ प्राणी ध०  
 ॥ ए टेक ॥ ११ ॥ तरुण सुखी स्त्री परिवस्यो रे, चतुर  
 सुणे सुरगीत ॥ तेहथी रागें अति घणो रे, धर्म सु  
 ण्यानी रीत रे ॥ प्राणी० ॥ १२ ॥ नूख्यो अटवी ऊत  
 स्यो रे, जिम द्विज गेवर चंग ॥ इहे तिम जे धर्मने  
 रे, तेहिज बीजुं लिंग रे ॥ प्राणी० ॥ १३ ॥ वैयाव  
 च गुरु देवनू रे, बीजुं लिंग उदार ॥ विद्या साधक  
 तणि परें रे, आलस नविय लगार रे ॥ प्राणी० ॥  
 ॥ १४ ॥ ढाल ॥ प्रथम गोवालातणे नवेंजी ॥ ए देशी ॥  
 ॥ अरिहंत ते जिन विचरता जी, कर्म खपी दुआ



सिद्ध ॥ चेश्य जिण पडिमा कही जी, सूत्र सिद्धां  
 त प्रसिद्ध ॥ चतुर नर समजो विनय प्रकार, जिम  
 लहियें समकित सार ॥ चतुर० ॥ १५ ॥ धर्म खिमा  
 दिक जांखिउ जी, साधु तेहना रे गेह ॥ आचारय  
 आचारना जी, दायक नायक जेह ॥ चतुर० ॥ १६ ॥  
 उपाध्याय ते शिष्यने जी, सूत्र जणावणहार ॥ प्र  
 वचन संघ वखाणियें जी, दरिसण समकित सार ॥  
 चतुर० ॥ १७ ॥ नक्ति बाह्य प्रतिपत्तिथी जी, हृद  
 य प्रेम बहुमान ॥ गुण शुति अवगुण ठांकवा जी,  
 आशातननी हाण ॥ चतुर० ॥ १८ ॥ पांच जेद ए  
 दश तणो जी, विनय करे अनुकूल ॥ सीचे तेह सु  
 धारसैं जी, धर्म वृद्धनूं मूल ॥ चतुर० ॥ १९ ॥ ढाल  
 ॥ धोबीडा तूं धोये मननूं धोतीयूं रे ॥ ए देशी ॥ त्र  
 ण शुद्धि समकित तणी रे, तिहां पहेली मन शुद्धि  
 रे ॥ श्री-जिनने जिनमत विना रे, जूठ सकल ए  
 बुद्धि रे ॥ चतुर विचारो चित्तमां रे ॥ ए टेक ॥ २० ॥  
 जिन जगतें जे नवि थयुं रे, ते बीजार्थी नवि थाय  
 रे ॥ एवुं जे मुख जांखियें रे, ते वचन शुद्धि कहेवाय  
 रे ॥ चतुर० ॥ २१ ॥ ढेद्यो जेद्यो वेदना रे, जे सहतो  
 अनेक प्रकार रे ॥ जिण विण पर सुर नवि नमे रे,  
 तेहनी काया शुद्ध उदार रे ॥ चतुर० ॥ २२ ॥  
 ॥ ढाल ॥ मुनि जन मारगनी ॥ ए देशी ॥ समकित  
 दूषण परिहरो, तेमां पहिली ठे शंका रे ॥ ते जिनव  
 चनमां मत करो ॥ जेहने सम नृप रंका रे ॥ समकित

दूषण परि हरो ॥ ए टेक ॥ १३ ॥ कंखा कुमतनी  
 वांढना, बीजुं दूषण तजियें ॥ पामी सुरतरु परगडो,  
 किम बाउल नजियें ॥ समकित० ॥ १४ ॥ संशय ध  
 र्मना फल तणो, वितिगिह्वा नामें ॥ त्रीजुं दूषण प  
 रिहरो, निज शुन परिणामें ॥ समकित० ॥ १५ ॥  
 मिथ्यामति गुण वर्णनो, टालो चोथो दोष ॥ जन्मा  
 र्गी शुणतां दुवे, उनमारग पोष ॥ समकित० ॥ १६ ॥  
 पांचमो दोष मिथ्यामति, परिचय नवि कीजें ॥ इम  
 शुन मति अरविंदनी, नली वासना लीजें ॥ सम  
 कित० ॥ १७ ॥ ढाल ॥ जोलीडा हंसा रे विषय न  
 राचीयें ॥ ए देशी ॥ आठ प्रजाविक प्रवचनना कह्यां,  
 पावयणी धुर जाण ॥ वर्तमान श्रुतना जे अर्थनो,  
 पार लहे गुण खाण ॥ धन धन शासन मंमन मुनि  
 वरा ॥ ए टेक ॥ १८ ॥ धर्मकथी ते बीजो जाणीयें,  
 नंदिखेण परि जेह ॥ निज उपदेशे रे रंजे लोकने, जं  
 जे हृदय संदेह ॥ धन धन० ॥ १९ ॥ वादी त्रीजो रे  
 तर्क निपुण नण्यो, मद्धवादि परि जेह ॥ राज द्वारें  
 रे जयकमला वरे, गाजंतो जिम मेह ॥ धन धन०  
 ॥ २० ॥ नइबाहु परें जेह निमित्त कहे, परमत फि  
 पण काज ॥ तेह निमिती रे चोथो जाणीयें, श्री  
 जिनशासन राज ॥ धन धन० ॥ २१ ॥ तप गुण  
 उपर रोपे धर्मने, गोपे नवि जिन आण ॥ आश्रव लो  
 पेरे नविकोपे कदा, पंचम तपसी जाण ॥ धनधन० ॥  
 ॥ २२ ॥ ठो विद्यारे मंत्र तणो बली, जिम श्रीवयर मुणि

द ॥ सिद्ध सातमो रे अंजन योगथी, जिम कालिक मुनि  
 चंद ॥ धन धन० ॥ ३३ ॥ काव्य सुधारस मधुर अ  
 रथ जह्या, धर्म हेतु करे जेह ॥ सिद्धसेनपरें नरपति  
 रीजवे, अछम वर कवि तेह ॥ धन धन० ॥ ३४ ॥ ज  
 व नवि होवे प्रजाविक एहवा, तव विधि पूर्व अने  
 क ॥ जात्रा पूजादिक करणी करे, तेह प्रजाविक ठेक  
 ॥ धन धन० ॥ ३५ ॥ ढाल ॥ सतीय सुजडानी  
 देशी ॥ सोहे समकित जेहथी, सखि जिम आनर  
 एो देह ॥ नूषण पांच ते मन वस्यां, सखी मन व  
 स्यां, तेहमां नही संदेह ॥ मुऊ समकित रंग अचल  
 होयो ॥ ए टेक ॥ ३६ ॥ पहिलुं कुशलपणुं तिहां, स  
 खी वंदन नै पञ्चखाण ॥ किरियानो विधि अति घ  
 णो, सखी आचरे तेह सुजाण ॥ मुऊ० ॥ ३७ ॥ बी  
 जूं तीरथ सेवना, सखी तीरथ तारे जेह ॥ ते गीता  
 रथ मुनिवस, सखी तेहशुं कीजें नेह ॥ मुऊ० ॥ ३८ ॥  
 जक्ति करे गुरुदेवनी, सखी त्रीजुं नूषण होय ॥  
 किएहि चलाव्यो नवि चले, सखि चोथुं नूषण जो  
 य ॥ मुऊ० ॥ ३९ ॥ जिनशासन अनुमोदना, सखी  
 जेहथी बहुजन हुंत ॥ कीजें तेह प्रजावना, सखी  
 पांच नूषणनी खंत ॥ मुऊ० ॥ ४० ॥ ढाल ॥ इम  
 नवि कीजें हो ॥ ए देशी ॥ लहण पांच कह्यां सम  
 कित तणां, धुर उपशम अनुकूल ॥ सुगुण नर ॥ अ  
 पराधीशुं पण नवि चित्तथकी, चिंतवियें प्रतिकूल ॥  
 सुगुण नर ॥ श्रीजिनजाषित वचन विचारियें ॥ ए टेक

॥ ४१ ॥ सुरनर सुख जे दुःख करि लेखवै, वंठे शि  
 वसुख एक ॥ सु० ॥ बीजुं लक्षण ते अंगीकरे, सार  
 संवेगशुंटेक ॥ सु० ॥ श्रीजिन० ॥ ४२ ॥ नारक चा  
 रक समजव ऊजग्यो, तारक जाणिने धर्म ॥ सु० ॥  
 चाहे निकलवुं निर्वेद ते, त्रीजुं लक्षण मर्म ॥ सु० ॥  
 श्रीजिन० ॥ ४३ ॥ इव्यथकी दुःखियानी जे दया,  
 धर्महीणानी नाव ॥ सु० ॥ चोथुं लक्षण अनुकंपा  
 कही, निज शकतें मन व्याव ॥ सु० ॥ श्रीजिन० ॥ ४४ ॥  
 जे जिन जांखुं ते नहि अन्यथा, एहवो जे दृढ रंग  
 ॥ सु० ॥ ते आस्तिकता लक्षण पांचमुं, करे कुमति  
 नो ए जंग ॥ सु० ॥ श्रीजिन० ॥ ४५ ॥ ढालु ॥ जिन  
 जिन प्रति वंदन दिसे ॥ ए देशी ॥ परतीर्थी परना  
 सुर तेणो, चैत्य ग्रह्यां वलि जेह ॥ वंदन प्रमुख ति  
 हां नवि करवुं, ते जयणा षट जेय रे ॥ जविका सम  
 कित यतना कीजें ॥ ए टेक ॥ ४६ ॥ वंदन ते कर  
 जोडन कहियें, नमन ते शीश नमाडे ॥ दान श्रु अ  
 न्नादिक देवुं, गौरव जगति देखाडे रे ॥ जविका० ॥  
 ४७ ॥ अनुप्रदान ते तेहने कहियें, वारवार जे दा  
 न ॥ दोष कुपात्रें पात्रमतियें, नहि अनुकंपा मान  
 रे ॥ जविका० ॥ ४८ ॥ अणबोलावे जेह जांखवुं, ते  
 कहियें आलाप ॥ वारंवार आलाप जे करवो, ते कहियें  
 संलाप रे ॥ जविका० ॥ ४९ ॥ ए जयणाथी, समकि  
 त दीपे, वलि दीपे व्यवहार ॥ एमां पण कारणथी ज  
 यणा, तेना अनेक प्रकार रे ॥ जविका० ॥ ५० ॥ ढा

ल ॥ ललनानी देशी ॥ शुद्ध धरमथी नवि चले, अति  
 दृढ गुण आधार ॥ ललना ॥ तो पण जे नवि तेहवा,  
 तेहने एह आगार ॥ ललना ॥ ५१ ॥ बोळुं तेहवुं  
 पालियें, दंतिदंत सम बोल ॥ ललना ॥ सज्जनना  
 दुर्जन तणा, कष्टप कोटने तोल ॥ ललना ॥ बो०  
 ॥ ५२ ॥ राजा नगरादिक धणी, तस शासन अनियो  
 ग ॥ ललना ॥ तेहथी कार्तिकनी परें, नहि मिथ्या  
 त संयोग ॥ ललना ॥ बो० ॥ ५३ ॥ मेलो जननो  
 घण कह्यो, बल चोरादिक जाण ॥ ललना ॥ खेत्र  
 पाजादिक वेगता, तातादिक गुरु ठाण ॥ ललना ॥  
 बो० ॥ ५४ ॥ वृत्ति दुर्जन आजीविका, ते जीखण  
 कंतार ॥ ललना ॥ ते हेतें दूषण नही, करतां अ  
 न्य आचार ॥ ललना ॥ बो० ॥ ५५ ॥ ढाल ॥ रा  
 ग मल्हार ॥ जावीजें रे समकित जेहथी रूयडूं, ते  
 जावना रे चावो मन करि परवडूं ॥ जो समकित रे  
 ताजुं साजुं मूल रे, तो व्रततरु रे दीये शिवपद अ  
 नुकूल रे ॥ ५६ ॥ त्रुटक ॥ अनुकूल मूल रसाल  
 समकित, तेह विण मति अंध रे ॥ जे करे किरिया  
 गर्व जरिया, तेह जूगो धंध रे ॥ ए प्रथम जावना गु  
 णो रुअडी, सुणो बीजी जावना ॥ बारणूं समकि  
 त धर्मपुरनुं, एहवी ते पावना ॥ ५७ ॥ ढाल ॥ त्री  
 जी जावना रे समकित पीठ जो दृढ सही, तो मोहो  
 टो रे धर्म प्रासाद मगे नही ॥ पाइयें खोटे रे मोहोदुं  
 मंमाण न शोजीयें, तेह कारण रे समकितशुं चित्त

थोनीयें ॥ ५७ ॥ त्रुटक ॥ थोनियें चित्त नित एम  
 जावी, चोथी जावना जावियें ॥ समकित निधान स  
 मस्त गुणनुं, एहवुं मन लावियें ॥ तेह विण बूटा र  
 त्त सरिखा, मूल उत्तर गुण सवे ॥ किम रदे ताके  
 जेह हरवा, चोर जोर नवे नवे ॥ ५८ ॥ ढाल ॥ जा  
 वो पंचमी रे जावना शम दम मार रे, पृथिवी परें रे स  
 मकित तसु आधार रे ॥ ठी जावना रे जाजन सम  
 कित जो मले, श्रुत शीजनो रे तो रस तेहमां नवि ढ  
 ले ॥ ५९ ॥ त्रुटक ॥ नवि ढले समकित जावना रस, अमि  
 य सम संवर तणो ॥ पट जावना एकही एहमां, करो  
 आदर अति घणो ॥ इम जावतां परमार्थ जलनिधि,  
 होय निनु ऊकजोल ए ॥ धन पवन पुण्य प्रमाण प्रगटे,  
 चिदानंद कछोल ए ॥ ६० ॥ ढाल ॥ जे मुनिवेष  
 शके नवि ठंमी ॥ ए देशी ॥ ठरे जिहां समकित ते आ  
 नक, तेहना पट विध कहियें रे ॥ तिहं महेजुं आ  
 नक ठे चेतन, लक्षण आतम लहियें रे ॥ खीर  
 नीर परें पुजलमिश्रित, पण एहथी ठे अलगो रे ॥  
 अनुभव हंस चंच जो लागे, तो नवि दीसे बलगो  
 रे ॥ ६१ ॥ बीजुं थानक नित्य आतमा, जे अनुभूत  
 संनारे रे ॥ बालकने स्तनपान वासना, पूरव नव अ  
 नुसारें रे ॥ देव मनुज नरकादिक तेहना, ठे अनि  
 त पर्याय रे ॥ इव्यथकी अविचलित अखंभित, निज  
 गुण आतमराय रे ॥ ६२ ॥ त्रीजुं थानक चेतन  
 कर्ता, कर्म तणे ठे योगें रे ॥ कुंनकार जिम कुंन त

णो जे, दंभादिक संयोगें रे ॥ निश्चयथी निज गुण  
 नो कर्त्ता, अनुपचरित व्यवहारें रे ॥ इव्यकर्मनो मग  
 रादिकनो, ते उपचार प्रकारें रे ॥ ६४ ॥ चोथुं थानक  
 ठे ते जोक्ता, पुण्य पाप फल केरो रे ॥ व्यवहारें नि  
 श्चय नय दृष्टें, जुंजे निज गुण नेरो रे ॥ पंचम थानक  
 ठे परम पद, अचल अनंत सुख वासो रे ॥ आधि  
 व्याधि तन मनथी लहियें, तसु अजावें सुख खासो रे  
 ॥ ६५ ॥ ठहुं थानक मोक्ष तणुं ठे, संयम ज्ञान उपायो  
 रे ॥ जो सहिजें लहियें तो सघजे, कारण निःफल था  
 यो रे ॥ कहे ज्ञान नय ज्ञानज साधुं, ते विण फूठी कि  
 रिया रे ॥ न लहे रूपूं रूपूं जाणी, शीप जणी जे फरि  
 या रे ॥ ६६ ॥ कहे किरियानय किरिया विण जे, ज्ञान  
 तेह गुं करजो रे ॥ जल पेसी कर पद न हलावे, तारू  
 ते किम तरजो रे ॥ दूषण नूषण ठे इहां बहुलां, नय ए  
 केकने वादें रे ॥ सिद्धांती ते बेहु नय साधे, ज्ञानवंत  
 अप्रमादें रे ॥ ६७ ॥ एणि परें सडशठ बोल विचारी, जे  
 समकित आराहे रे ॥ राग द्वेष टाली मन वाली, ते स  
 म सुख अवगाहे रे ॥ जेहनुं मन समकितमां निश्चल,  
 कोइ नही तस तोले रे ॥ श्री नय विजय विबुध पय  
 सेवक, वाचक जस इम बोले रे ॥ ६८ ॥ इति श्रीस  
 म्यक्तवना सडशठ बोलनी सखाय संपूर्ण ॥

॥ अथ श्रीसुविधिजिन स्तवन प्रारंभः ॥

॥ लागो लागो रे प्रभुगुं नेह, वसीयो हड्डामां ॥  
 महारो साहिबो अतिहि सनेह ॥ वसी० ॥ दर्शन

प्रभुजीनुं देखतां रे, जोतां मुखनी ज्योति रे ॥ डरित  
पमल दूरें कस्यां रे वारी, प्रगढ्यो ज्ञान उद्योत ॥  
॥ वसी० ॥ १ ॥ सूरत मनडामां वसी रे, कागल  
जिम चित्राम रे ॥ रात दिवस सुतां जागतां रे हुंतो,  
नित समहं प्रभुनाम ॥ वसी० ॥ २ ॥ जेहना मन  
मां जे वस्या रे, तेहने तेहहुं नेह रे ॥ मधुकरने  
मन मालती रे जिम, भोर तणे मन मेह ॥ वसी० ॥  
॥ ३ ॥ देव अवर देखी घणा रे, किहां न माने म  
न्न रे ॥ प्रभुगुण सांकलें सांकल्यो रे तेतो, आजोचे  
नही अन्न ॥ वसी० ॥ ४ ॥ साहेव सुविधि जिणं  
दनी रे हुं, चाहुं नवोनव सेव रे ॥ हंसरतन कहे  
माहरे रे कांइ, लागी एहज टेव ॥ वसी० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ केशरियाजीनुं स्तवन ॥

॥ केशरीयासैं लाग्युं मारुं ध्यान रे, बीजुं मुने कांइ  
न गमे ते ॥ के० ॥ नाजिनूप मरुदेवीको-संदन, तुम  
पर जीया खुरवान रे ॥ बीजुं० ॥ केश० ॥ १ ॥ ध  
नुप पांचशें मान मनोहर, काया कंचनवान रे ॥  
॥ बीजुं० ॥ के० ॥ २ ॥ जुगला रे धर्म निवारण  
साहिब, राजेश्वर राजान रे ॥ बीजुं० ॥ केश० ॥  
॥ ३ ॥ रुषनदासकी आशा पूरजो, सेवक अपना  
जान रे ॥ बीजुं० ॥ केश० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीमल्लीनाथजिन स्तवनं ॥

॥ चित्त को न गमे रे चित्त को न गमे, मल्लीनाथ वि  
ना चित्त को न गमे ॥ माता प्रनावती राणीको जायो,



कुंज नृपतिसुत काम दमे ॥ म० ॥ १ ॥ कामकुंज जिम का  
 मित पूरे, कुंजलंठन जिन सहुने गमे ॥ म० ॥ २ ॥ मिथि  
 ला नयरीमें जन्म प्रचुको, दरिसन खो दुःख शमे म० ॥  
 ३ ॥ घेवर नोजन सरसा पिरमे, बाकस बूकस कोन  
 जमे ॥ म० ॥ ४ ॥ नीलवरण प्रचु कांति अंगें, मरक  
 तमणि ठवी दूर जमे ॥ म० ॥ ५ ॥ न्यायसागर प्रचु  
 नक्तनो स्वामी, हरि हर ब्रह्मा कोन नमे ॥ म० ॥ ६ ॥

॥ अथ अयवंती पार्श्व स्तवनं ॥ राग काफी ॥

॥ पंथीडा पंथ चलेगो, प्रचु नज ले दिन चार ॥  
 ॥ पंथी० ॥ क्या ले आया क्या ले जासी, पाप पुण्य  
 दोनुं लार ॥ पंथी० ॥ १ ॥ बालपनो तें तो खेल गमा  
 यो, यौवन माया जाल ॥ पंथी० ॥ बूढापो आयो धर्म न  
 पायो, पीठे करत पुकार ॥ पंथी० ॥ २ ॥ कूटी माया कू  
 ठी काया, फूटो सब परिवार ॥ पंथी० ॥ दया मया कर  
 पास अवंती, अब तेरो आधार ॥ पंथी० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ बलिजन्मुनिनी सखाय ॥

॥ शा माटे बंधव मुखयी न बोलो, आंसुडे आ  
 नन धोतां मुरारी रे ॥ पुण्यजोगें दडियो एक पाणी,  
 जड्यो ठे जंगल जोतां मुरारी रे ॥ शा० ॥ १ ॥  
 ए आंकणी ॥ त्रिकम रीश चढी ठे तुजने, वनमां  
 हे वनमाली मुरारी रे ॥ वडीरे वारनो मनावुं बुं  
 वाला, तुं तो वचन न बोले फरी वाली मुरारी रे  
 ॥ शा० ॥ २ ॥ नगरी रे दाधी ने शुद्ध न लाधी, महारी  
 वाणी निसुण वाला मुरारी रे ॥ आ वेलांमां लीधो

अबोलो, कानजी कां थया काला मुरारी रे ॥  
 शा० ॥ ३ ॥ शी शी वात कहुं शामलीया, विछल  
 जी आ वेला मुरारी रे ॥ शाने काजें मुजने संतापे,  
 हरि हसी बोलोने हेला मुरारी रे ॥ शा० ॥ ४ ॥  
 प्राण महारां जाओ पाणी विण, अध घडीने अण  
 बोले मुरारी रे ॥ आरति सघली जाये अलगी,  
 बांधव जो तुं बोले मुरारी रे ॥ शा० ॥ ५ ॥ पटमा  
 स लगे पाव्यो ठबीलो, हैया उपर अति दितें मु  
 रारी रे ॥ सिंधु तटें सुरने संकेतें, हरि दहन करम  
 चुनरीतें मुरारी रे ॥ शा० ॥ ६ ॥ संयम लइ गयो  
 सुरलोकें, कवि उदयरतन इम बोले मुरारी रे ॥ सं  
 सारमांहि बलदेव मुनिने, कोइ नव आवे तोले  
 मुरारी रे ॥ शा० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ शांतिजिन स्तवनं ॥ प्रभुजी वीरजिणं  
 दने वंदीयें ॥ ए देशी ॥

॥ प्रभुजी शांतिजिणंदने जेटीयें, शांतिरसनो दा  
 तार हो ॥ अचिराना जाया ॥ प्रभुजी शांति जलधर  
 उनह्यो, वरसे जवि वित्त धार हो ॥ अचिरा० ॥  
 ॥ प्रभुजी० ॥ १ ॥ प्रभुजी गजपुर नयर दीपावीयुं, प्र  
 गव्यो ज्ञानदिणंद हो ॥ अ० ॥ प्रभुजी कर्म दल  
 मल चूरवा, समेतगिरि दीपे जिणंद हो ॥ अ० ॥  
 ॥ प्र० ॥ २ ॥ प्रभुजी कर्म कलंक निराकरी, सिद्ध  
 थया निज जाव हो ॥ अ० ॥ प्रभुजी प्रगटावी  
 निज रूपने, अचरिज रूपानाव हो ॥ अ० ॥ प्र० ॥

॥ ३ ॥ प्रभुजी सादि अनंतें थिर रह्या, एक तिहां  
अठे अनेक हो ॥ अ० ॥ प्रभुजी लोकांतें आदि अ  
लोकने, एहवो तिहां विवेक हो ॥ अ० ॥ प्र० ॥  
॥ ४ ॥ प्रभुजी तिहां अपूर्व आनंद लहे, वचन  
अगोचर जेह हो ॥ अ० ॥ प्रभुजी सिद्ध स्वरूपनी  
वानगी, शुद्ध श्रद्धाने जाणो तेह हो ॥ अ० ॥ प्र० ॥  
॥ ५ ॥ प्रभुजी दर्शन लही जिन देवनुं, नावो एहि  
ज नाव हो ॥ अ० ॥ प्रभुजी एहिज नाव अनुसरी,  
नवजल तरवा नाव हो ॥ अ० ॥ प्र० ॥ ६ ॥ प्रभु  
जी एहिज ध्यानें नित रही, चाहीयें शिव सुख राज  
हो ॥ अ० ॥ प्रभुजी श्रीजय जिनवर ध्यानधी, नाय  
क अनुभव काज हो ॥ अ० ॥ प्र० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीमहावीरजिन स्तवनं ॥ गिरूवा रे

॥ गुण तुम तणा ॥ ए देशी ॥

॥ वंदो महावीर जिनेसर राया, माता त्रिशला  
राणीना जाया रे ॥ हरिलंठन कंचन वर काया, अ  
मर वधू हुजराया रे ॥ वंदो० ॥ १ ॥ बालपणे सु  
रगिरि मोलाया, अहि वेताल हराया रे ॥ इंदु कहे  
व्याकरण निपाया, पंमित विस्मय पाया रे ॥ वंदो०  
॥ २ ॥ द्वायिक रुद्धि अनंती पाया, अतिशय अधि  
क सुहाया रे ॥ चार रूप करि धर्म बताया, चउवि  
ह सुर गुण गाया रे ॥ वंदो० ॥ ३ ॥ त्रीश वरस गृ  
हवासें रहिया, संयमशुं दिल लाया रे ॥ बार वरस  
तपि कर्म खपाया, केवलनाण उपाया रे ॥ वंदो०

॥ ४ ॥ तीन जुवनमें आण मनाया, दश दोय ठत्र  
 धराया रे ॥ रूप कनक मणि गढ विरचाया, निरग्रंथ  
 नाम धराया रे ॥ वंदो० ॥ ५ ॥ रयण सिंहासण  
 वेसण ठाया, डुंडुनि नाद बजाया रे ॥ दानव मान  
 व दो सुख पाया, जक्ते शीश नमाया रे ॥ वंदो०  
 ॥ ६ ॥ प्रभु गुण गण गंगाजल नाह्या, पावन तेह  
 नी काया रे ॥ पंक्ति खिमाविजय सुपसाया, सेवक  
 जिन गुण गाया रे ॥ वंदो० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ पुरुषने परस्त्रीलग्नप्राश्रयी शीखामण ॥

॥ सुण चतुर सुजाण, परनारीशुं प्रीति कबू नव  
 कीजियें ॥ ए आंकणी ॥ हारे जेणें परनारीशुं प्रीति करी,  
 तेने हैडे रुंधण आय घणी, जेणें कुल मरजादा कांइ  
 न गणी ॥ सु० ॥ १ ॥ तारी लाज जाशे नात जातमां,  
 तुं तो हलुउ पडीश सहु साथमां, ए धुंआडो न आ  
 वे हाथमां ॥ सु० ॥ २ ॥ हारे सांज पढेरेवि आथ  
 मे, ताहारो जीव जमरानी परें जमे, तुने घरनो धं  
 थों कांइ न गमे ॥ सु० ॥ ३ ॥ हारे तुं जइने मलीश  
 दूतीने, ताहारुं धन लेशे सर्वे धूतीने, पढे रहीश है  
 डुं कूटीने ॥ सु० ॥ ४ ॥ तुंतो बेगो मूढो मरडीने, ताहा  
 रुं कालजुं खाशे करडीने, तारुं मांस लेशे उजरडीने  
 ॥ सु० ॥ ५ ॥ हारे तुने प्रेमना प्याला पाइने, ता  
 हारां वसतर लेशे वाइने, तुने करशे खोखुं खाइ  
 ने ॥ सु० ॥ ६ ॥ हारे तुंतो परमंदिरमां पेसीने, ति  
 हां पारकी सेजें बेसीने, तें जोग कखा घणुं हेंसीने ॥

सु० ॥ ७ ॥ हारे जेम जुयंगथकी मरता रेहवुं,  
 तेम परनारीने परिहरवुं, हारे नवसायर फेरो नवि फर  
 वुं ॥ सु० ॥ ८ ॥ वाला परणो नारीथी प्रीत सारी,  
 ए माथुं वढावे परनारी, तुमें निश्चें जाणजो निरधा  
 री ॥ सु० ॥ ९ ॥ ए सद्गुरु कहे ते साचुं ठे, ता  
 हारी कायानुं सरवे काचुं ठे, एक नाम प्रचुनुं साचुं  
 ठे ॥ सु० ॥ १० ॥ इति शिखामणसंवाय संपूर्ण ॥

॥ अथ महावीरजिनस्तवनं ॥

॥ आज महारे आनंद थयो, प्रेमनां वादल वर  
 श्यां दहाडो सफल थयो ॥ ए आंकणी ॥ सुणो  
 साहेली, वीर जिनेसर जनम्या धन्य दिन आजनो  
 ॥ आज० ॥ १ ॥ तमें सिद्धारथ कुलें आया, तमें त्रि  
 शला माताना जाया, उपन्न दिगकुमरीयें हुजराया ॥  
 आज० ॥ २ ॥ चोशठ इंद्र मली आवे, मेरुशिखर  
 प्रचुने लावें, ए तो सुगंधिजलें करी नवरावे ॥ आज०  
 ॥ ३ ॥ सखी आज महारे घेर दीवाली, महारा प्र  
 चुजी आव्या पोतें चाली, मेंतो उसावी शेव ने सुंहा  
 ली ॥ आज० ॥ ४ ॥ सखी टोली मली मंगल गा  
 वे, ए तो रत्नत्रयीनां सुख पावे ॥ ए तो बार वर्ष ना  
 वना जावे ॥ आज० ॥ ५ ॥ इम कर जोडी सेवक गावे, ए  
 तो अद्भुत पदवीने पावे, शुभ वीर प्रचुजीने परजावें  
 ॥ आज० ॥ ६ ॥ इति श्री महावीरस्तवनं ॥

॥ अथ मनशिद्धानुं पद ॥ कल्याण रागमां ॥

॥ रे मन लोनी तारो कोण पतियारो ॥ रे मन० ॥

आठ गांठको सांगो मीठो, गांठ गांठ रस न्यारो  
॥ रे मन० ॥ १ ॥ ढिनमें और पलकमें दूजो, घडी  
घडी दिलसैं न्यारो ॥ रे मन० ॥ २ ॥ चंचल मन व  
रज्यो नहि माने, प्रजु नव पार उतारो ॥ रे मन० ॥ ३ ॥

॥ अथ वर्द्धमानजिन स्तवनं ॥ राग वेलावल ॥

॥ रे मन क्युं जिन नाम विसाख्यो ॥ क्युं० ॥ रे म  
न० ॥ विषय विकार महाजद थाख्यो, जनम जुग्रा जुं  
हाख्यो ॥ रे मन० ॥ १ ॥ जिने तोकुं नरदेही दीर्ना, गर्न  
की आंच उद्गाख्यो ॥ ता प्रजुजीकुं तें शठ मूरख,  
एक घडी न संजाख्यो ॥ रे मन० ॥ २ ॥ नहिं कबु  
दान शियल तप पूजा, नहिं जिन नाम उच्चाख्यो ॥  
जैनधर्म चिंतामणि सरिखो काच जाण कर माख्यो  
॥ रे मन० ॥ ३ ॥ करु ले सुकृत दया उद्गर ले, जो  
नव चाहत सुधाख्यो ॥ हरखचंद वर्द्धमान जिनेसर,  
अवसर मांहे न संजाख्यो ॥ रे मन० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवनं ॥ तुमरीमां ॥

॥ सहसफणा रे मोरा साहिबा, तेरी सामरी सूर  
तपर वारी जाउं रे ॥ तेरी मधुरी मूरत परवारी जा  
उं रे ॥ सहस० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ तन मन लगन  
लगी एक तोखुं, मेंतो देव अवर नहिं ध्याउं रे ॥ सह  
स० ॥ २ ॥ सफल नइ आज घडीअ हमेरी, मेंतो देखी  
दरस सुख पाउं रे ॥ सहस० ॥ ३ ॥ वदन कमल ढबी  
देखत सुंदर, मेंतो रोम रोम उलसाउं रे ॥ सहस०  
॥ ४ ॥ तुम गुणको कबू पार न आवे, उपमा क्या में ब

ताउं रे ॥ सहस्र ० ॥ ५ ॥ कीर्त्तिसागर कहे जव जव तोरी,  
मोज महिर नित पाउं रे ॥ सहस्र ० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ समेतशिखरस्तवनं ॥

॥ चालो चालो शिखरगिरि जइयें रे ॥ चा ० ॥  
वीश जिणंद मुगतेँ गया ॥ चा ० ॥ ए आंकणी ॥ पा  
लगंजमें सफल बोलाइ, मधुवनमें जइ रहियें रे ॥  
वीश जिणंद ० ॥ १ ॥ आठ मंदिर है श्वेतांबरका, ती  
न दिगम्बरी लहियें रे ॥ वी ० ॥ सीतानालें निर्मल थइनेँ,  
केशर प्याला ग्रहीयें रे ॥ वी ० ॥ २ ॥ विषम पाहाड  
की कुंज गलनमें, शीतलता बहु लहियें रे ॥ वी ० ॥  
पश्चिम आठ पूर्वदिशि वारे, वीश टुंक जिन पद लहियें  
रे ॥ वी ० ॥ ३ ॥ शामलीया पारसको मंदिर, बिच शिख  
रपर सोहियें रे ॥ वी ० ॥ वीश टुंके जिन पूजन करकें,  
नरजव लाहो लहियें रे ॥ वी ० ॥ ४ ॥ उगणीझें इगी  
यारा माहावदि, एकादशी विधु कहीयें रे ॥ वी ० ॥  
संघ सहित यात्रा जइ सफली, विनय नमत गुण गहि  
यें रे ॥ वी ० ॥ ५ ॥ इति शिखरजीनी ॥

॥ अथ श्रीशत्रुंजयस्तवनं ॥ घोलनी देशीमां ॥

॥ शत्रुंजे जइयें ने पावन थइयें, यात्रा नवाणुं क  
रियें रे ॥ चालो शत्रुंजे जइयें ॥ ए आंकणी ॥ मूंगर  
चडतां ने हरखज धरतां, जइने गंजारामां रहियें रे ॥  
चालो ० ॥ १ ॥ सूरज कुंममां देह पखाली, नाइने नि  
र्मल थइयें रे ॥ चालो ० ॥ नीमज कुंममां कलशज जरि  
यें, सोनानी शिरियें वधावो रे ॥ चालो ० ॥ २ ॥ पाना

मंगावोने अंगी रचावो, घणों अबिर चडावो रे ॥ चालो ॥ फूल मंगावोने हार गुंथावो, प्रभुजीने कंठे चढावो रे ॥ चालो ॥ ३ ॥ सुखड केशर चंदन घसावो, नवे अंगें पूजा करावो रे ॥ चालो ॥ अगरउखेवो ने जावना जावो, नीचुं नीचुं शीश नमावो रे ॥ चालो ॥ ४ ॥ वेठा सिंहासण दुकुम चलावे, उपर ठत्र धरावे रे ॥ चालो ॥ खिमाविजय मुनि गुरु सुप साया, रूपन तणा गुण गाया रे ॥ चालो ॥ ५ ॥

॥ अथ श्रीसिद्धाचलस्तवनं ॥

॥ चालो सखी सिद्धाचल जइयें, चालो सखी विमला चल जइयें ॥ के गिरिवर देखी सुख लइयें, के पालिताणे जइ रहियें ॥ चालो ॥ १ ॥ के ए गिरि यात्रायें जे आवे, के नव त्रीजे सिद्धि जावे, के अजरामर पदवी पावे ॥ चालो ॥ २ ॥ के यात्रा नवाणुं करियें, के नवकार लाख खरा गणियें, के नवसागर सहैजें तरियें ॥ चालो ॥ ३ ॥ के ठठ अछम काया कसियें, के मोहराजा सामे धसियें, के वेगें शिवपुरमां वसियें ॥ चालो ॥ ४ ॥ के सर्व तीर्थनो ए राजा, के सूरज कुंढमां जल ताजां, के रोगीया नर होय ते साजा ॥ चालो ॥ ५ ॥ के केशर चंदन घशी घोड़ी, के कस्तूरी बरास जेती, के पूजो सर्व मली टोली ॥ चालो ॥ ६ ॥ के पूजीने जावना जावो, के केवलज्ञान युगल पावो, के जो होये शिवपुरमां जावो ॥ चालो ॥ ७ ॥ के अढार अछोत्तेरा



( १७५ )

वरसैं, के महावदि पंचमीने दिवसैं, के नेट्या श्रीआ  
दीसर उलटैं ॥ चालो० ॥ ७ ॥ के एह उत्तम पदनी  
सेवा, के देजो मुने देवाधिदेवा, के शिवरूपी लखमीने  
सुख मेवा ॥ चालो० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ पद राग कल्याण ॥

॥ मोहे कैसे तारोगे दीन दयाल ॥ मोहे० ॥ तारो  
तो पिया नित तुम तारो, बिन तरवेकूं लीयो संजा  
ल ॥ मोहे० ॥ १ ॥ कंचनको कहा कंचन करवो,  
मलिन कंचन परजाल ॥ मोहे० ॥ कामक्रोध मद ल  
पट रह्यो नित, महा मोहजंजाल ॥ मोहे० ॥ २ ॥  
मोय पापीकूं पावन करवो, बहोत कठीन कृपाल ॥  
मोहे० ॥ मल्लिनाथ प्रभु मोहनी मूरति, रूपचंद गुण  
माल, करत निहाल ॥ मोहे० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ रूपन स्तवनं ॥ राग बिजास चरचरीमां ॥

॥ जाग-जाग मुकुटमणि, नाजिनृपनंदा ॥ जा० ॥  
ए आंकणी ॥ द्वार ठाढे नर अमर सेवा करे, उच्चरे सुख  
जै जै जै नंदा ॥ जा० ॥ १ ॥ कमलदल मुकुल  
मांहि, मधुप रणऊण करता, पिबत प्रीति धर सरस  
मकरंदा ॥ जा० ॥ २ ॥ तिमिरहर सुख करण प्रग  
ट्यो, तरण मागध मधुर धुनी, पढत गुणबंदा ॥  
जा० ॥ ३ ॥ जायो मात मरुदेवी अलिअत तुम जा  
वना, खेले उडंग ज्युं होत आनंदा ॥ जा० ॥ ४ ॥  
विमलगिरि मंमन दुःखविहंमन, कवि महिमराज  
के काटि दुःखफंदा ॥ जा० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीशत्रुंजय स्तुति ॥

॥ श्रीशत्रुंजय गिरि तीरथ सार, गिरिवरमां जेम  
मेरु उदार, ठाकुर राम अपार ॥ मंत्रमांहे नव  
कारज जाणुं, तारामां जेम चंड वखाणुं, जलधर  
मां जल जाणुं ॥ पंखीमांहि जिम उत्तम हंस, कुल  
मांहि जिम रुषननो वंश, तानि तणो जे अंश ॥ द  
मावंतमांहि जिम अरिहंता, तपशूरा मुनिवर महंता,  
शत्रुंजय गिरि गुणवंता ॥ १ ॥ रुषन अजित संनव  
अजिनंदा, सुमतिनाथ सुख पूनमचंदा, पद्म प्रन  
सुख कंदा ॥ श्रीसुपाश्व चंडप्रन सुविधि, शीतल श्रे  
यांस सेवो बहुबुद्धि, वासुपूज्य मति शुद्धि ॥ विम  
ल अनंत जिन धर्म ए शांति, कुंशु अर मद्धि नमुं  
एकांति, मुनि सुव्रत शुद्ध पंथि ॥ नमी पासने वीर  
चोवीश, नेम विना ए जिन त्रेवीश, सिद्धगिरि आव्या  
ईश ॥ २ ॥ नरतराय जिन सार्यें बोले, स्वप्नी शत्रुंजय  
गिरि कोण तोले, जिननुं वचन अमोले ॥ रुषन कहे  
सुणो नरत राय, ठहरी पालता जे नर जाय, पातक  
नूको थाय ॥ पशु पंखी जे इणगिरि आवे, नव त्रीजे  
ते सिद्धज थावे, अजरामर पद पावे ॥ जिनमतमें  
शेत्रुंजो वखाण्यो, ते में आगम दिलमांहि आण्यो,  
सुणतां सुख उर आण्यो ॥ ३ ॥ संघपति नरत नरेसर  
आवे, सोवन तणा प्रासाद करावे, मणिमय मूरति  
ठावे ॥ नाजिराया मरु देवी माता, ब्राह्मी सुंदरी बे  
हिन विख्याता, मूर्ति नवाणुं चाता ॥ गोमुख ने चक्रे

सरी देवी, शत्रुंजय सार करे नित्यमेवी, तपगह्व  
ऊपर हेवी ॥ श्रीविजयसेन सूरेश्वर राया, श्रीविज  
यदेव सूरि प्रणमी पाया, कृष्णदास गुण गाया ॥ ४ ॥

॥ अथ सिद्धगिरिराज स्तवनं ॥

॥ गिरिराजकुं सदा मेरी वंदना, जिनको दर्शन दूर्लभ  
देखी, कीधी कर्म निकंदना रे ॥ गिरि० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥  
विषय कषाय ताप उपशमीयो, जिम मले बावन चंद  
ना रे ॥ गिरि० ॥ २ ॥ धन धन ते दिन कबही रे हो  
शे, थाशे तुम मुख दर्शना रे ॥ गिरि० ॥ ३ ॥ तिहां वि  
शाल जाव पण होवे, जिहां तुज पदकज फरस  
ना रे ॥ गिरि० ॥ ४ ॥ वली वली दरिसन वेहेलुं ल  
हीयें, एहं विरह नित जावना रे ॥ गिरि० ॥ ५ ॥ चित्त  
मांहेथी कबहू न विसारूं, तुम गुण गणनी ध्याव  
ना रे ॥ गिरि० ॥ ६ ॥ जब जब एहिज चित्तमां  
चाहुं, मेरे-छर नही विचारणा रे ॥ गिरि० ॥ ७ ॥ चित्त  
रमे दिन मावतनी परें, बहोरी न होय उत्तारणा  
रे ॥ गिरि० ॥ ८ ॥ ज्ञानविमल प्रभु पूरण कृपाथी,  
सुश्रेणिक बोध सुवासना रे ॥ गिरि० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ कल्याणरागनुं पद ॥

॥ उरनसुं रंग न्यारा न्यारा, तुमसुं रंग करारी हे ॥  
तुं मनमोहन नाथ हमारा, अब तो प्रीति तुमारी  
हे ॥ उ० ॥ १ ॥ योगी होय के कान फडाये, मोटी  
मुझ मारी हे ॥ गोरख कहे तृष्णा नहिं मारी, घर  
घर नमत जिखारी हे ॥ उ० ॥ २ ॥ जंगम आवे

नाद बजावे, आठे तान मिलावे हे ॥ सबका राम स  
 रिखा नही बूग्या, काहेकूं नेख लजावे हे ॥ उ०॥३॥  
 जती दुआ इंडी नहिं जीती, पंचनूत नहिं लीना हे ॥  
 जीव अजीवकूं बूग्या नांही, नेख लेहीकें हीना  
 हे ॥ उ० ॥ ४ ॥ वेद पढ्या ब्राह्मण कहलावे, ब्र  
 ह्मदशा नहिं पाया हे ॥ आत्मतत्त्वको अर्थ न जा  
 न्यो, फोकट जन्म गुमाया हे ॥ उ० ॥ ५ ॥ जंगल  
 जाये नस्म चढाये, जटा वधारी केशा हे ॥ परजव  
 की आशा नहिं मारी, फिरि जैसा का तैसा हे ॥ उ०  
 ॥ ६ ॥ काजी किताब खोल कर बैठा, क्या किताब  
 में देख्या हे ॥ वकरीके गले ठूरी चलावे, क्या देवें  
 गा लेखा है ॥ उ० ॥ ७ ॥ जिने कंचनका महेंज ब  
 नाया, उनकुं पीतल कैसा हे ॥ माखा गलेमें हार हीरे  
 का, सब जुग काच सरीसा हे ॥ उ०॥८॥ रूपचंद रंग  
 मगन जया हे, नाथनिरंजन प्यारा है ॥ जन्म मरनका  
 मर नहिं याकूं, चरण शरण तींहारा है ॥ उ० ॥ ९ ॥

॥ अथ सिद्धाचल स्तवनं ॥

॥ विवेकी विमलाचल वसीयें, तप जप करी का  
 या कसीयें, खोटी मायाथी खसीयें ॥ वि० ॥ वसी  
 उनमारगथी खसीयें ॥ वि० ॥ १ ॥ माया मोहनी  
 यें मोह्यो, कोण राखे रणमां रोयो ॥ आ नरजव ए  
 लें खोयो ॥ वि० ॥ २ ॥ बाललीलायें दुलरायो,  
 जोवन युवतीयें गायो, तोहे तृप्ति नवि पायो ॥  
 वि० ॥ ३ ॥ रमणी गीत विषय राख्यो, मोहनी

( ३७९ )

मदिरायें माच्यो, नव नव वेश करी नाच्यो ॥ वि०  
 ॥ ४ ॥ आगमवाणी समी आशी, नवजलधि मांहि  
 वासी, रोहित मत्स्य समो आशी ॥ वि० ॥ ५ ॥ मो  
 हनी जालने संहारे, आप कुटुंब सकल तारे, वरण  
 वीर्यें ते संसारें ॥ वि० ॥ ६ ॥ संसारें कूडी माया,  
 पंथशिरें पंथी आया ॥ मृग तृष्णा जलने धाया ॥  
 वि० ॥ ७ ॥ नवदव ताप लही आया, पांमव परि  
 कर मुनिराया, शीतल सिद्धाचल ठाया ॥ वि०  
 ॥ ८ ॥ गुरु उपदेश सुणी जावें, संघ देशो देश  
 थी आवे, गिरिवर देखी गुण गावे ॥ वि० ॥ ९ ॥  
 संवत अठार चोराशीर्यें, माघ उज्ज्वल एकादशीर्यें,  
 वांद्या प्रभुजी विमल वसीर्यें ॥ वि० ॥ १० ॥ जात्रा  
 नवाणुं अमें करीर्यें, नव नव पातिकाडां हरियें, ती  
 र्ये विना कहो किम तरीर्यें ॥ वि० ॥ ११ ॥ हंस म  
 युरा इणे ठांमें, चकवा शुक्र पिक परिणामें, दर्शने  
 देवगति पामे ॥ वि० ॥ १२ ॥ शेत्रुंजी नदियें नाइ,  
 कष्टें सुर सानिधदायी, पणसय चाप गुहा ठाइ ॥  
 ॥ वि० ॥ १३ ॥ रयणमय पडिमा पूजे, तेनां पातिका  
 डां धूजे, ते नर सीजे नवे त्रीजे ॥ वि० ॥ १४ ॥ सा  
 सय गिरि रायण पगलां, चतुर्मुख आदें चैत्य जलां,  
 श्रीशुभ वीर नमे सघलां ॥ वि० ॥ १५ ॥ इति ॥

॥ अथ पद राग पंजाबी ॥

॥ खतरा दूर करनां दूर करनां, एक ध्यान साहेबका  
 धरनां ॥ खतरा ॥ १ ॥ जब लग आतम निर्मल करनां,

तब लग जिन अनुसरनां ॥ खतरा० ॥ १ ॥ धन कण  
कंचनकूं क्या करनां, आखर एक दिन मरनां ॥ खत  
रा० ॥ ३ ॥ मोह मिथ्यात माहा मद हरनां, सुमति  
गुपति चित्त धरनां ॥ खतरा० ॥ ४ ॥ संवर जाव स  
दा मन धरनां, आतम दुर्गति हरनां ॥ खतरा० ॥  
॥ ५ ॥ ग्यान उद्योत प्रभु पाये परनां, शिव सुखकूं  
अनुसरनां ॥ खतरा० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ प्रनातिथुं ॥

॥ वाणी हे विशाल, तेरी अगम अगोचरी ॥ द  
शमे द्वार ऐसे, उँकारध्वनि उच्चरी ॥ वा० ॥ १ ॥  
शब्द एक अनेक अर्थ, ब्रूजत हे अक्षरी ॥ चउदराज  
लोकमांहि, धौरधार विस्तरी ॥ वा० ॥ २ ॥ नगर  
मध्ये नदी बहे, नरी लीयो जज्ञ गगरी ॥ मत मतां  
तर ऐसे नये, एक अंग अनुसरी ॥ वा० ॥ ३ ॥ बी  
ज तैसो वृद्ध नयो, बरखा बरखत जुरी ॥ रूपचंद  
आत्म बुद्धि, तैमी समजण परी ॥ वा० ॥ ४ ॥

॥ अथ शत्रुंजय पद ॥

॥ में नेढ्या नानिकुमार, अखीआं सफल नइ ॥  
में नेढ्या० ॥ नेंना सफल नइ ॥ में नेढ्या० ॥ ए आंक  
णी ॥ तीरथ जगमां ठे घणां रे, तेहमां ए ठे सार ॥  
शेत्रुंजा सम तीरथ नही रे, तुरत तरत नवपार ॥ अखी  
यां० ॥ १ ॥ जुगला धर्म निवारिया रे, तीन चुवन  
तुं सार ॥ सोवन वरणी देह ठे रे, वृषज लांठन  
मनोहार ॥ अखीयां० ॥ २ ॥ सोरठ मंमण तुं

( ३९१ )

प्रभु रे, सकल करम करे दूर ॥ केवल लखमी पाम  
वा रे, वंछित लीला पूर ॥ अखीयां० ॥ ३ ॥ गिरि  
वर फरस्यो जावशुं रे, सफल कीयो अवतार ॥ श्री  
जिनहरख पसायथी रे, संघ सदा सुखकार ॥ अ  
खीयां० ॥ ४ ॥ घणा दिवसनी चाह हती रे, देख  
न प्रभु दीदार ॥ रत्नसुंदर पाठक कहे रे, अविचल  
लील अपार ॥ अखीयां० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीशांतिजिन स्तवनं ॥

॥ शांतिकरण प्रभु शांतिजिनेश्वर, शांतिकरण इ  
न कुलमें हो जिनजी, तुं मेरे मनमें, तुं मेरे दिलमें ॥  
ध्यान धरुं पलपलमें हो जिनजी ॥ तुं० ॥ १ ॥  
तुं० ॥ निर्मल ज्योति वदनपर शोजत, निकस्यो ज्युं  
चंद बादलमें ॥ हो जि०॥तुं०॥ जिनरंग कहे प्रभु शांति  
जिनेश्वर, देख्योज्युं देव खलकमें हो ॥ जिन०॥तुं०॥ २ ॥

॥ अथ श्रीसमेतशिखरनुं स्तवन ॥

॥ शिखरजीकी जात्रा क्युं न करे ॥ जाके बंधे  
करमकी रेख ॥ शिखर० ॥ १ ॥ पालगंजमें सफल हो  
त हे, मधुवन पाप टरे ॥ सीतानाल अनोपम सोहे,  
निर्मल नीर नरे ॥ शिखर०॥ २ ॥ वीश ठुक पर वी  
श जिनेसर, मुनिजन ध्यान धरे ॥ कर्म खपावी मु  
गतिकुं पोहोंचे, शिव रमणीकुं वरे ॥ शिखर० ॥ ३ ॥  
इंझादिक सुर नृत्य करत हे, नाना जाव धरे ॥ इंझा  
णी मिली मंगल गावे, मोतीना थाल नरे ॥ शिख  
र० ॥ ४ ॥ मन वच तन करी प्रभुजीकुं ध्यावे, दुर्ग

ति दूर हरे ॥ लक्ष्मीनेन जो जात्रा करियें, ताके का  
ज सरे ॥ शिखर० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवनं ॥ राग काफी ॥

॥ तुमहीं जाके अश्व खेलावो, राउके रीत चलावो  
रे ॥ तु० ॥ हम जोगीसभ जे तप साधे, ते तुम जेद न  
जानो रे ॥ तु० ॥ १ ॥ सग रे कमठ तुं महा तप सा  
धे, तपको जेद न जान्यो रे ॥ तज तापे मन नापे  
नाहीं, कहा तापे अठानो रे ॥ तु० ॥ २ ॥ पन्नग काहे  
कूं अग्नि जलावे, हित चित्त दया न आवे रे ॥ पासप्र  
नु नवकार सुणावे, धरणीधर पद पावे रे ॥ तु० ॥ ३ ॥

॥ अथ स्तवनं ॥ राग कल्याण ॥

॥ ऐसे शेहेर बिच कोन दिवान हे रे ॥ ऐसे० ॥ ॥  
पानीके कोट पवनके कंगरे, दश दरवाजेको मंमान  
हे रे ॥ ऐसे० ॥ १ ॥ इसनगरीमें त्रैवीश तस्कर, नग  
रीकूं करत हेरान हे रे ॥ ऐसे० ॥ २ ॥ प्रजापोकार  
सुनी तब जाग्यो, चेतन राय सुजान हे रे ॥ ऐसे०  
॥ ३ ॥ नाथ निरंजन नक्ति तेरी, हाथमें ज्ञान कवा  
न हे रे ॥ ऐसे० ॥ ४ ॥ रूपचंद कहे तेहने वारो, पे  
लो दुश्मन मान गुमान हे रे ॥ ऐसे० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ वीरजिन आमलक्रीडानुं स्तवन ॥

॥ राग प्रजाती ॥ तथा बेलावल ॥ आदि अंत जानुं  
नही, तुम हो अविनाशी ॥ रामत आमली पीपली,  
खेल करे बिलासी ॥ आदि० ॥ १ ॥ इंदु सनामें  
वेठकें, मुख युं जस बोले ॥ तीन छुवनमें को नही,



प्रनु धीरज तोले ॥ आदि० ॥ १ ॥ वात न मानत  
देव एक, सर्प को वेश बनावे ॥ प्रनु पकरकें मार दे,  
चित्त नाहीं मरावे ॥ आदि० ॥ २ ॥ बालक होइ  
प्रनुशुं रमे, हास्यो खंघ चढावे ॥ बीजत्स होइकें  
बढयो, गगनैं जेइ जावे ॥ आदि० ॥ ४ ॥ हसत  
दयालु देख कें, मुख शुं जस ऋहावे ॥ धन्य धन्य महा  
वीरजी, रूपचंद मन जावे ॥ आदि० ॥ ५ ॥ इति ॥

अथ रूपज्जिन स्तवनं ॥ राग जैरव ॥

॥ उठत प्रजात नाम, जिनजीको गाइयें ॥ उठ० ॥  
नाजिजीके नंदके, चरण चित्त लाइयें ॥ उठ० ॥ १ ॥  
आनंदके कंद, जाकुं पूजत सुरिंद वृंद, एसो जिनरा  
ज ठोड, उरकुं न ध्याइयें ॥ उठ० ॥ २ ॥ जनम  
अयोध्या ठाम, मात मरूदेवा नाम, लंठन वृषज  
जाके, चरण सोहाइयें ॥ उठ० ॥ ३ ॥ पांचशें धनु  
पमान, दीक्षत कनक वान, चोराशी पूरव लाख, आ  
यु स्थिति पाइयें ॥ उठ० ॥ ४ ॥ आदिनाथ आदि  
देव, सुर नरहि सारे सेव, देवनको देव प्रनु, शुन सु  
ख दाइयें ॥ उठ० ॥ ५ ॥ प्रनुको पादारविंद, पूजत  
हरखचंद, मेढो दुःखदंद सुख संपद बढाइयें ॥ ६ ॥

॥ अथ पद ॥ राग विजास ॥

॥ प्रनुजीको दरिसन पायोरी, आज में ॥ प्रनु० ॥  
वंठित पूरण पास चिंतामणि, देखत डुरित गमायो  
री ॥ आज में० ॥ १ ॥ मोहनी मूरत महिमा साग  
र, तीरथ सब जग ठायो री ॥ आ० ॥ जानचंद प्रनु

सकल संघकूं, जय जयकार कहायो री ॥ आ० ॥ ३ ॥

॥ अथ पार्श्वनाथ गीतं ॥ राग काफी ॥

॥ को न गमे चित्त को न गमे, प्रभु पासजी वि  
ना चित्त को न गमे ॥ परम निरंजन देवने मूकी,  
दूषण सहितने कोण जमे ॥ प्रभु० ॥ १ ॥ सुंदर स्व  
टरस जोजन ठांफी, कुत्सित अशनने कोण जमे ॥  
॥ प्रभु० ॥ २ ॥ जे तुऊ आण बिहूणा मानव, मो  
ह नृपतिने केम दमे ॥ प्रभु० ॥ ३ ॥ जे तुऊ पद  
पंकजनें न सेवे, तेह अनंत संसार जमे ॥ प्रभु० ॥  
॥ ४ ॥ जे तुऊ पूजे जाव धरी तस, जव जव संचि  
त छुरित शमे ॥ प्रभु० ॥ ५ ॥ करुणा सागर तुऊ  
विण दूजो, मुऊ अपराधने कोण स्वमे ॥ प्रभु० ॥  
॥ ६ ॥ ध्याने ध्यावे जे कोइ तुऊने, अमृत पदमां  
ते रंगें रमे ॥ प्रभु० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ नेमिजिन स्तवनं ॥ राग काफी ॥

॥ नां करीयें रे नेडो नां करीयें, निगुणाछुं रे नेडो  
नां करियें ॥ अमें रोइ रोइ आंखडीमां नीर  
जरीयें जी ॥ निगुणा० ॥ प्रेम निरवहि वाढ्हा  
प्रेमी जननो, अविचाछुं नवि मग जरीयें जी ॥  
॥ निगुणा० ॥ १ ॥ जादव जान सजीने यडुपति,  
तोरण आवीने केम फरियें जी ॥ निगुणा० ॥ २ ॥  
संयम नारी वाढ्हे कीधी प्यारी, राजुल मूकी जर  
दरीयें जी ॥ निगुणा० ॥ ३ ॥ अम अबलानी सा  
हामुं निरखो, विरह जलधिथी केम तरीयें जी ॥

॥ निगुणा० ॥ ४ ॥ यौवन वय केम करी निर्गमियें,  
लोकलाजथी घणुं मरियें जी ॥ निगुणा० ॥ ५ ॥  
दिलरंजन प्रभु दीलमां धरीयें, निशदिन अवटार्ई म  
रीयें जी ॥ निगुणा० ॥ ६ ॥ चतुर थइ अवसर गुं  
चूको, अमृतसुख रंगें वरीयें जी ॥ निगुणा० ॥ ७ ॥

॥ अथ धर्मजिननुं स्तवन ॥

॥ इम करीयें रें नेडो इम करीयें रें, सुगुणागुं  
नेडो इम करीयें ॥ हारे चित्त अटक्युं प्रजुनी चाकरी  
यें, जिम जवसायर सुखथी तरियें रे ॥ जिनजीगुं  
नेडो इम करीयें ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ एकने मूकी  
बेने खंमी, त्रणनो संग ते परिहरियें रे ॥ सु० ॥ चार  
जणा शिर चोट करीने, पांचनी सेवा अनुसरीयें रे  
॥ सु० ॥ २ ॥ ठ सत अठ नव दशने ठंमी, एकादश  
दिलमां धरीयें रे ॥ सु० ॥ बारनो आदर करीयें  
अहोनिश, तेरथी मनमां घणुं मरियें रे ॥ सु० ॥  
॥ ३ ॥ पांच आठ नव दश तेरने, बांधी नाखीयें  
जर दरीयें रे ॥ सु० ॥ सत्यावीशनो संग करीने, पञ्च  
वीशनी प्रीतें ठरीयें रे ॥ सु० ॥ ४ ॥ बत्रोश तेत्रोश  
चोराशी उंगणीश, टाली चारथी नवि फरीएं रे ॥  
॥ सु० ॥ सुडतालीशथी दूरें रहीयें, एकावन मनमां  
जरीयें रे ॥ सु० ॥ ५ ॥ वीशने सेवी बावीश बांधी,  
त्रेवीशथी निशदिन लरीयें रे ॥ सु० ॥ धर्म प्रभुगुं  
स्नेह करंतां, अमृत सुख रंगें वरीयें रे ॥ सु० ॥ ६ ॥

॥ अथ मन नमरानी वैराग्य सखाय ॥

॥ जूलो मन नमरा कांइ जमे, जमे दिवसने रात ॥  
 मायानो बांध्यो प्राणीयो जमे परिमल जात । जू० ॥  
 ॥ १ ॥ कुंज काचो काया कारमी, तेहनां करो रे  
 जतन्न ॥ विणसंतां वार लागे नहीं, निर्मल राखो  
 रे मन्न ॥ जू० ॥ २ ॥ कोनां ठोरू कोनां वाठरू,  
 कोनां मायने बाप ॥ पाणी जावुं ठे एकलुं, साथें  
 पुण्यने पाप ॥ जू० ॥ ३ ॥ अशा ते मुंगर जेवडी,  
 मरवुं पगलां रे हेठ ॥ धन संची संची कां मरो, करवी  
 देवनी वेठ ॥ जू० ॥ ४ ॥ धंधो करी धन जोडीयुं,  
 लाखा उपर क्रोड ॥ मरणनी वेला मानवी, लीयो  
 कणदोरो ठोड ॥ जू० ॥ ५ ॥ मूरख कहे धन माह  
 रुं, धोखें धान्य न खाय ॥ वस्त्र विना जइ पोढरी,  
 लखपति लाकडा मांय ॥ जू० ॥ ६ ॥ नवसागर दुःख  
 जल नखो, तरवो ठे रे तेह ॥ विचमां जय सबजो  
 अठे, कर्म वायने मेह ॥ जू० ॥ ७ ॥ लखपति ठत्र  
 पति सब गये, गये लाख वे लाख ॥ गर्व करी गोखें  
 बेसतां, जये जली बली राख ॥ जू० ॥ ८ ॥ धमण  
 धूखंती रे रहि गई, बुज गइ लाल अंगार ॥ एरणको  
 ठबको मिट्यो, उठ चढ्यो रे लुहार ॥ जू० ॥ ९ ॥  
 ऊवट मारग नदी चालतां, जावुं पहेले रे पार ॥  
 आगल नहि हट वाणीयो, संबल लेजो रे सार ॥  
 ॥ जू० ॥ १० ॥ परदेशी परदेशमें, कोणचुं करो रे  
 सनेह ॥ आया कागल उठ चढ्या, न गणे आंधी ने

मेह ॥ जू० ॥ ११ ॥ केइ चाब्या रे केइ चालरो, केइ  
चालण हार ॥ केइ बेग बूढा बापडा, जाए नरक  
मजार ॥ जू० ॥ १२ ॥ जिण घर नोबत वाजती,  
हुता ठत्रीरो राग ॥ ते मंदिर खाली पड्यां, बेठण  
लागा ठे काग ॥ जू० ॥ १३ ॥ जमरो आव्यो रे कम  
लमां, लेवा कमलनुं फूल ॥ कमलनी वांढायें मांहे  
रह्यो, जेम आथमते सूर ॥ जू० ॥ १४ ॥ महमद  
कहे वस्तु वोरियें, जे कोइ आवे रे साथ ॥ आपणो  
लान उगारीयें, लेखुं साहिब हाथ ॥ जू० ॥ १५ ॥

॥ अथ अरिहंत स्तुति प्रारंभः ॥

॥ श्री अरिहंत नमीजें. चतुरनर ! श्री अरिहंत  
नमीजें ॥ ए आंकणी ॥ बारस गुणशोभित जगमो  
हित, सुर नर नमित कहीजें ॥ अतिशय चार प्रथ  
म बली आठे, प्रातिहार जस लहीजें ॥ च० ॥  
श्री० ॥ १-५ ॥ चार सहज एकादश स्वाधिक, उगणी  
श दैव्य ग्रहीजें ॥ उत्तर अतिशय चोत्रीश पांत्रीश,  
वाणी समीप रहीजें ॥ च० ॥ श्री० ॥ २ ॥ तीर्थक  
र पद जोगी सयोगी, गुणगणे प्रणमीजें ॥ नावस्व  
रूप रमण अनिलाष्यो, तेहनी आण बहीजें ॥ च०  
॥ श्री० ॥ ३ ॥ इत्यर्हतां स्तुतिः समाप्ता ॥

॥ अथ अर्तींद्रिय स्वरूपसिद्धस्तुति प्रारंभः ॥

॥ परमेष्ठी आराधी सुगुणिजन ! परमेष्ठी आरा  
धी ॥ शिव अविचल अरु जानत पदवी, अद्भुत अ  
व्याबाधी ॥ अपुनर्नव सिद्धि गति सुख पूरण, ठाण

( १९८ )

संपत्ति अबाधी ॥ सुगुण ॥ पर ॥ १ ॥ दर्शन ज्ञान  
वीरिय सुख संपद, अनंत चतुष्ट निरुपाधि ॥ तस  
जावादि निखेप नजनथी, थाए स्वरूप समाधि ॥  
सुगुण ॥ पर ॥ १ ॥ इत्यतींद्रिय स्वरूपस्तुतिः समाप्ता ॥

॥ अथ आचार्योपाध्यायाऽनगाराणां ॥

॥ युगपत्स्तुति प्रारंभः ॥

॥ आचारिज पदसेवा, चहत मन ! आचारिज प  
दसेवा ॥ सुरपति सेवित त्रिपदी अन्यासें, शीश धरे  
वासखेवा ॥ तीर्थंकर देवतंद विराजित गणधर दे  
शना देवा ॥ च ॥ आ ॥ १ ॥ अंग दुवादश च  
उदश पूरव, मुहूर्त्तमांहे करेवा ॥ उपगारी उवजाय  
मुनिने, अंग उपांग धरेवा ॥ च ॥ आ ॥ २ ॥  
निजगुण अधिक उपासक चारो, सिद्धि अनीह क  
हेवा ॥ जाव स्वरूपचंड जिम उल्लसे, सिद्धिरमण  
सुख मेवा ॥ च ॥ आ ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ आत्मगुण स्तवन प्रारंभः ॥

॥ आत्मगुण अजितारख्यो, अनुजवी ! आत्मगु  
ण अजितारख्यो ॥ दर्शन ज्ञान चारित्र तपोगुण, वी  
रज उपयोग दारख्यो ॥ पुजल गंधादिकथी अलगो,  
श्री जिनराजें नारख्यो ॥ अनुजवी ॥ आ ॥ १ ॥  
तेहनं लक्षण मूलचेतनता, पुजल जड गुण आख्यो ॥  
जिनमत शुद्धस्वरूप उल्लासें, स्वगुण रमण रस चा  
ख्यो ॥ अनुजवी ॥ आ ॥ १ ॥ इत्यात्मगुणस्तुतिः ॥

( १९९ )

॥ अथ सुपार्श्वजिन स्तवन प्रारंभः ॥

॥ रातडीआ रमीने रे किहां थकी आविया ॥

॥ रे ॥ ए देशी ठे ॥

॥ मुऊ मन नमरो प्रभुगुण फूलडे रे ॥ रमण करे दि  
नरात रे ॥ सुणजो स्वामि सुपास सोहामणा रे ॥ क  
र जोडी कहुं वात रे ॥ १ ॥ मनहुं ते चाहे रे, प्र  
भु मजवा नणी रे, पण दोसे ठे अंतराय रे ॥ जी  
व प्रमादी रे कर्म तणे वजों रे, ते केम मलवुं थाय  
रे ॥ म० ॥ २ ॥ लाख चोराशी जीवा योनिमां रे,  
जव अटवी गति चार रे ॥ काल अनादि अनंत नमतां  
थकां रे, किमही न आवे पार रे ॥ म० ॥ ३ ॥  
मारग बतावो रे साहेब माहेरा रे, जेम आवुं तु  
म पाय रे ॥ लाज वधारो रे सेवक जाणीने रे, द्यो  
दरिसण जिनगय रे ॥ म० ॥ ४ ॥ मूर्ति ताहारी रूपें  
रूअडी रे; अनुभवपद दातार रे ॥ नित्यलाज प्रभु  
शुं प्रेमें वीनवे रे, तुमथी लहुं सुखसार रे ॥ म० ॥ ५ ॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवनं ॥

॥ रायजी अमें तो हिंडुवाणी के, राज गराशी ॥

॥ या रे लो के ॥ ए देशी ठे ॥

॥ जिनजी गोडीमंफण पास के, विनति सांनलो  
रे लो ॥ जिनजी अरज करुं सुविलास के, मूकी आ  
मलो रे लो ॥ जिनजी तुम दर्शनने काज के, जीव  
डो टलवले रे लो ॥ जिनजी महेर करो माहाराज के,  
आशा सवि फले रे लो ॥ १ ॥ जिनजी मननमरो

ललचाय के, प्रभुनी उलंगें रे लो ॥ जिनजी जेम ते  
 म मैलो थाय के, ते करजो वगें रे लो ॥ जिनजी दूरथ  
 कां पण नेह के, साचो मानजो रे लो ॥ जिनजी तुम  
 थी लहुं गुणगेह के, अमृत पानजो रे लो ॥ १॥ जि  
 नजी प्रभुछुं बांध्यो प्रेम के, ते केम तीसरे रे लो ॥  
 जिनजी बीजे जावा नियम के, प्रभुथी दिल ठरे रे  
 लो ॥ जिनजी जोतां ताहारुं रूप के, अनुभव सांच  
 रे रे लो ॥ जिनजी ताहरी ज्योति अनूप के, चिंता दुःख  
 हरे रे लो ॥ ३ ॥ जिनजी एतुं नोजन खाय, मिठाईनी  
 लाजचें रे लो ॥ जिनजी आत्मने हित थाय के, प्रभु  
 ना गुण रुचे रे लो ॥ जिनजी कर्म तणां बज जोर  
 के, तेहथी तारियें रे लो ॥ जिनजी समकेतना जे जो  
 र के, तेहने वारियें रे लो ॥ ४ ॥ जिनजी निज सेव  
 क जाणीने, मुक्ति बतावीयें रे लो ॥ जिनजी करुणा  
 रस आणीने, मनमां लावीयें रे लो ॥ जिनजी वाच  
 क सहज सुंदरनो, सेवक एम कहे रे लो ॥ जिनजी  
 पंमित श्रीनित्यलाज के, प्रभुथी सुख लहे रे ॥ ५ ॥

॥ अथ श्री श्रेयांसजिनस्तवनं ॥

॥ रंगिले आतमा ॥ ए देशी ॥ सहेर बडा संसा  
 रका, दरवाजे जसु चार ॥ रंगिले आतमा ॥ चोराशी  
 लख घर वसे, अति महोटे विस्तार ॥ रं० ॥ १ ॥  
 घरघरमें नाटक बने, मोह नचावण हार ॥ रं० ॥  
 वेश बने केई जांतके, देखत देखनहार ॥ रं० ॥  
 ॥ २ ॥ चउद राजके चोकमें, नाटक विविध प्रकार ॥



रं० ॥ नमरी दे३ दे३ करती थेई, फिर फिर ए अधि  
कार ॥ रं० ॥ ३ ॥ नाचत नाद अनादिको, हुं नाच्यो  
निरधार ॥ रं० ॥ श्रीश्रेयांस कृपा करो, आनंदके  
आधार ॥ रंगी० ॥ ४ ॥ इति श्रेयांसजिन स्तवनं ॥

॥ अथ उपदेश पद ॥

॥ में हुं मुसाफर आया हो प्यारा, नहिं कोइ  
मेरा ॥ नहिं० ॥ जनम दुवा तव अपना कहावे,  
नहिं रहेणोंका मेरा हो प्यारा ॥ नहिं० ॥ १ ॥ स  
जन कुटुंब सब अपना कहावे, ज्युं तीरथका मेला  
हो प्यारा ॥ नहिं० ॥ २ ॥ धन कंचन कबु स्थिर  
नहिं रेणां, ज्युं बादलका घेरा हो प्यारा ॥ नहिं० ॥  
॥ ३ ॥ रूपचंद कहे प्रेमकी बातां, ज्युं घानीका फेरा  
हो प्यारा ॥ नहिं० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ प्रजाती रागमां पद ॥

॥ जोबनीयांनी मोजां फोजां, जाय नगरां देती  
रे ॥ घडि घडिनां घडियालां वागे, तोय न जागे  
तेथी रे ॥ जो० ॥ १ ॥ जरा राहसी जोर करे ठे, फे  
लावी फजेती रे ॥ आवी अवधें उजरो जागे, लख  
पतिने छेती रे ॥ जो० ॥ २ ॥ मालें बेठो मोज करे  
ठे, खातें जूवे खेती रे ॥ जमरो नमरो ताणी छेरो,  
गोफण गोलासेंती रे ॥ जो० ॥ ३ ॥ जम राजाने  
शरणे जावुं, जोरालो कोइ जेहथी रे ॥ डुनियां दूजो  
दीसे नाहिं, आखर तरशो तेहथी रे ॥ जो० ॥ ४ ॥ दां  
त पड्याने मोसो थयो, काज न सखुं कहेथी रे ॥ उदय

( ३०१ )

रत्न कहे आपें समजो, कहियें वातो केती रे ॥ ज० ॥ ५ ॥

॥ अथ शांतिनाथ स्तवन प्रारंभः ॥

॥ शांति जिणंद सुखकारी, सकलजन ! शांति  
जिणंद सुखकारी ॥ स्वस्तिश्री रुद्रि वृद्धि जयंकर,  
मंगलान्युदयविहारी ॥ स० ॥ शां० ॥ १ ॥ संपूजि  
त गढ तीन मनोहर प्राणिहारज सहचारी ॥ वृद्ध  
अशोक परम मुददाता, कुमुमवृष्टि वरधारी ॥ स० ॥  
॥ शां० ॥ २ ॥ दिव्यध्वनि चउविध वाजित्रसुर, यो  
जनमान उदारी ॥ चिहुं दिशि चमर ठत्र त्रिहु शो  
नित, सिंहासन पदसारी ॥ स० ॥ शां० ॥ ३ ॥ ना  
मंमल रवि कोटि विजंता, उंडुनिध्वनि बलिदारी ॥  
ऐसी सजामें श्री जिनसेवा स्वरूपचंद मन प्यारी  
॥ स० ॥ शां० ॥ ४ ॥ इति श्री शांतिनाथ स्तवनम् ॥

॥ अथ सीमंधर स्तवन प्रारंभः ॥

॥ चित्तहुं संदेशो मोकले, महारा बाबूहा जीरे ॥  
मनडा सार्थे रे नेह, जश्ने कहेजो महारा स्वामी  
जीरे ॥ सीमंधर नित्य हुं जपुं, महारा स्वामी जीरे ॥  
जेम बापईयो रे मेह ॥ ज० ॥ म० ॥ १ ॥ दूर दे  
शांतर जइ रह्या ॥ म० ॥ मायां लगाडीने हेव ॥  
॥ ज० ॥ म० ॥ पांखडी जो महारे होवे ॥ म० ॥  
ऊमी आबुं ततखेव ॥ ज० ॥ म० ॥ २ ॥ प्रीत ते  
अधिकी होइ गई ॥ म० ॥ हवे केम ठांमी रे जाय  
॥ ज० ॥ म० ॥ उत्तम जनशुं प्रीतडी ॥ म० ॥ क  
दीय न उंठी रे थाय ॥ ज० ॥ म० ॥ ३ ॥ निःस्नेही

( ३०३ )

तुम सारिखा ॥म०॥ मेंतो कोई न दीठ ॥ज०॥म०॥  
हड्डामां चाहे नहिं ॥ म० ॥ मोढे बोले ते मीठ  
॥ ज० ॥ म० ॥ ४ ॥ आशा तो तुम उपरें ॥ म० ॥  
मेरु समान में कीथ ॥ ज० ॥ म० ॥ जो कृण एक  
कृपा करो ॥ म० ॥ तो सहु होवे रे सिद्ध ॥ ज० ॥  
॥ म० ॥ ५ ॥ जे अक्य सुख शाश्वतां ॥ म० ॥  
जे सहु चाहे रे लोक ॥ ज० ॥ म० ॥ नहिं आपो  
माग्युं थकुं ॥ म० ॥ जाणपणुं सहु फोक ॥ ज० ॥  
॥ म० ॥ ६ ॥ घणुं शुं कहियें जाणने ॥ म० ॥  
देजो स्वामीरे सेव ॥ ज० ॥ म० ॥ कवि ते रूप प  
सायथी ॥ म०॥ रुद्रि कहे नित्यमेव ॥ ज०॥ म०॥ ७॥

॥ अथ शान्तिजिन स्तवनं ॥

॥ शान्ति जिणंद नृजो सदा, नवियण बहु जावें ॥  
जगत शिरोमणि जेहना, गुण ज्ञानी गावे ॥ शां० ॥  
॥ १ ॥ दूषण कांई न देखियें, मूरती अतिसारी ॥  
मोहनगारी मुक्त मनें, प्रभु लागे प्यारी ॥ शां० ॥  
॥ २ ॥ गर्जथकां पण गजपुरें, करुणा जिणे कीथी ॥  
जनम समय त्रण जगतमें, दील शाता दीथी ॥ शां० ॥  
॥ ३ ॥ नाम जपे मुख निरखीनें, होए खुशियाली ॥  
मंगलमाला मंदिरें, दिन दिन दीवाली ॥ शां०॥ ४ ॥  
समकितधारी समजीने, साचे दिल सेवे ॥ कहे ला  
वण्य कृपा करी, बहु दोलत घर देवे ॥ शां० ॥ ५ ॥

॥ अथ बालचंद बत्रीश प्रारंभः ॥

॥ कवित ॥ अजर अमर पद परमेसरकों ध्याइ

यें ॥ सकल पातक हर विमल केवल धर, जाको  
 वासो शिवपुर तासुं लय लाइयें ॥ नाद बिंद रूप  
 रंग पाणि पाद उत्तमंग आदि अंत मध्यजंग जाकूं  
 नाहिं पाइयें ॥ संघेण संगण जाण, नहिं कोई अनु  
 मान, ताहींको करत ध्यान शिवपुर जाइयें ॥ नणे  
 मुनि बालचंद सुनो हो भविक वृंद, अजर अमर पद  
 परमेसरकों ध्याइयें ॥ १ ॥ एक अरिहंत देव देव  
 करि जानियें ॥ जाकों क्रोध नाहिं मूर मान माया  
 लोन दूर, कर्म किये चकचूर जिने मोह नाणीयें ॥  
 जाकों नमे इंद चंद सुरनर मुनि वृंद, अनंत गुणहिं जि  
 एंद त्रिचुवन मानियें ॥ जाकों हे अनंत ज्ञान देव हे  
 मुगति दान, अहोनिश ताको ध्यान मनमांहि आ  
 नियें ॥ नणे मुनि० ॥ एक० ॥ २ ॥ तरन तारन  
 गुरु तारे जव पार ए ॥ पांचे इंडी संवरत नव  
 विधि ब्रह्मव्रत, धरत तजत नित क्रोधादिक चा  
 र ए ॥ महाव्रत पंच बार पाले हे पंच आचा  
 र, सुमति गूढति सार, माता जयकार ए ॥ एमे  
 गुने गुरु होय खट काय पाले जोय, गौतम उप  
 म सोय मुगति दातार ए ॥ नणे० ॥ तरन०  
 ॥ ३ ॥ जग एक जीव दया धर्म सुख दाइए ॥  
 धर्महितें रुद्धि वृद्धि धर्महितें नवनिधि, धर्मतें  
 सकल सिद्धि बहु जीव पाइए ॥ धर्महितें देव  
 लोक धर्महितें सब शोक, यह लोक परलोक धर  
 मही सखाइए ॥ ताकूं नमे सुरवर नरवर बहू पर,

धर्महिंसुं जेण नर एक लय लाइएँ ॥ नणो० ॥  
 जग० ॥ ४ ॥ उठ उठ धर्म कर सोवे मूढ कहा रे ॥  
 उत्तर सागर तर कोइ तट पायकर, सोवे तिहां निं  
 द जर फिरि आवे उहां रे ॥ संसार सागरमांहिं जाको  
 आदि अंत नांहिं, च्रमत च्रम ताहिं पुदगल जिहां  
 रे ॥ कांतो हे मानव जब नीठ मूढ पायो अब, सोवे  
 मति खीन लव चेत चेत इहां रे ॥ नणो० ॥ उठ०  
 ॥ ५ ॥ सुरतरु काट कर आक वावे तेह रे ॥ चिंता  
 मणि पाय कर मूढ ताकुं परहर, काच ग्रहे रंगजर ता  
 सों करे नहरे ॥ गजपति बेच कर सोतो मूढ लेत  
 खर, पावे नहिं फेर फेर मुह परें खेह रे ॥ महामूढ  
 होत सोधं काम जोग रक्त होय, हारे हे रतन जोय  
 मनुष्यको देह रे ॥ नणो० ॥ सुरतरु० ॥ ६ ॥ उत्तम  
 को संग कर नीच संग टालकें ॥ देखो हो सागर  
 संग खारी-होत महा गंग, निंब ज्युं चंदन संग चंदन  
 ज्युं नालकें ॥ जातें खीर होत नीर ताकुं मिले जसु  
 वीर, सोनी बेठ जात खीर निजगुण गालकें ॥ पात्र  
 बिन तारे वार टाले रक्तको विकार, तुंब जेद जये  
 चार निन्न संग चालकें ॥ नणो० ॥ उत्तमको० ॥ ७ ॥  
 घडी घडी मूढ तेरो आयुजल जाइयें ॥ कारमो कुटंब  
 एह, काहेकुं करत नेह, हारे हे मनुष्यदेह फेर कहां  
 पाइयें ॥ माय ताय घर बार बेटा बहू परीवार, आवे  
 नहिं तोरी लार, जासों मन लाइयें ॥ एक मेरी सी  
 ख सुन धर्म कर एक मन मानव जब रतन काये

कों गमाइयें ॥ जणे० ॥ घडी० ॥ ८ ॥ उनमत कहा  
 जयो करे क्युं न ग्यान रे ॥ उपनो तुं गर्जवास  
 बसियो सवा नवमास, नर्ककी उपम जास दुःख अ  
 हिठाण रे ॥ उंठ कोडी सोइ होम चांपे कोइ रोम  
 रोम, आठ गुणो प्रतिलोम गर्ज दुःख जाण रे ॥ अ  
 ब तुं जनम पाय संसारको लागो वाय, फेर रह्यो  
 क्यो लुजाय तुं तो हे अग्यान रे ॥ जणे० ॥ उन  
 मत० ॥ ९ ॥ जरा दूर जब लगें तब लगें जग रे ॥  
 जरा जब आय लग लाल परें मुख मग, दंत गये  
 सबे जग मग मग पग रे ॥ जरा आइ गइ बुद्धि रही  
 नही कबु बुद्धि, रोग लगे वीध वीध जरा पडो धीग  
 रे ॥ कह्यो कोइ माने नाहिं दुःख धरे मनमांहि, यो  
 वनको दीस जाहि उठी धर्म लग रे ॥ जणे० ॥ जरा०  
 ॥ १० ॥ यमको विसास नाहिं मूढ तुं संजाल रे ॥ काइ नू  
 लो देख जाल चेतें क्यो न प्रानी लाल, गहेगो दुर्ज  
 न काल बालही गोपाल रे ॥ सरग पाताल जाय  
 औषध जेषध स्वाय, करे बहूही उपाय तोही ग्रहे  
 काल रे ॥ घटत घटत जात पल घडी दिनरात, आ  
 उखो गलत घात करत जंजाल रे ॥ जणे० ॥ यम०  
 ॥ ११ ॥ संसार असार तामें सार एक धर्म रे ॥ सं  
 सार असार एह दीसत प्रजात जेह, सांज समे नां  
 हीं तेह कांहिं पड्यो नर्मरे ॥ मेरो मेरो कांहिं करे सगो  
 नांहिं कोइ तेरे, जीवही एकीलो फिरे जुंजे नीज कर्म  
 रे ॥ संसारसागर घोर नम्यो जीव ठोर ठोर, कोइ

होत एक ठोर कबु नांहिं शर्म रे ॥ नणे० ॥ सं  
 सार० ॥ १२ ॥ आपसम राखो प्राणीहिंसा दूर टालकें ॥  
 हिंसा हे अनर्थखान हिंसा तिहां पाप जान, जीव हिं  
 सा ठोड प्राण राग द्वेष टालकें ॥ हिंसाहीतें रोग शो  
 ग खान पान हीन जोग, बहु दुःख सहे लोग हिंसा  
 हितें नालकें ॥ सुनूम चक्रवर्त देखो जमदग्नि पूत,  
 सातमी नरग पत्त हिंसा पंथ चालकें ॥ नणे० ॥  
 आपसम० ॥ १३ ॥ अजे दान खट काय जीवनकुं  
 दीजीयें ॥ अजेदान बडो धर्म टाले हे दुःकृत कर्म,  
 ओर हे मिथ्यात नर्म काहेकुंज कीजियें ॥ शरणें रा  
 ख्यो पारापति मेघरथ नरपति, सिंचानेकुं कहे व्रत्ति मेरो  
 मांस लीजियें ॥ अजेदान दियो तिन्न चक्रवर्त्ति दुवो  
 जिन्न, शांति नाथ दिन्नदिन्न त्रिचुवन पूजियें ॥ न  
 णे० ॥ अजे० ॥ १४ ॥ काहेकों बोलत हे तुं जूठ  
 निराताल रे ॥ जूठ नांखे महाडुष्ट पापहीकों करे  
 पुष्ट, लोक सहू करे खष्ट तुंतो हे लबाड रे ॥ जूठा  
 बोलो कहे लोय माने न वचन कोय, तिरियंच होत  
 सोय आगम संजाल रे ॥ देखो राजा वसुजोल मी  
 सर वचन बोल, सातमी नरक घोर गयो करी काल  
 रे ॥ नणे० ॥ काहेकों० ॥ १५ ॥ विमल वचन सत्य  
 सहू सुखकार हे ॥ विमल वचन नम्र सुखदायी सहू  
 जन्न, जिनकी सुनत कन्न अमृतकी धार हे ॥ सिद्ध  
 जे साधक नर ताकी विद्या सिद्ध कर, सुसेवित मुनि  
 वर सत्य जग सार हे ॥ सत्यतें पावक जल महो

दधि होत थल, डष्ट विष विषधर (अमृत अपार हे)  
 सबहींकी खार हे ॥ जणे० ॥ विमल० ॥ १६ ॥ चोरी  
 करो कोइ मन चोरीतें विनाश रे ॥ चोरीतें ले राजा  
 दंभ मार करे शन खंभ, गधे चाडे शिर मुंभ फेरवत  
 तास रे ॥ मार मार कहे जन आरत करत मन्न,  
 राजा जाणे ततखिन्न दे गलफांस रे ॥ देखो हो अचं  
 ग सेन चोरी बंध पायो जेन, कुटुंबसहित तेन कि  
 यो नरकावास रे ॥ जणे० ॥ चोरी० ॥ १७ ॥  
 पाइयें अमरपद दत्तव्रत पालतें ॥ देखो ज्युं अंबड  
 सीस संख्या बीस पांतरीन, जेठ मास एक दीस पंथ  
 शिर चालतें ॥ तृषा लागी परिव्रज पियो, नांहि गंग  
 जल, व्रत पाव्यो निरमल दूषणके टालतें ॥ सत मय  
 काल कर दुआ महर्षिक सुर, सुख लाजे इनपर आ  
 गम संजालतें ॥ जणे० ॥ पाइयें० ॥ १८ ॥ म म कर  
 म म कर परनारी संग रे ॥ परनारी देख कर कटाक्ष  
 नयन नर, आपद पावत नर दीप ज्युं पतंग रे ॥  
 खिणमात होत सुख देखे नव सत दुःख, करत वि  
 पम विष मूरतिको जंग रे ॥ फिट फिट करे लोय अज  
 स कीरति होय, रमणि कारण जोय होत मोहोटा  
 जंग रे ॥ जणे० ॥ म म कर० ॥ १९ ॥ शील व्रत पालो  
 जिम शिवपूर जाइयें ॥ शीलहींतें नमे देव सुरनर  
 सारे सेव, शीलवंत नित्यमेव देवहीज्युं ध्याइयें ॥ देखो  
 हो सुदरशन शील पाव्यो एक मन, शीलहींतें त्रिचु  
 वन जस गुण गाइयें ॥ शीलतें संकट टले संपतकुं



आय मित्रे, मांहे समकित जले तोउ कहा पाइयें ॥  
 नणे० ॥ शीलव्रत० ॥ १० ॥ अति घणो परिग्रह दुः  
 खहींको हेत रे ॥ कोइ नर नरपति चलत परतगति,  
 परिग्रह देख मति साथ नांहि लेत रे ॥ देखो क्युं न  
 ब्रह्मदत्त सयंजूम चक्रवर्त्त, सातमी नरक पत्त सूत्र  
 साखी देत रे ॥ खात पीत जाइ बंध पाप चढे तोरे  
 खंध, कांइ मूढ होत अंध हिये कबु चेत रे ॥ नणे० ॥  
 अति० ॥ ११ ॥ संतोष करत जीव नित्य सुख पाइयें  
 ॥ संतोष करत नर दुःखको सागर तर, परम आनं  
 द घर ततक्षण पाइयें ॥ देखो हो कपिल मुन संतोष  
 करत जिन, पायो हे केवल धन धन्य गुण गाइयें ॥  
 जिनवर गणधर गणिवर मुनिवर, परम संतोष कर  
 शिवपुर जाइयें ॥ नणे० ॥ संतोष० ॥ १२ ॥ क्रोध हे  
 अनर्थ मूल क्रोध दूर ठोड रे ॥ क्रोधहीतें नरक जा  
 य वाध सिंह सर्प थाय, क्रोधहीतें नरम लाय नव  
 कोडाकोड रे ॥ क्रोधहीतें प्रीत जाय क्रोधहीतें विष  
 खाय, क्रोध बहू दुःखदाय जीव आणे खोड रे ॥  
 क्रोधकी उपनी जाल जूउ तुमें ततकाल, करी नाखो  
 आल माल पीठा मन मोड रे ॥ नणे० ॥ क्रोध० ॥ १३ ॥  
 कृमा करो नरपूर मम करो रीश रे ॥ कृमाहीते वेर  
 जाय दुषमन लागे पाय, त्रिचुवन जस थाय सही  
 विश्वावीश रे ॥ देखो गजसुकुमाल कृमा करी क्रोध  
 मार, संसारको पायो पार वंदो निश दीस रे ॥ राय  
 परदेशी धन कृमा करि एक मन्न, देवलोक पायो तिन

पूरी हे जगीश रे ॥ नणे० ॥ कृमा० ॥ १४ ॥ काहेकुं  
 करत हे तुं मूढ अहंकार रे ॥ लक्ष्मी तो नांही थिर  
 आत जात फिर फिर, यौवनजी जात खीर तुं तो हे  
 गमार रे ॥ जाहिंको करत गर्व सोय बिणस जात स  
 र्व, पावे नांही उहि सर्व सो तो वार वार रे ॥ राव  
 हीतें रंक होय रंकहीतें राव जोय, थिर रह्यो नांहिं  
 कोय अथिर संसार रे ॥ नणे० ॥ काहेकुं० ॥ १५ ॥  
 म म कर मूढ माया कूडही कपट रे ॥ मायातें नरक  
 घोर मायाहीतें होत ढोर, मायाहीतें पावे जोर दुःख  
 हींको थट्ट रे ॥ जो करत परझोह मंमत कपट म ह,  
 आपकुं शोषण खोह कांइ होत जट्ट रे ॥ हियां। सुं  
 चेत नर मोहमाया परिहर, संसार सागर तर पायो हे  
 तट्ट रे ॥ नणे० ॥ म म कर० ॥ १६ ॥ सुख होत  
 लोच वश करत करत रे ॥ लोचहितें रातदिन धितें  
 मेलुं मेलुं धन, दुःख होत लोच मन धरत धरत रे ॥  
 जोरे धन रल रल आयु घटे पल पल, जात ज्युं अं  
 जल जल जरत जरत रे ॥ सुनूम प्रमुख नूप करत  
 जे दोर धूप, ठोड गये लोच कूप जरत जरत रे ॥  
 नणे० ॥ सुख होत० ॥ १७ ॥ काहेकुं करत लोच  
 देत क्युं न दान रे ॥ दान शिव सुखदाय दानथें दा  
 रिष्ट जाय, घरें नवनिधि आय माने राय रान रे ॥  
 दान देवो चित्त लाय दानें धन वृद्धि आय, जेसें वा  
 डी कूप पाय होत वृद्धिमान रे ॥ देखो हो सुमुख  
 जिन प्रतिलाज्यो महामुन, कुमर सुबाहू तिन रु

पको निधान रे ॥ नणे० ॥ काहेकुं० ॥ २८ ॥ बडो  
 व्रत व्रतमांहे शीलव्रत जान रे ॥ सागर आगर मां  
 हिं स्वयंचु उदधि मांहि, वडो दान दान मांहि अ  
 नय ज्युं दान रे ॥ चंइ ग्रहगणमांहि, ब्रह्मलोक  
 कल्प मांहि, बडो ज्ञान ज्ञान मांहि केवल ज्युं ज्ञान  
 रे ॥ अरिहंत सुनि मांहे मनोरम गिरिमांहे, वडो  
 ध्यान ध्यानमांहे सुकल ज्युं ध्यान रे ॥ नणे० ॥  
 बडो० ॥ २९ ॥ नवकोटि कृतकर्म तपहीतें टालियें ॥  
 तपतें वांढित फल होत जीव निरमल, तप रूप दा  
 वानल कर्म वन बाजियें ॥ देखो धनो अणुगार छुकर  
 तपको कार ढोडकें बतीस नार जिनव्रत पालियें ॥  
 सागर तेत्रीश वर दूउ अणुत्तर सुर, जाके गुणरूप  
 जल आतम पखालियें ॥ नणे० ॥ नवकोटि०॥३०॥  
 नावहीतें होत सिद्ध नावहीं प्रधान रे ॥ बहू विधें  
 व्रत लीध तप कीध दान दीध, नाव विना नांहिं सि  
 द्ध होत फल हान रे ॥ सुज नाव नावे जेह नव  
 निधि तरे तेह, पायो ज्युं मुगति गेह नरत राजान  
 रे ॥ मरुदेवी मात धन छुकरह तप बिन, शिव पद  
 पायो जिन ध्याई शुन ध्यान रे ॥ नणे० ॥ नावही०  
 ॥ ३१ ॥ धर्म हे मंगल मूल धर्महीकुं सेव रे ॥ धर्म  
 हे कलप वृद्ध देखो जातें परतद्ध, नोगवेहे लोक  
 लद्ध सौख्य नित्यमेव रे ॥ धर्मके उत्तम फल जाति  
 कुल रूप बल, विकट संकट टल जाते ततखेव रे ॥  
 धर्महीं दुष्कृत दहे इंद्रादिक पद लहे, धर्म शिव सुख

कहे अरिहंत देवरे ॥ नणे० ॥ धर्म० ॥ ३१ ॥ महानंद  
सुख कंद रूपचंद जानियें ॥ श्रीयरूपजीवगणि कुं  
अर श्रीमद्व मुनि, रतनसीस जस धनी त्रिभुवन  
मानियें ॥ विमल शासन जास मुनि श्रीय गंगदास,  
हस्त दीक्षित तास बत्रिशी बखानियें ॥ बाण वसु  
रस चंद (१६७५) दीवाली मंगल वृंद, अहम्मदावाद  
इंद रंग मन आनियें ॥ नणे मुनि बालचंद सुनो हो  
नविक वृंद, महानंद सुखकंद रूपचंद जानियें ॥ ३३ ॥  
इति श्री बालचंद बत्रिशी संपूर्णा ॥

॥ अथ वीरजिन स्तवनं ॥

॥ विमलाचल वेगें वधावो ॥ ए देशी ॥

॥ चउमासी पारणुं आवे. करि वीनति निज घर  
जावे ॥ प्रिया पुत्रने वात जणावे, पटकूल ऊरी पथ  
रावे रे ॥ महावीर प्रभु घरें आवे, जीरण शेठजी ना  
वना जावे रे ॥ महा० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ उनी  
शेरीयें जल ठटकावे, जाई केतकी फूल बिठावे ॥  
निजघर तोरण बंधावे, मेवा मिठाई थाल जरावे  
रे ॥ महा० ॥ २ ॥ अरिहाने दानज दीजें, देतां जे  
देखीने रीजें ॥ षटमासी रोग हरीजें, सीजे दायक  
नव त्रीजे रे ॥ महा० ॥ ३ ॥ जिनवरनी सनमुख  
जावुं, मुळ मंदिरीयें पथरावुं ॥ पारणुं नली जातें क  
रावुं, युगतें जिनपूजा रचावुं रे ॥ महा० ॥ ४ ॥  
पढी प्रभुने वोलावा जइशुं, कर जोडीने सनमुख रहि  
शुं ॥ नमी वंदीने पावन थइशुं, विरति अति रंगें व

हीशुं रे ॥ महा० ॥ ५ ॥ दया दान कृमा शील धर  
 शुं, उपदेश सज्जनने करशुं ॥ सत्यज्ञानदिशा अनु  
 सरशुं, अनुकंपा लक्षण वरशुं रे ॥ महा० ॥ ६ ॥  
 एम जीरण श्रेष्ठ वदंता, परिणामनी धारें चढंता ॥ श्रा  
 वकनी सीमें ठरंता, देवडंडुजि नाद सुणंता रे ॥  
 महा० ॥ ७ ॥ करी आयु पूरण शुननावें, सुरलोकें  
 अच्युतें जावे ॥ शाता वेदनी सुख पावे, शुन वीर व  
 चन रस गावे रे ॥ महा० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ कृष्णजिनस्तवनं ॥

॥ जयो जयो नायक जग गुरु रे, आदीसर जिन  
 राय ॥ तुज मुख देखी साहेबा, मुज आनंद अंग  
 न माय ॥ कृष्णदेव तुं मोरो महाराज, ताहसुं द  
 र्शन दीतुं में आज, प्रभु मुज सीधां वंछित काज ॥  
 कृ० ॥ १. ॥ आंखडी कमलनी पांखडी रे, जाणीयें  
 अमोरसकंद ॥ दिन दिन मुखडुं दीपतुं जाणे, न  
 यन चकोरा चंद ॥ कृ० ॥ २ ॥ मूरति जिनजीनी  
 मोहनी रे, साची मोहन वेल ॥ मनना मनोरथ पू  
 रती जाणे, कल्पतरूनी वेल ॥ कृ० ॥ ३ ॥ एकण  
 जीर्णें ताहेरा रे, गुण कहेतां न कहेवाय ॥ जिम गंगा  
 रज कण तणी कहो, केणी परें संख्या थाय ॥ कृ०  
 ॥ ४ ॥ श्रेष्ठुंजा गिरिनो राजियो रे, नानिराया कुल  
 चंद ॥ केसरविमल एम वीनवे प्रभु, द्यो दर्शन सु  
 खकंद ॥ कृ० ॥ ५ ॥ इति कृष्णजिन स्तवनं ॥

## ॥ अथ सीमंधरजिन स्तवनं ॥

॥ धन धन खेत्र माहाविदेह जी, धन्य पुंमरिणि  
 एणी गाम ॥ धन्य तिहांनां मानवी जी, नित उठी करे  
 रे प्रणाम ॥ सीमंधर स्वामी कश्यें रे हुं महाविदेह  
 आवीश, जयवंता जिनवर कश्यें रे हुं तुमने वांदिश  
 ॥ १ ॥ चांदलीया संदेशडो जी, केहेजो सीमंधर स्वाम ॥  
 नरत क्षेत्रनां मानवी जी, नित उठी करे रे प्रणा  
 म ॥ सी० ॥ २ ॥ समवसरण देवें रच्युं तिहां, चो  
 शठ इंद्र नरेश ॥ सोना तणे सिंहासन बेठा, चामर  
 ठत्र धरेश ॥ सी० ॥ ३ ॥ इंझाणी काढे गहूंजी जी,  
 मोतीना चोक पूरेश ॥ रत्नों रत्नी लीये लूठणां जी,  
 जिनवर दीये उपदेश ॥ सी० ॥ ४ ॥ एहवे समे में  
 सांजव्युं जी, हवे करवां पञ्चस्काण ॥ पोथी ठवणी  
 तिहां कणे जी, अमृत वाणी वखाण ॥ सी० ॥ ५ ॥  
 रायने वाहालां घोडलां जी, वेपारीने वाहाला ठे दाम ॥  
 अमने वाहाला सीमंधर स्वामी, जिम साताने श्रीरा  
 म ॥ सी० ॥ ६ ॥ नही मागुं प्रभु राज रुद्धि जी,  
 नही मागुं गरथ चंदार ॥ हुं मागुं प्रभु एटलुं जी,  
 तुम पासें अवतार ॥ सी० ॥ ७ ॥ दैव न दीधी पांख  
 डी जी, केम करी आबुं रे हजूर ॥ मुजरो माहारो  
 मानजो जी, प्रह ऊगमते सूर ॥ सी० ॥ ८ ॥ समय  
 सुंदरनी वीनति जी, मानजो वारंवार ॥ बे कर जोडी  
 वीनवुं जी, वीनतडी अवधार ॥ सी० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवनं ॥ प्रजाति रागमां ॥

॥ वहाणलां वाह्यां रे प्रभु, वहाणलां वाह्यां ॥ जू  
उने जागो रे प्रभु, वहाणलां वाह्यां ॥ माता वामा  
देवी एम, बोले रे वाणी ॥ तमारुं सुख जोवा आ  
व्यां, इंइ इंझाणी ॥ वहाणलां ० ॥ १ ॥ तान मान  
पंच शब्द, वाजां रे वाजे ॥ गीत गायन थातां प्रभु,  
अंबर गाजे ॥ व० ॥ २ ॥ देव गाये ने द्वारें उजा,  
बिरुद बोले ॥ कोई अमारा प्रभुजीने, नावे रे तोलें ॥  
व० ॥ ३ ॥ माताजीनां वचन सुणी, पास कुमर जा  
ग्या ॥ नविक जीवनां वंढित फल्यां, मुहनां मांग्यां ॥  
व० ॥ ४ ॥ प्रभु मुख जोयाना रंग, कह्या न जाये  
॥ देखंतारें रे नयणे उलट, अंग न माये ॥ व० ॥  
॥ ५ ॥ नित्यलाज कहे स्वामी, अंतरजामी ॥ जलें रे में  
जेठ्यो आज, गोडीचा स्वामी ॥ व० ॥ प्रभु ० ॥ ६ ॥

॥ अथ वीरजिन स्तवनं ॥

॥ वीरजिणोसर साहिब मेरा, पार न लहुं तेरा ॥ म  
हेर करी टालो महाराजजी, जनम मरणना फेरा हो ॥  
जिनजी अब हुं शरणें आयो ॥ १ ॥ गर्जावास  
तणां दुःख मोहोटां, उंधे मस्तक रहियो ॥ मल मूतर  
मांहे लपटाणो, एहवो दुःख में सहियो हो ॥ जि० ॥  
॥ २ ॥ नरक निगोदमां उपनो ने चवियो, सूक्ष्म बादर  
थइयो ॥ वेहेंचाणो सुइने अग्रजागें, मान तिहां किहां  
रहियो हो ॥ जि० ॥ ३ ॥ नरकतणी वेदना अति उ  
ल्लसी, सही ते जीवें बहू ॥ परमाधामीनें वश पडी

यो, ते जाणो तमें सहू हो ॥ जि० ॥ ४ ॥ तिर्येच तणा  
 नव कीधा घणोरा, विवेक नहींय लगार ॥ निशि  
 दिननो व्यवहार न जाण्यो, केम उतराये पार हो  
 ॥ जि० ॥ ५ ॥ देव तणी गति पुण्यें हुं पाम्यो, विष  
 यारसमां चीनो ॥ व्रत पञ्चरकाण उदय नवि आव्यां,  
 तान मानमांहे लीनो हो ॥ जि० ॥ ६ ॥ मनुष्य ज  
 नम ने धर्मसामग्री, पाम्यो तुं बहु पुण्यें ॥ राग द्वेष  
 मांहे बहु जलियो, न टली ममता बुद्धि हो ॥ जि०  
 ॥ ७ ॥ एक कंचन ने बीजी कामिनी, तेहगुं मनहुं  
 बाधुं ॥ तेना जोग लेवाने हुं शूरो, केम करी जिनधर्म  
 साधुं हो ॥ जि० ॥ ८ ॥ मननी डोड कीधी अति  
 जाजी, हुं ठउं कोक जड जेहवो ॥ कलि कल्ले कल्प  
 में जन्म गमायो, पुनरपि पुनरपि तेहवो हो ॥ जि०  
 ॥ ९ ॥ गुरु उपदेशमां हुं नर्थी चीनो, नावि स  
 द्दहणा स्वामी ॥ हवे वडाइ जोईयें तमारी, खिजम  
 तमांहि ठे खामी हो ॥ जि० ॥ १० ॥ चार गतिमां  
 हे रड वडीयो, तोए न सीधां काज ॥ रूपन कहे ता  
 रो सेवकने, बांहे ग्रह्यानी लाज हो ॥ जि० ॥ ११ ॥

॥ अथ पार्श्वजिन प्रज्ञाति स्तवनं ॥

॥ मेरे ए प्रभु चाइयें, निन उठी दरिसण पाउं ॥  
 चरणकमल सेवा करूं, चरणे चित्त लाउं ॥ मेरे ए  
 प्र० ॥ १ ॥ मन पंकजके महेलमें, प्रभु पास बेठा  
 उं ॥ निपट नजिक में दुइ रहुं, मेरो जीव रमाउं ॥  
 ॥ मे० ॥ २ ॥ अंतरजामी एक तुं, अंतरिक गुण



गाउं ॥ आनंद कहे प्रभु पासजी, कबु उर न चाहुं ॥  
( में तो अवर न ध्याउं ) ॥ म० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ सिद्धाचलस्तवनं ॥

॥ ए तो सकल तीरथनो राय, मोहोढो गिरिवर कहे  
वाय ॥ एहनी जात्रा पुण्यें थाय ॥ मनोहर मित्र ए  
गिरि सेवो, डुनियामां देव नही एवो ॥ म० ॥ ए  
आंकणी ॥ १ ॥ सुर नर विद्याधर आवे, एतो जात्रा  
करे मन जावें ॥ हारे एहनुं समकित निरमल थावे  
॥ म० ॥ २ ॥ सोनाने रूपानां फूल, मोती माणक  
रत्न अमूल ॥ गिरि वधावो बहु मूल ॥ म० ॥ ३ ॥  
केसर सूरखड ने कपूर, गिरि पूजे ऊगमते सूर ॥ तेनां  
कर्म थाये चकचूर ॥ म० ॥ ४ ॥ सूरज कुंममां जे  
नाये, नवोन्नवनां पातक जाये ॥ एनी देही कनक  
मय थाये ॥ म० ॥ ५ ॥ मेंतो पूज्या श्रीकृष्ण जि  
एंदा, मुऊ हड्डे अतिही आणंदा ॥ मुख सोहे पून  
मकेरो चंदा ॥ म० ॥ ६ ॥ मन जाणीने लान अ  
नंत, आव्या त्रेवीशे जगवंत ॥ कीधो सकल कर्मनो  
अंत ॥ म० ॥ ७ ॥ शेत्रुंजो जे नयणें निहाले, नर  
क तिर्यंच गति निवारे ॥ तेनो शिवरमणी कर जाले  
॥ म० ॥ ८ ॥ संघवी ताराचंदनो संघ, नूषणदास  
मव्या मनरंग ॥ एतो जात्रा करे सर्व संघ ॥ म० ॥  
॥ ९ ॥ श्रीविधिपद्म गह्वपति राया, उदयसागर सूरि  
सुपसाया ॥ शिष्य तिलकचंदें गुण गाया ॥ म० ॥ १० ॥

॥ पार्श्वजिन स्तवन कञ्ची जाषामां ॥

॥ सुघड पास प्रभु रे, दरिसण वेलडोनी दिऊ ॥  
 दरिसण तोजो लाख टकनजो, लाख टकनजो लाख ट  
 कनजो रे, कामणगारा तोजा नेण ॥ सु० ॥ सांही  
 असांजो तुं अंश्यें तुं अंश्यें तुं अंश्यें रे, मिठडा ल  
 गेंता तोजा वेण ॥ सु० ॥ द० ॥ १ ॥ अंधायकी  
 असीं आविया आविया आविया रे, सफल जनम  
 थेयो अऊ ॥ सु० ॥ द० ॥ मेहेर कज जजी मुंमथे  
 मुंमथे मुंमथे रे, बांहे ग्रहेजी लऊ ॥ सु० ॥ द० ॥  
 ॥ २ ॥ दिल लगे मुंजो तोमथे तोमथे तोमथे रे,  
 येउ से वेंधो कींह ॥ सु० ॥ द० ॥ सजोदी तोके सं  
 नारीयां संनारीयां संनारीयां रे, मींह बापीयडा जींह  
 ॥ सु० ॥ द० ॥ ३ ॥ जगमे देव दठा जजा दठा  
 जजा दठा जजा रे, तेंमें तुं वमो पीर ॥ सु० ॥ द० ॥  
 असीं वामाजीजे नंदके नंदके नंदके रे, दरिसणें थे  
 यासुं खलो खीर ॥ सु० ॥ द० ॥ ४ ॥ घोरजी वं  
 जा तोजे नामथा नामथा नामथा रे, मुगतीजो दा  
 तार ॥ सु० ॥ द० ॥ थरजो ठाकुर नेटेयो नेटेयो  
 नेटेयो रे, नित्य लानजो आधार ॥ सु० ॥ द० ॥ ५ ॥

॥ अथ शीतलजिनस्तवनं ॥

॥ शीतल जिनवर सांनजो रे, गुणनिधि गरीब  
 निवाज ॥ देखी दरिसण ताहेरुं रे, सफल थयो दि  
 न आज ॥ शी० ॥ १ ॥ सूरत ताहारी सोहामणी रे,  
 लाल अमूलक नंग ॥ जाणीयें कट्पडुम सारखो रे,

(३१९)

कीधी प्रीति अजंग ॥ शी० ॥ १ ॥ हेजाळे नयणें क  
रा रे, मलजो मुजने स्वाम ॥ अंतरजामी ठो माह  
रा रे, नवडुःख जंजण ठाम ॥ शी० ॥ ३ ॥ साचो  
साजन तुं मिव्यो रे, प्रीति कीधी परमाण ॥ हियडे  
नींतर तुं वस्यो रे, जावें जाण म जाण ॥ शी० ॥  
॥ ४ ॥ धरणीतलमां जोवतां रे, अवर मिव्या मुळ  
लाख ॥ पण ते हुं नहीं आदरुं रे, श्रीपरमेश्वर साख  
॥ शी० ॥ ५ ॥ सीताने मन रामजी रे, राधाने मन  
कान ॥ नमरो मालति फूलडे रे, तिम प्रभुशुं मुळ  
तान ॥ शी० ॥ ६ ॥ रोहिणीने मन चंदलो रे, जिम  
मोरामन मेह ॥ इंदाणीने मन इंदलो रे, तिम प्र  
भुशुं मुळ नेह ॥ शी० ॥ ७ ॥ अमने तमोरो ठे आ  
शरो रे, नहि कोइ बीजाशुं वाद ॥ साचो सेवक जा  
णशो रे, तो सवि पूरशो लाम ॥ शी० ॥ ८ ॥ अ  
चलगहने..देहरे रे, मुदरा नगर मजार ॥ महिमा  
वंत मया करो रे, नवडुख जंजणहार ॥ शी० ॥  
॥ ९ ॥ सानिधकारी ठो साहेबा रे, प्रणम्यां पातक  
जाय ॥ सहज सुंदर गुरुरायनो रे, नित्य लाज प्रभु  
गुण गाय ॥ शी० ॥ १० ॥ इति ॥

॥ अथ प्रजातीरागमां स्तवन ॥

॥ प्रजातें उठीने माता मुखडुं जोवे ॥ ए देशी ॥

॥ आवी रूडी जगति में, पहेलां न जाणी ॥ पहे  
लां न जाणी रे प्रभु, पहेलां न जाणी ॥ संसारनी  
मायामां में, वलोव्युं पाणी ॥ आ० ॥ ए आंकणी ॥

कल्पतरुनां फल लावीनें, जे जिनवर पूजे ॥ काल  
 अनादि कर्म ते संचित, सत्ताथी धूजे ॥ आ० ॥ १ ॥  
 स्थावर तिरि निरयालय डग, इगविगला लीजें ॥ सा  
 धारण नवमे गुणठाणे, धुरजागें ठीजे ॥ आ० ॥ २ ॥  
 केवल पामीने शिवगति पामी, शैलेशी टाणे ॥  
 चरम समय दोयमांहे स्वामी, अंतिम गुणठाणे ॥  
 ॥ आ० ॥ ३ ॥ बाकी नाम करमनी पयडी, सवली  
 तिहां जावे ॥ अजर अमर निकलंक स्वरूपें, निःक  
 र्मा यावे ॥ आ० ॥ ४ ॥ जे सिद्ध केरी पडिमा पूजे,  
 ते सिद्धमयी होवे ॥ नाई धोई निरमल चित्तें, आरी  
 सो जोवे ॥ आ० ॥ ५ ॥ कर्मसूत्रण तप केरी पूजा,  
 फल ते नर पावे ॥ श्रीशुन वीर स्वरूप विलोकी,  
 शिववहु घर आवे ॥ आ० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ पार्श्वजिनस्तवनं ॥

॥ पासजिणंद सदाशिव गामी, वालोजी अंतर  
 जामी रे ॥ जगजीवन जिनजी ॥ मुहूरत ताहारी मो  
 हनगारी, नवियणने हितकारी रे ॥ ज० ॥ १ ॥  
 वामा रे नंदन सांजलो स्वामी, अरज करुं शिर ना  
 मी रे ॥ ज० ॥ देव घणा में तो नयणें रे दीठा, तुमें  
 घणुं लागो ठो मीठा रे ॥ ज० ॥ २ ॥ में तो मनमां  
 तुंहीज ध्यायो, रत्नचिंतामणि पायो रे ॥ ज० ॥ रा  
 त दिवस मुळ मनमांहे वसियो, हुं हुं तुम गुण र  
 सियो रे ॥ ज० ॥ ३ ॥ महेर करीने साहेबा नजरें  
 निहालो, तमें ठो परम कृपालो रे ॥ ज० ॥ गोडी रे

( ३११ )

गाममां तुंहीज सोहियें, सुर नरनां मन मोहियें रे ॥  
ज० ॥ ४ ॥ बे कर जोडीने प्रभु पाये लागुं, नित नि  
त दरिसण मागुं रे ॥ ज० ॥ देव नही कोय ताहा  
री तोलें, नितलाज एणि परें बोले रे ॥ ज० ॥ ५ ॥

॥ अथ श्रीमहावीरजिनस्तवनं ॥

॥ महावीर स्वामी मुगतें पोहोता, गौतम केवल  
ज्ञान रे ॥ धन दीवाली धन अमावास्या, वीरतणुं  
निर्वाण ॥ प्रभुमुख जोवाने, महारे दीवाली थई  
आज ॥ प्र० ॥ मोहि मोहि रे मीठडा लाल, जिन  
मुख जोवाने ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ चारित्र पाली निरम  
लुं ने, टाली विषय कपाय रे ॥ एवा मुनिनें वांदीयें तो,  
ऊतारे जंवपार ॥ प्र० ॥ म० ॥ १ ॥ बाकुला वहो  
खा वीरजी ने, तारी चंदनबाला रे ॥ केवल लहीने मु  
कें पोहोता, पाम्या जेवनो पार ॥ प्र० ॥ म० ॥ ३ ॥  
एवा देवनें. वांदीयें, जे पंचम ज्ञानने धरता रे ॥ समो  
सरणें दइ देशना, प्रभु ताखां नरने नार ॥ प्र० ॥  
म० ॥ ४ ॥ चोवीशमो जिन जिनेसरु ने, मुक्ति तणो  
दातार रे ॥ कर जोडी कवियण इम जणे, मारो जव  
नो फेरो टाल ॥ प्र० ॥ म० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ दानशीयलतप अने जावनुं चोढालियुं प्रारंजः ॥

॥ दोहा ॥

॥ प्रथम जिणेसर पाय नमी, पामी सुगुरुप्रसा  
द ॥ दान शियल तप जावना, बोलिश बहु संवा  
द ॥ १ ॥ वीर जिणंद समोसखा, राजगृही उद्यान ॥

समवसरण देवें रच्युं, बेठा श्रीवर्द्धमान ॥ १ ॥ बेठी  
 वारे परखदा, सुणवा जिनवर वाण ॥ दान कहे प्र  
 जु हुं वडो, मुज्जने प्रथम वखाण ॥ ३ ॥ सांजलजो  
 सहुको तुमैं, कुण ठे मुज्ज समान ॥ अरिहंत दी  
 द्हा अवसरें, आपे पहिलुं दान ॥ ४ ॥ प्रथम पद्दो  
 र दातारनुं, लीये सहु कोइ नाम ॥ दीधारी देवल च  
 ठे, सीजे वंछित काम ॥ ५ ॥ तीर्थकरने पारणो, कुण  
 करशे मुज्ज होड ॥ वृष्टि करुं सोवन तणी, साडी बा  
 रह कोड ॥ ६ ॥ हुं जग सघलुं वश करुं, मुज्ज मोहो  
 टी ठे वात ॥ कुण कुण दानथकी तस्या, ते सुणजो  
 अवदात ॥ ७ ॥

॥ ढाल पहेली ॥ ललनानी देशी ॥

॥ धन सारथवाह साधुने, दीधुं घृतनुं दान ॥  
 ललना ॥ तीर्थकर पद में दीधुं, तिणे मुज्जने अनिमा  
 न ॥ ललना ॥ १ ॥ दान कहे जग हुं वडुं, मुज्ज  
 सरिखुं नही कोय ॥ ललना ॥ रुद्धि समृद्धि सुख संप  
 दा, दानें दोलत होय ॥ ललना ॥ दा० ॥ १ ॥ सुमु  
 ख नामें गाथापति, पडिलान्यो अणगार ॥ ललना ॥  
 कुमर सुबाहु सुख लहुं, तेतो मुज्ज उपगार ॥ लल  
 ना ॥ दा० ॥ ३ ॥ पांचशें मुनिने पारणुं, देतो वो  
 होरी आण ॥ ललना ॥ जरत थयो चक्रवर्त्ति नलो,  
 ते पण मुज्ज फल जाण ॥ ललना ॥ दा० ॥ ४ ॥  
 मास खमणने पारणो, पडिलान्यो रुषिराय ॥ लल  
 ना ॥ शालिजइ सुख जोगवे, दान तणें सुपसाय ॥

ललना ॥ दा० ॥ ५ ॥ आप्या अडदना बाकला,  
 उत्तम पात्र विशेष ॥ ललना ॥ मूलदेव राजा थयो,  
 दानतणां फल देख ॥ ललना ॥ दा० ॥ ६ ॥ प्रथम  
 जिणेसर पारणें, श्री श्रेयांस कुमार ॥ ललना ॥ से  
 लडीरस वोहोरावियो, पाम्यो जवनो पार ॥ ललना ॥  
 दा० ॥ ७ ॥ चंदनवाला बाकुला, पडिलान्या महा  
 वीर ॥ ललना ॥ पंचदिव्य प्रगट थयां, सुंदररूप  
 शरीर ॥ ललना ॥ दा० ॥ ८ ॥ पूरव जव पारेवडुं,  
 शरणे राख्युं सूर ॥ ललना ॥ तीर्थकर चक्रवर्ति प  
 णे, प्रगटयो पुण्यपमूर ॥ ललना ॥ दा० ॥ ९ ॥  
 गजजवें शशलो राखियो, करुणा कीधी सार ॥ लल  
 ना ॥ श्रेणिकने घरे अवतस्यो, अंगज मेघ कुमार ॥  
 ललना ॥ दा० ॥ १० ॥ एम अनेक में उदखा, कहे  
 तां नावे पार ॥ ललना ॥ समयसुंदर प्रभु वीरजी,  
 मुऊ पहेलो अधिकार ॥ ललना ॥ दा० ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

॥ शियल कहे सुण दान तुं, किस्यो करे अहंकार ॥  
 आमंवर आठे पहोर, याचकशुं व्यवहार ॥ १ ॥ अं  
 तराय बलि ताहरे, जोग करम संसार ॥ जिनवर  
 कर नीचा करे, तुऊने पडयो धिक्कार ॥ २ ॥ गर्व  
 म कर रे दान तुं, मुऊ पूर्वे सहु कोय ॥ चाकर चाले  
 आगले, तो शुं राजा होय ॥ ३ ॥ जिन मंदिर सोना  
 तणुं, नवुं निपावे कोय ॥ सोवन कोडी दान दिये,  
 शियल समुं नहि कोय ॥ ४ ॥ शियलें संकट सवि

टले, शियलें सुजस सोजाग ॥ शियलें सुर सानिध करे,  
 शियल वडो वैराग ॥ ५ ॥ शियलें सर्प न आनडे,  
 शियलें शीतल आग ॥ शीलें अरि करी केशरी, जय  
 जाये सवि नाग ॥ ६ ॥ जनम मरणना जयथकी,  
 में ठोडाव्या अनेक ॥ नाम कहुं हवे तेहनां, सांज  
 लजो सुविवेक ॥ ७ ॥

॥ ढाल बीजी ॥ पास जिणंद जुहारीयें ॥ ए देशी ॥

॥ शियल कहे जग हुं वडो, मुऊ वात सुणो अति  
 मीठी रे ॥ लालच लावे लोकने, में दान तणी वात दी  
 ठी रे ॥ शि० ॥ १ ॥ कलह कारण जग जाणीयें, वली  
 विरति नही पण कांइ रे ॥ ते नारद में सीऊव्यो, मुऊ  
 जुठ ए अधिकाइ रे ॥ शि० ॥ २ ॥ बांहे पहेल्या बेर  
 खा, शंखराजायें दूषण दीधो रे ॥ काप्यो हाथ क  
 लावती, ते में नवपद्मव कीधो रे ॥ शि० ॥ ३ ॥ रावण  
 घर सीता रही, तो रामचंडें घर आणी रे ॥ सीतानुं  
 कलंक उतारीयुं, में पावक कीधो पाणी रे ॥ शि० ॥  
 ॥ ४ ॥ चंपा बार उधाडवा, वली चारणीयें काढीयुं  
 नीरो रे ॥ सतीय सुजडा जस थयो, में तस कीधी  
 नीरो रे ॥ शि० ॥ ५ ॥ राजा मारण मांमीयो, राणी  
 अनयायें दूषण दाख्यो रे ॥ शूली सिंहासन में की  
 यो, में शेठ सुदर्शन राख्यो रे ॥ शि० ॥ ६ ॥ शील  
 सन्नाह मंत्रीसरें, आवतां अरिदल थंन्यो रे ॥ तिहां  
 पण सानिध में करी, वली धरम कारज आरंन्यो  
 रे ॥ शि० ॥ ७ ॥ पहेरण चीर प्रगट कीयां, में अ



( ३१५ )

छोत्तरशो वारो रे ॥ पांमवनारी झौपदी, में राखी मा  
म उदारो रे ॥ शि० ॥ ७ ॥ ब्राह्मी चंदनबालिका, व  
ली शीलवंती दमयंती रे ॥ चेडानी साते सुता, राजि  
मती सुंदरी कुंती रे ॥ शि० ॥ ८ ॥ इत्यादिक में उ  
द्ध्यां, नर नारीनां वृंदो रे ॥ समयसुंदर प्रभु वीर  
जी, पहेलो मुऊ आणंदो रे ॥ शि० ॥ १० ॥

॥ दोहा ॥

॥ तप बोध्युं त्रटकी करी, दानने तुं अवहील ॥  
पण मुऊ आगल तुं किस्थुं, सांजल रे तुं शील  
॥ १ ॥ सरसां जोजन तें तज्यां, न गमे मीठा नाद ॥  
देह तणी शोना तजी, तुऊमां किस्थो सवाद ॥ २ ॥  
नारीयकी मरतो रहे, कायर किस्थुं वखाण ॥ कू  
ड कपट बहु केलवी, जिम तिम राखे प्राण ॥ ३ ॥  
को विरलो तुऊ आदरे, ठंमी सहु संसार ॥ आप ए  
क तुं नांजतो, बीजा नांजे चार ॥ ४ ॥ करम निका  
चित त्रोडवा, नांजुं जव जय जीम ॥ अरिहंत मुऊ  
ने आदरे, वरस ठमासी सीम ॥ ५ ॥ रुचक नंदी  
सर ऊपरें, मुऊ लब्धें मुनि जाय ॥ चैत्य जुहारे  
आश्वतां, आनंद अंग न माय ॥ ६ ॥ मोहोटा जोय  
ए लाखना, लघु कंथु आकार ॥ ह्य गय रथ पायक  
तणां, रूप करे अणगार ॥ ७ ॥ मुऊ कर फरसे उ  
पशमे, कुष्टादिकना रोग ॥ लब्धि अछाविश ऊपजे,  
उत्तम तप संजोग ॥ ८ ॥ जे में ताखा ते कहुं, सु

एजो मन उल्लास ॥ चमत्कार चित पामशो, देशो  
मुज शाबास ॥ ए ॥

॥ ढालू त्रीजी ॥ नणदलनी देशी ॥

॥ दृढप्रहार अति पापीयो, हत्या कीधी चार हो ॥  
सुंदर ॥ ते पण तिण नव उदखो, मूक्यो मुक्ति म  
जार हो ॥ सुंदर ॥ १ ॥ तप सरिखुं जग को नही,  
तप करे कर्मनुं सूड हो ॥ सुंदर ॥ तप करवुं अति  
दोहिलुं, तपमां नही को कूड हो ॥ सुंदर ॥ तप० ॥  
॥ २ ॥ सात माणस नित मारतो, करतो पाप अधो  
र हो ॥ सुंदर ॥ अर्जुनमाली में उदखो, ठेयां कर्म  
कठोर हो ॥ सुंदर ॥ तप० ॥ ३ ॥ नंदीपेणने में कि  
यो, स्त्रीवल्लभ वसुदेव हो ॥ सुंदर ॥ बहुंतैर सहस  
अंतेउरी, सुख जोगवे नित्यमेव हो ॥ सुंदर ॥ तप० ॥  
॥ ४ ॥ रूप कुरूप कालो धणो, हरिकेशी चंमाल  
हो ॥ सुंदर ॥ सुर नर कोडी सेवा करे, ते में कीधी  
चाल हो ॥ सुंदर ॥ तप० ॥ ५ ॥ विष्णुकुमर लब्धे कीयुं,  
लाख जोयणनुं रूप हो ॥ सुंदर ॥ श्रीसंघ केरे का  
रणें, ए मुज शक्ति अनूप हो ॥ सुंदर ॥ तप०  
॥ ६ ॥ अष्टापद गौतम चढया, वांढ्या जिन चोवीश  
हो ॥ सुंदर ॥ तापस पण प्रति बूजव्या, तेणें मुज अ  
धिक जगीश हो ॥ सुंदर ॥ तप० ॥ ७ ॥ चौद सह  
स अणगारमां, श्रीधनु अणगार हो ॥ सुंदर ॥ वीर  
जिणंद वखाणीयो, ए पण मुज अधिकार हो ॥ सुंद  
र ॥ तप० ॥ ८ ॥ कृष्ण नरेसर आगलें, डुकर कार

कहेय हो ॥ सुंदर ॥ ढंढण नैमी प्रशंसीयो, मुऊ म  
हिमा सवि तेह हो ॥ सुंदर ॥ तप० ॥ ए ॥ नंदीषेण  
वोहोरण गयो, गणिकायें कीधी हास हो ॥ सुंदर ॥  
वृष्टि करी सोवन तणी, में तसु पूरी आस हो ॥  
सुंदर ॥ तप० ॥ १० ॥ एम बलनइ प्रमुख बहु,  
ताखा तपसी जीव हो ॥ सुंदर ॥ समयसुंदर प्रचु वीर  
जीपहेजो मुऊ प्रस्ताव हो ॥ सुंदर ॥ तप० ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

॥ जाव कहे तप तुं किशुं, ठेडयुं करे कषाय ॥  
पूर्व कोडि जो तप तपे, कृणमां खेरु थाय ॥ १ ॥  
खंधक आचारज प्रतें, तें बाव्यो सवि देश ॥ अशुन  
नियाणुं तुं करे, कृमा नही लव लेश ॥ २ ॥ द्वैपा  
यन रुषि दूहव्या, सांब प्रद्युम्ननेसाहि ॥ ते तप क्रोध  
करी तिहां, दीधो द्वारिका दाह ॥ ३ ॥ दान शियल त  
प सांजलो, म करो फूठ गुमान ॥ लोक सहुको साख  
दे, धर्म जाव प्रधान ॥ ४ ॥ आप नपुंसक ठो त्रणे,  
ये व्याकरण ते साख ॥ काम सरे नहि कोशुं, जाव  
नणे मुं पाख ॥ ५ ॥ रस विण कनक न नीपजे, जल वि  
ण तरुअर वृद्धि ॥ रसवति रस नहि लवण विण,  
तिम मुऊ विण नहि सिद्धि ॥ ६ ॥ मंत्र जंत्र मणि औ  
षधि, देव धर्म गुरु सेव ॥ जाव विना ते सवि वृथा,  
जाव फले नितमेव ॥ ७ ॥ दान शियल तप जे तुमें,  
निज निज कह्यां वृत्तंत ॥ तिहां जो जाव न हुंत तो,  
कोइ सिद्धि नवि हुंत ॥ ८ ॥ जाव कहे में एकले,

तास्यां बहु नर नार ॥ सावधान थइ सांजलो, नाम  
कहुं निर्धार ॥ ए ॥

॥ ढाल चोथी ॥ कपूर होये अति ऊजलो रे ॥ ए देशी ॥

॥ काननमांहे काउस्सग रह्यो रे, प्रश्नचंद कृषि  
राय ॥ ते में कीधो केवली रे, ततहण करम खपा  
य ॥ १ ॥ सोजागी सुंदर, नाव बडो संसार ॥ एतो बीजो  
मुऊ परिवार ॥ सो० ॥ दानादिक विण एकलो रे,  
पोहोंचाहुं नवपार ॥ सो० ॥ २ ॥ ए आंकणी ॥ वंश  
उपर चढी खेलतो रे, एला पुत्र अपार ॥ केवल  
झानी में कीयो रे, प्रतिबोध्यो परिवार ॥ सो० ॥ ३ ॥  
नूख तृषा खमे अति घणी रे, करतो क्रूर आहार ॥  
केवल महिमा सुर करे रे, क्रूरगडू अणगार ॥  
सो० ॥ ४ ॥ लाजथी लोच वाधे घणो रे, आय्यो म  
न वैराग ॥ कपिल थयो मुनि केवली रे, ते ए मुऊने  
सोजाग ॥ सो० ॥ ५ ॥ अन्निका सुत गह्वनो धणी  
रे, ह्रीणजंघा बलि जाए ॥ कीधो अंतगड केवली  
रे, गंगाजल गुणखाण ॥ सो० ॥ ६ ॥ पन्नरशें ताप  
स नणी रे, दीधी गौतमें दिस्क ॥ ततहण कीधा  
केवली रे, जो मुऊ मानी शीख ॥ सो० ॥ ७ ॥ पा  
लक पापीयें पीलिया रे, खंधक सूरिना शिष्य ॥ ज  
नम मरणथी ठोडव्या रे, आपे मुऊ आशीष ॥ सो०  
॥ ८ ॥ चंड रुइने चालतां रे, दीधो दंम प्रहार ॥  
नव दीक्षित थयो केवली रे, ते गुरु पण तिणि वार ॥  
सो० ॥ ९ ॥ धन रथकारक साधुने रे, पडिलान्यो

( ३३९ )

उद्धास ॥ मृगलो जावना जावतो रे, पोहोतो स्वर्ग  
आवास ॥ सो० ॥ १० ॥ निज अपराध स्वमावती  
रे, मूक्यो मनथी मान ॥ मृगावतीने में दीयुं रे, नि  
र्मल केवल ज्ञान ॥ सो० ॥ ११ ॥ मरुदेवी गज  
ऊपरें रे, देखी पुत्रनी रुद्धि ॥ मुझने मनमांहे ध  
ख्यो रे, ततकृण पामी सिद्धि ॥ सो० ॥ १२ ॥  
वीर वंदण चाख्यो मारगें रे, चांप्यो चपल तुरंग ॥  
दर्डरनामें देवता रे, तेह थयो मुझ संग ॥ सो०  
॥ १३ ॥ प्रभुपाय पूजन नीसरी रे, डुर्गला नामें नार ॥  
कालधर्म बचमां करी रे, पोहोती स्वर्ग मजार ॥ सो०  
॥ १४ ॥ कायानी शोना कारमी रें, रूप किस्यो अजि  
मान ॥ जरत आरीसा जुवनमां रे, पाम्यो केवल ज्ञान  
॥ सो० ॥ १५ ॥ आपाढजूति कलानिलो रे, प्रगट्यो  
जरत सरूप ॥ नाटक करतां पामीयो रे, केवलज्ञान अ  
नूप ॥ सो० ॥ १६ ॥ दीक्षा दिन काउस्सग्न रह्यो रे, ग  
जसुकमार मशाण ॥ सोमल शीश प्रजालियो रे, सिद्धि  
गयो गुन जाण ॥ सो० ॥ १७ ॥ गुणसागर थयो के  
वली रे, सांजली पृथिवी चंद ॥ पोतें केवल पामीयो रे,  
सेव करे सुर इंद ॥ सो० ॥ १८ ॥ एम अनेक में उद्द  
खा रे, मूक्या शिवपुर वास ॥ समयसुंदर प्रभु वीरजी  
रे, मुझने प्रथम प्रकाश ॥ सो० ॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥ वीर कहे तुमे सांजलो, दान शियल तप  
जाव ॥ निंदा ठे अति पापिणी, धर्म कर्म प्रस्ताव ॥ १ ॥  
पर निंदा करतां थकां, पापें पिंम जराय ॥ वेढ राढ

वाधे घणी, डुर्गति प्राणी जाय ॥ १ ॥ निंदक सरखो  
पापियो, जूंमोकोइ न दीठ ॥ वलि चंमालसमो कह्यो,  
निंदक सूख अदिठ ॥ ३ ॥ आप प्रशंसा आपणी, करतो  
इंद नरिंद ॥ लघुता पामे लोकमां, नासे निजगुण  
वृंद ॥ ४ ॥ को कहेनी म करो तुमें, निंदा ने अहं  
कार ॥ आप आपणे ठामें रहो, सद्गुको जलो सं  
सार ॥ ५ ॥ तो पण अधिको जाव ठे, एकाकी समर  
ड ॥ दान शियल तप त्रणे जलां, पण जाव विना  
अकयड ॥ ६ ॥ अंजन आंखें आंजतां, अधिको आ  
णी रेख ॥ रजमांही तज काढतां, अधिको जाव विशेष  
॥ ७ ॥ जगवंत हठ जंजण जणी, चारे सरिख  
गणंत ॥ चारे करी मुख आपणां, चउविंध धर्म  
जणंत ॥ ८ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ वीरजिणेसर एम जणे रे, बेठी  
परखदा बार ॥ धर्म करो तुमें प्राणीया रे, जिम  
पामो जव पार रे ॥ धर्म हैये धरो ॥ १ ॥ धर्मना  
चार प्रकारो रे, नवियण सांजलो ॥ धर्म मुक्तिसुख  
कारो रे ॥ धर्म ॥ ए आंकणी ॥ धर्म थकी धन संपजे रे,  
धर्मथकी सुख होय ॥ धर्मथकी आरति टले रे, धर्म  
समो नही कोय रे ॥ धर्म ॥ २ ॥ डुर्गति पडतां  
प्राणीया रे, राखे श्री जिनधर्म ॥ कुटुंब सद्गुको कारि  
मुं रे, मत जूलो नवि नर्म रे ॥ धर्म ॥ ३ ॥ जीव  
जिके सुखीया दूआ रे, वली होशे ठे जेह ॥ ते जिन  
वरना धर्मथी रे, मत कोइ करो संदेह रे ॥ धर्म ॥

॥ ४ ॥ सोलशें ठासछसमे रे, सांगानेर मऊार ॥ पद्म  
 प्रभु सुपसाउले रे, एह जण्यो अधिकार रे ॥ धर्म० ॥  
 ॥ ५ ॥ सोहम सामी परंपरा रे, खरतर गह्व कुलचंद ॥  
 युगप्रधान जग परगडो रे, श्री जिनचंद सूरिंद रे ॥  
 ॥ धर्म० ॥ ६ ॥ तास शिष्य अतिदीपतो रे, विनय  
 वंत जसवंत ॥ आचारिज चढती कला रे, जिनसिंह  
 सूरि महंत रे ॥ धर्म० ॥ ७ ॥ प्रथम शिष्य श्रीपूज्यना  
 रे, सकलचंद तस शिष्य ॥ समयसुंदर वाचक जणो रे,  
 संघ सदा सुजगीश रे ॥ धर्म० ॥ ८ ॥ दान शियल  
 तप जावना रे, सरस रच्यो संवाद ॥ जणतां गुणतां  
 जावचुं रे, रुद्रि समृद्धि सुप्रसादो रे ॥ धर्म० ॥ ९ ॥  
 इति दानशियल तप जावनुं चोढालीयुं संपूर्ण ॥

॥ अथ प्रजाती रागमां स्तवन ॥

॥ कहा रे अज्ञानी जीवकुं, गुरु ज्ञान बतावे ॥ कबहुं  
 न विषथरु विष तजे, कहा दूध पिलावे ॥ कहा० ॥  
 ॥ १ ॥ ऊखर ईख न नीपजे, कहा बोवन जावे ॥ रा  
 सन ठार न ठामहीं, कहा गंग जिलावे ॥ क० ॥ २ ॥  
 काली जन कुमाणसां, रंग दूजो न आवे ॥ श्रीजिन  
 राज कहुं कहा, वाको सहज न जावे ॥ क० ॥ ३ ॥

॥ अथ सुविधिजिनस्तवनं ॥ राग प्रजाती ॥

॥ मुजरा साहेब मुजरा साहेब, साहेब मुजरा मेरा  
 रे ॥ साहेब सुविधि जिनेसर प्यारा, चरण पखालुं  
 प्रभु तेरा रे ॥ मु० ॥ १ ॥ केशर चंदन चरचुं अंगें, फूल  
 चढावुं सेरा रे ॥ घंट वजावुं ने अगर उखेवुं, करुं

प्रदक्षिण फेरा रे ॥ मु० ॥ १ ॥ पंच शब्द वाजां वज  
डावुं, नृत्य करुं अधिकेरां रे ॥ रूपचंद गुण गावत  
हखित, दास निरंजन तेरा रे ॥ मु० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ प्रजाती रागमां स्तवन ॥

॥ प्रभु तोरी ठकुराइकुं, गढ तीन बिराजे ॥ रतन  
रचित मानुं देहकी, दूती मंमल ठाजे ॥ प्र० ॥ १ ॥  
जलकत डहुं दिशि तेजमें, बिच कंचन कोटा ॥ तेरे  
प्रबल प्रतापका, मानुं मंमल महोटा ॥ प्र० ॥ २ ॥  
अतिउज्ज्वल रूपें बन्या, तीजा गढ तेरा ॥ तीन जुव  
नमें विस्तया, जस सुजस घणोरा ॥ प्र० ॥ ३ ॥ चा  
मानंद जिनंदकी, कहा कहुं रे वडाई ॥ आनंद व  
दत लघु बुझिपें, ठवी बरनी न जाई ॥ प्र० ॥ ४ ॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवन ॥ प्रजाती रागमां ॥

॥ तुम विना कौन मेरी, शुद्ध छेनहार हे ॥ तुम० ॥  
निशिदिन ध्यान धरुं, कीजे क्युं अवार हे ॥ पारसनाथ  
साहेबजीको, नाम साचो सार हे ॥ तु० ॥ १ ॥ प्रा  
त ताही सेवा करुं, पुष्पनके हार हे ॥ अगर सुवास  
वास, खेवत सवार हे ॥ तु० ॥ २ ॥ मरपत हुं सेवा  
करुं, जूल चूक माफ हे ॥ मेंतो हुं अजान प्रभु, आ  
पही सफार हे ॥ तु० ॥ ३ ॥ मेरे तो प्रभु एक तूंऊ,  
सेवक हजार हे ॥ अश्वसेन नंदनजीशुं, मेरो पूरण  
प्यार हे ॥ तु० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ आदिजिनस्तवनं ॥

॥ अंग उमाहो मुऊने अतिघणो, अलबेला जिनवर



जी ॥ जेटवा रूपन जिणंद, मारा वहाला श्रीजिनवर  
 जी ॥ १ ॥ पालीताणुं नगर सोहामणुं ॥ अ० ॥ रूडी  
 ललिता सरनी पाल ॥ मा० ॥ जिहां रे आंबा वडला घ  
 णा ॥ अ० ॥ फूकी रइ चंपा केरी माल ॥ मा० ॥ २ ॥  
 धन ते पंखी रे पारेवडां ॥ अ० ॥ शेत्रुंजे वसी रह्या मोर  
 ॥ मा० ॥ उमाहो करीने जे घरें रह्या ॥ अ० ॥ ते मा  
 णस नही ढोर ॥ मा० ॥ ३ ॥ शेत्रुंजा मारग चालतां,  
 ॥ अ० ॥ उमे ठे जीणी जीणी खेह ॥ मा० ॥ मेलां था  
 शे रे महारां कापडां ॥ अ० ॥ निर्मल थाशे मारी देह ॥  
 ॥ मा० ॥ ४ ॥ ऊंचुं देहेरुं रे आदिनाथनुं ॥ अ० ॥ आ  
 गल चोक विशाल ॥ मा० ॥ जिहां मेले मेले घणा  
 मानवी ॥ अ० ॥ गावे प्रभुगुणमाल ॥ मा० ॥  
 ॥ ५ ॥ केशर घसी नखा वाटका ॥ अ० ॥ पूजवा  
 आदिजिणंद ॥ मा० ॥ फूलडानो हार कंठें सोहियें  
 ॥ अ० ॥ दीवडानी ज्योति अखंम ॥ मा० ॥ ६ ॥  
 गिरिवर दीठे माहरे ॥ अ० ॥ दिलमां उपजे आणंद ॥  
 मा० ॥ जेटवानो रे मुऊने कोम घणो ॥ अ० ॥ प्रेम  
 घणो जिनचंद ॥ मा० ॥ ७ ॥ इति संपूर्ण ॥

॥ अथ सामायिकलाज सङ्काय ॥

॥ कर पडिक्कमणुं नावगुं, दोय घडी शुनध्या  
 न ॥ लाल रे ॥ परनव जातां जीवने, संबल साचुं  
 जाण ॥ लाल रे ॥ कर० ॥ १ ॥ श्रीमुख वीर इम  
 ऊचरे, श्रेणिक रायप्रतें जाण ॥ ला० ॥ लाख खांमी  
 सोना तणी, दीये दिन प्रत्यें दान ॥ लाल रे ॥

क० ॥ २ ॥ लाख वरस जगें ते बली, एम दीये ड्य  
 अपार ॥ ला० ॥ एक सामायिकने तोलें, नावे तेह  
 जगार ॥ ला० ॥ क० ॥ ३ ॥ सामायिक चवविसडो,  
 जलुं वंदन दोय दोय वार ॥ लाल रे ॥ व्रत संजारो  
 रे आपणां, ते नवकर्म निवार ॥ लाल रे ॥ कर० ॥  
 ॥ ४ ॥ कर काउस्सग गुज ध्यानथी, पञ्चस्काण सू  
 धुं विचार ॥ लाल रे ॥ दोय सज्जायें ते बली, टालो  
 टालो अतिचार ॥ लाल रे ॥ कर० ॥ ५ ॥ श्रीसामायिक  
 प्रसादथी, लहीयें अमर विमान ॥ लाल रे ॥ धर्मसिंह  
 मुनि एम नणे, ए ठे मुक्ति निदान ॥ लाल रे ॥ क० ॥ ६ ॥

॥ अथ पार्श्वजिनस्तवनं ॥

॥ कृपा करो ने गोडी पास जिनेसर, तुमं साहिव  
 अंतरजामी ॥ क० ॥ कंचे कंचे गिरिपर प्रचुजी  
 बिराजे, आस पास ग्यानी ध्यानी ॥ क० ॥ १ ॥  
 नील वरण प्रचु अंगीयां बिराजे, सूरतकी जाउं बलि  
 हारी ॥ क० ॥ बांदे बाजुबंध बेहिरखा बिराजे, कुंम  
 लकी ठबि है न्यारी ॥ क० ॥ २ ॥ टूढत टूढत प्रचु  
 जीकु पायो, पूरण पदवी अब आई ॥ क० ॥ नाथ नि  
 रंजन नाम तुमारो, रूपचंद पदवी पाई ॥ क० ॥ ३ ॥

॥ अथ समेतशिखरगिरिस्तवनम् ॥

॥ तुंहि नमो नमो समेतशिखर गिरि, आदीश्वर  
 अष्टापद सिद्धा, वासुपूज्य चंपापुरी ॥ तुं० ॥ नेम गया  
 गिरनारें मुक्तें, वीर पावन पावापुरी ॥ तुं० ॥ १ ॥  
 वीशे टूंकें वीश जिनेसर, सिद्धा अणसण आदरी ॥

( ३३५ )

॥ तुं० ॥ ज्योतिस्वरूपें हुआ जगदीश्वर, अष्ट कर्म  
नो क्षय करी ॥ तुं० ॥ १ ॥ पश्चिम दिशि शत्रुंजो ती  
रथ, पूरव समेत शिखर गिरि ॥ तुं० ॥ मोक्ष नग  
रना दोये दरवाजा, जविक जीब रह्या संचरी ॥  
॥ तुं० ॥ ३ ॥ जगव्यापक जे अक्षर साहेब, पाप  
संताप काटन गिरि ॥ तुं० ॥ मोहोदुं तीरथ मोहोदो म  
हिमा, गुण गावत सुरासुरी ॥ तुं० ॥ ४ ॥ विषम  
पाहाड उजाडमें चिहुं दिशि, चोर चरड रह्या संचरी  
॥ तुं० ॥ जयंकर मूंगर नूमि मरावण, देखत मूंगर  
थरहरी ॥ तुं० ॥ ५ ॥ संवत सत्तरजें चुम्माजे, चै  
त्र शुदि चोर्थे धरी ॥ तुं० ॥ कहे जिनहर्ष वीशे दू  
कें, जावहुं चैत्यवंदन करी ॥ तुं० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अजिनंदन जिनस्तवनं ॥

॥ अजिनंदन नाथ जुहारुं जी ॥ तीरथना रसिया ॥  
प्रभु आवतां पाप निवारुं जी ॥ मुज हइडे वसि  
या ॥ १ ॥ प्रभु आगल पाप प्रकाशुं जी ॥ ती० ॥  
प्रभु पुण्यथी पाम्या आ शुं जी ॥ मु० ॥ २ ॥ में तो  
रसमां बहुरस जेव्यो जी ॥ ती० ॥ आरंज करी प  
रिग्रह मेव्यो जी ॥ मु० ॥ ३ ॥ में तो क्रोधशुं मधुर  
स पीधा जी ॥ ती० ॥ रागघेष करी कूडां आल दी  
धां जी ॥ मु० ॥ ४ ॥ में तो कूड कपट घणां कीधां जी  
॥ ती० ॥ में तो लोचशुं परधन लीधां जी ॥ मु०  
॥ ५ ॥ हुं तो परनारीशुं रंगें रम्यो जी ॥ ती० ॥ व्रत  
जांगीने रातें जम्यो जी ॥ मु० ॥ ६ ॥ ज्यारें लेशे प्र

छुजी जेखुं जी ॥ ती० ॥ पग मांमघानी जग्या न देखुं  
 जी ॥ मु० ॥ ७ ॥ प्रचु दीठी अणदीठी करजो जी  
 ॥ ती० ॥ मारी वीनतडी चित धरजो जी ॥ मु० ॥  
 ॥ ८ ॥ एवी कृष्णदासनी वाणी जी ॥ ती० ॥ स्तव  
 न जोड्युं ठे अमृत वाणी जी ॥ मु० ॥ ९ ॥

॥ अथ श्रीवीरजिन स्तवन ॥ फतमलनी देशी ॥

॥ जगपति तारक श्रीजिनदेव, दासनो दास तुं ता  
 हरो ॥ जगपति तारक तुं किरतार, मन मोहन प्रचु  
 माहरो ॥ १ ॥ जगपति ताहारे तो नक्त अनेक, मा  
 हारे तो एकज तुं धणी ॥ जगपति वीरामां तुं महा  
 वीर, सूरत ताहारी सोहामणी ॥ २ ॥ जगपति त्रि  
 शला राणीनो तुं तन, गंधार बंदर गाजीयो ॥ जग  
 पति सिद्धारथ कुल शणगार, राज राजेंसर राजी  
 यो ॥ ३ ॥ जगपति जगतांनी नांगे ठे नीड, नीड  
 पडे रे प्रचु पारिखे ॥ जगपति तुंही प्रचु अगम अ  
 पार, समज्यो न जाये मुळ पारिखे ॥ ४ ॥ जगपति  
 उदय नमे कर जोड, सत्तर नेव्याशी समे कियो ॥ जग  
 पति खंजायत जंबूसर संघ, जगवंत जावसुं जेटियो ॥ ५ ॥

॥ अथ राणकपुरनुं स्तवन ॥ फतमलनी देशी ॥

॥ जगपति जयो जयो कृष्ण जिणंद, धरणासाहे  
 धन खरचीयो ॥ जगपति प्रौढ कराव्यो प्रासाद, उलट  
 नर सुर नर अरचियो ॥ १ ॥ जगपति आज्ञुं मांमे  
 वाद, सोवन कलशें जल हले ॥ जगपति चोबारी  
 चोशाल, पेखंतां पातक गले ॥ २ ॥ जगपति अति

सुंदर उदाम, नलिनी गुल्म विमान श्यो ॥ जगपति  
 उत्तम पुण्य अंबार, निरुपम धनद निधान श्यो ॥ ३ ॥  
 जगपति उल्लें उल्लें थंन, कीधी अनुपम कोरणी ॥ जग  
 पति करती नाटारंज, पूतलीयो चित्त चोरणी ॥ ४ ॥  
 जगपति नानिनरेसर नंद, राणकपुरनो राजीयो ॥  
 जगपति सहु रायां शिरदार, जगमांहे जस गाजीयो  
 ॥ ५ ॥ जगपति देव तुं दीनदयाल, नक्तवत्सल  
 नल्लें जेटीयो ॥ जगपति देखतां तुळ देदार, मोह त  
 णो मद मेटीयो ॥ ६ ॥ जगपति उदयरतन उवजा  
 य, संवत सत्तर त्राणुं समे ॥ जगपति फागणवदि प  
 डवे दिन्न, सादडी संघ सहित नमे ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ शियज विषे शीखामणनी सवाय ॥

॥ प्रभु साथें जो प्रीत वंढो तो, नारीसंग निवा  
 रो रे ॥ कपटनी पेटी कामणगारी, निश्चय नरक  
 ड्वारो रे ॥ १ ॥ एहनी गति एहिज जाणे, रखे  
 कोइ संदेह आणे रे ॥ ए० ॥ ए आंकणी ॥ अबला  
 एवुं नाम धरावे, सबलाने समजावे रे ॥ हरिहर ब्र  
 ह्म पुरंदर सरिखा, ते पण दास कहावे रे ॥ ए० ॥ २ ॥  
 एक नरने आंखें समजावे, बीजाशुं बोले करारी रे ॥  
 त्रीजाशुं कर्म करे तक जोई, चोथो धरे चित्त मळा  
 री रे ॥ ए० ॥ ३ ॥ व्यसन विलुद्धि न जुवे विमासी,  
 घटता घटती वातें रे ॥ मूळ परदेशीनी परें जोइ,  
 मलजो एह संघातें रे ॥ ए० ॥ ४ ॥ जांघ चिरीने  
 मांस खवाडशुं, तो पण न थइ तेहनी रे ॥ मोहनी

मीठी दीलनी जूठी, कामिनी न होये केहनी रे ॥  
 ए० ॥ ५ ॥ पगले पगले मन ललचावे, श्वासोच्छ्वास  
 साथी जूदी रे ॥ गरज देखीने घहेली थाये, काज र  
 रे जाये कूदी रे ॥ ए० ॥ ६ ॥ करणी एहनी कली  
 न जाये, नयण तणी गति न्यारी रे ॥ गावुं एहनूं  
 जेणें गावुं, तेणें निज सज्जति हारी रे ॥ ए० ॥ ७ ॥  
 लाख जांते ललचावे लंपट, विरुड ने विपनी क्यारी रे ॥  
 एहना पासमां जे नर पडिया, ते हास्या जमवारी  
 रे ॥ ए० ॥ ८ ॥ कोडि जतन करी कोइ राखे, मान  
 नी महोल मजारी रे ॥ तो पण तेहने सूतां वेचे,  
 धडे न रहे धूतारी रे ॥ ए० ॥ ९ ॥ जो लागी तो सर्व  
 स्व लूटे, रूठी राहसी तोले रे ॥ एम जाणीने अल  
 गा रहेजो, उदयरतन इम ब्रोले रे ॥ ए० ॥ १० ॥

॥ अथ संजवजिनस्तवन ॥

॥ मोहन तारा मुखडाने मटके ॥ मोहन० ॥  
 ए आंकणी ॥ नयण रसाजां ने वयण सुखाजां, चि  
 तडुं लीधुं चटके ॥ मोह० ॥ प्रभुजी केरी नक्ति क  
 रंतां, कर्मनी कस तटके ॥ मोह० ॥ १ ॥ मुळ मन  
 लोची नमर तणी परें, जिनगुण कमलें अटके ॥ मो  
 ह० ॥ रत्नचिंतामणि मूकीने राचे, कहो कोण काचतणे  
 कटके ॥ मोह० ॥ २ ॥ ए जिन शुणतां क्रोधादिक सद्गु,  
 आस पासथी पटके ॥ मोह० ॥ केवलनाणी बहु सुख  
 दानी, कुमतिकूं दूर पटके ॥ मोह० ॥ ३ ॥ ए जिनने  
 जे दिलमां नाणे, तेतो चूव्या नटके ॥ मोह० ॥ जाव

नक्तिशुं उलग करतां, वंछित सुखडें सटके ॥ मोह०  
॥ ४ ॥ मूरत संजव जिनेश्वर केरी, जोता हैयहुं ह  
टके ॥ मोह० ॥ नित्यलाज कहे ए जिन साचो, गु  
ण गाउं हुं लटके ॥ मोह० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ दानविषे स्वाध्याय ॥

॥ चोत्रीश अतिशयवंत, समवसरणें हो बेसी ज  
गगुरु ॥ उपदिशे अरिहंत, दान तणा गुण हो पहेले  
सुख करु ॥ १ ॥ दान दोलत दातार, दानें नांजे हो  
नवनो आमलो ॥ दानना पांच प्रकार, उलट आणी  
हो नवियण सांजलो ॥ २ ॥ पहेलुं अजय सुदान,  
दया हेतें हो निज तनु दीजीयें ॥ जेम मेघरथ रा  
जन्न, जीव सहुने हो निर्जय कीजीयें ॥ ३ ॥ बीजुं दान  
सुपात्र, तृण मणि कंचण हो अदत्त जे परिहरे ॥  
निर्मल व्रत गुणगात्र, सत्तर नेदें हो संयम जे धरे ॥  
॥ ४ ॥ आहारादिक सुविचार, तेहने दीजें हो हाजर  
जे होवे ॥ जिम शालिजइ कुमार, सुपात्र दानें हो महा  
सुख नोगवे ॥ ५ ॥ अनुकंपादान विशेष, त्रीजुं देतां  
हो पात्र न जोश्यें ॥ अन्ननो अर्थी देखी, तेहने  
आपी हो पुण्यवंत होश्यें ॥ ६ ॥ धन पामी ससनेह,  
कारण पांखे हो नात जे पोषीयें ॥ उचित चोथुं ए  
स्वजन, कुटुंब सहेजें हो जे संतोषीयें ॥ ७ ॥ पांचमुं  
कीर्त्तिदान, जाचक जनने हो जे कांइ आपीयें ॥  
तेणें वाधे जस वान, जगमां सघने हो नलपण  
आपीयें ॥ ८ ॥ पामे चिंतवित पात्र, जेहथी प्राण

हो निर्मल सुख लहे ॥ दान देतां हूण मात्र, विलेख  
न कीजें हो उदयरतन कहे ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ शियल स्वाध्याय ॥

॥ धन्य धन्य ते दिन माहरो ॥ ए देशी ॥

॥ शियल समुं व्रत को नही, श्रीजिनवर जाखे रे ॥  
सुख आपे जे शाश्वतां, दुर्गति पडता राखे रे ॥ शी० ॥  
॥ १ ॥ व्रत पञ्चस्काण विना जुठ, नव नारद जेह रे ॥  
एकज शियल तणे बलें गया मुक्तें तेह रे ॥ शि० ॥ १ ॥  
साधु अने श्रावक तणां, व्रत ठे सुखदायी रे ॥ शियल  
विना व्रत जाणजो, कुशका सम जाइ रे ॥ शि० ॥ ३ ॥  
तरुवर मूल विना जिस्यो, गुण विण लाल कृमान रे ॥  
शियल विना व्रत एहवुं, कहे वीर जगवान रे ॥ शि०  
॥ ४ ॥ नव वाडें करी निर्मलुं, पहेलुं शीलज धरजो रे ॥ उद  
यरत्न कहे ते पढी, व्रतनो खप करजो रे ॥ शि० ॥ ५ ॥

॥ अथ तपःस्वाध्याय ॥

॥ ईमर आंबा आंबली रे ॥ ए देशी ॥

॥ कीधां कर्म निकंदवा रे, लेवा मुक्ति निदान ॥  
हत्या पातक बूटवा रे, नही कोइ तप समान ॥ न  
विक जन, तप सरिखुं नही कोय ॥ १ ॥ उत्तम  
तपना योगथी रे, सुर नर सेवे पाय ॥ लब्धि अछा  
वीश ऊपजे रे, मनवंठित फल आय ॥ नवि० ॥  
॥ तप० ॥ २ ॥ तीर्थकर पद पामीयें रे, नासे सघ  
ला रोग ॥ रूप लीला सुख साहेबी रे, लहीयें तप  
संयोग ॥ नवि० ॥ तप० ॥ ३ ॥ अष्ट करमना उधने



रे, तप टाळे ततकाल ॥ अवसर लहाने तेहनो रे,  
 खप करजो उजमाल ॥ नवि० ॥ तप० ॥ ४ ॥ ते शुं ठे  
 संसारमां रे, तपथी न होवे जेह ॥ मनमां जे जे  
 कामियें रे, सफल फळे सही तेह ॥ नवि० ॥ तप० ॥  
 ॥ ५ ॥ बाह्य अन्यंतर जे कहा रे, तपना बार प्रका  
 र ॥ होजो तेहनी चालमां रे, जिम धनो अणगार ॥  
 ॥ नवि० ॥ तप० ॥ ६ ॥ उदयरतन कहे तपथकी रे,  
 वाधे सुजस सनूर ॥ स्वर्ग होये घर आंगणुं रे, दुर्गति  
 नासे दूर ॥ नवि० ॥ तप० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ जाव स्वाध्याय ॥

॥ धन धन ते दिन माहरो ॥ ए देशी ॥

॥ रे नवि जाव हृदय धरो, जे ठे धर्मनो धोरी ॥  
 एकलमह्न अखंम जे, कापे कर्मनी दोरी ॥ रे नवि०  
 ॥ १ ॥ दान शिथल तप त्रण ए, पातक मज धोवे ॥  
 जाव जो चोथो नवि मळे, तो ते निष्फल होवे ॥  
 रे नवि० ॥ २ ॥ वेद पुराण सिद्धांतमां, षटदर्शन  
 नांखे ॥ जाव विना नव संतति, पडतां कोण राखे ॥  
 ॥ रे नवि० ॥ ३ ॥ तारक रूप ए विश्वमां, जंप्पे जग  
 नाण ॥ नरतादिक शुन जावथी, पाय्या पद निर  
 वाण ॥ रे नवि० ॥ ४ ॥ औषध आय उपाय जे, मंत्र  
 यंत्र ने मूली ॥ जावें सिद्ध होवे सदा, जावविण सहु  
 धूली ॥ रे नवि० ॥ ५ ॥ उदयरत्न कहे जावथी, कोण  
 कोण नर तरिया ॥ शोधी जो जो सूत्रमां, सज्जन  
 गुणदरिया ॥ रे नवि० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ दान शील तप जाव स्वाध्याय ॥

॥ श्रीमहावीरें जांखीया, सखी दानना चार प्र  
कार रे ॥ दान शीयल तप जावना, सखि पंचम ग  
तिदातार रे ॥ श्रीमहावीरें० ॥ १ ॥ दानें दोलत पा  
मीयें, सखि दानें कोड कव्याणो रे ॥ दान सुपात्र प्र  
जावथी, सखि कयवन्नो शालिनइ जाणो रे ॥ श्रीमहा०  
॥ २ ॥ शियलें संकट सखि टले, सखि शीलें वंछित  
सिद्ध रे ॥ शियलें सुर सेवा करे, सखि शोल सती  
परसिद्ध रे ॥ श्रीमहा० ॥ ३ ॥ तप तपो नवि जाव  
शुं, तपें निर्मल तन्न रे ॥ वर्षोपवासी कृषनजी, सखि  
धन्नादिक धन धन्न रे ॥ श्रीमहा० ॥ ४ ॥ जरता  
दिक शुन जावथी, सखि पाम्या पंचम ठाम रे ॥  
उदय रतनमुनि तेहने, सखि, नित्य करे प्रणाम रे ॥  
॥ श्रीमहा० ॥ ५ ॥ इति जावस्वाध्याय ॥

॥ अथ शंखेश्वर पार्श्वजिनस्तवनं ॥

॥ नांजी नांजी नांजी ठेडो नांजी ॥ ए देशी ॥ तें मुज  
मोह महामद पायो, तेणें हुं थयो मतवालो ॥ तृ  
ष्णा तरुणी आणी मिलावी, वच्चमां करीअ दला  
लो ॥ अलगी रहेने, रहेने रहेने रहेने ॥ अलगी० ॥  
हारे कांइ कुमति पडी ठे केडें ॥ अलगी० ॥ तुज दूतीने  
कोणज तेडे ॥ अलगी० ॥ १ ॥ कर्म नटावो तुं तेडी  
आवी, तेणें पण मांमी बाजी ॥ मिथ्या गीत तणे  
नणकारे, मुजने कीथो राजी ॥ अ० ॥ २ ॥ नरक  
निगोद तणा मंदिरमें, पातक पलंग बिठायो ॥ मुजने

नोलवी तिहां बेसाड्यो, पण सुमतें समजायो ॥  
 अ० ॥ ३ ॥ जब में मदिरा ठाक निवारी, समकित  
 सुखडी चाखी ॥ उपशम रस सुधारस पीयो, चित्त  
 चेतनने दाखी ॥ अ० ॥ ४ ॥ श्रीशंखेश्वर चरण  
 सरोरुह, लागी ध्याननी ताली ॥ रूपविबुधनो मोहन  
 पनणे, जिनमत स्तुति लटकाली ॥ अ० ॥ ५ ॥

॥ अथ सुविधिजिन स्तवः ॥ कच्ची नषामां ॥

॥ अच्छो असीं गमण वेंधा, वढेजे पेर पोंधा ॥  
 केशर जो घोर घोरिंधा, वढी वढी पूजा कंधा ॥ अ  
 च्छो० ॥ १ ॥ दीवबंदिरमें दिछो साहेब, सच्चो सुबुद्धि  
 देव ॥ नांश्यां अछ्वा पाणजो अना, जज्जी कज्जा  
 सेव ॥ अ०॥२॥ को चे अछ्वा को चे कंथड, को चे जे  
 सर पीर ॥ को चे पछो को चे दावल, को चे बावो धीर ॥  
 अ० ॥ ३ ॥ एडा देव में दिछा जज्जा, विछा ठामो  
 ठाम ॥ मूँके साहेब तुंहीज गम्यो, आशाजो विसरा  
 म ॥ अ० ॥ ४ ॥ सर्ग मृत्यु पातालमें एडो, बेउ नांए  
 कोए नाथ ॥ मिणी माडुयेंजी आस्या पूरे, सच्चो  
 सिद्धजो साथ ॥ अ० ॥ ५ ॥ तोजी अंगी चंगी दि  
 छी, सोवनमें नरपूर ॥ मढे मोड जलामल दीपे,  
 नरकें उगिउ सूर ॥ अ० ॥ ६ ॥ तोजे देवलमें दीआ  
 जज्जा, जज्जा फूजेंजा ढग ॥ तोजो देवल दिछे नांयो,  
 हेडो हुंयो सग ॥ अ०॥ ७ ॥ मुंजी आस्या पूरजहा  
 णे, सच्चा सुविधिबुधिनाथ ॥ जिनविजय चे साहेब मुंजा,  
 तुंही तुंही जगनाथ ॥ अ० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ स्तवनं ॥ राग प्रजाती ॥

॥ आजको लाहो लीजीयें, काल केणें रे दीठी ॥ रह  
ए न पावे पाघडी, जब आवे चीठी ॥ आ० ॥ १ ॥  
मनसा वाचा कर्मणा, आलस सब ठंढी ॥ ध्यान धरुं  
अरिहंतनुं, स्थानक शिर मंढी ॥ आ० ॥ २ ॥ विनय  
मूल जे पालीयें, श्रीजिनवर धर्म ॥ जावें शुद्ध आरा  
धतां, बूटे निजकृत कर्म ॥ आ० ॥ ३ ॥ दान शि  
यल तप जावना, ए चार प्रकार ॥ दया शुद्ध आरा  
धीयें, पामीयें जवपार ॥ आ० ॥ ४ ॥ धर्मनो म  
र्म ए जाणजो, राग द्वेष ने वारो ॥ केवल ज्ञान निपा  
डने, देवचंड पद सारो ॥ आ० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ प्रजातीरागमां स्तवन ॥

॥ में परदेशी दूरका, प्रजु दरिसणकुं आया ॥  
लाख चोराशी देश फखा, तेरा दरिसन पाया ॥ में० ॥  
॥ १ ॥ सूक्ष्म बादर निगोदमां, वनसपति बसाया ॥  
अप तेउ वाउ कायमां, काल अनंत गमाया ॥  
में० ॥ २ ॥ स्वर्ग नरक तिर्यचमें, केता जन्म गमा  
या ॥ मनुष्य अनारय में जम्या, तिहां नही दरिसन  
पाया ॥ में० ॥ ३ ॥ तेरो मेरे दरसन अब जयो, पू  
रण पुण्य पसाया ॥ रूपचंद कहे जाग्य खुले, निरंज  
न गुण गाया ॥ में० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ पार्श्वनाथस्तवन ॥ कळीजाषामां ॥

॥ अमां आंउं नेहडो कंधी, गोडीचे पेर वेंधी ॥  
केसरजो घोर घोरिंधी, विंजि आंउं पूजा कंधी ॥ इन

वामाजीजो नीगरो एडो, बेयो नाए जुगमें तेडो ॥  
 अमां० ॥ १ ॥ सरग मरत पातालजा माडु, जङ्गा  
 सेवी पाय ॥ कामणगारो पासजी आयल, मुजे दि  
 लमें जाय ॥ अमां० ॥ २ ॥ सर्पि सर्पा जेरे बरंधा,  
 दिनो जे नवकार ॥ पासजीजो नालो गिनी दुआ,  
 इंइ इंझाणी सार ॥ अमां० ॥ ३ ॥ बेआ देव दिछा  
 जङ्गा, देव न केडे कम्म ॥ तुं निरागी गति निवारण,  
 अछे कमेंजो दम्म ॥ अमां० ॥ ४ ॥ जेमां विंजा ते  
 मां इनके नजियां, जगमें वमो पीर ॥ जेहर्षेजो सां  
 मी मव्यो, खीछी दुआ खीर ॥ अमां० ॥ ५ ॥

॥ अथ सिद्धाचल स्तवनं ॥

॥ चालो चालो सिद्धाचल जईयें रे, रूपनदेव  
 सुखकारीयां ॥ चालो चालो सिद्धा० ॥ ए आंकणी ॥  
 नानिराया मरुदेवीको नंदन, हारे एतो जुगला धर्म  
 निवारियां रे ॥ रू० ॥ १ ॥ आदिजिन नेढ्यां सवि  
 दुःख मेढ्यां, हारे में तो पाप करम सब टालियां रे ॥  
 रू० ॥ २ ॥ रायण रूख समोसखा स्वामी, हारे ए  
 तो देखी नविक मन मोहियां रे ॥ रू० ॥ ३ ॥ के  
 शर घोली नरी रे कचोली, हारे मेंतो विधिगुं अंगियां  
 रचावियां रे ॥ रू० ॥ ४ ॥ कर जोडी दलचंद गुण गावे,  
 हारे में तो नवोनव शरण तुमारियां रे ॥ रू० ॥ ५ ॥

॥ अथ अनंतजिन स्तवनं ॥

॥ चित्त लागो अनंतजिन चरननसें, चरननसें  
 जिन चरननसें ॥ चि० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ अनंत

नाथजिको दरिसन करकें, मग्न जयो हम मनननसैं  
॥ चि० ॥ २ ॥ प्रभु दरिमनसैं पाप कटत हे, तिमिर  
कटे जैसें अरुननसैं ॥ चि० ॥ ३ ॥ आस करी दा  
स सरणें आयो, घेलचंद पाये परननसैं ॥ चि० ॥ ४ ॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवनं ॥ रागकाफी ॥

॥ आज रे में मुख देख्यो गोडी पारसको, मेरो स  
फल जयो दिन आज ॥ जला जी मेरो सफल जयो ०  
॥ ए आंकणी ॥ अश्वसेन राजाजीको नंदन, माता  
वामाजीको लाल ॥ आ० ॥ १ ॥ कमठ हठावन्  
नागकूं तारन, संजलाव्यो नवकार ॥ आ० ॥ २ ॥  
जवोजव नटकत शरणे दुं आयो, अब तो राखोजी  
मोरी लाज ॥ आ० ॥ ३ ॥ उर देवकूं बौहोत में  
ध्याया, किनसैं न सख्यो मेरो काज ॥ आ० ॥ ४ ॥  
रूपचंद कहे नाथ निरंजन, ऊतारौ नवपार ॥ आ० ॥ ५ ॥

॥ अथ कृष्णजिनस्तवनं ॥ राग काफी ॥

॥ घणुं मोघुं नाम ठे रे, मारे तो केसरीया वालानुं  
घणुं मोघुं नाम ठे ॥ ए आंकणी ॥ कोई सेवे ब्रह्मा  
वाला कोई सेवे शंकर, कोईने विष्णु कोईने राम ठे  
रे ॥ मारे तो ० ॥ १ ॥ काल कंटक करूर जय टाल  
ण, सबल ए शरणनुं ठाम ठे रे ॥ मा० ॥ २ ॥ मू  
लचंद कहे प्रभु जे जगतारण, धुजेवा मंमण मोहोदुं  
धाम ठे रे ॥ मा० ॥ ३ ॥

॥ अथ पार्श्वजिनस्तवनं ॥

॥ प्रगढ्या ते पूरण अविनाशी, जीरे काम क्रोध

सर्वे गया नासी ॥ सुखदायकना ठो स्वामी, जीरे  
 पल पल रूपी प्रभु अंतरजामी ॥ १ ॥ कहुदेश प  
 श्विम धाम, जीरे पावन कीधां ठे सुथरी गाम ॥ धन  
 धन नाग्य उदय कीधां, जीरे पार्श्व प्रभुजीयें दर्शन  
 दीधां ॥ २ ॥ घृतकल्लोल प्रभु परताधारी, जीरे देरुं  
 चणाव्युं अति नारी ॥ देश परदेशना संघ आवे, जी  
 रे पूजा रचावे प्रभुजीनी नावें ॥ ३ ॥ आंगी रचावे  
 उर धरी माला, जीरे रत्न करे ठे रूडा ऊणकारा ॥  
 मुकुट कुंमल शिर ठत्रधारी, जीरे चंडकला गुन दृ  
 ष्टि तारी ॥ ४ ॥ नावी नावनाने प्रभु पूजो, जीरे नाथ  
 विना देव नही दूजो ॥ प्रभु पूजेथी नवजल तरियें,  
 जीरे नाम लेतां नव निधि वरियें ॥ ५ ॥ अठार ठयाशी  
 चैतर मास, जीरे पूनमें प्रभुजी पूज्या पास ॥ प्रेमचंद  
 गुरु ज्ञानी नावें, जीरे घृतकल्लोलजीना गुण गावे ॥ ६ ॥

॥ अथ चंडप्रनजिन स्तवनं ॥ राग काफी ॥

॥ चंदा प्रभुजीसें लाल रे, मोरी लागी लगनवा ॥  
 चंदा प्रभुजीसें ॥ ए आंकणी ॥ लागी लगनवा ठो  
 डी न बूटे, जब लगें घटमें सास रे ॥ मोरी ॥ १ ॥  
 दान शियल तप नावना नावो, जैन धर्म प्रतिपाल  
 रे ॥ मोरी ॥ २ ॥ हाथ जोड कर अरज करत हे,  
 वंदत शैव खुशाल रे ॥ मो ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ कृष्णनजिनस्तवनं ॥

॥ केशरिया वाला, जो लज्जा राखशो तो रेहेरो ॥  
 ॥ ए आंकणी ॥ साहेब कलिजुग केरा कूड कपटमें,

साच नही लवलेरो ॥ केश० ॥ १ ॥ जूठा बोला कोण  
 धाररो, गिरुआना गुण गाओ ॥ केश० ॥ २ ॥ साहेब  
 तमे हमारे हमें तमारे, प्रीत सदा निर्वहेरो ॥ के० ॥  
 ॥ ३ ॥ आसंघातें देह हरो तो, फरि फरिने केशे ॥  
 के० ॥ ४ ॥ साहेब ठेल ठोगाला देवदयाला, धुलेवा  
 धणीने ध्याओ ॥ के० ॥ ५ ॥ रूपनदासनी आशा फलरो,  
 जवजवनां दुःख टलरो ॥ केश० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ वैराग्योपदेशक सखाद ॥

॥ हक मरनां हक जानां यारो, मत को करो गुमा  
 ना ॥ ह० ॥ ए आंकणी ॥ उठण माटी पेरण माटी, मा  
 टीका सराना ॥ वसतीमेंसें चार निकाला, जंगल किया  
 ठिकाना ॥ ह० ॥ १ ॥ हाथ! चडते घोडे चडते, उर  
 आगें नीसाना ॥ नीली पीली बेरख चलती, उत्तर कि  
 या पयाना ॥ ह० ॥ २ ॥ नरपति हो के तखत  
 पर बेठे, जरिया चारि खजाना ॥ सांऊ सकारे मुजरा  
 लेते, ऊपर हाथ बेकाना ॥ ह० ॥ ३ ॥ पोथी पढ  
 पढ हिंदू जूले, मुसलमान कूराना ॥ रूपचंद कहे अ  
 रे जाई संतो, हर्दम प्रभु गुण गानां ॥ ह० ॥ ४ ॥

॥ अथ श्री अनंतजिन स्तवनं ॥

॥ हारे लाल राम पूरा बाजारमां ॥ ए देशी ॥

॥ हारे लाल चतुरशिरोमणि चौदमा, जिनपति  
 नाम अनंत मेरे लाल ॥ गुण अनंत प्रगट कखा,  
 कखो विजावनो अंत ॥ मेरे लाल ॥ चतुर शिरोमणी  
 चित्त धरो ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ हारे लाल चार



अनंता जेहना, आतम गुण अनिराम ॥ मे० ॥  
 ज्ञान दर्शन सुख वीर्यता, कर्म रून्ध्यां ताम ॥ मे० ॥  
 ॥ च० ॥ १ ॥ हारे लाल चतुर धरो निज चित्तमां,  
 ए जिनवरनुं ध्यान ॥ मे० ॥ अर्थो अर्थनिवासने,  
 सेवे धरी बहु मान ॥ मे० ॥ च० ॥ ३ ॥ हारे लाल  
 ज्ञानावरणी ह्य करी, लह्युं अनंतुं ज्ञान ॥ मे० ॥  
 दर्शनावरण निवारतां, दर्शन अनंत विधान ॥ मे० ॥  
 ॥ च० ॥ ४ ॥ हारे लाल वेदनीय विगमे अयुं, सुख  
 अनंत विस्तार ॥ मे० ॥ अंतराय उलंघतां, वीर्य  
 अनंत उदार ॥ मे० ॥ च० ॥ ५ ॥ हारे लाल एम  
 अनंत निज नामनी, स्थिरता थापी देव ॥ मे० ॥  
 जिम तरस्यां सरोवर जजे, तिम स्वरूप जिन सेव ॥  
 ॥ मे० ॥ च० ॥ ६ ॥ इति अनंतजिन स्तवनं ॥

॥ अथ शान्तिजिन स्तवनं ॥

॥ सेवो नवि शान्तिजिणंद सनेहा, शान्तरस गेहा,  
 समामृत गेहा ॥ सेवो नवि शान्ति जिणंद सनेहा ॥ ए  
 आंकणी ॥ राग द्वेष नव पाप संतापित, त्रिविध ताप  
 हर मेहा ॥ माया लोचन राग करी जानो, द्वेष क्रोध  
 मद रेहा ॥ से० ॥ १ ॥ अनंतानुबंधी अप्रत्याख्यानी,  
 पञ्चस्काण संजल ठेहा ॥ निज अन्योन्य सदृशथी  
 चउसठ, संख्या वासित देहा ॥ से० ॥ २ ॥ नोक  
 पाय नव हास्य अरति रति, शोक जुगुप्सा नय वे  
 हा ॥ मन वच काय तपावत तार्थे, कहिये ताप  
 अठेहा ॥ से० ॥ ३ ॥ जैसें वनदव तरुण बाजे,

त्यो अंतर्गत एहा ॥ स्वम शम दम उपशम शीत  
लता, करि जल लहेरी जेहा ॥ से० ॥ ४ ॥ आतमराय  
राज्य अजिसंच्यो, पूजित त्रिभुवन गेहा ॥ तुम शिर  
ठत्रकी ठांहु अमासिर, द्यो स्वरूप अनुपेहा ॥ से० ॥ ५ ॥

॥ अथ मल्लिजिन स्तवनं ॥

॥ जीरे सफल दिवस थयो आजनो ॥ ए देशी ॥

॥ जीरे महिमा मल्लि जिणंदनी, मानी माहरे  
मन्न ॥ मोह महीपति जीनियो, वली तरु पुत्र मद  
न्न ॥ १ ॥ नित नमीएं नीरागता, नमतां होए नव  
ढेह ॥ दुःख दोहग दूरें टले, एहमां नहिं संदेह ॥  
जाणो निःसंदेह ॥ नि० ॥ २ ॥ जीरे मल्लि जिणं  
दनी साहेबी, देखीनें रति प्रीति ॥ वचन कहे निज  
कंतने, पति प्रेमदानी रीति ॥ नि० ॥ ३ ॥ जीरे नाथ  
कहो ए कुण अढे, कहे ए जिनदेव ॥ जिन ते किम  
तुम वश नहिं, कहे एम सत्यमेव ॥ नि० ॥ ४ ॥ जीरे  
नहिं प्रताप इहां माहरो, तो वृथा पौरुष तुझ ॥  
हरव्यो मोह माहारो पिता, तो शो आशरो मुझ ॥  
॥ नि० ॥ ५ ॥ जीरे ते सांजलि रति प्रीति बे, त्रीजो  
काम सबाण ॥ मलीने मल्लि जिणंदनी, शिर धारी  
ढे आण ॥ नि० ॥ ६ ॥ जीरे तेमाटे तुम वीनबुं,  
वारो तेह अशेष ॥ द्यो सौजाग्य स्वरूपनें, सुखलब्धि  
विशेष ॥ नि० ॥ ७ ॥ इति संपूर्ण ॥

॥ अथ स्तवनं राग प्रजातीमां ॥

॥ जागे सो जिनजक्त कहावे, सोवे सो संसारी

हे ॥ कर्म कलंककी कीच नइ है, तार्थें नयो त्रम  
 नारी है ॥ जा० ॥ १ ॥ त्रस जीवकी हत्या न करे, स्था  
 वर करुणा कारी है ॥ कूडी साख कथन नही कूडा,  
 बोले बोल विचारी है ॥ जा० ॥ २ ॥ थापण मौसो  
 अदत्त न लेवे, चोरी मारी निवारी है ॥ पंच साखें  
 पाणिग्रहण करीने, अवर स्त्रीया ब्रह्मचारी है ॥  
 ॥ जा० ॥ ३ ॥ स्नान प्रमित जल जिनकी सेवा,  
 परिग्रह संख्या धारी है ॥ रूपचंद समकितके लहन,  
 ताकूं वंदना हमारी है ॥ जा० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ जीवने समताविषे शिखामण ॥

॥ हो प्रीतमजी प्रीतकी रीत अनीत तजी चित्त  
 धारीयें, हो वालमजी वचन तणो अति ऊँको मरम  
 विचारीयें ॥ हारे तुमें कुमतिके घर जावो ठो, तुमें  
 कुलमां खोट लगावो ठो, धिग एठ जगतनी खावो  
 ठो ॥ हो० ॥ १ ॥ अमृत त्यागी विष पीयो ठो, कुम  
 तिनो मारग लीयो ठो, ए तो काज अयुक्त कीयो ठो ॥  
 ॥ हो० ॥ २ ॥ ए तो मोहरायकी चेटी ठे, शिवसंपत्ति  
 एहथी ठेटी ठे, एतो साकर गलती पेटी ठे ॥  
 ॥ हो० ॥ ३ ॥ एक शंका मेरे मन आवी ठे, किणी  
 विध ए चित्त जावी ठे, एतो दाहण जगमां चावी  
 ठे ॥ हो० ॥ ४ ॥ सहु रुद्धि तमारी खाए ठे, करी  
 कामण चित्त जरमाए ठे, तुम पुण्ययोगें ए पाए  
 ठे ॥ हो० ॥ ५ ॥ मत आंब काज बाउल बोवो,  
 अनुपम नव विरथा नवि खोवो, अब खोल नयण

( ३५१ )

प्रगट जोवो ॥ हो० ॥ ६ ॥ इणविध समता बहु  
समजाए, गुण अवगुण कइ सहु दरसाए ॥ सुणी  
चिदानंद निज घर आए ॥ हो० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ प्रजातीरागमां स्तवन ॥

॥ देव निरंजन नव नय नंजण, तत्त्व ज्ञानका  
दरिया रे ॥ मति श्रुत अवधि ने मनःपर्यव, केवल  
ज्ञानें जरिया रे ॥ देव० ॥ १ ॥ काम क्रोध लोह म  
हुर मारण, अष्ट करमकूं हलीयां रे ॥ चारे नारी दू  
र निवारी, पंचम सुंदरी बरिया रे ॥ देव० ॥ २ ॥  
दरिसन ज्ञान एक रस जाकूं, ह्रीरोदधि ज्युं जरिया  
रे ॥ रूपचंद प्रभु नामकी नावां, जो बेठा सो तरि  
या रे ॥ देव० ॥ ३ ॥ इति संपूर्ण ॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवनं ॥

॥ जीरे आज दिवस नलें उगीयो, जीरे आज  
थयो सुविहाण ॥ पास जिणोसर जेटीया, थयो आ  
नंद कुशल कल्याण हो साजन ॥ सुखदायक जाणी  
सदा, नवि पूजो पास जिणंद ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥  
जीरे त्रिकरण शुद्धियें त्रिहु समे, जीरे निसिही त्र  
ण संजार ॥ तिहुं दिशि निरखण वर्जीनैं, दीजें ख  
मासमण त्रण वार ॥ हो साजन० ॥ २ ॥ जीरे चैत्य  
वंदन चोवीशनो, जीरे स्वरपद वर्ण विस्तार ॥ अर्थ  
चिंतन त्रिहुं कालनां, जिन नाथ निह्नेपा चार हो ॥  
साजन० ॥ ३ ॥ जीरे श्रीजिन पद फरसे लहे,  
कलि मजिनतें पद कल्याण ॥ ते वलि अजर अमर

हुवे, अपुनर्नव शुन निर्वाण हो ॥ सा० ॥ ४ ॥ जी  
रे लोह जाव मूकी परो, जीरे पारस फरस पसाय ॥  
थाय कव्याण कुधातुथी, तिम जिनपद मोह उपाथ  
हो ॥ सा० ॥ ५ ॥ जीरे उत्तम नारी नर घणा, जी  
रे मन धरी नक्ति उदार ॥ आराधी जिनपद नलुं,  
थाये जिन करे जग उपगार हो ॥ सा० ॥ ६ ॥ जी  
रे एहवुं मन निश्चल करी, जीरे निशिदिन प्रचुने ध्या  
य ॥ पामे सौजाग्य स्वरूपनें, निवृत्ति कमलावर था  
य हो ॥ सा० ॥ ७ ॥ इति पार्श्वजिन स्तवनं ॥

॥ अथ शांतिजिन स्तवनं ॥

॥ शांति जिनेसर साहिबा रे, शांति तणो दातार ॥  
सलूणा ॥ अंतरजामी ठो माहरा रे, आतमना  
आधार ॥ स० ॥ शांति० ॥ १ ॥ चित्त चाहे प्रचु  
चाकरी रे, मन चाहे मलवाने काज ॥ स० ॥ नयण  
चाहे प्रचु निरखवा रे, द्यो दरिसण माहाराज ॥ स० ॥  
शांति० ॥ २ ॥ पलक न विसरो मनथकी रे,  
जेम मोरा मन मेह ॥ स० ॥ एक पखो केम रा  
खीयें रे, राज कपटनो नेह ॥ स० ॥ शांति० ॥ ३ ॥  
नेह नजर निहालतां रे, बाधे बमणो वान ॥ स० ॥  
अखूट खजानो प्रचु ताहरो रे, दीजियें वंठित दा  
न ॥ स० ॥ शांति० ॥ ४ ॥ आश करे जे कोइ आ  
पणी रे, नही मूकीयें नीराश ॥ स० ॥ सेवक जा  
णी ने आपणो रे, दीजियें तास दिलास ॥ स० ॥  
शांति० ॥ ५ ॥ दायकने देतां थकां रे, कृण नवि

लागे वार ॥ स० ॥ काज सरे निज दासनां रे, ए मो  
होटो उपगार ॥ स० ॥ शांति० ॥ ६ ॥ एवं जाणीने जग  
धणी रे, दिलमांहि धरजो प्यार ॥ स० ॥ रूपविजय  
कवि रायनो रे, मोहन जयजयकार ॥ स० ॥ शांति० ॥ ७ ॥

॥ अथ वीरजिन स्तवनं ॥

॥ रे बंदन आयो ॥ ए आंकणी ॥ बाजत चेरी  
चुंगल सुर डुंडुनि, नाद सुरपति जायो रे ॥ बंदन  
आयो० ॥ १ ॥ ऐरावत गज सप्तसूँढ शिर, कम  
लहि ठायो ॥ कमल कमल जिन जुवन जुवन, नाट  
क बनायो रे ॥ बं० ॥ २ ॥ सुधर्म ईशान सनत म  
हेंड, आदिदश सवायो ॥ वीश जुवनपति त्रीश दोय,  
व्यंतर बनायो रे ॥ बं० ॥ ३ ॥ चंड सूरज दोय  
ज्योतिषि चोशठ, आय वीर वधायो ॥ बंदत सुरप  
ति विधि लेई, जावना जायो रे ॥ बं० ॥ ४ ॥ सम  
वसरण श्रीवीरजिणंद, त्रिहुं कोट रचायो ॥ देशना  
सरस सुधारस देई, नविक मन लोनायो रे ॥ बं० ॥ ५ ॥  
इत नरपति दसार्णजड जड, तेज सवायो ॥ देखत सु  
र रुद्रि मान ठोडी, निज संजम पायो रे ॥ बं० ॥ ६ ॥  
धनधन शासन जैनधर्म, धनवीर जिनरायो ॥ संघ  
सकल सुखदाय पाय, जयरामें गायो रे ॥ बं० ॥ ७ ॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवनं ॥

॥ सद्गुरुने चरणे नमी, गायशुं गोडी राय ॥ माहारा  
वाला ॥ एकल मदन थलरो धणी, देखतां सुख आय  
॥ माहारा० ॥ १ ॥ वामाजीनो कुंथर लाडलो, जोवा

मुक्त मन थाय ॥ मा० ॥ ए आंकणी ॥ देवघणा धरणी  
 तलें, ते दीठा न सुहाय ॥ मा० ॥ वा० ॥ १ ॥ अ  
 खीयां प्यासी थड रही, देखण प्रनु मुख लाल ॥  
 मा० ॥ अंतरजामी माहेरा, महेर नजरशुं निहा  
 ल ॥ मा० ॥ वा० ॥ २ ॥ यात्रा करणनी होंश ठे,  
 बहु दिननी मनमांहे ॥ मा० ॥ हुकम करो प्रनुजी  
 हवे, आवुं धरिय उच्चाहे ॥ मा० ॥ वा० ॥ ४ ॥ दूर  
 देशांतर जड रह्या, तेनां दरिसण सरज्यां थाय ॥  
 मा० ॥ आस विलुक्षा मानवी, रात दिवस गुण गा  
 य ॥ मा० ॥ वा० ॥ ५ ॥ समरथ साहिबजी हवे,  
 उलंग कीजें तास ॥ मा० ॥ प्रापति होय तो पामीयें,  
 नाग्य फळे सुविलास ॥ मा० ॥ वा० ॥ ६ ॥ तुम वि  
 ण कहो कोण सांजले, सेवकनी अरदास ॥ मा० ॥  
 जाणुं बुं सही आपशो, मनवांढित सुख वास ॥ मा०  
 ॥ वा० ॥ ७ ॥ कूडा कलियुगमां प्रनु, परता पूरण  
 हार ॥ मा० ॥ मारगमां सानिध करो, आप थई अ  
 सवार ॥ मा० ॥ वा० ॥ ८ ॥ नक्तिना रंग अनेक ठे,  
 साहिब सुगुण सुजाण ॥ मा० ॥ मन मोहन जगजी  
 वना, प्रनुजी मुक्त महिराण ॥ मा० ॥ या० ॥ ए ॥ प्रत्य  
 क गोडी पासजी, अरिदल चंजणहार ॥ मा० ॥  
 वाचक सहज सुंदर तणो, नितलान जय जय  
 कार ॥ मा० ॥ वा० ॥ १० ॥ इति संपूर्णम् ॥

॥ अथ सुविधिजिन स्तवनं ॥

॥ सुरत सुविधि जिणंदनी रे लो, महिमावंत प्र

धान ॥ माहारा वालाजी रे ॥ तुमने अमारी वंदना रे  
 लो ॥ नयण पावन थयां देखतां रे लो, गुण अनंत  
 जगवंत ॥ मा० ॥ हवे न ठोडुं तहारी चाकरी रे लो ॥ १ ॥  
 वामा राणीना नंदना रे लो, सांजल दीनना नाथ ॥  
 मा० ॥ तुम० ॥ प्रेम धरी सेवा करूं रे लो, हवे न ठो  
 डुं तारो साथ ॥ मा० ॥ हवे० ॥ २ ॥ सोना रूपानां  
 फूलनी रे लो, आंगी बनाडुं सार ॥ मा० ॥ तु० ॥  
 नाच करूं प्रभु आगलें रे लो, मादलना द्यौंकार ॥  
 ॥ मा० ॥ हवे० ॥ ३ ॥ अमने ते शिवसुख आपजो रे  
 लो, शुं कहुं वारोवार ॥ मा० ॥ तु० ॥ आतम अ  
 नुजव ध्यानथी रे लो, लहीयें वंछित सार ॥ मा० ॥  
 ॥ हवे० ॥ ४ ॥ मनना मनोरथ माहारा रे लो, सफल  
 थया सहु आज ॥ मा० ॥ तु० ॥ नित्यलान प्रभु पद  
 सेवतां रे लो, सीधां सघलां काज ॥ मा० ॥ हवे० ॥ ५ ॥

॥ अथ सिद्धस्वरूप परिकर विपद्दत्याग स्तवनं ॥

॥ अविनाशीनी सेजडीयें. रंग लागो मोरी सज  
 नी ॥ ए आंकणी ॥ केली करंतां गइनवि जाणी, आ  
 जूनी रजनी जी ॥ अवि० ॥ १ ॥ मान सरोवर हंस  
 तणी परें, मुक्ति तणा गुण चुगताता ॥ ज्ञान वन  
 की कुंज गलिनमें, आतमराम रमताता ॥ अवि० ॥  
 ॥ २ ॥ सासू दुर्मति कामणगारी, ससरो लोच धू  
 तारो जी ॥ पिता मोह ठे महापापियो, माया मात  
 ठगारी जी ॥ अ० ॥ ३ ॥ क्रोध पाडोसण केड न  
 मेले, कंदर्प देवर मीठा जी ॥ विषय वासना गइ दे



રાણી, તિહાં અવિનાશી દીઠા જી ॥ અવિ૦ ॥ ૪ ॥  
 એટલાને અલગાજ કરીને, કંત તણા કર જાલ્યા  
 જી ॥ અવિનાશી વાહલાશું રમતાં, મોહ મહુર મદ  
 ગાલ્યા જી ॥ અવિ૦ ॥ ૫ ॥ બાવના ચંદનથી અતિ  
 શીતલ, નાથ નિરંજન વાણી જી ॥ રૂપચંદ રસ પ્રેમે  
 પીતાં, તિહાંથી પ્રીતિ બંધાણી જી ॥ અવિ૦ ॥ ૬ ॥

॥ અથ શ્રીપાર્શ્વજિન પ્રજાતી સ્તવનં ॥

॥ ઊઠો ઊઠો રે મોરા આતમરામ, જિનમુખ જોવા  
 જશ્યેં રે ॥ એ આંકણી ॥ પ્રભુજીનું દરિસણ ઢે અતિ દો  
 હેલું, તે કિમ સોહેલું જાણો રે ॥ વાર વાર માનવ  
 નવ જેહવો, મલવો મુશકિલ ટાણો રે ॥ ઊઠો૦ ॥ ૧ ॥  
 ચાર દિવસનો ચટકો મટકો, દેખીને મત રાચો રે ॥  
 વિણસી જાતાં વાર ન લાગે, કાયા ગઢ ઢે કાચો રે  
 ॥ ઊઠો૦ ॥ ૨ ॥ હીરો હાથ અમૂલક પાયો, મૂઢ  
 પણે મત ગમજો રે ॥ સહજ સલૂણા પાસ જિણંદ  
 શું, રાજી થઈ ચિત્ત રમજો રે ॥ ઊઠો૦ ॥ ૩ ॥ અ  
 નંતગુણેં કરી નરિયા જિનવર, પૂરવ પુણ્યેં પાયો રે ॥  
 તે દેખીને મહારા મનમાં, આનંદ અધિક સોહાયો રે  
 ॥ ઊઠો૦ ॥ ૪ ॥ મનગત મોરા આતમ, રામ કરજો  
 સુકૃત કમાઈ રે ॥ લાજ ઝડય જિણચંદ લક્ષ્ને, વરતે  
 સિદ્ધ સવાઈ રે ॥ વર્તે આનંદ વધાઈ રે ॥ ઊ૦ ॥ ૫ ॥

॥ અથ શત્રુંજય સ્તવનં ॥ રાગ પ્રજાતી ॥

॥ ચાલોને પ્રીતમજી પ્યારા, શેત્રુંજે જશ્યેં ॥ શેત્રુંજે  
 જશ્યેં રે સ્વામી, શેત્રુંજે જશ્યેં ॥ ચાલો૦ ॥ એ આંક

णी ॥ शुं संसारें रह्या ठो मूंजी, दिन दिन तन ठीजे ॥  
 आय आननी ठाया सरिखी, पोतानी कीजें ॥ चा०  
 ॥ १ ॥ जे करवुं ते पेहेलां कीजें, कालें शी वातो ॥  
 अणचिंतवी आवी पडशे, सबलानी लातो ॥ चा० ॥  
 ॥ २ ॥ चतुराईशुं चित्तमां चेती, हाथे ते साथें ॥  
 मरण तणा नीशाणां महोटां, गाजे ठे माथे ॥ चा० ॥  
 ॥ ३ ॥ मात मरुदेवानंदन निरखी. नव सफलो कीजें ॥  
 दानविजय साहेबनी सेवा, ए संबल लीजें ॥ चा० ॥ ४ ॥

॥ अथ पद्मप्रजिन स्तवनं ॥

॥ कृष्ण जिनेसर प्रीतम माहरा रे ॥ ए देशी ॥

॥ कागलीयो किरतार नणी शी परें लिखुं रे, कवि  
 पूढे कर जोड ॥ जिम तिम लखतां हाथ वहे नही  
 रे, लखवानो पण कोम ॥ का० ॥ १ ॥ सैंगो माण  
 स शिवपुर चालतो रे, न मन्ने इण कलि काल ॥ प्रभु  
 लगे सपगो पोहोंची सके नही रे, निपगानो जंजाल  
 ॥ का० ॥ २ ॥ हाथ न जाले कागल केहनो रे, कहो  
 केम वाधे नेह ॥ अलवे ते पाठो उत्तर नवि लखे  
 रे, साहेबीयो निसनेह ॥ का० ॥ ३ ॥ एह निरंजन  
 ते किम रंजीयें रे, जो लिखुं विनती लाख ॥ दूरथकी  
 सेवक हुं थडुं रे, लेइ सहुनी साख ॥ का० ॥ ४ ॥  
 एक पखी जो जाणो पालशुं रे, पदम प्रभुशुं प्रीत ॥ तो  
 कागल जिनराजमां मूकजो रे, इण घर एहीज रीत  
 ॥ का० ॥ ५ ॥ इति पद्म प्रजिन स्तवनं ॥

॥ अथ पार्श्वजिन वंद ॥

॥ सकल सुखाकर जिनवरराय, नवियण वंदो  
पासजीना पाय ॥ नामें नवनिधि होये बली, पूज्यां  
पातक जाये टली ॥ १ ॥ नयरी वणारसी अश्वसेन  
राय, वामादेवी जेहनी माय ॥ सतीय शिरामणि  
रूपनिधान, जिणे जन्म्या प्रभु पार्श्व प्रधान ॥ २ ॥  
अंगे आंगी दीपे अति सार, रत्नजडित शिर मुकुट  
उदार ॥ काने कुंमल बांदे बेरखा, हार हीये सोहे  
नवलखा ॥ ३ ॥ इंदनील सम तनु दीपंत, तेजें  
शशिहर रवि जीपंत ॥ वदनकमल जस पूनम चंद,  
नयन कमल दीठे आनंद ॥ ४ ॥ बाघ सिंह गज  
जय सवि टले, नूत प्रेत व्यंतर नवि बले ॥ रोग  
सोग दुःख वारणहार, पासजीने नामें नित जय  
जयकार ॥ ५ ॥ अंचलगहें उदयो जाण, धर्म मूर्ति  
सूरि जगजाण ॥ तास तणा वाचकवर शिष्य, वंदूं  
राजमूर्ति गणि मुख्य ॥ ६ ॥ तास शिष्य पंमित ऊलट  
धरी, स्तवन रच्युं में खंतें करी ॥ विजयसागर मुनि  
पजणे मुदा, स्तवन जणे तस घर संपदा ॥ ७ ॥

॥ अथ वैराग्यसंवाय ॥

॥ ईआ मेवासमें बे, मरदो मगन जया मेवासी ॥  
कायारूप मेवास बन्यो है, माता ज्युं मेवासी ॥ साहे  
बकी शिर आण न माने, आखर क्या ले जासी  
॥ ई० ॥ १ ॥ खाई अति दुर्गंध खजाना, कोटमां  
बहुंतेर कोठा ॥ वणसी जातां वार न लागे, जैसा

जल पपोटा ॥ ई० ॥ १ ॥ नव दरवाजा वहे निरंतर,  
 दुखदायी दुर्गंधा ॥ क्या उसमें तल्लीन जया हे,  
 रे रे आतम अंधा ॥ ई० ॥ २ ॥ बिनमें ठोटा बिनमें  
 मोहोटा, बिनमें बेह दिखामी ॥ जब जमरेकी नजर ल  
 गेगी, तब बिनमें उड जासी ॥ ई० ॥ ४ ॥ मुलक मुलक  
 की मली लुगाई, बोहोत करी फरीयादी ॥ पण मुजरो  
 माने नही पापी, अति ठाक्यो उन्मादी ॥ ई० ॥  
 ॥ ५ ॥ सारा मुलक मेव्या संतापी, काम करोडी  
 कोटो ॥ लोज तलाटी लोचा वाले, तो किम नावे जो  
 टो ॥ ई० ॥ ६ ॥ उदयरत्न कहे आतम मेरा, मेवासीपणुं  
 मेलो ॥ जगवंतने जेटो जली जांतें, मुक्तिपुरीमें खे  
 लो ॥ ई० ॥ ७ ॥ इति सव्वाय ॥

॥ अथ पार्श्वजिनस्तवनं ॥

॥ रातां जेवां फूलडां ने, सामंल जेवो रंग ॥ आज  
 तारी अंगीनो कांई, रूडो बन्यो रंग ॥ प्यारा पास  
 जी हो लाल, दीनदयाल मुने नयणें निहाल ॥ १ ॥  
 ए आंकणी ॥ जोगीवाडे जागतो ने, मातो धिंगड म  
 द्ध ॥ शामलो सोहामणो ने, जीत्या आठे मद्ध ॥  
 ॥ प्या० ॥ १ ॥ तुं ठे मोरो साहिबो ने, हुं हुं तारो  
 दास ॥ आश पूरो दासनी कांई, सांजली अरदास ॥  
 प्या० ॥ २ ॥ देव सघला दीठा तेमां, एक तुं अवद्ध ॥  
 लाखेणुं ठे लटकुं तहारुं, देखी रीजे दिद्ध ॥ प्या० ॥  
 ॥ ४ ॥ कोइ नमे पीरनेने, कोइ नमे राम ॥ उदयरत्न  
 कहे रे प्रभु, मारे तुमहुं काम ॥ प्या० ॥ ५ ॥ इति ॥

( ३६१ )

॥ अथ शांतिजिन स्तवनं ॥

॥ सकल सुखाकर, शांति जिनेसर राय ॥ हरषें  
गुण गाइश, वांदीश प्रभुजीना पाय ॥ १ ॥ हृदिणा  
उर नयरी, विश्वसेन नूपाल ॥ राणी अचिरा देवी,  
शियलगुणें सुविशाल ॥ २ ॥ तस कूखें उपना,  
स्वामी ते शांति जिणंद ॥ जन्ममहोत्सव आव्या, सुर  
नर चोशठ इंड ॥ ३ ॥ नर जोवन पाम्या, रायनी  
रुद्धि अनंत ॥ दइ दान संवहरी, दीक्षा ले जगवंत  
॥ ४ ॥ वली केवल पाम्या, लाख वरषनी आय ॥  
अणसणुं पोहोता, समेतशिखर सिद्ध थाय ॥  
॥ ५ ॥ नमो शांति जिनेश्वर, नविक जीव हितका  
री ॥ जणें वाचक शंकर, देजो सेव तुमारी ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीआबूजीनुं स्तवन ॥

॥ आबू पर्वत रुअडो रे लाल, ऊंचो ते गाउडा  
बार रे ॥ आदीसर देव ॥ पाए चढतां दोहिलो रे ला  
ल, जिहां नथी पुण्यनो पार रे ॥ आ० ॥ आबू० ॥  
॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ पहेलां आदीसर जुहारीयें रे ला  
ल, पठें सद्दु परिवार रे ॥ आ० ॥ वलता नेमीस  
र जुहारीयें रे लाल ॥ मुक्ति तणो दातार रे ॥ आ० ॥  
आबू० ॥ २ ॥ देरा सामां दोय जोडलां रे लाल ॥  
विमल महेतो चड्या तुरंग रे ॥ आ० ॥ वस्तुपाल तेज  
पालना जोडलां रे लाल, चामर ढले दोय अंग रे ॥  
॥ आ० ॥ आबू० ॥ ३ ॥ देराणी जेठाणीना आरीया  
रे लाल, खरच्या ते लाख अठार रे ॥ आ० ॥ रूपा ब

रोबर कोरणी रे लाल, सोनुं घडे सोनार रे ॥ आ०  
॥ आबू० ॥ ४ ॥ एकावन उरसीया जला रे लाल,  
सूखड केशर चंग रे ॥ आ० ॥ चंपा सेवंत्रीना जा  
डुवां रे लाल, जाणे प्रियशुं प्रीतम रंग रे ॥ आ० ॥  
॥ आबू० ॥ ५ ॥ अचल गिरि वधामणा रे लाल, चौमु  
ख प्रतिमा चार रे ॥ आ० ॥ बलि बलि सेवक वीनवे रे  
लाल, आवागमण निवार रे ॥ आ० ॥ आबू० ॥ ६ ॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवनं ॥

॥ लागो मेरो पारस प्रभुजीसैं ध्यान ॥ लागो० ॥  
मुगता गिरि पर आप बिराजे, फरकत ऊरीय निशा  
न ॥ ला० ॥ १ ॥ बारा व्रत तप बाह्य अन्तर,  
समकित जाव धरान ॥ ला० ॥ २ ॥ नेमीचंद कहे  
सुनो जाइ श्रावक, आपहीं आप पीठान ॥ ला० ॥ ३ ॥

॥ अथ शांतिजिन स्तवनं ॥

॥ शांति मिलनकी आश हो ॥ जीया मानुवे ॥  
शांति० ॥ शांति मेरा वारी में शांतिको, ज्युरे फूलन  
बिच बास हो ॥ जीया मा० ॥ १ ॥ निशि दिन प्रभु  
जीको ध्यान धरत हुं, जब लग घटमें सास हो ॥  
जी० ॥ २ ॥ शांति जिणंदजीके चरनकी सेवा, गावे  
गुलाबचंद दास हो ॥ जी० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ रूपनस्तवनं ॥

॥ नैना सफल नई, में निरख्या नानि कुमार, अ  
खीयां सफल नई ॥ में० ॥ नवो नव नटकत सर  
न हूं आयो, अब तो राखोने मोरी लाज ॥ नैना० ॥

में०॥१ ॥ रोम रोम आनंद जयो मेरे, अशुज करम  
 गये जाज ॥नैना०॥में०॥२ ॥ और चाहन कबु रह्यो  
 नही मेरे, पायक गजरथ वाज ॥ नैना० ॥में०॥ ३ ॥  
 रामचंद्र प्रभु एह मागत है, लोक शिखरको राज ॥  
 ॥ नैना० ॥ में० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीसिद्धाचलस्तवनं ॥

॥ विमलाचल विमला प्राणी, शीतल तरु ढाया  
 ठेराणी, रस वेधक कंचन खाणी, कहे इंदु सुणो  
 इंडाणी ॥ सनेही संत ए गिरि सेवो, चौद खेत्रमां ती  
 रथ न एहवो ॥ सनेही संत ए गिरि सेवो ॥१॥ए आंक  
 णी ॥ ठरी पालीने उल्लसीयें, ठठ अछम काया क  
 सीयें, मोह मल्लने सामा धसीयें, विमलाचल बेहेला  
 वसियें ॥ सनेही० ॥.२ ॥ अन्य थानक कर्म जे  
 करीयें, ते हेमगिरि हेगा हरीयें, बे पोलें प्रदक्षिणा  
 फरीयें, नवजलधि हेला तरीयें ॥ सनेही० ॥ ३ ॥  
 शिवमंदिर साधवा काजें, सोपाननी पंक्ति बिराजे,  
 चढंता दृढ समकित ठाजे, दुर्जव्य अजव्य ते लाजे ॥  
 सनेही० ॥ ४ ॥ पांमव पमुहा केई संता, आदीसर  
 ध्यान धरंता, परमात्म नावें नजंता, सिद्धाचल सी  
 धा अनंता ॥ सनेही० ॥ ५ ॥ षट मासी ध्यान धरा  
 वे, शुकराजा राज्य ते पावे, देहांतर शत्रु हरावे, शत्रुं  
 जय नाम धरावे ॥ सनेही० ॥ ६ ॥ प्रणिध्यान धरो  
 ए गिरि साचो, तीर्थकर नाम निकाचो, मोहरायने  
 लागे तमाचो, शुजवीर विमलगिरि साचो॥सनेही०॥ ७

॥ अथ श्रीसिद्धाचल स्तवनं ॥

॥ सिद्धाचल सिद्ध सुहावे, अनंत अनंत कहावे,  
 जेद पंदरथी शिव जावे, गुण अगुरु लघु निपजावे रे॥  
 विमलाचल वेगें वधावो ॥ गिरिराज तणा गुण गावो रे,  
 जो होवे शिवपुर जावो रे ॥ वि० ॥ १ ॥ ए आं  
 कणी ॥ जितारी अनियह लीधो, दिन सातमे नोजन  
 कीधो ॥ शुक्र राजायें राज ते लीधो, शत्रुंजय नाम ते  
 दीधो रे ॥ वि० ॥ २ ॥ देव दानव इण गिरि आवे,  
 जिनराजने शीश नमावे, सूत्रमांहे नाच नचावे,  
 जोगावंचक फल पावे रे ॥ वि० ॥ ३ ॥ विद्याचार  
 ए मुनि वरिया, मर्कट फल जल संचरिया, आका  
 शें पवनसें चलिया, देखी हेमगिरि हेठा उतरिया रे  
 ॥ वि० ॥ ४ ॥ प्रभु देखीने आनंद पावे, जिनराजने  
 शीश नमावे, देव साथें जावना जावे, पढी इच्छित  
 स्थानकें जावे रे ॥ वि० ॥ ५ ॥ ग्यान दर्शन जेहथी  
 लहियें, नवमो आवकगुण वहियें, संसारनी रीतें र  
 हियें, जिन शासन तीरथ कहियें रे ॥ वि० ॥ ६ ॥  
 सद्गु तीरथनो ए राजा, सूर्यकुंममां जल ताजां, ना  
 हातां जिन आनंद जाजा, दुठ कूकडो ते चंदराजा  
 रे ॥ वि० ॥ ७ ॥ ए तीरथ जेटण काजें, गुजरात  
 नो संघ समाजें, पंथें पंथें विसामो ठाजे, गिरि दे  
 खी वधावे उद्धासें रे ॥ वि० ॥ ८ ॥ अठार तिहुंते  
 रा वरसें, मार्गशिरवदि तेरश दिवसें, जेढ्या आदीस  
 र उद्धासें, जाणुं नवजल पार उतरजो रे ॥ वि० ॥



॥ ए ॥ गिरि देखी लोचन ठरियां, चक्केसरी वीर केश  
रीया, जाय केतकी वृद्ध लहेरीयां, शेत्रुंजे नदी जल  
नरीयां रे ॥ वि० ॥ १० ॥ राय नरत रतन बिंब ठा  
वे, चक्केसरी यात्रा करावे, ते त्रीजे नवें शिव जावे,  
शुन वीर वचन रस गावे रे ॥ वि० ॥ ११ ॥ इति ॥

॥ अथ कर्म उपर सज्जाय प्रारंभः ॥

॥ देवदाणव तीर्थकर गणधर, हरिहर नरवर सबला ॥  
कर्म संयोगें ते सुख दुःख पाय्या, सबल दुआ म  
हा निबला रे ॥ प्राणी कर्म समो नही कोय ॥  
कीधां कर्म बिना जोगवीयां, बूटक बारो न होय रे ॥  
प्राणी कर्म ० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ आदीसरने अंतरा  
य विटंब्यां, वर्ष दिवस रह्या नूखें ॥ वीरने बार  
वर्ष दुःख दीधुं, उपना ब्राह्मणी कूखें रे ॥ प्राणी  
कर्म ० ॥ २ ॥ शाठ सहस सुत मूआ एक दिन, सामत  
सूरा जैसा ॥ सगर दूठ महा पुत्रें दुखीयो, करम त  
णां फल ऐसा रे ॥ प्राणी ० ॥ ३ ॥ बत्रीश सह  
स देसांरो साहेब, चक्री सनतकुमार ॥ शोल रोग  
शरीरें उपना, करमें कीयो तस खुवार रे ॥ प्राणी ० ॥  
॥ ४ ॥ सुजूम नामें आठमो चक्री, कर्म सायर ना  
ख्यो ॥ पच्चीस सहस यद्धें उजा दीतो, पण किण  
हीं नवि राख्यो रे ॥ प्राणी ० ॥ ५ ॥ ब्रह्मदत्त नामें  
बारमो चक्री, कर्म कीधो अंधो ॥ एम जाणी प्राणी  
विण कामें, कर्म कोई मत बंधो रे ॥ प्राणी ० ॥ ६ ॥  
वीश जुजा दश मस्तक दूता, जखमणे रावण मा

खो ॥ एकलडे जग सहुने जीत्यो, कर्मथी ते प  
 ण हाखो रे ॥ प्राणी० ॥ ७ ॥ लखमण राम म  
 हा बलवंता, वली सत्यवंती सीता ॥ बार वरस लगे  
 वनमांहे नमिया, वीतक तस बहु वीतां रे ॥ प्रा  
 णी० ॥ ८ ॥ तपन्नकोड यादवरो माहेब, कृष्ण म  
 हाबलि जाणी ॥ अटवीमांहे एकलडो मूठ, वल व  
 लतो विण पाणी रे ॥ प्राणी० ॥ ९ ॥ पांमव पांच म  
 हा जूजारा, हारी डौपदी नारी ॥ बार वरस लगे व  
 न दुःख दीगं, नमिया जेम निखारी रे ॥ प्राणी० ॥  
 ॥ १० ॥ सतीय शिरोमणी डौपदी कहिये, ए सम  
 अवर न कोय ॥ पंच पुरुषनी थई ते नारी, पूरव क  
 र्मशुं होय रे ॥ प्राणी० ॥ ११ ॥ कर्मे हलंको कीयो  
 हरिचंदने, वेची तारा राणी ॥ बार वरस लगे माथे  
 आणुं, नीच तणे घर पाणी रे ॥ प्राणी० ॥ १२ ॥  
 दधिवाहन राजानी बेटी, चावी चंदन बाला ॥ चो  
 पदनी परें चउटे वेचाणी करम तणा ए चाला रे ॥  
 प्राणी० ॥ १३ ॥ समकितधारी श्रेणिक राजा, बेटे  
 बांध्यो मुसके ॥ धर्मी नरपति कर्मे दबाया, करमथी  
 जोर न किसके रे ॥ प्राणी० ॥ १४ ॥ ईश्वरदेवने  
 पार्वती राणी, करता पुरुष कहेवाय ॥ अहोनिशि  
 समसाणमांहे वासो, निह्ना नोजन खाय रे ॥ प्राणी०  
 ॥ १५ ॥ सहसकिरण सूरज परतापी, रात दिवस  
 रहे नमतो ॥ शोलकला ससिहर जग जाचो, दिन  
 दिन जाये घटतो रे ॥ प्राणी० ॥ १६ ॥ एम अने

( ३६७ )

क नर खंमया कर्मै, जल जलेरा जे साज ॥ रुद्धिहर  
ख करजोडिने कहे, नमो कर्म महाराज रे ॥ प्राणी०  
॥ १७ ॥ इति कर्म सभाह

॥ अथ आत्मप्रबोध सभाय ॥

॥ जीव क्रोध म करजे, लोचन म धरजे, मान म ला  
ईशनाइ ॥ कूडां करम म बांधीश, धर्म म चूकीश, विनय म  
मूकीश ॥ नाई रे जीवडा ॥ दोहिलो मानव जव  
लाधो ॥ तुमे काई करी तत्त्वने साधो रे जाला ॥  
दोहि० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ घर पठवाडे देरास  
र जातां, वीश विमासण थाय ॥ नूरव्यो तरव्यो  
राजल रातें, माथे सहेतो घाय रे ॥ जीवडा दो  
हि० ॥ २ ॥ धर्म तणी पोसालें चाल्या, सुणवा सद्  
गुरु वाणी ॥ एक बात करे बीजो उठी जायें, नयणे  
निंद जराणी रे ॥ जीव० ॥ ३ ॥ नामें बेगो लोचें  
पेगो, चार पोहोर निशि जाग्यो ॥ बे घडीनुं पडिक्क  
मणुं करतां, चोखो चित्त न राख्यो रे ॥ जीव० ॥ ४ ॥  
आठम चउदश पूनम पाखी, पर्व पर्यूपण सारो ॥  
बे घडीनुं पच्चस्काण करतां, एक बीजाने वारो रे ॥  
जीव० ॥ ५ ॥ कीर्त्ति कारण पगरण मांमी, अरथ गरथ  
सवि लूटे, पुण्यने काजें पारकुं पोतानुं, गांठडीयें न  
वी बूटे रे ॥ जीव० ॥ ६ ॥ घर घरणीने घाट घडा  
व्यां, पहेरण आठ वाघा ॥ दश आंगुली दश वेढ  
ज पहेखा, निर्वाणें जावुं ठे नागां रे ॥ जीवडा० ॥  
॥ ७ ॥ वांको अद्धर माथे मींमुं, नीलवट आधो

चंदो ॥ मुनि अवण्य समय इम बोले, ए त्रण कासें  
वंदो रे ॥ जीतडा० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ रहनेमिनी सवाय प्रांनः ॥

॥ काउस्सगगथकी रे रहनेमि, राजुल निहाली ॥  
चित्तडुं चलियुं तव बोले नार रे ॥ देवरिया मुनिवर,  
ध्यानमां रेजो ॥ ध्यान थकी होये नवनो पार रे ॥  
॥ देव० ॥ १ ॥ उत्तम कुजना यादव कुल रे अजुआ  
ली, लीधो ठे संयम नार रे ॥ देव० ॥ हुं रे व्रती रे तुं  
ठे संयम धारी, जाशो सरवे व्रतहारी रे ॥ देव० ॥  
॥ ध्या० ॥ २ ॥ विषधर विष वमी आप न लेवे, क  
रे पावक परिचार रे ॥ देव० ॥ तुऊ रे बांधत नेमजी  
यें मुजने रे वामी, वम्यो न घटे तुमने आहार रे  
॥ देव० ॥ ध्या० ॥ ३ ॥ नारी अठे रे जगमां विपनी  
रे वेली, नारी ठे अवगुणनो जंमार रे ॥ देव० ॥ नारी  
मोहें रे मुनिवर जेह विपूता, ते नवि लहे नव पार  
रे ॥ देव० ॥ ध्या० ॥ ४ ॥ नारीनुं रूप देखी मुनिने न रहेवुं,  
ए ठे आगममां अधिकार रे ॥ देव० ॥ नारी निःसं  
गी तेतो मुनिवर कहीयें, न करे फरी संसार रे ॥  
॥ देव० ॥ ध्या० ॥ ५ ॥ एरे सतीनां मुनिवर व  
यण सुणीने, पाम्या नव प्रतिबोध रे ॥ देव० ॥ ने  
मजी जेटीने फरी संयम लीधो, कखो ठे आतम शो  
ध रे ॥ देव० ॥ ध्या० ॥ ६ ॥ धन्य रे सती रे जेणें  
मुनि प्रतिबोध्या, धन धन ए अणगार रे ॥ देव० ॥

ए रे वसता रे मुनिवर वयण सुणीने, फरी न करे  
संसार रे ॥ देव० ॥ ध्या० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीशालिजन्नी सवाय प्रारंभ ॥

॥ प्रथम गोवालिया तणे नर्वे जी रे, दीधुं मुनिव  
र दान ॥ नयरी राजगृही अवतखो जी, रूपें मयण  
समान ॥ सोजागी रे शालिजन् जोगी रे होय ॥ १ ॥  
॥ ए आंकणी ॥ बत्रीश लक्ष्मण गुणें नखो जी रे, पर  
ण्यो बत्रीश नार ॥ माणसने नर्वे देवनां जी रे, सु  
ख विलसे संसार ॥ सो० ॥ २ ॥ गोचड्गोठ तिहां  
पूरवे जी रे, नित नित नवला रे जोग ॥ करे सु  
जडा उबारणां जी रे, सेव करे बहु लोग ॥ सो० ॥  
॥ ३ ॥ एक दिन श्रेणिक राजियो जी रे, जोवा आ  
व्यो रे रूप ॥ अंग देखी सकोमलां जी रे, थयो मन  
हरखित नूप ॥ सो० ॥ ४ ॥ वहु वैरागी चिंतवे जी  
रे, मुक्त शिर श्रेणिक राय ॥ पूरव पुण्य में नवि कि  
यां जी रे, तप आदरगुं माय ॥ सो० ॥ ५ ॥ इणे  
अवसरें श्रीजिनवरू जी रे, आव्या नयरी उद्यान ॥  
शालिजन् मन ऊजम्यो जी रे, वांधा प्रभुजीना पाय  
॥ सो० ॥ ६ ॥ वीरतणी वाणी सुणी जी रे, वूठो  
मेह अकाल ॥ एकेकी दिन परिहरे जी रे, जिम जल  
ठंमे पाल ॥ सो० ॥ ७ ॥ माता देखी टल वळे जी  
रे, माठजडी विण नीर ॥ नारी सघली पायें पडे जी  
रे, म म ठंमो साहस धीर ॥ सो० ॥ ८ ॥ वहुअर स

घली वीनवे जी रे, सांजल सासु विचार ॥ सर ठांफी  
 पालें चड्यो जी रे, हंसलो ऊमण हार ॥ सो० ॥ ९ ॥  
 इण अवसर तिहां नावतां जी रे, धना शिर आंसु  
 पडंत ॥ कवण दुःख गुळ सांजलुं जी रे, ऊंचुं जोइ  
 कहंत ॥ सो० ॥ १० ॥ चंडमुखी मृगनोचनी जी  
 रे, बोलावी जरतार ॥ बंधव वात में सांजली जी रे, ना  
 रीनो परिहार ॥ सो० ॥ ११ ॥ धनो जाणे सुण वे  
 लडी जी रे, शालिजइ पूरो गमार ॥ जं मन आ  
 एयुं ठंमवा जी रे, विलंब न कीजें लगार ॥ सो०  
 ॥ १२ ॥ कर जोडी कहे कामिनी जी रे, बंधव समो  
 नही कोय ॥ कहेतां वातज सोहली जी रे, भूकतां  
 दोहली होय ॥ सो० ॥ १३ ॥ जारे जातें इम कह्यो  
 जी रे, तो में ठंमी रे आव ॥ पिउडा में हसतां कलुं  
 जी रे, कुणशुं करशुं वात ॥ सो० ॥ १४ ॥ इणे व  
 चनें धनो नीसखो जी रे, जाणे पंचायण सिंह ॥ जइ  
 सालाने साद कखो जी रे, घेना ऊठ अबीह ॥ सो०  
 ॥ १५ ॥ काल आहेडी नित नमे जी रे, पूंठे म जो  
 इश वाट ॥ नारीबंधन दोरडी जी रे, धव धव ठंमे  
 निराश ॥ सो० ॥ १६ ॥ जिम धीवर तिम माठलो  
 जी रे, धीवरें नाख्यो रे जाल ॥ पुरुष पडी जिम माठ  
 लो जी रे, तिमहिं अचिंत्यो काल ॥ सो० ॥ १७ ॥  
 जोवन जर बिहुं नीसखा जी रे, पोहोता वीरजीनी  
 पास ॥ दीक्षा लीधी रूअडी जी रे, पाले मन उछा  
 स ॥ सो० ॥ १८ ॥ मास खमणने पारणे जी रे, पूठे श्री

जिनराज ॥ अमने शुद्धज गोचरी जी रे, लाज देशे कुण  
 आज ॥ सो० ॥ १९ ॥ माता हाथे पारणुं जी रे, याशे तु  
 मने रे आज ॥ वीर वचन निश्चय करी जी रे, आव्या  
 नगरीमांज ॥ सो० ॥ २० ॥ घरे आव्या नवि उलख्या  
 जी रे, फरिया नगरी मजार ॥ मारग जातां महिया  
 रडी जी रे, मामी मलि तेणि वार ॥ सो० ॥ २१ ॥  
 मुनि देखी मन उद्धस्युं जी रे, विकसित थइ तस  
 देह ॥ मस्तक गोरस सूजतो जी रे, पडिलान्यो धरि  
 नेह ॥ सो० ॥ २२ ॥ मुनिवर वोहोरी चालिया जी  
 रे, आव्या श्रीजिनपास ॥ मुनि संशय जइ पूठियो  
 जी रे, माय न दीधुं दान ॥ सो० ॥ २३ ॥ वीर  
 कहे तुमें सांजलो जी रे, गोरस वोहोखो रे जेह ॥ मार  
 ग मली महियारडी जी रे, पूर्व जन्म माय एह  
 ॥ सो० ॥ २४ ॥ पूरव नव जिनमुखें लही जी रे, ए  
 कत्र नावें रे दोय ॥ आहार करी मुनि धारियो जी  
 रे, अणसण शुद्धज होय ॥ सो० ॥ २५ ॥ जिन आ  
 देश लही करी जी रे, चढिया गिरि वैजार ॥ शिला  
 ऊपर जइ करी जी रे, दोय मुनि अणसण धार ॥  
 ॥ सो० ॥ २६ ॥ माता नडा संचखां जी रे, साथें बहु  
 परिवार ॥ अंतेउर पुत्रज तणो जी रे, लीधो सघलो  
 सार ॥ सो० ॥ २७ ॥ समवसरणें आवी करी जी रे,  
 वांढ्या वीर जगतात ॥ सकल साधु वांढी करी जी रे,  
 पुत्र जोवे निजमात ॥ सो० ॥ २८ ॥ जोई सघली  
 परषदा जी रे, नवि दीठा दोय अणगार ॥ कर जोडी

करे वीनति जी रे, जांखे श्रीजिनराज ॥ सो० ॥ ३९ ॥  
 वैचार गिरि जाइ चड्या जी रे, मुनिदरिसण ऊमंग ॥  
 सहु परिवारें परवखा जी रे, पढोता गिरिवरशृंग ॥  
 ॥ सो० ॥ ३० ॥ दोय मुनि अणसण उच्चरी जी रे,  
 जीले ध्यान मजार ॥ मुनि देखी विलखा यया जी  
 रे, नयणें नीर अपार ॥ सो० ॥ ३१ ॥ गदगदशब्दें  
 बोलती जी रे, मली बत्रीजे नार ॥ पिउडा बोलो बो  
 लडा जी रे, जिम सुख पामे चित्त ॥ सो० ॥ ३२ ॥  
 अमे तो अवगुणें नखा जी रे, तुं सही गुण जंमार ॥  
 मुनिवर ध्यान चूका नही जी रे, तेहने वचने लगार  
 ॥ सो० ॥ ३३ ॥ वीरा नयणें निहालियें जी रे, जिम मन  
 थाये प्रमोद ॥ नयण उघाडी जोइयें जी रे, मांता पा  
 मे मोद ॥ सो० ॥ ३४ ॥ शालिजइ माता मोहनी  
 जी रे, पोहोता अमर विमान ॥ महाविदेहें सीऊजे  
 जी रे, पामी केवल ज्ञान ॥ सो० ॥ ३५ ॥ धनो धर्मी  
 मुक्तें गयो जी रे, पामी शुक्ल ध्यान ॥ जे नर नारी  
 गावजे जी रे, समयसुंदरनी वाण ॥ सो० ॥ ३६ ॥

॥ अथ चोत्रीश अतिशयनो बंद ॥

॥ श्रीसुमतिदायक दुरितघायक, ज्ञान अनुभव  
 श्रीवरी ॥ तसु सुगुरु केरा चरण प्रणमूं, युगम कर  
 जोडी करी ॥ बहु जाव जत्तें थुणूं जिनवर, चोत्रीजे  
 अतिशय करी ॥ जे सुगुरु मुखथी सुण्या ते कहूं,  
 आगम शास्त्रें अनुसरी ॥ १ ॥ तिहां प्रथम अतिश  
 य श्रीजिन केरा, रोम नख बाधे नही ॥ नीरोग निर्म



ल गात्र जेहनुं, द्वितिय अतिशय ए सही ॥ गोदूध  
 सरिखां मांस लोही, तृतीय एह वखाणियें ॥ चोथो  
 ते उत्पल गंध सरिखो, आसोब्यास सो जाणियें  
 ॥ १ ॥ आहार ने नीहार प्रबुन, एह अतिशय  
 पांचमो ॥ आकाशगत धर्मचक्र ठो, गगन ठत्र  
 ए सातमो ॥ रह्यां ते अंबर श्वेत चामर, युग्म अष्ट  
 म ए कह्यो ॥ स्फटिक भिंहासन सुनिर्मल, नवमो  
 अतिशय ए लह्यो ॥ ३ ॥ आकाशगत ध्वज सहस्र  
 मंजित, इंध्वज आगल चले ॥ ए दशम अतिशय  
 कह्यो श्रुतमां, देखी परमत खलनले ॥ इग्यारमे  
 वलि स्वामी कजा, रहे वली बेसे जिहां ॥ सबाय स  
 ध्वज देव ततहण, अशोकतरु विरचे तिहां ॥ ४ ॥  
 द्वादश अतिशय प्रजामंजल, पूठें रविकर जीपियें ॥  
 रमणीय सुंदर जूमि जागसो, तेरमो ए दीपियें ॥ अ  
 धोमुख होये सर्व कंटक, चौदमे अतिशयवरू ॥ अ  
 नुकूल थइने प्रणमे ऋतु सब, पंचदशमो सुखकरू  
 ॥ ५ ॥ संवर्त्तपवनें जूमि पूंजे, योजन लगें ए शो  
 लमे ॥ सुगंध वर्षा तिहां वरसे, प्रगट अतिशय सतर  
 मे ॥ जानुप्रमाणे बीट नीचां, पंचवर्ण सोहामणां ॥  
 जल ने थलना फूल वरसे, अठारमे अतिशय घणां  
 ॥ ६ ॥ अमनोझ शब्दादिकही नासे, उगणीशमे अतिश  
 यें वली ॥ विशमे अतिशयें सुजहू थाये, एम कहे प्रभु  
 केवली ॥ एकवीशमे प्रभु तणीय देशना, योजन लगें  
 सवि जन सुणे ॥ बावीसमे धर्म अर्द्ध मागध, जा

षायें जिनजी नणे ॥ ७ ॥ त्रेवीशमे जिनवाणि जन  
 ने, हेतु शिवजणी परिणमे ॥ चोवीशमे प्रभु चर  
 ण मूजे, वैर जंतुनां उपशमे ॥ अन्यलिंणी नमे जि  
 नने, पंचविंशति अतिशयें ॥ अन्य तीर्थी मौन था  
 ये, षवीशमे प्रभु निश्चयें ॥ ८ ॥ पणवीश जोयण लगे  
 जिनथी, ईती ने मारी नही ॥ स्वचक्र ने परचक्र न होए,  
 त्रीश अतिशय ए सही ॥ अतिवृष्टि ने अनावृष्टि ड  
 र्निहू, त्रण ए नवि ऊपजे ॥ चोत्रिशमे वलि व्याधि  
 पीडा, आदि दुःख न संपजे ॥ ९ ॥ चोत्रीश अति  
 शय एह कहिया, सूत्र समवायांगमां ॥ ते जणतां  
 गुणतां हिये धरतां, रहे आतम रंगमां ॥ निज शुद्ध  
 आतम रूप प्रगटे, जावशुं जो ध्यायें ॥ दर्शनादिक  
 रत्न लहियें, परम पद सुख पायें ॥ १० ॥ अर्हत  
 जगवंत तणा अतिशय, जणो आणी आसता ॥  
 बहु पुण्य करियें ध्यान धरियें, सुख लहियें आश्वतां ॥  
 श्रीसूरिविद्या उदधि सेवक, शिष्य इणि परें संस्तवे ॥  
 मुनि ज्ञानसागर कहे प्रभुपद, सेवा मागुं नवो नवें ॥ ११

॥ अथ पद्मावती आराधना प्रारंभ ॥

॥ हवे राणी पद्मावती, जीवराशि स्वमावे ॥ जाण  
 पणुं जग ते जलुं, इण वेला आवे ॥ १ ॥ ते मुऊ  
 मिहामि डुक्कडं, अरिहंतनी सांख ॥ जे में जीव विरा  
 धिया, चउराशी लाख ॥ ते मुऊ ॥ २ ॥ सात ला  
 ख पृथिवीतणा, साते अपकाय ॥ सात लाख ते  
 उकायना, साते वली वाय ॥ ते मुऊ ॥ ३ ॥ दश

प्रत्येक वनस्पति, चउदह साधार ॥ बी ति चउरिंदी  
 जीवना, बे बे लाख विचार ॥ ते० ॥ ४ ॥ देवता ति  
 र्यैच नारकी, चार चार प्रकाशी ॥ चउदह लाख मनुष्य  
 ना, ए लाख चोराशी ॥ ते० ॥ ५ ॥ इण नवें परज  
 वें सेवियां, जे पाप अढार ॥ त्रिविध त्रिविध करी  
 परिहरुं, डुर्गतिनां दातार ॥ ते० ॥ ६ ॥ हिंसा की  
 धी जीवनी, बोल्या मृषावाद ॥ दोष अदत्तादानना,  
 मैद्युन उन्माद ॥ ते० ॥ ७ ॥ परिग्रह मेव्यो कारि  
 मो, कीधो क्रोध विशेष ॥ मान माया लोन में की  
 यां, बली राग ने द्वेष ॥ ते० ॥ ८ ॥ कलह करी जी  
 व दूहव्या. दीधां कूडां कलंक ॥ निंदा कीधी पार  
 की, रति अरति निशंक ॥ ते० ॥ ९ ॥ चाडी कीधी  
 चोतरे, कीधो आपणमोसो ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्म  
 नो, जलो आण्यो जरोंसो ॥ ते० ॥ १० ॥ खाटकीने  
 नवें में कीया, जीव नानाविध घात ॥ चडीमार नवें  
 चरकलां, माखां दिन रात ॥ ते० ॥ ११ ॥ का  
 जी मुहाने नवें, पढी मंत्र कठोर ॥ जीव अनेक ऊ  
 ज्जे कीया, कीधां पाप अघोर ॥ ते० ॥ १२ ॥ मा  
 ह्नीने नवें माठलां, जाव्यां जलवास ॥ धीवर  
 नील कोली नवें, मृग पाड्या पास ॥ ते० ॥ १३ ॥  
 कोटवालने नवें में कीया, आकरा करदंम ॥ बंदी  
 वान मराविया, कोरडा ठडी दंम ॥ ते० ॥ १४ ॥  
 परमाधामीने नवें, दीधां नारकी डुस्क ॥ ठेदन जे  
 दन वेदना, ताडन अति तिसक ॥ ते० ॥ १५ ॥ कुं

नारने नवें में किया, नीमाह पचाव्या ॥ तेली नवें  
 तिल पीलिया, पापें पिंम नराव्या ॥ ते० ॥ १६ ॥  
 हाली नवें हल खेडीयां, फाड्यां पृथ्वीनां पेट ॥ सू  
 म निदान घणां कियां, दीधा बलद चपेट ॥ ते०  
 ॥ १७ ॥ मालीने नवें रोपिया, नानाविध वृद्ध ॥  
 मूल पत्र फल फूलनां, जागां पाप ते लद्ध ॥ ते०  
 ॥ १८ ॥ अधोवाईयाने नवें, नखा अधिका नार ॥  
 पोठी पूठें कीडा पड्या, दया नाणी लगार ॥ ते०  
 ॥ १९ ॥ ठीपाने नवें ठेतखा, कीधां रंगण पास ॥  
 अग्नि आरंज कीधा घणा, धातुर्वाद अन्यास ॥  
 ॥ ते० ॥ २० ॥ शूरपणे रण जूजता, माद्यां माण  
 सवृंद ॥ मदिरा मांस माखण नखां, खाधां मूल ने  
 कंद ॥ ते० ॥ २१ ॥ खाण खणावी धातुनी, पाणी  
 उद्धेच्यां ॥ आरंज कीधा अतिघणा, पोतें पापज सं  
 च्यां ॥ ते० ॥ २२ ॥ कर्म अंगार कीया वली, धर  
 में दव दीधा ॥ सम खाधा वीतरागना, कूडा कोसज  
 कीधा ॥ ते० ॥ २३ ॥ बिछीनवें उंदर लीया, गिरो  
 ली हत्यारी ॥ मूढ गमार तणे नवें, में जू लीख मा  
 री ॥ ते० ॥ २४ ॥ नाडजुंजा तणे नवें, एकेंडिय जी  
 व ॥ ज्वारि चणा गहूं शेकिया, पाडंता रीव ॥  
 ॥ ते० ॥ २५ ॥ खांमण पीसण गारना, आरंज अ  
 नेक ॥ रांधण इंधण अग्निनां, कीधां पाप उदेक ॥  
 ॥ ते० ॥ २६ ॥ विकथा चार कीधी वली, सेव्यां पां  
 च प्रमाद ॥ इष्टवियोग पाड्या कीया, रूदन विषवा

द ॥ ते० ॥ १७ ॥ साधु अने श्रावक तणां, व्रत ल  
 हीने नांग्यां ॥ मूल अने उत्तर तणां, मुळ दूषण ला  
 ग्यां ॥ ते० ॥ १८ ॥ साप वींढी सिंह चीवरा, शक  
 रानें समली ॥ हिंसक जीव तणे नवें, हिंसा कीधी  
 सबली ॥ ते० ॥ १९ ॥ सूवावडी दूषण घणां, वली  
 गर्ज गलाव्या ॥ जीवाणी ढोव्यां घणां, शील व्रत  
 जंजाव्यां ॥ ते० ॥ २० ॥ नव अनंत नमतां थकां,  
 कीधा देह संबंध ॥ त्रिविध त्रिविध करी वोसिरुं, ति  
 एणुं प्रतिबंध ॥ ते० ॥ २१ ॥ नव अनंत नमतां थकां,  
 कीधा परिग्रह संबंध ॥ त्रिविध त्रिविध करी वोसिरुं,  
 तिणुं प्रतिबंध ॥ ते० ॥ २२ ॥ नव अनंत नमतां  
 थकां, कीधा कुटुंबसंबंध ॥ त्रिविध त्रिविध करी वोसि  
 रुं, तिणुं प्रतिबंध ॥ ते० ॥ २३ ॥ इणि परें इह  
 नव परनवें, कीधां पाप अखत्र ॥ त्रिविध त्रिविध  
 करि वोसिरुं, करुं जन्म पवित्र ॥ ते० ॥ २४ ॥ ए  
 णि विधें ए आराधना, नावें करशे जेह ॥ समय  
 सुंदर कहे पापथी, वली बूटशे तेह ॥ ते० ॥ २५ ॥ राग  
 वेराडी जे सुणे, एह त्रीजी ढाल ॥ समयसुंदर कहे  
 पापथी, बूटे ततकाल ॥ ते० ॥ २६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री आत्मशिक्षणावना ॥

॥ दोहा ॥ श्रीजिनवरमुखवासिनी, जगमें ज्यो  
 तिप्रकाश ॥ पदमासन परमेश्वरी, पूरे वंछित आश  
 ॥ १ ॥ ब्रह्मसुता गुण आगली, कनक कमंडलु सा  
 र ॥ वीणापुस्तकधारिणी, तुं त्रिभुवन जयकार ॥ २ ॥

श्रीसरसति जिन पाय नमी, मन धरि हर्ष अपार ॥  
 आतम शिद्धा जावना, जणुं सुणो नर नार ॥ ३ ॥  
 रे जिव सुण तुं बापडा, हिये विमासी जोय ॥ आ  
 प स्वारथी सहु मढ्युं, ताहारुं नहि जग कोय ॥ ४ ॥  
 धर्म विना सुण जीवडा, तुं नम्यो नव अनंत ॥ मू  
 ढ पणे नव तें किया, इम बोले जगवंत ॥ ५ ॥ लाख  
 चोराशी योनिमां, फरी लियो अवतार ॥ एकेकी गोनी  
 वली, अनंत अनंती वार ॥ ६ ॥ चउद राज परमाणु आ,  
 सूर्इ अग्रजाय ठाम ॥ कर्मवशें जिव तुं न यो, मूरख चे  
 तन ताम ॥ ७ ॥ निगोद सू अ बादरें, पुजल अनंत अ  
 पार ॥ एतो काल तुं तिहां रह्यो, हवे कर हैये विचार  
 ॥ ८ ॥ श्वास उश्वासा एकमां, मरण सतर अंध कीध ॥  
 सूक्ष्म निगोदमांहे वली, ए जिन वचन प्रसीध ॥ ९ ॥ नर  
 य विगलेंडी तिर्यगति, नव कीया बहु हेव ॥ चुवन  
 पति व्यंतर जोतिपी, उर विमानिक देव ॥ १० ॥  
 इम जमतां जमतां लियो, मनुअ जनम अवतार ॥  
 मिथ्यात्वपणें नव निगम्या, काज न सीध लगार ॥  
 ॥ ११ ॥ जगमां जीव अठे बहु, एकशुं अनंतीवा  
 र ॥ विविधप्रकार सगपण कियां, हैया साथ वि  
 चार ॥ १२ ॥ तो कुण आपणुं पारकुं, कुण वेरी  
 कुण मित्त ॥ राग द्वेष टाली करी, कर समता इक  
 चित्त ॥ १३ ॥ पूर्व कोडिने आउखें, ग्यानी गुरुह  
 अपार ॥ उत्पति कहि जिउं ताहरी, कहेतां नावे  
 पार ॥ १४ ॥ पुत्र पिता पण अवतरे, पिता पुत्र पण

जोय ॥ माता सगपण नारि मली, नारी मा  
 ता होय ॥ १५ ॥ सूतो सुपन जंजालमां, पाम्यो  
 जाणे राज ॥ जब जाग्यो तब एकलो, राज न सीजे  
 काज ॥ १६ ॥ तिम ए कुटुंब सहू मळ्युं, खोटी मा  
 या जाल ॥ आयू पहोंचे आपणे, खिण थाये वि  
 सराल ॥ १७ ॥ सोदो लेयण जण मले, जिहां  
 जोडी सहि हाट ॥ आथ सारु विवसाय करी, फरि  
 चाव्या निजवाट ॥ १८ ॥ तिम नव नमतां सवि  
 मल्या, कुटुंब जोडि जो हाट ॥ पुण्य पाप विवसाय  
 करी, जो कतरियें घाट ॥ १९ ॥ इम कुटुंब मिळ्युं  
 कारिसुं, माय अने वलि ताय ॥ बंधू नगिनी नार  
 जा, को केदनो न कहाय ॥ २० ॥ नव नव नाट  
 क तुं वली, नाच्यो करि बहु रूप ॥ नाटक एकशुं  
 नाचियो, जो तूटे नवं कूप ॥ २१ ॥ उत्तम कुल  
 नर नव लही, पामि धर्म जिनराय ॥ प्रमाद भू  
 की कीजियें, खिण लाखीणो जाय ॥ २२ ॥ जिसुं  
 कीजे तिसुं पाश्यें, करे तैसा फल जोय ॥ सुख दुख  
 आप कमाश्यें, दोष न दीजें कोय ॥ २३ ॥ दो  
 ष दीजें निज कर्मने, जिण नवि कीधो धर्म ॥ धर्म  
 विना सुख नवि मले, ए जिन शासन मर्म ॥ २४ ॥  
 वावी कूरी कोदरी, तो क्युं लुणीयें शाल ॥ पुण्यवि  
 ना सवि जीवडा, आशा आल पंपाल ॥ २५ ॥  
 आय पहोती आतमा, कोइ नवि राखण हार ॥  
 इंड चंड जिनवर वली, गया सवी निरधार ॥ २६ ॥

मोहोढा मोढ न कीजियें, न किजें मोहोटी वात ॥  
 कोडी अनंत में वेचियो, त्यारें किहां गइ जात ॥ २७ ॥  
 आपसरूप विचार तुं, जो दुइ हियडे शान ॥ करणी  
 तेहवी कीजियें, जिम वाधे जग वान ॥ २८ ॥  
 वमपण धर्म थाये नही, जोवन एलें जाय ॥ तरु  
 ण पणे धसमस करी, पढे फरी पढताय ॥ २९ ॥  
 जरा आवी जोवन गयुं, शिर पलिया ते केश ॥ ल  
 लुता तो ठोडी नहीं, न कखो धर्म जवलेस ॥ ३० ॥  
 पचेंदिय जिहां परवडा, रोग जरा नावंत ॥ जो  
 बन चंचल आवे सदा, कर तुं धर्म महंत ॥ ३१ ॥  
 ठते हाथ न वावखो, संबल न कियो साय ॥ आय  
 गई मन चेतियो, पढे घसे निज हाथ ॥ ३२ ॥ ध  
 न जोवन नर रूपनो, गर्व करे ते गमार ॥ कृष्ण बल  
 नइ द्वारिका, जातां न लागी वार ॥ ३३ ॥ आठ  
 पहोर तुं धसमसी, धनार्थ देशांतर जाय ॥ सो धन  
 मेढ्युं ताहरुं, उरज कोई खाय ॥ ३४ ॥ आंख त  
 एो फरुकडे, कथल पाथल थाय ॥ इस्थुं जाणी  
 जिव बापडा, म करिश ममता माय ॥ ३५ ॥ मा  
 या सुख संसारमां, ते सुख सहिय असार ॥ धर्म प  
 सायें सुख मजे, ते सुख नावे पार ॥ ३६ ॥ नय  
 न फरुके जिहां लगें, तिहां तहारुं सहु कोय ॥  
 नयन फरुकत जब रही, तब तहारुं नहि होय ॥  
 ॥ ३७ ॥ पाप कियां जिव तें बहू, धर्म न कियो ल  
 गार ॥ नरग पड्यो यम कर चड्यो, तिहां करे



पोकार ॥ ३७ ॥ कोइ दिन राणो राजियो, कोइ दि  
 न नयो तुं देव ॥ कोइ दिन रांक तुं अवतखो, क  
 रतो उरज सेव ॥ ३८ ॥ कोइ दिन कोडी परिवखो, को  
 दिन नहि को पास ॥ को दिन घर घर एकलो, नमे  
 सही ज्युं दास ॥ ४० ॥ को दिन सुखासन पालखी,  
 जेठमची चकमोल ॥ रथपाला आगल चले, नित  
 नित करत कलोल ॥ ४१ ॥ को दिन कूर कपूर  
 तुं, जावत नही लगार ॥ को दिन रोटी कारणें, न  
 मतो घर घर बार ॥ ४२ ॥ हीर चीर अंग पहेरि  
 यां, चुआ चंदन बहु लाय ॥ सो तन जतन करत  
 यौं, क्षिणमांही विघटाय ॥ ४३ ॥ सातम गोख तुं शो  
 नतो, कांमिनि जोग विलास ॥ इक दिन उही आव  
 शे, रहेणोही वनवास ॥ ४४ ॥ रूपें देव कुमार स  
 म, देख मोहे नर नार ॥ सो नर खिण इकमां व  
 ली, बलि जलि होवे ठार ॥ ४५ ॥ जे विन घडि  
 य न जायती, सो वरसां सो जाय ॥ ते वल्लज विसरी  
 गयो, उरहिसुं चित लाय ॥ ४६ ॥ देखत सब जुग  
 जातुही, थिर न रही सवि कोय ॥ इस्थुं जाणी नहुं  
 कीजियें, हियड विमासी जोय ॥ ४७ ॥ सुरपति स  
 वि सेवा करे, राय राणा नर नार ॥ आय पढोते आ  
 तमा, जात न लागे बार ॥ ४८ ॥ देखत नर अंधा  
 दुआ, जे मोह विंद्या बाल ॥ नण्या गण्या मूरख व  
 ली, नर नारी बाल गोपाल ॥ ४९ ॥ रात दिवस नि  
 ज नारिछुं, तुं रमतो मनरंग ॥ जे जोश्यें ते पूरतो, ऊ

लट आणी अंग ॥ ५० ॥ सो रामा जीवं ताहरी,  
 दूणमांही विघटाय ॥ स्वारथ पहोंचत जब रह्यो,  
 तब फरि वैरी आय ॥ ५१ ॥ समुद्र द्वीप सायर स  
 वे, पामे को नर पार ॥ नारी तिड् चरित्रनो, को न  
 वि पाम्यो पार ॥ ५२ ॥ ब्रह्मा नारायण ईश्वर, इंड  
 चंड नर कोड ॥ चलना वचनें लालची, ते रह्या  
 वे कर जोड ॥ ५३ ॥ नारी वदन सोहामणुं, पण  
 वाघण अवतार ॥ जे नर एहने वटा पड्या, तस  
 लूंढ्यां घर बार ॥ ५४ ॥ हसतमुखी दीसे नजी, क  
 रति कारमो नेह ॥ कनकजता बाहिर जिसी, अं  
 तर पित्तल तेह ॥ ५५ ॥ पहलि प्रीत करि रंगयुं, भी  
 ठा बोली नार ॥ नरने दास करि आपणो, मूके  
 टाकर मार ॥ ५६ ॥ नारी मदन तलावडी, बूझ्यो  
 सयल संसार ॥ काढणहारो को नही, बूझा बूझ  
 न बार ॥ ५७ ॥ वीश वसाना जे नरा, कोइ नही त  
 स वंक ॥ नारी संगति तेहने, निश्चें चढे कलं  
 क ॥ ५८ ॥ मुंज ने चंमप्रद्योतना, दासीपति पा  
 म्या नाम ॥ अजय कुमार बुधि आगलो, तेह उग्यो  
 अनिराम ॥ ५९ ॥ नारी नहि रे बापडा, पण ए विष  
 नी वेल ॥ जो. सुख वांढे मुक्तिनां, नारी संगति  
 मेल ॥ ६० ॥ नारी जगमां ते नजी, जिण जायो पु  
 रुष रतन्न ॥ ते सतिने नित पाय नमुं, जगमां ते ध  
 न धन्न ॥ ६१ ॥ तुं पर काम करी सदा, निज का  
 ज न करिय लगार ॥ अद्दत्र नद्दत्र करिय तुं, किम

बूढिश जव पार ॥ ६१ ॥ पाप घडो पूरण नरी, तें  
 लीउ शिर नार ॥ ते किम बूढिश जीवडा, न करी ध  
 र्म लगार ॥ ६२ ॥ इसुं जाणो कूड कपट, ठल ठि  
 ड तुं ठांम ॥ ते ठांमीनें जीवडा, जिन धर्मे चित  
 मांम ॥ ६४ ॥ जिण वचने पर दुख हुए, जिण हो  
 य प्राणी घात ॥ क्लेश पडे निज आतमा, तज उ  
 त्तम ते वात ॥ ६५ ॥ जिम तिम पर सुख दीजियें,  
 दुःख न दीजें कोय ॥ दुख देई दुख पामियें, सुख दे  
 ई सुख होय ॥ ६६ ॥ पर तांत निंदा जे करे, कूडां  
 देवे आल ॥ मर्म प्रकासे परतणा, तेषि जलो चं  
 माल ॥ ६७ ॥ पटमासीनें पारणे, इक सिथ लहे  
 आहार ॥ करतो निंदा नवि टले, तस दुर्गति अव  
 तार ॥ ६८ ॥ ठार उपर जिम लीपणुं, तिम क्रोधें  
 तप कीध ॥ तस तप जप संजम मुधा, एके काज न  
 सीध ॥ ६९ ॥ पूर्व कोडिने आउखे, पाली चारित्र  
 सार ॥ सुकृत सुणो सवि तेहनूं, दणमां होवे ठा  
 र ॥ ७० ॥ पर अवगुण सरशव समो, अवगुण नि  
 ज मेरु समान ॥ कां करे निंदा पारकी, मूरख आप  
 ण शान ॥ ७१ ॥ पर अवगुण जिम देखियें,  
 तिम परगुण तुं जोय ॥ परगुण जेतां जीवडा, अखय  
 जरामर होय ॥ ७२ ॥ क्रोधी नर अठे सदा, कहियें  
 जे उलटी रीश ॥ ते ठोडी डुर आतमा, रहे जोय  
 ण पणवीस ॥ ७३ ॥ गुण कीधा माने नही, अ  
 वगुण मांमी मूल ॥ ते नर संगति ठांमियें, पग पग

मां घासूल ॥ ७४ ॥ निंदा करे जे आपणी, ते जीवो  
 जगमांय ॥ मल मूत्र धोए परतणां, पढे अधोगति  
 जाय ॥ ७५ ॥ जे मल मूत्र धोए सदा, गुणवतना  
 निशदिस ॥ ते दुर्जन जीवो घणुं, जगमां कोडि वरी  
 म ॥ ७६ ॥ सजन दुर्जन किम जाणियें, जब मुख  
 बोले वाण ॥ सज्जन मुख अमृत लवे, दुर्जन विप  
 नी खाण ॥ ७७ ॥ नरजव चिंतामणि लही, आले  
 तुं म म हार ॥ धर्म करीनें जीवडा, सफल करो अव  
 तार ॥ ७८ ॥ सकल सामग्री तें लही, जिण तरि  
 यें संसार ॥ प्रमाद वशे जव कां गमे, कर निज हिये  
 विचार ॥ ७९ ॥ दीड उपदश लागे नही, जो नदि  
 चिंते आप ॥ आप सरूप विचारतां, बूटीजें सवि  
 पाप ॥ ८० ॥ जिण रस पाप कियां तुमें, तिण रस  
 तुं कर धर्म ॥ अहत्र नहत्र जव अनंतना, बूटीजें  
 सवि कर्म ॥ ८१ ॥ जिम आउखा दिन गुणी, वर  
 स मास घडि मान ॥ चेति सके तो चेतजे, जो हो  
 ए हियडे शान ॥ ८२ ॥ धन कारण तुं ऊल फले,  
 धर्म करि थाये सूर ॥ अनंत जवनां पाप सवि,  
 कृणमां जाये दूर ॥ ८३ ॥ जे रचना दिन ऊग  
 ती, ते रचना नहिं सांऊ ॥ इस्थुं जाणी रे जीवडा,  
 चेतहि हियडा मांऊ ॥ ८४ ॥ आशा अंबर जेव  
 डी, मरवुं पगला हेव ॥ धर्म विना जे दिन गया,  
 तिण दिन कीधी वेव ॥ ८५ ॥ रे जिव सुण तुं बाप  
 डा, म करिश गर्व गमार ॥ मूल स्वरूप देखी करी,

निज जीवशुं तुं विचार ॥ ८६ ॥ कर्म को नवि बूटियें,  
 इंद्र चंद्र नरदेव ॥ राय राणा मंमलिक बली, अवर  
 नरज कुण देव ॥ ८७ ॥ वरस दिवस घर घर नम्या,  
 आदिनाथ जगवंत ॥ कर्म वशें डुख तिणें लह्यां,  
 जे जगमां बलवंत ॥ ८८ ॥ पास जिणंद प्रतिमा र  
 हि, उपसर्ग कियो सुगिंद ॥ ते उपसर्गने टालियो,  
 पद्मावति धरणिंद ॥ ८९ ॥ काने खीला घातिआ, च  
 रणे रांधी खीर ॥ तेहुंने कर्म नड्यो, चोविशमो श्री  
 वीर ॥ ९० ॥ मल्ली माया तप करी, पाम्या  
 स्त्री अवतार ॥ सुरपति कोडि सेवा करी, कर्मनो एह  
 प्रकार ॥ ९१ ॥ पुरुषविषे चूडामणि, जरत नरेस  
 र राय ॥ बाहुबलि द्वार मनावियो, आज लगें कहे  
 वाय ॥ ९२ ॥ कीधां कर्म न बूटियें, जेहनो विषमो  
 बंध ॥ ब्रह्मदत्त नर चक्कवई, सोल वरस लगें अंध  
 ॥ ९३ ॥ आठमो सुजूम चक्कवी, रुद्धि तणो  
 नहिं पार ॥ कर्मवशें परिवारशुं, बूढा समुद्र मजा  
 र ॥ ९४ ॥ पांच पांमव अतुली बली, तेह नम्या  
 वनवास ॥ इस्या पुरुष जगमां बली, दिनपणे फखा  
 निराश ॥ ९५ ॥ राम लखमण जगमां बली, जेह  
 नुं जपे सहु नाम ॥ ते वनवासमांहे रह्या, जे  
 बहु गुणना धाम ॥ ९६ ॥ रावण विकट रामें ह  
 ण्यो, कृष्णें हण्यो जरासंध ॥ जराकुमर हरिनें  
 हण्यो, देखो कर्मनो बंध ॥ ९७ ॥ निज पुत्री  
 तातें वरी, तस कूखें सुत देव ॥ कर्मवशें जिव ऊप

नो, त्रिष्टु वासूदेव ॥ ९७ ॥ नमतां नमतां अथ  
 तस्यो, देवानंदानी कूसव । व्यासी रात्रि तिहां रही, क  
 में लखुं बलि दुःख ॥ ९८ ॥ इंदु अहिल्याशुं जुउ,  
 लुब्ध हुउ सुरदेव ॥ ईश्वर देव नचावियो, पारवती  
 पियु हेव ॥ १०० ॥ लख खमएने पारणे, कुल  
 वालुउ अणगार ॥ चित बलरुं संग नारियें, चुकत  
 न लागी वार ॥ १०१ ॥ पांचेशें रामा तजी, लीयो  
 संयम नार ॥ दश दश नंदिपेण बूकवी, नर कोश्या  
 दरवार ॥ १०२ ॥ बांधी तांतणा सूत्रना, वीर्यो  
 आर्द्धकुमार ॥ सुत मोहनी वशें रही, पठि लियो संज  
 म नार ॥ १०३ ॥ पंचसया मुनि नेमना, उर श्री  
 पासना बार ॥ जोग कारण संयम तजी, मांमयो  
 तिणें घरवार ॥ १०४ ॥ नवाणुं कोडि कंचन तजी,  
 उर तजि आठे नार ॥ ते दुःकर नित वंदियें, श्रीजंबू  
 त्रण काल ॥ १०५ ॥ एक कन्या कोडी कंचन, तजि  
 जेणें बलि दूर ॥ बहेरस्वामि ते वंदीयें, नित जगम  
 ते सूर ॥ १०६ ॥ नवाणुं पेटी सुरतणी, नित नित  
 होय निर्मात्य ॥ नरजव सुरसुख जोगवे, ते शालि  
 नंद कुमार ॥ १०७ ॥ रत्न कंबलने कारणें, श्रेणि  
 क आव्यो बार ॥ गोंखयकी बोली रह्यो, लीयो  
 संजम नार ॥ १०८ ॥ आठ नारी जेणें तजी, ते  
 धन्नो धन धन्न ॥ नारी हास्य संयम लीयो, राख्युं  
 ठाम जिणें मन्न ॥ १०९ ॥ खट नंदन देवकि तणा,  
 नदिलपुर सुलसा नार ॥ तास घरे ते उल्लस्या, रूपें

देव कुमार ॥ ११० ॥ बत्रीश बत्रीश पदमणी, बत्रि  
 श बत्रिश हेम कोड ॥ नेम समीप संयम बरी, ते  
 वंदूं कर जोड ॥ १११ ॥ सहस पुरुषगुं संजम लि  
 यो, श्रीनेमीनर हाथ ॥ ते थावच्चो वंदियें, मोहव  
 कखो यडुनाथ ॥ ११२ ॥ बार वरष ठठ आंबिल,  
 कीथां शिवकूमार ॥ शीयल व्रत सदा धरी, ए पण ड  
 करकार ॥ ११३ ॥ कोश्या मंदिर चोमासुं रही, चो  
 राशी चोवीश ॥ ते शुलिजड मुनि वंदियें, जडवाहु  
 गुरुशिष्य ॥ ११४ ॥ कपिला संगें नवि चढ्यो, शेठ  
 सुदर्शन चंग ॥ शूली सिंहासन थई, सुर करे मनने  
 रंग ॥ ११५ ॥ शिवरमणीने कारणें, जिण सुख  
 ठंमयां देह ॥ तिस नाम दोय चार लीजियें, नवि  
 जन सुणजो तेह ॥ ११६ ॥ वरस दिवस काउसग  
 किउ, बाहूबल अणगार ॥ मानगजेंथी ऊतख्यो, तब  
 लियो केवल सार ॥ ११७ ॥ गजसुकमाल शिर शो  
 मले, देखि धव्या अंगार ॥ समता पसायें ते बली,  
 पाम्या नवनो पार ॥ ११८ ॥ मेतारज शिर सोनि  
 यें, वाधर वींढ्यो धरि खेद ॥ निजमन ठामज रा  
 खयुं, कियो संसारनो ठेद ॥ ११९ ॥ सकोसल सुक  
 माल मुनि, बलुखुं वाघण अंग ॥ बापनी जामि मा  
 नखी, शिवपुरि वरि मनरंग ॥ १२० ॥ पूर्व नव प्रि  
 या शिआलणी, तिण नख्यो अवंति सुकुमाल ॥ न  
 लिनीगुल्म विमानमां, पाम्यो सुख ततकाल ॥ १२१ ॥  
 पंचशत शिष्य स्वंधक तणा, घाणी पीव्या सोय ॥

शिवनयरी शिव पामिया, ए समता फल जोय  
 ॥ १२२ ॥ चिलायति पुत्र नारि शिर, ठेदीने कर  
 लीध ॥ उपशम संवर विवेकथी, कृतकर्म दूरें कीध  
 ॥ १२३ ॥ दिन प्रति सात हत्या करी, अर्जुनमा  
 ली नाम ॥ परिसह देसि कृमा धरी, पाम्या शिवपुर  
 ठाम ॥ १२४ ॥ मुनिपति मुनि काउत्तग रहे, अगनी  
 दाधी देह ॥ परिसह साहे पदवी वरी, अमर बधू  
 धरि नेह ॥ १२५ ॥ वंश उपर नाटक करी, एला  
 पुत्र कुमार ॥ जाति ममरण ऊपनुं, ज्ञान अनंत  
 अपार ॥ १२६ ॥ कर्म वगें आपाढमुनि, जरतनुं  
 नाटक कीध ॥ अनित जावना जावतां, तिणें तिहां  
 केवल लीध ॥ १२७ ॥ सुशिष्य पंथकजी मुनि, गुरु  
 प्रमाद कियो दूर ॥ शत्रुंजय अणसण करी, ते  
 वंदूं गुण सूर ॥ १२८ ॥ चंडरौड गुरु खंधें करी,  
 रजनी कियो विहार ॥ शिष पण केवल पामियो, तिम  
 गुरु केवल धार ॥ १२९ ॥ षटमासीने पारणें, ढंढ  
 ण नाम कुमार ॥ मोदक चूरत पामियो, केवल ज्ञा  
 न उदार ॥ १३० ॥ षट खंम राज हेलां तजी, लीधो  
 संजम नार ॥ षटदश रोग इहां सह्या, श्रीश्रीसनत  
 कुमार ॥ १३१ ॥ कुर नखतां केवल लह्युं, कूरगड  
 अणगार ॥ कृमा खड्ग हाथे धरी, जे मुनिमां सिए  
 गार ॥ १३२ ॥ पंखी प्राणज राखवा, करि खंमो  
 खंम देह ॥ मेघरथ राय तणे नवें, प्रसन्न दुउं  
 सुर तेह ॥ १३३ ॥ वंदी वीर गुमानहुं, दशार्णजड



नरसिंह ॥ सुरपति पाय लगाडियो, जग राखी जिण  
 लीह ॥ १३४ ॥ प्रसन्न चंद्र काउसगमां, कोपी युद्ध  
 करंत ॥ कोप शम्यो केवल लह्युं, मोहटो ए गुणवंत  
 ॥ १३५ ॥ अश्मंतो सुकुमाल मुनि, वखाण्यो वीर  
 जिणंद ॥ इरियावही पडिक्कमतं केवल लह्युं आणंद  
 ॥ १३६ ॥ विरजिनवचनें थिर रह्यो, श्रेणिक सुत मे  
 घ कुमार ॥ जातिसमरण पामियो, करि दो नयणां  
 सार ॥ १३७ ॥ हाट वेचाणी चंदना, सुजडा चढ्युं  
 कलंक ॥ दमयंती नल विजोग लह्यो, एह कर्मनो  
 वंक ॥ १३८ ॥ कलावती कर ठेदिया, झौपदी का  
 ढ्यां चीर ॥ अग्नि शितल सीता कख्यो, शील गुणें  
 थयुं नीरं ॥ १३९ ॥ चंदना चरण मृगावती, खमा  
 वि निज अपराध ॥ केवल लहि गुरुणी दियो, दो  
 जीव टय्यो विषवाद ॥ १४० ॥ चंद कलंक सायर  
 कख्यो, खारो नीर किरतार ॥ नवसो नवाणुं नदी त  
 णो, देखो ए जरतार ॥ १४१ ॥ हरिचंदराय करम  
 वशें, शिर वह्युं मुंब घर नीर ॥ कर्म वशें नर सवि  
 नम्या, जे जग बावन वीर ॥ १४२ ॥ गउ ब्राह्मण  
 स्त्री बालका, दृढप्रहारें हत्या कीध ॥ चार पोल का  
 उसग रही, पटमास केवल लीध ॥ १४३ ॥ मेरु  
 ढजे ने ध्रुव चले, सायर लोपे लीह ॥ कीधां कर्म न  
 ठूटियें, जो उगे पन्निम दीह ॥ १४४ ॥ कीधां कर्म  
 तो ठूटियें, जो कीजें जिनधर्म ॥ मन वच कायायें  
 करी, ए जिन शासन मर्म ॥ १४५ ॥ कर्म प्रकाशी

आपणां, मन शुध आणंद पूर ॥ सह गुरु पास  
 अठे वली, जाय पाप सवि दूर ॥ १४६ ॥ बल  
 वंत अनंता जे नरा, केइ सुर सुनट जूजार ॥ क  
 र्म सुनट जुठ एकले, सरी मनाव्या हार ॥ १४७ ॥  
 कर्म सुनट विषम विकट, ते वश कियो न जाय ॥ जे  
 नर एहने वश करे, हुं वंदूं तस पाय ॥ १४८ ॥  
 इम जाणीने कीजियें, जिम आत्म सुख पाय ॥ प  
 रजिव दुःख न दीजियें, इम बोल्या जिनराय  
 ॥ १४९ ॥ दान शियल तप जावना, धर्मनां चार ए  
 मूल ॥ पर अवगुण बोलत सही, ए सउ थाए धू  
 ल ॥ १५० ॥ दान सुपात्रें दीजियें, तस पुण्यना  
 नहि पार ॥ सुख संपति लहियें घणी, मणि मोती  
 जंमार ॥ १५१ ॥ धनो सारथपती जुवो, घृत वोह  
 राव्युं मुनि हाथ ॥ दानप्रजावें जीवडो, प्रथम दु  
 वो आदिनाथ ॥ १५२ ॥ दान दियो धन सार  
 थी, आनंद हर्ष अपार ॥ नेमनाथ जिनवर दुवा,  
 यादव कुल सिणगार ॥ १५३ ॥ कलथी केरा रोट  
 ला, दीधुं मुनिवर दान ॥ वासुपूज्य नव पाठले,  
 जिनपद लखुं निदान ॥ १५४ ॥ मुनी नलो एक  
 मारगें, वोहराव्यो तस आहार ॥ साथ मव्यो ते  
 सारथी, ते विर जगदाधार ॥ १५५ ॥ सुलसा रेव  
 ति रंगशुं, दान दियो महावीर ॥ तीर्थकर पद पाम  
 शे, लहेशे ते नवतीर ॥ १५६ ॥ दानें जोगज पामि  
 यें, शियलें होय सोजाग ॥ तप करि कर्मज टालियें,

( ३९१ )

जावना शिव सुख माग ॥ १५७ ॥ जावन ठे नव ना  
शिनी, जे आपे नवपार ॥ जावन वडि संसारमां,  
जस गुणनो नहि पार ॥ १५८ ॥ अरिहंत देव सु  
साधु गुरु, केवलिनाथित धर्म ॥ इहुं समकित आ  
राधतां, तूटीजें सवि कर्म ॥ १५९ ॥ नव पद जाप  
ज कीजियें, चउद पुरवनो सार ॥ इस्या मंत्र गणियें  
सदा, जे तारे नर नार ॥ १६० ॥ सकल तिरथनो रा  
जियो, कीजें तेहनी यात्र ॥ जस दरिसणें डुर्गति टले,  
निर्मल थाये गात्र ॥ १६१ ॥ अष्टापद अर्बुदगिरि,  
समेत शिखर गिरनार ॥ पंचे तीरथ वंदियें, मन धरि  
हर्ष अपार ॥ १६२ ॥ रूपन शांति जग नेमिजिन,  
पार्श्व अने वर्द्धमान ॥ पांचे तीरथ प्रणमतां, नित  
वाधे जिउं वान ॥ १६३ ॥ उत्तम नर नारी तणां,  
नाम कहां एमांय ॥ नाम निरंतर लीजियें, जिम  
सहि आणंद थाय ॥ १६४ ॥ आतम शिक्षा जाव  
ना, गुण मणि रयण जंझार ॥ पाप टले सवि तेह  
ना, जेह नणे नर नार ॥ १६५ ॥ आतमशिक्षा  
जावना, जे सुणे हर्ष अपार ॥ नवनिधि तस घर  
संपजे, पुत्र कलत्र परिवार ॥ १६६ ॥ ए सुणतां सु  
ख ऊपजे, अंग टले सवि रीस ॥ समता रसमां जीव  
डो, जीले ते निशदीस ॥ १६७ ॥ इण नव परज  
व नव नवें, जिन मागूं हुं हेव ॥ मन वच काया  
यें करी, द्यो तुम चरणनि सेव ॥ १६८ ॥ ए गुण  
जिहां जावशुं, तिहां रान वेलाउल थाय ॥ आत

म शिक्षा नामर्थी, सुर नर लागे पाय ॥ १६९ ॥  
 वीर शासन दीपावतो, आणंद विमल सुरिंद ॥  
 प्रमाद पंथ दूरें कस्यो, प्रणमं तेह आणंद ॥ १७० ॥  
 तास शिष्य मुनिसर धणी, श्रीविजय दान सूरि  
 श ॥ प्रगट महिम तस जागतो, पाय नमे नर ईश ॥  
 ॥ १७१ ॥ उपशम रसनो कूपलो, तास पट्टधर ही  
 र ॥ सकल सूरि शिरोमणि, सायर जिम गंजी  
 ॥ १७२ ॥ हीरविजय गुरु हीरलो, प्रतिबोध्यो अ  
 कबर नूप ॥ राय राणा सेवा करे, जेहनुं अकल स  
 रूप ॥ १७३ ॥ म्लेच्छराय जिणे वश कस्यो, जग  
 वर्त्तावि अमार ॥ विमलाचन मुक्तो कियो, शासन  
 शोनाकार ॥ १७४ ॥ कुमारपाल प्रतिबोधियो,  
 श्रीश्रीहेम सुरिंद ॥ तिम अकबर गुरु हीरजी, मन  
 धरि अति आणंद ॥ १७५ ॥ ध्यानवर्जो निज पद  
 दियो, निज मन हर्ष अपार ॥ विजयसेनसुरि नाम  
 र्थी, नित होय जय जय कार ॥ १७६ ॥ कामकुं  
 न चिंतामणि, कल्पतरु अवतार ॥ ते सविथी जेह  
 सिद्धिनी, अधिक ए नवि विचार ॥ १७७ ॥ वि  
 जयसेन गुरुराय वर, विजयदेव सूरिंद ॥ विजय  
 मान गुरु वंदियें, जिम सूरज उर चंद ॥ १७८ ॥ त  
 पगढ वाचकमें वरू, विमल हर्ष शिरताज ॥  
 नामें नवनिधि संपजे, दरिसण सीजे काज ॥ १७९ ॥  
 आतमशिक्षा जावना, तास शिष्य मनरंग ॥ प्रेमवि  
 जय प्रेमें करी, कलट आणी अंग ॥ १८० ॥ श्रीरत्नह

पे विबुध मुऊ, बंधू तास पसाय ॥ तासु सानिध  
 ग्रंथ में कस्यो, मन धरि हर्ष अपार ॥ १८१ ॥ मू  
 ढ मती ठे माहरी, कवि मत करजो हास ॥ कृपा क  
 री मुऊ ऊपरें, शोधी करजो खास ॥ १८२ ॥ संव  
 त शोल बाशछि ए, वैशाख पूनम जोय ॥ वार गुरु  
 सहि दिन जलो, एह संवत्सर होय ॥ १८३ ॥ नय  
 र उळेणीमां वली, आतमशिद्धा नाम ॥ मन जाव  
 धरिने तिहां करी, सीधां वंछित काम ॥ १८४ ॥ एक  
 शत एंशी पांच ए, दोहा अति अनिराम ॥ नणे गुणे  
 जे सांजले, नेह लहे शिवगाम ॥ १८५ ॥ इति ॥

॥ अथ उपदेश सित्तरी प्रारंभ ॥

॥ उत्तपति जो जो आपणी, मन मांहि विमास ॥  
 गरजावासें जीवडो, वसियो नव मास ॥ उत्तपति जो  
 जो आपणी ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ नारी तणे नाजि  
 तलें, जिन वचनें जोय ॥ फूल तणी जिम नाजि  
 का, तामें नाडी ठे दोय ॥ ३० ॥ २ ॥ तसु तलें यो  
 नि कहीयें, वर फूल समान ॥ आंब तणी मांजर  
 जिस्यो, तिहां मांस प्रधान ॥ ३० ॥ ३ ॥ रुधिर स्रवे  
 तिण गमथी, ऋतुकाल सदैव ॥ रुधिर शुक्र जोगें  
 करी, तिहां ऊपजे जीव ॥ ३० ॥ ४ ॥ जे अपाव  
 न पवनें करी, वासित डुरगंध ॥ तिणे थानक तुं उप  
 नो, हवे दूउ मदंध ॥ ३० ॥ ५ ॥ नाली वांस तणी  
 घणुं, जरियें रू घाल ॥ ताती लोह शीलाक ते,  
 जाले तत काल ॥ ३० ॥ ६ ॥ तिम महिलानी यो

निमें, ठे नवलख जीव ॥ पुरुषप्रसंगें ते सहु, मरी  
 जाय सदैव ॥ ३० ॥ ७ ॥ उपजे नर नारी मले, पं  
 चेंडिय जेह ॥ तेह तणी संख्या नहिं, तजो कारज ए  
 ह ॥ ३० ॥ ८ ॥ नव लख जीव टके तिहां, उत्कृ  
 ष्टी वार ॥ जीव जघन्यपणें टके, एक दो त्रण चार  
 ॥ ३० ॥ ९ ॥ जीव जघन्य तिहां रहे, मुहूरत प  
 रिमाण ॥ वार वरसनी स्थिति तिहां, उत्कृष्टी ज  
 ण ॥ ३० ॥ १० ॥ तिणे गरजे कोइ जीवडो, इम क  
 हे जगदीश ॥ फरी मरी आवे तो रहे, संवत्सर चो  
 वीश ॥ ३० ॥ ११ ॥ महिला वरस पंचावनें,  
 कहियें निर्बीज ॥ पंचोतेर वरस पठें, आए पुरुष  
 अबीज ॥ ३० ॥ १२ ॥ जिमणि कूखें नर वसे,  
 तिम वामी नार ॥ वच्चें नहुंसक जाणियें, जिनव  
 चनें विचार ॥ ३० ॥ १३ ॥ हवे सामान्य पणे  
 इहां, आव्यो गर्जावास ॥ सात दिवस ऊपर रहे,  
 नरगति नव मास ॥ ३० ॥ १४ ॥ आठ वरस  
 तिर्थच रहे, उत्कृष्टो काल ॥ गर्जावासें नोगव्या,  
 इम बहु जंजाल ॥ ३० ॥ १५ ॥ कार्मणका  
 यें करि लीयो, पहिलो ते आहार ॥ शुक्र अने शो  
 णित तणो, नहि जूठ लगार ॥ ३० ॥ १६ ॥  
 पर्यापति पूरी नही, तिहां विसवा वीश ॥ तिणे  
 आहारें तनु थयो, औदारिक अरु मीस ॥ ३०  
 ॥ १७ ॥ पवन आवे उदरथकी, उपजावे अंग ॥  
 अग्नि करे थिर तेहने, जल सुरस सुरंग ॥ ३० ॥

॥ १८ ॥ कठिनपणुं पृथिवी रचे, अवगाह आका  
 श ॥ पांचे जूत शरीरनो, एम करे प्रकाश ॥ ३० ॥  
 ॥ १९ ॥ बार मुहूर्त ऋतु पढे, विलसे नर नार ॥  
 गर्ज तणी उत्पति तिहां, नही अवर प्रकार ॥  
 ॥ ३० ॥ २० ॥ कलिल दुवे दिन सातमे, खरबुद  
 दिन सात ॥ खरबुदथी पेशी वधे, घन मांस कहा  
 त ॥ ३० ॥ २१ ॥ मांस तणी गोटी दुवे, अडताली  
 श टांक ॥ प्रथम मासें जिनवर कहे, मन म धरो शं  
 क ॥ ३० ॥ २२ ॥ रुधिर मांस बीजे दुवे, हवे त्रीजे  
 मास ॥ कर्मतणे योगें करी, माता मन आश ॥  
 ॥ ३० ॥ २३ ॥ चोथे मासें मातना, परिणमे सद्दु  
 अंग ॥ हाथ अने पग पांचमे, तिम मस्तक संग ॥  
 ॥ ३० ॥ २४ ॥ पित्त रुधिर ठठे पडे, सातमे इम  
 संच ॥ नव धमणी नस सातशें, पेशी सय पंच ॥  
 ॥ ३० ॥ २५ ॥ रोमराइ पण सातमे, साडी तिन  
 क्रोड ॥ उपजे ऊणा केटजे, इम आगम जोड ॥  
 ३० ॥ २६ ॥ आठमे मासें नीपनुं, एम सकल  
 शरीर ॥ ऊंधे शिर वेदन सहे, ऊंप्पे जिन वीर ॥  
 ॥ ३० ॥ २७ ॥ शोणित शुक्र संलेपमा, लघु ने व  
 डि नीत ॥ वात पित्त कफ गर्जमें, ए थाये इण रीत ॥  
 ॥ ३० ॥ २८ ॥ मात तणी डूंटी लगे, बालकनुं  
 नाल ॥ रस आहार तणो तिहां, आवे ततकाल ॥  
 ॥ ३० ॥ २९ ॥ जननी ले आहार ते, जाए नाडो  
 नाड ॥ रोम इंडी नख चख वधे, तिम मज्जा ने हा

उ ॥ ३० ॥ ३० ॥ सविहूं अंगें उछर, सर्वांग आ  
 हार ॥ कवल प्राहार करे नही, गर्जे इस्यो विचा  
 ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ते गर्जे किण जं बने, थाय झा  
 न विचंग ॥ अथवा अवधि कहीजियें, तिणें ज्ञान  
 प्रसंग ॥ ३० ॥ ३२ ॥ कटक करी वैक्रिय पणें, जू  
 जी नरकें जाय ॥ को जिनवचन सुणी करी, मरी  
 सुर पण थाय ॥ ३० ॥ ३३ ॥ उंधे मुखें गुमा हि  
 ये, सहेतो बहु पीड ॥ दृष्टि आगल बिहूं हाथगुं,  
 रहे मूठी जीड ॥ ३० ॥ ३४ ॥ नर विण वस्त्र जला  
 दिकें, उपजे उंधान ॥ अथवा बिहूं नारी मढ्यां,  
 कह्यो गर्जे विधान ॥ ३० ॥ ३५ ॥ कोई उत्तम चिंत  
 वे, देखी दुःख राश ॥ पुण्य करुं परो नीकली, नावुं  
 गर्जावास ॥ ३० ॥ ३६ ॥ उंठ कोडी सूई अंगमां,  
 कोइ चांपे समकाल ॥ तिणथी गर्जेमां अठगुणी, स  
 हे वेदना बाल ॥ ३० ॥ ३७ ॥ माता नूखी नूखी  
 उं, सुखिणी सुख थाय ॥ माता सूते ते सुते, परवश  
 दिन जाय ॥ ३० ॥ ३८ ॥ गर्जेयकी दुःख लखगु  
 णुं, जनमे जिण वार ॥ जनम थये दुःख विसखुं,  
 धग मोह विकार ॥ ३० ॥ ३९ ॥ उपज्यो अशुचि  
 पणें तिहां, मल मूत्र कलेश ॥ पिंम अशुचि करी पूरि  
 यो, नवि शुचि लव लेश ॥ ३० ॥ ४० ॥ तुरत रुद  
 न करतो थको, जनमे जिण वार ॥ माता पयोधर  
 मुख ठवे, पिये दूध तेवार ॥ ३० ॥ ४१ ॥ दीसे दिन  
 दिन दीपतो, करे रंग अपार ॥ लाम कोम माता पिता,



पूरे सुविचार ॥ ३० ॥ ४२ ॥ ढिङ् बारह नारीने,  
 नरनां नव जाण ॥ रात दिवस वहेतां रहे, चेतो  
 चतुर सुजाण ॥ ३० ॥ ४३ ॥ सात धातु साते त्व  
 चा, ठे सातज्ञें नाड ॥ नवज्ञें नारां ठे पिंममां, तिम  
 त्रणज्ञें हाम ॥ ३० ॥ ४४ ॥ संधि एकसो साठ ठे,  
 सत्तोतेर सो मर्म ॥ तिन दोष पेशी पांचज्ञें, ढांक्यां ठे  
 चर्म ॥ ३० ॥ ४५ ॥ रुधिर शेर दश देहमें, पेसाब  
 सरीष ॥ शेर पांच चरबी तिहां, दोय शेर पूरीष  
 ॥ ३० ॥ ४६ ॥ पित्त टांक चोशठ ठे, वीरज बत्री  
 श ॥ टांक बत्रीश सलेषमा, जाणे जगदीश ॥  
 ॥ ३० ॥ ४७ ॥ इण परिमाणथकी जदा, उठो  
 अधिको आय ॥ व्यापे रोग शरीरमें, नवि चले तव  
 काय ॥ ३० ॥ ४८ ॥ पोष्यो पहिले दायके, इम  
 वाध्यो अंग ॥ खान पान नूषण जलां, करे नव न  
 व रंग ॥ ३० ॥ ४९ ॥ हवे बीजे दशके जणे,  
 विद्या विविध प्रकार ॥ त्रीजे दशके तेहने, जाग्यो  
 काम विकार ॥ ३० ॥ ५० ॥ जिण थानक तुं  
 उपन्यो, तिणमें मन जाय ॥ चोथे दशके धन त  
 णा, करे कोडि उपाय ॥ ३० ॥ ५१ ॥ पहोतो  
 दशके पांचमे, मनमां ससनेह ॥ बेटा बेटी ने पो  
 तरा, परणावे तेह ॥ ३० ॥ ५२ ॥ ठेठे दशके  
 प्राणियो, वली परवश आय ॥ जरा आवी यौवन  
 गयुं, तृष्णा तोय न जाय ॥ ३० ॥ ५३ ॥ आव्यो  
 दशके सातमें, हवे प्राणी तेह ॥ बल नांग्युं बूढो थ

यो, नारी न धरे नेह ॥ उ० ॥ ५४ ॥ आठमे द  
 शके मोसलो, खुलीया सहु दांत ॥ कर कंपावे शि  
 र धुणे, करे फोकट वात ॥ उ० ॥ ५५ ॥ नवमे  
 दशके प्राणियो, तन शक्ति न कांय ॥ साले वचन  
 सहू तणां, दिन फूरतां जान ॥ उ० ॥ ५६ ॥  
 खाट पड्यो खू खू करे सुगाली देह ॥ हाल हुकम  
 हाले नही, दिये परिजन व्ह ॥ उ० ॥ ५७ ॥ आं  
 ख गले बे पड मिळे, पडे मुहडे लाल ॥ वेठा बे  
 टी ने व्हू, न करे संजाल ॥ उ० ॥ ५८ ॥ दशमे  
 दशके आवियो, तव पूरी आय ॥ पुण्य पाप फल जो  
 गवी, प्राणी परजव जाय ॥ उ० ॥ ५९ ॥ दश दृ  
 ष्टांतें दोहिलो, लही नरजव सार ॥ श्रीजिनंधर्म स  
 माचरे, ते पामे जवपार ॥ उ० ॥ ६० ॥ तरुणपणे  
 जे तप तपे, पाले निर्मल शील ॥ ते संसार तरी  
 करी, लहे अविचल लील ॥ उ० ॥ ६१ ॥ कोडी  
 रतन कवडी सटे, कांइ गमे रे गमार ॥ धर्म विना  
 ए जीवने, नही को आधार ॥ उ० ॥ ६२ ॥ काया  
 माया कारिमी, कारिमो परिवार ॥ तन धन जोबन  
 कारिमो, साचो धर्म संसार ॥ उ० ॥ ६३ ॥ चउदे  
 राज प्रमाण ए, ठे लोक महंत ॥ जनम मरण करी  
 फरसीयो, जीव वार अनंत ॥ उ० ॥ ६४ ॥ आप स  
 वारथीयो सहु, नही केहनो कोय ॥ निज स्वारथ वि  
 ण पूगतां, सुत पण रिपु होय ॥ उ० ॥ ६५ ॥ ज  
 रा न आवे जिहां लगे, जिहां लगे सबल शरीर ॥ ध

( ३९९ )

र्म करो जीव तिहां लगे, होइ साहस धीर ॥ ३० ॥  
॥ ६६ ॥ आरज देश लह्यो हवे, लाधो गुरु संजो  
ग ॥ अंगथकी आलस तजो, करो सुकृत संजोग ॥  
॥ ३० ॥ ६७ ॥ श्रीनेमिराज तणी परें, चेतो चित्त  
मांहि ॥ स्वारथनो सहु को सगो, कोइ कियरो नांहि ॥  
॥ ३० ॥ ६८ ॥ जोग संजोग राजी सहु, यथा जे अ  
णगार ॥ धन धन तसु माता पिता, धन धन अव  
तार ॥ ३० ॥ ६९ ॥ सुरतरु सुरमणि सारिखो, से  
वो श्रीजिनधर्म ॥ जिणथी सुख संपति वधे, कीजें  
तेहज कर्म ॥ ३० ॥ ७० ॥ तंदूलि व्याजीमें अढे,  
एहनो अधिकार ॥ तिणथी उहरीने कह्यो, नही जू  
ठ लगार ॥ ३० ॥ ७१ ॥ कलश ॥ एह जैनधर्म वि  
चार सांजली, लहियें संजम नार ए ॥ बली सिंहनी  
परें सदा पाजे, नियमं निरतीचार ए ॥ संसारनां सु  
ख सकल जोगवी, ते लहे नव पार ए ॥ श्रीरत्नहर्षसु  
शिष्यरंगें, इम कहे श्रीसार ए ॥ ७२ ॥ इति गर्जवेली  
जीवनी उत्पत्तिनुं स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ कृमाठत्रीशी प्रारंभः ॥

॥ आदर जीव कृमागुण आदर, म करिश राग  
ने द्वेष जी ॥ समतायें शिव सुख पामीजें, क्रोधें कुगति  
विशेष जी ॥ आ० ॥ १ ॥ समता संजम सार सुणी  
जें, कल्पसूत्रनी साख जी ॥ क्रोध पूर्वकोडि चारित्र  
बाजे, जगवंत इणी परें नाख जी ॥ आ० ॥ २ ॥ कुण  
कुण जीव तखा उपशमथी, सांजल तुं दृष्टांत जी ॥

कुण कुण जीव जम्या जवमांहे, क्रोध तणे विरतंत  
 जी ॥ आ० ॥ ३ ॥ सोमल ससरे शीश प्रजाव्युं,  
 बांधी माटीनी पाल जी ॥ गजसुकुमाल द्रुमा मन ध  
 रतो, मुगति गयो तत काल जी ॥ आ० ॥ ४ ॥ कुलवा  
 लुउं साधु कहातो, कीधो क्रोध अपार जी ॥ कोणिकनी  
 गणिका वश पडियो, रडवहियो संसार जी ॥ आ०  
 ॥ ५ ॥ सोवनकार करी अति वेदन, वाध्रुं वींटियुं  
 शीश जी ॥ मेतारज रुपि मुग पोहोतो, उपशम ए  
 ह जगीश जी ॥ आ० ॥ ६ ॥ कुरुड बुरुड वे  
 साधु कहाता, रह्या कुणाला खाल जी ॥ क्रोध करीते  
 कुगतें पहोता, जनम गम्याओ आल जी ॥ आ०  
 ॥ ७ ॥ कर्म खपावी मुगतें पहोता, खंधकं सूरिता  
 शिष्य जी ॥ पालक पापीयें जाणी पीव्या, नाणी मन  
 मां रीश जी ॥ आ० ॥ ८ ॥ अच्चंकारी नारी अचुं  
 की, त्रोज्यो पीयुशुं नेह जी ॥ बच्चर कुल सद्यां  
 दुःख बहुलां, क्रोध तणां फल एह जी ॥ आ० ॥  
 ॥ ९ ॥ वाघणे सर्व शरीर वल्लूखुं, ततद्वण ठो  
 ज्यां प्राण जी ॥ साधु सुकोशल शिव सुख पाम्या, ए  
 ह द्रुमा गुण जाण जी ॥ आ० ॥ १० ॥ कुण चं  
 माल कहीजें बिदुमें, निरति नही कहे देव जी ॥ रु  
 पि चंमाल कहीजें वडतो, टालो वेढनी टेव जी ॥  
 ॥ आ० ॥ ११ ॥ सातमी नरक गयो ते ब्रह्मदत्त,  
 काढी ब्राह्मण आंख जी ॥ क्रोध तणां फल कडुआं  
 जाणी, राग द्वेष दो नाख जी ॥ आ० ॥ १२ ॥ खं

धक रुपिनी खाल उतारी, सह्यो परिसह जेण जी ॥  
 गरजावासना दुःखथी लूढ्यो, सबल द्रुमा गुण ते  
 ए जी ॥ आ० ॥ १३ ॥ क्रोध करी स्वंधक आचारि  
 ज, दुउ अग्रिकुमार जी ॥ दंभक नृपनो देश प्रजा  
 ल्यो, नमरो नवह मजार जी ॥ आ० ॥ १४ ॥ चंद्रौ  
 ५ आचारिज चलतां, मस्तक दीध प्रहार जी ॥ द्रु  
 मा करंतां केवल पाम्यो, नर दीक्षित अणगार जी  
 ॥ आ० ॥ १५ ॥ पांच वार रुपिनें संताप्यो, आ  
 णी मनमां द्वेष जी ॥ पंच नव सीम दह्यो नंद नावि  
 क, क्रोध तणां फल देख जी ॥ आ० ॥ १६ ॥ साग  
 रचंदनुं शीस प्रजाली, निशि ननसेन नरिंद जी ॥  
 समता जाव धरी सुरलोकें, पढुतो परमानंद जी ॥  
 ॥ आ० ॥ १७ ॥ चंदना गुरुणीयें घणुं निचंठी, धिग्  
 धिग् तुज अवतार जी ॥ मृगावती केवलसिरि पामी,  
 एह द्रुमा अधिकार जी ॥ आ० ॥ १८ ॥ सांब प्रद्युम्न  
 कुंअर संताप्यो, कृष्ण द्वैपायन साह जी ॥ क्रोध क  
 री तपनुं फल हाख्यो, कीधो द्वारिकादाह जी ॥  
 ॥ आ० ॥ १९ ॥ जरतने मारण मूठी उपाडी, बा  
 दूबल बलवंत जी ॥ उपशम रस मनमांहे आणी,  
 संजम ले मतिमंत जी ॥ आ० ॥ २० ॥ काउसग  
 मां चडियो अतिक्रोधें, प्रश्नचंद्र रुषिराय जी ॥ सा  
 तमी नरक तणां दल मेढ्यां, कडुआं तेण कषाय जी ॥  
 ॥ आ० ॥ २१ ॥ आहारमांहे क्रोधें रुषि थूंक्यो,  
 आण्यो अमृत जाव जी ॥ कूरगड्डयें केवल पाम्युं,

कृमातणो परचाव जो ॥ आ० ॥ ११ ॥ पार्श्वनाथने  
 उपसर्ग कीधा, कमठ जवांतर धीठ जी ॥ नरक तिर्य  
 च तणां दुःख लाधां, क्रोध तणां फल दीठ जी ॥ आ० ॥  
 ॥ १२ ॥ कृमावंत दमदंत मुनीश्वर, वनमां रह्यो का  
 उसग जी ॥ कौरव कटक हण्यो इटालें, त्रोज्या क  
 र्मना वर्ग जी ॥ आ० ॥ १३ ॥ सज्यापालक कानें तरु  
 उ, नाम्यो क्रोध उदीर जी ॥ देहु कानें खीजा ठोका  
 णा, नवि बूटा महावीर जी ॥ आ० ॥ १४ ॥  
 चार हत्यानो कारक दुतो, दृढप्रहार अतिरेक जी ॥  
 कृमा करीने मुक्तें पहीतो, उपसर्ग सह्या अनेक जी ॥  
 ॥ आ० ॥ १५ ॥ पदुरमांहे उपजतो हाखो, क्रो  
 धें केवल नाण जी ॥ देखो श्रीदमसार मुनीसर, सू  
 त्र गुण्यो उछाण जी ॥ आ० ॥ १६ ॥ सिंह गुफावा  
 सी रुपि कीधो, थूलिजइ ऊपर कोप जी ॥ वेश्या  
 वचन गयो नेपालें, कीधो संजम लोप जी ॥ आ० ॥  
 ॥ १७ ॥ चंडावतंसक काउसग रहियो, कृमा तणो  
 जंमार जी ॥ दासी तेल जख्यो निशि दीवो, सुरपदवी  
 लहे सार जी ॥ आ० ॥ १८ ॥ इम अनेक तखा त्रि  
 जुवनमें, कृमागुणें नवि जीव जी ॥ क्रोध करी कुग  
 तें ते पहीता, पाडंता मुख रीव जी ॥ आ० ॥ १९ ॥  
 विष हलाहल कहीयें विरुठ, ते मारे एक वार जी ॥  
 पण कषाय अनंती वेला, आपे मरण अपार जी ॥  
 ॥ आ० ॥ २० ॥ क्रोध करंतां तप जप कीधां, न पडे  
 कांई ठाम जी ॥ आप तपे परने संतापे, क्रोधशुं के

हो काम जी ॥ आ० ॥ ३१ ॥ कृमा करंतां खरच न  
 लागे, नांगे क्रोड कलेश जी ॥ अरिहंत देव आरा  
 धक थाये, व्यापे सुजस प्रदेश जी ॥ आ० ॥ ३२ ॥  
 नगरमांहे नागोर नगीनो, जिहां जिनवर प्रासाद  
 जी ॥ श्रावक लोक वसे अति सुखिया, धर्मतणे पर  
 साद जी ॥ आ० ॥ ३४ ॥ कृमा ठत्रीशी खांतें की  
 धी, आतम पर उपगार जी ॥ सांजलतां श्रावक पण  
 समज्या, उपशम धखो अपार जी ॥ आ० ॥ ३५ ॥  
 जुगप्रधान जिणचंद सुरीसर, सकलचंद तसु शिष्य  
 जी ॥ समयसुंदर तसु शिष्य नणे इम, चतुर्विध सं  
 घ जगीश जी ॥ आ० ॥ ३६ ॥ इति कृमाठत्रीशी ॥

॥ अथ वैकुंठपंथ लिख्यते ॥

॥ वैकुंठ पंथ बीहामणो, दोहिलो ठे घाट ॥ आ  
 पणनो तिहां कोइ नंही, जे देखाडे वाट ॥ १ ॥  
 मार्ग वहे रे उतावलो, उमे जीणेरी खेह ॥ को  
 इ केहने पडखे नही, ठांमी जाए सनेह ॥ मा०  
 ॥ १ ॥ एक चाव्या बीजा चालशे, त्रीजा चालण  
 हार ॥ रात दिवस वहे वाटडी, पडखे नही ल  
 गार ॥ मा० ॥ ३ ॥ प्राणीने परियाणुं आवियुं,  
 न गणे वार कुवार ॥ नडा नरणी योगिणी, जो होय  
 सामो काल ॥ मा० ॥ ४ ॥ जम रूपें बिहामणो,  
 वाटें दीये रे मार ॥ कृत कमाई पूठशे, जीवनो किर  
 तार ॥ मा० ॥ ५ ॥ लोर्जे वाह्यो जीवडो, करतो ब  
 हू पाप ॥ अंतरजामी आगर्जे, केम करीश जबा

प ॥ मा० ॥ ६ ॥ जे विण घडी सरतो नही, जीव  
 न प्राण आधार ॥ ते विण वरस वही गयां, शुद्ध  
 नहि समाचार ॥ मा० ॥ ७ ॥ आव्यो तुं जीव एक  
 लो, जातां नहि कोइ साथ ॥ पुण्य विना तुं प्राणि  
 या, घसतो जाइश हाथ ॥ मा० ॥ ८ ॥ मग कोरी  
 मांहे पेशीयें, तोहि न मेळे मोत ॥ चेतणहारा  
 चेतजो, जाशे गोफण गोला सोत ॥ मा० ॥ ९ ॥ ठ  
 त्रपति नूप केइ गया, सिद्ध साधक लाख ॥ क्रोड  
 गमे करण आवड्या, अमर कोइ जीव दाख ॥ मा० ॥  
 ॥ १० ॥ आपण देखतां जग गयो, आपणें पण  
 जाणा ॥ रुद्धि मेली रद्देशे नही, मोहोटा राय ने राणा ॥  
 ॥ मा० ॥ ११ ॥ दाहाडे पडोते आपणे, सद्धु कोइ  
 जाशे ॥ धर्म विना तुमें प्राणिया, पडशो नरकावा  
 सें ॥ मा० ॥ १२ ॥ संबल होय तो खाइयें, नही  
 तो मरीयें नूख ॥ आपणडो तिहां कोइ नही, जेहने  
 कहियें दुःख ॥ मा० ॥ १३ ॥ आगल हाट न वाणी  
 या, न करे कोइ उधार ॥ गांठे होय तो खाइयें, न  
 हि कोइ देअणहार ॥ मा० ॥ १४ ॥ निश्चल रहे  
 वुं ठे नही, म करो मोडा मोड ॥ परस्त्री प्रीत न मां  
 मियें, ए तो महोटी खोड ॥ मा० ॥ १५ ॥ वस्तु पी  
 यारी मत लीयो, म करो तांत पियारी ॥ धर्म विना  
 जग जीवने, होशे अंतें खुआरी ॥ मा० ॥ १६ ॥ कूड  
 कपट तुमें मत करो, जीव राखजो ठाम ॥ जीवदया  
 प्रतिपालजो, जो होय वैकुंठ काम ॥ मा० ॥ १७ ॥



मोहोटां मंदिर मालीयां, घर पण घणोरी आथ ॥ हीरा  
 माणक अति घणा, पण कांइ नावे साथ ॥ मा० ॥  
 ॥ १८ ॥ कोडी गमे कुकर्म कियां, केतां कहुं तुम आ  
 गल ॥ लेखे किणि परें पोहोंचीयें, प्रचुजीशुं कागल ॥  
 ॥ मा० ॥ १९ ॥ आगल वैतरणी वहे, तिहां कोइ न  
 तारे ॥ धर्मी तरी पार पामशे, पापी जाशे पायाजें ॥  
 ॥ मा० ॥ २० ॥ दीठे मारग चालीयें, न जरियें कूडी  
 साख ॥ काल काया पडि जायशे, मशाणें उमरुं रा  
 ख ॥ मा० ॥ २१ ॥ जतन करंतां जायशे, उमी जा  
 शे सास ॥ माटी ते माटी थायशे, ऊपर उगशे घास ॥  
 ॥ मा० ॥ २२ ॥ माय बाप ए केहनां, केहनो परिवार ॥  
 पुत्र पौत्रादिक केहनां, केहनी घरनार ॥ मा० ॥ २३ ॥  
 कोइ म करशो गारवो, धन जोबन केरो ॥ अंतें उग  
 स्यो कोइ नही, आपणंथी जलेरो ॥ मा० ॥ २४ ॥  
 महारुं महारुं करतो थको, पड्यो माया ने मोह ॥ लो  
 चन बे मीचाणडां, तव घणी अनेराइ होय ॥ मा० ॥  
 ॥ २५ ॥ जे जिहां ते तिहां रह्युं, चाव्यो एकलो आ  
 प ॥ सार्थें संग ते बे थयां, एक पुण्य ने पाप ॥ मा० ॥  
 ॥ २६ ॥ सुगुरु सुसाधु वंदियें, मंत्र महोटी नवकार ॥  
 देव अरिहंतने पूजीयें, जेम तरीयें संसार ॥ मा० ॥  
 ॥ २७ ॥ शालिजइ सुख नोगव्यां, पात्र तणे अधि  
 कार ॥ खीर खांम घृत वहोरावीयां, पोहोता मुक्ति मज्जा  
 र ॥ मा० ॥ २८ ॥ तस घर घोडा हाथीया, राजा दी  
 ए बहु मान ॥ दान दया करी दीजियें, नावें साधु

ने मान ॥ मा० ॥ २९ ॥ धर्मे पुत्रज रूखडा, धर्मे  
 रूडी नार ॥ धर्मे लखमी पामीये, धर्मे जय ज  
 यकार ॥ मा० ॥ ३० ॥ नवनंद मत्ता मेली गया. मूं  
 गर केरा पाणा ॥ समुद्रमां थया शंखलां, गता नं  
 दनां नाणां ॥ मा० ॥ ३१ ॥ पूंजी मेली मरि जाय  
 शे, खावे खरचवे खांटा ॥ ते कडाह कपर थई. अब  
 तस्या मणिधर महोटा ॥ मा० ॥ ३२ ॥ माल मेली  
 करी एकठा, खरचे नवि खाय ॥ लेई चंदारे नूमिमां.  
 तिहां कोई काढि जाय ॥ मा० ॥ ३३ ॥ मूंजी लख  
 मी मेलशे, केहने पाणी न पाय ॥ धर्म कार्य आवे न  
 ही, ते धूल धाणी थाय ॥ मा० ॥ ३४ ॥ जीवते दा  
 न जे आपशे, पोतें जमणे दाय ॥ श्रीजगवान एम जा  
 खियुं, सहु आवशे साथ ॥ मा० ॥ ३५ ॥ दया करी  
 जे आपशे, उलटें अन्ननुं दान ॥ अडशठ तीर्थे इहां  
 अठे, वली गंगास्नान ॥ मा० ॥ ३६ ॥ जोगी  
 जंगम घणा थायशे, दुखिया इण संसार ॥ खीचडी  
 खाए खांत्युं, साचो जिन धर्मसार ॥ मा० ॥ ३७ ॥  
 खांमानी धारें चालवुं, सुणजो ए सार ॥ परस्त्री मात  
 करि जाणवी, लोन न करवो लगार ॥ मा० ॥ ३८ ॥  
 कनक कामिनी जेणें परिहरी, तेतो कर्मथी तूटा ॥  
 नीखारी नमे घणा, बीजा खीचड खूटा ॥ मा० ॥  
 ॥ ३९ ॥ पाथरणें धरती नजी, उठण जनुं आका  
 श ॥ शणगारें शीयल पहेरवुं, तेहनें मुक्तिनो वास  
 ॥ मा० ॥ ॥ ४० ॥ उपवास आंबिल नित करे, नित

अरिहंत ध्यान ॥ काम क्रोध लोभ परिहरे, तेहनें सु  
 क्ति निधान ॥ मा० ॥ ४१ ॥ मनुष्य जनम पामी क  
 री, जे करजो धर्म ॥ सुख सघलांए संपजे, बूटे सर  
 वे कर्म ॥ मा० ॥ ४२ ॥ धर्मे धन्नज पामीये, ध  
 र्मे सवि सुख थाये ॥ अरिहंत नाम आराधियें, पाप  
 परले थाये ॥ मा० ॥ ४३ ॥ खाट पथरणे सुई रहो,  
 खाउ नित्य खाणां ॥ एक अरिहंत नाम संनारतां,  
 क्रियां बेसे तुऊ नाणां ॥ मा० ॥ ४४ ॥ मनसा वाचा  
 कायथी, लीजें जगवंत नाम ॥ सुख स्वर्गनां संपजे,  
 सीजे वंछित काम ॥ मा० ॥ ४५ ॥ खातां पीतां ख  
 रचतां, हइटा म करे खलखंच ॥ काया माया कारि  
 मी, जोबन दहाडा पंच ॥ मा० ॥ ४६ ॥ केही सुचं  
 गी वाढीयो, केही सुचंगी नार ॥ केते माटी होई रही,  
 केते नए अंगार ॥ मा० ॥ ४७ ॥ हंसराजा जब उमी  
 यो, तव कोई न करे सार ॥ सगां कुटुंब सहु एम नणे,  
 वहि काढो बार ॥ मा० ॥ ४८ ॥ मित्र मंत्रादिक  
 तिहां लगें, तिहां लगें स्नेह जरपूर ॥ हंसराजा जब  
 चालिया, तव थया सहु दूर ॥ मा० ॥ ४९ ॥ जेवो  
 जाण्यो तेवो काढियो, नवि मागीयो जाग ॥ आगल  
 खोखर हांमली, मांहे अधबलती आग ॥ मा० ॥ ५० ॥  
 पतित पावन प्रभुजी तुमें, सुणो हो दीननाथ ॥ सं  
 सार सागरमांहि बूडतां, देजो तुमें हाथ ॥ मा० ॥ ५१ ॥  
 सांजलो स्वामी शामला, मोरी अरदास ॥ हुं मागुं  
 प्रभु एटलुं, देजो वैकुंठवास ॥ मा० ॥ ५२ ॥ अहं

कार चित्त न आणीयें, केहनें गाल न दीजें ॥ काम  
 क्रोध लोभ मारियें, तो अमर फल लीजें ॥ मा० ॥  
 ॥ ५३ ॥ करत कमाई जोड़ियें, केहनें दोष न दीजें ॥  
 विपनां फल जो वावियें, तो अमृत फल किम लीजें ॥  
 ॥ मा० ॥ ५४ ॥ ठति रुद्धे खरचे नही, ते पण मूरख  
 महोटा ॥ ठालो आव्यो नूलो जायरो, आगल पडरो  
 खोटा ॥ मा० ॥ ५५ ॥ चौराशी लख जीवा जोनि  
 मां, फिरिया वार अनंत ॥ मुनि नीम नणे अरिहंत  
 जपो, जिम पामो नव अंत ॥ मा० ॥ ५६ ॥ संवत  
 शोल नवाणुयें, बीज ने बुधवार ॥ आसोमासें गाश्यो,  
 ठीकारी नगरी मजार ॥ मा० ॥ ५७ ॥ नीम नणे  
 सहु सांजलो, मत संचो दाम ॥ जिमणे हाथे वाव  
 रो, तो सहि आवरो काम ॥ मा० ॥ ५८ ॥ नीम  
 नणे सहु सांजलो, नवि कीजें पाप ॥ उठो अधिको  
 जे में कह्यो, ते तमें करजो माफ ॥ मा० ॥ ५९ ॥

॥ अथ माहावीरस्वामीनुं स्तवन ॥

॥ मुने ते दिननो विश्वास ठे, प्रभुजी तुमारो ॥  
 साहेबजी तुमारो ॥ मु० ॥ दास तुमारो वीनवे,  
 प्रभु पार उतारो ॥ मु० ॥ १ ॥ चोशठ इंद्रज था  
 पिया, इंद्रासन आप्युं ॥ राज रुद्धि सुख संपदा, स  
 मकित लइ थाप्युं ॥ मु० ॥ २ ॥ नक्त नली परें उ  
 ढस्यो, तें तो शेर सुदर्शन ॥ शूलि नांजी साहिबा, की  
 धुं सिंहासन ॥ मु० ॥ ३ ॥ चारित्र्यी चूकी करी,  
 गणिका घर वसिया ॥ आषाढ नंदिषेण उढस्यो, तु

में नक्तिना रसिया ॥ मु० ॥ ४ ॥ बारें ब्रतमां एको  
 नही, कांइ नियम न लीधुं ॥ श्रेणिक नक्ति जाणी  
 करी, तेहने निज पद दीधुं ॥ मु० ॥ ५ ॥ चंदनवा  
 ला बारणें, प्रचु चालीने आव्या ॥ बेडी नांजी नेउर  
 थयां, सोल शणगार पहेराव्या ॥ मु० ॥ ६ ॥ अ  
 ग्निज्वाला अंगें वसे, विषधर विकरालो ॥ चरणे म  
 स्यो चंमकोशीयो, उदखो नाग कालो ॥ मु० ॥ ७ ॥  
 नक्त नला बुरा उदखा, तेतो शास्त्र वखाणे ॥ नाथ  
 निरंजन लहेरमां, रूपचंद रस माणे ॥ मु० ॥ ८ ॥

॥ अथ शंखेश्वरपार्श्वजिनस्तवनं ॥

॥ राग प्रजाती ॥ कडखो ॥ पास शंखेश्वरा सार कर  
 सेवका, देव कां एवडी वार लागे ॥ कोडि कर जो  
 डि दरबार आगें खडा, ठाकुरा चाकुरा मान मागे ॥  
 पा० ॥ १ ॥ जगतमां देव जगदीश तुं जागतो, एम  
 गुं आज जिनराज कंघे ॥ महोटा दानेश्वरी तेहने  
 दाखियें, दान दिये जेह जग काल मूंघे ॥ पा० ॥ २ ॥  
 नीड पडि जादवा जोर लागी जरा, तिणे समे त्रीक  
 में तुज संजाखो ॥ प्रगटि पातालथी पलकमां तें प्र  
 चु, नक्तजन तेहनो जय निवाखो ॥ पा० ॥ ३ ॥ प्रगट  
 था पासजी मेलि पडदो परो, मोड असुराणने आप  
 ठोडो ॥ मुज महीराण मंजूषमां पेसिने, खलकना  
 नाथजी ! बंध खोलो ॥ पा० ॥ ४ ॥ आदि अनादि  
 अरिहंत तुं एक ठे, दीनदयाल ठे कोण दूजो ? ॥

उदयरतन कहे प्रगट प्रजुपासजी, पामी जयजंजनो  
एह पूजो ॥ पा० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ श्रीनेमनाथ स्तवनं ॥

॥ नेम मिले तो वातां कीजीयें, वो प्यारो नेम मिले तो  
वातां कीजीयें रे ॥ ए आंकणी ॥ में हूं प्यारी ने खिजम  
तगारी, प्रेमका प्याला पीजीयें रे ॥ वोप्या० ॥ में हूं  
केतकी तुम होजो नमरा, फरि फरि वासना लीजी  
यें रे ॥ वोप्या० ॥ १ ॥ में हूं धरणी तुम होजो मेहु  
ला, कवहीक मिलनां कीजीयें रे ॥ वोप्या० ॥ रा  
जुल नेम दोनुं मुगति सीधाये, रूपचंद पद दीजीयें  
रे ॥ वोप्या० ॥ २ ॥

॥ अथ पार्श्वजिनस्तवनं ॥

॥ निर्मल होइ नज ले प्रजु प्यारे, सब रे संसारमें है  
जिन न्यारे ॥ निर्मल० ॥ १ ॥ पार्श्वप्रजुजीको दर्शन  
कर ले, नवजल पार उतारण हारे ॥ निर्मल० ॥ २ ॥  
जाके अविचल ज्योति विराजे, अकल अगोचर रूप  
उदारे ॥ निर्मल० ॥ ३ ॥ वाके गुनको पार न लहि  
यें, कहि न शके कोइ जग आधारे ॥ निर्मल० ॥ ४ ॥  
वाके नजन सुख पावत प्राणी, शुद्ध ह्रमा कव्याण  
उदारे ॥ निर्मल० ॥ ५ ॥ इति पार्श्वजिनस्तवनं ॥

॥ अथ प्रजातीयुं ॥

॥ आतमतत्त्व विचारो रे जोगी, आतमतत्त्व विचा  
रो रे ॥ ए आंकणी ॥ यावर जंगम व्यापारज होवे,  
करुणा दृष्टि तिहां कारी रे ॥ वचन विशासको ठत्र

न फरसे, सत्यसिंहासन धारी रे ॥ आतम० ॥ १ ॥  
 कोडी कनक रतन नहि लेवे, घर घर निह्ना हारी  
 रे ॥ कंदर्पदेवकुं जेर कीयो है, त्रिया जोग निवारी  
 रे ॥ आत० ॥ २ ॥ स्नान मज्जन अरु परिग्रह त्यागी,  
 वैरी मित्र न यारी रे ॥ परमहंसकी पदवी लीनी,  
 जाउं जोगीपर चारी रे ॥ आतम० ॥ ३ ॥ महीमंम  
 लमें विचरे जोगी, देहदिशा वीसारी रे ॥ रूपचंद  
 चरणे शीस नामी, तेरी नक्तिन्यारी रे ॥ आ० ॥ ४ ॥

॥ अथ संप्रतिराजानुं स्तवन ॥ राग आशावरी ॥

॥ धन धन संप्रति साचो राजा, जेणे कीधां उत्तम  
 काम रे ॥ सवा लाख प्रासाद करावी, कलियुग राख्युं  
 नाम रे ॥ धन० ॥ १ ॥ वीर संवत्सर संवत बीजे, ते  
 रोत्तरें रविवार रे ॥ माहाद्युदि आठमी बिंब जरावी,  
 सफल कियो अवतार रे ॥ धन० ॥ २ ॥ श्रीपद्मप्रज  
 मूरति थापी, सकल तीरथ शणगार रे ॥ कलियुग क  
 ढ्पतरु ए प्रगढ्यो, वंठित फल दातार रे ॥ धन० ॥  
 ॥ ३ ॥ उपासरा बे हजार कराव्या, दानशाला शय  
 सात रे ॥ धर्म तणा आधार आरोपी, त्रिजग दुउं वि  
 ख्यात रे ॥ धन० ॥ ४ ॥ सवा लाख प्रासाद करा  
 व्या, ठत्रीश सहस उद्धार रे ॥ सवा कोडी संख्यायें  
 प्रतिमा, धातु पंचाणुं हजार रे ॥ धन० ॥ ५ ॥ एक प्रा  
 साद नवो नित नीपजे, तो मुखशुद्धीज होय रे ॥  
 एह अनिग्रह संप्रति कीधो, उत्तम करणी जोय रे ॥  
 ॥ धन० ॥ ६ ॥ आर्य सुहस्ति गुरु उपदेशें, श्रावकनो

आचार रे ॥ समकित मूल बार व्रत पाली, कीधो जग  
उपगार रे ॥ धन० ॥ ० ॥ जिनशासन उद्योत करी  
ने, पाली त्रण खंम राज रे ॥ ए संसार असार जाणी  
नें, साध्यां आतम काज रे ॥ धन० ॥ ७ ॥ गंगाणी न  
यरीमां प्रगढ्या, श्रीपद्मप्रज देव रे ॥ विबुध कानजी  
शिष्य कनकने, देहो तुम पयसेव रे ॥ धन० ॥ ए ॥

॥ पद तुमरीमां गीत ॥

॥ सहसफणा रे मोरा साहेबा, तोरी स मरी सुरत  
पर वारी जाउं रे ॥ सह० ॥ तन मन लगन लगो इ  
क तोशुं, हारे में तो देव अवर नही ध्याउं रे ॥ स० ॥ १ ॥  
सफल आजकी घडी हे मेरी, हारे में तो देखी दरश सुख  
पाउं रे ॥ सह० ॥ २ ॥ वदन कमल ठबि देखत सुंद  
र, हारे हुं तो रोम रोम उलसाउं रे ॥ सह० ॥ ३ ॥  
तुम गुनको कबु पार न आवे, हारे हुं तो उपमा कहा  
बताउं रे ॥ सह० ॥ ४ ॥ कीर्तिसागर कहे नव नव  
तोरी, हारे में तो मोज महिर नित पाउं रे ॥ स० ॥ ५ ॥

॥ अथ पद राग षट ॥

॥ स्वारथकी सब हे रे सगाइ, कुण माता कुण  
वेनड जाइ ॥ स्वा० ॥ १ ॥ स्वारथ जोजन छुक्त सगा  
इ, स्वारथ बिन कोइ पाणि न पाइ ॥ स्वा० ॥ २ ॥ स्वा  
रथ मा बाप शेठ बडाइ ॥ स्वारथ बिन नहु होत स  
हाइ ॥ स्वा० ॥ ३ ॥ स्वारथ नारी दासी कहाइ, स्वा  
रथ बिन जाठी ले धाइ ॥ स्वा० ॥ ४ ॥ स्वारथ चेला  
गुरु गुरु जाई, स्वारथ बिन नित होत लराइ ॥ स्वा०



॥ ४ ॥ समयसुंदर कहे सुणो रे लोकाइ, स्वारथ हे  
नलि परम सगाइ ॥ स्वा० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद राग षट ॥

॥ सोइ सोइ सारी रेन गुमाइ, बेरन निडा कहांसैं रे  
आइ ॥ सो० ॥ निडा कहे में तो बाली रे जोली, बडे  
बडे मुनिजनकुं नाखुं रे ढोली ॥ सो० ॥ १ ॥ निडा  
कहे में तो जमकी दासी, एक हाथे मूकी बीजे हाथें  
फांसी ॥ सो० ॥ २ ॥ समयसुंदर कहे सुनो जाइ ब  
नीया, आप मूए सारी रुब गइ डनीयां ॥ सो० ॥ ३ ॥

॥ अथ पंचपरमेष्ठी आरति ॥

॥ इहन्धि मंगल आरति कीजें, पंच परमपद नजि  
सुख लीजें ॥ इह० ॥ पहेली आरति श्रीजिनरायजा,  
नविजन पार उतार जीहाजा ॥ इह० ॥ १ ॥  
बीजी आरति सिद्धस्वरूपी, ध्याने उपजे परम रस  
कूपी ॥ इह० ॥ २ ॥ त्रीजी आरति सूरि मुणिंदा,  
जनम जनम दुःख दूर हरंदा ॥ इह० ॥ ३ ॥ चोथी  
आरति श्रीउवजाया, दरिसण देखत पाप नसाया  
॥ इह० ॥ ४ ॥ पांचमि आरति साधु बताइ, मोह  
मान ममताकुं हटाइ ॥ इह० ॥ ५ ॥ षठी आरति  
हे सुखदाइ, कुमति विदारण शिव अधिकाइ ॥ इह०  
॥ ६ ॥ सातमि आरति श्रीजिनबानी, ध्यान धरत  
मुगती सुखदानी ॥ इह० ॥ ७ ॥ इति आरति ॥

॥ अथ नेमजीना साते वार लिख्यते ॥

॥ सखि नमीयें ते नेम जिनराज, गढ गिरनारें

रे ॥ राणी राजुल जूए वाट, साते वारें रे ॥ १ ॥ स  
 खि आदित्यें अरिहंत, अम घर आवो रे ॥ महारा श्या  
 म सलूणा नेम, दिलमां जावो रे ॥ २ ॥ सखि सो  
 में ते शुज शणगार, सजियें अंगें रे ॥ मारा जगजी  
 वन जिनराज, रमीयें रंगें रे ॥ ३ ॥ सखि मंगल  
 शुजदिन आज, मंगल चारो रे ॥ महारो नवजव केरो  
 नेह, स्वामी संजारो रे ॥ ४ ॥ सखि बुधें ते घरे आवो  
 नाथ, बुद्धिना दरिया रे ॥ तभें एक सहस्र ने आव, ल  
 खणें जरिया रे ॥ ५ ॥ सखि गुरु गिरुवा गुणवंत, शि  
 वा देवीना रे ॥ तमें समुद्रविजय कुलचंद, नेम न  
 गीना रे ॥ ६ ॥ सखि शुक्रें सहसावन्न, चालो सज  
 नी रे ॥ महारे प्रगट थयो रे प्रजात, वीती रजनी  
 रे ॥ ७ ॥ सखि शनियें ते संयम लीध, प्रीत वधारी  
 रे ॥ वेढु पोहोतां मुक्ति मऊार, नर ने नारी रे ॥ ८ ॥  
 कहे मूलचंद मन रंग, आशा फलशे रे ॥ जे उज्ज्व  
 ल पाले शील, नवोदधि तरशे रे ॥ ९ ॥ इतिसं० ॥

॥ अथ परकीखामणा प्रारंभ ॥

॥ अरिहंतजीने खमावीयें रे, जेहना गुण ठे बा  
 र ॥ खमो नवि खामणां रे ॥ १ ॥ सिद्ध जीवने खमावी  
 यें रे, गुण आठोएं मनोहार ॥ खमो नवि० ॥ २ ॥  
 आचारजने खमावीयें रे, जेहना गुण ठत्रीश ॥ ख  
 मो नवि० ॥ ३ ॥ उपाध्यायने खमावीयें रे, जेहना गुण  
 पचवीश ॥ खमो नवि० ॥ ४ ॥ साधु सरवे खमावी  
 यें रे, शोने गुण सत्तावीश ॥ खमो नवि० ॥ ५ ॥ आव

क श्राविकानें खमावीयें रे, जेहना गुण एकवीश ॥  
 खमो नवि० ॥ ६ ॥ आठम पाखी खमावीयें रे, चो  
 मासुं त्रण वार ॥ खमो नवि० ॥ ७ ॥ संवत्सरी शुद्ध ख  
 मावीयें रे, खमावीयें वारं वार ॥ खमो नवि० ॥ ८ ॥  
 रूठडो संघ मनावीयें रे, मनावीयें वारं वार ॥ खमो  
 नवि० ॥ ९ ॥ मुक्तिसागर सूरि खमावीयें रे, अचलगड्ड  
 शणगार ॥ खमो नवि० ॥ १० ॥ चोमासी गुरुने ख  
 मावीयें रे, वांचे सूत्र सिद्धांत ॥ खमो नवि० ॥ ११ ॥

॥ अथ श्रीजीवविचारनुं स्तवन प्रारंभ ॥

॥ ढाल ॥ श्रीसरसती जी, वरसति वचन विलास रे ॥  
 शुणशुं त्रिचुवन जी, तारण श्रीजिन पास रे ॥ सुणो  
 समरथ जी, सुंदर श्रीजिन दैव रे ॥ मुळ देजो जी, नव  
 नव तुम पयसेव रे ॥ १ ॥ त्रुटक ॥ तुळ सेव पा  
 खे सहिज नमियो, तुं निगमियो जिनवरू ॥ ठक्का  
 यमांहे जीव सहियो, ठेदन जेदन आकरूं ॥ उत्कृष्ट  
 आयु अवगाहना जे, ईणे जीवें जोगवी ॥ लाख चो  
 राशी जीवा योनि, तेह पण इम जोगवी ॥ २ ॥  
 ढाल ॥ मणि स्फटिक जी, हिंगलो रयण प्रवाल रे ॥  
 पारो अबरख जी, गेरु खडी हरियाल रे ॥ उंस सुर  
 मो जी, माटी पाषाण सात धात रे ॥ लूणादिक जी, पृ  
 थिवी जेद बहु जात रे ॥ ३ ॥ त्रुटक ॥ अनेक जेद  
 वलि पाणी नणीयें, कुप सरोवर धूअरू ॥ उंसा हि  
 म घणोदधि करा कहीयें, समुद्र अनेक पाणी ख  
 रू ॥ अंगाल जाल मुम्भूर विजली, उलकापात अग्नि

कणा ॥ सिद्धांतमांहे ठे विशेषें, जेद अनेक अग्नि त  
 णा ॥ ४ ॥ ढाल ॥ एक वायरो जी, हलुउ हलुउ वा  
 य रे ॥ गुंजारव जी, करतो चिहुं दिशि धाय रे ॥ पाडे उ  
 तकली जी, वली वंटोलीयो एक रे ॥ घनवातें जी, वायु  
 जेद अनेक रे ॥ ५ ॥ त्रुटक ॥ इम दोय जेद वनस्प  
 ति केरा, साधारण प्रत्येक तरू ॥ कंद कोमल फल  
 अंकूरा, फूल सेवाल सेखरू ॥ अनेक जेद साधारण  
 सुणीयें, लक्षण तस शास्त्रें सही ॥ एहथी जे होय वि  
 परीत, तेह प्रत्येक वनस्पति कही ॥ ६ ॥ ढाल ॥ पृथिवी  
 पाणी जी, तेऊ वाउ काय रे ॥ वणसई पांचमी जी, था  
 वरकाय कहेवाय रे ॥ विकलेंडी जी, नारकी तिर्यच  
 मानवी ॥ वली देवता जी, ठीठी त्रसकाय पालवी  
 ॥ ७ ॥ त्रुटक ॥ पहेली पृथिवीकाय आयु, वरस  
 सहस बावीश ए ॥ सात सहस अपकाय जणीयें, अ  
 ग्नि त्रण दिन दीस ए ॥ वरस सहस त्रण वायु सुणी  
 यें, वणसई दस सहस जाणीयें ॥ नारय देव विण  
 जघन्य आयु, अंतर मुहूर्त प्रमाणीयें ॥ ८ ॥ ढाल ॥ अंगु  
 लतणो जी, नाग असंख्यातमो जणुं ॥ स्वानाविक जी,  
 जघन्य हुवे सडुनो तनु ॥ चार थावर जी, गुरु लघु स  
 म तनु जोय रे ॥ वनस्पति जी, सहस योजन जाजी  
 होय रे ॥ ९ ॥ त्रुटक ॥ इम होय समूर्तिम मनुष्य  
 साधारण, सूक्ष्म जेह निगोद ए ॥ तस आयु अंतर  
 मुहूर्त होवे, चौदराज अजेद ए ॥ पांच थावर कहियें  
 एक इंडी, शास्त्रें जेद तस ठे घणा ॥ एम कहे कवि

यण सुणो नवियण, नाम मात्रज ए नण्यां ॥ १० ॥

॥ दोहा ॥ नव साढा सत्तर कहा, श्वासोद्वास मज्जार ॥ एकेंडी नव जोगवी, वलतो विगल विचार ॥ ११ ॥

॥ ढाल बीजी ॥ बे कर जोडी ताम रे, नडा वीनवे ॥

॥ ए देशी ॥

॥ शंख ठीप कोमा सरमीयां रे, मेहर थापना सा

र ॥ जलो पूरानें अलसीयां रे, ए बेइंड़ी विचारो

रे ॥ धन जिनवयणडां, उतारे नव पारो रें, ते ज

गमां वडा ॥ ए आंकणी ॥ १२ ॥ कान खजूरा माकडि

जूआ रे, गद्दहीयां घीमेल ॥ कीडी गिंगोडा कातरा

रे, गोकीड मकोडा चूडेल रे ॥ धन० ॥ १३ ॥ सावा

जूवा धान कीडला रे, ईली अने इंगोप ॥ उद्देही ने

वली कुंथुआ रे, म करो तेंडीनो लोप रे ॥ धन० ॥

॥ १४ ॥ वीठी कसारी खडमाकडी रे, नमरा नमरीने

तीड ॥ माखी मसा मंसा पतंगीया रे, टाली चौरिं

डीनी पीड रे ॥ धन० ॥ १५ ॥ बेड़ी वरसज बारनुं

रे, हवे तेंडी प्रकाश ॥ दिवस उंगणपच्चाशनो रे, चौ

रिंड़ी पट् मास रे ॥ धन० ॥ १६ ॥ शंख प्रमुख जे

बेइंड़ी रे, तस तनु जोयण बार ॥ कान खजूरा

गाउ त्रणनो रे, नमर होये गाउ चार रे ॥ धन० ॥ १७ ॥

बेड़ी तेंडी चौरिंड़ी रे, ए विगलेंडी रे नाम ॥ कहे कवियण

तुमें सांजलो रे, हवे पंचेंडी अनिराम रे ॥ धन० ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥ नहि विवेक विकल पणे, नही तस तत्त्व वि

चार ॥ नव नवांतरें जोगव्या, उपनो नरक मज्जार ॥ १९ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ जंबूद्विप मजार रे ॥ ए देशी ॥

॥ रत्नप्रजा पहेली जेह रे, सागर एकनुं ॥ एक  
त्रीश हाथ ठ आंगुला ए ॥ शक्र प्रजा बीजी होय रे,  
त्रण सागर तिहां ॥ हाथ बाशठ बार आंगुला ए ॥ २० ॥  
वालुप्रजा पुहवी त्रीजी रे, सात सागर आयु ॥ ए  
कत्रीश धनुष एक हाथनुं ए ॥ पंकप्रजा चोथी नाम  
रे, दश सागर सही ॥ बाशठ साढा धनुष तनु ए  
॥ २१ ॥ पंचमी धूमप्रजायें रे, सत्तर स गर सुणो ॥  
धनुष सवासो जाणीयें ए ॥ तमप्रजा ठछा जाणो रे,  
बावीश सागर ॥ धनुष अढीशें नाणीयें ए ॥ २२ ॥  
तम तमा सातमी नाम रे, तेत्रीश सागर ॥ धनुष पां  
चशें देह रचे ए ॥ पांच कोडी अडशठ लाख रे, सहस्र  
नवाणुं ए ॥ रोगें नारकी नित्य पचे ए ॥ २३ ॥ परमा  
धामी पचावे रे, वली दश वेदना ॥ कीधां कर्म ते  
जोगवे ए ॥ राज राज प्रत्यें पोहवी रे, इम सात रा  
जनी ॥ सातमी पृथिवी योगवी ए ॥ २४ ॥

॥ दोहा ॥ सात प्रकारें नायकी, बोव्यो तास विचार ॥  
जलचर थलचर खेचरू, तिर्यच त्रण्य प्रकार ॥ २५ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ त्रिपदीनी देशी ॥

॥ उरपुरी जुजपुरी गर्जज थाय, गर्ज समूर्धिम  
मह्व कहेवाय, वरस पूरव कोडी आय हो ॥ नविका ॥  
वरस पूर्वकोडी आय ॥ २६ ॥ सहस्र योजन तस  
काया दीसे, जुजपुरिकोश पृथक्त वली कहीसे, जि  
न वचनें चित्त हीसे हो ॥ नवि० ॥ जि० ॥ २७ ॥

त्रेपन सहस्र समूर्धिम व्याल, चुंजपुरि सर्प सहस्र  
 बायाल, योजन पृथक् तनु जाल हो ॥ नवि० ॥  
 ॥ यो० ॥ १७ ॥ गर्ज तिर्थच चतुष्पदनी जात,  
 त्रण पट्योपम आयु विख्यात, काया ठ कोश सुणो  
 ज्ञात हो ॥ नवि० ॥ काया० ॥ १९ ॥ चतुष्पद संमू  
 र्धिम कहियें जास, आयु सहस्र चोरासी वास ॥  
 कोश पृथक् तनु तास हो ॥ नवि० ॥ कोश० ॥ ३० ॥  
 पंखी गर्जज आयुनो माग, पट्योपम असंख्यातमो  
 नाग, धनुष पृथक् तनुलाग हो ॥ नवि० ॥ धनु० ॥  
 ॥ ३१ ॥ संमूर्धिम पंखी बढुंतेर सहस्र, ए पहेले आ  
 रे कहेश, चतुष्पद विवरी लहेश हो ॥ नवि० ॥ च० ॥  
 ॥ ३२ ॥ जेणे आरे जे मानव आयु धार, तेह तणा  
 नाग कीजें उदार, नाग चोथे अश्व सार हो ॥ नवि०  
 ॥ नाग० ॥ ३३ ॥ अज आयु नाग आठमे वखाणुं,  
 गाय जेंप मे उंट खरादिक जाणुं, पांचमे नाग प्रमा  
 णुं हो ॥ नवि० ॥ पांच० ॥ ३४ ॥ श्वानादिक नाग  
 दशमे कहियें, हस्ति आयु मानव पदे लहीयें, जिन  
 आणा शिर वहीयें हो ॥ नवि० ॥ जिन० ॥ ३५ ॥  
 ॥ दोहा ॥ पशुअपणे परवश पड्यो, पाम्यो  
 दुःख अपार ॥ कर्म केतां तिहां निर्झरी, धरीयो  
 मनुज अवतार ॥ ३६ ॥  
 ॥ ढाल पांचमी ॥ कपूर होवे अतिऊजलो रे ॥ ए देशी ॥  
 ॥ चार कोडाकोडी सागरू रे, सुसम सुसमा नाम ॥  
 त्रण पट्योपम आयुखं रे, त्रण गाउ अनिराम रे ॥

प्राणी मानव जब अवतार, जरीयें सुकृत चंदार  
 रे ॥ प्राणी मान० ॥ ३७ ॥ ए आंकणी ॥ सागर  
 कोडा कोडी त्रण्यनो रे, सुसम बीजो जेह ॥ दोय  
 पद्योपम आउखुं रे, युगल गात्र दोय देह रे ॥ प्राणी  
 मान० ॥ ३८ ॥ त्रीजो सुसम इसमा रे, सागर  
 कोडा कोडी दोय ॥ एक पद्योपम युगलनो रे, कोश  
 काया एक होय रे ॥ प्राणी मान० ॥ ३९ ॥ पे  
 हेले तुअर बीजे बोर समो रे, त्रीजे आमलधार ॥  
 अछम ठछ एकांतरो रे, सुर तरु पूरे आहार रे ॥  
 प्राणी मान० ॥ ४० ॥ इसम सुसम कोडा कोडी  
 नो रे, सहस बेआलीश ऊण ॥ पूर्व कोडी वरस मा  
 नथी रे, पांचशें धनुष प्रमाण रे ॥ प्राणी मान० ॥  
 ॥ ४१ ॥ वरस सहस एकवीशनो रे, इसमा कलियुग  
 नाथ ॥ एकशो वीश वर्ष आउखुं रे, मानव काया  
 सात हाथ रे ॥ प्राणी मान० ॥ ४२ ॥ ठछो सह  
 स एकवीशनो रे, इसमाइसम अपार ॥ वीश वरस  
 दोय हाथना रे, महाहारी नरनार रे ॥ प्राणी मान०  
 ॥ ४३ ॥ ए ठ आरे अवसर्पिणी रे, उत्सर्पिणी वि  
 परीत जाण ॥ कालचक्र ए दोय मली रे, बार आरे  
 प्रमाण रे ॥ प्राणी मान० ॥ ४४ ॥ पांच जरत पांच  
 ऐरवतें रे, तिहां सदा सरिखो काल ॥ पांचविदेह परं  
 परा रे, चोथो आरो सुविशाल रे ॥ प्राणी मान० ॥ ४५ ॥  
 ॥ दोहा ॥ दश दृष्टांतें दोहिलो, मानवनो अवता  
 र ॥ शुननावें सुकृत पणो, उपनो देव मजार ॥ ४६ ॥



॥ ढाल ठठी ॥ नंदनकूं त्रिसला दुलरावे ॥ ए देशी ॥

॥ दश प्रकारें जवनपति कहीयें, व्यंतर आठ प्र  
कारो रे ॥ ज्योतिषी पांच प्रकारें सुणजो, दोय विमा  
निक सारो रे ॥ दश० ॥ ४७ ॥ असुर कुमार साधि  
क एक सागर, सात हाथ तस काय रे ॥ देशें ऊणा  
दोय पव्योपम, नव निकाय कहेवाय रे ॥ दश० ॥  
॥ ४८ ॥ लाख सहस वरस एक पव्योपम, चंड सूर्य  
विचार रे ॥ व्यंतर आयु एक पव्योपम, तनु सम  
असुर कुमार रे ॥ दश० ॥ ४९ ॥ नारकी जवन प  
ति ने व्यंतर, दश सहस वरस जघन्य रे ॥ ज्योतिषी  
पव्योपम अड जागें, पव्योपम विमान रे ॥ दश० ॥  
॥ ५० ॥ युग्म सौधर्मेने ईशानेंड, इहांथी होय एक  
राजे रे ॥ सागर बे बीजे बे जाजा, सात हाथ वि  
राजे रे ॥ दश० ॥ ५१ ॥ सनतकुमार जुगम मा  
हेंडें, दोय राज हवे जाणो रे ॥ त्रीजे सात चोथे  
सात जाजा, ठ हाथ काया प्रमाणो रे ॥ दश० ॥  
॥ ५२ ॥ पांचमे ब्रह्म आयु दस सागर, लांतक ठठे  
चौद रे ॥ पांच हाथ तस काया कहीयें, त्रण्य राज  
अचेद रे ॥ दश० ॥ ५३ ॥ शुक्र सातमे सत्तर सा  
गर, वली सहसारे अठार रे ॥ चार हाथ तनु सुर  
देह सोहे, राज होवे तिहां चार रे ॥ दश० ॥ ५४ ॥  
नवमे आनत उंगणीश सागर, प्राणत दशमे वीश  
रे ॥ एकादशमे आरण्य एकवीश, बारमे अच्युत बा  
वीश रे ॥ दश० ॥ ५५ ॥ ए चारे त्रण हाथनी का

या, पांच राज्य इहां सोहे रे ॥ नव ग्रैवेयक एक उपर  
उपे, दीठे नवि मन मोहे रे ॥ दश० ॥ ५१ ॥

॥ दोहा ॥ बार स्वर्ग मोहे सदा, तिहां राज्य नीति प्र  
धान ॥ नेद बीजो वैमान तो, नव ग्रैवेयक विधान ॥ ५२ ॥

॥ ढाल सातमी ॥ माइ धन सुपन तुं, धन ॥

॥ जीवो तोरी आश ॥ ए देशी ॥

॥ सुदर्शन पहेले, सागर तिहां त्रेवीश ॥ सुप्रति  
बंध चोवीश, मनोरमें पचवीश ॥ ५७ ॥ सर्वज्ञें ठ  
वीश, सुविशालें सत्तावीश ॥ सुमनसें अष्टावीश, ह  
वे त्रिक त्रीजे जगीश ॥ ५८ ॥ उगणत्रीश सोमनसें,  
प्रियंकर आठमे त्रीश ॥ आदित्यें एकत्रीश, दोय हा  
थ तनु दीश ॥ ६० ॥ ए नव ग्रैवेयकें, ठए राज प्र  
धान ॥ सातमें सिद्ध ठेहडे, हवे अनुत्तर विमान ॥  
॥ ६१ ॥ विजय विजयंतें, जयंत अपराजीत ॥ सरवा  
रथ सिद्धें, नहीं तिहां राजनी नीत ॥ ६२ ॥ सागर आ  
यु तेत्रीश, काया कर एक वारू ॥ एका अवतारी, सुख  
अनंत तस चारू ॥ ६३ ॥ तिहांथी बार योजन, सिद्ध  
शिला महंत ॥ जोजनने अंतें, सिद्ध हवा अनं  
त ॥ ६४ ॥ आयु अवगाहना, कहि सामान्य प्रकार  
॥ जघन्य संक्षेपें, बोल्या तास विचार ॥ ६५ ॥

॥ दोहा ॥ नवस्थिति इणि परें नोगवी, तुळविण  
त्रिभुवन देव ॥ कुण स्थानक काया स्थितें, रह्यो  
कहूं सुण हेव ॥ ६६ ॥

॥ ढाल आठमी ॥ नरतनृप नावशुं ए ॥ ए देश ॥

॥ सात हेवल सात उपरें ए, चउद राजलोक ना  
व ॥ नविक जिन नावशुं ए ॥ पुरुषाकार लोक पूरीयो  
ए, षट पदारथ नाव ॥ नवि० ॥ ६७ ॥ नयर नवनपति  
देवता ए, अधो लोक निःशंक ॥ नवि० ॥ व्यंतरनर तिरि  
गिरिवरू ए, द्वीप समुद्र असंख्य ॥ नवि० ॥ ६८ ॥  
अग्नि विकलेंडी ज्योतिषी ए, ए सवि तीर्थे लोक ॥  
॥ नवि० ॥ स्वर्ग त्रैवेयक पांच अनुत्तरू ए, सर्व सि  
द्ध ऊर्ध्व लोक ॥ नवि० ॥ ६९ ॥ असंख्याती उत्स  
र्पिणी ए, सर्व एकेंडिय स्थितिकाय ॥ नवि० ॥ का  
ल अनंतो अनंतकायमां ए, उपजे ने वली जाय ॥  
॥ नवि० ॥ ७० ॥ विगल संख्या वरस सहस्सनी ए,  
नर तिरि नव सात आठ ॥ नवि० ॥ नारकी देव च  
वीय न उपजे ए, जर्धन्य आयु परिपाठ ॥ नवि० ॥  
॥ ७१ ॥ सगल सात लाख चार आवरू ए, वनस्पति दश  
लाख ॥ नवि० ॥ अनंतकाय चौद लाख सुणो ए, विगलें  
डी दो दो लाख ॥ नवि० ॥ ७२ ॥ नारकी तिर्यंच  
देवता ए, चउद लाख होये तेह ॥ नवि० ॥ चउद लाख  
वली मानवी ए, संख्या जीवायोनि एह ॥ नवि० ॥  
॥ ७३ ॥ इंडी पांच त्रण बल कहां ए, श्वासोद्वास  
वली आय ॥ नवि० ॥ दश प्राण होये सन्निया रे,  
नव असन्निया आय ॥ नवि० ॥ ७४ ॥ ठ सात आठ  
विकलेंडिय तणा ए, एकेंडी प्राण चार ॥ नवि० ॥ नर  
तिरियंच त्रण वेद सुणो ए, देवता दोय वेद सार ॥

नवि० ॥ ७५ ॥ थावर विकलेंडी ने नारकी ए, एक न  
 पुंसक वेद ॥ नवि० ॥ पङ्कमणुं अधिक बादर अग्नी  
 ए, वैमानिक लुवणेंद ॥ नवि० ॥ ७६ ॥ निरय व्यंतर  
 ज्योतिषी चउरिंदि ए, तिरियंच ब्रितिइंडीक ॥ नवि० ॥  
 पृथिवी पाणी वायु वणसई ए, एक एक जीवथी अधि  
 क ॥ नवि० ॥ ७७ ॥ चिहुं गति नमी नमी उपनो ए,  
 संप्रति प्रभु पद लीध ॥ नवि० ॥ शास्त्रथकी जे विरुद्ध  
 कह्युं ए, ते पंमित करजो शुद्ध ॥ नवि० ॥ ७८ ॥ हार  
 हश्ये रयणनो ए, धरजो चतुर सुजाण ॥ नवि० ॥ नणे  
 गणे जे सांजले ए, तस घर कोडि कव्याण ॥ न० ॥ ७९ ॥

॥ ढाल नवमी ॥ कडखानी देशी ॥

॥ चउदराजमांहे जीव केइ केइ जुग नम्यो, सूक्ष्म  
 वली बादर अनंती वारू ॥ कर्मनी कोड नरी अकाम नि  
 र्जर करी, पामीयें पास त्रिभुवनं तारू ॥ ८० ॥ जेट रे  
 जेट प्रभु पास चिंतामणि, एहिज मुक्तिनो मार्ग सा  
 चो ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्मने परिहरो, मोह मिथ्यामर्ते  
 केम राचो ॥ जेट० ॥ ८१ ॥ नयर गुण दीव गुण  
 वेलि वाघे सदा, पुष्करावर्त्त पास मेघ देंवा ॥ श्रीसं  
 ध मंमप तलें वेलि ते विस्तरे, ऊपजे आनंद सुकृत मे  
 वा ॥ जेट० ॥ ८२ ॥ संवत ससी सायर चंडलोचन  
 (१७१२) स्तव्यो, आशोशुदि दशमी रविवार राजे ॥ सू  
 रि शिर ताज गुरु राज आणंदजी, तस पटें सूरि वि  
 जयराज ठाजे ॥ जे० ॥ ८३ ॥ धन धन हर्ष गुरु  
 विबुध चूडामणि, जास दीक्षित जगें कीर्त्ति सारी ॥

रत्नविजय बुध सत्यविजय तणो, वृद्धिविजय नणो  
आनंदकारी ॥ जेट० ॥ ८४ ॥ इति संपूर्ण ॥

॥ अथ श्रीजिनप्रतिमा उपर स्तवन ॥

॥ चोपाइनी देशीमां ॥

॥ जेहने जिनवरनो नहीं जाप, तेहनुं पासुं न मेलै  
पाप ॥ जेहने जिनवरगुं नहीं रंग, तेहनो कदी न  
कीजें संग ॥ १ ॥ जेहने नहीं वाहाजा वीतराग, ते  
मुक्तिनो न लहे ताग ॥ जेहने जगवंतगुं नहीं जाव,  
तेहनी कुण सांजलरो राव ॥ २ ॥ जेहने प्रतिमागुं  
नहीं प्रेम. तेहनुं मुखडुं जोइयें केम ॥ जेहने प्रति  
मागुं नहीं प्रीत, तेतो पामे नहिं समकित ॥ ३ ॥  
जेहने प्रतिमागुं ठे वेर, तेहनी कहो शी यागो पेर ॥  
जेहने जिनप्रतिमा नहीं पूज्य, आगम बोले तेह अ  
पूज्य ॥ ४ ॥ नाम थापना इव्य ने जाव, प्रभुने पूजो  
सही प्रस्ताव ॥ जे नर पूजे जिननां बिंब, ते लहे  
अविचल पद अविलंब ॥ ५ ॥ पूजा ठे मुक्तिनो  
पंथ, नित नित जांखे इम जगवंत ॥ ६ ॥ सहि एक नर  
कविना निरधार, प्रतिमा ठे त्रिभुवनमां सार ॥ ६ ॥  
सतर अछाणुं आपाढी बीज, उज्ज्वल कीधुं ठे बोध  
बीज ॥ इम कहे उदयरतन उवक्काय, प्रेमें पूजो  
प्रभुना पाय ॥ ७ ॥ इति जिनप्रतिमा स्तवनं ॥

॥ अथ नवतत्त्वनुं स्तवन प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥ सरसतिनें प्रणमुं सदा, वरदाता नित्य  
मेव ॥ मुऊ मुख आवी तूं वसे, करुं निरंतर सेव ॥ १ ॥

आदीसर अरिहंत नमुं, जुगला धर्म निवार ॥ गुरु  
 श्रुत देवी चंदलो, एहिज मुऊ आधार ॥ १ ॥ जास  
 तणां पदयुग नमी, वर्णवुं तत्त्वविचार ॥ नवियण  
 एक चित्तें करी, नाम कहुं हितकार ॥ २ ॥ जीव अ  
 जीव पुण्य पाप ने, संवर आश्रव जेह ॥ निर्झरा बं  
 ध ने मोह जे, जिनजीयें जांख्या एह ॥ ४ ॥ एहना  
 जेद ठे नव नवा, आगममां अदुरूप ॥ गुरुमुखथी ते  
 सांजली, जांखुं एह स्वरूप ॥ ५ ॥

॥ ढाल पहेली ॥ शोलमा श्रीजिनराज, उलंग ॥

॥ सुणो अम तणी ललना ॥ ए देशी ॥

॥ जीव तत्त्वना जेद ते, चउदें जाणीयें ॥ ल० ॥  
 चउद अजीवना जेद, ते मनमां आणीयें ॥ ल० ॥  
 जेद बहेंतालीश पुण्यना, नवियण चित्त धरो ॥ ल० ॥  
 व्यासी जेद ते पापना, मनथी संवरो ॥ ल० ॥ १ ॥  
 आश्रवना बहेंतालीश, जेद ते जावियें ॥ ल० ॥ संवरना  
 सत्तावन, चित्तमां लावीयें ॥ ल० ॥ बार जेदें ठे निर्झ  
 रा, कर्म ते निर्झरे ॥ ल० ॥ जेहथी प्राणी मोह, रमणी  
 सुखने वरे ॥ ल० ॥ २ ॥ बंध तत्त्वना चार, ते बंध  
 ने तोडीयें ॥ ल० ॥ मोह तत्त्वना नव, ते सुखथी जो  
 डीयें ॥ ल० ॥ सर्व मली नव तत्त्वना, जेद ते जाण  
 जो ॥ ल० ॥ बरो ने ठहोतेर ते, मनमां आणजो ॥  
 ॥ ल० ॥ ३ ॥ तेमां अछयाशी अरूपी, जेद ते सुख  
 करू ॥ ल० ॥ एकशो अछयासी रूपी, कहे ते जिनवरू  
 ॥ ल० ॥ हुंगर गुरु ध्यानथा, सुखने अनुसरे ॥ ल० ॥

विवेक कहे नविलोक, ते नव सायर तरे ॥ ते० ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥ हवे प्रथम जीव तत्त्वना, जेद कहुं  
हितकार ॥ विवरीने ते वर्णवुं, एक एक सुखकार ॥ १ ॥

॥ ढाल बीजी ॥ नदी यमुनाके तीर, उमे ॥

॥ दोय पंखीयां ॥ ए देशी ॥

॥ एक जेदें कह्यो जीव, डुविध जेदें वली ॥ त्रण्य  
प्रकारें जाण, चउविह कहे केवली ॥ पंच षटविध  
जीव ठे, ठए नांखीया ॥ अरिहा जिनवर एह के, मु  
खथी दाखीया ॥ १ ॥ चेतना लक्षण जीव ते, एक अ  
जेद ठे ॥ त्रस अने बीजो स्थावर, इहां नवि खेद ठे ॥  
स्त्री पुरुष नपुंसक, वेद त्रण्ये सही ॥ देव गइ  
मनुष्य तिर्यंच, वली नारक कही ॥ २ ॥ पांच प्रका  
रें जीव, पंचेंडिय परखीयें ॥ ठ प्रकारें जीव, ठकायने  
निरखीयें ॥ इणोविध ठ जेदें जीव, धारो तुमें एक म  
ना ॥ हवे आगल दश प्राण, कहे त्रिचुवन जिना ॥ ३ ॥  
पांच इंडी त्रण बल, श्वासोच्छ्वास आउखुं ॥ ए दश  
प्राणीने होय, विवरी कहुं पारिखुं ॥ एकेंडीने चार  
प्राण, बेंडीने ठ कह्या ॥ तेंडी सात जाणो, चौरिंडीयें  
आठ लह्या ॥ ४ ॥ असन्नी पंचेंडी ने नव, संझी दश  
धारजो ॥ ए विना अवर न होय, संदेह मन वारजो ॥  
हवे एकेंडिय सूक्ष्म, बादर दोय ठे ॥ पंचेंडिय संझी  
असंझी, दोय जेद जोय ठे ॥ ५ ॥ बेंडी तेंडी एक,  
चौरिंडी जाणजो ॥ ए साते जेद होय के, शुच मन  
आणजो ॥ पङ्क अपङ्क ए दोय, चउद जेद जीवना ॥

धारो चित्तमें जेह के, नवि जन एकमना ॥ ६ ॥ आ  
हार शरीरने इंदिय, आस वचन सही ॥ मननी ठही  
जाण, एकेंदिय चउ कही ॥ बि ति चौरिंदिय अस  
न्री, ने होये पंच ए ॥ पद सन्नी ने जाएवी, विशेष  
कहे संच ए ॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥ जीव तत्त्व पूरण थयुं, हवे अजीव वि  
चार ॥ निन्न निन्न करीने कहुं, सांजलजो नर ना ॥ १ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ वीरजीने वचनें रे अमृत रस ऊरे रे ॥ ए देशी ॥

॥ धर्मास्तिकाय खंध देश प्रदेश ठे रे, तेम अधर्मा  
स्तिकाय ॥ एहना पण ए त्रण जेदज कहा रे, एम  
आकाशना त्रण थाय ॥ नवि तुमें जाणो रे अजीव न  
त्त्वना रे ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ ए त्रणना मली नव जेद  
सुंदरू रे, दशमो जेद ठे काल ॥ खंध देश प्रदेश प्रमा  
णुउ रे, अजीवना चौद कहा सुविशाल ॥ नवि० ॥  
॥ २ ॥ धर्मास्ति अधर्मास्ति पुजला रे, आकाश काल  
सुविहाण ॥ ए पांचे अजीव ते जिन कहा रे, कहा  
कहा त्रिभुवन जाण ॥ नवि० ॥ ३ ॥ चलण स्वभाव  
धर्मास्तिकायमां रे, अधर्मास्ति थिर ठाण ॥ अवकाश  
आपे पुजल जीवने रे, हवे पुजलना चार विन्नाण ॥  
नवि० ॥ ४ ॥ खंध देश प्रदेश प्रमाणुउ रे, पुजलना  
ए चार जेव ॥ हवे आवलिका जेद तुमें लहो रे, अ  
संख्य समय एक आवलि मेव ॥ नवि० ॥ ५ ॥ एक को  
डीने सडसठ लाख ठे रे, उपर सीतोत्तर सहस्सज जो



य ॥ बशें ने शोल आवलिका कही रे, एटली आवलि  
 यें एक मुहूर्त होय ॥ नवि० ॥ ६ ॥ त्रीश मुहूर्तें दिवस  
 रात्रि कही रे. पंदर अहोरात्रें एकज पद ॥ बे पढ़ें ए  
 कमासज जावियें रे, बार मासें एक वर्षज दह ॥ नवि०  
 ॥ ७ ॥ एहवें वरसें हवे पूर्व कहुं रे, सितेर लाख को  
 डी वरसज जाय ॥ ठपन्न सस्स कोडी वरस मान  
 कहुं रे, पूर्व एटले वरसें थाय ॥ नवि० ॥ ८ ॥ असंख्या  
 त पूर्वें एक पत्य जाणीयें रे, दश कोडा कोडी पत्यें  
 सागर एक ॥ सागर दश कोडाकोडी उत्सर्पिणी रे,  
 अवसर्पिणी कोडाकोडी दश ठेक ॥ नवि० ॥ ९ ॥  
 वीश कोडाकोडी सागरें काल चक्र ठे रे, काल अनंतें  
 पुजल परावर्त जाण ॥ मुंगर गुरुना पद गुज ध्यानथी  
 रे, नित्य नित्य विवेक लहे कव्याण ॥ नवि० ॥ १० ॥

॥ दोहा ॥ पुण्य तत्त्व तणा कहुं, नेद बहेंतालीश  
 जेह ॥ एकमना थइ सांजलो, आणी अधिको नेह ॥ १ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ साहेबजी श्रीविमलाचल ॥

॥ नेटीयें हो लाल ॥ ए देशी ॥

॥ बहेंतालीश नेद पुण्य तत्त्वना हो लाल, शाता  
 वेदनी उंच गोत्र ॥ साहेबजी ॥ मनुष्यगति मनुष्यानु  
 पूर्वी हो लाल, चार नेद ए युक्त ॥ सा० ॥ पुण्य तत्त्व  
 हवे सांजलो हो लाल ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ साहे  
 बजी सुरडग पंचेंडियपणुं हो लाल, पांच देह मनो  
 हार ॥ सा० ॥ औदारिक वैक्रिय आहारकें हो  
 लाल, अंगोपांगें युक्त धार ॥ सा० ॥ पु० ॥ १ ॥

॥ सा० ॥ प्रथम संघयण संस्थानहुं हो लाल, शुन  
 वरण शुन गंध ॥ सा० ॥ शुन रस शुन स्पर्शने  
 हो लाल, अशुरु लघु अदंन ॥ सा० ॥ पु० ॥  
 ॥ ३ ॥ सा० ॥ पराघात श्वासोच्चासने हो लाल,  
 जेवाने जेहनी सक्त ॥ सा० ॥ आताप जेद पच  
 बीशमो हो लाल, उद्योत कर्मनी व्यक्त ॥ सा० ॥  
 ॥ पु० ॥ ४ ॥ सा० ॥ शुनखगई शुनगति करे हो ला  
 ल, निर्माण नाम अगर्व ॥ सा० ॥ त्रस दशको दश  
 जेदनो हो लाल, आगलें कहे ते सर्व ॥ सा० ॥  
 ॥ पु० ॥ ५ ॥ सा० ॥ सुर नर तिरि आउखूं  
 हो लाल, तीर्थकर नाम कर्म ॥ सा० ॥ हवे त्रस  
 दशको वर्णवुं हो लाल, जेदथी लहे शिवं शर्म ॥  
 ॥ सा० ॥ पु० ॥ ६ ॥ सा० ॥ त्रस बायर पर्याप्ता  
 हो लाल, प्रत्येक स्थिर शुन नाम ॥ सा० ॥ सौजा  
 म्य नामकर्मथी हो लाल, जीव लहे शुन ठाम ॥  
 ॥ सा० ॥ पु० ॥ ७ ॥ सा० ॥ सुस्वर आदय जस  
 नामथी हो लाल, जीव लहे सुख नित्य ॥ सा० ॥  
 मूंगर गुरु पद सेवतां हो लाल, विवेक लहे जग  
 जीत ॥ सा० ॥ पु० ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥ पाप तत्त्वथी दुःख होये, पामे नरक दू  
 वार ॥ ते माटे चेतन तुमें, मनथी एह निवार ॥ १ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ सुरति महीनानी देशी ॥

॥ आवरण पंचने तिम बली, अंतराय ठे पंच ॥ पंच  
 निश कहि दर्शन, चारे ते खल खंच ॥ नीच गोत्र

आशाता, तेम वली मिथ्यात्व ॥ थावर दशकों आगल  
 कहे, सांजलो एह विख्यात ॥ १ ॥ नरक त्रिक अने व  
 ली, पणवीस कषाय ॥ तिरिय डुग मली कहा, जेद  
 बासठ ए थाय ॥ ईग बि ति चउ जाई, कुखगई उपघा  
 त ॥ होये प्राणीने ते सही, नीच कर्मनी ख्यात ॥ १॥  
 अशुन वरण अशुन रस, गंध अशुन तेम जाण ॥  
 फरस अशुन तेमज कह्यो, आगममां जिन जाण ॥  
 पढम संघयण विनाहीज, मूकी पढम संस्थान ॥  
 बहोत्तेर जेद ए थया, जाणो एहनुं मान ॥ ३ ॥  
 थावर सुढुम अपङ्ग, साधारण अस्थिर ॥ अशुन  
 डुनग डुःस्वर, अनादेय अपजश धीर ॥ आगममां पाप  
 तत्वना, जेद ए व्यासी जाण ॥ मूंगर गुरुनो से  
 वक, तेहने नित्य कळ्याण ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥ पाप तत्त्वने ए कह्युं, हवे आश्रवनुं ठा  
 म ॥ पाप आवे जे जीवने, आश्रव एहनुं नाम ॥ १ ॥

॥ ढाल ठही ॥ देखी कामिनी दोय के, कामें व्यापीयो  
 रे के ॥ कामें व्यापियो ॥ ए देशी ॥

॥ पांच इंडी कषाय चार के, अव्रत पण कहा  
 रे के ॥ अव्रत० ॥ त्रण योग त्रण जेद के, गुरु मु  
 खथी लहा रे के ॥ गुरु० ॥ हवे किरिया ते जोय के,  
 पणवीश अनुक्रमें रे के ॥ पण० ॥ तजीयें जेहथी हो  
 य के, पुण्य सुसंक्रमे रे के ॥ पुण्य० ॥ १ ॥ पहेली का  
 यिकी जाण के, बीजी अधिकरणकी रे के ॥ बीजी० ॥  
 त्रीजी परधेषकी होय के, चौथी पारितापनकी रे के

॥ चो० ॥ प्राणातिपातनी पांचमी, ठही आरंजकी रे  
 के ॥ ठही० ॥ परिग्रहकी कही सातमी, आठमी कायिकी  
 रे के ॥ आ० ॥ १ ॥ मिथ्यादंसण अपच्चस्काणकी, नव  
 दस एक कही रे के ॥ नव० ॥ दिष्टि पुति पाटूचकी,  
 त्रयोदश ए लही रे के ॥ त्रयो० ॥ सामंतोनपात निः  
 शस्त्र, स्वहस्तकी शोलमी रे ॥ स्व० ॥ सत्तरमी आणव  
 णी, विदारण अठारमी रे ॥ वि० ॥ ३ ॥ अणानोग अ  
 णवकंख के, बे मली वीश थइ रे के ॥ बे० ॥ अणउप  
 योग समुदायकी, बावीश ए लइ रे के ॥ बा० ॥ त्रेवी  
 शमी ते रागकी, चोवीशमी छेयकी रे के ॥ चो० ॥ पण  
 वीशमी ईर्यापथिकी, कही विंशेयकी रे के ॥ कही० ॥  
 ॥ ४ ॥ जेद बेहेंतालीश आश्रव, तत्त्वना ए कह्या रे के  
 ॥ तत्त्व० ॥ सम्यक्दृष्टि जीव के, मनथी सदह्या रे के ॥  
 ॥ मन० ॥ मुंगर गुरु गुनध्यानथी, आश्रवने तजो  
 रे के ॥ आश्रव० ॥ विवेक कहे नविलोक के, शिव र  
 मणी नजो रे के ॥ शिव० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ ढाल सातमी ॥ प्राणी वाणी जिन तणी ॥ ए देशी ॥

॥ संवर तत्त्व ते सांजलो, संवरीयें आतमा नित्य  
 रे ॥ अरिहा जिनवरें नांखियो, आगममांहे गुन री  
 त रे ॥ आगममांहे गुनरीत सूचित, सुनित जगत  
 गुरु नासियो सुख कंद रे ॥ सुख कंद अमंद आनं  
 द ॥ जगत गुरु नासीयो सुख कंद रे ॥ ए आंकणी  
 ॥ १ ॥ पांच समिति त्रण गुति जे, परिसह बावीश  
 निवारो रे ॥ दशविध मुनिवर धर्म जे, ते मुनिजन नित्य

तुमें धारो रे ॥ ते मुनि० ॥ सु० ॥ सु० ॥ ज० ॥ १ ॥ पांच स  
 मिति विवरी कहुं, ईर्या समिति प्रथम वखाण रे ॥  
 ठक्काय रक्का जे करे, ईर्या कही तेह सुजाण रे ॥  
 ॥ ईर्या० ॥ सु० ॥ सु० ॥ ज० ॥ ३ ॥ जाषा समिति बीजी  
 हवे, सहुने सुख उपजे सोय रे ॥ एषणा बहेंतालीश  
 दोष ठे, मुनिने आहार एम होय रे ॥ मुनि० ॥ सु०  
 ॥ सु० ॥ ज० ॥ ४ ॥ अदान निक्षेपणा, समिति ले मूके  
 योग रे ॥ पारिष्ठापनिका कही, मल मूत्र नाखे उप  
 योग रे ॥ मल० ॥ सु० ॥ सु० ॥ ज० ॥ ५ ॥ त्रण गुप्ति हवे  
 चित्त धरो, मन वचन काया करे गुंछ रे ॥ आठ प्रव  
 चन मात जे, मुनि धारे तेहिज बुछ रे ॥ मुनि० ॥  
 ॥ सु० ॥ सु० ॥ ज० ॥ ६ ॥ दुधा पिपासा शीत जे, उष्ण  
 मंसा परिसह चेल रे ॥ रती स्त्रियादिक ते वली, चरि  
 या निसिद्धियादिक मेल रे ॥ च० ॥ सु० ॥ सु० ॥ ज०  
 ॥ ७ ॥ सखा आक्रोश वह जायणा, अलान रोग त  
 ए फास रे ॥ मल सक्कार परिसह जे, पन्ना अन्नाण सं  
 मत्त रे ॥ पन्ना० ॥ सु० ॥ सु० ॥ ज० ॥ ८ ॥ खंति मदव अ  
 ऊव, मुत्ति तव संजम मेह रे ॥ सच्चं सोहं अकिंचण,  
 ब्रह्मचर्य ए दशविध जेह रे ॥ ब्रह्म० ॥ सु० ॥ सु० ॥ ज० ॥  
 ॥ ९ ॥ प्रथम अनित्यह जावना, अशरण संसार ए  
 कत्व रे ॥ अन्यत्व जावना पंचमी, अशुचि जावना त  
 त्व रे ॥ अशु० ॥ सु० ॥ सु० ॥ ज० ॥ १० ॥ आश्रव संवर  
 निर्झरा, लोक बोधि दुर्लभ जाव रे ॥ धर्म ध्यान ते  
 बारनी, ए ठे नवजल जंतु नाव रे ॥ ए ठे० ॥ सु० ॥

॥ सु० ॥ ज० ॥ ११ ॥ पांच जेद चारित्रना, सामायि  
 क जेदोपस्थान रे ॥ परिहार सूक्ष्म चारित्र जे, यथा  
 ख्यातथी मोक्ष निदान रे ॥ यथा० ॥ सु० ॥ सु० ॥ ज०  
 ॥ १२ ॥ यथाख्यात चरण जे आचरे, ते पामे सु  
 क्तिनुं ठाण रे ॥ भूंगर गुरुना ध्यानथी, विवेक लहे  
 बहु नाण रे ॥ विवे० ॥ सु० ॥ सु० ॥ ज० ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥ बार प्रकारें तप तपे, निर्जरा जेहनुं ना  
 म ॥ आत्म प्रदेशह तेथकी, कर्म पुजल खिरे ठाम ॥ १ ॥

॥ ढाल आठमी ॥ दुउं चारित्र युक्तो समितिने  
 युक्तो, विश्वनो तारुजी ॥ ए देशी ॥

॥ पहेलुं अनशन ते अन्न पाणी लेवे नही ॥ सोना  
 गी ॥ वली ठठने अठम तप तेह जाणो सही ॥ सो० ॥  
 पुरुषने बत्तीश कवल स्त्री अष्टावीश लहे ॥ सो० ॥  
 नपुंसकने चौवीश कवल जिनवर कहे ॥ सो० ॥ १ ॥  
 इव्य क्षेत्र कालने जाव अनिग्रह जे वरे ॥ सो० ॥ जेम  
 चंदनबाला वीरनो अनिग्रह पूरण करे ॥ सो० ॥ वृत्ती  
 संक्षेप पण तप ए त्रीजो कह्यो ॥ सो० ॥ खट रस  
 नो करे त्याग एह चौथो लह्यो ॥ सो० ॥ २ ॥ लोच क  
 रावे ने अलुवाणे पगे संचरे ॥ सो० ॥ इत्यादिक नली  
 जातशुं काय कष्ट तप आदरे ॥ सो० ॥ पांच इंडि  
 चार कषाय योगने शोधवा ॥ सो० ॥ स्त्रीयादिक सं  
 सर्ग ते सर्वथी रोधवा ॥ सो० ॥ ३ ॥ षटविध बाह्य ए  
 तप तुमें जाणवो ॥ सो० ॥ गुरुमुखथी लही जाव  
 संदेह मन नाणवो ॥ सो० ॥ हवे षटविध अन्यंतर

नवि तुमें सांजलो ॥ सो० ॥ धरीयें चित्तमां ए सूकीने  
 मन आमलो ॥ सो० ॥ ४ ॥ पोतानी कीधो वातने लोक ते  
 नवि लहे ॥ सो० ॥ हेलामांहे ते बहु कर्मने खेपवे ॥  
 ॥ सो० ॥ पाप लागां होय ते गुरु मुखयी आलवे ॥  
 ॥ सो० ॥ इणिविध प्रायश्चित्त तपने जालवे ॥ सो० ॥ ५ ॥  
 नाण दंसण चारित्रनो विनय घणो करे ॥ सो० ॥  
 अरिहंत सिद्ध चैत्य विनय मनमां धरे ॥ सो० ॥ वै  
 यावच्च तप त्रीजो प्रश्न व्याकरणें कह्यो ॥ सो० ॥  
 चौदे जेदें वैयावच्च गुरु मुखयी लह्यो ॥ सो० ॥ ६ ॥  
 हवे चोथुं तप सखाय ध्यानने मन खरे ॥ सो० ॥  
 सिद्धांत वांचे पूढे सिद्धांतने नित्य गणो ॥ सो० ॥  
 चिंतवे धर्मांपदेश दीये नवि चित्तने ॥ सो० ॥ जेहथी  
 पामे सखाय तप वित्तने ॥ सो० ॥ ७ ॥ समता जावें  
 मनने आणे ध्यानमें ॥ सो० ॥ निरामय निराकार  
 अवस्था ज्ञानमें ॥ सो० ॥ शुक्ल ध्यानने ध्यावे रौ  
 इने परिहरे ॥ सो० ॥ ए पांचमुं तप नवियण चित्तें  
 धरे ॥ सो० ॥ ८ ॥ ठहुं हवे काउसग्न, तपने आ  
 दरे ॥ सो० ॥ क्रोध अने मान माया, लोचने परिहरे  
 ॥ सो० ॥ ए अन्यंतर षट जेद ने प्राणी मन धरो ॥ सो० ॥  
 विवेक कहे नवियण, नवसायर तरो ॥ सो० ॥ ९ ॥  
 ॥ दोहा ॥ बंध तत्त्व दूरें तजो, बंधन ते नित्यमेव ॥  
 गतिनां दुःख पामे घणां, कहे इम जिनवर देव ॥ १ ॥  
 ॥ ढाल नवमी ॥ कपूर होवे अति ऊजलो रे ॥ ए देशी ॥  
 ॥ बंध तत्त्व हवे सांजलो रे, नवियण तुमें उमे

द ॥ चार प्रकारें बंध हे रे, जाषे जिन अवेद रे ॥ प्रा  
 णी सांजजो तेह सुजाण ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥  
 प्रकृतिबंध पहेजो कह्यो रे, सहावा कहेतां स्वजाव ॥  
 स्थिति ते कालने जाणजो रे, एहिज एहनो जाव  
 रे ॥ प्राणी० ॥ सां० ॥ २ ॥ अनुजागबंध ते गुं क  
 हियें रे, कटुक मिष्ट जेम रस ॥ प्रदेश बंध चोथो ह  
 वे रे, दल संचय जाणो तस रे ॥ प्रा० ॥ सां० ॥  
 ॥ ३ ॥ झानावरणी कर्मनुं रे, चक्रुबंधन जेह ॥ दर्श  
 न ते कहीयें बीजुं रे, पोलीया सरिखुं एह रे ॥  
 ॥ प्रा० ॥ सां० ॥ ४ ॥ वेदनी जित्त असि सारि  
 खुं रे, मोहनी मदिरा समान ॥ दड सरिखुं आयु  
 जाणीयें रे, चितारा सरिखुं नाम रे ॥ प्रा० ॥ सां० ॥  
 ॥ ५ ॥ गोत्र ते कुंनार जेहवुं रे, जंमारी सम अंतरा  
 य ॥ आठ करम जाव जाणजो रे, जेहथी दुर्गति  
 जाय रे ॥ प्रा० ॥ सां० ॥ ६ ॥ नाण दंसण वेयणी  
 अंतरायनुं रे, त्रीश कोडाकोडी मान ॥ मोहनी  
 सितेर कोडा कोडीनुं रे, सागर एह निदान रे ॥  
 ॥ प्रा० ॥ सां० ॥ ७ ॥ वीश कोडाकोडी नाम गोत्रनुं  
 रे, आयु अयर तेंत्रीश ॥ काल उत्कृष्ट पूरो थयो रे,  
 नाखे श्रीजगदीश रे ॥ प्रा० ॥ सां० ॥ ८ ॥ जघन्य  
 काल हवे कहुं रे, आठ कर्मनो जेह ॥ वेदनी कर्मनो  
 जाणीयें रे, बार मुहूर्त कह्यो एह रे ॥ प्रा० ॥  
 ॥ सां० ॥ ९ ॥ नामकर्म गोत्र कर्मनो रे, आठ मुहूर्त  
 तिम होय ॥ पांच कर्मनो आगल कहे रे, जघन्य



काल स्थिति जोय रे ॥ प्रा० ॥ सां० ॥ १० ॥  
 ज्ञानावरणी कर्मनी रे, दर्शनावरणी अंतराय ॥ मोह  
 नी आयु कर्मनी रे, अंतर मुहूर्त्त कहेवाय रे ॥ प्रा०  
 ॥ सां० ॥ ११ ॥ आठ कर्मथी अलगा रहो रे, जिम  
 लहो सुख निरवाण ॥ मूंगर गुरुना पदथकी रे, वि  
 वेकने कोडि कव्याण रे ॥ प्रा० ॥ सां० ॥ १२ ॥

॥ दोहा ॥ बंध तत्त्व पूरण थयुं, मोहृतत्त्व सुवि  
 चार ॥ तेमाटे नवियण तुमें, आराधो हितकार ॥ १ ॥  
 ॥ ढाल दशमी ॥ नविका सिद्धचक्र पद वंदो ॥ ए देशी ॥

॥ ठता पदनुं प्रथम प्ररूपण, इव्य प्रमाण ए  
 बीजुं ॥ खेत्र प्रमाण ते त्रीजुं जाणो, फरसना द्वारें  
 रीजो रे ॥ प्राणी ॥ मुक्ति पद आराधो ॥ आराधी शिव  
 साधो रे ॥ प्राणी ॥ मुक्ति० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥  
 काल द्वार ते पांचमुं शुणीयें, अंतर ठहुं धीर ॥  
 सातमुं जागने आवमुं जाव, अल्प द्वार कहे वीर  
 रे ॥ प्रा० ॥ मुक्ति० ॥ २ ॥ चारगतिमांहे मनु  
 ष्य गतियें, मोह होवे निरधार ॥ पांच इंडीमांहे पं  
 चेंडीथी, शिवपद लहे सुखकार रे ॥ प्रा० ॥ मुक्ति०  
 ॥ ३ ॥ पृथिवी आदि पांचे थावर, एहने मोह न  
 लहीयें ॥ त्रसकायथी मोहें जावे, एह आणा सह  
 हीयें रे ॥ प्रा० ॥ मुक्ति० ॥ ४ ॥ नव्य अने अनव्य  
 ए दोविध, नव्यने होय शिव ठाण ॥ सन्नी अस  
 न्नी बे पदमांहे, सन्नीयो लहे निर्वाण रे ॥ प्राणी०  
 ॥ मुक्ति० ॥ ५ ॥ चारित्र पांच प्रकारें जांख्यां, श्री

जिन आगममांहि ॥ यथाख्यात चारित्र्ये ते मोक्ष,  
 बीजे चरणे मोक्ष नाहि रे ॥ प्रा० ॥ मुक्ति० ॥ ६ ॥  
 पांच प्रकारें समकित जाणो, पंचांगीना जाण ॥ बी  
 जे समकीतें नवि लहीयें, द्वायिके मोक्ष होय जाण  
 रे ॥ प्रा० ॥ मुक्ति० ॥ ७ ॥ आहार ने नवमाहे न  
 माडे, अणाहार विये मोक्ष ॥ दर्शन चार कद्यां ति  
 नराजें, केवल मोक्षने मांमे रे ॥ प्रा० ॥ मु० ॥ ८ ॥  
 मति अने श्रुत अवधि ज्ञानह, मनःपर्यव ते जं ॥  
 केवल ज्ञानथी केवल ज्योति, प्रथम द्वार एम होवें  
 रे ॥ प्रा० ॥ मु० ॥ ९ ॥ सिद्धना जीव इव्य अनंता,  
 अनंता जीव सिद्धि पाम्या ॥ लोकने असंख्यातमे जा  
 गें, सिद्ध ते सवि दुःख वाम्यां रे ॥ प्रा० ॥ मु० ॥ १० ॥  
 खेत्रथी फरसना अधिकी जाणो, एक आकाश प्रदेशें  
 ॥ एक सिद्ध आश्रित आदि ठे, अनंतें अनादि रे  
 ॥ प्रा० ॥ मु० ॥ ११ ॥ पडवाना अजावथी जा  
 णो, अंतर सिद्धने नही ॥ सर्व जीवने अनंतमे जागें,  
 सिद्ध रह्या शुचि सही रे ॥ प्रा० ॥ मुक्ति० ॥ १२ ॥  
 द्वायिक ने परिणामिक जावें, वे जावें होवे सिद्ध ॥  
 सर्व थकी थोडा नपुंसक, संख्यातगुणी स्त्री सिद्ध  
 रे ॥ प्रा० ॥ मुक्ति० ॥ १३ ॥ तेहथी संख्याता पुरु  
 षज जाणो, समयें नपुंसक दश ॥ स्त्री सीजे एक स  
 मयें बीश, पुरुष अष्टोत्तर ईश रे ॥ प्रा० ॥ मुक्ति० ॥ १४ ॥  
 अल्प बहुत्व ए नवमुं द्वार, कहुं गुरुमुखथी में

आज ॥ मूंगर गुरु पद कमलनो सेवक, विवेकना सी  
धां काज रे ॥ प्रा० ॥ मुक्ति० ॥ १५ ॥

॥ ढाल अगीयारमी ॥ राग धन्याश्री ॥

॥ गिरुआ रे गुण तुम तणा ॥ ए देशी ॥

॥ हवे पंदर जेद सिद्धना, वर्णवुं ते सुखकार।  
रे ॥ जिण सिद्ध ते अरिहंतजी, पुंमरिक अजिण ब  
लिहारी रे ॥ वारी जावं हुं सिद्धनी ॥ ए आंकणी  
॥ १ ॥ विहरमान ते तीर्थ सिद्ध, अतीर्थ सिद्ध म  
रुदेवी माय रे ॥ गृहस्थावासें कूर्मापुत्र सिद्धा, अ  
न्यलिंगें वज्रकल शिवजाय रे ॥ वारी० ॥ २ ॥ स्व  
लिंगें साधु ते सिद्ध कहा, स्त्रीलिंगें चंदन बाला  
रे ॥ पुरुषलिंगें गौतम जाणवा, नपुंसकलिंगें गांगे  
या रे ॥ वा० ॥ ३ ॥ प्रत्येकबुध ते नमि थया, पो  
तानी मेळें स्वयंबुद्ध रे ॥ बुद्ध बोधित सिद्ध ते उपदे  
शें, जरतादिक बुद्धबोधि रे ॥ वा० ॥ ४ ॥ एक जी  
व ते एक सिद्ध ठे, घणा सिद्धें अनेक रे ॥ इम पंदर  
जेद सिद्धना, वरणव्या सुविवेक रे ॥ वा० ॥ ५ ॥  
जीवादिक नव तत्त्वने, प्राणी सदहे जे जावें रे ॥ ते  
नर समकित सुरतरु, पामीने शिव जावे रे ॥ वा०  
॥ ६ ॥ जीव संवर निर्झरा मोक्ष, ए चारे होवे अ  
रूपी रे ॥ बंध आश्रव पुण्य पाप जे, एहने कहियें  
रूपी रे ॥ वा० ॥ ७ ॥ मिश्र जावें अजीव ठे, बंध  
आश्रव पुण्य पाप रे ॥ ए चारेने ठामवा, जेहथी ल  
हे प्राणी संताप रे ॥ वा० ॥ ८ ॥ जीव अजीव वे

जाणवा, संवर निर्झरा मोहू रे ॥ आदरवां ए त्रण  
तत्त्वने, प्राणी लहे शिव शर्म रे ॥ वा० ॥ ए ॥ काल  
अनंत गये जिन मार्गे, सिद्धनी पृष्ठा उद्भासें रे ॥ गो  
लाने अनंतमें जागें, सिद्ध यथा सुविज्ञासें रे ॥ वा०  
॥ १० ॥ ए नव तत्त्व तणा गुण गाया, दिन दिन  
चडत सवाया रे ॥ श्रीविजय मूंगर गुरु सुपसाया,  
विवेकें नित सुख पाया रे ॥ वा० ॥ ११ ॥

॥ कलश ॥ जगजंतु तारण दुःख निवारण, आ  
दि जिनवर में शुण्यो ॥ संवत अठार बहोतेरा वर्षे, न  
विक हित हेतें जण्यो ॥ दमण पूरव विजय दशमी,  
आश्विन मास सु पढ़ ए ॥ सुरगुरुवारें सुखवधा  
रे, कहे कवि जन दहू ए ॥ १ ॥ तपगङ्गा रांजे बड  
दीवाजे, श्रीविजय दया सुरीमरू ॥ तस चरण सेवी  
मुक्ति विजयें, नविक जन मन सुखकरू ॥ तस शि  
ष्य सुंदर गुणपुरंदर, पंक्ति मूंगर मुणिंद ए ॥ तस  
शिष्य सेवक जणे जावें, विवेक लहे आणंद ए ॥ २ ॥  
॥ इति नवतत्त्व स्तवनं समाप्तम् ॥

॥ अथ श्री जिनदासजी कृत धन ॥

॥ अरे तुम जपो मंत्र नवकार, उनसें उतरोगे  
नवपार ॥ होवे तेरी कायाको उधार, सफल कर ले  
अपनो अवतार ॥ ध्यान तुम मनसें धरो नर नार, खा  
ए दुःखकी यह हे संसार ॥ करो प्रभु न्याल अबे जि  
नदास, रखो प्रभु मुक्त चरणोंके पास ॥ १ ॥

॥ सरक जा कुमति नार काली, तेरी संगतसें गइ

लाली ॥ सोबत समताकी में टाली, आतमा तपमें  
नही घाली ॥ अनंत जव वीत गया खाली, वेदना  
निगोदकी जाली ॥ अमरपद जिनदास मागे, सदा  
पद प्रभुजीकुं लागे ॥ १ ॥

॥ सीस नित नमुं नाजिनंदन, चरण पर चढे के  
सर चंदन ॥ करत सब इंद्रादिक बंदन, कटत हे क  
मौंका फंदन ॥ साध्यो तें शिवपुरको साधन, सर्व  
जीवनकुं सुख कंदन ॥ जिनद गुण जिनदास गावे,  
सीस चरणोंसैं नमावे ॥ ३ ॥

॥ बोलत हैया मेरा हस कर, चढावुं चंदन चूवा  
घस कर ॥ पेठा में धर्मोमें धस कर, पाप दल दूर गया  
खस कर ॥ चेतन दुवा खडा कमर कस कर, हठाया  
कर्मोका लसकर ॥ श्रीजिनराज जिहाज खासा, श  
रण जिनदास लिया बासा ॥ ४ ॥

॥ समज मन मेरा मतवाला, तुजें नहिं कोइ ह  
टकणवाला ॥ वस्या तेरे हईए कुगुरु काला, दिया तें  
सुरगतिकुं ताला ॥ फेरतो ममताकी माला, बालतो  
जगवंत पर जाला ॥ दयाकुं दे दिया ताला, देखो  
जिनदासका चाला ॥ ५ ॥

॥ किया में गणधर प्रेमपती, मुजे वरदायक हे स  
रसती ॥ करी निर्मल निर्यथ मति, पूठ पर खडे जा  
गता जती ॥ मुजे बलवंत जइ सोल सती, मिटी मेरी  
डुर्गतिकी सब गति ॥ ऐसा घन जिनदास गावे, अच  
ल पद जक्तिसैं पावे ॥ ६ ॥

॥ बिकट घट डुर्गतिका नारी, नीर जिहां नरतिकु  
मति नारी ॥ बरठी उन नैनोंकी मारी, रुब्या केइ  
कामी संसारी ॥ इनोकी हो रइ खूआरी, जित्या को  
इ सत्य धरमधारी ॥ प्रभु तुम परमारथ पाया, शरण  
अब जिनदास आया ॥ ७ ॥

॥ चेत नर निगोदका बासी, कराई जगमें तें हा  
सी ॥ कुमतिकी पडी गले फांसी, सुमति सुं रखी हे  
उदासी ॥ कुमतिकी बसी सेज खासी, मान रह्यो मम  
ताकूं मासी ॥ हियो खोल अरिहंतकों परखो, करो  
जिनदास आप सखो ॥ ८ ॥

॥ अफल नर तेरी जिंदगानी, शीख सूत्रोंकी न  
ही मानी ॥ किया नही गुरु निर्ग्रथ ग्यानी, कानसें  
लगी कुमति रानी ॥ जगतमें उतर गया पानी, गति  
तेरी डुर्गतिकी ठानी ॥ सेवक तोरा जिनदास बाजे,  
सुधारोगे तुमही काजें ॥ ९ ॥

॥ सफल नर तेरी जिंदगानी, शीख सूत्रोंकी तें  
मानी ॥ किया निज गुरु निर्ग्रथ ग्यानी, कानसें ल  
गी सुमति रानी ॥ जगतमें अधिक चढ्यो पानी, ग  
ति तेरी सुरगतिकी ठानी ॥ सेवक तेरा जिनदास बा  
जे, सुधारोगे तुमही काजें ॥ १० ॥

॥ अथ पहेली जीवशीखामणनी लावणी ॥

॥ चल चेतन अब उठ कर अपनै, जिनमंदिर ज  
इयें ॥ किसीकी चूंझी नां कहीयें, किसीकी बूरी नां क  
हीयें ॥ चल ॥ ए आंकणी ॥ चरण जिनवरजीका

जेठ्या ॥ चर० ॥ नव नव संचित पाप करम सब,  
 तन मनका मेठ्या ॥ सुकृत कीजें, महाराज ॥ सुक० ॥  
 जिनवरका गुण नज लीजें, समकित अमृत रस पी  
 जें, लाज जिन नक्तिको लहीयें रे ॥ लाज० ॥ चल०  
 ॥ १ ॥ करो जी मत मुखसें बडाई ॥ करो० ॥ तज  
 तामस तन मनकी सुमता, सें रेनां जाइ ॥ रीतसें  
 बोलो, मेरी जान ॥ रीत० ॥ आतम समतामें तोलो,  
 मत मरम पारका खोलो, मौन कर तन मनसें रहि  
 यें रे ॥ मौन० ॥ चल० ॥ २ ॥ जोबन दिन चार  
 तणो संगी रे ॥ जोबन० ॥ अंत समय चेतन उठ  
 चाले, काया पडि नंगी ॥ प्रीत सब तूटी, मेरी जान  
 प्रीत० ॥ आउखाकी खरची खूटी, चेतनसें काया रू  
 ठी, सुख दुःख आप किया सहियें रे ॥ सुख० ॥  
 चल० ॥ ३ ॥ जगतसें रहेनां उदासी रे ॥ जग० ॥  
 परख्या में जिनराज, हरो मेरी दुर्गतिकी फांसी ॥ त  
 जो सब धंधा, मेरी जान ॥ तजो० ॥ जिनवर मुख  
 पूनम चंदा, जिनदास तुमारा बंदा, मेरे एक जिन दर्श  
 न चाहियें रे ॥ मेरे० ॥ चल० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ बीजी जीवशिखामणनी लावणी ॥

॥ तुम नजो जिनेसर देव, मुगति पद पाइ ॥ मुग० ॥  
 अब अचल अखंमित ज्योत, सदा सुखदाइ ॥ ए आं  
 कणी ॥ में रुख्यो चोराशी मांहे, नूख्यो में नरम ॥  
 नूख्यो० ॥ महारे उदये अनंतां दुःख, बांध्यां जब  
 करम ॥ में कदिएक दुठ रंक, फिखो तजी शरम ॥

फिखो० ॥ अरु कदिगक राजा जयो, गरथकी गरम ॥  
 जब गरव आणकर बोधो, पारका मरम ॥ पार० ॥  
 पण निर्मल जुगमें जैन, कीयो नही धरम ॥ अब  
 मनख जनममें चेत, घडी शुन आइ ॥ घडी० ॥  
 अब० ॥ १ ॥ में सुर नरका सुख वार, अनंती पाया ॥  
 अन० ॥ महारे शिव समताका सूस, हाथ नही आ  
 या ॥ में कुगुरु ने कुदेव, जला कर ध्याया ॥ जला० ॥  
 में उलज्यो अनादि आयान, विषय जोग जाया ॥  
 में पड्यो लोचके फंद, जोडतो माया ॥ जोड० ॥ य  
 ए लग्यो अंत जब आय, कालने खाया ॥ अब य  
 रिहर सब परमाद, धर्म कर नाइ ॥ धर्म० ॥ अब०  
 ॥ २ ॥ अब डुर्जन अवसर लही, तुं सुकृत कर  
 रे ॥ तुं सुक० ॥ अब दान शिखल तपजाव, हियामें  
 धर रे ॥ तुं कर्मकी माला काट, पाप परिहर रे ॥  
 पाप० ॥ अब वार वार कहुं तोहे, जगतसें तर रे ॥  
 तुं निर्मल नयणें देख, नरकसुं मर रे ॥ नर० ॥ तुं  
 शीख सुगुरुकी मान, अग्यानी नर रे ॥ अब पर त्री  
 या कर जान, बेन ने माइ ॥ बेन० ॥ अब० ॥ ३ ॥  
 अब जिनवर मुऊ मन जायो, सदा गुण गाउं ॥  
 सदा० ॥ अब इतनी किरपा करो, नरक नहिं जाउं ॥  
 अब नव नव मांही देव, जिनेसर पाउं ॥ जि० ॥ में  
 मन वच काया करी, चरण चित लाउं ॥ ए दया ध  
 रम हितकार, सदा में चाउं ॥ सदा० ॥ ए चोराशी  
 के मांहे, फेर नहिं आउं ॥ गुं अरज करे जिनदास,



कीरत ए गाइ ॥ कीरत० ॥ अब० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ त्रीजी जीवशिखामणनी लावणी ॥

॥ कब देखुं जिनवर देव, जगत गुरु ग्यानी ॥  
जग० ॥ कोइ आप समो नहीं उं, जो अंतरध्यानी ॥  
ए आंकणी ॥ अब विषम वन संसार, जगतमें नट  
क्यो ॥ जग० ॥ मुजे अनमतने ले जाय, नरकमें प  
टक्यो ॥ अब लहुं दरिसन जिनवरका, उं दिन कब  
उगे ॥ उं० ॥ मुक्त मनकी वंछित आस, अधिक सब  
पूगे ॥ अब जिनदरिसन बिन नयन, ऊरे मुक्त पानी ॥  
ऊरे० ॥ कोइ० ॥ १ ॥ थारे कुगुरुको उपदेश, हि  
यामें ठायो ॥ हिया० ॥ पण सरस जेद समकितको,  
जीव नंही पायो ॥ अब जैनधर्म निज माल, मूरख  
मत खोवे ॥ मूरख० ॥ ए सुमति सुरगको पंथ, अ  
मर गत होवे ॥ अब दुर्जन जिन नक्तिकी, लही नि  
ज टानी ॥ लही० ॥ कोइ० ॥ २ ॥ अब सुर नर गा  
वे गीत, अजब जड लागी ॥ अजब० ॥ जिहां ना  
चत नृत्य अनेक, अलसकूं त्यागी ॥ अब मोहत म  
न नरपतिका, गगनधुनि गरजे ॥ गग० ॥ ए जिनवर  
महिमा अनंत, ध्यान दिल धरजे ॥ एसी अधिक ठ  
बी जिनजीकी, मेरे मन मानी ॥ मेरे० ॥ कोइ० ॥ ३ ॥  
अब जिनचरणोंसें रंग, अधिक दिल लागो ॥ अ० ॥  
में पेहेल्यो जिन गुण अजब, सुरंगी वाघो ॥ आ सफ  
ल घडी समकितकी, हाथ अब आइ ॥ हाथ० ॥ में  
गगन गमनकी पांख, अमूलक पाइ ॥ अब बोलत सुं

जिनदास, सुनो जिनबानी ॥ सुनो० ॥ कोइ० ॥ ४ ॥

॥ चौथी जीव शिखामणी लावणी ॥

॥ एक जिनवरका निज नाम, हियामें लेनां ॥  
 ॥ हिया० ॥ अब लगी लागन जिनवरसें, आप खुश  
 रहेनां ॥ सदा खुश रहेनां ॥ ए आंकणी ॥ अब निरखुं  
 जिन दीदार, दरस कब पावूं ॥ दर० ॥ जगमें जिन  
 वर निज नाम, निरंजन ध्यावूं ॥ अब रहे नयन जो  
 नाय, हियो नित्य फरके ॥ हियो० ॥ मोहे जिनदर्श  
 नकी आस, पाप सब सरके ॥ अब सुरगति निरग्वन  
 रूप, नजर जर नेनां ॥ नजर० ॥ अब० ॥ १ ॥ अब  
 मिथ्यो नरण नव नवको, आस मुक्त पुरो ॥ आस० ॥  
 में जपुं जिणंदको नाम, मेलुं नही दूरो ॥ ए धनधा  
 ति घाले घेर, करम सब चूरो ॥ कर० ॥ में दुर्गति  
 नमतां आयो, आप हजूरों ॥ अब शुन नजरां मुक्त  
 निरख, मुगति पद देनां ॥ मुग० ॥ अब० ॥ २ ॥ अब  
 हे हीराकी खान, ग्यान निज करणी ॥ ग्यान० ॥ ए  
 मुगति पंथ दातार, सुमतिकी घरणी ॥ अब शुकल  
 ध्यानकी पेडी, चढा नीसरणी ॥ चढा० ॥ ऐसा जगमें  
 संत सुजान, मुगति पद वरणी ॥ अब आपो मया  
 कर कर कैं, अमर सुख चेनां ॥ अमर० ॥ अब० ॥ ३ ॥  
 अब बैठ करूं में मोज, आनंदके घरमें ॥ आ० ॥  
 में परख्या श्रीजिनराज, जगत कुण जरमें ॥ में  
 दुःख जोगता हे अनंत, करे कुण लेखो ॥ करे० ॥ में  
 अरज करूं तन मनसें, नजर जर देखो ॥ अब बोलत

युं जिनदास, सरव रस बेनां ॥ सरव० ॥ अब० ॥ ४ ॥

॥ पांचमी जीव उपदेशनी लावणी ॥

॥ खबर नहीं आ जुगमें पलकी रे ॥ खबर० ॥  
 सुकृत करनां होय तो कर ले, कोन जाने कलकी ॥  
 ए आंकणी ॥ या दोस्ती हे जगवासकी, काया मंमल  
 की ॥ काया० ॥ सास उसास समर ले साहेब, आयु  
 घटे पलकी ॥ खबर० ॥ १ ॥ तारा मंमल रवी चंद्र  
 मा, सब हे चलनेकी ॥ सब० ॥ दिवस चारका च  
 मत्कार जुं, वीजलिया जलकी ॥ खबर० ॥ २ ॥  
 कूड कपट कर माया जोड़ी, करि बातां ठलकी ॥  
 करि० ॥ पापकी पोटली बांधी सिर पर, कैसे होय ह  
 लकी ॥ खबर० ॥ ३ ॥ या जुग हे सुपनेकी माया,  
 जैसी बुंदा जलकी ॥ जैसी० ॥ विणसंतां तो वार न  
 लागे, डुनीयां जाये खलकी ॥ खबर० ॥ ४ ॥ मात  
 तात सुत बंधव बाई, सब जुग मतलबकी ॥ सब० ॥  
 काया माया नार हवेली, ए तेरी कबकी ॥ खबर० ॥ ५ ॥  
 मन मावत तन चंचल हस्ती, मस्ती हे बलकी ॥  
 ॥ मस्ती० ॥ सतगुरु अंकुश धरो सीसपर, चल मारग  
 सतकी ॥ खबर० ॥ ६ ॥ जब लग हंसा रहे देहमें,  
 खुशियां मंगलकी ॥ खुशि० ॥ हंसा ठोड चब्या जब  
 देही, मटीयां जंगलकी ॥ खबर० ॥ ७ ॥ दया धरम  
 साहेबको समरन, ए बातां सतकी ॥ ए बातां० ॥ राग  
 द्वेष उपजे नही जिनकुं, बिनति अखमलकी ॥ ख० ॥ ८ ॥

॥ ठी सुमति कुमतिनी लावणी ॥

हारे तुं कुमति कलेसण नार, लगी क्युं केडे  
 ॥ लगी० ॥ चल सरक खडी रहे दूर, तुजे कुण ठे  
 डे ॥ ए आंकणी ॥ हारे तुं सुमतिको नरमायो, मुजे  
 क्युं ठोडी ॥ मुजे० ॥ मेरी सदा शाश्वती प्रीत, ठी  
 नकमें तोडी ॥ तुज बिन सुन मेरी सेज, कहुं कर  
 जोडी ॥ कहुं० ॥ उठ चलो हमारे संग, सुखें रहो  
 पहोडी ॥ युं जुर जुर कुमति आंसुं, आंखसैं रेडे  
 ॥ आंख० ॥ चल० ॥ १ ॥ हारे तेरी नरक निगोदकी  
 सहज, सेंतिमें रूठयो ॥ सेंति० ॥ पकड्यो साचो जिन  
 राज, संग तेरो बूढ्यो ॥ तेरी मूरख माने बात, हैया  
 को फूढ्यो ॥ हैया० ॥ में सहज दुवो हुं दूर, तार तेरो  
 बूढ्यो ॥ तुं कर दूरसैं बात, आव मत नेडे ॥ आ० ॥  
 च० ॥ १ ॥ तेरी अनंत कालकी प्रीत, पलक नही पाली ॥  
 पलक० ॥ सुमतिके लागो संग, मुजे क्यो टाली ॥ तुं  
 सुमतिको सिरदार, सुणावे गाली ॥ सु० ॥ तेरी हम दोनुं  
 हे नार, गोरी उर काली ॥ तूं हमकुं ठेले दूर, सुमतिकुं  
 तेडे ॥ सुम० ॥ चल० ॥ २ ॥ अब कुमतिको लल  
 चायो, रति नहीं मगियो ॥ रति० ॥ सुन कर सूत्रकी  
 शीख, लाज होय लगीयो ॥ चेतन कुमतिके सहज,  
 दूरचुं जगीयो ॥ दूर० ॥ जिनराज वचनको ग्यान,  
 हैयेमें जगीयो ॥ जिनदास कुमत तुं बात, खोटी म  
 त खेडे ॥ खोटी० ॥ चल सरक० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ आत्मोपदेश लावणी सातमी ॥

॥ तुम तजो जगतका ख्याल, इसका गानां ॥  
 इस० ॥ तेरी अल्प उमर खुट जाय, नरक उठ जा  
 नां ॥ तें दिनो चार जुग बीच, लिया हे वासा ॥  
 लिया० ॥ तेरे सिरपर बेठा काल, करे हे हांसा ॥  
 में बोलुं साची बात, जूठ नही मासा ॥ जूठ० ॥ तुं  
 सूता हे कुण निंद, किसी कर आसा ॥ अब सेव दे  
 व जिनराज, खलकमें खासा ॥ खल० ॥ तेरा जोब  
 न पतंगका रंग, जूठ सब आसा ॥ अब हिये धरो  
 मेरी सीख, समज रे दिवाना ॥ सम० ॥ तुम० ॥ १ ॥  
 अब बुरी नली सब बात, मौन कर रीजें ॥ मौन० ॥  
 ए मुख मीठा संसार, नेद नहिं दीजें ॥ कर वीतरा  
 ग विसवास, हिये धर लीजें ॥ हिये० ॥ पण नीच ना  
 रिका संग, मांहे मत नीजें ॥ अब सात बिसनको सं  
 ग, प्रीति मत कीजें ॥ प्रीति० ॥ तोहे दुर्गति दे पहाँ  
 चाय, तेरो तन ठीजे ॥ तुं सुख दुःखका सिरदार, रं  
 क नही राणा ॥ रंक० ॥ तुम० ॥ २ ॥ तुं बिसर ग  
 या जुग बीच, नाम जिनवरका ॥ नाम० ॥ पच रह्या  
 कुटुंबके काज, किया फंद घरका ॥ तें दया धर्म बि  
 न खोया, जनम सब नरका ॥ जनम० ॥ तें पछे  
 बांध्या पाप, कसाई सरखा ॥ अब लीया नही तें ला  
 ज, बखत पर करका ॥ बखत० ॥ तेरी वीति बात  
 सब जाय, जनम ज्युं खरका ॥ अब सुणो सीख सू  
 तरकी, सुलट रे शाणा ॥ सुल० ॥ तुम० ॥ ३ ॥

तेरी चरण सहेज पर पोढ़्या, आनंद दिल आया ॥  
 ॥ आनं० ॥ मेरी जगी जूख सब प्यास, सुधारस पाया ॥  
 मेरे शिरपर तुम शिरदार, जिनेसर राया ॥ जिने० ॥  
 में चाहुं चरणकी सेव, सफल कर काया ॥ अब द्यो  
 दोलत दरसनकी, मेरे एहि माया ॥ मेरे० ॥ युं अर  
 ज करे जिनदास, अलप गुन गाया ॥ अब बुरा कु  
 गुरु उपदेश, धरो मत काना ॥ धरो० ॥ तुम० ॥ ४ ॥

॥ जीवोपदेश लावणी आठमी ॥

॥ सुगुरुकी शीख हिये धरनां रे ॥ सुगुरु० ॥ अ  
 मरापुरको पंथ सदा, श्रीजैनधर्म करनां ॥ सु० ॥ प  
 रम परमारथ तें टाव्यो रे ॥ पर० ॥ सार जगतमें  
 जैनधर्म, जुगतीसैं नही पाव्यो ॥ प्रभुको नाम नही  
 लीनो रे ॥ प्रभु० ॥ महा हजाहल विषय विकट,  
 मिथ्यामतसैं जीनो ॥ चेतन युं बहुविध दुःख पावे  
 रे ॥ चेत० ॥ लपट्यो लालचमांहे पांच, इंडीके सुख  
 चावे ॥ जीव अब पाप परीहरनां रे ॥ जी० ॥ अमरा  
 पुर० ॥ १ ॥ दया चेतनकुं सुखकारी रे ॥ दया० ॥ श्री  
 जिनराज प्ररूपी जैसी, केसरकी क्यारी ॥ जगतमें तीर  
 थ हे चारी रे ॥ जग० ॥ साधु साधवी श्रावक श्राविका,  
 दूआं व्रतधारी ॥ इन्तूंकुं कहियें ब्रह्मचारी रे ॥ इन्तू० ॥  
 समता संयम सार करीने, कर्म हण्णां जारी ॥ इन्तूने  
 मेढ्या जनम मरणां रे ॥ इन्तू० ॥ अमरा० ॥ २ ॥ पं  
 च इंडियसैं लपटायो रे ॥ पंच० ॥ दुःख अनंतां सह्यां  
 रे बहुलां, प्राणी पढतायो ॥ बहु दुर्गतिमें जमि आ

यो रे ॥ बहु० ॥ शुन मंत्र नवकार सार, दुर्लभ अब  
 में पायो ॥ मेरो मन जिनवरसुं जायो रे ॥ मेरो० ॥  
 कुगुरुको सब संग अशुन, मिथ्या मत ठटकायो ॥ इ  
 नविध नवजलसैं तरनां रे ॥ इन० ॥ अ० ॥ ३ ॥ र  
 हो जिनवाणीमें राता रे ॥ रहो० ॥ अनंत सुखकी  
 खाण, सदा शिव मंगलकी दाता ॥ सदा जिनवर न  
 क्ति करजो रे ॥ सदा० ॥ चित्त धारी हैयामें नवि तुम,  
 पाप परां हरजो ॥ अल्प जिनवरका गुण गाया रे ॥  
 अल्प० ॥ कर जोडि जिनदास कहे, जिन नक्तिसें न्हाया  
 ॥ सदा में चाहुं जिन चरनां रे ॥ सदा० ॥ अ० ॥ ४ ॥

॥ अथ चोवीश दंमकनुं स्तवन प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥ वंदो जिन चोवीशने, तसु जाषित श्रुतजेद ॥  
 दंमक पद कही तस शुणुं, अहो नवि सुणो उमेद ॥ १ ॥

॥ ढाल पहेली ॥ देशी नटीयाणीनी ॥

॥ साते नरकें एक, नवनपति दस दंमक हो ॥ पुढ  
 वी आदि पंच जाणीया, विकलेंडीना त्रण ॥ गर्नज  
 तिरियंचने नर हो, व्यंतर जोईस वेमाणीया ॥ १ ॥

॥ ढाल बीजी ॥ ताहारा मेहेला उपर मेह,

ऊरूखें बीजली ॥ हो लाल ऊ० ॥ ए देशी ॥

॥ जीव दंमाए ज्यांहि, दंमक नाम जेहनो ॥ हो लाल  
 ॥ दंमक० ॥ संक्षेपें लवलेश, संग्रह करुं तेहनो ॥ हो  
 लाल ॥ संग्रह० ॥ नरकादिक चोवीश, दंमक पद जे  
 लहे ॥ हो लाल ॥ दंमक० ॥ दंमाये नहीं तेह, वाचक  
 ऊदय कहे ॥ हो लाल ॥ वाच० ॥ १ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ गौतम समुद्र कुमार रे ॥ ए देशी ॥

॥ शरीरने शरीरनुं मान रे, संघयण ने संज्ञा, संस्थान  
कषाय लेश्या वली ए ॥ इन्द्रिय ने समुद्घात रे, दृष्टि  
नें दरिसन्न, ज्ञान अने योगावली ए ॥ १ ॥ उपयोग ने  
उपपात रे, चवन स्थिति पर्यापति, आहार ने संज्ञा  
त्रिक ए ॥ गति आगति वेद अल्प रे, द्वार चोवीश ए,  
दंमकप्रत्ये नणो नवि ए ॥ २ ॥

॥ द्वार पहेलुं ॥ ढाल चोथी ॥ सिद्धचक्र पद ॥ वंदो एदेशी ॥

॥ गर्नज तिर्येच वाउकाय ने, शरीर कहां ठे चा  
र ॥ औदारिक वैक्रिय तैजस कर्मण, नर ने पांच नि  
रधार रे, श्रोता द्वार एणी परें जाणो ॥ बीजा सर्वेने  
त्रण जाणो, आगम मनमां आणो रे ॥ श्रोताद्वा ॥ १ ॥  
॥ द्वार बीजुं ॥ ढाल पांचमी ॥ सोरठी चालमां ॥ वनस्प  
ति विण थावर चार, तनु जघनोत्कृष्ट विचार ॥ अंगु  
लनो असंख्यातमो जाग, वदे मान एहवुं वीतराग ॥  
॥ १ ॥ बीजे पण दंमक वीशें, जघन्य एमज कह्यो  
जगदीशें ॥ उत्कृष्टं कहुं हवे आगें, धनुष पांचशें ना  
रकी जागें ॥ २ ॥ सुरने सात हाथ वखाणुं, जोयण  
सहस गर्नज तिरिय जाणुं ॥ वनस्पतिनें जाजेरूं, त्र  
ण गाउ नर तेंडि नजेरूं ॥ ३ ॥ बेंडी चौरिंदि बार  
एक, जोयण जाणो सुविवेक ॥ देह उंचपणे ए न  
णियो, वैक्रिय सूत्रें इम शुणियो ॥ ४ ॥ अंगुलनो असं  
ख्यातमो जाग, प्रारंज समय लहो लाग ॥ सुर नरने  
साधिक लाख, जोयण नवशें तिरिय सुजाख ॥ ५ ॥



मूलथी नारकीने बमणुं, अंतर मुहूर्त रहे एम पनणुं ॥  
तिरि नरने मुहूर्त चार, देवने एक पद्द उदार ॥ ६ ॥  
॥ द्वार त्रीजुं ॥ ढाल ठठी ॥ रह्यो रे आवास डुवार ॥ ए देशी ॥

॥ वज्ररुषननाराच, रुषननाराच रे, नाराच  
अर्द्धनाराच ठे रे ॥ किलिका ठेवहुं ए सूत्रें, जिनवर  
देवें रे, संघयण ठ नाख्यां अठे रे ॥ १ ॥ थावर  
नारकी देव, असंघयणा रे, ठेवठा विकलेंडिया रे ॥  
मनुष्य अने तिर्यंच, ठ संघयणा रे, समयविषे नि  
वेदीया रे ॥ २ ॥

॥ द्वार चोथुं ॥ ढाल सातमी ॥ वृषनानु नवनें गर्ई दूती  
॥ ए देशी ॥ चार दश संज्ञा हुए सहूनी, आहार जय  
मैथुन परिग्रहनी ॥ क्रोध मान माया लोन लोक,  
उध दशमी संज्ञा थोक ॥ १ ॥

॥ द्वार पांचमुं ॥ ढाल आठमी ॥ सेला मारूनी देशी ॥

॥ समचतुरस्र हो न्यग्रोध निसादिक, वामन कू  
ब्ज हो हुंमक ए ठ कह्यां ॥ सर्वे सुरने हो पहेलुं  
होय संस्थान, नर तिर्यंचमां हो सघलां ए लह्यां ॥ १ ॥  
विकलेंडीनें हो नरकमां हुंमक होय, नानाविध धजहो  
सूर्ई बुब्बु वणसई ॥ वाउ तेउ हो अपचउकें ए चार,  
पुढवी मसुर हो चंदाकारें कही ॥ २ ॥

॥ द्वार ठहुं ॥ ढाल नवमी ॥ सिरोंईनो  
सेलो हो के ॥ ए देशी ॥

॥ क्रोध मान माया हो के, वली लोन सूत्रें लह्या ॥  
दंमक चोवीशें हो के, कषाय ए चार कह्या ॥ १ ॥

॥ द्वार सातमुं ॥ ढाल दशमी ॥ देखी कामिनी दोय ॥ ए देशी ॥

॥ कृष्ण नील कापोत तेजो, पद्म शुक्ल कही ॥  
के तेजो ॥ ए ठ लेश्या नर तिर्यच, गर्जजमां लही ॥  
के गर्ज ॥ १ ॥ नारक एक वाउ, के विगल बेमाणी  
या ॥ के वि ॥ त्रण त्र ॥ लेश्यावंत, के नीच उच्च  
जाणीया ॥ के नीच ॥ २ ॥ ज्योतिषी पांचे मांहे,  
तेजोलेश्या घणी ॥ के तेजो ॥ बाकी चउद दंमकें  
चार, लेश्या सूत्रें नणी ॥ के लेश्या ॥ ३ ॥

॥ द्वार आठमुं ॥ ढाल अगीयारमी ॥ बिंमलीनी देशी ॥

॥ आठमुं ॥ इंडिया द्वार से, सुगम तेहनो विचार  
हो ॥ जो नवि नावें लहो ॥ जेहने इंडिय होय जे  
ती, तेमजगणी लेजो तेती हो ॥ जो नवि ॥ १ ॥

॥ द्वार नवमुं ॥ ढाल बारमी ॥ फतमलनी देशी ॥

॥ वेदनाकषायने मरण, वैक्रिय तेजस वली ॥  
आहारकने केवलीसात, ए लहो मननी रली ॥ १ ॥  
संझी नरने होय सात, तिरि सहु सुर पदें ॥ आहार  
कने केवल वर्जित, पांच आगम वदे ॥ २ ॥ नारक  
वाउमां पहेलां चार, बाकी सात दंमकें ॥ वेदनादि  
पहेलां त्रण होय, कहां श्रुतमां जिके ॥ ३ ॥

॥ द्वार दशमुं ॥ ढाल तेरमी ॥ प्रभु ताहारो प्रभु  
ताहारो महेर करी मुने जी ॥ ए देशी ॥

॥ विकलेंडी विकलेंडीमांहे दृष्टि बे वदी जी ॥  
समकितने समकितने मिथ्या दृष्टि सोय हो ॥ पांच

थावर पांच थावर मिह्मदिठि कहा जी, बीजा सर्वे  
बीजा सर्वे त्रिदृष्टि होय हो ॥ विकर्ले ० ॥ १ ॥

॥ द्वार अगीयारमुं ॥ ढाल चौदमी ॥ सुरती महीनानी ॥

॥ पंच थावर बि तिइंड़ीने, अचहु दर्शन एक ॥  
चहु अचहु चउरिंड़ीने, बे जाणो सुविवेक ॥ १ ॥  
चहु अचहु अवधि, केवल दर्शन चार ॥ नरमां बीजे  
सर्वे दंमकें, केवल विण त्रण धार ॥ २ ॥

॥ द्वार बारमुं ॥ ढाल पंदरमी ॥ कोइ सुध लावे  
दिनानाथनी ॥ ए देशी ॥

॥ त्रण त्रण सुर तिरि निरयमां, ज्ञान अने अ  
ज्ञान ॥ थावरमां अज्ञान बे, विकर्ले दो दो मान ॥ १ ॥  
अज्ञान ज्ञान ल्यो उलखी, त्रण पंच प्रधान ॥ अनु  
क्रमें मनुजना कहा, समजो सावधान ॥ अ ० ॥ २ ॥

॥ द्वार तेरमुं ॥ ढाल शोलमी ॥ शारद बुधदायी ॥ ए देशी ॥

॥ सत्य असत्य ने मिश्र, असत्य मृषा संयोग ॥  
मन वचनने योगें, आठ थया ए योग ॥ वैक्रियने  
आहारक, औदारिक मिश्र सोय ॥ तैजस कार्मण  
साते, काय तणा योग होय ॥ नारक सुर सहुने, अ  
नुक्रमें योग इग्यार ॥ तेर तिर्यचने जाणो, नरने पंदर  
निरधार ॥ विकर्लेड़ीने चार वली, वायुकायने पंच ॥  
त्रण थावरमां जोजो, सिद्धांतें ए संच ॥ १ ॥

॥ द्वार चौदमुं ॥ ढाल सत्तरमी ॥ सोहमपतिजी ॥ ए देशी ॥

॥ त्रण अज्ञानजी, ज्ञान पांचनी आवली ॥ चार  
दर्शनजी, उपयोग बार सहु मली ॥ मानवमांजी, बा

रे लहो मननी रली ॥ देव तिरियने जी, नव नार  
कने कहा वली ॥ उथलो ॥ वली पांच कहा विकलेंडी  
मांहे, चउरिंड़ीमां ठो कहा ॥ पांच थावरमां त्रण  
प्रकाश्यां, सूत्र मार्गे सदह्यां ॥ १ ॥

॥ द्वार पंदरमुं उपपातनुं ॥ तथा शोलमुं च्यवननुं ॥ ढाल  
अठारमी ॥ एक अनोपम शीखामण खरी ॥ ए देशी ॥

॥ गर्नेज तिरिय, विगल सुर नारकी ॥ असंख्य सं  
ख्याता, व्यो तमें पारखी ॥ नर संख्याता, असन्नी अ  
संख्याता ॥ तेमज थावर, हवे वणसई ख्याता ॥ ढाल ॥  
वनस्पतिमां विख्यात जाणो. अनंता उपजे चवे ॥  
उपजे जेता चवे तेता, बीजो जेद नहीं जवे ॥ १ ॥  
॥ द्वार सत्तरमुं ॥ ढाल उंगणीशमी ॥ काठवानी ॥ देशी ॥

॥ पुढवी अपने वायु, वनस्पतिमांहे हो, उत्कृष्टुं  
आयु लहो ॥ वरस बावीशने सात, त्रण दश सहस  
हो, साचुं सदहो ॥ १ ॥ त्रण दिवस तेउकाय, नर  
तिरि केरुं हो, त्रण पव्य सारिखो ॥ सुर निरय साग  
र तेत्रीश, व्यंतर आयु हो, पव्य एक पारिखो ॥ २ ॥  
साधिक पव्य चंद सूर, असुर निकायें हो, सागर जा  
जेरडूं ॥ पव्य दोयें देशूण, निश्चय जाणो हो, निका  
य नव केरडूं ॥ ३ ॥ बे इंडियनुं वरस बार, तेंडिय  
नुं दिन हो उंगण पचाश ठे ॥ चउरिंडियनुं ठ मास,  
अनुक्रमें आयु हो उत्कृष्ट एह ठे ॥ ४ ॥ जघन्य आ  
यु एक मुहूर्त, पुढवी आदें हो दंमक दशमां कह्यो ॥  
दस सहस वरस प्रमाण, जवनपति नरकें हो, व्यंत

( ४५७ )

र गति लह्यो ॥ ५ ॥ एक पव्योपम मान, वैमानिक  
सुरनुं हो, ज्योतीषीनो जाणजो वली ॥ पव्योपमनो  
आठमो जाग, आगममांहे हो कहे एम केवली ॥ ६ ॥

॥ द्वार अठारमुं ॥ ढाल वीशमी ॥ वूठां दल  
वादल ॥ ए देशी ॥

॥ आहारने शरीर इंडिय हो, सासोसास नासा  
मण ॥ सुर नर तिरि निरखने हो, ए ठ पर्याप्ति गण  
॥ १ ॥ पांचे थावरमांहे हो, पर्याप्ति चारे कही ॥  
वली पंच पर्याप्ति हो, विकलेंडियमांहे लही ॥ २ ॥

॥ द्वार उंगणीशमुं ॥ ढाल एकवीशमी ॥ राम  
चंदके बाग ॥ ए देशी ॥

॥ षट दिशिनो ले आहार, सघला जंतु सदाइ ॥  
लोकने खूणे जीव, पंच चार त्रण दिशि तांइ ॥ १ ॥

॥ द्वार वीशमुं ॥ ढाल बावीशमी ॥ राम सीताने  
धीज करावे रे ॥ ए देशी ॥

॥ हवे संझा त्रण कहेरो रे, दीर्घकालिकी पहेली  
दीसे ॥ हितोपदेशिकी बीजी रे, दृष्टिवादोपदेशिकी  
त्रीजी ॥ १ ॥ देवताना दंमक तेर रे, तिर्यच नारक  
नहिं फेर ॥ संझा ए पहेली दाखी रे, दीर्घकालिकी  
सूत्र ठे साखी ॥ २ ॥ विकलेंडियमां हितोपदेशा रे, सं  
झा रहित थावर अशेषा ॥ नरने पहेली बे नाखी रे,  
कोईकने त्रीजी पण दाखी ॥ ३ ॥

॥ द्वार एकवीशमुं तथा बावीशमुं ॥ गति अगतिनुं ॥ ढाल  
त्रेवीशमी ॥ धण समरथ पीयु नानडो ॥ ए देशी ॥

॥ पर्याप्ता पंचेंद्रिय जेह, तिर्यंचने मानव मरी  
तेह ॥ चार निकायमांहे उपजे, सुरनी योनि जाणो  
ससनेह ॥ १ ॥ गति आगति लहो जीवनी, असं  
ख्याता आउखावंत ॥ पंचेंद्रिय पर्याप्ता, तिरियंचने  
नर ए बे तंत ॥ गति० ॥ १ ॥ तिम पर्याप्ता वली, नू  
जल ने जे तरु प्रत्येक ॥ अमर मरीने अवतरे, स  
मजो ए पांच पदे सुविवेक ॥ गति० ॥ २ ॥ संस्था  
आयु पर्याप्ता, गर्जज नरने तिर्यंच जेह ॥ साते नरकें  
उपजे, तिहांथी आवे नर तिरियमां तेह ॥ गति० ॥ ४ ॥  
नू जल वणसइ योनिमां, नारकीने वर्जी सर्व जीव ॥  
आवी आवी उपजे, निज निज कर्म प्रमाणें सदीव ॥  
गति० ॥ ५ ॥ पृथिव्यादिक दश दंमकें, नू जल वण  
सइना जीव जाय ॥ वली ते दश दंमक विना, तेउ  
वाउ पण नवि थाय ॥ गति० ॥ ६ ॥ तेऊ वाउ तिम  
वली, पृथिव्यादिक नव दंमकें जंति ॥ दश पदना विग  
लेंद्रियमांहे, विगलेंडी दश पद उपजंति ॥ गति० ॥ ७ ॥  
गर्जज तिरियंच उपजे, मरी चोवीशे दंमक मांय ॥  
चोवीश पदना जीव ते, गर्जज मरी तिरियंच थाय ॥  
गति० ॥ ८ ॥ चोवीश पदने शिव पदे, मानव मरी  
सयले जाय ॥ तेऊने वाऊ विना, बावीश पदना मा  
नव थाय ॥ गति० ॥ ९ ॥

॥ द्वार त्रेवीशमुं ॥ ढाल चोवीशमी ॥ थांपर वारी ॥

॥ महारा साहेबा ॥ ए देशी ॥

॥ गर्जज नर तिरि योनिमां, वेद त्रण्य वखाण्या ॥  
स्त्री पुरुष वेद ठे देवमां, नव नानक जाण्या ॥ १ ॥

॥ द्वार चोवीशमुं अल्प बहुत्वनं ॥ ढाल पच्चीशमी ॥

॥ शुं करीयें जो मूलज कूडुं ॥ ए देशी ॥

॥ सद्गु जीवथी थोडा संसारी, पर्याता मानव निर्धारि ॥  
बादर अग्नि वैमानिक देवा, जुवनपति व्यंतर नारक लेवा ॥ १ ॥  
ज्योतिषी चौरिंडी पंचेंडी तिरिया, वेंडी तें नू जल वाउ कहीया ॥  
चढते पदें एक एक थकां, असंख्य गुणा लहो अधिकां अधिकां ॥ २ ॥  
सद्गु वधता वनस्पति जीव, अनंतगुणा जाणो सदीव ॥  
जिनजीयें कहा जाव में जोया, तुम खिजमत विना नव खोयां ॥ ३ ॥

॥ ढाल ढवीशमी ॥ सुण करुणानिधि हंसला ॥ ए देशी ॥

एणी परें चोवीश दंभकें, नवमांहे प्राणी नमियो रे ॥  
अनंत चोवीशी वही गई, पण जिन मारग नवि गमियो रे ॥ १ ॥  
धन धन दिन महारे आजुनो ॥ सुने त्रिजुवन नायक तूठो रे ॥ श्री जिनशासन पामी यो,  
आज मेह अमीरस वूठो रे ॥ धन० ॥ २ ॥ सत्तर एक्याशियें चैत्रमां, वारु वदि ठठ मंगल वार रे ॥  
वीतराग एम वीनव्या, सूरय पुर नगर मोजार रे ॥ धन० ॥ ३ ॥ श्रीवासुपूज्य पसाउले, हीररत्न सूरि सान्निध्यें रे ॥  
वाचक उदय रतन वदे, रुद्रि

वृद्धि वाधि सर्व सिद्धें रे ॥ धन० ॥ ४ ॥ राग धन्या  
 श्री ॥ ऋषज अजित संजव अजिनंदन, सुमति पद्म  
 सुपास जी ॥ चंदप्रज सुविधि शीतल श्रेयांस, वासुपू  
 ज्य विमल जिन खास जी ॥ अनंत धर्म शांति कुंथु  
 अर, मद्धि मुनिसुव्रत नमी नेमजी ॥ पार्श्व वीर  
 चोवीशे प्रणमुं, परम उदय लही प्रेम जी ॥ १ ॥  
 ॥ इति चतुर्विंशति दंभक वर्जित श्रीचतुर्विंशति वा  
 तराग स्तवन ॥ ढाल सत्यार्वांश ॥ गाथा चोशठ ठे ॥

॥ अथ श्री आनंदघनरुत चोवीश जिनस्तुति ॥

॥ तत्र प्रथम श्री ऋषजजिनस्तवनं ॥

॥ राग मारू॥करम परीक्षाकरण कुमार चव्यो रे ॥ ए देशी

॥ ऋषज जिनेश्वर प्रीतम माहरो रे, उर न चाहुं रे  
 कंत ॥ रीज्यो साहेब संग न परिहरुं रे, नांगें सादि अ  
 नंत ॥ ऋषज० ॥ १ ॥ प्रीति सगाई रे जगमां सहु करे  
 रे, प्रीत सगाई न कोय ॥ प्रीत सगाई रे निरुपाधिक क  
 ही रे, सोपाधिक धन खोय ॥ ऋषज० ॥ २ ॥ कोइ कंत  
 कारण काष्ठ नद्धण करे रे, मलखुं कंतने धाय ॥ ए मेलो  
 नवि कहियें संजवे रे, मेलो ठाम न ठाय ॥ ऋषज० ॥ ३ ॥  
 कोइ पति रंजन अति घणुं तप करे रे, पति रंजन  
 तन ताप ॥ ए पति रंजन में नवि चित्त धरखुं रे, रंज  
 न धातु मिलाप ॥ ऋषज० ॥ ४ ॥ कोइ कहे लीला  
 रे अलख ललख तणी रे, लख पूरे मन आस ॥  
 दोष रहितने लीला नवि घटे रे, लीला दोष विला  
 स ॥ ऋषज० ॥ ५ ॥ चित्त प्रसन्नै रे पूजन फल कह्युं



( ४६१ )

रे, पूज अखंडित एह ॥ कपट रहित थई आतम  
अरपणा रे, आनंदघन पद रेह ॥ कृष्ण० ॥ ६ ॥

॥ अथ श्री अजितजिन स्तवनं ॥

॥ राग आशावरी ॥ मारुं मन मोह्युं रे श्रीविम ॥

॥ लाचलें रे ॥ ए देशी ॥

॥ पंथडो निहालूं रे बीजा जिन तणो रे, अजित  
अजित गुण धाम ॥ जे तें जीत्या रे तेणें हुं जीतियो रे, पु  
रुष किशुं मुऊ नाम ॥ पंथ० ॥ १ ॥ चरम नयण करी मा  
रग जोवतो रे, नूलो सयल संसार ॥ जेणें नयणें करी  
मारग जोइयें रे, नयण ते दिव्य विचार ॥ पंथ० ॥ २ ॥ पुरुष  
परंपर अनुनव जोवतां रे, अंधो अंध पुलाय ॥ वस्तु  
विचारे रे, जो आगमें करी रे, तो चरण धरण नहीं  
गय ॥ पंथ० ॥ ३ ॥ तर्क विचारे रे वाद परंपरा रे, पार  
न पहोंचे कोय ॥ अजिमतें वस्तु वस्तुगतें कहे रे,  
ते विरला जग जोय ॥ पंथ० ॥ ४ ॥ वस्तु विचारें रे  
दिव्य नयणतणो रे, विरह पड्यो निरधार ॥ तरत  
म जोगें रे तरतम वासना रे, वासित बोध आधार ॥  
॥ पंथ० ॥ ५ ॥ काल लब्धि लही पंथ निहालहुं  
रे, ए आशा अविलंब ॥ ए जन जोवे रे जिनजी जा  
णजो रे, आनंदघन मति अंब ॥ पंथ० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीसंनवजिनस्तवन प्रारंभः ॥

॥ राग रामग्री ॥ रातडी रमीने किहांथी ॥

॥ आविया रे ॥ ए देशी ॥

॥ संनवदेव ते धुर सेवो सवे रे, लहि प्रभु सेवन

नेद ॥ सेवन कारण पहली नूमिका रे, अजय अघे  
 ष अखेद ॥ संजव० ॥ १ ॥ नय चंचलता हो जे प  
 रिणामनी रे, द्वेष अरोचक जाव ॥ खेद प्रवृत्ति हो  
 करतां थाकीयें रे, दोष अबोध लखाव ॥ संजव० ॥  
 ॥ २ ॥ चरमावर्त्त हो चरम करण तथा रे, नव परि  
 णति परिपाक ॥ दोष टांगे वलि दृष्टि खुले नली रे,  
 प्रापति प्रवचन वाक ॥ संजव० ॥ ३ ॥ परिचय पाति  
 क घातिक साधुशुं रे, अकुशल अपचय चेत ॥ ग्रंथ  
 अध्यात्म श्रवण मनन करी रे, परिशीलन नय हे  
 त ॥ संजव० ॥ ४ ॥ कारण जोगें हो कारज नीपजे  
 रे, एमां कोइ न वाद ॥ पण कारण बिण कारज सा  
 धीयें रे, ए निज मत उनमाद ॥ संजव० ॥ ५ ॥ मु  
 ग्ध सुगम करी सेवन आदरे रे, सेवन अगम अनू  
 प ॥ देजो कदाचित् सेवक याचना रे, आनंदधन रस  
 रूप ॥ संजव० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री अजिनंदन जिनस्तवनं लिख्यते ॥

॥ राग धन्यश्री सिंधुत ॥ आज निहेजो रे  
 दीसे नाहलो ॥ ए देशी ॥

॥ अजिनंदन जिन दरिसण तरसीयें, दरिसण दुर्जेन  
 देव ॥ मत मत नेदें रें जो जई पूढीयें, सहु थापे अह  
 मेव ॥ अजि० ॥ १ ॥ सामान्यें करी दरिसण दोहे  
 लूं, निर्णय सकल विशेष ॥ मदमें घेखो रे आंधो केम  
 करे, रविशशि रूप विलेख ॥ अजि० ॥ २ ॥ हेतु  
 विवादें हो चित धरि जोइयें, अति दुर्गम नय वाद ॥

आगमवादें हो गुरुगम को नहीं, ए सबलो विषवा  
 द ॥ अजि० ॥ ३ ॥ घाती मूंगर आमा अति घणा,  
 तुऊ दरिसण जगनाथ ॥ धीठाई करी मारण संचरूं, स  
 गूं कोइ न साथ ॥ अजि० ॥ ४ ॥ दरिसण दरिसण  
 रटतो जो फरूं, तो रण रोज समान ॥ जेहने पीपासा  
 हो अमृत पाननी, किम नांजे शेषपान ॥ अजि० ॥  
 ॥ ५ ॥ तरप न आवे हो मरण जीवन तणो, सीजे  
 जो दरिसण काज ॥ दरिसण दुर्जन सुजन कृपा  
 थकी, आनंदघन महाराज ॥ अजि० ॥ ६ ॥ इति ॥  
 ॥ अथश्री सुमति जिनस्तवनं लिख्यते ॥

॥ राग वसंत तथा केदारो ॥

॥ सुमति चरण कज आतम अरपण, दरपण जिम  
 अविकार ॥ सुग्यानी ॥ मति तरपण बहु सम्मत  
 जाणियें, परिसरपण सुविचार ॥ सुग्यानी ॥ सुम  
 ति० ॥ १ ॥ त्रिविध सकल तनुधर गत आतमा,  
 बहिरातम धुरि नेद ॥ सु० ॥ बीजो अंतर आतम  
 तीसरो, परमातम अविहेद ॥ सु० ॥ सुमति० ॥ २ ॥  
 आतम बुद्धे कायादिकें ग्रह्यो, बहिरातम अधरूप ॥  
 ॥ सुग्यानी ॥ कायादिकनो हो साखी धर रह्यो, अंत  
 र आतमरूप ॥ सुग्यानी ॥ सुमति० ॥ ३ ॥ ज्ञाना  
 नंदें हो पूरण पावनो, वर्जित सकल उपाधि ॥ सु  
 ग्यानी ॥ अतींद्रिय गुण गण मणि आगरू, एम पर  
 मातम साध ॥ सुग्यानी ॥ सुमति० ॥ ४ ॥ बहिरातम  
 तजी अंतर आतमा, रूप थइ थिर नाव ॥ सु० ॥

परमात्मनुं हो आत्म जाववूं, आत्म अर्पण दाव  
॥ सु० ॥ सुमति० ॥ ५ ॥ आत्म अर्पण वस्तु वि  
चारतां, जरम टले मति दोष ॥ सु० ॥ परम पदारथ  
संपति संपजे, आनंदधन रस पोष ॥ सु० ॥ सु० ॥ ६ ॥

अथश्री पद्मप्रज जिन स्तवनं लिख्यते ॥

॥ राग मारु ॥ तथा सिंधुत ॥ चांदलीया संदेशो  
॥ कहेजे मारा कंतने रे ॥ ए देशी ॥

॥ पद्मप्रज जिन तुऊ मुऊ अंतरू रे, किम गाजे  
जगवंत ॥ कर्म विपाकें कारणा जोझे रे, कोइ कहे  
मतिमंत ॥ पद्म० ॥ १ ॥ पयइ छिइ अणुनाग प्रदे  
शथी रे, मूल उत्तर बहु जेद ॥ घाती अघाती हो बंधू  
दय उदीरणा रे, सत्ता कर्म विछेद ॥ पद्म० ॥ २ ॥  
कनकोपलवत पयडि पुरुष तणी रे, जोडी अनादि  
स्वजाव ॥ अन्य संजोगी जिहां लगे आत्मा रे, सं  
सारी कहेवाय ॥ पद्म० ॥ ३ ॥ कारण जोगें हो बंधे  
बंधने रे, कारण मुगति मूकाय ॥ आश्रव संवर ना  
म अनुक्रमें रे, हेय उपादेय सुणाय ॥ पद्म० ॥ ४ ॥  
युंजन करणे हो अंतर तुऊ पज्यो रे, गुण करणे क  
री जंग ॥ ग्रंथ उकतें करी पंमित जन कह्यो रे, अं  
तर जंग सुअंग ॥ पद्म० ॥ ५ ॥ तुऊ मुऊ अंतर अं  
तर नांजो रे, वाजो मंगल तूर ॥ जीव सरोवर अ  
तिशय बाधो रे, आनंदधन रस पूर ॥ पद्म० ॥ ६ ॥

( ४६५ )

॥ अथ श्रीसुपार्श्वजिनस्तवन प्रारंभः ॥

॥ राग सारंग ॥ तथा मल्हार ॥ ललनानी देशी ॥

॥ श्रीसुपार्श्वजिन वंदियें, सुख संपत्तिने हेतु ॥ ललना ॥  
शांति सुधारस जलनिधि, नव सागरमांहे सेतु ॥ ल  
लना ॥ श्रीसु० ॥ १ ॥ सात नहा नय टालतो, स  
तम जिनवर देव ॥ ललना ॥ सावधान मनसा क  
री, धारो जिनपद सेव ॥ ललना ॥ श्रीसु० ॥ २ ॥ शि  
वशंकर जगदीश्वरू, चिदानंद जगवान ॥ ललना ॥  
जिन अरिहा तीर्थंकरू, ज्योति सरूप असमान ॥  
॥ ल० ॥ श्रीसु० ॥ ३ ॥ अलख निरंजन वल्लभू, स  
कल जंतु विशराम ॥ ल० ॥ अनयदान दाता सदा,  
पूरण आतमराम ॥ ल० ॥ श्रीसु० ॥ ४ ॥ वीतराग  
मद कल्पना, रति अरति नय शोग ॥ ललना ॥ नि  
झा तंझा डुरदशा, रहित अबाधित योग ॥ ललना ॥  
श्रीसु० ॥ ५ ॥ परम पुरुष परमात्मा, परमेश्वर पर  
धान ॥ ललना ॥ परम पदारथ परमेष्ठी, परमदेव  
परमान ॥ ल० ॥ श्रीसु० ॥ ६ ॥ विधि विरंचि विश्वं  
नरू, कृषीकेश जगनाथ ॥ ल० ॥ अघहर अघ मोच  
न धणी, मुक्ति परमपद साथ ॥ ल० ॥ श्रीसु० ॥ ७ ॥ एम  
अनेक अनिधा धरे, अनुभव गम्य विचार ॥ ल० ॥ जेह  
जाणे तेहने करे, आनंदघन अवतार ॥ ल० ॥ श्री० ॥ ८ ॥

॥ अथ श्रीचंद्रप्रज्जिनस्तवनं लिख्यते ॥

॥ राग केदारो ॥ तथा गोडी ॥ कुमरी रोवे आक्रंद करे,

॥ मुने कोइ मूकावे ॥ ए देशी ॥

॥ देखण दें रे सखि मुने देखण दे, चंङ्प्रन मुख  
 चंद ॥ सखि० ॥ उपशम रसनो कंद ॥ सखि० ॥  
 सेवे सुरनर इंद ॥ सखी० ॥ गत कलिमल डुख दंद  
 ॥ सखी॥मु०॥ १ ॥ सुहम निगोदें न देखियो ॥ सखि० ॥  
 बादर अतिहि विशेष ॥ स० ॥ पुढवी आउ न लेखि  
 यो ॥ स० ॥ तेउ वाउ न लेख ॥ स० ॥ २ ॥ वनस  
 पति अति घण दिहा ॥ स० ॥ दीठो नहीय दीदार ॥  
 स० ॥ बि ति चउरिंदी जल लिहा ॥ स० ॥ गति  
 सन्नी पण धार ॥ स० ॥ ३ ॥ सुर तिरि निरय निवा  
 समां ॥ स० ॥ मनुज अनारज साथ ॥ स० ॥ अप  
 ऊता प्रतिनासमां ॥ स० ॥ चतुर न चढीयो हाथ ॥  
 स० ॥ ४ ॥ एम अनेक थल जाणियें ॥ स० ॥ द  
 रिसण विणु जिन देव ॥ स० ॥ आगमथी मत जा  
 णियें ॥ स० ॥ कीजें निर्मल सेव ॥ स० ॥ ५ ॥  
 निर्मल साधु नगति लही ॥ स० ॥ योग अवंचक  
 होय ॥ स० ॥ किरिया अवंचक तिमसही ॥ स० ॥  
 फल अवंचक जोय ॥ स० ॥ ६ ॥ प्रेरक अवसर जि  
 नवरू ॥ स० ॥ मोहनीय क्य जाय ॥ स० ॥ कामि  
 त पूरण सुरतरू ॥ स० ॥ आनंदघनप्रभु पाय ॥ स० ॥ ७ ॥

॥ अथ श्रीसुविधिजिनस्तवन प्रारंभः ॥

॥ राग केदारो ॥ एम धन्नो धणने परचावे ॥ ए देशी ॥

॥ सुविधि जिणोसर पाय नमिने, शुज करणी एम  
 कीजें रे ॥ अति घणो उलट अंग धरीने, प्रह उठी पू  
 जीजें रे ॥ सुवि० ॥ १ ॥ इव्य जाव शुचि जाव धरी

ने, हरखें देहरे जइयें रे ॥ दह तिग पण अहिगम  
 साचवतां, एकमना धुरि अइयें रे ॥ सु० ॥ २ ॥ कु  
 सुम अकृत वर वास सुगंधो, धूप दीप मन साखी  
 रे ॥ अंग पूजा पण जेद सुणी एम, गुरु सुख आगम  
 जाखी रे ॥ सु० ॥ ३ ॥ एहनं फल दोय जेद सुणी  
 जें, अनंतर ने परंपर रे ॥ आणा पालण चित्त प्रस  
 न्नी, सुगति सुगति सुर मंदिर रे ॥ सु० ॥ ४ ॥ फूल  
 अकृत वर धूप पईवो, गंध नैवेद्य फल जल जरी  
 रे ॥ अंग अग्र पूजा मलि अडविध, नावें नविक शु  
 नगति वरी रे ॥ सु० ॥ ५ ॥ सत्तर जेद एकवीश प्र  
 कारें, अछोत्तर सत जेदें रे ॥ नाव पूजा बहुविध  
 निरधारी, दोहग डुर्गति ठेदे रे ॥ सु० ॥ ६ ॥ तुरि  
 य जेद पडिवत्ती पूजा, उपशम खीण सयोगी रे ॥  
 चउहा पुजा इम उत्तरअयणें, जाखी केवल नोगी रे ॥  
 सु० ॥ ७ ॥ एम पूजा बहु जेद सुणीने, सुखदायक  
 शुन करणी रे ॥ नाविक जीव करणे ते जेहेणे, आनं  
 दघन पद घरणी रे ॥ सु० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीशीतलजिनस्तवनं लिख्यते ॥

॥ मंगलिक माला गुणह विशाला ॥ ए देशी ॥

॥ शीतल जिनपति ललित त्रिजंगी, विविध जंगी  
 मन मोहे रे ॥ करुणा कोमलता तीक्ष्णता, उदासी  
 नता सोहे रे ॥ शी० ॥ १ ॥ सर्व जंतु हितकरणी  
 करुणा, कर्म विदारण तीक्ष्ण रे ॥ हानादानरहि  
 त परिणामी, उदासीनता वीक्ष्ण रे ॥ शी० ॥ २ ॥

पर दुख ठेदन इच्छा करुणा, तीक्ष्ण पर दुख रीजे  
 रे ॥ उदासीनता उन्नय विलक्षण, एक ठामें केम  
 सीजे रे ॥ शी० ॥ ३ ॥ अन्नय दान ते मलक्षय करु  
 णा, तीक्ष्णता गुण नावें रे ॥ प्रेरण विष्णु कृत उ  
 दासीनता, इम विरोध मनि नावे रे ॥ शी० ॥ ४ ॥ श  
 क्ति व्यक्ति त्रिभुवन प्रभुता, निग्रंथता संयोगें रे ॥ यो  
 गी जोगी वक्ता मौनी, अनुपयोगि उपयोगें रे ॥ शी०  
 ॥ ५ ॥ इत्यादिक बहु जंग त्रिजंगी, चमत्कार चित्त  
 देती रे ॥ अचरिज कारी चित्र विचित्रा, आनंदधन  
 पद लेती रे ॥ शी० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री श्रेयांसजिन स्तवन प्रारंभः ॥

॥ राग गोडी ॥ अहो मतवाले साजना ॥ ए देशी ॥

॥ श्री श्रेयांस जिन अंतरजामी, आतमरामी ना  
 मी रे ॥ अध्यातम मत पूरण पामी, सहज मुगति  
 गति गामी रे ॥ श्रीश्रे० ॥ १ ॥ सयल संसारी इंडि  
 यरामी, मुनिगुण आतम रामी रे ॥ मुख्य पणे जे  
 आतम रामी, ते केवल निःकामी रे ॥ श्रीश्रे० ॥ २ ॥  
 निज स्वरूप जे किरिया साधे, तेह अध्यातम लहियें  
 रे ॥ जे किरिया करि चउगति साधे, ते न अध्यातम  
 कहियें रे ॥ श्रीश्रे० ॥ ३ ॥ नाम अध्यातम उवण  
 अध्यातम, इव्य अध्यातम ठंमो रे ॥ नाव अध्यात  
 म निजगुण साधे, तो तेहशुं रढ मंमो रे ॥ श्रीश्रे० ॥  
 ॥ ४ ॥ शब्द अध्यातम अरथ सुणीने, निर्विकल्प  
 आदरजो रे ॥ शब्द अध्यातम नजना जाणी, हान



ग्रहण मति धरजो रे ॥ श्रीश्रे० ॥ ५ ॥ अथात्म जे  
वस्तु विचारी, बीजा जाण लबासी रे ॥ वस्तुगते जे  
वस्तु प्रकासे, आनंदघन मतवासी रे ॥ श्रीश्रे० ॥ ६ ॥

॥ अथ वासुपूज्य जिन स्तवनं लिख्यते ॥

॥ राग गोडी तथा परजीयो ॥ तूंगियागिरि  
शिखर सोहे ॥ ए देशी ॥

॥ वासुपूज्य जिन त्रिभुवन स्वामी, घननामी पर  
नामी रे ॥ निराकार साकार सचेतन, करम करम  
फल कामी रे ॥ वासु० ॥ १ ॥ निराकार अनेद सं  
ग्राहक, जेदग्राहक साकारो रे ॥ दर्शन ज्ञान दुजेद  
चेतना, वस्तु ग्रहण व्यापारो रे ॥ वासु० ॥ २ ॥ कर्त्ता  
परिणामी परिणामो, कर्म जे जीवें करियें रे ॥ एक  
अनेक रूप नय वादें, नियतें नर अनुसरियें रे ॥ वासु० ॥  
॥ ३ ॥ दुख सुख रूप करम फल जाणो, निश्चय एक  
आनंदो रे ॥ चेतनता परिणाम न चूके, चेतन कहे जिन  
चंदो रे ॥ वासु० ॥ ४ ॥ परिणामी चेतन परिणामो, ज्ञान  
करम फल जावी रे ॥ ज्ञान करम फल चेतन कहियें,  
लेजो तेह मनावी रे ॥ वासु० ॥ ५ ॥ आत्म ज्ञानी  
श्रमण कहावे, बीजा तो इव्यालिंगी रे ॥ वस्तुगते जे  
वस्तु प्रकाशे, आनंदघनमति संगी रे ॥ वा० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीविमलजिन स्तवनं प्रारब्धते ॥

॥ राग मल्हार ॥ इमर आंबा आंबली रे ॥ ए देशी ॥

॥ दुख दोहग दूरें टव्यां रे, सुख संपदशुं जेट ॥  
धींग धणो माथे किया रे, कुण गंजे नर खेट ॥ विम

लजिन, दीठा लोयण आज ॥ मारा सीधां वंठित  
 काज ॥ विमलजिन ॥ दीठा० ॥ १ ॥ चरण कमल क  
 मला वसे रे, निर्मल थिर पद देख ॥ समल अथिर  
 पद परिहरी रे, पंकज पामर पेख ॥ वि० ॥ दी० ॥  
 ॥ २ ॥ मुऊ मन तुऊ पद पंकजें रे, लीनो गुण म  
 करंद ॥ रंक गणो मंदिरधरा रे, इंद चंद नागिंद ॥  
 ॥ वि० ॥ दी० ॥ ३ ॥ साहिब समरथ तुं धणी रे,  
 पाम्यो परम उदार ॥ मन विशरामी वालहो रे, आ  
 तमचो आधार ॥ वि० ॥ दी० ॥ ४ ॥ दरिसण दी  
 ठे जिन तणुं रे, संशय न रहे वेध ॥ दिनकर कर  
 नर पसरंता रे, अंधकार प्रतिषेध ॥ वि० ॥ दी० ॥ ५ ॥  
 अमीय नरी मूरति रची रे, उपम न घटे कोय ॥  
 शांति सुधारस जीलती रे, निरखत तृप्ति न होय ॥  
 ॥ वि० ॥ दी० ॥ ६ ॥ एक अरज सेवक तणी रे,  
 अवधारो जिनदेव ॥ कृपा करी मुऊ दीजीयें रे, आ  
 नंदघन पद सेव ॥ वि० ॥ दी० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री अनंत जिनस्तवनं लिख्यते ॥

॥ राग रामग्री ॥ देशी कडखानी ॥

॥ धार तरवारनी सोहली दोहली, चउदमा जि  
 नतणी चरण सेवा ॥ धार पर नाचतां देख बाजीग  
 रा, सेवना धार पर रहे न देवा ॥ धा० ॥ १ ॥ ए  
 आंकणी ॥ एक कहे सेवियें विविध किरिया करी,  
 फल अनेकांत लोचन न देखे ॥ फल अनेकांत किरि  
 या करी बापडा, रडवडे चार गतिमांहे लेखे ॥ धा० ॥

॥ २ ॥ गह्वना चेद बहु नयण नीहालतां, तत्त्वनी  
वात करतां न लाजे ॥ उदर जरणादि निज काज कर  
तां थकां, मोह नडिया कलिकाल राजें ॥ धा० ॥

॥ ३ ॥ वचन निरपेक्ष व्यवहार जूठो कह्यो, वचन  
सापेक्ष व्यवहार साचो ॥ वचन निरपेक्ष व्यवहार  
संसार फल, सांजली आदरी कांइ राचो ॥ धा० ॥

॥ ४ ॥ देव गुरु धर्मनी शुद्धि कहो केम रहे, केम  
रहे शुद्ध श्रद्धान आणो ॥ शुद्ध श्रद्धान विणु सर्व  
किरिया करी, ठार पर लीपणुं तेह जाणो ॥ धा० ॥

॥ ५ ॥ पाप नही कोइ उत्सूत्र चाषण जिस्थुं, धर्म  
नही कोइ जग सूत्र सरिखो ॥ सूत्र अनुसार जे न  
विक किरिया करे, तेहनुं शुद्ध त्रारित्र परिखो ॥

॥ धा० ॥ ६ ॥ एह उपदेशनो सार संक्षेपथी, जे न  
रा चित्तमें नित्य ध्यावें ॥ ते नरा दिव्य बहु काल सुख  
अनुभवो, नियत आनंद धन राज पावे ॥ धा० ॥ ७ ॥

॥ अथ श्रीधर्मजिनस्तवनं लिख्यते ॥

॥ राग गोडी सारंग ॥ रसीयानी देशी ॥

॥ धर्मजिनेसर गावं रंगशुं, जंग म पडशोहो प्रीत ॥  
जिनेसर ॥ बीजो मनमंदिर आणुं नही, ए अम कु  
लवट रीत ॥ जिनेसर ॥ धर्म० ॥ १ ॥ धरम धरम  
करतो जग सहु फिरे, धरम न जाणे हो मर्म ॥ जि० ॥  
धरम जिनेसर चरण ग्रह्या पढी, कोइ न बांधे हो कर्म ॥  
जि० ॥ धर्म० ॥ २ ॥ प्रवचन अंजन जो सद्गुरु  
करे, देखे परम निधान ॥ जि० ॥ हृदय नयण नि

हाले जग धणी, महिमा मेरु समान ॥ जि० ॥ धर्म०  
 ॥ ३ ॥ दोडत दोडत दोडत दोडीयो, जेती मननी रे  
 दोड ॥ जि० ॥ प्रेम प्रतीत विचारो दूकडी, गुरुगम  
 जेजो रे जोड ॥ जि० ॥ ध० ॥ ४ ॥ एक पखी केम  
 प्रीति वरे पडे, उजय मिला दुए संधि ॥ जि० ॥  
 हुं रागी हुं मोहें फंदियो, तुं नीरागी निरबंध ॥ जि० ॥  
 ध० ॥ ५ ॥ परम निधान प्रगट मुख आगलें, जग  
 त उलंघी हो जाय ॥ जि० ॥ ज्योति विना जुठ जग  
 दीशनी, अंधो अंध पलाय ॥ जि० ॥ ध० ॥ ६ ॥  
 निर्मल गुण मणि रोहण नूधरा, मुनिजन मानस हं  
 स ॥ जि० ॥ धन ते नगरी धन बेला घडी, माता पिता  
 कुलवंश ॥ जि० ॥ धर्म० ॥ ७ ॥ मन मधुकर वर कर  
 जोडी कहे, पदकज निकट निवास ॥ जि० ॥ धन नामी  
 आनंदधन सांजलो, ए सेवक अरदास ॥ जि० ॥ धर्म० ॥ ८

॥ अथ श्रीशांतिजिनस्तवन प्रारंभः ॥

॥ राग मल्हार ॥ चतुर चोमासुं पडिक्कमी ॥ ए देशी ॥

॥ शांति जिन एक मुज वीनति, सुणो त्रिभुवन  
 राय रे ॥ शांति सरूप किम जाणियें, कहो मन  
 परखाय रे ॥ शांति० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ धन्य तुं  
 आतमा जेहने, एहवो प्रश्न अवकाश रे ॥ धीरज म  
 न धरी सांजलो, कहुं शांति प्रतिजास रे ॥ शां  
 ति० ॥ २ ॥ नाव अविशुद्ध सुविशुद्ध जे, कह्या जिन  
 वर देव रे ॥ ते तेम अवितथ सद्देहे, प्रथम ए शांति प  
 द सेव रे ॥ शांति० ॥ ३ ॥ आगमधर गुरु समकिती,

किरिया संवर सार रे ॥ संप्रदायी अवंचक सदा, शु  
 चि अनुनवाधार रे ॥ शांति० ॥ ४ ॥ शुद्ध आलंबन आद  
 रे, तजी अवर जंजाल रे ॥ तामसी वृत्ति सवि परि  
 हरी, नजे सात्विकी शाल रे ॥ शांति० ॥ ५ ॥  
 फल विसंवाद जेहमां नही, शब्द ते अर्थ संबंधि रे ॥  
 सकल नय वाद व्यापी रह्यो, ते शिव साधन संधि रे  
 ॥ शांति० ॥ ६ ॥ विधि प्रतिषेध करि आतमा, प  
 दारथ्य अविरोध रे ॥ ग्रहण विधि महाजनं परिग्र  
 ह्यो, इस्यो आगमें बोध रे ॥ शांति० ॥ ७ ॥ डुष्ट ज  
 न संगति परिहरी, नजे सुगुरु संतान रे ॥ जोग सा  
 मर्थ्य चित्त जावजे, धरे मुगति निदान रे ॥ शांति० ॥  
 ॥ ८ ॥ मान अपमान चित्त सम गणे, सम गणे क  
 नक पाखाण रे ॥ वंदक निंदक सम गणे, इस्यो हो  
 ये तुं जाण रे ॥ शांति० ॥ ९ ॥ सर्व जगजंतुने सम ग  
 णे, गणे तृण मणि जाव रे ॥ मुक्ति संसार बेडु स  
 म गणे, मुणे नवजल निधि नाव रे ॥ शांति० ॥  
 ॥ १० ॥ आपणो आतमजावजे, एक चेतनाधार  
 रे ॥ अवर सवि साथ संयोगथी, एह निज परिकर  
 सार रे ॥ शांति० ॥ ११ ॥ प्रभु मुखथी एम सांज  
 ली, कहे आतमराम रे ॥ ताहरे दरिसणें निस्तखो,  
 मुऊ सीधां सवि काम रे ॥ शांति० ॥ १२ ॥ अहो  
 अहो हुं मुऊने कहुं, नमो मुऊ नमो मुऊ रे ॥ अमित  
 फल दान दातारनी, जेहनो जेट थइ तुऊ रे ॥ शां  
 ति० ॥ १३ ॥ शांति सरूप संक्षेपथी, कह्यो निज

पररूप रे ॥ आगममांदे विस्तर घणो, कह्यो शांति  
जिन चूप रे ॥ शांति० ॥ १४ ॥ शांति सरूप एम  
नावरो, धरी शुद्ध प्रणिधान रे ॥ आनंदघन पद पा  
मरो, ते जेहेरो बहु मान रे ॥ शांति० ॥ १५ ॥

॥ अथ श्रीकुंथुजिनस्तवन प्रारंभः ॥

॥ राग गुर्जरी ॥ अंबर देहो मुरारी, हमारो० ॥ ए देशी ॥

॥ कुंथुजिन मनहुं किमही न बाजे हो ॥ कुं० ॥  
जिम जिम जतन करीने राखूं, तिम तिम अजगुं ना  
जे हो ॥ कुं० ॥ १ ॥ रजनी वासर वसति उजड,  
गयण पायालें जाय ॥ साप स्वायने मुखहुं थोथुं, ए  
ह उखाणो न्याय हो ॥ कुं० ॥ २ ॥ मुगति तणा  
अजिलाषी तपीया, ज्ञानने ध्यान अन्यासैं ॥ वयरीहुं  
कांइ एहवुं चिंते, नाखे अवले पासैं हो ॥ कुं० ॥ ३ ॥  
आगम आगमधरने हाथें, नावे किएविध आंकूं ॥  
किहां कणो जो हठ करी हटकूं, तो व्याज तणी परें  
वांकूं हो ॥ कुं० ॥ ४ ॥ जो उग कहूं तो उगतो न  
देखुं, शाहुकार पण नांही ॥ सर्व मांदे ने सहुथी अ  
जगुं, ए अचरिज मन मांही हो ॥ कुं० ॥ ५ ॥ जे  
जे कहूं ते कान न धारे, आप मतें रहे कालो ॥ सु  
र नर पंढित जन समजावे, समजे न माहारोसालो  
हो ॥ कुं० ॥ ६ ॥ में जाणुं ए लिंग नपुंसक, सक  
ल मरदने ठेले ॥ बीजी वातें समरथ ठे नर, एहने  
कोइ न जेले हो ॥ कुं० ॥ ७ ॥ मन साध्युं तेणें स  
घलुं साध्युं, एह वात नहि खोटी ॥ एम कहे साध्युं

ते नवि मानुं, ए कहि वात ठे महेटी हो ॥ कुं० ॥ ७ ॥  
मनडुं डुराराथ्य तें वश आणुं, ते आगमथी मति आ  
णुं ॥ आनंदवन प्रभु माहरुं आणो, तो साचुं करी  
जाणुं हो ॥ कुं० ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ श्री अरजिनस्तवनं लिख्यते ॥

॥ राग परज ॥ रूपजनो वंश रयणायरु ॥ ए देशी ॥

॥ धरम परम अरनाथने, केम जाणुं जगवंत रे ॥  
स्वपर समय समजावियें, महिभावंत महंत रे ॥ ध०  
॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ शुद्धातम अनुनव सदा, स्वस  
मय एह विलास रे ॥ परबडी ठांढडी जेह पडे, ते  
परसमय निवास रे ॥ ध० ॥ २ ॥ तारा नद्धत्र ग्रह  
चंदनी, ज्योति दिनेश मजार रे ॥ दर्शन ज्ञान चरण  
थकी, शक्ति निजातम धार रे ॥ ध० ॥ ३ ॥ नारी  
पीलो चीकणो, कनकं अनेक तरंग रे ॥ पर्याय दृष्टि  
न दीजियें, एकज कनक अजंग रे ॥ ध० ॥ ४ ॥ द  
रिसन ज्ञान चरणथकी, अलख सरूप अनेक रे ॥  
निर्विकल्प रस पीजियें, शुद्ध निरंजन एक रे ॥ ध०  
॥ ५ ॥ परमारथ पंथ जे कहे, ते रंजे एक तंत रे ॥  
व्यवहारें लख जे रहे, तेहना जेद अनंत रे ॥  
ध० ॥ ६ ॥ व्यवहारें लखे दोहिला, कांइ न आवे  
हाथ रे ॥ शुद्धनय आपना सेवतां, नवि रहे डुविधा  
साथ रे ॥ ध० ॥ ७ ॥ एकपखी लखि प्रीतिनी, तुम  
सार्थें जगनाथ रे ॥ कृपा करीने राखजो, चरण तलें  
ग्रही हाथ रे ॥ ध० ॥ ८ ॥ चक्री धरम तीरथ तणो,

तीरथ फल तत सार रे ॥ तीरथ सेवे ते लहे, आनंद  
घन निरधार रे ॥ ध० ॥ ए ॥ इति अरनाथस्तवनम् ॥

॥ अथ श्रीमद्विजिन स्तवन प्रारंभः ॥ रागकाफी ॥

॥ सेवक किम अवगणियें हो, मद्विजिन ॥ एह  
अब शोना सारी ॥ अवर जेहने आदर अति दीये,  
तेहने मूल निवारी हो ॥ मद्वि० ॥ १ ॥ ज्ञान स्वरू  
प अनादि तुमारुं, ते लीयुं तुमें ताणी ॥ जुठ अज्ञा  
न दशा रीसावी, जातां काण न आणी हो ॥ म  
द्वि० ॥ २ ॥ निशा सुपन जागर उजागरता, तुरिय  
अवस्था आवी ॥ निशा सुपन दशा रीसाणी, जाणी  
न नाथ मनावी हो ॥ मद्वि० ॥ ३ ॥ समकेत सा  
थें सगाई कीधी, सपरिवारहुं गाढी ॥ मिथ्यामति अ  
पराधण जाणी, घरथी बाहिर काढी हो ॥ मद्वि० ॥  
॥ ४ ॥ हास्य अरति रति शोकं डुगंढा, जय पामर  
क रसाली ॥ नोकपाय श्रेणी गज चडतां, श्वान तणी  
गति जाली हो ॥ मद्वि० ॥ ५ ॥ राग द्वेष अविरति  
नी परिणति, ए चरणमोहना योद्वा ॥ वीतराग परि  
णति परिणमतां, उठी नाठ बोद्वा हो ॥ मद्वि० ॥ ६ ॥  
वेदोदय कामा परिणामा, काम्य करम सद्दु त्यागी ॥  
निःकामी करुणा रस सागर, अनंत चतुष्क पद पा  
गी हो ॥ मद्वि० ॥ ७ ॥ दान विघन वारी सद्दु ज  
नने, अजय दान पद दाता ॥ लान विघन जग वि  
घन निवारक, परम लान रस माता हो ॥ मद्वि०  
॥ ८ ॥ वीर्य विघन पंथित वीर्यें हणी, पूरण पदवी



योगी ॥ जोगोपजोग दोय विघन निवारी, पूरण जोग  
सुजोगी हो ॥ मद्धि० ॥ ए ॥ ए अठार दूषण वर्जि  
त तनु, मुनिजन वृंदें गाया ॥ अविरति रूपक दोषनिरू  
पण, निर्दूषण मन जाया हो ॥ मद्धि० ॥ १ ॥ ॥ इणविध  
परखी मन विशरामी, जिनवर गुण जे गावे ॥ दीनबंधुनी  
महेर नजरथी, आनंदधन पद पावे हो ॥ म० ॥ ११ ॥

॥ अथ श्रीमुनिसुव्रत जिनस्तवनं लिख्यते ॥  
॥ राग काफी ॥ आधा आम पधारो पूज्य ॥ ए देशी ॥  
॥ मुनिसुव्रत जिन राय, एक मुक्त विनति निसुणो  
॥ मु० ॥ आतम तत्त्व क्युं जाण्युं जगत गुरु, एह वि  
चार मुक्त कहियो ॥ आतम तत्त्व जाण्या विण नि  
रमल, चित्त समाधि नवि लहियो ॥ मुनि० ॥ १ ॥  
ए आंकणी ॥ कोइ अबंध आतम तत माने, किरि  
या करतो दीसे ॥ क्रियातणुं फल कहो कुण जोग  
वे, इम पूढ्युं चित रीशें ॥ मुनि० ॥ २ ॥ जडचेतन  
ए आतम एकज, स्थावर जंगम सरिखो ॥ दुःख सु  
ख संकर दूषण आवे, चित विचारी जो परिखो ॥  
मुनि० ॥ ३ ॥ एक कहे नित्यज आतम तत, आ  
तम दरिसण लीनो ॥ कृत विनाश अकृतागम दूष  
ण, नवि देखे मतिहीणो ॥ मु० ॥ ४ ॥ सौगत म  
तिरागी कहे वादी, कृणिक ए आतम जाणो ॥ बंध  
मोख सुख दुःख न घटे, एह विचार मन आणो ॥  
मुनि० ॥ ५ ॥ नूत चतुष्क वर्जित आतम तत, स  
त्ता अलगी न घटे ॥ अंध शकट जो नजर न देखे,

तोछुं कीजें शकटें ॥ मुनि० ॥ ६ ॥ एम अनेक वा  
 दिमत विचम, संकट पडियो न लहे ॥ चित्त समा  
 ध ते माटे पूबुं, तुम विण तत कोइ न कहे ॥ मुनि०  
 ॥ ७ ॥ बलतुं जगगुरु इणि परें नाखे, पदपात सब  
 ठंढी ॥ राग द्वेष मोह पख वर्जित, आतमछुं रढ मं  
 ढी ॥ मुनि० ॥ ८ ॥ आतम ध्यान करे जो कोउ,  
 सो फिर इणमें नावे ॥ वाग जाल बीजुं सद्गु जाणे,  
 एह तत्त्व चित्त चावे ॥ मुनि० ॥ ९ ॥ जिणें विवेक धरी  
 ए पख ग्रहीयें, ते तत ज्ञानी कहियें ॥ श्रीमुनि सु  
 व्रत कृपा करो तो, आनंदधनपद लहियें ॥ मुनि० ॥ १०

॥ अथ श्रीनमिजिन स्तवनं लिख्यते ॥

॥ राग आशावरी ॥ धन धन संप्रति साचो ॥

॥ राजा ॥ ए देखी ॥

॥ षटदरिसण जिन अंग नर्णोजें, न्यास षडंग जो  
 साधे रे ॥ नमि जिनवरना चरण उपासक, षट दरि  
 सण आराधे रे ॥ षट० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ जिन  
 सुर पादप पाय वखाणुं, सांख्य जोग दोय जेदें रे ॥  
 आतम सत्ता विवरण करतां, लहो डुग अंग अखे  
 दें रे ॥ षट० ॥ २ ॥ जेद अजेद सौगत मीमांसक,  
 जिनवर दोय कर जारी रे ॥ लोकालोक अवलंबन  
 नजियें, गुरुगमथी अवधारी रे ॥ षट० ॥ ३ ॥ लो  
 कायतिक कूख जिनवरनी, अंश विचारी जो कीजें रे  
 ॥ तत्त्व विचार सुधारस धारा, गुरुगम विण केम पी  
 जें रे ॥ षट० ॥ ४ ॥ जैन जिनेसर वर उत्तम अंग,

अंतरंग बहिरंगें रे ॥ अक्षरन्यास धरा आधारक, आ  
 राधे धरा संगें रे ॥ षट० ॥ ५ ॥ जिनवरमां सघलां द  
 रिसण ठे, दर्शन जिनवर जजना रे ॥ सागरमां सघली  
 तटिनी सही, तटिनीमां सागर जजना रे ॥ षट० ॥  
 ॥ ६ ॥ जिनस्वरूप थई जिन आराधे, ते सही जिन  
 वर होवे रे ॥ नृंगी ईलिकाने चटकावे, ते नृंगी जग  
 जोवे रे ॥ षट० ॥ ७ ॥ चूर्णी नाथ सूत्र निर्युक्ति,  
 वृत्ति परंपर अनुजव रे ॥ समय पुरुषनां अंग कहां  
 ए, जे ठेदे ते दुर्जव रे ॥ षट० ॥ ८ ॥ मुझ बीज धा  
 रणा अक्षर, न्यास अरथ विनियोगें रे ॥ जे ध्यावे ते  
 नवि वंचीजें, क्रिया अवंचक नोगें रे ॥ षट० ॥ ९ ॥  
 श्रुत अनुसार विचारी बोलुं, सुगुरु तथा विधि न  
 मिले रे ॥ किरिया करी नवि साधी शकीयें, ए विष  
 वाद चित्त सघले रे ॥ षट० ॥ १० ॥ ते माटे उजा  
 कर जोडी, जिनवर आगल कहीयें रे ॥ समय चरण  
 सेवा शुद्ध देजो, जेम आनंदघन लहीयें रे ॥ ष० ॥ ११ ॥

॥ अथ श्रीनेमनाथजिन स्तवनं लिख्यते ॥

॥ राग मारूणी ॥ धणरा ढोला ॥ ए देशी ॥

॥ अष्ट नवंतर वालही रे, तुं मुऊ आतमराम ॥  
 मनरा वाला ॥ मुगति स्त्रीछुं आपणे रे, सगपण कोइ न  
 काम ॥ म० ॥ १ ॥ घर आवो हो वालम घर आ  
 वो, महारी आशाना विशराम ॥ म० ॥ रथ फेरो हो  
 साजन रथ फेरो, साजन महारा मनोरथ साथ ॥  
 ॥ म० ॥ २ ॥ नारी पखो श्यो नेहलो रे, साच कहे

जगनाथ ॥ म० ॥ ईश्वर अरधंगें धरी रे, तुं मुऊ जा  
ले न हाथ ॥ म० ॥ ३ ॥ षणु जननी करुणा करी रे,  
आणी हृदय विचार ॥ म० ॥ माणसनी करुणा न  
ही रे, ए कुण घर आचार ॥ म० ॥ ४ ॥ प्रेम कल  
पतरु ठेदीयो रें, धरियो जोग धतूर ॥ म० ॥ चतुरा  
श्रो कुण कहो रे, गुरु मिलियो जग सूर ॥ म० ॥  
॥ ५ ॥ मारुं तो एमां क्युंदी नही रे, आप विचारे  
राज ॥ म० ॥ राजसनामें बेसतां रे, किसडी बंधसी  
लाज ॥ म० ॥ ६ ॥ प्रेम करे जग जन सहु रे, नि  
वाहे ते उर ॥ म० ॥ प्रीत करीने ठोडी दे रे, तेहसुं  
न चाले जोर ॥ म० ॥ ७ ॥ जो मनमां एहवुं हतुं  
रे, निसपत करत न जाण ॥ म० ॥ नसपत करी  
ने ठांफतां रे, माणस हुवे नुकशान ॥ म० ॥ ८ ॥  
देतां दान संवत्सरी रे, सहु लहे वंढित पोष ॥ म० ॥  
सेवक वंढित नवि लहे रें, ते सेवकनो दोष ॥ म० ॥  
॥ ९ ॥ सखी कहे ए शामलो रे, हुं कहुं लक्षण सेत  
॥ म० ॥ १० ॥ रागीसुं रागी सहु रे, वैरागी  
श्यो राग ॥ म० ॥ राग विना किम दाखवो रे, मुगति  
सुंदरी माग ॥ म० ॥ ११ ॥ एक गुह्य घटतूं नथी रे,  
सघलोई जाणो लोक ॥ म० ॥ अनेकांतिक जोगवो  
रे, ब्रह्मचारी गतरोग ॥ म० ॥ १२ ॥ जिण जो  
णी तुमने जोउं रे, तिण जोणी जोवो राज ॥ म० ॥  
एक वार मुऊने जुउं रे, तो सिजे मुऊ काज ॥ म० ॥

॥ १३ ॥ मोहदशा धरी जावना रे, चित्त लहे तत्त्व  
 विचार ॥ म० ॥ वीतरागता आदरी रे, प्राणनाथ नि  
 रधार ॥ म० ॥ १४ ॥ सेवक पण ते आदरे रे, तो  
 रहे सेवक माम ॥ म० ॥ आशयसार्थे चालीयें रे,  
 एहीज रूढं काम ॥ म० ॥ १५ ॥ विविध योग धरी  
 आदखो रे, नेम नाथ जरतार ॥ म० ॥ धारण पोष  
 ण तारणो रे, नव रस मुगता हार ॥ म० ॥ १६ ॥  
 कारणरूपी प्रभु नज्यो रे, गण्युं न काज अकाज ॥  
 ॥ म० ॥ कृपा करी मुक्त दीजीयें रे, आनंदधन पद  
 राज ॥ म० ॥ १७ ॥ इति द्वाविंशतिजिन स्तवनं ॥

॥ अथ समकेतनुं स्तवन प्रारंभ ॥

॥ समकित द्वार गंजारे पेसतां जी, पाप पमल  
 गयां दूर रे ॥ माता मरु देवीनो लाडिलो जी, दीठां  
 आनंद पूर रे ॥ सम० ॥ १ ॥ आयु वर्जित सात क  
 र्मेनी जी, सागर कोडा कोडी हीन रे ॥ स्थिति प्रथ  
 म करणें करी जी, वीर्य अपूर्व मोघर लीन रे ॥ स  
 म० ॥ २ ॥ जुंगल जांगी आदि कषायनी जी, मिथ्या  
 मोहनी सांकल साथ रे ॥ बार उधाड्यां स्वामी संवेग  
 नां जी, दीठा श्री अनुभव नवियण नाथ रे ॥ स  
 म० ॥ ३ ॥ तोरण बांध्यां जीवदया तणां जी, सा  
 शीयो पूखो श्रद्धा रूप रे ॥ धूप घटा प्रभु गुण अनुमो  
 दना जी, दीप मंगल आठ अनूप रे ॥ सम० ॥ ४ ॥  
 संवर पाणीयें अंग पखालियां जी, केशर चंदन उत्तम  
 ध्यान रे ॥ आतमरुचि मृग मद महमहे जी, पंचा

चार कुसुम प्रधान रे ॥ सम० ॥ ५ ॥ नावें पूजो रे  
पावन आत्मा जी, पूजो परमेसर परम पवित्र रे ॥  
कारण जोगें कारज नीपने जी, ह्रमाविजय जिन  
आगम रीत रे ॥ सम० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री वीरजगदाननुं स्तवन ॥

॥ श्रीसीधारथ नंदन देवा, प्रभु सेव करुं नित्य  
मेवा ॥ देजो मुऊ नव नव सेवा ॥ जगत गुरु वीर  
परम उपगारी ॥ प्रभु करुणा निधि दातारी ॥ जग  
त० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ शोल पहोर प्रभु देशना  
वरसे, सांजली नवि हृदयमां धरशे ॥ तोरा चरण  
कमल नित्य फरसे ॥ ज० ॥ १ ॥ ब्राह्मण देवशर्मा  
जाणे, प्रतिबोधवा मोकलिया ते टाणे ॥ गौतम चाव्या  
गुण खाणे ॥ ज० ॥ २ ॥ प्रतिबोधीने पाठा वलिया  
मारग मांहे श्रवणे सांजलिया ॥ प्रभु मोक्ष मारग संच  
रिया ॥ ज० ॥ ४ ॥ ते सांजली दिलमां वात, गौतम  
ने थाये वज्रघात ॥ विवेकें गुण मणि ख्यात ॥  
॥ ज० ॥ ५ ॥ हवे केहने दुं कहीश वीर, गौतम  
चिंतवे साहस धीर ॥ कर्म शत्रुना त्रोज्या जंजीर ॥  
॥ जग० ॥ ६ ॥ काती कृष्ण दुआ निर्वाण, प्रजा  
ते इंद्रनूति केवल नाण ॥ जयो जयो नणे गुण  
खाण ॥ ज० ॥ ७ ॥ अठार देशना राजा मलिया,  
नाव दीपक मोक्षमां नलिया ॥ इव्य दीपक गुणमणि  
नरिया ॥ ज० ॥ ८ ॥ प्रभु वरिया शिव लटकाली, धरधुं  
ध्यान पद्मासन वाली ॥ तिहां प्रगटी लोक दीवाली

॥ ज० ॥ ए ॥ मुक्त मंदिर सुरतरु फलियो, परमात्म  
गौतम मलियो, गई जावठ शुनदिन वलियो ॥ ज० ॥  
॥ १० ॥ संवत उगणीश पचलोतेरा वर्षे, दीवाली दिन  
मन हर्षे ॥ प्रभु मोक्ष वखा शुन दिवसें ॥ ज० ॥ ११ ॥

॥ अथ कलियुगनी स्वाध्याय ॥

॥ सरसती सामिनी पाय नमीने, उलट मनमांहे  
आयो ॥ तीरथ नहिं कोइ इण संसारें, तेणे एकलियुग  
आयो ॥ देखो वे यारो कूडो कलियुग आयो ॥ ए आं  
कणी ॥ बाबो कहे महारी नानडी बेटी, दिन दिन  
मूढ्य सवायो ॥ वे यारो कूडो कलियुग आयो ॥ १ ॥  
राजा ते परजाने पीडे, कुनर काम जलायो ॥ बोल  
बंध नही मंत्रीने, गोचर खेत्र खेडायो ॥ वे यारो  
कू० ॥ २ ॥ गुरुने गाल दीये निज चेलो, वेद पु  
राण पढायो ॥ सासु चूलेने बहु खाटलडे, फूकें श  
रीर जलायो ॥ वे यारो कू० ॥ ३ ॥ एंशी वर्षनो हींमे  
होंशें, मूर्ख हाथ घलायो ॥ पंच तणी साखें परणी  
ने, अबला अर्थ गमायो ॥ वे यारो कू० ॥ ४ ॥ जोगी  
जंगम ने संन्यासी, जांग नखे मदवायो ॥ चोर चाड  
परधनने स्वाये, साधुजन सीदायो ॥ बेयारो कू० ॥  
॥ ५ ॥ निर्धनने बहु बेटा बेटी, धनवंत एक न  
पायो ॥ नीच तणे घर अति धणी लखमी, उत्तम  
जन सीदायो ॥ वे यारो कू० ॥ ६ ॥ न मले बाप सं  
घातें बेटो, घणे रे मनोर्थे जायो ॥ हाथ उपाडे माय  
नें मारे, परणीशुं उमाह्यो ॥ वे यारो कू० ॥ ७ ॥ घर

डाने घहेलो कहे बेटो, आप तणो मद वाह्यो ॥ बहू  
 सूती ने वर हिंमोले, सासरे सूवाने धरायो ॥ बे यारो  
 कू० ॥ ७ ॥ हल खेडे बांजण गो जुति, निर्य  
 नाक फडायो ॥ मा बापें बेटी वेचीने, बेटाने पर  
 णायो ॥ बे यारो कू० ॥ ८ ॥ राग तणे वश गुरुने  
 गुरुणी, काम करे परायो ॥ कांगानी पेरे कलहो मां  
 मी, कुलगुरु नाम धरायो ॥ बे यारो कू० ॥ १० ॥  
 बैयर बार वरसनीने बेटो, दीतो गोद खेलायो ॥ मा  
 ग्या मेह न वरसे महीयल, लार्जे धरव्यो सवायो ॥ बे  
 यारो कू० ॥ ११ ॥ कूडा कलियुगनी ए माया,  
 देखी गीत गवायो ॥ पजणे प्रीतिविमल परमारथ,  
 जिन वचनें सुख पायो ॥ बे यारो कू० ॥ १२ ॥ इति ॥

॥ अथ जंबूस्वामीनी सहाय प्रारंभः ॥

॥ सरसति सामिणी वीनवुं, सहगुरु लांगुंजी पाय ॥  
 गुण रे गाछुं जंबु स्वामीना, हरख धरी मन मांय ॥  
 ॥ १ ॥ धन धन धन जंबु स्वामीने ॥ ए आंकणी ॥ चा  
 रित्र ठे वत्स दोहिलुं, व्रतठे खांमानी धारा ॥ पाये अणु  
 आणेजी चालवुं, करवोजी उग्रविहार ॥ धन० ॥ १ ॥  
 मध्यान्ह पढी करवी गोचरी, दिनकर तपे रे निह्नाड ॥  
 वेनु कवल समा कोलिया, ते किम वाढ्या रे जाय ॥  
 ॥ धन० ॥ २ ॥ कोडी नवाणुं सोवन तणी, तमा  
 रे ठे आठे जी नार ॥ संसार तणां सुख सुण्यां नही,  
 जोगवो जोग रसाल ॥ धन० ॥ ३ ॥ रामें सीताने  
 विजोगडें, बहोत किया रे संग्राम ॥ ठती रे नारी



तुमें कांइ तजो, कांइ तजो धन ने धाम ॥ धन० ॥ ५ ॥  
 परणीने शुं जी परिहरो, हाथ मळ्यानो संबंध ॥ प  
 ढीने करशो स्वामी उरतो, जिम कीधो मेघमुणिंद ॥  
 ॥ धन० ॥ ६ ॥ जंबू कहे रे नारी सुणो, अम मन  
 संयम जाव ॥ साचो सनेह करी लेखवो, तो संयम  
 ल्यो अम साथ ॥ ध० ॥ ७ ॥ तेणे समै प्रजवोजी  
 आवियो, पांचज्ञे चोर संघात ॥ तेने पण जंबुस्वामियें  
 बूजव्या, बुजव्या माय ने बाप ॥ धन० ॥ ८ ॥ सा  
 सु ससराने बूजव्या, बुजवी आठे नार॥पांचज्ञे सत्तावी  
 शशुं, लीधोजी संयम नार॥धन०॥९॥सुधर्मास्वामी पा  
 सें आविया, विचरे ठे मनने उद्वास ॥ कर्मखपावी के  
 वल पामीया, पोहोताजी मुक्ति मोऊार ॥ ध० ॥ १ ॥

॥ अथ एकादशीनी सखाय प्रारंभः ॥

॥ आज महारे एंकादशी रे, नणदल मौन करी  
 मुख रहियें ॥ पूठयानो पडुत्तर पाठो, केहने कांइ न  
 कहियें ॥ आ० ॥ १ ॥ माहारो नणदोइ तुजने बाढ्हो,  
 मुजने ताहारो वीरो ॥ धूआडाना बाचका जरतां,  
 हाथ न आवे हीरो ॥ आज० ॥ २ ॥ घरनो धंधो  
 घणो कखो पण, एक न आव्यो आडो ॥ परजव  
 जातां पालव जाले, ते मुजने देखाडो ॥ आ० ॥ ३ ॥  
 मागशिर शुदि अगीयारश महोटी, नेवुं जिनना निर  
 खो ॥ दोहोढशो कळ्याणिक महोटां, पोथी जोइने  
 हरखो ॥ आ० ॥ ४ ॥ सुव्रत शेठ थयो शुद्ध श्राव  
 क, मौन धरी मुख रहीयो ॥ पावक पूर सघलो पर

जाव्यो, एहनो कांई न दहीयो ॥ आ० ॥ ५ ॥ आठ  
 पहोर पोसा ते करियें, ध्यान प्रभुनुं धरियें ॥ मन व  
 च काया जो वश करियें, तो नव सायर तरियें ॥  
 आ० ॥ ६ ॥ ईर्या समिति जाया न बोले, आरुं  
 अवलुं पेखे ॥ पडिकमणाचुं प्रेम न राखे, कहो के  
 म लागे लेखे ॥ आ० ॥ ७ ॥ कर उपर तो माला  
 फिरती, जीव फरे मनमांही ॥ चितहुं तो चिहुंदिशि  
 मोले, इणे नजने सुख नांही ॥ आ० ॥ ८ ॥ पौष  
 थ शालें जेगां यश्ने, चार कथा बली सांधे ॥ कांइक  
 पाप मिटावण आवे, बारगणुं बलि बांधे ॥ आ०  
 ॥ ९ ॥ एक उठंती आलस मोडे, बीर्जा उंचे वेठी  
 ॥ नदियोमांथी कांइक निसरती, जइ दरियामां पेठी  
 ॥ आ० ॥ १० ॥ आई बाई नणंद जोजाई, न्हाणी  
 मोहोटी बहूने ॥ सासु ससरो मा ने मासी, शीखा  
 मण ठे सहुने ॥ आ० ॥ ११ ॥ उदय रतन वाचक  
 उपदेशे, जे नर नारी रहेजे ॥ पोसामांहे प्रेम धरी  
 ने, अविचल लीला लेजे ॥ आ० ॥ १२ ॥

॥ अथ वैराग्यसङ्काय ॥ मनजमरानी देशीमां ॥

॥ उंचा मंदिर मालीयां, सोड्य वालीने सूतो ॥  
 काहाडो काहाडो एने सहु करे, जाणे जनम्योज नो  
 तो ॥ १ ॥ एक रे दिवस एवो आवशे, मने सबलो  
 जी साले ॥ मंत्री मल्या सर्वे कारिमा, तेनुं कांइन चाले ॥  
 एक रे दिवस ॥ ए आंकणी ॥ साव सोनांनां रे सांक  
 लां, पहेरण नव नवा वाधा ॥ थोलुं रे वस्तर एना

कर्मनुं, तेतो शोधवा लागा ॥ एक रे० ॥ १ ॥ चरु  
 कढाईया अति घणा, बीजानुं नही लेखुं ॥ खोखरी  
 हांमी एना कर्मनी, तेतो आगल देखुं ॥ एक रे० ॥  
 ॥ ३ ॥ केनां ठोरु ने केनां वाठरु, केनां माय ने बाप  
 ॥ अंतकालें जावुं जीवने एकलुं, सार्थें पुण्यने पाप ॥  
 एकरे० ॥ ४ ॥ सगीरे नारी एनी कामिनी, उनी ट  
 ग मग जूवे ॥ तेनुं पण कांइ चाले नही, बेठी धूसके  
 रूवे ॥ एक रे० ॥ ५ ॥ वाढ्हां ते वाढ्हां गुं करो, वाढ्हां वो  
 लावी बलरो ॥ वाढ्हां ते वननां लाकडां, तेतो सार्थें जी  
 बलरो ॥ एक रे० ॥ ६ ॥ नही तापी नही तुंबडी,  
 नथी तरवानो आरो ॥ उदयरतन प्रभु इम नणे, म  
 ने पार उतारो ॥ एक रे० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ अमल वर्द्धन स्वाध्याय ॥ कंत तमाकू  
 परिहरो ॥ ए देशी ॥

॥ श्रीजिनवाणी मनधरी, सहगुरु दीये उपदेश  
 ॥ मेरे लाल ॥ बावीश अजहमांहे कखुं, अमल अज  
 ह विज्ञेय ॥ मे० ॥ अमल म खाजो साजनां ॥ १ ॥  
 अमल विगोवे तन्न ॥ मे० ॥ उंघ बगासां घेरणी, आवे  
 आखो दिन्न ॥ मे० ॥ अ० ॥ १ ॥ अमली अमलने  
 सारिखो, आवे आनंद थाय ॥ मे० ॥ उतरतां आर  
 ति घणी, धोरज जीव न धराय ॥ मे० ॥ अ० ॥  
 ॥ ३ ॥ आलस ने उजागरो, बेठो ढवकां खाय ॥ मे० ॥  
 अकल न कांइ उपजे, धर्म कथा न सुणाय ॥ मे० ॥  
 ॥ अ० ॥ ४ ॥ काला अहिथी ऊपनुं, नामें जे अ

हिफीण ॥ मे० ॥ संग करे कोण एहनो, पंमित लो  
 क प्रवीण ॥ मे० ॥ अ० ॥ ५ ॥ पहेलुं मुख कडवुं  
 हुए, वली घांटो घेराय ॥ मे० ॥ उदर व्यथा नि  
 त्य आफरो, इण्थी अवगण थाय ॥ मे० ॥ अ० ॥  
 ॥ ६ ॥ नाक बंधायें बोलतां, आधुं वचन बोलाय  
 ॥ मे० ॥ अमीय सुकाये जीजनं, एहनी स्वाय बला  
 य ॥ मे० ॥ अ० ॥ ७ ॥ दाढीने मूठांदिगि. उगे  
 नही अंकूर ॥ मे० ॥ काया काली मश हुए, गाव  
 डी गाले नूर ॥ मे० ॥ अ० ॥ ८ ॥ पलक अवेरुं  
 जो लोए, तो आतम अकुलाय ॥ मे० ॥ नाक चूए  
 नयणां ऊरै, काम करी न शकाय ॥ मे० ॥ अ० ॥  
 ॥ ९ ॥ अधविच मारगमां पडे, जीवन मृत्यु समा  
 न ॥ मे० ॥ हाथ पगोनी नस गले, अमली आवी  
 शान ॥ मे० ॥ अ० ॥ १० ॥ आगराई आठो कह्यो,  
 मालवी मांहे जेल ॥ मे० ॥ आप इस्थुं सखरुं नही,  
 मिशरीशुं मन मेल ॥ मे० ॥ अ० ॥ ११ ॥ नवटांक जे नर  
 जीरवै, तसु अहि विष न जणाय ॥ मे० ॥ अमल  
 घणुं खाधाथकी, कंदर्प बल मिट जाय ॥ मे० ॥ अ० ॥  
 ॥ १२ ॥ अमलीने उन्हुं रुचे, टाहुं नावे दाय ॥ मे० ॥  
 खोनी रोटी खांम घी, उपर दूध सुहाय ॥ मे० ॥ अ० ॥  
 ॥ १३ ॥ कुलवंती जे कामिनी, जाणे जुगति सुजाण  
 ॥ मे० ॥ वस्तु वेची क्षिण करी, अमलीने दीए आण  
 ॥ मे० ॥ अ० ॥ १४ ॥ प्रीतम आशा पूरती, न करे रीश ल  
 गार ॥ मे० ॥ कथन न लोपे कंतनुं, ते विरली संसार ॥ मे०

॥ अ० ॥ १५ ॥ दुर्नागणी नारी जिका, बोले कर्कश वाणी  
 ॥ मे० ॥ रे रे अधम अफीणिया, आलसवंत अजा  
 ण ॥ मे० ॥ अ० ॥ १६ ॥ परणी जाई पारकी, शुं  
 कीधुं तें धीठ ॥ मे० ॥ पोतानुं पण पेट ए, नितुर  
 जराय न नीठ ॥ मे० ॥ अ० ॥ १७ ॥ कान कोट  
 नूषण सहु, वेची खाधुं तेह ॥ मे० ॥ निर्लेज तुऊ  
 घरवासमां, कहे सुख पाम्यु जेह ॥ मे० ॥ अ० ॥  
 ॥ १८ ॥ अमल समो असुगो नहीं, मानो ए मुऊ  
 शीख ॥ मे० ॥ बाले सुंदर देहडी, अंतें मगावे नीख ॥  
 ॥ मे० ॥ अ० ॥ १९ ॥ दालिडीने दोहिलुं, सूर उग्यानुं  
 शाल ॥ मे० ॥ श्रीमंतने पण नहीं नहुं, जोतां ए  
 जंजाल ॥ मे० ॥ अ० ॥ २० ॥ सासु बहु वढतां ठतां,  
 रीशें अमल नखंत ॥ मे० ॥ बालक खाये अजाणतां,  
 जो घर अमल हवंत ॥ मे० ॥ अ० ॥ २१ ॥ प्राणी  
 वध जिणहुं हुवे, ते तो तजीयें दूर ॥ मे० ॥ कर्मा  
 दान दशमुं कहुं, विष व्यापार पमूर ॥ मे० ॥ अ० ॥  
 ॥ २२ ॥ चतुर विचार ए चित्त धरी, कीजें अमल  
 परिहार ॥ मे० ॥ खिमाविजय पंमित तणो, कहे  
 माणिक मनोहार ॥ मे० ॥ अ० ॥ २३ ॥ इति ॥

अथ

॥ श्रीजिनहर्षजीकृत पांचमा आरानी सवाय ॥

॥ वीर कहे गौतम लुणो, पांचमा आराना जाव  
 रे ॥ दुखीया प्राणी अति घणा, सांजल गौतम स्व  
 जाव रे ॥ वीर० ॥ १ ॥ सहेर होशे रे गामडां, गाम

होशे समशान रे ॥ विण गोवाल्ले रे धण चरे, ज्ञानी  
 नहिनिरवाण रे ॥ वीर० ॥ १ ॥ मुज्जकेडे कूमति घणा,  
 होशे ते निरधार रे ॥ जिनमतिनी रुची नवी गमे,  
 थापशे निजमति सार रे ॥ वीर० ॥ २ ॥ कुमति  
 जाजा कदाग्रही, थापशे आपणा बोल रे ॥ शास्त्र  
 मारग सवि मूकशे, करशे जिन मत मोल रे ॥ वी  
 र० ॥ ४ ॥ पाखंढी घणा जागशे, जांगशे धरमना  
 पंथ रे ॥ आगम मत मरडी करी, करशे नवा वली  
 ग्रंथ रे ॥ वीर० ॥ ५ ॥ चारणीनी परे चालशे, धर्म  
 न जाणे लेश रे ॥ आगम शाखाने टालशे, पालशे  
 निज उपदेश रे ॥ वीर० ॥ ६ ॥ चोर चरड बहु ला  
 गशे, बोली न पाले बोल रे ॥ साधुजन सीदायशे,  
 डुळ्ळन बहुला मोल रे ॥ वीर० ॥ ७ ॥ राजा प्रजाने  
 पीडशे, हिंसशे निरधन लोक रे ॥ माग्या न वरसशे  
 मेहुला, मिथ्या होशे बहु थोक रे ॥ वीर० ॥ ८ ॥ सं  
 वंत उगणीश चौदोत्तरे, होशे कलंकी राय रे ॥ मात  
 ब्राह्मणी जाणीये, बाप चंमाल कहेवाय रे ॥ वीर० ॥ ९ ॥  
 ठयासी वरषतुं आउखुं, पामलीपुरमां होशे रे ॥  
 तसु सुत दत्त नामें जलो, श्रावककुल शुन पोपे रे ॥  
 ॥ वीर० ॥ १० ॥ कोतुकी दाम चलावशे, चर्म तणा  
 ते जोय रे ॥ चोथ लेशे जिह्वा तणी, महा अकरा  
 कर होय रे ॥ वीर० ॥ ११ ॥ इंड अवधियें जोयतां,  
 देखशे एह स्वरूप रे ॥ द्विज रूपें आवी करी, हणशे  
 कलंकी नूप रे ॥ वीर० ॥ १२ ॥ दत्तने राज्य थापी करी,

इंइ सुर लोकें जाय रे ॥ दत्त धरम पाळे सदा, नेटशे  
 शेत्रुंज गिरिराय रे ॥ वीर० ॥ ॥ १३ ॥ पृथ्वी जिन  
 मंमिंत करी, पामशे सुख अपार रे ॥ देव लोकें सुख  
 नोगवे, नामें जयजयकार रे ॥ वीर० ॥ १४ ॥ पांच  
 मा आराने ठेडले, चतुर्विध श्रीसंघ होशे रे ॥ ठणे आ  
 रो बेसतां, जिनधर्म पहिलो जाशे रे ॥ वीर० ॥ १५ ॥  
 बीजे अग्नि जागशे, त्रीजे राय न कोय रे ॥ चोथे प्रहरें  
 लोपना, ठेठे आरे ते होय रे ॥ वीर० ॥ १६ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥ ठेठे आरे मानवी, बिलवासी सवि  
 होय ॥ बीश वरसनं आउखुं, पटवर्षे गर्जज होय ॥  
 ॥ १७ ॥ सहस चोराशी वर्षपणे, नोगवशे नवि  
 कर्म ॥ तीर्थकर होशे नलो, श्रेणिक जीव सुधर्म ॥  
 ॥ १८ ॥ तसु गणधर अति सुंदरु, कुमारपाल नूपा  
 ल ॥ आगम वाणी जोइने, रचीयां रयण रसाल ॥  
 ॥ १९ ॥ पांचम आराना नाव ए, आगमें नांख्या  
 वीर ॥ ग्रंथ बोल विचार कहा, सांजलजो नवि  
 धीर ॥ २० ॥ नणतां समकित संपजे, सुणतां मं  
 गल माल ॥ जिनहर्षे कही जोड ए, नाख्यां वयण  
 रसाल ॥ २१ ॥ इति पांचमा आरानी सखाय ॥

॥ अथ मरुदेवाजीनी सखाय ॥ राग धन्याश्री ॥

॥ तुऊ सार्थें नहीं बोलुं रे रुखनजी, तें मुऊने  
 बीसारी जी ॥ अनंत ज्ञाननी तुं रुद्धि पाम्यो, तो  
 जननी न संजारी जी ॥ तु० ॥ १ ॥ मुऊने मोह ह  
 तो तुऊ उपर, रुषन रुषन करी जपती जी ॥ अन्न

उदक मुऊने नवि रुचतुं, तुऊ मुख जोवाने तृपती जी  
 ॥ तु० ॥ २ ॥ तुं वेगो शिर ठत्र धरावे, सेवे सुर नर  
 नारी जी ॥ तो जननीने केम संचारे, जाणी जाणी  
 प्रीति तहारी जी ॥ तु० ॥ ३ ॥ तुं कहेनो ने हुं वली  
 कहेनी, नथी इहां कोइ कहेनुं जी ॥ ममता मोह धरे  
 जे मनमां, मूर्ख पणुं सहि तेहनुं जी ॥ तु० ॥ ४ ॥  
 अनित जावनाये चढ्या मरु देव्या, वेगं गयवर  
 खंधो जी ॥ अंतगड केवजी थइ गया मुक्ते, रुपनने  
 मन आणंदो जी ॥ तु० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ शीखामणनी सव्वाय ॥

॥ श्रीगुरु चरण पसाउले, कहिगुं शीखामण सार ॥  
 मन समजावो रे आपणुं, जिम पामो नव पार ॥ १ ॥  
 कहे नाइ रुडुं तें गुं कहुं, आतमने हितकार ॥ इह नव  
 परनव सुख घणां, लहियें जय जय कार ॥ कहे० ॥ १ ॥  
 लाख चोराशी योनि तुं नमि, पाम्यो नर अवतार ॥  
 देव गुरु धर्म न उलख्या, न जप्यो मन नवकार ॥  
 कहे० ॥ २ ॥ नव मसवाडा उदर धखो, पाली पोढो  
 रे कीध ॥ माय ताय सेवा कांधी नहीं, न्याये मन नवि  
 दीध ॥ कहे० ॥ ४ ॥ चाडी कीधी रे चोतरें, दंभाव्यां  
 नलां लोक ॥ साधु सद्गुने संतापिया, आल चढाव्यां  
 तें फोक ॥ कहे० ॥ ५ ॥ लोचें लाग्यो रे प्राणीयो,  
 न गणो रात ने दीस ॥ हाहो करतां रे एकलो, जई  
 हाथ घशीश ॥ कहे० ॥ ६ ॥ कपट बल जेद तें कखां,  
 नांख्या परना रे मर्म ॥ साते व्यसनने सेवियां, नवि



कीधो जिनधर्म ॥ कहे० ॥ ७ ॥ कृमा न कीधी तें खांतसुं,  
 दया न कीधी रेख ॥ परवेदन तें जाणी नहीं, तो  
 सुं लीधो तें जेख ॥ कहे० ॥ ८ ॥ संध्यारंग सम आ  
 उखुं, जल पंपोटो रे जेम ॥ मान अणी उपर बिंडुत,  
 अथिर संसार ठे एम ॥ कहे० ॥ ९ ॥ अजह्मअनं  
 तकाय वावखां, पीधां अणगल नीर ॥ रात्रि नोजन  
 तें कखां, कम पामीश नवतीर ॥ कहे० ॥ १० ॥ दान  
 शीयल तप जावना, धर्मना चार प्रकार ॥ ते तें जावें  
 न आदखा, रजलीश अनंतो संसार ॥ कहे० ॥ ११ ॥  
 पांचे इंडी रे पापिणी, दुर्गति घाले ठे जेह ॥ तेतो मेली  
 रे मोकली, किम पामिश शिव गेह ॥ कहे० ॥ १२ ॥  
 क्रोधें वींढ्यो रे प्राणीयो, मान न मूके रे केड ॥  
 माया सापणीने संग्रही, लोचने लीधो तें तेड ॥  
 कहे० ॥ १३ ॥ पररमणी रस मोहियो, परनिंदानो  
 रे ढाल ॥ परड्य तें नवि परिहसुं, परने दीधी रे  
 गाल ॥ कहे० ॥ १४ ॥ धर्मनी वेला तुं आलसु,  
 पाप वेला उजमाल ॥ संच्युं धन कोइ स्वायशे,  
 जिम मध माखी महुआल ॥ कहे० ॥ १५ ॥ मेली  
 मेली मूकी गया, जे उपार्जी रे आय ॥ संचय कीजें  
 रे पुण्यनो, जे आवे तुज साथ ॥ कहे० ॥ १६ ॥  
 शुद्ध देव गुरु उलखी, कीजें समकित शुद्ध ॥ मिथ्या  
 मति दूरें करी, राखी निरमल बुद्ध ॥ पाठांतरें ॥ गुरु  
 शिखामण ए सही, ए जाणो हित बुद्धि ॥ कहे० ॥ १७ ॥  
 गोडीदास संघवी तिणें, आदरें कीध सधाय ॥ शांति

विजय उवदायनो, रूपविजय गुण गाय ॥ क० ॥ १७ ॥

॥ अथ नेमिनाथजिन स्तवनं ॥

॥ सुनो मेरे नेमजी प्यारे, इगनसैं मत रहो  
न्यारे ॥ सुनो० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ पचरंगी पाग  
सिर सोहीयें, गले फूल माल मन मोहियें ॥ सुनो०  
॥ २ ॥ दया करी दरिमन मुक्त दीजें, मया करी अ  
पनो कर लीजें ॥ सुनो० ॥ ३ ॥ जिनदाम नंदा हे  
तेरा, लगा जिनराजनें नेरा ॥ सु० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ स्तवन ॥

॥ लाल तेरे नैनोकी गत न्यारी, एतो उपशम र  
सकी क्यारी ॥ लाल तेरे० ॥ ए आंकणी ॥ काम क्रो  
धादि दोष रहितसैं, नयन जये अविकारी ॥ निजा  
सुपन दिशा नही यामें, दर्शनावरण निवारी ॥ लाल०  
॥ १ ॥ और नैनुमें काम क्रोध है, बहोत जरी हे खुमा  
री ॥ परधनादि हरनकी इच्छा, एही है दुशियारी ॥ लाल०  
॥ २ ॥ एता लक्षण है नैनुमें, क्युं पामे नव पारी ॥ और  
विचार करो दिल अपने, ए तो है करमुसैं जारी ॥ लाल०  
॥ ३ ॥ धर्मविना कोइ सरणां नही है, ऐसो निश्चय दिल  
धारी ॥ विनय कहे प्रभु नक्ति कर ले, एहि हे तार  
णहारी ॥ लाल० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ वीरजिन पूजानुं स्तवन प्रारंभ ॥

॥ गोकुल मथुरां रे वाहला ॥ ए देशो ॥

॥ त्रिशला नंदन रे देहें, रचीयें पूजा अधिक स  
नेहें ॥ नवनव जातें रे करीयें, जिम नव सायर हे

लें तरीयें ॥ चेतन प्यारा रे महारा, जिन पूजा करि  
 लहो नवपारा ॥ चेतन० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ न  
 मण करीयें रे मन रंगें, चर्चो केशर प्रभु नव अंगें ॥  
 फूलनी फुटरी रे माला, कंठ ठवो पंच रंग रसाला ॥  
 चेतन० ॥ २ ॥ धूप दीप रे मनोहार, अर्घ्य नैवेद्य फल  
 सुरसाला ॥ श्रीजिनवरजी जग शणगार, गावो गीत ज्ञा  
 न मनोहार ॥ चेतन० ॥ ३ ॥ दरिसण चरणने रे नाण,  
 तप ए चउहा पूजा जाण ॥ आराधक तेहने रे कही  
 यें, पूजा द्वादश चेदें लहीयें ॥ चेतन० ॥ ४ ॥ पादो प  
 गमन पद धारी, वरिया जिन उत्तम शिवनार ॥ तस पद  
 पद्मने रे वंदो, रूपविजय पद लही आनंदो ॥ चे० ॥ ५ ॥

॥ अथ नेमराजुल स्तवनं ॥

॥ मत जाउ रे पिया तुमें पाहाडमां ॥ पाहाड  
 मां पाहाडमां पाहाडमां ॥ मत० ॥ तुम तो कहो ह  
 म नारी त्यागी, किम जाउ गिरनारिमां ॥ म० ॥ १ ॥  
 ठक्काय के रहक हो तुम, तो केम जाउ जाडिमां ॥  
 म० ॥ २ ॥ कठिन गिरिवरकी वांकी टूँको, वसवुं ज  
 ६ ऊजाडिमां ॥ म० ॥ ३ ॥ राजिमतीकी वीनति मा  
 नो, रहेवुं संघनी हारमां ॥ म० ॥ ४ ॥ रूपचंद कहे  
 नाथ निरंजन, नेम मग्न जयो संजम नारमां ॥ म० ॥ ५ ॥

॥ अथ नेमजिन पदं ॥ राग काफी ॥

॥ महारा सामलीयानी बात रे, हुं केहने पूबुं ॥  
 महारा० ॥ जेने पूबुं ते दूर बतावे, पिया बिन रह्यो  
 न जाय रे ॥ हुं० ॥ महा० ॥ १ ॥ तोरण आए चले रथ

फेरी, पशुअन सुणी पोकार रे ॥ हुं० ॥ महा० ॥ आंवा  
 मोखा केसुडां फूल्यां, आयो मास वसंत रे ॥ हुं० ॥  
 महा० ॥ १ ॥ दाडुर मोर बपैया रे बोले, कोयल शब्द  
 सुणावे रे ॥ हुं० ॥ महा० ॥ ऊरमर ऊरमर मेहुला रे  
 वरसे, बुंद पडे रंग रोल रे ॥ हुं० ॥ महा० ॥ ३ ॥ लख्यो  
 संदेशो पिया मिलवेको, कोइ बटाउ न जाय रे ॥ हुं० ॥  
 महा० ॥ रुद्रि कुशल बुध शिष्य इम जंपे, वालम  
 ध्यान धराय रे ॥ हुं० ॥ महा० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ जीडजंजन जिन स्तवनं ॥

॥ जिनराज जोवानी तक जाय ठे रे, खरां दुःख  
 डां खोवानी तक जाय ठे रे ॥ हलुकर्मि होवानी त  
 क जाय ठे रे, जगवंत जज्यानी तक जाय ठे रे ॥ ब  
 हु लोचें ते लाज लुंढाय ठे रे ॥ जिन० ॥ १ ॥ दुनि  
 या रंग दोरंगी दीसे, पलक पलक पलटाय ठे रे ॥  
 ॥ जि० ॥ खोटे जरीसे खोटी थावुं, गांठनो ग्रंथ लुं  
 टाय ठे रे ॥ जि० ॥ २ ॥ सज्जन सगां सहु स्वार  
 य सूधी, गरजें घहेलां थाय ठे रे ॥ जिन० ॥ पुण्य  
 विना एक परजव जातां, संसारी सीदाय ठे रे ॥  
 ॥ जि० ॥ ३ ॥ रामा रामा धन धन करतो, धव  
 धव जिहां तिहां धाय ठे रे ॥ जि० ॥ कनक अने  
 बीजी कामिनी लुब्धा, केई प्राणी कूटाय ठे रे ॥ जि० ॥  
 ॥ ४ ॥ पंच विषयना प्रवाहमांहे, तृष्णा पूरें तणा  
 य ठे रे ॥ जि० ॥ नाव सरिखा नाथने मूकी, पापने  
 नारें नराय ठे रे ॥ जि० ॥ ५ ॥ मोहराजाना राजमां

वसतां, परमाधामी पासैं जाय ठे रे ॥ जि० ॥ जिन  
 मारग विण जमनो जोरो, कहोने केणें जीताय ठे रे ॥  
 ॥ जि० ॥ ६ ॥ श्रीसद्गुरुने उपदेशें, सूधो ऊवेरी  
 जणाय ठे रे ॥ जि० ॥ पाखंममांहे पड्या जे प्राणी,  
 काचमलामां कहेवाय ठे रे ॥ जि० ॥ ७ ॥ चीडनं  
 जन प्रभु पास जिनेसर, पूजतां पाप पलाय ठे रे ॥  
 ॥ जि० ॥ उदयरत्ननो अंतरजामी, बूडतां बांहे  
 साहे ठे रे ॥ जि० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ त्रेशठ शिलाका पुरुषनुं प्रनार्तीयुं ॥

॥ चोपाईनी देशीमां ॥

॥ प्रह समे प्रणमुं सरसति माय, वली सहगुरुने  
 लायुं पाय ॥ त्रेशठ शिलाकानां कहुं नाम, नाम ज  
 पंतां सिजे काम ॥ १ ॥ प्रथम चोवीश तीर्थकर जा  
 ए, तेह तणे हुं करीश प्रणाम ॥ रूपन अजितने  
 संजव स्वाम, चोथा अजिनंदन अनिराम ॥ २ ॥ सु  
 मति पदमप्रन पूरे आस, सुपार्श्व चंडप्रन दो सु  
 ख वास ॥ सुविधि शितलने श्रेयांस नाथ, ए ठे सा  
 चा शिवपुर साथ ॥ ३ ॥ वासुपूज्य जिन विमल अ  
 नंत, धर्म शांति कुंथु अरिहंत ॥ अर महि मुनि सु  
 व्रत स्वाम, एहथी लहियें मुक्ति सुगाम ॥ ४ ॥ नमी  
 नाथ नेमीसर देव, जस सुर नर नित सारे सेव ॥  
 पार्श्वनाथ महावीर प्रसिद्ध, तूठा आपे अविचल रि  
 ष्ट ॥ ५ ॥ हवे नाम चक्रवर्ती तणां, बार चक्री जे  
 शास्त्रें जण्या ॥ पहेलो चक्री नरत नरेश, सुखें सा

ध्या जिणें पट खंम देश ॥ ६ ॥ बीजो सगर नामें  
 नूपाल, त्रीजो मधव राय सुविशाल ॥ चोथो कहीयें  
 सनतकुमार, देव पदवी पाम्या ठे सार ॥ ७ ॥ शां  
 ति कुंथु अर त्रामे राय, तीर्थकर पण पद कहेवा  
 य ॥ सुनूम आठमो चक्री थयो, अति लोचें करी न  
 रकें गयो ॥ ८ ॥ महापद्म राय बुद्धि निधान, हरि  
 पेण दशमो राजान ॥ अग्रथारमो जय नाम नरेश,  
 बारमो ब्रह्मदत्त चक्रेश ॥ ९ ॥ ए वारे चक्रीसर क  
 ह्या, सूत्र सिद्धांतथकी में लह्या ॥ हवे वासुदेव क  
 हुं नवनाम, त्रण खंम जेणें जीत्या ठाम ॥ १० ॥  
 वीर जीव प्रथम त्रिष्टु, बीजो नृप जाणो द्विष्टु ॥  
 स्वयंनू पुरुषोत्तम महाराय, पुरुषसिंह पुरुष पुंमरि  
 क राय ॥ ११ ॥ दत्त नारायण कृष्ण नरेश, ए नव  
 हवे बलदेव विशेष ॥ अचल विजय नड सुप्रन नूप,  
 सुदर्शन आनंद नंदन रूप ॥ १२ ॥ पद्म राम ए  
 नव बलदेव, प्रतिशत्रु नव प्रतिवासुदेव ॥ अश्वग्रीव  
 तारक राजेंड, मेरक मधु निशुंन बलेंड ॥ १३ ॥  
 प्रव्हाद ने रावण जरासंध, जीत्यां चक्र बलें तस सं  
 ध ॥ त्रेशठ संख्या पदवी कही, माता एकशठ ग्रंथें  
 लही ॥ १४ ॥ पिता बावनने शाठ शरीर, उगणशाठ  
 जीव महाधीर ॥ पंच वरण तीर्थकर जाण, चक्री  
 सोवन वान वखाण ॥ १५ ॥ वासुदेव नव शामल  
 वान, उज्ज्वल तनु बलदेव प्रधान ॥ तीर्थकर मुक्ति  
 पद वखा, आठ चक्री साथें संचखा ॥ १६ ॥ बल

देव आठ बली तेनी साथ, शिवपद लीधुं हाथो हा  
 थ ॥ मघवा सनतकुमार सुर लोक, त्रीजे सुख विल  
 से गतशोक ॥ १७ ॥ नवमो बलदेव ब्रह्म निवास,  
 वासुदेव सद्गु अधोगति वास ॥ अष्टमो बारमो चक्री  
 साथ, प्रतिवासुदेव समा नरनाथ ॥ १८ ॥ सुरवर  
 सुख शाता जोगवी, नारकी दुःख व्यथा अनुजवी ॥  
 अनुक्रमें कर्म सैन्य जय करी, नर वर चतुरंगी सुख  
 वरी ॥ १९ ॥ सद्गुरु जोगें द्वायिक नाव, दर्शन  
 ज्ञान जवोदधि नाव ॥ आरोही शिव मंदिर वसे, अ  
 नंत चतुष्टय तव उल्लसे ॥ २० ॥ लेशो अक्षय पद नि  
 र्वाण, सिद्ध सवे मुज द्यो कल्याण ॥ उत्तम नाम  
 जपो नर नार, स्वरूपचंद्र लहे जय जयकार ॥ २१ ॥

॥ अथ अजितजिन स्तवन ॥ निड्डीनी देशी ॥

॥ उलंग अजित जिणंदनी, नवि कीधी हो जेणें  
 एक वार के ॥ दश उपनय करी दोहिलो, पाम्यो  
 पण हो एलें अवतार के ॥ उलंग ० ॥ १ ॥ असासय  
 सासय इस्यो, कोइ कुमति हो देखाडे संद के ॥ पुत्र  
 पिता गुरु शिष्यनो, केम तेहने हो घटरो संबंध के ॥  
 उलंग ० ॥ २ ॥ अक्षरथी जेम ज्ञाननो, गुण प्रगटे  
 हो टले सयल विरुद्ध के ॥ तिम वाहाला जिनजी  
 तणा, दरिसणथी हो होय दंसण शुद्ध के ॥ उलंग ०  
 ॥ ३ ॥ परम साधन जिन सेवना, कोइ तेहमां हो  
 कहे हिंसा दोष के ॥ गमन अशन गुरु वंदना, जल  
 क्रमणादि हो किम क्रियापोष के ॥ उलंग ० ॥ ४ ॥

सुर करणी संजारीयें, जो वारीयें हो नर करणी की  
 ध के ॥ घट पट आगम लीपि कला, इत्यादिक हो  
 सवि थाये निषेध के ॥ उलंग० ॥ ५ ॥ ठउमडादि न्हव  
 णादिकें, अवडा हो तिहां होय सुप्रसाद के ॥ जिहां  
 अनुजव संजावना, ते पूजा हो किम करवो प्रमाद  
 के ॥ उलंग० ॥ ६ ॥ वृक्षानुगत नवि चर्चियें, लो  
 चीने हो लोनी ठे सिद्ध के ॥ मोहन कहे कवि रूपनो,  
 गज लंठन हो नामें नवनिध के ॥ उलंग० ॥ ७ ॥

॥ अथ रूपनजिन स्तवन ॥ निड्डीनी देशीमां ॥

॥ वृषज लंठन दिन एटला, अति पावन हो कीधुं  
 पाताल के ॥ नाग्य योगें हवे नक्तिने, दीधुं दरिभण  
 हो एह दीन दयाल के ॥ १ ॥ सौजगी साहेब सेवी  
 यें ॥ ए आंकणी ॥ नक्त वत्तल महिमानिधि, करुणा  
 कर हो उपशम रस पूर के ॥ प्रगट थया नूपति पुरें,  
 जिम प्रहरमें हो निषिद्धाचलें सूर के ॥ सोजागी० ॥  
 ॥ २ ॥ अतिशयवंत जिनेसरू, जगजीवन हो नरदेव  
 पमूर के ॥ पुण्यवशें सुप्रसन्न थया, समकितथी हो  
 अनुजव अंकूर के ॥ सोजागी० ॥ ३ ॥ आज परम  
 आनंद हुउ, आज वूठा हो अमिय जलधार के ॥  
 नवजय जंजण तुम तणो, जेह निरख्यो हो दुर्जन  
 दीदार के ॥ सोजागी० ॥ ४ ॥ सुर नायक सेवा करे,  
 तुम मूरति हो सहि मोहनबेल के ॥ रस लीणा गुण  
 आलवे, स्वर जीणा हो नारी गजगेल के ॥ सोजागी०  
 ॥ ५ ॥ स्वामी नाम प्रजावथी, सवि संपद हो नवनिधि



रुद्धि गेह के ॥ चरण कमल नेत्र्याथकी, महामंग  
ल हो मन मान्यो नेह के ॥ सोजागी० ॥ ६ ॥ संवत  
सत्तर अडशतें, फागुण शुद्धि हो तेरश तिथि सार के  
॥ मोहन कहे कवि रूपनो, जिन प्रणम्या हो होये  
जयजयकार के ॥ सोजागी० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ अजितजिन स्तवनं ॥

॥ अजित जिणंद जुहारीयें, साहेबा विजया राणीना  
नंद ॥ जिणंद मोरा हे ॥ सुर नर किन्नर तुम तणा,  
साहेबा सेवे पय अरविंद ॥ जिणं० ॥ अजि० ॥  
॥ १ ॥ जितशत्रु नृप लाडिलो ॥ सा० ॥ जितशत्रु  
नगवान ॥ जि० ॥ जितशत्रु मुऊ कीजियें ॥ सा० ॥  
दीजियें वंढित दान ॥ जि० ॥ अजि० ॥ २ ॥ अंत  
राय पंचक टड्युं ॥ सा० ॥ हास्य पटक् अज्ञान ॥ जि० ॥  
अविरति काम निडा तंजी, तेम राग द्वेष अंतवान ॥  
जि० ॥ अजि० ॥ ३ ॥ मिथ्यात्य दोष अढार ए ॥  
सा० ॥ त्यजी करवो तुम गुणसंग ॥ जि० ॥ केव  
लज्ञान बिराजता ॥ सा० ॥ सादि अनंत अजंग ॥  
जि० ॥ ४ ॥ तुं सकल परमेसरू ॥ सा० ॥ तुं निज  
शिव पद नूप ॥ जि० ॥ तुम पद पद्मनी चाकरी ॥  
सा० ॥ चाहे चित्त नित्य रूप ॥ जि० ॥ ५ ॥ इति ॥  
॥ अथ अजितजिन स्तवनं ॥ सुरतीमहीनानी देशी ॥

॥ कोशल देश सोहामणो, नयरी अयोध्या रे ठा  
म ॥ राज करे तिहां राजवी, जीतशत्रु एनुं नाम  
॥ १ ॥ विजया रे राणी तेहनी, शीलवती अजिरा

म ॥ तेहनी कूखें अवतखा, अजित जिनेसर स्वाम  
 ॥ १ ॥ साडा रे चारुणें धनुषनी, कंचन वर्णी काय  
 ॥ बहोंतेर लाख पूर्व आउखुं, श्रीजिनवरनी आय  
 ॥ ३ ॥ पुण्यसंयोगें हुं पामियो, तमने श्रीजिनराज  
 ॥ पाप गयां सर्वे माहारा, फलिया मनोरथ आज  
 ॥ ४ ॥ दीन दयाल दया करी. देजो अविचल राज ॥  
 नितलाज कहे प्रभु माहारा. सारजो वंछित काज ॥ ५ ॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवनं ॥ संदेशो जइ लावे वागड  
 देशनो रे ढोला ॥ ए देशी ॥

॥ साहेबा श्री संखेसर पासजी, प्रभुजी जवांदधि  
 तरण ऊहाज ॥ संदेशो सुणजो वामानंदजी ॥ साहि  
 बा धारक तारक विरूदनो, प्रभुजी अहो अहो गरीब  
 निवाज ॥ संदेशो ० ॥ १ ॥ साहिबा अतीत चोवीशीमा  
 वर्तता, प्रभुजी दामोदर जगवंत ॥ सं० ॥ साहिबा तेसजी  
 जीव गणधर तेणें, प्रभुजी बिंब जराव्यो गुणवंत ॥ सं० ॥  
 ॥ २ ॥ साहिबा ध्यान धखुं जब आपनुं, प्रभुजी श्रीशं  
 खेश्वर राय ॥ सं० ॥ साहिबा प्रगट थया पातालथी,  
 प्रभुजी विघ्न हखां सहु जाय ॥ सं० ॥ ३ ॥ साहिबा  
 जनम मरण जय सवि हरो, प्रभुजी तो ए उपडव कु  
 ण मात्र ॥ सं० ॥ साहिबा इंड चंड नागेंडथी, प्रभुजी  
 रूप अनंतगणुं गात्र ॥ सं० ॥ ४ ॥ साहिबा प्रातिहार्य  
 सवि सुंदरू, प्रभुजी शोजित गुण गण वृंद ॥ सं० ॥  
 साहेबा सुरपति नरपति मुनिवरा, प्रभुजी सेवित पद  
 अरविंद ॥ सं० ॥ ५ ॥ साहिबा अहोनिशि पदकज से

वना, प्रभुजी चाहुं तुं दरिस देदार ॥ सं० ॥ साहेबा  
दीपविजय कहे दीजियें, प्रभुजी तुम दरिसन सुखकार  
॥ सं० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीनेमनाथनी स्वाध्याय ॥

॥ साते वारनी देशीमां ॥

॥ तोरण आवी कंत, पाठावलिया रे ॥ मुऊ फर  
के दाहिण अंग, तेणें अटललिया रे ॥ १ ॥ कुण जो  
शीयें जोया जोष, चुगल कुण मल्लिया रे ॥ कुण अव  
गुण दीठा आज, जिणथी टलिया रे ॥ २ ॥ जाउ जा  
उ रे सहियरो दूर, शाने ठेडो रे ॥ पातलीयो श्यामल  
वान, वालिम तेडो रे ॥ ३ ॥ यादव कुल तिलक समा  
न, एम न कीजें रे ॥ एक हांसुं ने बीजी हाण, केम खमी  
जें रे ॥ ४ ॥ इहां वाये जाजो समीर, बीज ऊबूके रे ॥ बापे  
यो पीउ पोकारे, हैयंडुं चमके रे ॥ ५ ॥ मर पावे  
दाडुर सोर, नदीयो माती रे ॥ घन गळारिवने जोर, फाटे  
ठाती रे ॥ ६ ॥ हरितांशुक पहेस्यां जूमि, नवरस रंगें रे ॥ वा  
वलीया नवरस हार, प्रीतम संगें रे ॥ ७ ॥ में पूरण कीधां  
पाप, तापें दाधी रे ॥ पडे आंसुधार विषादें, वेलडी  
वाधी रे ॥ ८ ॥ मुने चडावी मेरु शीश, पाडी हेठी  
रे ॥ केम सहेवाये महाराज, विरह अंगीठी रे ॥ ९ ॥  
मुने परणी प्राण आधार, संयम लेजो रे ॥ हुं पतिव्र  
ता हुं स्वामी, साथें वहेजो रे ॥ १० ॥ इम आवे न  
वनी प्रीत, पिउडा वलजो रे ॥ मुज मनना मनोरथ  
नाथ, पूरण फलजो रे ॥ ११ ॥ हवे चार महाव्रत सा

र, चुंदडी दीधी रे ॥ रंगीली राजुजनारें, प्रेमें लीधी  
 रे ॥ १२ ॥ मैत्र्यादिक जावना चार, चोरी बांधी रे ॥  
 देइ ध्यानानल सलगाय, कर्म उपाधि रे ॥ १३ ॥ थ  
 यो रत्नत्रयी कंसार, एकी जावें रे ॥ आरोगे नर ने  
 नार, शुद्ध स्वजावें रे ॥ १४ ॥ तजी चंचलता त्रिक  
 योग, दंपती मलियां रे ॥ श्री सिमाविजय जिन नेम,  
 अनुभव कलिया रे ॥ १५ ॥

॥ अथ केशरीधाजीनुं स्तवन ॥

॥ प्रभुनी मूरति मोहन बेलडी, जी तुमारी मूरति  
 मोहन बेलडी ॥ चालो सखी धुलेवे रे जइयें, प्रभुनी  
 सामरी सूरत ठे सेलडी ॥ जी तु० ॥ १ ॥ केशर चंद  
 न नखां रे कचोलां, प्रभुजीनी पूजा करुं सहु पहेलडी  
 ॥ जी तु० ॥ २ ॥ जाई जुई वर कमरोजी मरुवो, प्रभुजीने  
 पूजी चडाउं चंबेलडी ॥ जी तु० ॥ ३ ॥ सुर नर मुनिवर जोइ  
 ने मोह्या, कांइ रूपनदास गुण बेलडी ॥ जी तु० ॥ ४ ॥

॥ अथ उपदेश विषे सखाय ॥ देशी फतमलनी ॥

॥ पडजो कुमतिगढना कांगरा, मरजो राउ मोह  
 राव ॥ वालो महारो निज घरे नावीयो, एणे परघरे  
 कीधां प्रयाण ॥ वा० ॥ एम कहे सुमति सुजाण  
 ॥ वा० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ दांत पाडूं रे दूती त  
 णा, पाडोसणनां रे लउं प्राण ॥ जेणें महारो जीवन  
 जोलव्यो, लइ नाख्यो नरकनी खाण ॥ वा० ॥ २ ॥  
 मायायें मद पाइने, एतो वास्यो पोताने वास ॥ मा  
 हारोने वासो टालीने, एणें मुऊने कीधी निराश ॥

॥ वा० ॥ ३ ॥ गुणवंतना गुण गोपवी, गुण हीणा  
 शुं मांही गोठ ॥ आप स्वरूप न उलखे, एतो पाप  
 नी चलवे पोठ ॥ वा० ॥ ४ ॥ अबुज साथें धरे आ  
 सकी, एतो पूजे न पूज्यना पाय ॥ परम महोदय  
 पामशे, ज्यारें आवशे आपणे ठाय ॥ वा० ॥ ५ ॥  
 श्रीदादा पास पसाउल्लें, में तो कुमतिनो पाडयो को  
 ट ॥ घर आप्यो निज घरधणी, में तो चुकवी शो  
 कनी चोट ॥ वा० ॥ ६ ॥ वाचक उदयरतन वदे, जे  
 पूजशे प्रचुना पाय ॥ ते परमपदें पद धारशे, वली  
 संपत्ति लहेशे सवाय ॥ वा० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ धर्मजिन स्तवनं ॥

॥ केशर वगणो हो काढ कसुंबो माहारा लाल ॥ ए देशी ॥

॥ धर्मजिणंदा हो, में तुज बंदा ॥ माहारा लाल ॥  
 तुज गुण वृंदा हो, गावे इंदा ॥ मा० ॥ शिवतरु कंदा  
 हो, तुं कुलचंदा ॥ मा० ॥ तेज दिणंदा हो, अति  
 आनंदा ॥ मा० ॥ १ ॥ मोहन गारी हो, मूरति तारी  
 ॥ मा० ॥ प्राण पियारी हो, जाउं बलिहारी ॥ मा० ॥  
 यो शिवनारी हो, रंग करारी ॥ मा० ॥ तें जग तारी  
 हो, ठे मुक्त वारी ॥ मा० ॥ २ ॥ दिल अटकाणो  
 हो, दास कहाणो ॥ मा० ॥ तुं जग राणो हो, सुजश  
 गवाणो ॥ मा० ॥ करुणा आणो हो, सेवा जाणो  
 ॥ मा० ॥ हवे न ताणो हो, मलियो टाणो ॥ मा० ॥  
 ॥ ३ ॥ नेह नवेली हो, सुमति सहेली ॥ मा० ॥  
 रंगें खेली हो, थई मुक्त बेली ॥ मा० ॥ माया बेली

हो, मूल उखेली ॥ मा० ॥ कुमति अकेली हो, दूरें  
मेली ॥ मा० ॥ ४ ॥ तुं जिनराया हो, सुजस सवा  
या ॥ मा० ॥ दिलमें आया हो, पाप गमाया ॥ मा० ॥  
बंधित पाया हो, विमल पसाया ॥ मा० ॥ गुण मन  
जाया हो, रामें गाया ॥ मा० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ मल्लिजिन स्तवन ॥ होरी खेलेंगे ॥ ए देशी ॥

॥ मन मोहन मल्ली नाथको, जस बोलेंगे ॥ शिव  
रमणीको रंग, घुंघट पट खेलेंगे ॥ मोह्यो मन धन  
मोर जुं ॥ जस० ॥ अब और न चाहूं संग ॥ घुं० ॥  
॥ १ ॥ चिंतामणिकूं पाइकें ॥ ज० ॥ कुण राचे काचे  
काच ॥ घुं० ॥ को चाहै खर केलिकूं ॥ ज० ॥ तजी  
सुर कुमरीको नाच ॥ घुं० ॥ २ ॥ बाजलकूं संवे  
नहीं ॥ ज० ॥ तजी मधुकर मालती फूल ॥ घुं० ॥  
कोमल शय्या ठोर कें ॥ ज० ॥ कुण बैठे धरिके शूल  
॥ घुं० ॥ ३ ॥ प्रभुकी मूरति मेरे मन वसी ॥ ज० ॥  
सो तो विसराइ विसरै न ॥ घुं० ॥ दरसन प्रभु मुख  
देखकें ॥ ज० ॥ हम पावन कीने नैन ॥ घुं० ॥ ४ ॥  
जनम कृतारथमें कखो ॥ ज० ॥ जब पायो ऐसो  
ईश ॥ घुं० ॥ विमल विजय उवसायको ॥ ज० ॥  
एम राम कहे गुन शीश ॥ घुं० ॥ ५ ॥

॥ अथ नेमिजिन स्तवनं ॥ राग जंगलो ॥

॥ संयम लेवंगी साथ, पिया में तो संयम लेवंगी ॥  
माय बाप मेरे काम न आवे, जूठो ए संसार ॥ पि  
या० ॥ १ ॥ तोरणसैं रथ फेर चलायो, सुण पशु

अन पोकार ॥ पि० ॥ १ ॥ सहसावन जई संयम  
 लीनो, नेम चढे गिरनार ॥ पी० ॥ ३ ॥ मोतन लाल  
 कहे अपने प्रीमसें, उतारो नव पार ॥ पी० ॥ ४ ॥  
 ॥ अथ श्रीदेवचंडजी कृत चोवीशी प्रारंभः ॥ तत्र प्रथम  
 श्रीरूपनजिन स्तवनं ॥ निड्डी वेरण दुई रही ए देशी ॥

॥ रूपन जिणंदशुं प्रीतली, किम कीजें हो कहो  
 चतुर विचार ॥ प्रभुजी जइ अलगा वस्या, तिहां कियो  
 नवि हो कोइ वचन उच्चार ॥ १ ॥ रू० ॥ कागल  
 पण पोहोंचे नहि, नवि पोहोंचे हो तिहां को पर  
 धान ॥ जे गोहोंचे ते तुम समो, नवि जांखे हो कोइनुं  
 व्यवधान ॥ २ ॥ रू० ॥ प्रीत करे ते रागीया, जिन  
 वरजी हो तुमें तो वीतराग ॥ प्रीतडी जेह अरागीथी,  
 नेलववी हो लोकोत्तर माग ॥ ३ ॥ रू० ॥ प्रीति  
 अनादिनी विष नरी, ते रीतें हो करवा मुऊ नाव ॥  
 करवी निर्विष प्रीतडी, किये जांते हो कहो बने ब  
 नाव ॥ ४ ॥ रू० ॥ प्रीति अनंती परथकी, जे तोडे  
 हो ते जोडे एह ॥ परम पुरुषथी रागता, एकत्वता  
 हो दाखी गुण गेह ॥ ५ ॥ रू० ॥ प्रभुजीने अवलं  
 बतां, निज प्रभुता हो प्रगटे गुण राश ॥ देवचंडनी  
 सेवना, आपे मुऊ हों अविचल सुखवास ॥ ६ ॥ रू० ॥

॥ अथ श्रीअजितजिन स्तवनं ॥

॥ देखो गति दैवनी रे ॥ ए देशी ॥

॥ ज्ञानादिक गुण संपदा रे, तुऊ अनंत अपार ॥  
 ते सांजलतां उपनी रे, रुचि तेणें पार उतार ॥ १ ॥

अजित जिन तारजो रे, तारजो दीनदयाल ॥ अ  
 जि० ॥ ए आंकणी ॥ जे जे कारण जेहनो रे, सा  
 मग्री संयोग ॥ मलतां कारज नीपजे रे, कर्त्ता तणे  
 प्रयोग ॥ १ ॥ अ० ॥ कार्यसिद्धि कर्त्ता वसु रे, लहि कार  
 ण संयोग ॥ निज पद कायक प्रभु मित्या रे, होय  
 निमित्तह जोग ॥ ३ ॥ अ० ॥ अजकुल गत केसरी लहे  
 रे, निज पद सिंघ निहाल ॥ तिम प्रभु जत्तें जवि  
 लहे रे, आतम शक्ति संजाल ॥ ४ ॥ अ० ॥ कारण  
 पद कर्त्ता पणे रे, करी आरोप अनेद ॥ निजपद अ  
 रथी प्रभुथकी रे, करे अनेक उमेद ॥ ५ ॥ अ० ॥  
 एहवा परमातम प्रभु रे, परमानंद स्वरूप ॥ स्यादवा  
 दसत्ता रसी रे, अमल अखंम अनूप ॥ ६ ॥ अ० ॥  
 आरोपित सुख त्रम टव्यो रे, नास्यो अव्याबाध ॥  
 समखुं अनिलाखीपणुं रे, कर्त्ता साधन साध्य ॥  
 ॥ ७ ॥ अ० ॥ ग्राहकता स्वामित्वता रे, व्यापक जो  
 का नाव ॥ कारणता कारज दिशा रे, सकल ग्रहं नि  
 ज नाव ॥ ८ ॥ अ० ॥ श्रद्धा नासन रमणता रे, दाना  
 दिक परिणाम ॥ सकल थया सत्ता रसी रे, जिनवर  
 दरिसेण पाम ॥ ९ ॥ अ० ॥ तिणे निर्यामक माह  
 णो रे, वैद्य गोप आधार ॥ देवचंद्र सुख सागरु रे,  
 नाव धरम दातार ॥ १० ॥ अ० ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीसंजवजिन स्तवनं ॥ धणरा ढोला ॥ ए देशी ॥

॥ श्रीसंजवजिन राजजी रे, ताहरुं अकल स्वरूप ॥  
 जिनवर पूजो ॥ स्वपर प्रकाशक दिनमणि रे, समता



रसनो नूप ॥ जि० ॥ १ ॥ पूजो पूजो रे नविक जिन  
 पूजो, प्रभु पूज्या परमानंद ॥ जि० ॥ ए आंकणी ॥  
 अविसंवाद निमित्त ठो रे, जगत जंतु सुखकाज ॥ जि०  
 हेतु सत्य बहुमानथी रे, जिन सेव्यां शिवराज ॥  
 ॥ जि० ॥ २ ॥ उपादान आतम सही रे, पुष्टालंबन  
 देव ॥ जि० ॥ उपादान कारण पणो रे, प्रगट करे  
 प्रभु सेव ॥ जि० ॥ ३ ॥ कारजगुण कारण पणो रे,  
 कारण कारज अनूप ॥ जि० ॥ सकल सिद्धता ताह  
 री रे, माहारे साधन रूप ॥ जि० ॥ ४ ॥ एक बार  
 प्रभु वंदना रे, आगमरीतें थाय ॥ जि० ॥ कारण  
 सत्यें कार्यनी रे, सिद्धि प्रतीति कराय ॥ जि० ॥ ५ ॥  
 प्रभुपणो प्रभु उलखी रे, अमल विमल गुण गेह ॥  
 ॥ जि० ॥ साध्यदृष्टि साधकपणो रे, वंदे धन नर  
 तेह ॥ जि० ॥ ६ ॥ जन्म कृतारथ तेहनो रे, दिवस  
 सफल पण तास ॥ जि० ॥ जगतशरण जिन चरणने  
 रे, वंदे धरिय उल्लास ॥ जि० ॥ ७ ॥ निज सत्ता निज  
 जावथी रे, गुण अनंतनुं गण ॥ जि० ॥ देवचंड जिन  
 राजजी रे, शुद्धसिद्धसुख खाण ॥ जि० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीअजिनंदन जिनस्तवनं ॥

॥ ब्रह्मचरिज पद पूजीयें ॥ ए देशी ॥

॥ क्युं जाणुं क्युं बनी आवज्ञे, अजिनंदन रस  
 रीत हो मित्त ॥ पुजल अनुभव त्यागथी, करवी जसुं  
 परतीत हो मित्त ॥ क्युं० ॥ १ ॥ परमातम परमेश्वरू,  
 वस्तुगतें ते अजित्त हो मित्त ॥ इव्यें इव्य मिले

नहीं, जावें तें अन्य अभ्यास हो मित्त ॥ क्युं० ॥ २ ॥  
 शुद्ध स्वरूप सनातनो, निर्मल जे निःसंग हो मित्त ॥  
 आतम विनूति परिणम्यो, न कर ते परसंग हो मित्त  
 ॥ क्युं० ॥ ३ ॥ पण जाणुं आगम बलें, मलवो तुम  
 प्रभु साथ हो मित्त ॥ प्रभु तो स्वसंपत्तिमयी, शुद्ध स्व  
 रूपनो नाथ हो मित्त ॥ क्युं० ॥ ४ ॥ पर परिणामि  
 कता अठे, जे तुऊ पुजल जोग हो मित्त ॥ जड चल  
 जगनी एठनो, न घटे तुऊने जोग हो मित्त ॥ क्युं० ॥ ५ ॥  
 शुद्ध निमित्त प्रभु ग्रहो, करी अशुद्ध पर हेय हो मि  
 त्त ॥ आत्मालंबी गुण लही, लहु साधकनो ध्येय हो  
 मित्त ॥ क्युं० ॥ ६ ॥ जिम जिनवर आलंबनैं, वधे सधे  
 एक तान हो मित्त ॥ तिम तिम आत्मालंबनी, ग्रहे स्व  
 रूप निदान हो मित्त ॥ क्युं० ॥ ७ ॥ स्व स्वरूप एकत्वता,  
 साधे पूर्णानंद हो मित्त ॥ रमे जोगवे आतमा, रत्नत्रयी  
 गुणवृंद हो मित्त ॥ क्युं० ॥ ८ ॥ अजिनंदन अवलंबने,  
 परमानंद विलास हो मित्त ॥ देवचंड प्रभु सेवना, क  
 रि अनुभव अन्यास हो मित्त ॥ क्युं० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीसुमतिजिनस्तवनं ॥ कडखानी देशी ॥

॥ अहो सिरी सुमतिजिन शुद्धता ताहरी, स्वगुण  
 पर्याय परिणाम रामी ॥ नित्यता एकता अस्तिता  
 इतरयुत, जोग्यजोगीथको प्रभु अकामी ॥ १ ॥ अ० ॥  
 उपजे व्यय लहे तहवि तेहवो रहे, गुण प्रमुख  
 बहुलता तहवि पिंमी ॥ आत्मजावें रहे अपरता  
 नवि ग्रहे, लोक प्रदेश मित्त पण अखंमी ॥ २ ॥

॥ अ० ॥ कार्य कारण पणे परिणमे तद्वि ध्रुव, कार्य  
 जेदें करे पण अजेदी ॥ कर्तृता परिणमे नव्यता नवि  
 रमे, सकल वेत्ता थको पण अवेदी ॥ ३ ॥ अ० ॥  
 शुद्धता बुद्धता देव परमात्मता, सहज निज जाव  
 जोगी अयोगी ॥ स्वपर उपयोगि तादात्म्य सत्तारसी,  
 शक्ति प्रयुंजतो न प्रयोगी ॥ ४ ॥ अ० ॥ वस्तु  
 निज परिणते सर्व परिणामकी, एटले कोइ प्रभुता  
 न पामे ॥ करे जाणे रमे अनुजवे ते प्रभु, तत्त्व स्वा  
 मित्व शुचि तत्त्व धामे ॥ ५ ॥ अ० ॥ जीव नवि पु  
 ग्गली नैव पुग्गल कदा, पुग्गलाधार नहीं तास रंगी ॥  
 पर तणो ईश नहीं अपर ऐश्वर्यता, वस्तुधर्मे कदा  
 न परसंगी ॥ ६ ॥ अ० ॥ संग्रहे नहीं आपे नहीं  
 पर जणी, नवि करे आदरे न पर राखे ॥ शुद्धस्या  
 दाद निज जाव जोगी जिके, तेह परजावने केम  
 चाखे ॥ ७ ॥ अ० ॥ ताहरी शुद्धता जास आश्चर्यथी,  
 उपजे रुचि तेणे तत्त्व ईहे ॥ तत्त्वरंगी थयो दोषथी  
 उजग्यो, दोष त्यागे टले तत्त्व लीहे ॥ ८ ॥ अ० ॥  
 शुद्ध मार्गे वध्यो साध्य साधन सध्यो, स्वामी प्रतिबंधे  
 सत्ता आराधे ॥ आत्म निष्पत्ति तिम साधना नवि  
 टके, वस्तु उत्सर्ग आत्मसमार्थे ॥ ९ ॥ अ० ॥  
 माहरी शुद्ध सत्तातणी पूर्णता, तेहनो हेतु प्रभु तुंहि  
 साचो ॥ देवचंडें सव्यो मुनिगणें अनुजव्यो, तत्त्व  
 जकें नविक सकल राचो ॥ १० ॥ अ० ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीपद्मप्रज्जिन स्तवन ॥

॥ हुं तुज आगल शी कहुं केशरीया लाल ॥ ए देशी ॥

॥ श्रीपद्मप्रज्जिन गुणनिधि रे लाल, जग तारक  
जग दीस रे ॥ वाढ्हेसर ॥ जिन उपगारथकी लहे रे  
लाल, नविजन सिद्धि जगीस रे ॥ वा० ॥ १ ॥ तुज  
दरिसण मुज्जु बालहुं रे लाल, दरिसण शुद्ध पवित्त  
रे ॥ वा० ॥ दर्शन शब्द नयें करे रे लाल, संग्रह एवं  
नूत रे ॥ वा० ॥ २ ॥ तु० ॥ बीजें वृद्ध अनंतता रे  
लाल, पसरें नू जल योग रे ॥ वा० ॥ तिम मुज्जु आ  
तम संपदा रे लाल, प्रगटे प्रभु संयोग रे ॥ वा० ॥  
॥ ३ ॥ तु० ॥ जगत जंतु कारज रुची रे लाल, साधे  
उदयें जाण रे ॥ वा० ॥ चिदानंद सुविज्ञासता रे लाल,  
वाधे जिनवर जाण रे ॥ वा० ॥ ४ ॥ तु० ॥ लब्धि  
सिद्धि मंत्राद्धरें रे लाल, उपजे साधक संग रे ॥ वा० ॥  
सहज अध्यातम तत्त्वता रे लाल, प्रगटे तत्त्वी रंग  
रे ॥ वा० ॥ ५ ॥ तु० ॥ लोह धातु कंचन हुवे रे लाल,  
पारस फरसन पामि रे ॥ वा० ॥ प्रगटे अध्यातम  
दिशा रे लाल, व्यक्त गुणी गुण ग्राम रे ॥ वा० ॥ ६ ॥  
॥ तु० ॥ आत्मसिद्धि कारज नणी रे लाल, सहज  
निर्यामक हेतु रे ॥ वा० ॥ नामादिक जिनराजनां रे  
लाल, नवसागरमांहे सेतु रे ॥ वा० ॥ ७ ॥ तु० ॥  
अंजन इन्द्रिय योगनो रे लाल, रक्त वरण गुण राय रे  
॥ वा० ॥ देवचंद्र वृंदें स्तव्यो रे लाल, आप अवर्ण  
अकाय रे ॥ वा० ॥ ८ ॥ तु० ॥ इति ॥

( ५१३ )

॥ अथ सप्तम श्रीसुपार्श्वजिनस्तवनं ॥

॥ हो सुंदर तप सरिखो, जग को नहीं ॥ ए देशी ॥

॥ श्रीसुपास आनंदमें, गुण अनंतनो कंद हो ॥ जि  
नजी ॥ ज्ञानानंदें पूरणो, पवित्र चारित्रानंद हो ॥  
॥ जि० ॥ १ ॥ श्री० ॥ संरक्षण विण नाथ ठो, इव्य  
विना धनवंत हो ॥ जि० ॥ करता पद किरिया विना,  
संत अजेय अनंत हो ॥ जि० ॥ २ ॥ श्री० ॥ अगम  
अगोचर अमर तुं, अन्वय रुदि समूह हो ॥ जि० ॥  
वर्ण गंध रस फरस विणु, निज जोक्ता गुण व्यूह हो  
॥ जि० ॥ ३ ॥ श्री० ॥ अक्षय दान अचिंतना, लान  
अयलें जोग हो ॥ जि० ॥ वीर्य शक्ति अप्रयासता,  
शुद्ध स्वगुण उपजोग हो ॥ जि० ॥ ४ ॥ श्री० ॥  
एकांतिक आत्यंतिको, सहज अकृत स्वाधीन हो ॥  
॥ जि० ॥ निरुपचरित निर्द्वंद्व सुख, अन्य अहेतुक  
पीन हो ॥ जि० ॥ ५ ॥ श्री० ॥ एक प्रदेशें ताहरे,  
अव्याबाध समाय हो ॥ जि० ॥ तसु पर्याय अवि  
जागता, सर्वाकाश न माय हो ॥ जि० ॥ ६ ॥ श्री० ॥  
एम अनंत गुणनो धणी, गुण गुणनो आनंद हो ॥  
॥ जि० ॥ जोग रमण आस्वाद युत, प्रभु तुं परमानंद  
हो ॥ जि० ॥ ७ ॥ श्री० ॥ अव्याबाध रुचि यई,  
साधे अव्याबाध हो ॥ जि० ॥ देवचंड पद ते लहे,  
परमानंद समाध हो ॥ जि० ॥ ८ ॥ श्री० ॥ इति ॥

॥ अथ अष्टम श्रीचंद्रप्रज्जिनस्तवनं ॥

॥ श्रीश्रेयांसजिन अंतरजामी ॥ ए देशी ॥

॥ श्रीचंद्रप्रज्जिनपदसेवा, हेवायें जे हलिया जी  
॥ आतम गुण अनुभवथी मलिया, ते नवनयथी  
टलिया जी ॥ १ ॥ श्री० ॥ इव्य सेव वंदन नम  
नादिक, अर्चन वलि गुणधामो जी ॥ नाव अनेद  
थावानी ईहा, परनावें निकामो जी ॥ श्री० ॥ २ ॥  
॥ श्री० ॥ नावसेव अपवादें नैगम, प्रभुगुणने  
संकल्पें जी ॥ संग्रह सत्ता तुव्यारोपें, नेदानेद वि  
कल्पें जी ॥ ३ ॥ श्री० ॥ व्यवहारें बहु मान ज्ञान  
निज, चरणे जिनगुणरमणा जी ॥ प्रभु गुण आ  
लंबी परिणामें, रुजु पद ध्यानस्मरणा जी ॥ ४ ॥  
॥ श्री० ॥ शब्दें शुक्लध्यानारोहण, समनिरुद्ध गुण  
दशमे जी ॥ बीअ शुक्ल अविकल्प एकत्वे, एवंभूत  
ते अममें जी ॥ ५ ॥ श्री० ॥ उत्सर्गे समकित गुण  
प्रगट्यो, नैगम प्रभुता अंगें जी ॥ संग्रह आतम  
सत्तालंबी, मुनिपद नाव प्रशंसे जी ॥ ६ ॥ श्री० ॥  
रुजुसूत्रें जे श्रेणिपदस्थें, आतमशक्ति प्रकाशे जी ॥  
यथाख्यात पद शब्द स्वरूपें, शुद्ध धर्म उद्भासे जी ॥  
॥ ७ ॥ श्री० ॥ नाव सयोगि अयोगि शैलेसें, अंति  
म दुग नय जाणो जी ॥ साधनतायें निज गुणव्यक्ति,  
तेह सेवना वखाणो जी ॥ ८ ॥ श्री० ॥ कारण नाव  
तेह अपवादें, कार्यरूप उत्सर्गे जी ॥ आत्मनाव  
ते नाव इव्य पद, बाह्य प्रवृत्ति निसर्गे जी ॥ ९ ॥

॥ श्री० ॥ कारण जाव परंपर सेवन, प्रगटे कारज  
जावो जी ॥ कारज सिद्धे कारणता व्यय, शुचि परिणा  
मिक जावो जी ॥ १० ॥ श्री० ॥ परम गुणी सेवन  
तन्मयता, निश्चय ध्यानें ध्यावे जी ॥ शुद्धातम अनु  
भव आस्वादी, देवचंद्र पद पावे जी ॥ ११ ॥ श्री० ॥

॥ अथ नवम श्रीसुविधिजिनस्तवनं ॥

॥ थारा महेला ऊपर मेह, ऊरुखे बीजली ॥

॥ हो लाल ॥ ए देशी ॥

॥ दीठो सुविधि जिणंद, समाधिरसें नखो हो ला  
ल ॥ समाधिरसें नखो ॥ नास्थुं आत्मस्वरूप, अना  
दिनो बीसखो हो लाल ॥ अ० ॥ सकल विजाव उपा  
धि, यकी मन उसखो हो लाल ॥ थ० ॥ सत्ता सा  
धन मार्ग, जणी ए संचखो हो लाल ॥ ज० ॥ १ ॥  
तुम प्रभु जाणंग रीति, संख जग देखता हो लाल ॥  
स० ॥ निज सत्तायें शुद्ध, सद्गुणे लेखता हो लाल ॥  
स० ॥ पर परिणति अद्वेष, पणें उवेखता हो लाल ॥  
पणें० ॥ जोग्यपणें निज शक्ति, अनंत गवेखता हो  
लाल ॥ अ० ॥ २ ॥ दानादिक निज जाव, हता जे  
परवशा हो लाल ॥ हता० ॥ ते निजसंमुख जाव,  
ग्रही लही तुऊ दशा हो लाल ॥ ग्र० ॥ प्रभुनो अद्भु  
त योग, स्वरूप तणी रसा हो लाल ॥ स्व० ॥ नासे  
वासे तास, जास गुण तुऊ जिसा हो लाल ॥ जा०  
॥ ३ ॥ मोहादिकनी घूमि, अनादिनी कतरे हो लाल  
॥ अ० ॥ अमल अखंड अलिप्त, स्वजावज सांजरे

हो लाल ॥ स्व० ॥ तत्त्व रमण शुचि ध्यान, जणी जे  
 आदरे हो लाल ॥ ज० ॥ ते समतारस धाम, स्वामी  
 मुझ वरे हो लाल ॥ स्वा० ॥ ४ ॥ प्रभु ठो त्रिभुवन  
 नाथ, दास हुं ताहरो हो लाल ॥ दा० ॥ करुणानिधि  
 अनिलाख, अठे मुऊ ए परो हो लाल ॥ अ० ॥ आ  
 तम वस्तु स्वभाव, सदा मुऊ सांजरो हो लाल ॥ स० ॥  
 नासन वासन एह, चरणध्यान धरो हो लाल ॥ च०  
 ॥ ५ ॥ प्रभु मुझने योग, प्रभु प्रभुता लखे हो लाल ॥  
 प्र० ॥ इव्य तणे साधर्म्य, स्वसंपत्ति उलखे हो लाल ॥  
 स्व० ॥ उलखतां बहुमान, सहित रुचि पण वये हो  
 लाल ॥ स० ॥ रुचि अनुयायी वीर्य, चरण धारा सधे  
 हो लाल ॥ च० ॥ ६ ॥ ह्यायोपशमिक गुण सर्व, यथा तु  
 ऊ गुण रसी हो लाल ॥ य० ॥ सत्ता साधन शक्ति, व्य  
 क्ता उल्लसी हो लाल ॥ व्य० ॥ हवे संपूरण सिद्ध,  
 तणी शी वार ठे हो लाल ॥ त० ॥ देवचंद्र जिनराज,  
 जगत आधार ठे हो लाल ॥ जग० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ दशम श्रीशीतलजिनस्तवनं ॥

॥ आदर जीव ह्रमागुण आदर ॥ ए देशी ॥

॥ शीतलजिनपति प्रभुता प्रभुनी, मुऊथी कहिय  
 न जाय जी ॥ अनंतता निर्मलता पूरणता, ज्ञान वि  
 ना न जणाय जी ॥ १ ॥ शी० ॥ चरम जलधि जल  
 मिणे अंजली, गति जींपे अति वाय जी ॥ सर्व आ  
 काश उलंघे चरणें, पण प्रभुता न गणाय जी ॥  
 ॥ २ ॥ शी० ॥ सर्व इव्य प्रदेश अनंता, तेहथी गु



એ પર્યાય જી ॥ તાસ વર્ગથી અનંત ગુણું પ્રચુ,કેવલ  
 જ્ઞાન કહાય જી ॥ ૩ ॥ શી૦ ॥ કેવલ દર્શન એમ અ  
 નંતો,પ્રદે સામાન્ય સ્વનાવ જી ॥ સ્વપર અનંતથી ચ  
 રણ અનંતો, સ્વરમણ સંવર નાવ જી ॥ ૪ ॥ શી૦ ॥  
 ઇવ્યક્ત્ર ને કાલ નાવ ગુણ,રાજનીતિ એ ચાર જી ॥  
 ત્રાસ વિના જડ ચેતન પ્રચુની,કોઈ ન લોપે કાર જી  
 ॥ ૫ ॥ શી૦ ॥ શુદ્ધાશય થિર પ્રચુ ઉપયોગે, જે સમરે  
 તુજ નામ જી ॥ અવ્યાવાધ અનંતો પામે, પરમ અમૃ  
 ત સુખ ધામ જી ॥ ૬ ॥ શી૦ ॥ આણા ઈશ્વરતા નિ  
 જયતા,નિર્વાઠકતા રૂપ જી ॥ નાવ સ્વાધીન તે અવ્ય  
 ય રીતે,ઈમ અનંત ગુણ નૂપ જી ॥ ૭ ॥ શી૦ ॥ અવ્યા  
 વાધ સુખ નિર્મલ તેતો, કરણ જ્ઞાનેં ન જણાય જી ॥  
 તેહજ એહનો જાણંગ જોક્તા, જે તુમ સમ ગુણ રાય  
 જી ॥ ૮ ॥ શી૦ ॥ એમ અનંત દાનાદિક નિજગુણ,  
 વચનાતીત પંમૂર જી ॥ વાસન નાસન નાવેં ડુર્લભ,  
 પ્રાપતી તો અતિ દૂર જી ॥ ૯ ॥ શી૦ ॥ સકલ પ્રત્યક્ષ  
 પણે ત્રિજીવન ગુરુ, જાણું તુજ ગુણ ગ્રામ જી ॥ બીજું  
 કાંઈ ન માગું સ્વામિ,એહિજ ઢે મુજ કામ જી ॥ ૧૦ ॥ શી૦  
 એમ અનંત પ્રચુતા સર્વદહતાં,અર્ચે જે પ્રચુ રૂપ જી ॥ દેવ  
 ચંડ પચુતા તે પામે,પરમાનંદ સ્વરૂપ જી ॥ ૧૧ ॥ શી૦ ॥

॥ અથ એકાદશ શ્રીશ્રેયાંસજિનસ્તવનં ॥

॥ પ્રાણી વાણી જિનતણી ॥ એ દેશી ॥

॥ શ્રીશ્રેયાંસ પ્રચુ તણો, અતિ અહુત સહજાનંદ  
 રે ॥ ગણ એકવિધ ત્રિક પરણમ્યો, એમ ગુણ અનંત

नो वृंद रे ॥ १ ॥ मुनिचंद जिणंद अमंद दिणंद परें,  
 नित्य दीपतो सुख कंद रे ॥ ए आंकणी ॥ निज झा  
 नें करी झेयनो, झायक झाता पद ईश रे ॥ देखे नि  
 ज दर्शन करी, निज दृश्य सामान्य जगीश रे ॥  
 ॥ २ ॥ मु० ॥ निज रम्यें रमण करो, प्रभु चारित्रें रम  
 ता राम रे ॥ जोग अनंतन जोगवो, जोगें तेणें जो  
 क्ता स्वाम रे ॥ ३ ॥ मु० ॥ देय दान नित दीजते,  
 अति दाता प्रभु स्वयमेव रे ॥ पात्र तुम्हें निज शक्ति  
 ना, ग्राहक व्यापकमय देव रे ॥ ४ ॥ मु० ॥ पणिणा  
 मिक कारज तणो, करता गुण करणो नाथ रे ॥ अक्रि  
 य अक्षय स्थितिमयी, निकलक अनंती आय रे ॥  
 ॥ ५ ॥ मु० ॥ परिणामिक सत्ता तणो, आविर्भाव वि  
 लास निवास रे ॥ सहज अकृत्रिम अपराश्रयी, नि  
 र्विकल्प ने निःप्रयास रे ॥ ६ ॥ मु० ॥ प्रभु प्रभुता संजा  
 रतां, गातां करतां गुणग्राम रे ॥ सेवक साधनता वरे,  
 निज संवर परिणति पाम रे ॥ ७ ॥ मु० ॥ प्रगट तत्त्वता  
 ध्यावतां, निज तत्त्वनो ध्याता थाय रे ॥ तत्त्वरमण  
 एकाग्रता, पूरण तत्त्वं एह समाय रे ॥ ८ ॥ मु० ॥  
 प्रभु दीठे मुक्त सांजरे, परमात्म पूर्णानंद रे ॥ देवचं  
 ५ जिन राजना, नित्य वंदो पय अरविंद रे ॥ ९ ॥ मु० ॥

॥ अथ द्वादश श्रीवासुपूज्यजिनस्तवनं ॥

॥ पंथीडो निहालुं रे बीजा जिनतणो रे ॥ ए देशी ॥

॥ पूजना तो कीजें रे बारमा जिन तणी रे, जसु  
 प्रगट्यो पूज्य स्वजाव ॥ परकृत पूजा रे जे इहे नहीं

रे, साधक कारज दाव ॥ १ ॥ पू० ॥ इव्यथी पूजा  
 रे कारण जावनुं रे, जाव प्रशस्त ने शुद्ध ॥ परम ५  
 ए वल्लन त्रिचुवन धणी रे, वासुपूज्य स्वयंबुद्ध ॥ २ ॥  
 पू० ॥ अतिशय भहिमा रे अति उपगारता रे, निर्म  
 ल प्रचु गुण राग ॥ सुरमणि सुरघट सुरतरु तुं ठते  
 रे, जिन रागी महाजाग ॥ ३ ॥ पू० ॥ दर्शन ज्ञाना  
 दिक गुण आत्मना रे, प्रचु प्रचुता लय लीन ॥ शु  
 द्ध स्वरूपी रूपें तन्मयी रे, तसु आस्वादन पीन ॥  
 ॥ ४ ॥ पू० ॥ शुद्ध तत्त्व रस रंगी चेतना रे, पामे  
 आत्म स्वजाव ॥ आत्मातंवी निज गुण साधतो रे,  
 प्रगटे पूज्य स्वजाव ॥ ५ ॥ पू० ॥ आप अकर्ता से  
 वाथी हुवे रे, सेवक पूरण सिद्धि ॥ निज धन न दी  
 ये पण आश्रित लहे रे, अहय अह्वर रुद्धि ॥ ६ ॥  
 पू० ॥ जिनवर पूजा रें ते निज पूजना रे, प्रगटे अ  
 न्वय शक्ति ॥ परमानंद विलासी अनुजवे रे, देवचंद्र  
 पद व्यक्ति ॥ ७ ॥ पू० ॥ इति ॥

॥ अथ त्रयोदशश्री विमलजिनस्तवनं ॥

॥ दास अरदास शी परें करे जी ॥ ए देशी ॥

॥ विमलजिन विमलता ताहरी जी, अवर बीजे  
 न कहाय ॥ लघु नदी जिम तिम लंघीयें जी, स्वयंचू  
 रमण न तराय ॥ १ ॥ वि० ॥ सयल पुढवी गिरिज  
 ल तरुजी, कोइ तोले एक हाथ ॥ तेह पण तुज गु  
 ण गण जणी जी, जांखवा नही समरथ ॥ २ ॥ वि०  
 सर्व पुजल नज धर्मना जी, तेम अधर्म प्रदेश ॥

तास गुण धर्म पङ्कव सहु जी, तुऊ गुण एक तणो  
 लेश ॥ ३ ॥ वि० ॥ एम निज जाव अनंतनी जी,  
 अस्तिता केटली थाय ॥ नास्तिता स्वर पद अस्ति  
 ता जी, तुऊ समकाल समाय ॥ ४ ॥ वि० ॥ ताह  
 रा शुद्ध स्वजावने जी, आदरे धरी बहु मान ॥ तेह  
 ने तेहीज नीपजे जी, ए कोइ अद्भुत तान ॥ ५ ॥  
 वि० ॥ तुम्ह प्रभु तुम्ह तारक विभुजी, तुम समो  
 अवर न कोय ॥ तुम दरिसणथकी हूं तखो जी, शुद्ध  
 आलंबन होय ॥ ६ ॥ वि० ॥ प्रभुतणी विमलता  
 उलखी जी, जे करे थिर मन सेव ॥ देवचंद्र पद ते  
 लहे जी, विमल आनंद स्वयमेव ॥ ७ ॥ वि० ॥ इति ॥

॥ अथ चतुर्दश श्रीअनंतजिन स्तवनं ॥

॥ दीठी हो प्रभु दीठी जगगुरु तुऊ ॥ ए देशी ॥

॥ मूरति हो प्रभु मूरति अनंत जिणंद, ताहरी हो  
 प्रभु ताहरी मुऊ नयणे वसी जी ॥ समता हो प्रभु  
 समता रसनो कंद, सहेजें हो प्रभु सहेजें अनुभव रस  
 लसी जी ॥ १ ॥ नवदव हो प्रभु नवदव तापित जी  
 व, तेहने हो प्रभु तेहने अमृतघनसमी जी ॥ मि  
 थ्याविष हो प्रभु मिथ्याविषनी खीव, हरवा हो प्रभु  
 हरवा जांगुलि मन रमी जी ॥ २ ॥ जाव हो प्रभु जाव  
 चिंतामणि एह, आतम हो प्रभु आतम संपति आ  
 पवा जी ॥ एहिज हो प्रभु एहिज शिवसुखगेह, तत्त्व  
 हो प्रभु तत्त्वालंबन थापवा जी ॥ ३ ॥ जाये हो प्रभु  
 जाये आश्रव चाल, दीठे हो प्रभु दीठे संवरता वधे

जी ॥ रत्न हो प्रभु रत्नत्रयी गुणमाल, अध्यात्म  
 हो प्रभु अध्यात्म साधन सधे जी ॥ ४ ॥ मीठी हो  
 प्रभु मीठी स्वरत तुऊ, दीठी हो प्रभु दीठी रुचि बहु  
 मानथी जी ॥ तुऊ गुण हो प्रभु तुऊ गुण नासन यु  
 क्त, सेवे हो प्रभु सेवे तसु नव नय नथी जी ॥ ५ ॥  
 नामें हो प्रभु नामें अद्भुत रंग, ठवणा हो प्रभु ठवणा  
 दीठे उल्लसैं जी ॥ गुण आस्वाद हो प्रभु गुण आस्वा  
 द अजंग, तन्मय हो प्रभु तन्मयतायें जे धसे जी ॥ ६ ॥  
 गुणअनंत हो प्रभु गुणअनंतनो वृंद, नाथ हो प्रभु नाथ  
 अनंतने आदरे जी ॥ देवचंद्र हो प्रभु देवचंद्रने आनंद,  
 परम हो प्रभु परम महोदय ते वरे जी ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ पंचदश श्रीधर्मजिनस्तवनं ॥

॥ सफल संसार अवतार ए हुं गणुं ॥ ए देशी ॥

॥ धर्म जगनाथनो धर्म शुचि गाइयें, आपणो आ  
 तमा तेहवो जावियें ॥ जाति जसु एकता तेह पलटे  
 नहिं, शुद्ध गुण पझावा वस्तु सत्तामयी ॥ १ ॥ नि  
 त्य निरवयव बलि एक अक्रिय पणे, सर्व गत तेह  
 सामान्य जावें नणे ॥ तेहथी इतर सावयव विशेष  
 ता, व्यक्तिजेदें पडे जेहनी जेदता ॥ २ ॥ एकता पिं  
 र्मने नित्य अविनाशता, अस्ति निज रुद्धिथी कार्य  
 गत जेदता ॥ जाव श्रुत गम्य अनिजाप्य अनंतता,  
 जव्य पर्यायिनी जे परावर्तता ॥ ३ ॥ क्षेत्र गुण  
 जाव अविजाग अनेकता, नाश उत्पाद अनित्य पर  
 नास्तिता ॥ क्षेत्र व्याप्यत्व अजेद अव्यक्तता, वस्तु

ते रूपथी नियत अचव्यता ॥ ४ ॥ धर्म प्राग्जावता  
 सकल गुण शुद्धता, जोग्यता कर्तृता रमण परिणा  
 मता ॥ शुद्ध स्वप्रदेशता तत्त्व चैतन्यता, व्याप्य व्या  
 पक तथा ग्राह्य ग्राहक गता ॥ ५ ॥ संग परिहारथी  
 स्वामी निज पद लब्धुं, शुद्ध आत्मिक आनंद पद  
 संग्रह्युं ॥ जहवि परजावर्थं हुं नवोदधि वस्यो परत  
 णो संग संसारतायें ग्रस्यो ॥ ६ ॥ तहवि सत्ता गुणें  
 जीवि ए निर्मलो, अन्य संश्लेष जिम फिटक नवि  
 शामलो ॥ जे परोपाधिथो दुष्ट परिणति ग्रही, जाव ता  
 दात्म्यमां माहरुं ते नहीं ॥ ७ ॥ तिणे परमात्म प्रभु  
 नक्ति रंगी थई, शुद्ध कारणरसं तत्त्व परिणति मयी ॥  
 आत्मग्राहक थये तजे पर ग्रहणता, तत्त्व जोगी  
 थये टले परजोग्यता ॥ ८ ॥ शुद्ध निःप्रयास निजजाव  
 जोगी यदा, आत्मक्षेत्रे नही अन्य रक्षण तदा ॥ एक  
 असहाय निस्संग निर्द्वंद्वता, शक्ति उत्सर्गनी होय सद्गु  
 व्यक्तता ॥ ९ ॥ तेणे मुक्त आतमा तुज्यकी नीपजे, मा  
 हरी संपदा सकल मुक्त संपजे ॥ तिणे मन मंदिरें धर्म  
 प्रभु व्याश्यें, परम देवचंड निज सिद्धि सुख पाईयें ॥ १० ॥

॥ अथ षोडश श्रीशांतिजिन स्तवनं ॥

माला किहांढे रे ॥ एदेशी ॥

॥ जगत दिवाकर जगत कृपानिधि, बाढ्हा मारा  
 समवसरणमां बेठा रे ॥ चउमुख चउविह धर्म प्रकासे,  
 ते में नयणें दीठा रे ॥ १ ॥ नविक जन हरखो रे, नि  
 रखी शांतिजिणंद ॥ ज० ॥ उपशमरसनो कंद, नहिं

( ५३३ )

इण सरिखो रे ॥ ए आंकणी ॥ प्रातिहारज अतिश  
य शोना ॥ वा० ॥ ते तो कहिय न जावे रे ॥ घूक  
बालकथी रवि करनरनुं, वर्णन केणि परें थावे रे ॥  
॥ १ ॥ ज० ॥ वाणी गुण पांत्रीश अनोपम ॥ वा० ॥  
अविसंवाद सरूपें रे ॥ नव डुख वारण शिव सुख  
कारण, सूधो धर्म प्ररूपे रे ॥ ३ ॥ ज० ॥ दक्षिण प  
श्चिम उत्तर दिशि मुख ॥ वा० ॥ ठवणाजिन उपगा  
री रे ॥ तसु आलंबन लहिय अनेकें, तिहां थया स  
मकितधारी रे ॥ ४ ॥ ज० ॥ खट नय कारय रूपें ठ  
वणा ॥ वा० ॥ सग नय कारण ठाणी रे ॥ निमित्त  
समान थापना जिन जी, ए आगमनी वाणी रे ॥ ५ ॥  
॥ ज० ॥ साधक तीन निक्षेपा मुख्य ॥ वा० ॥ जे वि  
णु जाव न लहीयें रे ॥ उपगारी डुग जाष्यें जांख्या,  
जाव वंदकनो ग्रहीयें रे ॥ ६ ॥ ज० ॥ ठवणा समव  
सरणें जिनसेंती ॥ वा० ॥ जो अनेदता बाधी रे ॥  
ए आतमना स्वस्वजाव गुण, व्यक्त योग्यता साधी रे  
॥ ७ ॥ ज० ॥ जनुं थयुं में प्रनु गुण गाया ॥ वा० ॥  
रसनानुं फल लीधो रे ॥ देवचंड कहे माहरा मननो  
सकल मनोरथ सीधो रे ॥ ८ ॥ ज० ॥ इति ॥

॥ अथ सप्तदश श्रीकुंथुजिनस्तवनं ॥ चरम  
जिनेसरू ॥ ए देशी ॥

॥ समवसरण बेसी करी रे, बारह परखद मांहि ॥  
वस्तु स्वरूप प्रकाशता रे, करुणाकर जग नाहो रे  
॥ १ ॥ कुंथुजिनेसरू ॥ निर्मल तुळ मुख वाणी रे, जे श्रव

ऐं सुणो॥तेहिज गुणमणि खाणी रे॥कुं०॥ए आंकणी ॥  
 गुण पर्याय अनंतता रे, वली स्वजाव अगाह ॥ नय  
 गम जंग निक्षेपना रे, हेयादेय प्रवाहो रे ॥ १ ॥ कुं० ॥  
 कुंथुनाथ प्रभु देशना रे, साधन साधक सिद्धि ॥ गौण  
 मुख्यता वचनमां रे, ज्ञान ते सकल समृद्धि रे ॥ २ ॥  
 ॥ कुं० ॥ वस्तु अनंत स्वजाव ठे रे, अनंत कथक त  
 सुं नाम ॥ ग्राहक अवसर बोधयी रे, कहेवे अर्पित  
 कामो रे ॥ ४ ॥ कुं० ॥ शीघ्र अनर्पित धर्मने रे, साधे  
 ह्म श्रद्धाबोध ॥ उजय रहित नासन दुवे रे, प्रगटे के  
 वल बोधो रे ॥ ५ ॥ कुं० ॥ ठति परणति गुण वर्तना  
 रे, नासन जोग आनंद ॥ समकालें प्रभु ताहरे रे, र  
 म्य रमण गुण वृंदो रे ॥ ६ ॥ कुं० ॥ निजजावें शी  
 अस्तित्ता रे, परनास्तित्व स्वजाव ॥ अस्तित्पणे ते  
 नास्तित्ता रे, शीय ते उजय स्वजावो रे ॥ ७ ॥ कुं० ॥  
 अस्तित्व स्वजाव जे आपणो रे, रुचि वैराग्यसमेत ॥  
 प्रभु सन्मुख वंदन करी रे, मागिश आत्महेतो रे  
 ॥ ८ ॥ कुं० ॥ अस्तित्व स्वजाव रुचि थई रे, ध्यातो  
 अस्तित्व स्वजाव ॥ देवचंद्र पद ते लहे रे, परमानंद ज  
 मावो रे ॥ ९ ॥ कुं० ॥ इति ॥

॥ अथ अष्टादश श्रीअरजिनस्तवनं ॥ राम  
 चंद्रके बाग ॥ ए देशी ॥

॥ प्रणमो श्री अरनाथ, शिवपुर साथ खरो री ॥  
 त्रिभुवन जन आधार, नव निस्तार करो री ॥ १ ॥ क  
 र्ता कारण योग, कारज सिद्धि लहे री ॥ कारण चार



अनूप, कार्यार्थि तेह ग्रहे री ॥ १ ॥ जे कारण ते का  
 र्य, थाए पूर्ण पदे री ॥ उपादान ते हेतु, माटी घट ते  
 वदे री ॥ ३ ॥ उपादानथी निन्न, जे विणु कार्य न  
 थाये ॥ न दुवै कारज रूप, कर्त्ताने व्यवसाये ॥ ४ ॥  
 कारण तेह निमित्त, चक्रादिक घट जावें ॥ कार्य  
 तथा समवाय, कारण नियत ने दावे ॥ ५ ॥ वस्तु  
 अनेद स्वरूप, कार्यपणुं न ग्रहे री ॥ ते असाधारण  
 हेतु, कुंनें स्थास लहे री ॥ ६ ॥ जेहनो नवि व्या  
 पार, निन्न नियत बहुजावी ॥ जूमि काल आकाश,  
 घट कारण सद्जावी ॥ ७ ॥ एह अपेक्षा हेतु, आ  
 गममांहि कह्यो री ॥ कारण पद उत्पन्न, कार्य थये  
 न लह्यो री ॥ ८ ॥ कर्त्ता आतम इव्य, कारज सिद्धि पणो  
 री ॥ निज सत्तागत धर्म, ते उपादान गणो री ॥ ९ ॥  
 योग समाधि विधान, असाधारण तेह वदे री ॥ विधि  
 आचरणा नक्ति, जिणे निज कार्य सधे री ॥ १० ॥  
 नरगति पढम संघयण, तेह अपेक्षा जाणो ॥ निमि  
 त्तश्रित उपादान, तेहने लेखे आणो ॥ ११ ॥ निमित्त  
 हेतु जिनराज, समता अमृत खाणी ॥ प्रभु अवलंबन  
 सिद्धि, नियमा एह वखाणी ॥ १२ ॥ पुष्ट हेतु अरनाथ,  
 तेहने गुणथी हलियें ॥ रीऊ नक्ति बहुमान, जोग ध्या  
 नथी मलियें ॥ १३ ॥ मोहोटाने उत्संग, बेठाने शी  
 चिंता ॥ तिम प्रभु चरण पसाय, सेवक थया निचिंता  
 ॥ १४ ॥ अर प्रभु प्रभुता रंग, अंतर शक्ति विकासी ॥  
 देवचंडने आनंद, अक्षय जोग विलासी ॥ १५ ॥ इति॥

॥ अथ एकोनविंश श्रीमद्विजिनस्तवनं ॥ देखी कामिनी  
दोय, के कामें व्यापीयो रे के का० ॥ ए देशी ॥

॥ मल्लिनाथ जगनाथ, चरण युग ध्याईयें रे ॥  
॥ च० ॥ शुद्धातम प्राग्जाव, परम पद पाईयें रे ॥  
प० ॥ साधक कारक पदक, करे गुण साधना रे ॥ क० ॥  
तेहिज शुद्ध स्वरूप, थाये निराबाधना रे ॥ था० ॥  
॥ १ ॥ कर्त्ता आतम इव्य, कारज निज सिद्धता रे ॥  
॥ का० ॥ उपादान परिणाम, प्रयुक्त ते करणता रे ॥  
॥ प्र० ॥ आतम संपद दान, तेह संप्रदानता रे ॥ ते० ॥  
दाता पात्रने देय, त्रिजाव अनेदता रे ॥ त्रि० ॥ २ ॥  
स्वपर विवेचन करण, तेह अपादानथी रे ॥ ते० ॥  
सकल पर्याय आधार, संबंध आस्थानथी रे ॥ सं० ॥  
बाधक कारक जाव, अनादि निवारवा रे ॥ अ० ॥ साध  
कता अवलंबी, तेह समारवा रे ॥ ते० ॥ ३ ॥ शुद्ध  
पणे पर्याय, प्रवर्त्तन कार्यमें रे ॥ प्र० ॥ कर्त्तादिक परि  
णाम, ते आतम धर्ममें रे ॥ ते० ॥ चेतन चेतन जाव,  
करे समवेतमें रे ॥ क० ॥ सादि अनंतो काल, रहे  
निज खेतमें रे ॥ र० ॥ ४ ॥ परकर्तृत्व स्वजाव, करे  
तां लगि करे रे ॥ क० ॥ शुद्ध कार्य रुचि नास, थाये  
नवि आदरे रे ॥ थ० ॥ शुद्धातम निज कार्य, रुचि  
कारक फिरे रे ॥ रु० ॥ तेहिज मूल स्वजाव, ग्रहे  
निज पद वरे रे ॥ ग्र० ॥ ५ ॥ कारण कारज रूप,  
अठे कारक दशा रे ॥ अ० ॥ वस्तु प्रगट पर्याय, ए  
ह मनमें वस्या रे ॥ ए० ॥ पण शुद्धस्वरूप ध्यान, ते

( ५१७ )

चेतनता ग्रहे रे ॥ ते० ॥ तव निज साधक जाव, सक  
ल कारक लहे रे ॥ स० ॥ ६ ॥ माहसं पूर्णानंद, प्र  
गट करवा जणी रे ॥ प्र० ॥ पुष्टालंबन रूप, सेव प्रभु  
जी तणी रे ॥ से० ॥ देवचंड़ जिचंड़, जगति मनमें  
धरो रे ॥ ज० ॥ अव्याबाध अगत, अक्षय पद आद  
रो रे ॥ अ० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ विश श्रीमुनिसुव्रतजिनस्तवनं ॥ उलंगडी उलं  
गडी सुहेली हो श्रीश्रेयांसनी रे ॥ ए देशी ॥

॥ उलंगडी उलंगडी तो कीजें श्रीमुनिसुव्रतस्वामि  
नी रे, जेह्यी निज पद सिद्धि ॥ केवल केवल ज्ञा  
नादिक गुण उद्वसे रे, लहीयें सहज समृद्धि ॥ १ ॥  
॥ उ० ॥ उपादान उपादान निज परिणति वस्तुनी रे,  
पण कारण निमित्त आधीन ॥ पुष्ट अपुष्ट दुविध ते  
उपदिश्यो रे, ग्राहक विधि आधीन ॥ २ ॥ उ० ॥ सा  
ध्य साध्य धर्म जेमांही दुवे रे, ते निमित्त अति पुष्ट ॥  
पुष्प पुष्पमांही तिल वासक वासना रे, नवि प्रध्वंसक  
दुष्ट ॥ ३ ॥ उ० ॥ दंम दंम निमित्त अपुष्ट घडा त  
णो रे, नवि घटता तसु मांही ॥ साधक साधक प्र  
ध्वंसकता अढे रे, तिणे नही नियत प्रवाह ॥ ४ ॥  
॥ उ० ॥ खट कारक खट कारक ते कारण कार्यनां रे, जे  
कारण स्वाधीन ॥ ते कर्त्ता ते कर्त्ता सहु कारक ते वसु  
रे, कर्म ते कारण पीन ॥ ५ ॥ उ० ॥ कारण कारण  
संकल्पें कारक दशा रे, ठति सत्ता सदजाव ॥ अथवा  
अथवा तुल्य धर्मने जोयवे रे, साध्यारोपण दाव ॥ ६ ॥

॥ ३० ॥ अतिशय अतिशय कारण कारक करणता  
 रे, निमित्त अने उपादान ॥ संप्रदान संप्रदान कार  
 ण पद जवनथी रे, कारण व्यय अपादान ॥ ७ ॥  
 ॥ ३० ॥ जवन जवन व्यय विष्णु कारज नवि दुवे रे,  
 जिम दृषदे न घटत्व ॥ शुद्धाधार शुद्धाधार स्वगुण  
 नुं इव्य ठे रे, सत्ताधार सुतत्त्व ॥ ८ ॥ ३० ॥ आत्म  
 आत्म कर्ता कारज सिद्धता रे, तसु साधन जिन  
 राज ॥ प्रभु दीठे प्रभु दीठे कारज रुचि उपजे रे,  
 प्रगटे आत्म समाज ॥ ९ ॥ ३० ॥ वंदन वंदन से  
 वन नमन वलि पूजना रे, समरण स्तवन बली ध्या  
 न ॥ देवचंड देवचंड कीजें जिनराजनी रे, प्रगटे पू  
 र्ण निधान ॥ १० ॥ ३० ॥ इति ॥

॥ अथ एकविंश श्रीनमिजिन स्तवनं ॥ पीठोलारी  
 पाल, उजा दोय राजवी रे ॥ ए देशी ॥

॥ श्रीनमिजिनवर सेव, घनाघन ऊनम्यो रे ॥ घ० ॥  
 दीठां मिथ्यारोर, जविक चित्तथी गम्यो रे ॥ ज० ॥  
 श्रुचि आचरणा रीति ते, अत्र वधे वडां रे ॥ ते० ॥  
 आत्म परिणति शुद्ध, ते बीज ऊबूकडा रे ॥ ते बी० ॥ १  
 वाजे वाय सुवाय, ते पावन जावना रे ॥ ते० ॥ इंड  
 धनुय त्रिक योग, ते जक्ति इक मना रे ॥ ते० ॥ नि  
 र्मल प्रभु स्तव घोष, ध्वनि घनगर्जना रे ॥ ध्व० ॥ तृ  
 ण्णा ग्रीष्म काल, तापनी तर्जना रे ॥ ता० ॥ २ ॥  
 शुन लेश्यानी आलि, ते बगपंकति बनी रे ॥ ते० ॥  
 श्रेणी सरोवर हंस, वसे शुचि गुण मुनी रे ॥ व० ॥

( ५१९ )

चञ्जलि मारग बंध, नविक जन घर रह्या रे ॥ न० ॥  
 चेतन समता संग, रंगमें उमह्या रे ॥ रं० ॥ ३ ॥ स  
 म्यक् दृष्टि मोर, तिहां हरखे घणुं रे ॥ ति० ॥ देखी  
 अद्भुत रूप, परम जिनवर तणुं रे ॥ प० ॥ प्रचुगुण  
 नो उपदेश, ते जलधारा बही रे ॥ ते० ॥ धरम रु  
 चि चित्त जूमि, मांहि निश्चल रही रे ॥ मां० ॥ ४ ॥  
 चातक श्रमण समूह, करे तव पारणो रे ॥ क० ॥  
 अनुजव रस आस्वाद, सकल दुःख वारणो रे ॥  
 स० ॥ अशुजाचार निवारण, तृण अंकूरता रे ॥ तृ० ॥  
 विरतितणा परिणाम, ते बीजनी पूरता रे ॥ ते० ॥ ५  
 ॥ पंच महाव्रत धान्य, तणां कर्षण बध्यां रे ॥ त०  
 ॥ साध्य जाव निज थापी, साधनताएं सध्या रे ॥  
 ह्याधिक दरिसण ग्यान, चरण गुण उपना रे ॥ च० ॥  
 आदिक बहुगुण सस्य, आतम घर नीपना रे ॥ आ०  
 ॥ ६ ॥ प्रचुदरिसण महामेह, तणो परवेशमें रे ॥  
 त० ॥ परमानंद सुजिह्, थया मुक्त देशमें रे ॥ थ० ॥  
 देवचंड जिनचंड, तणो अनुजव करो रे ॥ त० ॥ सा  
 दि अनंतो काल, आतम सुख अनुसरो रे ॥ आ० ॥ ७ ॥

॥ अथ द्वाविंशश्रीने मनाथजिन स्तवनं ॥

॥ पद्मप्रनजिन जइ अलगा वस्या ॥ ए देशी ॥

॥ नेमजिणोसर निज कारज करयुं, ठांमयो सर्व  
 विजावो जी ॥ आतमशक्ति सकल प्रगटी करी, आ  
 स्वाद्यो निजनावो जी ॥ १ ॥ ने० ॥ राजुल ना  
 री रे सारी मति धरी, अवलंब्या अरिहंतो जी ॥ उक्त

म संगें रे उत्तमता वधे, सधे आनंद अनंतो जी ॥  
 २ ॥ ने० ॥ धर्म अधर्म आकाश अचेतना, ते विजा  
 ती अग्राह्यो जी ॥ पुजल ग्रहवे रे कर्मकलंकता, वा  
 धे बाधक बाह्यो जी ॥ ३ ॥ ने० ॥ रागी संगें रे रागदशा  
 वधे, थाये तिणे संसारो जी ॥ नीरागीथी रे रागनुं  
 जोडवुं, लहीयें नवनो पारो जी ॥ ४ ॥ ने० ॥ अप्र  
 शस्तता रे टालि प्रशस्तता, करतां आश्रव नासे जी ॥  
 संवर वाधे रे साधे निर्झरा, आतमनाव प्रकासे  
 जी ॥ ५ ॥ ने० ॥ नेमि प्रभु ध्यानं रे एकत्वता, निज  
 तत्त्वं एकतानो जी ॥ शुक्लध्यानं रे साधि सुसिद्धता,  
 लहीयें मुक्ति निदानो जी ॥ ६ ॥ ने० ॥ अगम अ  
 रूपी रे अलख अगोचरू, परमातम परमीशो जी ॥  
 देवचंड जिनवरनी सेवना, करतां वाधे जगीशो जी ॥ ७  
 ॥ अथ त्रयोविंश श्रीपार्श्वजिनं स्तवनं ॥ कडखानी देशी ॥

॥ सहज गुण आगरो, स्वामी सुख सागरो, ज्ञान  
 वैरागरें प्रभु सवायो ॥ शुद्धता एकता, तीक्ष्णता  
 नावथी, मोह रिपु जीति जय पडह वायो ॥ १ ॥  
 ॥ स० ॥ वस्तु निज नाव, अविनास निकलंकता, परि  
 एति वृत्तिता करि अचेदें ॥ नावतादात्म्यता, शक्ति  
 उद्भासथी, संतति योगने तुं उब्बेदें ॥ २ ॥ स० ॥  
 दोष गुण वस्तुनी, लखिय यथार्थता, लहि उदासी  
 नता अपर नावें ॥ ध्वंसितज्ञान्यता, नाव कर्त्तापणुं,  
 परम प्रभु तूं रम्यो निज स्वनावें ॥ ३ ॥ स० ॥ शुन  
 अशुन नाव, अविनास तहकीकता, शुन अशुन

नाव तिहां प्रनु न कीधो ॥ शुद्ध परिणामता, वीर्य  
 कर्ता थई, परम अक्रीयता अमृत पीधो ॥ ४ ॥ स० ॥  
 शुद्धता प्रनु तणी, आत्मनावें रमे, परम परमात्मता  
 तास थाये ॥ मिश्र नावें अढे, त्रिगुणनी जिनता, त्रि  
 गुण एकत्व तुळ चरण थाये ॥ ५ ॥ स० ॥ उपशम  
 रस नरी, सर्व जन संकरी, मूर्ति जिनराजनी आज  
 नेटी ॥ कारणें कार्य निष्पत्ति श्रद्धान ठे, तिणे नव  
 त्रमणनी जीड मेटी ॥ ६ ॥ स० ॥ नयर खंजायतें,  
 पार्श्वप्रनु दर्शनें, विकसते हर्ष उत्साह वाध्यो ॥ हेतु  
 एकत्वता रमण परिणामथी, सिद्धि साधकपणो आ  
 ज साध्यो ॥ ७ ॥ स० ॥ आज कृत पुण्य, धन दीह  
 माहारो थयो, आज नर जनम में सफल नाव्यो ॥  
 देवचंद् स्वामि त्रेवीशमो वंदीयो, नक्ति नर चित्त  
 तुळ गुण रमाव्यो ॥ ८ ॥ स० ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीमहावीरजिन स्तवनं ॥ कडखानी देशी ॥

॥ तार हो तार प्रनु, मुळ सेवक नणा, जगतमां  
 एटलुं सुजश लीजें ॥ दास अवगुण नखो, जाणी  
 पोता तणो, दयानिधि दीन पर दया कीजें ॥ १ ॥ ता० ॥  
 राग द्वेषं नखो, मोह वैरी नज्यो, लोकनी रीतिमां  
 घणुये रातो ॥ क्रोधवश धमधम्यो, शुद्ध गुण नवि र  
 म्यो, नम्यो नवमांहि दुं विषय मातो ॥ २ ॥ ता० ॥  
 आदरयुं आचरण, लोक उपचारथी, शास्त्र अन्यास  
 पण कांई कीधो ॥ शुद्ध श्रद्धान वलि, आत्म अवलंब  
 विनु, तेहवो कार्य तिणे को न सीधो ॥ ३ ॥ ता० ॥

स्वामि दरिसण समो, निमित लही निर्मलो, जो उपा  
 दान ए शुचि न थारो ॥ दोष को वस्तुनो, अहवा उ  
 द्यम तणो, स्वामी सेवा सही निकट लारो ॥ ४ ॥  
 ॥ ता० ॥ स्वामि गुण उलखी, स्वामिने जे नजे, दरि  
 सण शुद्धता तेह पामे ॥ ज्ञान चारित्र तप, वीर्य उ  
 द्वासथी, कर्म जीपी वसे मुक्तिधामें ॥ ५ ॥ ता० ॥ जग  
 त वत्सल, महावीर जिनवर सुणी, चित्त प्रजु चरणने  
 शरण वास्यो ॥ तारजो बापजी, बिरुद निज राखवा,  
 दासनी सेवना रखे जोशो ॥ ६ ॥ ता० ॥ वीनति  
 मानजो, शक्ति ए आपजो, नाव स्याद्वादता शुद्ध ना  
 से ॥ साधि साधक दशा, सिद्धता अनुनवी, देवचंद्र  
 विमल प्रजुता प्रकासे ॥ ७ ॥ ता० ॥ इति ॥

॥ कलश ॥ चोवीसे जिनगुण गाइयें, ध्याइयें तत्त्वस  
 रूपो जी ॥ परमानंद पद पाइयें, अक्षय ग्यान अनूपो  
 जी ॥ १ ॥ चो० ॥ चवदहसैं बावन जला, गणधर गु  
 ण जंमारो जी ॥ समतामधि साहु साहुणी, सावय  
 सावई सारो जी ॥ २ ॥ चो० ॥ वर्द्धमान जिनवर  
 तणो, शासन अति सुखकारो जी ॥ चउविह संघ वि  
 राजतां, दूसम काल आधारो जी ॥ ३ ॥ चो० ॥ जि  
 न सेवनथी ज्ञानता, लहे हिताहित बोधो जी ॥ अ  
 हित त्याग हित आदरे, संयम तपनी शोधो जी ॥  
 ॥ ४ ॥ चो० ॥ अनिनव कर्म अग्रहणता, जीर्ण क  
 र्म अनावो जी ॥ निःकर्मिने अबाधता, अवेदन अना  
 कलनावो जी ॥ ५ ॥ चो० ॥ नावरोगना विगमथी,



( ५३३ )

अचल अक्षय निराबाधो जी ॥ पूर्णानंद दशा लही,  
विलसे सिद्ध समाधो जी ॥ ६ ॥ चो० ॥ श्री जिनचं  
इनी सेवना, प्रगटे पुण्यप्रधानो जी ॥ सुमति सागर  
अति उल्लसे, साधुरंग प्रनुध्यानो जी ॥ ७ ॥ चो० ॥  
सुविहित गङ्ग खरतरवरू, राजसागर उवजायो जी  
॥ ज्ञानधर्म पाठक तणो, शिष्य सुजस सुखदायो जी  
॥ ८ ॥ चो० ॥ दीपचंड पाठक तणो, शिष्य स्तवे जि  
नराजो जी ॥ देवचंड पद सेवतां, पूर्णानंद समा  
जो जी ॥ ९ ॥ चो० ॥ इति देवचंडजी कृत चतुर्विंश  
तिजिन स्तवनं समाप्तम् ॥

॥ अथ खंधकमुनिराजनुं चोढालियुं ॥

॥ ढाल पहेली ॥ नमूं वीर शासन धणी जी, गण  
धर गोयम स्वाम ॥ कथाअनुसारें गायगुं जी, खंधकना  
गुणग्राम ॥ १ ॥ कृमावंतं जोय जगवंतनो जीज्ञान ॥  
॥ ए आंकणी ॥ अति कृमा अधिकी करी जी, संजम  
धारी जी जाना ॥ शिवमारगने कारणें जी, रहेता धरमने  
ध्यान ॥ २ ॥ कृ० ॥ त्वचा उतारी देहनी जी, रहेता  
समताजी जाव ॥ जिनधर्म कीधो दीपतो जी, महोटा ए  
मुनिराव ॥ ३ ॥ कृ० ॥ सावधि नगरी शोजती जी, कनक  
केतु तिहां नूप ॥ राणी मलयासुंदरी जी, खंधक कु  
मर अन्नूप ॥ ४ ॥ कृ० ॥ सघला अंगें सुंदरु जी, इंडी  
नही एक हीण ॥ प्रथम वयें चढती कला जी, चतुर  
कला प्रवीण ॥ ५ ॥ कृ० ॥ विजयसेन गुरु आवी  
या जी, साधु तणो परिवार ॥ ज्ञानगुणें कर आगला

जी, तपसी मारग सार ॥ ६ ॥ ॥ ॥ नर नारि बहु  
 तिहां मिली जी, साधू वांदण कोड ॥ केइ पाला केइ पा  
 लख्यां जी, वंदे होडाहोड ॥ ७ ॥ ॥ ॥ खंधक कुमर  
 पण आवीयो जी, बेगो परखदा मांय ॥ मुनिवर दीधी  
 देशना जी, सघलाने चितलाय ॥ ८ ॥ ॥ ॥ आगारने अण  
 गारना जी, धर्म तणा दोय जेद ॥ समकित सहित व्रत  
 आदरो जी, राखो मुगति उमेद ॥ ९ ॥ ॥ ॥ मान  
 अणी जलबिंदुवो जी, पाकूं पीपल पान ॥ अथिर तन  
 धन ए आउखुं जी, तजो कपट ने मान ॥ १० ॥ ॥ ॥  
 विहडे सुतने बांधवो जी, विहडे सज्जन पर्य ॥ कुटुंब  
 पण विहडे सद्गु जी, नवि विहडे जिनधर्म ॥ ११ ॥  
 ॥ ॥ ॥ आव्यो ठे जीव एकिलो जी, वली एकिलो जी  
 जाय ॥ बांध्यां कर्म जीवें जिस्यां जी, तिस्यां उदय दुवे  
 आय ॥ १२ ॥ ॥ ॥ पुण्यजोगें नरनव लह्यो जी,  
 सदगुरुनो संयोग ॥ हवे टालो राखो मती जी, तजो  
 जहेर जिम जोग ॥ १३ ॥ ॥ ॥ चारु गति संसा  
 रना जी, लग रहि खांचाजी ताण ॥ चल वस्तु सघली  
 कही जी, निश्चल ठे निरवाण ॥ १४ ॥ ॥ ॥ उठा  
 सुखने कारणें जी, गुं द्यो कंमी रांग ॥ नवजव मांहे  
 काढिया जी, नटुवे वाला सांग ॥ १५ ॥ ॥ ॥ अथिर ए  
 सुख संसारनां जी, कांई अलुजो जाल ॥ वचन सुणी  
 सदगुरु तणां जी, चेतो सुरत संजाल ॥ १६ ॥ ॥ ॥ पं  
 चमाहाव्रत आदरो जी, श्रावकनां व्रत बार ॥ कष्ट प  
 ङ्या गाढा रहो जी, जिम पामो नव पार ॥ १७ ॥

६० ॥ धन धान्य घर हाटडी जी, ममता म करोजी  
 कोय ॥ काचा सुखने कारणेजी, हाख्यो जनम म  
 खोय ॥ १८ ॥ ६० ॥ सगपण सहु संसारनां जी,  
 थया अनंतीजी वार ॥ मिल मिलने विठडी गयां जी,  
 करमज लागं लार ॥ १९ ॥ ६० ॥ सगपण सहु  
 संसारनां जी, स्वारथना ठेजी एह ॥ जोस्वारथ पूगे  
 नही जी, तटके तोडे नेह ॥ २० ॥ ६० ॥ नरक  
 निगोदमें दुःख सह्यां जी, ठेदन जेदन स्नेक ॥ तो प  
 ण धोठा जीवने जी, सुरत नहीं ठे रेक ॥ २१ ॥  
 ॥ ६० ॥ उगवाजी मांमी घणी जी, चाडी चुगली  
 जी खाय ॥ करम उदय आयां थकां जी, पडे गलामां  
 आय ॥ २२ ॥ ६० ॥ इस्या दुखें मरपे नही जी,  
 चेतो तुमें नव्य जीव ॥ ज्ञानादिक आराधीने जी, तुमें  
 व्यो मुगतनी नीव ॥ २३ ॥ ६० ॥ दिलमां दया विचा  
 रीने जी, ठांमोजी खांचा ताण ॥ आझा सहित किरिया  
 करो जी, ए जीवित परमाण ॥ २४ ॥ ६० ॥ मुगति तो  
 निश्चें मिले जी, कदा उरे रहे जाय ॥ देवलोक वासो वसें  
 जी, सुख घणां तिण ठाय ॥ २५ ॥ ६० ॥ वाणी  
 सुणि साधु तणी जी, कुमर जोड्या बेहु हाथ ॥ वचन  
 तुमारां सर्दह्यां जी, जली करी कृपा नाथ ॥ २६ ॥  
 ॥ ६० ॥ मातपिताने पूढीने जी, लेशुं संजम नार ॥  
 वलता मुनिवर श्म कहे जी, म करो ढील लगार ॥  
 ॥ २७ ॥ ६० ॥ घरे आवी कहे मातने जी, द्यो अनु  
 मति आदेश ॥ संजम लेई हूं सुखी जी, काटूं करम

कलेश ॥ ३० ॥ ॥ कृ० ॥ वचन सुण्यां सुतनां इस्यां जी,  
 धरणि ठली ठेजी माय ॥ सावधान हुइने करयुं जी, इसी  
 म काढो वात ॥ कुमरजी, संजम विषम अपार ॥ ३१ ॥  
 संजम ठे वच्च दोहिलो जी, जिसी खांमानीजी धार ॥  
 पाय उवराणें चालवुं जी, लेवो शुद्ध आहार ॥ ३० ॥  
 ॥ कु० ॥ सं० ॥ सुवचन कुवचन लोकनां जी, सहणा  
 पडशेजी मार ॥ राजकुमर सुकुमाल ठो जी, एह  
 न करणी सार ॥ ३१ ॥ कु० ॥ सं० ॥ साधपणुं  
 दोहिलुं कहुं जी, तिएमें फेर न कोय ॥ कायरने ठे  
 दोहिलुं जी, शूराने नहि होय ॥ ३२ ॥ कु० ॥ सं० ॥  
 उत्तर पडुत्तर बहु दुवा जी, बाप बेटानेजी माय ॥  
 सूत्रमांहे विस्तार ठेजी, देजो चतुर लगाय ॥ ३३ ॥  
 ॥ कु० ॥ सं० ॥ चितयुं दीधी आगना जी, करी महोटे  
 मंमाण ॥ शिबिकामां बेसाडीने जी, सोंप्यो साधुने  
 आण ॥ ३४ ॥ ॥ कृ० ॥ इष्ट त्यंत वालो दुतो जी, स्वामी  
 महारे ए पुत्र ॥ मरियो जामण मरणथी जी, सोंप्यो  
 तुम कर सुत ॥ ३५ ॥ ॥ कृ० ॥ सिंहपणे व्रत आद  
 रोजी, पालजो सिंहनी जेम ॥ घणुं पराक्रम फोरजोजी,  
 मात पिता कहे एम ॥ ३६ ॥ ॥ कृ० ॥ इम शीखामण  
 देइ करो जी, आया जिण दिशि जाय ॥ खंधकने जत्रे  
 जावशूं जी, दीक्षा दिनी मुनिराय ॥ ३७ ॥ ॥ कृ० ॥  
 आगन्या मागी साधु तणी जी, सूत्र अरथ लिया धा  
 र ॥ जिनकलपी पणुं आदयुं जी, एकलमल अण  
 गार ॥ ३८ ॥ ॥ कृ० ॥ मिनि शिरदार रायने कहुं जी, ए नान

डियोजी बाल ॥ सिंहादिकना जय तणा जी, करवावो  
 रखवाल ॥ ३९ ॥ ॥ ॥ पांचरों जोधा बोलावीने जी,  
 दीया कुमरनेजी लारा ॥ ते साधुने खबर नहि जी, साथें  
 वहे शिरदार ॥ ४० ॥ ॥ ॥ सावधि नगरीशुं  
 चालियो जी, कुंती नगरीजी जाय ॥ नगरी बहिनोई  
 तणी जी, शंक न आणी कांय ॥ ४१ ॥ ॥ ॥ दूहा ॥ पां  
 चेरों तिण अवसरें, खावा पीवा काज ॥ वलो वली च  
 लता रह्या, एकल रह्या मुनिराय ॥ १ ॥ हवे किम कते  
 गोचरी, उपसर्ग व्यापे केम ॥ एकमना थइ सांजलो,  
 मुनी करे ते जेम ॥ २ ॥ ॥ ढाल बीजी ॥ तिण  
 अवसर मुनिराय, कुंति नगरीमांहे, सूकोमल साधु ॥ वि  
 हरण विरियां पांगुस्या ए ॥ १ ॥ वाजे लूवर जाल, दाफे  
 पग सुकमाल ॥ सु० ॥ दो पहेराने तावडे ए ॥ २ ॥  
 निरमोही निरमाय, इंरजा जोवंता जाय ॥ सु० ॥  
 गउ तणी परें गोचरी ए ॥ ३ ॥ सुसत उतावला नांहि,  
 धीरज धरे मनमांहि ॥ सु० ॥ गयवरनी परें मलप  
 ता ए ॥ ४ ॥ राय राणी तिण वार, रमतां पासा सा  
 र ॥ सु० ॥ महेल तले मुनि आविया ए ॥ ५ ॥ प  
 ज्यो हे राणीनी दिछ, खंधक महेलनी हेठ ॥ सु० ॥  
 एतो दुवे माहरो बंधुवो ए ॥ ६ ॥ चिंता आवी पि  
 हीर, नयणें तूटुं नीर ॥ सु० ॥ विरह व्यापी चिंता  
 थई ए ॥ ७ ॥ राजा साहमो जोय, राणी इम किम  
 रोय ॥ सु० ॥ सुखमांहे दुख किम दुवां ए ॥ ८ ॥  
 साधुने जावतो देख, राजाने जाग्यो द्वेष ॥ सु० ॥

ए ए करम एणे कियां ए ॥ ए ॥ राणी हूती सुख  
 मांय, रोवाडी इण आय ॥ सु० ॥ तो ए खबर साधु  
 तणी ए ॥ १० ॥ राय विचारी गैर, जाग्यो पूरव वैर ॥  
 ॥ सु० ॥ पाठल नव काचर तणो ए ॥ ११ ॥ मातुं  
 विचारी राय, मसाण नूमि ले जाय ॥ सु० ॥ त्वचा  
 उतारो एहनी ए ॥ १२ ॥ राजा नफर बोलाय, वेगा  
 जावो धाय ॥ सु० ॥ इण साधुने पकडी लीयो ए ॥  
 ॥ १३ ॥ मत करजो कांइ कांण, ले जायजो सम  
 साण ॥ सु० ॥ सघली खाल उतारजो ए ॥ १४ ॥  
 नफर सुणी इम वाण, करी लीधी परमाण ॥ सु० ॥  
 अजाण चक रा जायने ए ॥ १५ ॥ पकड्या सु  
 निना हाथ, मसाण नूमिले साथ ॥ सु० ॥ खाल  
 उतारवा देहनी ए ॥ १६ ॥ माहरो नही ठे दोष, मुनि  
 म करो कोइ रोष ॥ सु० ॥ मरण्या रुपन समीकरें  
 ए ॥ १७ ॥ मसाण नूमिका मांय, काया दीधी वो  
 सिराय ॥ सु० ॥ चारू आहार त्यागी दीया ए ॥ १८ ॥  
 करडो आवी बन्यो काम, न कह्युं आपणुं नाम  
 ॥ सु० ॥ सगपण को दाख्युं नहि ए ॥ १९ ॥ रा  
 ख्यो समता जाव, संजम ऊपर चाव ॥ सु० ॥ मने  
 करीने मोव्या नही ए ॥ २० ॥ तीखा पाठणानी धार,  
 मसतक ऊपर प्रहार ॥ सु० ॥ खाल उतारी देहनी  
 ए ॥ २१ ॥ पगां सूधी खाल, रहिता संजममां  
 जाल ॥ सु० ॥ नाके सल घाव्यो नही ए ॥ २२ ॥  
 रह्या ते रूडे ध्यान, पाम्यो केवल ज्ञान ॥ सु० ॥ क

( ५३९ )

रम खपावी मुगतें गया ए ॥ १३ ॥ केवल महिमा  
होय, धन धन करे सहु कोय ॥ सु० ॥ जिनमारगकियो  
दीपतो ए ॥ १४ ॥

॥ डहा ॥ कुंती नगरीनी मध्ये, दुवोज हाहाका  
र ॥ देखो राय मरावीयो, विना गुने अणगार ॥ १ ॥  
लोक दुवा सहु आगला, जोर न चाले कोय ॥ मुनिने  
मोक्ष सिधावणो, पण वैर न ठोडे कोय ॥ २ ॥ किम  
बूजे पांचशें सुजट, वलि राणी ने राय ॥ वैर खबर कि  
ए विध पडे, ते सुणजो चित्त लाय ॥ ३ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ धरम हिये धरो ॥ ए देशी ॥ हजी साधु  
आयो नहारे, जोवे पांचशें वाट ॥ जलामण दीनी  
रायजी रे, कृण कृण करे उच्चाटो रे ॥ धन्य महोटा  
मुनी ॥ नित्य कीजें गुण ग्रामो रे ॥ ध० ॥ सीजे सधलां  
कामो रे ॥ १ ॥ ध० ॥ नगर गली फरी जोयता  
रे, किहांइ न दीगो रे साध ॥ सुण्यो साधु माख्यो  
गयो रे, तव परमारथ लाधो रे ॥ २ ॥ ध० ॥ राजा  
पूढे कुण तुमें रे, तव वलता कहे जोध ॥ कनककेतुना  
रजपूत ठां रे, तुमें करी वात अयुक्तो रे ॥ ३ ॥ ध० ॥ खंधक  
कुमर दीक्षा लेइ रे, अमें रखवालाजी लार ॥ सो मुनिवर  
तें मारीयो रे, न सर्री गरज लगार रे ॥ ४ ॥ ध० ॥  
वचन सुणी जोधा तणां रे, राय दुवो दिलगीर ॥ हाहा  
पाप जामां कीयां रे, माख्यो राणीनो वीर रे ॥ ५ ॥  
॥ ध० ॥ राणी वात सुणी तिसें रे, लागो मरम प्र  
हार ॥ मूरठागत धरणी ढली रे, बूटी आंसूडानी धार

रे ॥ ६ ॥ ध० ॥ बंधव नव सफलो कीयो रे, तोछ्या  
 मोहना रे फंद ॥ हुं पापणी किम बूढछुं रे, इम ते करे  
 आक्रंद रे ॥ ७ ॥ ध० ॥ लोहीयें खरडी मुहपती रे, समली  
 भहेलमां राल ॥ बहिन सुनंदा देखीने रे, ऊठे मोहनी  
 जाल रे ॥ ८ ॥ ध० ॥ जिम जिम जाई सांजरे रे, आणे  
 रागने द्वेष ॥ वीरा वेगो आवजे रे, हुं नजरें लेउं देख  
 रे ॥ ९ ॥ ध० ॥ कुण वीरो कुण बहिनडी रे, जोजो  
 मोहनी वात ॥ इण नव सुगति सिधावणुं रे, एम करे  
 विलपात रे ॥ १० ॥ ध० ॥ इम जाणीने मानवी  
 रे, मोह न करशो रे कोय ॥ मोह कियां दुख उपजे रे,  
 करमबंध बहु होय रे ॥ ११ ॥ ध० ॥ सालो सगो न  
 वी जाणीयो रे, तपसी महोदो रे साध ॥ पुरुषसिंह राजा  
 फूरे रे, बहोत लग्यो अपराध रे ॥ १२ ॥ ध० ॥ पां  
 चशें जोधा इम चिंतवे रे, माखो गयो मुनिराय ॥ कनक  
 केतु राजा कने रे, कांइ कहेछुं तिहां जाय रे ॥ १३ ॥  
 ॥ ध० ॥ चारित्र ल्यो हवे चौपछुं रे, किसो सास बीश  
 वास ॥ काल कितो इक जीवणो रे, राखो सुगतिनी  
 आश रे ॥ १४ ॥ ध० ॥ निश्चें करी संजम लीया रे,  
 पांचशें जोधा शिरदार ॥ चोखो पाली सुरगति लही  
 रे, बलि करशे नव पार रे ॥ १५ ॥ ध० ॥ डहा ॥ हवे  
 राजा मन चिंतवे, एहवो खून न कोय ॥ साधु मा  
 रण मन ऊपनुं, ए संशय ठे मोय ॥ १ ॥ इम वि  
 चारी वंदण गयो, साधु नणी कहे एम ॥ विणा गुनहें  
 महोदो मुनि, में माखो कहो केम ॥ २ ॥ ढाल ॥



चोथी ॥ वीर सुणो मोरी वीनतो ॥ ए देशी ॥ साधु  
 कहे राय सांजलो, तूंतो हूतो हो काचरनो जीव ॥  
 ए खंधक मानव हूतो, चतुराई हो धरतो रे अतीव ॥  
 ॥सा०॥१॥ करम न ठोडे केहने, जीखारी हो कुंण  
 राणो राव ॥ कुंण साधुने कुंण चोरटो, जला नूमा  
 हो सहु होवे नाव ॥ २ ॥ क० ॥ पुवला नव इण  
 खंधकें, उतारी हो काचरनी जाल ॥ विचलो गिर का  
 हाडी लीयो, सराय हो घणी करिय कितोल ॥ ३ ॥  
 ॥ क० ॥ पठेहि पठतायो नही, बंध पडियो हो ति  
 ए रे उण गय ॥ तिणे करमें करी खालडी, उतारी हो  
 तें साधूनी राय ॥ ४ ॥ क० ॥ वचन सुणी राय  
 मरपीयो, करमोनी हो घणी विषमी वात ॥ राय राणी  
 दोनूं कहे, घरमांहे हो घडी अफली जात ॥ ५ ॥  
 ॥ क० ॥ पुरषसिंह राजा तिहां, सुनंदा हो राणी सु  
 विनीत ॥ राज ठोडी चारित्र लियो, आराध्यो हो दोनुं  
 रूडी रीत ॥ ६ ॥ क० ॥ करम खपावी मुगतें गयां, व  
 धारी हो जग धरमनी सोह ॥ अजर अमर सुख शा  
 श्वतां, एहवी करणी हो करजो सहु कोय ॥ ७ ॥ क० ॥  
 अठारजें इग्यारोत्तरें, चैत्र मासें हो शुदि सातम जो  
 य ॥ लाडणूं गाम सुखी सदा, उठो अधिको हो मि  
 ढाडुक्कड होय ॥ ८ ॥ क० ॥ इति चोढालियुं संपूर्ण ॥  
 ॥ अथ श्रावक नीचें लखेला त्रण मनोरथने चिं ॥  
 ॥ तवतो माहा मोहोटी निर्झरा करे ॥  
 ॥ संसारनो अंत करे, ते लखियें ठैयें ॥

॥ કિવારેં હું, બાહ્ય તથા અન્યંતર પરિગ્રહ જે માહાપાપનું મૂલ ડુર્ગતિને વધારનારો, કામ, ક્રોધ, માન, માયા, લોચ વિષય અને કષાયનો સ્વામી, માહાદુઃસ્વનું કારણ, મહા અનર્થકારી, ડુર્ગતિની શિલા, માઠી લેશ્યાનો પરિણામી, અજ્ઞાન, મોહ, મત્સર, રાગ અને દ્વેષનું મૂલ, દશવિધ યતિ ધર્મ રૂપ કલ્પ વૃક્ષનો દાવાનલ, જ્ઞાન, ક્રિયા, ક્રમા, દયા, સત્ય, સંતોષ તથા બોધબીજ રૂપ સમકેતનો નાશ કરનારો, સંયમ અને બ્રહ્મચર્યનો ઘાત કરનારો, કુમતિ તથા કુબુદ્ધિરૂપ દુઃસ્વદારિડનો દેવા વાલો, સુમતિ અને સુબુદ્ધિરૂપ સુખસૌનાગ્યનો નાશ કરનારો, તપ સંયમ રૂપ ધનને લૂંટનારો, લોચ ક્લેશ રૂપ સમુદ્ધનો વધારનારો, જન્મ જરા અને મરણનો દેવાવાલો, કપટનો જંદાર, મિથ્યાત્વ દર્શન રૂપ શલ્યનો નરેલો, મોક્ષમાર્ગનો વિગ્નકારી, કડવા કર્મ વિપાકનો દેવાવાલો, અનંત સંસારનો વધારનારો, મહા પાપી, પાંચ ઇંદ્રિયના વિષયરૂપ વૈરીની પુષ્ટિનો કરનારો, મોહોટી ચિંતા શોક ગારવ અને સ્વેદનો કરનાર, સંસાર રૂપ અગાધ વદ્ધિનો સિંચવાવાલો, કૂડ કપટ અને ક્લેશનો આગાર, મોહોટા સ્વેદનો કરાવનારો, મંદબુદ્ધિનો આદર્યો, ઉત્તમ સાધુ નિર્ઘ્રીથોયેં જેને નિંદ્યો છે, અને સર્વ લોકમાં સર્વ જીવોને એના સરિખો બીજો કોઈ વિષમ નથી, મોહરૂપ પાશનો પ્રતિબંધક, સ્ફલોક તથા પરલોકના સુખનો નાશ કરનાર, પાંચ આ

श्रवनो आगार, अनंत दारुण दुःख अनै जयनो देवा  
वालो, महोटा सावद्य व्यापार कुवाणिज्य कुकर्मादा  
ननो करावनारो, अध्रुव, अनित्य, अशाश्वतो, असा  
र, अत्राण, अशरण, एवो जे आरंज अने परिग्रह  
तेने हुं केवारें ठांमीश! जे दिवसें ठांमिश, ते दिवस  
महारो धन्य ठे! ॥ ए प्रथम मनोरथ ॥

१ केवारें हुं मुंम यश्ने दश प्रकारें यतिधर्म धारी,  
नववाडें विशुद्ध ब्रह्मचारी, सर्व सावद्य परिहारी, अ  
णगारना सत्तावीश गुणधारी, पांच समिति त्रण गु  
प्तियें विशुद्धविहारी, मोहोटा अनिग्रहनो धारी, बे  
हेंतालीश दोष रहित विशुद्ध आहारी, सत्तर जेदें संय  
म धारी, बार जेदें तपस्याकारी, अंत आहारी, प्रांत  
आहारी, अरस आहारी, विरस आहारी, लुस्क आ  
हारी, तुह्य आहारी, अंतजीवी, प्रांतजीवी, अरसजी  
वी, विरसजीवी, लुस्कजीवी, तुह्यजीवी, सर्व रस त्या  
गी, षक्कायनो दयाल, निर्लोचनी, निःस्वादी, पंखी तु  
ल्य, वायरानी परें अप्रतिबंध विहारी, वीतरागनी आ  
ज्ञासहित, एहवा गुणोनो धारक जे अणगार ते हुं  
केवारें थईश! जे दिवस हुं पूर्वोक्त गुणवान् थाइश ते  
दिवस धन्य ठे ॥ ए बीजो मनोरथ ॥

२ केवारें हुं सर्व पापस्थानक आलोई, निःशत्रु  
थइ, सर्व जीवराशी खमावीने, सर्व व्रत संजारीने, अ  
ठार पापस्थानकथी त्रिविधें त्रिविधें वोसरने, चारे  
आहार पञ्चस्कीने, शरीरने, ठेहेले श्वासोच्छ्वासें वोस

रावीने, त्रण आराधना आराधतो थको, चार मंगलिक रूप चार शरण मुखें उच्चरतो थको, सर्व संसारने पूंठ देतो थको, एक अरिहंत, बीजा सिद्ध, त्रीजा साधु, अने चोथो केवलि प्ररूपितधर्म, तेने ध्यावतो थको, शरीरनी ममता रहित थयो थको, पादोपगमन संथारा सहित, पांच अतिचार टाळतो थको, मरणने अणवांततो थको, एहवुं पंक्ति मरण अंत काले मुळने कराविश ॥ ए त्रीजो मनोरथ ॥ ३ ॥

ए त्रण मनोरथने श्रावक, मन, वचन अने कायायें करी शुद्धपणे ध्यावतो थको सर्व कर्म निर्झरीने संसारनो अंत करे, मोक्षरूप शाश्वत स्थानक प्रत्यें पामे ॥

॥ अथ वसंत धमाल वगेरे होरीमां गावानां पद प्रारंभ ॥ तत्र प्रथम वसंत ॥

॥ ए ऋतु रूडी रूडी माहारा वाला, रूडो मास वसंत ॥ रूडो समकित केसू फूल्यो, गुंजत मधुकर संत माहारा वाला ॥ ए० ॥ १ ॥ संवेग रंग पखाव ज बाजे, डुविध दया कर नाल ॥ उपशम जर पिचकारी मारी, नवनिरवेद्य गुलाल माहारा वाला ॥ ए० ॥ २ ॥ आस्तिक आप सुबागमें बेठे, खेलत खेल रसाल ॥ ज्ञान उद्योत प्रभु फगुआ मांगत, दीजें शांति कृपाल माहारा वाला ॥ ए० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ धमाल ॥

॥ सुमति सदा सुख दाई हो, खेलन आई होरी ॥ खेलन आई प्यारे खेलन आई ॥ सुमति० ॥ ए टे

क ॥ पूर्णानंद सुखद पियु संगें, सब सखीअन मि  
लाई हो ॥ खेल० ॥ निज गुन बागमें सहज बसंतें,  
मौज मचा मन जाई हो ॥ खेल० ॥ १ ॥ ध्यान स  
माधि जवनमें बेठे, रस जरी खेले गोसाईं हो ॥ खेल० ॥  
प्रभु आणा शिर ठत्र बिराजे, बिहुं नय चमर ढला  
ई हो ॥ खेल० ॥ २ ॥ आगम वचन संगीते बहुगम,  
वाजित्र विविध बजाई हो ॥ खेल० ॥ शान्ति सुधारस  
प्याले पीवत, आनंद लील जमाई हो ॥ खेल० ॥ ३ ॥  
या विध पीउ प्यारी मिलि खेलत, सब सुख संपत्ति  
पाई ॥ खेल० ॥ जानुचंद प्रभु पास पसायें, शिव सुख-  
हर्ष वधाई हो ॥ खेल० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ राग धमाल ॥

॥ होरी खेलावत कानईयां, नेमीसर संगें ले न  
ईयां ॥ ए आंकणी ॥ रेवत गिरि पर एकठा मिले  
सब, सहस बत्रीश अंतेंउरीयां ॥ होरी० ॥ १ ॥  
कोई संग पिचकारी लीए कोई, अबिर गुलालसैं जोरी  
जरईयां ॥ हो० ॥ २ ॥ नेमकुमर खेले उत होरी,  
विवाह मनावत गोपी मिलईयां ॥ हो० ॥ ३ ॥ मौन  
रह्या प्रभु बात विचारी, परणो देवर नारी जलईयां ॥  
॥ हो० ॥ ४ ॥ तोरण आवी पशुआं बुडावत,  
राजुल नारी विचार करईयां ॥ हो० ॥ ५ ॥ मुक्ति  
धूतारी शोक्य हमारी, इनसैं क्युं मेरो चित्त जलईयां ॥  
॥ हो० ॥ ६ ॥ सहसावन जई संयम लीनो, शुक्ल  
ध्यानसैं केवल पईयां ॥ हो० ॥ ७ ॥ नेम राजुल

( ५४६ )

दोए मुक्ति सिधाए, रूप कहे हम लेत बलईयां ॥  
॥ हो० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ राग वसंत ॥

॥ नहीरे नाहार नवरंग बनायो, अपने नेमजीको  
घर रे ॥ १ ॥ हारे नहीं रे नाहार० ॥ ए टेक ॥  
आंबो मोखो केसू फूल्यां, फूल्युं सघलुं वन रे ॥ हां० ॥  
॥ २ ॥ उपशम रसको रंग जयो हे, अबिर अरगजा  
घर रे ॥ हां० ॥ ३ ॥ पंच समिति खेले सब सहोयो,  
शील सदाकों घर रे ॥ हां० ॥ ४ ॥ रास मच्यो हे  
— शुनमति सखीको, कुमति सखीकों घर रे ॥ हां० ॥  
॥ ५ ॥ फगुआ दो जर जोली अविचल, माहानंदको  
घर रे ॥ हां० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ राग धमाल ॥

॥ वामा नंदन अंतर जांमी, जीवन प्राण आ  
धार ललना ॥ दरिअण देखी ताहारुंहो, सफल कखो  
अवतार ॥ मन मोहन गोडी पासजीहो, अने हो  
मेरे ललना, तुम समो नहि कोई देव ॥ मन० ॥  
॥ १ ॥ तुम साथें मुऊ प्रेम बन्यो हे, न गमे बीजानो  
संग ललना ॥ तुम पसायें पामीयें हो, अति घणो उ  
त्सव रंग ॥ म० ॥ २ ॥ अमने मोटी होंश मुक्तिनी, ते  
आपो मुऊ स्वामि ललना ॥ तुं प्रभु सुरतरु सारिखो  
हो, पूरण वंछित काम ॥ म० ॥ ३ ॥ महेर घणी प्रभु  
राखीयें हो, शुं कहुं वारो वार ललनां ॥ नेह कीधो तु  
मशुं खरो हो, नवि जाऊं बीजे दरबार ॥ म० ॥

॥ ४ ॥ जिहां तिहां संग न कीजियें हो, रहीयें सहेजा  
नंद ललना ॥ नित्यलान कहे प्रभु सेवियें हो, लीजियें  
शिवसुख कंद ॥ म० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ धमाल ॥

॥ नयरी वणारसी जाणीयें हो, अश्वसेन कुल चं  
द ललना ॥ वामानंदन वंदीयें हो, पासजी सुरतरु कं  
द ॥ परमेश्वर नित्य गुण गाइयें हो, अहो मेरे ललना  
गावत शिवसुख पाइयें हो ॥ १ ॥ ए टेक ॥ फणि  
धर लंठन नव कर जिनजी, सबल घनाघन सार  
ललना ॥ संयम लेई शत तीनशुं हो, सवि कहे तुं  
धन्य धन्य ॥ पर० ॥ २ ॥ वरस शत एक आउखुं  
हो, सीधा समेत गिरीश ललना ॥ शोल सहस मुनी  
तुम तणा हो ॥ समणी सहस अडत्रीश ॥ पर० ॥  
॥ ३ ॥ धरणीधर पदमावती हो, प्रभु शासन रख  
वाल ललना ॥ रांग सोग संकट टले हो, नाम ज  
पतो जयमाल ॥ पर० ॥ ४ ॥ पास आश पूरो अब  
मेरी, अरज एक अवधार ललना ॥ श्रीनयविजय वि  
बुध पसायथी हो, जस कहे नवजल तार ॥ पर० ॥ ५ ॥

॥ राग वसंत ॥

॥ श्रीचिंतामणि पास प्रभु तारा, मंदिर बरसे रंग  
रे ॥ ए टेक ॥ ग्यान गुलाल अबिर उडावत, समता  
नीर सुचंग रे ॥ श्रीचिं० ॥ मंदिर० ॥ १ ॥ अनुनव  
लहेर फूली फूलवाडी, फबकती नव नव रंग रे ॥  
॥ श्री० ॥ २ ॥ उपशम वाधा अंग अनोपम, शुक्ल

( ५४७ )

ध्यानसें चंग रे ॥ श्री० ॥ अमरचंद चिंतामणि चित्तध  
र, लागो अविहड रंग रे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ काफी होरी ॥

॥ ऐसैं होरी तो होय रही चंपा नगरीमें, फागुनके  
दिन आए ॥ ऐमें० ॥ ए टेक ॥ वासपूज्यजीके नव  
ल मंदिरमें, होई रही हो सुखदाई ॥ ऐमें० ॥ १ ॥  
केसर घोली जरी रे कचोली, प्रनु पूजो जले जावें ॥  
ऐमें० ॥ २ ॥ अनुपम प्रेम पिचरकी अदनुत, ना  
वना अवीर सुवासे ॥ ऐमें० ॥ ३ ॥ परमानंद पर  
म सुख दायक, कीरति जग कहाय ॥ ऐमें० ॥ ४ ॥

॥ राग काफी होरी ॥

॥ आदिजिनेसर प्रनुजी, साहिव तेरी रे, जाउं  
में बलिहारी ॥ आ० ॥ ॥ ए टेक ॥ नानिके नंदन पाप  
निकंदन, तीन नवन हितकारी रे ॥ जाउं में बलिहारी ?  
सिद्धगिरि सोहन जिन मन मोहन, पेखत मूरति प्या  
री रे ॥ जा० ॥ १ ॥ पूर्व नवाणुं वार प्रनुजी, रह्या  
रायण निरधारी रे ॥ जा० ॥ २ ॥ जात्रा नवाणुं  
कीनी युक्ते, दुर्गति दूर निवारी रे ॥ जा० ॥ ३ ॥ अठार  
अठावन चैत्री पूनम, जात्रा नवाणुं जुहारी रे ॥ जा० ॥  
॥ ५ ॥ सुरत संघ सदा सुखदाता, कहत कल्याण जय  
कारी रे ॥ जा० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ राग काफी होरी ॥

॥ नेमि निरंजन ध्यावो रे, वनमें तप कीनो ॥  
नेमि० ॥ सहसावनकी कुंज गलनमें, पंचमहाव्रत ली



नो रे ॥ वनमें० ॥ १ ॥ उपशम अबिर गुलाल उ  
डावत, खेलत नेम नगीनो रे ॥ वनमें० ॥ २ ॥ रेव  
त गिरि पर इकठा मिले सब, सहस वत्रीशे लीनो  
रे ॥ वनमें० ॥ ३ ॥ आत्मग्यानकी जरी पिचकारी,  
प्रभु लहे ज्ञान नगीनो रे ॥ वनमें० ॥ ४ ॥ रूप  
चंदए प्रभु गुण गावत, नेम राजुल शिव लीनो रे ॥  
॥ वनमें० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ धमाल ॥

॥ सोरीपुर नगर सोहामणुं हो, समुद्र विजयराजें  
६ ॥ शिवादेवी राणी तेहनो हो, अंगज नेम जिणंद,  
वृंदावन फाग सोहामणो हो ॥ अहो मेरे ललना,  
गावत नेम जिणंद ॥ वृं० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ समुद्र  
विजयको चातलो हो, श्रीवसुदेवकुमार ॥ जास सो  
हाग गुणें करी हो, मान तजै हरि हार ॥ वृं०  
॥ २ ॥ बहुतेर सहस त्रिया रस रसधर, मधुकर  
सुख मकरंद ॥ अंगज सकज अठे तस दोउ, गुण  
नद्या राम गोविंद ॥ वृं० ॥ ३ ॥ सोल सहस गोपी  
मनमोहन, मनोहर रूप मोरार ॥ मेवश्याम मुरली  
जैनीके, बाजत वेणुविशाल ॥ वृं० ॥ ४ ॥ चंग मृदंग  
उपंग बजावत, गावत हे बृजनार ॥ नेम कुमर हल  
धर गिरिधरमिल, करत हे केलि अपार ॥ वृं० ॥ ५ ॥  
टोलें मिली मिली तान मचावत, जीतत सुरजी गु  
लाल ॥ मारत केसर कमल पिचकारी, रंग करत हे  
नर नार ॥ वृं० ॥ ६ ॥ अजब लाल तनु वेष बन्यो हे,

नयन लाल मुख लाल ॥ पंच पीतांबर उठत नीके,  
जादव ठेल ठोगाल ॥ वृं० ॥ ७ ॥ अंबअंब कोकिलरव  
आलापित, गावत गीत रसाल ॥ चढी कदंब  
श्रीकृष्ण बजावे, मधु बसंतकी ढाल ॥ वृं० ॥ ८ ॥  
नटिका नंदी करुणानिधि, हरिकुल पंकज जाण ॥  
करत केलि श्रीनेम मुरारी, रवि शशि उपमा आण ॥  
॥ वृं० ॥ ९ ॥ यादव कुमर जळे एकेकथे, गुणवंत  
अरु रूपवंत ॥ नेमीसर सखि नही कोई, त्रिभुवनके  
ठलवंत ॥ वृं० ॥ १० ॥ वृंदावनमें एणिपरें खेलत,  
सब यादवके वृंद ॥ नेमीसर जिनचंद पसायें, प्रत्यक्ष  
परमानंद ॥ वृं० ॥ ११ ॥ इति ॥

॥ अथ प्रजाति स्तवनं ॥

॥ जाग जाग जीव तुं, कठ थयो प्रजात रे ॥ प्रभु  
जीको नाम जज, पावे ज्युं शिव सात रे ॥ जा० ॥ १ ॥  
पूरव दिशि उदित सूर, धरि प्रवाल रंग गात रे ॥ विबु  
धवृंद पठत पाठ, नाठ गई ठे रात रे ॥ जा० ॥ २ ॥  
मोह गहेली नींद ठांमी, दूर करि मिथ्यात रे ॥ सुगुरु  
वचन बोध करि, धर्मशुं धरि धात रे ॥ जा० ॥ ३ ॥ दान  
शील तपो जाव, जावनशुं बहु जांत रे ॥ चार मंगल  
चार बुद्धि, होत नामथी विख्यात रे ॥ जा० ॥ ४ ॥ पंच पद  
को ध्यान करी, गुणियल गुण गात रे ॥ आपहीमें दोष  
देखि, टाल पराई तांत रे ॥ जा० ॥ ५ ॥ चरण करण विवेक  
शुद्ध, मनहुं करि थिर शांत रे ॥ कहत मुनि मल्लक चंद,  
होत सदा सुख शात रे ॥ जा० ॥ ६ ॥ इति आत्मशीक्षापद ॥

॥ अथ पुंमगिरि स्तवन प्रारंभः ॥

॥ वीरजी आया रे विमलाचलके मेदान, सुरपति  
जाया रे, समवसरण मंदाण ॥ ए आंकणी ठे ॥ देश  
ना देवे वीरजी स्वाम, शत्रुंजय महिमा वरणवे ताम ॥  
जाखे आठ उपर सो नाम, तेहमां जांख्युं रे, पुंमरगिरि  
अनिधान ॥ सोहम इंदो रे, तव पूढे बहु मान ॥ किम  
थयुं स्वामी रे, जांखो तास निदान ॥ वीर० ॥ १ ॥  
प्रभुजी जाखे सांजल इंद, प्रथम जे दुआ रूषन जिणं  
द ॥ तेहना पुत्र ते जरत नरिंद, जरतना दुआ रे रूष  
नसेन पुंमरिक ॥ रूषनजी पासें रे, देशना सुणी ते  
उत्तंग ॥ दीक्षा लीधी रे, त्रिपदी ज्ञान अधिक ॥ वीर० ॥  
॥ २ ॥ गणधर पदवी पाम्या जाम, द्वादश अंगी गुंथी  
अनिराम ॥ विचखा महियलमां गुण धाम, अनु  
क्रमें आव्या रे श्रीसिद्धाचल सार ॥ मुनिवर कोडि रे,  
पांच तणे परिवार ॥ अनशन कीधुं रे, निज आतमने  
उपगार ॥ वीर० ॥ ३ ॥ तेणे ए प्रगट पुंमरगिरि नाम,  
सांजल सोहम देवलोक स्वाम ॥ एहनो महिमा अ  
तिहि उदाम, इणेदिन कीजें रे, तप जप पूजा ने  
दान ॥ व्रत वली पोसो रे, जेह करे निदान ॥ फल  
तस पामे रे, पंच कोडी गुण मान ॥ वीर० ॥ ४ ॥  
चैत्री पूनम दिवसें जेह, पाम्या केवल ज्ञान अढेह ॥  
शिव सुख वरिया अमल अदेह ॥ पूर्णानंदी रे, अगुरु  
लघु अवगाह ॥ अज अविनाशी रे, निजगुण नोगी  
अबाह ॥ निज गुण करता रे, पर पुजल नही चाह ॥

॥वीर०॥५॥ नक्तें नव्य जीव जे होय, पंच नवें मु  
क्ति लहे सोय ॥ एहमां बाधक ठे नही कोय, व्यव  
हार केरी रे, मध्यम फलनी ए वात ॥ उत्कृष्टे योगें रे,  
अंतरमुहूर्त विख्यात ॥ शिव सुख साधे रे, आतमने अ  
वदात ॥ वीर० ॥ ६ ॥ चेत्री पूनम महिमा देख, पू  
जा पंच प्रकार विशेष ॥ तेंहमां ऊणिम नही कांइ रे  
ख, इणी परें नांखे रे, जिनवर उत्तम वाण ॥ सांनली  
बूझा रे, केइक नविक सुजाण ॥ इणि परें गाया रे,  
पइमविजय सुप्रमाण ॥ वीर० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ प्रस्ताविक दोहा कवित्त सवैया वगेरे प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥ सत्य म ठोडीश चतुर नर, लढी चिहु  
गणि होय ॥ सुख दुःख रेखा कर्मकी, मेट न शके कोय  
॥ १ ॥ हिंसा दुखनी वेलडी, हिंसा दुखनी खाण ॥ जीव  
अनंत नरकें गया, हिंसा तणे प्रमाण ॥ २ ॥ दया ते  
सुखनी वेलडी, दया ते सुखनी खाण ॥ जीव अनं  
त स्वर्गें गया, दया तणे परिमाण ॥ ३ ॥ जीव मा  
रंतां नरक ठे, राखंतां ठे सग्न ॥ ए बेहू ठे वाटडी, जि  
ण जावे तिण लग्न ॥ ४ ॥ विण कपास कपडुं नही,  
दया विना नहि धर्म ॥ पाप नही हिंसा विना, बूजो  
एहज मर्म ॥ ५ ॥ धन वंढे एक अधम नर, उत्तम  
वंढे मान ॥ ते थानक सहु ठंढीयें, जिहां लहियें अप  
मान ॥ ६ ॥ बार बुलावण बेसणुं, बीडी बेकर जो  
ड ॥ जिणघर पांच बड्वा नहि, ते घर दूरे ठोड ॥ ७ ॥  
ठप्पय ॥ हरखे किशुं गमार, देखि धन संपत ना

री ॥ प्रौढ पुत्र परिवार, लोकमांहे अधिकारी ॥ यौव  
न रूप अनूप, गर्व मनमांहे नमावे ॥ करतो मोडा मो  
ड, जगत तृण सरिखो जावे ॥ अखियां मूढ देखे न  
ही, आज काल मरवुं अढे ॥ जिनहर्ष समज रे प्रा  
णीया, नहितर दुःख पामीश पढें ॥ १ ॥ लंक सरी  
खी पुरी, विकट गढ जास डुरंगम ॥ पाखली खाई स  
मुड, जां पढुंचे नही विहंगम ॥ विद्याधर बलवंत,  
खंम त्रण केरो स्वामी ॥ सेव करे जसु देव, नवग्रह  
पाये नामी ॥ दशकंध वीश जुजा लहे, पार पाखें सेना  
बहु ॥ जिनहर्ष राम रावण हाण्यो, दिन पलटयो प  
लटया सहु ॥ २ ॥ सवैयो ॥ रूप घटयो रस रंग घ  
टयो, नघटयो मन पाप विकारनथें, तेज घटयो तरु  
णाप घटयो न घटयो, चित्त कामविलासनथें ॥ सा  
र घटयो अब सीर घटयो, न घटयो चित्त लोचन रसा  
यनथें, नइसेन कहे जुग जात घटयो, न घटयो कोउ  
क्रोध कपायनथें ॥ १ ॥

॥ कवित्त ॥ पहेलुं सुख जे दीजें नरा, बीजुं सुख जे घर  
दीकरा ॥ त्रीजुं सुख जे रुण विण वरा, चोथुं सुख जे  
पोतें घरा ॥ पांचमुं सुख जे नक्ति नारि, षडुं सुख जे  
प्रतिष्ठा बार ॥ सातमुं सुख जे आंगण जुत्त, पुण्यें ल  
हीयें ए घरसुत्त ॥ १ ॥ पहेलुं सुख जे न जईयें गा  
म, बीजुं सुख जे वसीयें ठाम ॥ त्रीजुं सुख जे माने नू  
प, चोथुं सुख जे रूप सरूप ॥ पांचमुं सुख जे इहा  
यें रमें, षडुं सुख जे वेळो जमे ॥ कवि कहे सातमुं

सुख गमे, सकल लोक घर आवी नमे ॥ १ ॥ पहेलुं  
 दुःख पडोशी चाड, बीजुं दुःख घर उगुं जाड ॥ त्री  
 जुं दुःख नित सहियें मार, चोथुं दुःख जे नजरें आ  
 हार ॥ पांचमुं दुःख पाजा चालवुं, ठहुं दुःख नित  
 नित मागवुं ॥ कवि कहे मांचे माकड बहु, ए साते  
 दुःख सुणजो सहु ॥ २ ॥ पहेलुं दुःख जे परनी आ  
 श, बीजुं दुःख जे उठो वास ॥ त्रीजुं दुःख जे बहु  
 रुण चडे, चोथुं दुःख परने वश पडे ॥ पांचमुं दुःख  
 जे न टले रोग, वांठयो न मले जेहने जंग ॥ कवि  
 जन कहे नित्य खाखुं नीर, ए साते दुःख सहे शरीर ॥ ४ ॥

॥ गुणविन निसी कबाण, ज्ञान विन ब्रह्म योगी  
 सर ॥ पति विण जुवती नेह, दीप विन अनुपममंदिर  
 ॥ जूण विना रसवती, पत्र विन जिस्यां तरुव  
 र ॥ वदन नेत्र विहूण, नीर विण सार सरोवर ॥ वि  
 द्या चतुराई विन, चंड विना रजनी जिसी ॥ विनयमेर  
 गणि इम कहे, तिम दान विना लह्मी किसी ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥ ते अजाण्यां माणसां, रूपें जे राचंत ॥  
 दीप ज्योति पतंग जिम, पंख सहित दाजंत ॥ १ ॥ नर  
 जो कडवां तुंबडा, गुणे करीने मीठ ॥ ते माणस के  
 म वीसरे, जेह तणा गुण दीठ ॥ २ ॥ राति गमाई  
 सोवते, दिवस गमाया खाय ॥ हीरा जैसा मनुष्य न  
 व, कवडी बदलें जाय ॥ ३ ॥ पठन गुनख कवि चा  
 तुरी, ए तीनो बातां सहेज ॥ काम दहन मन बस क  
 रन, गगन चढन मुसकेज ॥ ४ ॥ प्रीत जली पंखेरु

आ, उड़ी जेह मिलंत ॥ माणस परवश बापडां, दूर  
 रह्यां फूरंत ॥ ५ ॥ संपति सहु वेंचे मली, विपत्ति न  
 वेंचे कोय ॥ संगत उनकी कीजीयें, जांग्या जेरु होय  
 ॥ ६ ॥ सर सूके सूके कमल, पंखी दह दिसी  
 जंत ॥ आपणा सोही आपणा, पर आपणा न हुं  
 त ॥ ७ ॥ सज्जन ऐसा कीजियें, जैसा ज्वारिकाखेत ॥  
 थडे कटे टोचे लणे, तो धरा न मेले हेत ॥ ८ ॥ स  
 ज्जन ऐसा कीजीयें, जामें लखन बत्तीस ॥ जीड पडे  
 नाजे नहीं, सूपे अपनो सीस ॥ ९ ॥ सो सज्जन  
 लख मित्र कर, ताली मित्र अनेक ॥ सुख दुःख  
 जासुं कीजियें, सो लाखूंमें एक ॥ १० ॥ सज्जन ऐसा  
 कीजीयें, जैसी निशि उर चंद ॥ चंद बिना निशि  
 आंधली, निशि बिनु चंदा अंध ॥ ११ ॥ केबिध चतु  
 रकूं धन दीयो, के चतुराई लइतीन ॥ एक चतुर और  
 निर्धना, दोनुं दुःख क्या कीन ॥ १२ ॥ इति ॥

॥ अथ आत्महित स्वाध्याय ॥ वालम ॥

॥ वेहेलारे आवजो ॥ ए देशी ॥

॥ माहारुं माहारुं म कर जीव तुं, जगमां नहीं ता  
 हरुं कोय रे ॥ आप सवारथें सहु मळ्या, हृदय वि  
 चारीने जोय रे ॥ माहारुं ० ॥ १ ॥ दिन दिन आयु  
 घटे ताहारुं, जिम जल अंजलि होय रे ॥ धर्म वेला  
 नावे टूकडो, कवण गति ताहारी होय रे ॥ माहारुं ० ॥  
 ॥ २ ॥ रमणीशुं रंगें राचे रमे, कांई लीये बावल  
 बाथ रे ॥ तन धन यौवन थिर नहीं, परजव नावे

तुज साथ रे ॥ माहरुं० ॥ ३ ॥ एक घेर धवल मंगल  
 हुवे, एक घेर रोवे बहु नार रे ॥ एक रामा रमे कं  
 तशुं, एक ठोडे सकल शणगार रे ॥ माहरुं० ॥ ४ ॥  
 एक घर सहु मली बेसतां, नित नित करता वि  
 लास रे ॥ ते रे साजनीयो उठी गयो, थिर न रह्यो  
 एक वास रे ॥ माहरुं० ॥ ५ ॥ एहवुं स्वरूप संसारुं,  
 चेत चेत जीव गमार रे ॥ दश दृष्टांतें रे दोहिजो,  
 पामवो मणुअ अवतार रे ॥ माहरुं० ॥ ६ ॥ हर्षेवि  
 जय कहे एहवुं, जे नजे जिनपद रंग रे ॥ ते नर  
 नारी वेगें वरे, मुक्ति वधू केरो संग रे ॥ मा० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ नेमजीना बार मास प्रारंभः ॥

॥ स्नेही वीरजी जयकारी रे ॥ ए देशी ॥

॥ चैत्र मासें ते चतुरा चिंत रे, नेम जई वस्या  
 एकांत रे, मननी किम जांगे भ्रांत ॥ दयालु नेमजी  
 दिल वसीयो रे, एतो शिवरमणीनो रसीयो ॥ दया० ॥  
 ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ वैशाखें वनिता विलखे रे,  
 दुःख देखीने मनहुं कलखे रे, पीयु मलवाने तनहुं  
 तलखे ॥ दयालु० ॥ २ ॥ जेठें योवनें युवती लाजे  
 रे, तडका लुऊना वाजे रे ॥ विरही दील जींतर दा  
 जे ॥ दयालु० ॥ ३ ॥ अबला एकेली आषाढें रे,  
 वेलडी वलगी ठे वाडें रे ॥ कस्य पंखीयें माला जा  
 डें ॥ दयालु० ॥ ४ ॥ श्रावण सुंदर सोजागी रे, व  
 रसे ऊरमर ऊरमर ऊड लागी रे ॥ पिक मोर मधुर  
 स्वर रागी ॥ दयालु० ॥ ५ ॥ नली नामिनी नाइव



मासैं रे, पीयुने मलवानी आशैं रे ॥ दिन रेन गमे  
 वीशवासैं ॥ दयालु० ॥ ६ ॥ आशोयें तो अबनी उपे  
 रे, तरुणीर्न शोना लोपे रे ॥ राणी राजुल रतीय  
 न कोपे ॥ दयालु० ॥ ७ ॥ कहे कार्तिक कामिनी  
 काती रे, पीयु विरहें दाधी नाती रे ॥ दीसे गुंजा  
 तणी पेरें राती ॥ दयालु० ॥ ८ ॥ मागशिरें माननी  
 मदमाती रे, कोकिल सम कंठें गाती रे ॥ दीपे क  
 नकलता तनु नाती ॥ दयालु० ॥ ९ ॥ पोपें प्रेम  
 सवायो कीजें रे, अबलानो अंत न लीजें रे ॥ उप  
 शम रस अमृत पीजें ॥ दयालु० ॥ १० ॥ साहा स  
 हिने मनोहर नारी रे, उग्रसेन धूआ कनी सारी रे ॥  
 वालम तमें जूठ विचारी ॥ दयालु० ॥ ११ ॥ फाल  
 गुणें केशुवन फलीयां रे, नेमजी राजुलने मलीया  
 रे ॥ नव जवनां पातक टलीयां ॥ दयालु० ॥ १२ ॥  
 वार मास जली परें गाया रे, आज अधिकानंदमें पाया  
 रे ॥ राज रतन रसुल पुर गाया ॥ दयालु० ॥ १३ ॥ इति ॥

॥ अथ नेमजीना साते वार ॥ देशी उपरनी ॥

॥ रविवारें ते हो रढीयाला रे, आदित्यनी आक  
 री जाला रे ॥ एम राजिमती कहे बाला ॥ प्रभुजी  
 मानियें अरदास रे, विसारी न मूको निराश ॥ प्रभु०  
 ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ सोम शोल कलायें ठे पूरो रे,  
 शशी चंद नहीं अधूरो रे, ॥ ते माटे चिंता चूरो ॥  
 ॥ प्रभु० ॥ २ ॥ जोम मंगल जाग्य निधान रे, जेणें  
 दूर कछुं अनिमान रे ॥ नमीयें नेमजी जगवान ॥

॥ प्रभु० ॥ ३ ॥ बुद्धे प्रभुबोध वधाख्यो रे, जेणें संसार  
रनो नय वाख्यो रे, नव्य जीवने पार उताख्यो ॥

॥ प्रभु० ॥ ४ ॥ गुरुयी बृहस्पति हाख्यो रे, जेणे मोह  
मत्सर मद माख्यो रे ॥ जीवने जम नयथी उगाख्यो ॥

॥ प्रभु० ॥ ५ ॥ नृगु शुक्रथकी नय जागा रे, जिम  
नाहर आगें ठागा रे ॥ निज थानक जोवा लागा ॥

॥ प्रभु० ॥ ६ ॥ शनिश्चर चीड कहीजें रे, स्थिरथानक  
वास लहीजें रे ॥ प्रभु गुण अवगुण परखीजें ॥

॥ प्रभु० ॥ ७ ॥ सात वार ए राजुल राणी रे, कहें  
राजरतन एम वाणी रे ॥ प्रभु गुण गाये सुखिया

प्राणी ॥ प्रभु० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ राजुजनी पंदर तिथि प्रारंभः ॥ देशी उपरनी ॥

॥ पडवे पियु प्रीतज पालो रे, प्रेमदाखुं अबोला  
टालो रे ॥ नेह करीने नजरें जालो ॥ मनोहर मलबुं

सुधारस तोलें रे, राणी राजुल एणि पेरें बोले ॥ मनो  
हर ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ बीजें बीजो नेह न कीजें

रे, ठोगाला ठेह न दीजें रे ॥ खोटी वातनो अंत न  
लीजें ॥ मनो० ॥ २ ॥ त्रीजें ते तमने नमीयें रे, पीयु

परदेशें केम नमीयें रे ॥ निज स्वामिनी संगें रमीयें  
॥ मनो० ॥ ३ ॥ चोथें चित्त चोखुं कीधुं रे, जेणें दान

अनय जग दीधुं रे ॥ तेणें जीवितनुं फल लीधुं ॥  
॥ मनो० ॥ ४ ॥ पांचमे पंचम गति जोई रे, जाणे

केशरनी खसबोई रे ॥ किम काढी न खाए धोई ॥  
॥ मनो० ॥ ५ ॥ ठठे षड्विध जीवना त्राता रे, जि

( ५५९ )

म आठे प्रवचन माता रे ॥ ए तो साचो करम विधा  
ता ॥ मनो० ॥ ६ ॥ गयो शोक सातम तिथि सारी  
रे, नेम निरंजन ब्रह्मचारी रे ॥ तेना नामनी जाउं  
बलिहारी ॥ मनो० ॥ ७ ॥ आवी आठम आनंद का  
री रे, हुंतो आठ जवांतर नारी रे ॥ वालम मत मू  
को विसारी ॥ मनो० ॥ ८ ॥ नवमें नवमो जव सा  
रो रे, नेम राजकुन्नो आधारो रे ॥ नेह निर्वही पार  
उतारो ॥ मनो० ॥ ९ ॥ दशमे प्रभुदया धरीजें रे,  
अबलानी आशीष लीजें रे ॥ ते माटे दरिसन दीजें  
॥ मनो० ॥ १० ॥ अगीयारजें एकली नारी रे, पं  
थु मेली तमो निरधारी रे ॥ प्रीतम तमें पर उपका  
री ॥ मनो० ॥ ११ ॥ बारसना बोल संजारो रे, आ  
डो आव्यो वरसालो रे ॥ मोहन किम जरीयें उचा  
लो ॥ मनो० ॥ १२ ॥ तेरजें तोरणथी फरिया रे,  
गिरनार जणी संचरीया रे ॥ नेम राजिमती नहीं  
वरीया ॥ मनो० ॥ १३ ॥ चौदशथी चिंता जांगी रे,  
सुत समुद्रविजय लय लागी रे ॥ प्रभु थई बेठा नी  
रागी ॥ मनो० ॥ १४ ॥ पूनमें तो परम पद धारी  
रे, थया जनम मरण जय वारी रे ॥ प्रभुयें राजकुलने  
तारी ॥ मनो० ॥ १५ ॥ पन्नर तिथि पूरी गाई रे,  
कहे राजरतन सुखदाई रे ॥ तेज खेटक पुरमां स  
वाई ॥ मनो० ॥ १६ ॥ इति ॥

॥ अथश्री शत्रुंजयनी गरबी ॥ जे कोई अंबिकाजी ॥

॥ मातने आराधने रे लो ॥ ए देशी ॥

॥ जे कोई सिद्धगिरिराजने आरधजो रे लोल, तेनी  
संपदा मनोरथ वाधजो रे लोल ॥ गिरिराज ठे जवो  
दधि तारणो रे लोल, माहा पौठ ठे सर्व दुःख वार  
णो रे लोल ॥ १ ॥ पुंफर गिरि ठे मनोरथ पूरणो रे  
लोल, सिद्धक्षेत्र ठे जवोदधि चूरणो रे लोल ॥ एनां  
एकवीश नाम ठे सोहामणां रे लोल, हुंतो वंदना क  
रीने लहुं नामणा रे लोल ॥ २ ॥ एना साधनथी तप  
जप आकरे रे लोल, मुनि सिद्धा ठे कांकरे कांकरे रे  
लोल ॥ मुनिराजजी अनंत मुगतें गया रे लोल, सिद्ध  
राज थइ अविनाशी थया रे लोल ॥ ३ ॥ तेहनां नाम  
कहुंने विनंति करुं रे लोल, एना नामथी पाप सरवै  
हरुं रे लोल ॥ पांच पांमव ने नारद मुनिवरा रे लोल,  
सीलंग सूरि सुदर्शन मुनि तख्या रे लोल ॥ ४ ॥ इविड  
वारीखेण देवकीना नंदजीरे लोल, महीपालजीने मही  
पति चंदजी रे लोल ॥ थावच्चा कुमरने मुनि विद्याधरा रे  
लोल, सिद्धि सांवने प्रद्युम्नजी जिहां वख्या रे लोल ॥  
॥ ५ ॥ (वली जालि मयाली उवालीने रे लोल) ध्या  
न धरियां ठे चित एक आसनै रे लोल, जोगी तख्या  
ठे चंडप्रज शासनै रे लोल ॥ जरत रामचंडजी ने नं  
दिखेणजी रे लोल, सिद्ध सीलापें चढ्या ठे कृपकश्रेणि  
जी रे लोल ॥ ६ ॥ नमि विनमी ने मुनि शुकराजजी रे  
लोल, झातासूत्रमां साखां ठे सर्व काजजी रे लोल ॥  
केतां नाम कहुं ते मुनिराजनां रे लोल, जीज एकनै  
अनंत नाम साजना रे लोल ॥ ७ ॥ एवा अनंत अनंत

मुनिजी तस्या रे लोल, तेतो दर्शन ज्ञानथकी नस्या  
 रे लोल ॥ नमोबुणुं ते सात पदमें मढ्या रे लोल,  
 तेतो चार अनंत सुखमां नढ्या रे लोल ॥ ७ ॥ जई व  
 सीया ठे सिद्ध शिला उपरी रे लोल, तेनी सादि अनंत  
 स्थिति ठे खरी रे लोल ॥ हुंतो जाणुं हुं गणधर वाणी  
 यें रे लोल, सहु सिद्धगिरि महातम जाणीयें रे लोल  
 ॥ ८ ॥ वार पूरव नवाणुं आदिनाथजी रे लोल, समो  
 सस्या ठे पुंमरिक साथजी रे लोल ॥ गिरि फरस्यो त्रेवी  
 श जिनराजजी रे लोल, अनशन कीधां अनंत मुनिरा  
 जजी रे लोल ॥ १० ॥ सेवो सेवो ए गिरि सुख कंदने  
 रे लोल, सेवो सेवो मरुदेवी नंदनें रे लोल ॥ वंदो  
 वंदो इह्वाकु कुल सूरने रे लोल, पूजो पूजो श्रीरुपन  
 हजूरने रे लोल ॥ ११ ॥ (नाजी राजाना कुलमांहि  
 दिनकरू रे लोल) रुषंन नाथजीनो वंश ठे गुणाकरू  
 रे लोल, आदिनाथजीना पाटवी प्रजाकरू रे लोल ॥  
 जेहना आठ पाट आरीसा जुवनमां रे लोल, पाम्या  
 केवल ग्यान शुज ध्यानमां रे लोल ॥ १२ ॥ जेहना  
 पाटवी असंख्य मुगतें गया रे लोल, तेतो सिद्ध मं  
 निकामां सरवे कहा रे लोल ॥ नरत रायथी उद्धार  
 शोल ठे सहु रे लोल, विच अंतरें उद्धार थया ठे बहु  
 रे लोल ॥ १३ ॥ जे कोई गिरराज दरिसन जाविया रे  
 लोल, इहां संघवी असंख्य संघ जाविया रे लोल ॥  
 माता चक्रेसरीजी सुखदायिनी रे लोल, जुजा आवने  
 गरुड सिंह वाहिनी रे लोल ॥ १४ ॥ विक्रमराजथी

अठारहें सत्योत्तरें रे लोल, मार्गशिर मास ने त्रयोदशि  
वासरें रे लोल॥ गखी गाइ ठे कवि दीपराजजीरे लोल,  
जे सांजले तेहनां सरशे काजजी रे लोल ॥ १५ ॥ इति॥

॥ अथ चोवीश तीर्थकरनुं स्तवनं ॥

॥ रिसह जिणेसर प्रणमी पाय, बीजा अजित  
जिणेसर राय ॥ संजव स्वामी सुख जंमार, अजि  
नंदन नामें जयकार ॥ १ ॥ सुमति पद्म प्रभु देव  
सुपास, चंडप्रन जिन पूरे आस ॥ सुविधि शीतल  
श्रेयांस जिणंद, वासुपूज्य दीठे आणंद ॥ २ ॥ विमल  
अनंत धरम जगदीश, शांति कुंथु अर नामुं शीश ॥  
मह्विनाथ मुनि सुव्रत देव, नमि नेमीसर सारे सेव  
॥ ३ ॥ पास वीर नित प्रणमे जेह, रुधि सिद्धि नर  
पामे तेह ॥ चोवीशे गुण तणा निवास, जाव मुनि  
कहे पूरो आश ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ शांतिजिन स्तवन ॥ धोलनी देशी ॥

॥ शांति जिनेसर साहेव वंदो, अनुनव रसनो  
कंदो रे ॥ मुखने मटके लोचन लटके, मोह्या सुर  
नर वृंदो रे ॥ शांति ॥ १ ॥ आंबे मंजरी कोयल  
टडुके, मेघ घटा जेम मोरो रे ॥ तेम जिनवरने देखी  
हरखुं, वली जिम चंद चकोरो रे ॥ शांति ॥ २ ॥  
जिन प्रतिमा श्रीजिनवर जांखी, सूत्र घणां ठे साखी  
रे ॥ सुर नर मुनिवर वंदन पूजा, करतां शिव अजि  
लाखी रे ॥ शांति ॥ ३ ॥ रायप्पसेणी प्रतिमा पूजी,  
सूरियाज समकेत धारी रे ॥ जीवाजिगमें प्रतिमा

पूजी, विजयदेव अधिकारी रे ॥शांति०॥४॥ जिनवर  
 बिंब विना नवि वंडुं, आणंदजी एम बोलें रे ॥ सा  
 तमे अंगें समकित मूलें, अवर नहि तस तोले रे ॥  
 ॥ शांति० ॥ ५ ॥ झातासूत्रें डौपदी पूजा, करनी  
 शिवसुख मागे रे ॥ राय सिद्धारथ प्रतिमा पूजी,  
 कल्पसूत्रमांहे रागें रे ॥ शांति० ॥ ६ ॥ विद्याचारण  
 मुनिवर वंदी, प्रतिमा पांचमे अंगें रे ॥ जंघाचारण  
 मुनिवर वंदी, जिन पडिमा मन रंगें रे ॥ शांति० ॥ ७ ॥  
 आर्य सुहस्ती सूरि उपदेशें, चावो संप्रतिराय रे ॥  
 सवा कोडी जिनबिंब जराव्यां, धन धन एहनी माय  
 रे ॥ शांति० ॥ ८ ॥ मोकली प्रतिमा अजय कुमारें,  
 देखी आईकुमार रे ॥ जातिस्मरणें समकित पामी,  
 वरियो शिववधु सार रे ॥ शांति० ॥ ९ ॥ इत्यादिक बहु  
 पाठ कह्या ठे, सूत्रमांहे सुखकारी रे ॥ सूत्रतणो  
 एक वरण उठापें, ते कह्यो बहुल संसारी रे ॥  
 शांति० ॥ १० ॥ तेमाटे जिन आणा धारी, कुमति  
 कदाग्रह निवारी रे ॥ नक्ति तणां फल उत्तराध्ययनें,  
 बोध बीज सुखकारी रे ॥ शांति० ॥ ११ ॥ एक जवें  
 दोय पदवी पाम्या, शोलमा श्रीजिनराय रे ॥ मुक्त  
 मन मंदिरिये पधारावो, धवल मंगल गवराय रे ॥  
 ॥ शांति० ॥ १२ ॥ जिन उत्तमपद रूप अनुपम,  
 कीर्त्ति कमलानीं शाला रे ॥ जिनविजय कहे प्रचुजीनी  
 नक्ति, करतां मंगल माला रे ॥ शांति० ॥ १३ ॥ इति ॥

॥ अथ नेम जिन स्तवनं ॥ राग कल्याण ॥

॥ घरें आवो तो पूहुं एक वातडली रे ॥ घरे ० ॥  
ताहारेने माहारे साहेबा प्रीत घणोरी, पडिय पटोले  
जातडली रे ॥ घरे ० ॥ १ ॥ तोरणथी रथ फेर चलायो,  
जाणी तुमारी जातडली रे ॥ घरे ० ॥ २ ॥ महेर करीने  
माहारे मंदिर पधारो, रहोने आजुनी रातडली रे  
॥ घरे ० ॥ ३ ॥ नेम राजुल पोये सरग सीधाए, मुक्तें गया  
नली जातडली रे ॥ घरे ० ॥ ४ ॥ रूपचंद कहे नाथ नि  
रंजन, तुमहुं बांधी मारी प्रीतडली रे ॥ घरे ० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ नेमजिन स्तवनं ॥

॥ तोरण आवी रथ पाठो केम फेरो रे ॥ वा ० ॥  
संयम ल्यो तो साथें अमने तेडो ॥ मारा वा ० ॥ उजां  
उजां अरज करे सहु लोक रे ॥ वा ० ॥ बोल कोल किम  
करीने आओ फोक ॥ मारा ० ॥ १ ॥ नेमजी तमें तो  
लीलाना ठो साथी रे ॥ वा ० ॥ कीडीना रोक्या केम  
रहेशो हाथी ॥ मारा ० ॥ नेमजी तमें तो धरी रह्या  
एक ध्यान रे ॥ वा ० ॥ आवडलुंते किहांथी आव्युं  
ध्यान ॥ माहा ० ॥ २ ॥ नोधारां ते केने उर्थें रेहेहुं रे  
॥ वा ० ॥ हियडलानां दुःखडां केने केहेहुं ॥ मारा ० ॥  
उदयर तनना रसिया वालम नेम रे ॥ वा ० ॥ राजि  
मतीना सीधा वंठित प्रेम ॥ माहारा वा ० ॥ ३ ॥

॥ प्रस्ताविक डुहो ॥

॥ सबे न सब युग सरस हे, ज्यां लग न परत का  
म ॥ हेम हुताशन परखियो, पीतल निकसत श्याम ॥ १



( ५६५ )

॥ अथ कर्मनी मूलोत्तर प्रकृतिनां नाम ॥

॥ तेमां प्रथम आठ मूलप्रकृतिनां नाम ॥

|                     |                |
|---------------------|----------------|
| १ ज्ञानावरणीय कर्म. | ५ आयुःकर्म.    |
| २ दर्शनावरणीय कर्म. | ६ नाम कर्म.    |
| ३ वेदनीय कर्म.      | ७ गोत्र कर्म.  |
| ४ मोहनीय कर्म.      | ८ अंतराय कर्म. |

॥ पहेला ज्ञानावरणीयकर्मनी उत्तर प्रकृति पांच ॥

|                     |                        |
|---------------------|------------------------|
| १ मतिज्ञानावरणीय.   | ४ मनःपर्यवज्ञानावरणीय. |
| २ श्रुतज्ञानावरणीय. | ५ केवलज्ञानावरणीय.     |
| ३ अवधिज्ञानावरणीय.  |                        |

॥ बीजा दर्शनावरणीयकर्मनी उत्तर प्रकृति नव ॥

|                        |                  |
|------------------------|------------------|
| १ चक्षुर्दर्शनावरणीय.  | ६ निडा निडा.     |
| २ अचक्षुर्दर्शनावरणीय. | ७ प्रचला.        |
| ३ अवधिदर्शनावरणीय.     | ८ प्रचला प्रचला. |
| ४ केवलदर्शनावरणीय.     | ९ श्रीणक्षी.     |
| ५ निडा.                |                  |

॥ त्रीजा वेदनीय कर्मनी उत्तर प्रकृति बे ॥

|               |                |
|---------------|----------------|
| १ शातावेदनीय. | २ अशातावेदनीय. |
|---------------|----------------|

॥ चोथा मोहनीयकर्मनी उत्तर प्रकृति अष्टावीश ॥

|                         |                        |
|-------------------------|------------------------|
| १ सम्यक्त्वमोहनीय.      | १५ संज्वलन माया.       |
| २ मिश्रमोहनीय.          | १६ अनंतानुबंधीलोन.     |
| ३ मिथ्यात्वमोहनीय.      | १७ अप्रत्याख्यानी लोन. |
| ४ अनंतानुबंधी क्रोध.    | १८ प्रत्याख्यानी लोन.  |
| ५ अप्रत्याख्यानी क्रोध. | १९ संज्वलन लोन.        |
| ६ प्रत्याख्यानी क्रोध.  | २० हास्य नोकपाय.       |
| ७ संज्वलन क्रोध.        | २१ रति नोकपाय.         |
| ८ अनंतानुबंधीमान.       | २२ अरति नोकपाय.        |
| ९ अप्रत्याख्यानीमान.    | २३ शोक नोकपाय.         |
| १० प्रत्याख्यानी मान.   | २४ जय नोकपाय.          |
| ११ संज्वलन मान.         | २५ जुगुप्सा नोकपाय.    |
| १२ अनंतानुबंधी माया.    | २६ पुरुषवेद नोकपाय.    |
| १३ अप्रत्याख्यानीमाया   | २७ स्त्रीवेद नोकपाय.   |
| १४ प्रत्याख्यानी माया.  | २८ नपुंसकवेद नोकपाय.   |

॥ पांच्रमा आयुः कर्मनी उत्तर प्रकृति चार ॥

|              |              |
|--------------|--------------|
| १ देवायु.    | ३ तिर्यगायु. |
| २ मनुष्यायु. | ४ नरकायु.    |

॥ षष्ठा नामकर्मनी उत्तर प्रकृति ॥ १०३ ॥

|                       |                      |
|-----------------------|----------------------|
| १ नरकगति नामकर्म.     | ४ देवगति नामकर्म.    |
| २ तिर्यग्गति नामकर्म. | ५ एकेंद्रिय जातिनाम. |
| ३ मनुष्यगति नामकर्म.  | ६ बेंद्रिय जातिनाम.  |

- ७ तेंडिय जातिनाम.  
 ८ चतुरिंडियजातिनाम.  
 ९ पंचेंडिय जातिनाम.  
 १० औदारिकशरीरनाम.  
 ११ वैक्रिय शरीरनाम.  
 १२ आहारकशरीरनाम.  
 १३ तैजस शरीरनाम.  
 १४ कर्मण शरीरनाम.  
 १५ औदारिक अंगोपांग.  
 १६ वैक्रिय अंगोपांग.  
 १७ आहारक अंगोपांग.  
 १८ औदारिक औदारिक  
 बंधन.  
 १९ औदारिकतैजसबंधन.  
 २० औदारिककर्मणबंधन  
 २१ औदारिकतैजसकर्म  
 ण बंधन.  
 २२ वैक्रियवैक्रियबंधन.  
 २३ वैक्रियतैजसबंधन.  
 २४ वैक्रियकर्मणबंधन.  
 २५ वैक्रिय तैजसकर्मण  
 बंधन.  
 २६ आहारक आहारक  
 बंधन.  
 २७ आहारक तैजसबंधन.  
 २८ आहारककर्मणबंधन  
 २९ आहारक तैजस क  
 र्मण बंधन.  
 ३० तैजस तैजस बंधन.  
 ३१ तैजस कर्मण बंधन.  
 ३२ कर्मणकर्मणबंधन.  
 ३३ औदारिक संघातन.  
 ३४ वैक्रिय संघातन.  
 ३५ आहारक संघातन.  
 ३६ तैजस संघातन.  
 ३७ कर्मण संघातन.  
 ३८ वज्ररूपन नाराचसं  
 घयण.  
 ३९ रूपन नाराचसंघयण.  
 ४० नाराच संघयण.  
 ४१ अर्द्धनाराचसंघयण.  
 ४२ कीलिका संघयण.  
 ४३ ठेवहुं संघयण.  
 ४४ समचतुरस्रसंस्थान.  
 ४५ न्यग्रोध संस्थान.  
 ४६ सादि संस्थान.  
 ४७ वामन संस्थान.  
 ४८ कुब्ज संस्थान.

४९ दुंदुभ संस्थान.

५० कृष्णवर्ण नाम.

५१ नीलवर्ण नाम.

५२ लोहितवर्ण नाम.

५३ हार्दिवर्ण नाम.

५४ श्वेतवर्ण नामकर्म.

५५ सुरनिगंध.

५६ दुरनिगंध.

५७ तित्तरस नामकर्म.

५८ कटुकरस नामकर्म.

५९ कषायरस नामकर्म.

६० आम्लरस नामकर्म.

६१ मधुररस नामकर्म.

६२ कर्कशस्पर्श नामकर्म.

६३ मृदुस्पर्श नामकर्म.

६४ गुरुस्पर्श नामकर्म.

६५ लघुस्पर्श नामकर्म.

६६ शीतस्पर्श नामकर्म.

६७ ऊष्णस्पर्श नामकर्म.

६८ स्निग्धस्पर्श नामकर्म.

६९ रूक्षस्पर्श नामकर्म.

७० नरकानुपूर्वी.

७१ तिर्यगानुपूर्वी.

७२ मनुष्यानुपूर्वी.

७३ देवानुपूर्वी.

७४ शुनविहायोगति.

७५ अशुनविहायोगति.

७६ पराघात नामकर्म.

७७ उन्नास नामकर्म.

७८ आतप नामकर्म.

७९ ज्योत नामकर्म.

८० अगुरुलघु नामकर्म.

८१ तीर्थकर नामकर्म.

८२ निर्माण नामकर्म.

८३ उपघात नामकर्म.

८४ त्रस नामकर्म.

८५ बादर नामकर्म.

८६ पर्याप्त नामकर्म.

८७ प्रत्येक नामकर्म.

८८ स्थिर नाभकर्म.

८९ शुन नामकर्म.

९० सौभाग्य नामकर्म.

९१ सुस्वर नामकर्म.

९२ आदेय नामकर्म.

९३ यशःकीर्ति नामकर्म.

९४ स्थावर नामकर्म.

९५ सूक्ष्म नामकर्म.

९६ अपर्याप्त नामकर्म.

( ५६ए )

|                      |                      |
|----------------------|----------------------|
| ए७ साधारण नामकर्म.   | १०१ दुःस्वर नामकर्म. |
| ए८ अस्थिर नामकर्म.   | १०२ अनादेय नामकर्म.  |
| ए९ अशुभ नामकर्म.     | १०३ अयशोऽकीर्ति      |
| १०० दुर्नाम नामकर्म. | नामकर्म.             |

॥ सातमा गोत्रकर्मनी उत्तर प्रकृति बे ॥

१ उच्चैर्गोत्र. | २ नीचैर्गोत्र.

॥ आठमा अंतराय कर्मनी उत्तर प्रकृति पांच ॥

१ दानांतराय. | ४ उपजोगांतराय.  
२ लानांतराय. | ५ वीर्यांतराय.  
३ जोगांतराय.

एवं आठ कर्मनी एकशो अष्टावन उत्तर प्रकृति जाएवी.

॥ अथ नव तत्त्वनां नाम ॥

१ जीवतत्त्व— ४ पापतत्त्व— ७ निर्झरातत्त्व.  
२ अजीवतत्त्व— ५ आश्रयतत्त्व— ८ बंधतत्त्व.  
३ पुण्यतत्त्व— ६ संवरतत्त्व— ९ मोहृतत्त्व.

॥ हवे ए नव तत्त्वमांहेला प्रत्येकें एकेका तत्त्व  
ना जुदा जुदा जेदोनी संख्या विवरीने लखीयें ठैयें.  
तिहां प्रथम जीव तत्त्वना चौद जेद ठे, ते लखीयें ठैयें.

१ सूक्ष्म एकेंडिय पर्याप्ताः  
२ बादर एकेंडिय पर्याप्ताः  
३ संझी पंचेंडिय पर्याप्ताः

૪ અસંજી પંચેંડિય પર્યાપ્તા:

૫ વેંડિય પર્યાપ્તા:

૬ તેંડિય પર્યાપ્તા:

૭ ચતુરિંડિય પર્યાપ્તા:

ए सात नेद पर्याप्ताना तेनी सार्थें एज सान नेद  
अपर्याप्ताना जेलीयें, तेवारें सर्व मली जीवत-वना  
चउद नेद थाय, ते अरूपी जाणवा.

॥ बीजा अजीव तत्त्वना चौद नेद कहे ठे ॥

૧ ધર્માસ્તિકાયસ્કંધ.

૨ ધર્માસ્તિકાયદેશ.

૩ ધર્માસ્તિકાયપ્રદેશ.

૪ અધર્માસ્તિકાયસ્કંધ.

૫ અધર્માસ્તિકાયદેશ.

૬ અધર્માસ્તિકાયપ્રદેશ.

૭ આકાશાસ્તિકાયસ્કંધ.

૮ આકાશાસ્તિકાયદેશ.

૯ આકાશાસ્તિકાયપ્રદેશ.

૧૦ કાલવર્તનાલક્ષણ.

૧૧ પુજ્જલાસ્તિકાયસ્કંધ.

૧૨ પુજ્જલાસ્તિકાયદેશ.

૧૩ પુજ્જલાસ્તિકાયપ્રદેશ.

૧૪ પુજ્જલાસ્તિકાયપરમાણુ

एमां. धर्मास्तिकायादिकना दश नेद अरूपी अने  
पुज्जलास्तिकायना चार नेद रूपी जाणवा.

॥ त्रीजा पुण्यतत्त्वना बेहेंतालीश नेद कहे ठे ॥

૧ શાતાવેદનીય.

૨ ઊચ્ચૈર્ગોત્ર.

૩ મનુષ્યગતિ.

૪ મનુષ્યાનુપૂર્વી.

૫ દેવગતિ.

૬ દેવાનુપૂર્વી.

૭ પંચેંડિયજાતિનામકર્મ

૮ ઔદારિકશરીરનામકર્મ

|                       |                         |
|-----------------------|-------------------------|
| ए वैक्रिय शरीरनामकर्म | १६ उद्योत नामकर्म.      |
| १० आहारक शरीरनाम.     | १७ शुन विहायोगति ना     |
| ११ तैजसशरीरनामकर्म.   | मकर्म.                  |
| १२ कर्मणशरीरनामकर्म.  | १८ निर्माण नामकर्म.     |
| १३ औदारिक अंगोपांग.   | १९ त्रस नामकर्म.        |
| १४ वैक्रियअंगोपांगनाम | २० बादर नामकर्म.        |
| १५ आहारक अंगोपांग.    | २१ पर्याप्ति नामकर्म.   |
| १६ वज्ररूपजननाराच सं  | २२ प्रत्येक नामकर्म.    |
| घयण.                  | २३ स्थिर नामकर्म.       |
| १७ समचतुरस्रसंस्थान.  | २४ शुन नामकर्म.         |
| १८ शुनवर्ण.           | २५ सौजाग्य नामकर्म.     |
| १९ शुनगंध.            | २६ सुस्वर नामकर्म.      |
| २० शुनरस.             | २७ आदेय नामकर्म.        |
| २१ शुनस्पर्श.         | २८ यशःकीर्त्ति नामकर्म. |
| २२ अगुरु लघुनामकर्म.  | २९ देवायु.              |
| २३ पराघात नामकर्म.    | ४० मनुष्यायु.           |
| २४ श्वासोद्वासनामक०   | ४१ तीर्थचायु.           |
| २५ आतप नामकर्म.       | ४२ तीर्थकर नामकर्म.     |

ए बेहेंतालीश जेद रूपी जाणवा.

॥ चोथा पाप तत्वना व्याशी जेद कहे ठे ॥

|                     |                       |
|---------------------|-----------------------|
| १ मतिज्ञानावरणीय.   | ४ मनःपर्यवज्ञानावरणीय |
| २ श्रुतज्ञानावरणीय. | ५ केवलज्ञानावरणीय.    |
| ३ अवधिज्ञानावरणीय.  | ६ दानांतराय.          |

- ७ लानांतराय.  
 ८ नोगांतराय.  
 ९ उपनोगांतराय.  
 १० वीर्यांतराय.  
 ११ चक्षुर्दर्शनावरणीय.  
 १२ अचक्षुर्दर्शनावरणीय  
 १३ अवधिदर्शनावरणीय  
 १४ केवलदर्शनावरणीय.  
 १५ निडा.  
 १६ निडानिडा.  
 १७ प्रचला.  
 १८ प्रचलाप्रचला.  
 १९ थीण्डी.  
 २० नीचैर्गोत्र  
 २१ आशाता वेदनीय.  
 २२ मिथ्यात्वमोहनीय.  
 २३ स्यावरनामकर्म.  
 २४ सूक्ष्मनामकर्म.  
 २५ अपर्याप्तिनामकर्म.  
 २६ साधारणनामकर्म.  
 २७ अस्थिरनामकर्म.  
 २८ अशुचिनामकर्म.  
 २९ दुर्ज्ञेयनामकर्म.  
 ३० दुःस्वरनामकर्म.

- ३१ अनादेयनामकर्म.  
 ३२ अयशनामकर्म.  
 ३३ नरकगति.  
 ३४ नरकायु.  
 ३५ नगकानुपूर्वी.  
 ३६ अनंतानुबंधी क्रोध.  
 ३७ अनंतानुबंधी मान.  
 ३८ अनंतानुबंधी माया.  
 ३९ अनंतानुबंधी लोभ.  
 ४० अप्रत्याख्यानी क्रोध.  
 ४१ अप्रत्याख्यानी मान.  
 ४२ अप्रत्याख्यानीमाया.  
 ४३ अप्रत्याख्यानी लोभ.  
 ४४ प्रत्याख्यानी क्रोध.  
 ४५ प्रत्याख्यानी मान.  
 ४६ प्रत्याख्यानी माया.  
 ४७ प्रत्याख्यानी लोभ.  
 ४८ संज्वलन क्रोध.  
 ४९ संज्वलन मान.  
 ५० संज्वलन माया.  
 ५१ संज्वलन लोभ.  
 ५२ हास्यनो कषाय.  
 ५३ रतिनो कषाय.  
 ५४ अरतिनो कषाय.



|                       |                       |
|-----------------------|-----------------------|
| ५५ शोकनो कषाय.        | ६९ अप्रशस्त वर्ण.     |
| ५६ जयनो कषाय.         | ७० अप्रशस्त गंध.      |
| ५७ दुर्गन्धानो कषाय.  | ७१ अप्रशस्त रस.       |
| ५८ पुरुषवेदनो कषाय.   | ७२ अप्रशस्त स्पर्श.   |
| ५९ स्त्रीवेदनो कषाय.  | ७३ कृषननाराचसंघयण     |
| ६० नपुंसकवेदनो कषाय   | ७४ नाराचसंघयण.        |
| ६१ तिर्य्यचगति.       | ७५ अर्धनाराच संघयण.   |
| ६२ तिर्य्यचानुपूर्वी. | ७६ कीलिकासंघयण.       |
| ६३ एकेंद्रियजाति.     | ७७ त्वेवहुं संघयण.    |
| ६४ बेंद्रियजाति.      | ७८ न्यग्रोधपरिमंमलसं० |
| ६५ तेंद्रियजाति.      | ७९ सादिसंस्थान.       |
| ६६ चतुरिंद्रियजाति.   | ८० वामनसंस्थान.       |
| ६७ अशुनविहायोगति.     | ८१ कुब्जसंस्थान.      |
| ६८ उपघात नामकर्म.     | ८२ दुर्मकसंस्थान.     |

ए व्याशी जेद रूपी जाणवा.

॥ पांचमा आश्रव तत्वना बेहेतालीश जेद कहे ते ॥

|                    |                       |
|--------------------|-----------------------|
| १ स्पर्शनेंद्रिय.  | ८ माया कषाय.          |
| २ रसनेंद्रिय.      | ९ लोचन कषाय.          |
| ३ घ्राणेन्द्रिय.   | १० प्राणातिपात अव्रत. |
| ४ चक्षुरिंद्रिय.   | ११ मृषावाद अव्रत.     |
| ५ श्रोत्रेन्द्रिय. | १२ अदत्तादान अव्रत.   |
| ६ क्रोध कषाय.      | १३ मैथुन अव्रत.       |
| ७ मान कषाय.        | १४ परिग्रह अव्रत.     |

|                           |                        |
|---------------------------|------------------------|
| १५ अशुनमनोयोग.            | २९ पृष्टिकी क्रिया.    |
| १६ अशुनवचनयोग.            | ३० पादुञ्चकी क्रिया.   |
| १७ अशुनकाययोग.            | ३१ सामंतोपनिपातिकी.    |
| १८ कायिकी क्रिया.         | ३२ नैशस्त्रिकी क्रिया. |
| १९ अधिकरणकी क्रिया.       | ३३ स्वहस्तकी क्रिया.   |
| २० प्रक्षेपिकी क्रिया.    | ३४ आङ्गापनिकी क्रिया.  |
| २१ पारितापनकी क्रिया.     | ३५ विदारणिकी क्रिया.   |
| २२ प्राणातिपातकी क्रिया   | ३६ अनाजोगिकी क्रिया.   |
| २३ आरंजकी क्रिया.         | ३७ अनवकांक्षप्रत्ययिकी |
| २४ पारिग्रहिकी क्रिया.    | क्रिया.                |
| २५ मायाप्रत्ययिकी क्रिया  | ३८ प्रयोगिकी क्रिया.   |
| २६ मिथ्यात्वदर्शनप्रत्ययि | ३९ समुदायिकी क्रिया.   |
| की क्रिया.                | ४० प्रेमकी क्रिया.     |
| २७ अप्रत्याख्यानकी क्रिया | ४१ द्वेषिकी क्रिया.    |
| २८ दृष्टिकी क्रिया.       | ४२ ईर्यापयिकी क्रिया.  |

ए बेहेंतालीश जेदरूपी जाएवा.

॥ ठछा संवरतत्त्वना सत्तावन जेद कहे ठे ॥

|                    |                    |
|--------------------|--------------------|
| १ ईर्यासमिति.      | ५ उच्चारपासणखेलसिं |
| २ नापासमिति.       | घाणजलपारिष्ठापनि   |
| ३ एषणासमिति.       | कासमिति.           |
| ४ आदान जंममतनिद्धे | ६ मनोगुप्ति.       |
| पणासमिति.          | ७ वचनगुप्ति.       |

८ कायशुद्धि.  
 ९ रुधापरिसह.  
 १० पिपासापरिसह.  
 ११ शीतपरिसह.  
 १२ उष्णपरिसह.  
 १३ मंशमशकपरिसह.  
 १४ अचेलक परिसह.  
 १५ अरतिपरिसह.  
 १६ स्त्रीपरिसह.  
 १७ चर्यापरिसह.  
 १८ नैषेधिकीपरिसह.  
 १९ शय्यापरिसह.  
 २० आक्रोशपरिसह.  
 २१ वधपरिसह.  
 २२ याचनापरिसह.  
 २३ अलानपरिसह.  
 २४ रोगपरिसह.  
 २५ तृणफरसपरिसह.  
 २६ मलपरिसह.  
 २७ सत्कारपरिसह.  
 २८ प्रज्ञापरिसह.  
 २९ अज्ञानपरिसह.  
 ३० सम्यक्तत्वपरिसह.  
 ३१ क्षमाधर्म.

३२ मार्दवधर्म.  
 ३३ आर्यवधर्म.  
 ३४ मुक्तिधर्म.  
 ३५ तपोधर्म.  
 ३६ संयमधर्म.  
 ३७ सत्यधर्म.  
 ३८ शौचधर्म.  
 ३९ अकिंचनधर्म.  
 ४० ब्रह्मचर्यधर्म.  
 ४१ अनित्यज्ञावना.  
 ४२ अशरणज्ञावना.  
 ४३ संसारज्ञावना.  
 ४४ एकत्वज्ञावना.  
 ४५ अन्यत्वज्ञावना.  
 ४६ अशुचिज्ञावना.  
 ४७ आश्रवज्ञावना.  
 ४८ संवरज्ञावना.  
 ४९ निर्झराज्ञावना.  
 ५० लोकस्वरूपज्ञावना.  
 ५१ बोधिदुर्लभज्ञावना.  
 ५२ धर्मज्ञावना.  
 ५३ सामायिक चारित्र.  
 ५४ वेदोपस्थापनीय चा  
 रित्र.

( ५७६ )

५५ परिहारविशुद्धिचारित्र. ५७ यथाख्यातचारित्र.  
५६ सूक्ष्मसंपरायचारित्र.

ए सत्तावन्न चेद अरूपी जाणवा.

॥ सातमा निर्जरा तत्त्वना बार चेद कहे ठे ॥

|                        |                    |
|------------------------|--------------------|
| तेमां प्रथम ठ प्रकारें | ठ प्रकारें अन्यंतर |
| बाह्य तप कहे ठे.       | तप कहे ठे.         |

१ अनशन तप.

७ प्रायश्चित्त तप.

२ ऊणोदरी तप.

८ विनय तप.

३ व्रतिसंक्षेप तप.

९ वैयावञ्च तप.

४ रसत्याग तप.

१० सङ्काय तप.

५ कायक्लेश तप.

११ ध्यान तप.

६ संजीनता तप.

१२ उपसर्ग तप.

ए बार चेद अरूपी जाणवा.

॥ आठमा बंधतत्त्वना चार चेद कहे ठे ॥

१ प्रकृतिबंध.

३ अनुज्ञागबंध.

२ स्थितिबंध.

४ प्रदेशबंध.

ए चार चेद अरूपी जाणवा.

॥ नवमा मोक्षतत्त्वना नव चेद कहे ठे ॥

१ ठतापदनीप्ररूपणा

३ क्षेत्रधार.

नुं धार.

४ स्पर्शनाधार.

२ इव्यप्रमाणधार.

५ कालधार.

६ अंतराक्षर.

७ क्वाथिकादिकनावधार.

७ नागधार.

८ अल्पबहुत्वधार.

ए नव जेद अरूपी जाणवा.

अथ चार गतिमां रहेला समस्त संसारी जीव, चोवीश दंमकोने विषे परिच्रमण करे ठे, ते दंमकनां नाम कहे ठे. तिहां प्रथम सात नारकीनां एक दंमक ठे, ते साते नारकीनां नाम तथा गोत्र, नीचें प्रमाणें ठे.

नाम. गोत्र.

४ अंजणा. पंकप्रजा.

१ घमा. रत्नप्रजा.

५ रिष्ठा. धूमप्रजा.

२ वंसा. शर्करप्रजा.

६ मघा. तमप्रजा.

३ सैला. बालुकप्रजा.

७ माघवती. तमतमप्रजा

हवे दश जवनपतिना दश दंमक तेनां नाम कहे ठे.

१ असुरकुमार निकायनो दंमक.

२ नागकुमार निकायनो दंमक.

३ सुवर्णकुमार निकायनो दंमक.

४ विद्युत्कुमार निकायनो दंमक.

५ अग्निकुमार निकायनो दंमक.

६ द्वीपकुमार निकायनो दंमक.

७ उदधिकुमार निकायनो दंमक.

८ दिशिकुमार निकायनो दंमक.

९ वायुकुमार निकायनो दंमक.

१० स्तनितकुमार निकायनो दंमक.

( ૫૭૮ )

વારમો પૃથિવી કાયનો દંમક, તેના મૂલનામ છે  
હે, તે કહે હે.

૧ સુના.                      ૨ સુધા.                      ૩ વાલુયા.  
૪ મણશિલ.              ૫ શર્કરા.                      ૬ સ્વરપુઢવી.

॥ હવે એ પૃથિવી કાયના જેદ કહે હે ॥

૧ સ્ફાટિકરત્ન. ૨ મણિરત્ન. ૩ રત્નની સર્વજાતિ.  
૪ પરવાલાં.— ૫ હિંગાંજો.— ૬ હરતાલ.  
૭ મણશિલ.— ૮ પારો.— ૯ સોનું.  
૧૦ રૂપું.— ૧૧ ત્રાંબું.— ૧૨ લોઢું.  
૧૩ જસત.— ૧૪ સીસું.— ૧૫ કથિર.  
૧૬ સ્વડીમાટી. ૧૭ હરમજીવાની. ૧૮ અરણેટોપાપાણ.  
૧૯ પલેવોપાપાણ. ૨૦ અવરસ્વ. ૨૧ તૂરીમાટીનીજાતિ.  
૨૨ સ્વારીમાટીનીજાતિ. ૨૩ માટીનીસર્વજાતિ.  
૨૪ પાષાણની સર્વજાતિ. ૨૫ સુરમાની જાતિ.  
૨૬ અંજનની જાતિ. ૨૭ લૂણની જાતિ.

ઇત્યાદિ પૃથિવી કાયના અનેક જેદ જાણવા.

તેરમો અપ્કાયનો દંમક હે, તેના જેદ કહે હે.

|                   |                      |
|-------------------|----------------------|
| ૧ જમીનનું પાણી.   | ૫ રોચેડાનું પાણી.    |
| ૨ આકાશનું પાણી    | ૬ લીલીવનસ્પતિનું પા  |
| અને નદીસમુદ્ કૂપા | ૭ માંકનું પાણી.      |
| દિકનું જલ.        | ૮ ઘનોદધિ તે પૃથ્વીનો |
| ૩ ઠારનું પાણી.    | આધારજૂત થીણ્યાધૃ     |
| ૪ હિમનું પાણી.    | તસમાનજલપિંમ.         |

( ૫૭૯ )

ચૌદમોતેઝકાયનો દંમક છે, તેના જેદ કહે છે.

૧ અંગારાનો અગ્નિ.

૪ ઝલ્કાપાતનો અગ્નિ.

૨ જ્વાલાનો અગ્નિ.

૫ કણિયાનો અગ્નિ.

૩ ઘ્રાસડનો અગ્નિ.

૬ વિજલીનો અગ્નિ.

પન્નરમો વાઝકાયનો દંમક છે. તેના જેદ કહે છે.

૧ ઝદ્દામકવાયુ.

૫ મુશ્વશ્વવાયુ.

૨ મંદવાયુ.

૬ ગુંજવાયુ.

૩ ઝત્કલિકવાયુ.

૭ ઘનવાત.

૪ મંમલિકવાયુ.

૮ તનવાત.

શોલમો વનસ્પતિકાયનો દંમક છે. તેની મૂલજાતિ બે છે, તિહાં જે એકશરીરમાં અનંતા જીવ હોય તે સાધારણ વનસ્પતિ. અને જે એક શરીરમાં એક જીવ હોય, તે પ્રત્યેક વનસ્પતિ કહેવાય, તેના જેદ કહે છે.

૧ ગુહા, ૨ વૃદ્ધ, ૩ ગુલ્મ, ૪ લતા, ૫ વલ્લી, ૬ તૃણ,

૭ જલરુદ્ધ, ૮ ઔષધિ, ૯ કુદ્ધન, ૧૦ પર્વગ, ૧૧ હરિ,

૬ત્યાદિક એના અનેક જેદ છે.

મત્તરમો બેંડિયનો દંમક છે, તેના જેદ કહે છે.

૧ શંખ. ૨ કોમા. ૩ ગંમોલા.

૪ જહુ. ૫ અલસીયા. ૬ લારીયા.

૭ મેહરી. ૮ ક્રમિયા. ૯ પાણીના પૂરા.

અઢારમો તેંડિયનો દંમક છે, તેના જેદ કહે છે.

૧ કાનખજુરા. ૨ માંકડ. ૩ જૂ.

૪ કીડિયો. ૫ ઝદ્દેહી. ૬ મક્કોડા.

૭ ફેલ. ૮ ઘીમેલ. ૯ સાવા.

૧૦ ગોકીડા. ૧૧ ગદ્દહીયા. ૧૨ વિષ્ટાના કીડા.

૧૩ ગોવરના કીડા. ૧૪ ધનેરિયાં. ૧૫ કુંથુઆ.

૧૬ ગોપાલિક. ૧૭ ઇંડગોપ.

ઉગણીશમો ચોરિંડિયનો દંમક છે, તેના જેદ કહે છે.

૧ વીંઠી. ૪ ચ્રમરી. ૭ માંસ. ૧૦ કંસારી.

૨ ઢંકણ. ૫ ટીડ. ૮ મત્સર. ૧૧ સ્વડમાંકડી.

૩ ચ્રમરા. ૬ માસી. ૯ પતંગીયા.

વીશમો તિર્યંચપંચેંડિયનો દંમક છે. તેના ત્રણ જેદ કહે છે.

૧ જલચર. ૨ સ્થલચર. ૩ સ્વેચર. ૪ ઝરઃપરિસર્પ.

૫ જુજપુરિસર્પ, એ બે સ્થલચર માંહેલા છે.

એકવીશમો મનુષ્યનો દંમક છે. તેના જેદ કહે છે.

જરતાદિક પંદર કર્મનૂમિ ક્ષેત્રનાં મનુષ્ય.

દેવકુરાદિક ત્રીશ અકર્મનૂમિ ક્ષેત્રનાં મનુષ્ય.

ઘપ્પન્ન અંતર દ્વીપનાં મનુષ્ય.

એ સર્વ મલી એકશોને એક જેદો થયા.

બાવીશમો વાણવ્યંતર દેવોનો દંમક છે. તે બે પ્રકારે છે.

એક વ્યંતરની નિકાય છે, તેના આઠ જેદ કહે છે.

૧ પિશાચ. ૨ યદ્ધ. ૫ કિન્નર. ૭ મહોરગ.

૩ નૂત. ૪ રાક્ષસ. ૬ કિંપુરુષ. ૮ ગંધર્વ.

બીજી વાણવ્યંતરની નિકાય તેના પણ આઠ જેદ છે.

૧ અણપનિ. ૩ હસિવાદિ. ૫ કંદી. ૭ કોદંમ.

૨ પણપનિ. ૪ નૂતવાદિ. ૬ મહાકંદી. ૮ પતંગ.



त्रेवीशमो ज्योतिषी देवोनो दंमक पांच प्रकारें ठे.

१ चंद्र. २ सूर्य. ३ ग्रह. ४ नक्षत्र. ५ तारा.  
चोवीशमो वैमानिक देवोनो दंमक. तेना मूल बे चेद ठे.

एक कल्प एटले आचारवाला देवो ते बार देव  
लोकना चेदें करी बार प्रकारें ठे. तेना नाम कहे ठे.

१ सौधर्म देवलोक. ७ महाशुक्र देवलोक.

२ ईशान देवलोक. ८ सहस्रार देवलोक.

३ सनत्कुमार देवलोक. ९ आनत देवलोक.

४ माहेंद्र देवलोक. १० प्राणत देवलोक.

५ ब्रह्म देवलोक. ११ आरण देवलोक.

६ लांतक देवलोक. १२ अच्युत देवलोक.

बीजा कल्पातीत एटले जेने विषे स्वामी सेवक  
संबंध नथी, एवा देवों तेना मूल बे प्रकार ठे. एक न  
वग्रैवेयक वासी, बीजा पांच अनुत्तर विमान वासी  
तेमां प्रथम नवग्रैवेयकनां नाम कहे ठे.

१ सुदर्शन. ४ सर्वतोन्न. ७ सौमनस्य.

२ सुप्रतिबद्ध. ५ सुविशाल. ८ प्रीतिकर.

३ मनोरम. ६ सुमनस. ९ आदित्य.

हवे पांच अनुत्तर विमाननां नाम कहे ठे.

१ विजय. ३ जयंत. ५ सर्वार्थसिद्धि.

२ विजयंत. ४ अपराजित.

ए रीतें ए चोवीश दंमकनां चेद सहित नाम कह्यां.

हवे प्रत्येक दंमकें चोवीश द्वार कहेवाय, तेनां नाम.

पहेलुं शरीर द्वार पांच प्रकारें ठे.

१ औदारिकशरीर, २ आहारकशरीर, ५ कामेणशरीर.

३ वेक्रिय शरीर, ४ तैजस शरीर,

बीजुं अवगाहना द्वार. ते प्रत्येक दंमकें जघन्य तथा

उत्कृष्ट एवा वे जेदें शरीरनुं प्रमाण कहेवुं.

त्रीजुं संघयण द्वार ७ प्रकारें ठे.

१ वज्ररूपननाराच संघयण. ४ अर्धनाराचसंघ०

२ रूपननाराचसंघयण. ५ कीलिका संघयण.

३ नाराच संघयण. ६ ठेवहुं संघयण.

हवे ए संघयणवाला जीवो ऊर्ध्वगति गमन करे, तो कया संघयणवाला क्यां सुधी जाय ? ते कहे ठे.

१ वज्र रूपन नाराच संघयणवाला, मोरूपर्यंत जाय.

२ रूपननाराचसंघयणवाला, बारमादेवलोकपर्यंत जाय

३ नाराच संघयणवाला, दशमादेवलोक पर्यंत जाय.

४ अर्धनाराचसंघयणवाला, आठमादेवलोकपर्यंत जाय

५ कीलिका संघयणवाला, ठछा देवलोकपर्यंत जाय.

६ ठेवछा संघयणवाला, चोथा देवलोक पर्यंत जाय.

हवे अधोगति गमन करे, तो कया संघयणवाला जीव क्यां सुधी जाय ? ते कहे ठे.

१ वज्र रूपन नाराच संघयणवाला सातमी नरक पृथिवी पर्यंत जाय.

१ रुषननाराच संघयणवाला, ठही नरक पृथिवी पर्यंत जाय;

२ नाराचसंघयणवाला, पांचमीनरकपृथिवीपर्यंतजाय

४ अर्द्धनाराचसंघयणवाला,चोथीनरकपृथिवीपर्यंत०

५ कीलिकासंघयणवाला,त्रीजीनरकपृथिवीपर्यंतजाय.

६ ठेवठा संघयणवाला, बीजीनरकपृथिवीपर्यंत जाय.

चोथुं संज्ञा द्वार, दश प्रकारें ठे. तेनां नाम कहे ठे.

१ आहारसंज्ञा. ५ क्रोधसंज्ञा. ७ लोभ संज्ञा.

२ नयसंज्ञा. ६ मानसंज्ञा. ९ लोकसंज्ञा,

३ मैथुनसंज्ञा. ७ मायासंज्ञा. १० उधसंज्ञा.

४ परिग्रहसंज्ञा. तथा नीचें लखेली ठ संज्ञा सार्थें  
मेलवतां शोलप्रकार पण थाय ठे.

१ सुख संज्ञा. २ दुःख संज्ञा. ३ मोहसंज्ञा.

४ दुगंठा संज्ञा. ५ शोक संज्ञा. ६ धर्म संज्ञा.

पांचमुं संस्थान द्वार, ठ प्रकारें ठे, तेनां नाम कहे ठे.

१ समचतुरस्र संस्थान. ४ कुब्ज संस्थान.

२ निगोहपरिमंजल संस्थान. ५ वामन संस्थान.

३ सादि संस्थान. ६ हुंमक संस्थान.

अहीं पांच इंद्रियोनां संस्थान कहे ठे.

१ स्पर्शेंद्रियनुं नाना प्रकारनुं संस्थान होय ठे.

२ रसेंद्रियनुं खुरपा सरखुं संस्थान होय ठे.

३ घ्राण इंद्रियनुं तिलना फूल सरखुं संस्थान होय ठे.

४ चक्षुरिन्द्रियनुं मसरनीदालसरखुं अर्धचंदाकारें सं ७  
५ श्रोत्रिन्द्रियनुं कल्पवृक्षना फूल सरखुं संस्थान ठे.  
ठहुं कषाय द्वार चार प्रकारें ठे. तेनां नाम कहे ठे.

१ क्रोध, २ मान, ३ माया, ४ लोभ,

सातमुं लेश्या द्वार ठ प्रकारें ठे.

१ कृष्णलेश्या. २ कापोतलेश्या. ५ पद्मलेश्या.

६ नीललेश्या. ४ नेजोलेश्या. ६ शुक्ललेश्या.

आठमुं इन्द्रिय द्वार पांच प्रकारें ठे.

१ स्पर्शनैन्द्रिय. २ रसेन्द्रिय. ३ घ्राणैन्द्रिय.

४ चक्षुरिन्द्रिय. ५ श्रोत्रैन्द्रिय.

नवमुं समुद्धात द्वार सात प्रकारें ठे.

१ वेदनासमुद्धात, ४ वैक्रियसमुद्धात, ७ केवलसमु

२ कषाय समुद्धात, ५ तजस समुद्धात.

३ मरण समुद्धात. ६ आहारक समुद्धात.

दशमुं दृष्टिद्वार त्रण प्रकारें ठे.

१ सम्यक्दृष्टि, २ मिथ्यादृष्टि, ३ मिश्रदृष्टि,

अगीयारमुं दर्शन द्वार चार प्रकारें ठे.

१ चक्षुर्दर्शन. २ अचक्षुर्दर्शन.

३ अवधिदर्शन. ४ केवलदर्शन.

बारमुं ज्ञानतथातेरमुं अज्ञान द्वार मली आव प्रकारें ठे.

१ मतिज्ञान. २ श्रुतज्ञान. ३ अवधिज्ञान.

४ मनःपर्यवज्ञान. ५ केवलज्ञान. ६ मतिअज्ञान.

७ श्रुतअज्ञान. ८ विजंगज्ञान.

ए रीतें पांच ज्ञान ने त्रण अज्ञाननुं द्वार कह्युं.

( ५८५ )

तेरमुं योग द्वार पंदर प्रकारें ठे.

- १ सत्यमनोयोग.      ए औदारिक काययोग.
- २ असत्यमनोयोग.    १० औदारिकमिश्रकाययोग
- ३ सत्यमृषामनोयोग.   ११ वैक्रियकाययोग.
- ४ असत्यामृषामनोयोग. १२ वैक्रियमिश्रकाययोग.
- ५ सत्यवचनयोग.      १३ आहारककाययोग.
- ६ असत्यवचनयोग.    १४ आहारकमिश्रकाय०
- ७ सत्यमृषावचनयोग.   १५ कर्मणकाययोग.
- ८ असत्यामृषावचनयोग.

चौदमुं उपयोग द्वार बार प्रकारें ठे.

- १ मतिज्ञान,      २ श्रुतज्ञान,      ३ अवधिज्ञान,
- ४ मनःपर्यवज्ञान, ५ केवलज्ञान,    ६ मतिअज्ञान,
- ७ श्रुतज्ञान.      ८ विजंगज्ञान.    ए चक्षुर्दर्शन.
- १० अचक्षुर्दर्शन. ११ अवधिदर्शन. १२ केवलदर्शन.

पन्नरमुं उपपात द्वार ते प्रत्येक दंमकने विपे एक स  
मयमां केटला जीव आवी उपजे, तेनी जघन्य  
तथा उत्कृष्टथी संख्या कहेवानुं द्वार.

शोलमुं च्यवनद्वार, ते प्रत्येक दंमकने विपे एक सम  
यमां केटला जीव चवे, तेनी जघन्य तथा उ  
त्कृष्टथी संख्या कहेवानुं द्वार.

सत्तरमुं आयुष्य द्वार ते चारगति आश्री चार प्रकारें  
ठे. तेमां कया कया दंमकें केटलुं केटलुं आयुष्य  
ठे ? तेनुं प्रमाण कहेवानुं द्वार.

अठारमुं पर्याप्तिनुं द्वार. ठ प्रकारें ठे.

- |                     |                           |
|---------------------|---------------------------|
| १ आहारपर्याप्ति.    | २ शरीरपर्याप्ति.          |
| ३ इंद्रियपर्याप्ति. | ४ श्वासोद्ध्वासपर्याप्ति. |
| ५ नाषापर्याप्ति.    | ६ मनःपर्याप्ति.           |

उंगणीशमुं दिग आहार द्वार ठ प्रकारें ठे.

- |                    |                    |
|--------------------|--------------------|
| १ अधोदिशि आहार.    | ४ पश्चिमदिशि आहार. |
| २ ऊर्ध्वदिशि आहार. | ५ दक्षिणदिशि आहार. |
| ३ पूर्वदिशि आहार.  | ६ उत्तरदिशि आहार.  |

वीशमुं संज्ञा द्वार त्रण प्रकारें ठे.

- |                             |                       |
|-----------------------------|-----------------------|
| १ दीर्घकालिकी संज्ञा.       | २ हीतोपदेशिकी संज्ञा. |
| ३ दृष्टिवादोपदेशिकी संज्ञा. |                       |

एकवीशमुं गति द्वार. ते कया दंमकनो जीव मरी ने

कया कया दंमकमां जाय. ? ते कहेवानुं द्वार.

बावीशमुं आगति द्वार ते प्रत्येक दंमकने विषे केटला  
दंमकना जीव, आवी उपजे ? ते कहेवानुं द्वार.

त्रेवीशमुं वेद द्वार त्रण प्रकारें ठे.

- |             |              |              |
|-------------|--------------|--------------|
| १ पुरुषवेद. | २ स्त्रीवेद. | ३ नपुंसकवेद. |
|-------------|--------------|--------------|

चोवीशमुं अल्पबहुत्वनुं द्वार अछाणुं प्रकारें ठे.

अथ चौद मार्गणानां नाम उत्तर जेद सहित.

पहेली गति मार्गणा चार प्रकारें ठे.

- |           |              |                |           |
|-----------|--------------|----------------|-----------|
| १ देवगति, | २ मनुष्यगति, | ३ तिर्य्यचगति, | ४ नरकगति. |
|-----------|--------------|----------------|-----------|

बीजी इंद्रियमार्गणापांच प्रकारें ठे.

- |           |          |          |            |            |
|-----------|----------|----------|------------|------------|
| १ एकेंडी. | २ बेंडी. | ३ तेंडी. | ४ चौरिंडी. | ५ पंचेंडी. |
|-----------|----------|----------|------------|------------|

त्रीजी कायमार्गणा ठ प्रकारें ठे.

- १ पृथिवीकाय- २ अप्रकाय. ३ तेजकाय.  
४ वायुकाय. ५ वनस्पतिकाय. ६ त्रसकाय.

चोथी योग मार्गणा त्रण प्रकारें ठे.

- १ मनोयोग. २ वचनयोग. ३ काययोग.

पांचमी वेद मार्गणा त्रण प्रकारें ठे.

- १ पुरुषवेद. २ स्त्रीवेद. ३ नपुंसकवेद.

ठळी कषाय मार्गणा चार प्रकारें ठे.

- १ क्रोध. २ मान. ३ माया. ४ लोभ.

सातमी ज्ञान मार्गणा आठ प्रकारें ठे.

- १ मतिज्ञान. २ श्रुतज्ञान. ३ अवधिज्ञान.  
४ मनःपर्यवज्ञान. ५ केवलज्ञान. ६ मतिअज्ञान.  
७ श्रुतअज्ञान. ८ विजंगज्ञान.

आठमी संयम मार्गणा सात प्रकारें ठे.

- १ सामायिक चारित्र. २ ठेदोपस्थापनीय.  
३ परिहारविशुद्धि. ४ सूक्ष्मसंपराय चारित्र.  
५ यथाख्यात चारित्र. ६ देशविरति चारित्र.  
७ असंयम अविरति.

नवमी दर्शन मार्गणा चार प्रकारें ठे.

- १ चक्षुर्दर्शन. २ अचक्षुर्दर्शन.  
३ अवधिदर्शन. ४ केवलदर्शन.

दशमी लेश्या मार्गणा ठ प्रकारें ठे.

- १ कृष्णलेश्या. २ नीललेश्या. ३ कापोतलेश्या  
४ तेजोलेश्या. ५ पद्मलेश्या. ६ शुक्ललेश्या.

अगीयारमी नव्य मार्गणा बे प्रकारें ठे.

१ नव्य. २ अनव्य.

वारमी सम्यक्त्व मार्गणा ठ प्रकारें ठे.

१ उपशम. २ क्षायोपशम. ३ क्षायिक.  
४ मिश्र. ५ सास्वादन. ६ मिथ्यात्व.

तेरमी सत्री मार्गणा बे प्रकारें ठे.

१ सत्री. २ असत्री.

चौदमी आहार मार्गणा बे प्रकारें ठे.

१ आहारक. २ अणहारक.

बत्रीश अनंत कायनां नाम.

- |                   |                      |
|-------------------|----------------------|
| १ सर्व कंदनीजाति. | १४ गाजर.             |
| २ सूरणकंद.        | १५ लूणो साजी वृद्ध.  |
| ३ वज्रकंद.        | १६ लोढो पद्मनी कंद.  |
| ४ लीली हलदर.      | १७ गिरिकर्णिका एटले  |
| ५ लीलुं आडुं.     | सर्व वनस्पतिना नवा   |
| ६ लील्लोकचुरो.    | उगतां कूपलपान.       |
| ७ सत्तावरीवेली.   | १८ खरलुआकंद.         |
| ८ विरालीवेली.     | १९ थेगकंद.           |
| ९ कुंआरि.         | २० नीलीमोथ.          |
| १० थोहरिकंद.      | २१ लूणवृद्धनी ठाली अ |
| ११ गलोड.          | नंतकाय जाणवी, प      |
| १२ लसण कली.       | रंतु एना बीजाअव      |
| १३ वांसना कारेला. | यव अनंतकायनहीं.      |



|   |                      |
|---|----------------------|
| ११ खीलुडा कंद विशेष.                            | नस्पति पहेलुं जग्युं |
| १२ अमृतवेलि.                                    | तेहज, बीजुं नही.     |
| १४ मूलानी पाड.                                  | १८ सूअरवेली.         |
| १५ नूमिफोडा जे वर्षाका<br>ले ठत्राकारें उगे ते. | १९ पल्लंकाशक विशेष.  |
| १६ विरुहाअंकूषाधान्य.                           | २० कुवली आंबिली.     |
| १७ टंक वडुलशाक ते व                             | २१ आलुकंद.           |
|   | २२ पिंमालुकंद.       |

### बावीश अन्नद्वयनां नाम.

|   |  |
|---|--|
| १ वडनी पीपु अन्नद्व.                    | ११ विष ते सामलप्रमुख.                                      |
| २ पिंपलनी पीपु.                         | एथी उदर गत जीवो  |
| ३ उंबरनां फल.                           | नो विनाश आय ठे.  |
| ४ पीपरीनी पेपडी.                        | १२ करहाबहुजीवमय ठे.  |
| ५ कतुंबरना फल.                          | १३ सर्व माटीनी जाति.                                       |
| ६ मधुएमां त्रस जीवनी<br>उत्पत्ति आय.    | १४ रात्रिनोजनअन्नद्वयठे                                    |
| ७ मद्य एमां तेवाज व<br>एना जीव उपजे ठे, | १५ बहुबीजतेपंपोटादिक                                       |
| ८ मांस एमां त्रसजीव<br>नी उत्पत्ति आय.  | १६ बत्रीश अनंतकाय.   |
| एमाखणएमहासावद्यठे                       | १७ बोलानुं अथाणुं.   |
| १० हिम ए बहु अप्रकाय<br>मय ठे.          | १८ घोलवडां जे काचा गो<br>रसमांहेकखां होय ते.               |
|   | १९ वेंगण ते रिंगणा.  |
|   | २० जेने उलखीयें नही.<br>एवा अजाण्यां फूल<br>फल पान प्रमुख. |

२१ तुल्य फल ते कुञ्जली  
वस्तु अति काचाफल  
महुडां जांबू प्रमुख.

२२ चलित रस थयेली  
वस्तु ते सडेजुं अ  
न्नादिक जाणवुं.

अथ आयुर्जावि लिख्यते,

|             |            |                   |         |
|-------------|------------|-------------------|---------|
| जीवजाती.    | आयुर्वर्ष- | सर्पायु.          | १००-१२० |
| हस्तिआयु.   | १२०        | कीडीआयु.          | १       |
| मनुष्यायु.  | १२०        | उंदरआयु.          | २-२०    |
| अश्वआयु.    | २२-४८      | ससलाआयु.          | १०-१४   |
| व्याघ्रआयु. | ६४         | देवीआयु.          | ५०      |
| कागआयु.     | १००        | स्रवरआयु.         | ५०      |
| गर्दनायु.   | ६४         | वागोलआयु.         | ५०      |
| गालीआयु.    | १६         | बपैयाआयु.         | ३०      |
| श्वानआयु.   | १२         | सिंहआयु.          | १०००    |
| शियालआयु.   | २४         | माठलाआयु.         | १०००    |
| हरणआयु.     | २४         | उंटआयु.           | २५      |
| हंसआयु.     | १००        | नेसआयु.           | २५      |
| मांजारआयु.  | १२         | गायआयु.           | २५      |
| सूडाआयु.    | १२         | घेटाआयुर्वर्ष     | १६      |
| गेंमाआयु.   | २०         | जूआयु मास         | ३       |
| सारसआयु.    | ५०         | कंसारीआयु-मास.    | ३       |
| क्रौंच आयु. | ६०         | वींठीआयु मास.     | ६       |
| बगला आयु.   | ६०         | चौरिंङ्गिआयु मास. | ६       |

संमूर्द्धिम गर्भज जलचरनुं उत्कृष्टाय पूर्वकोडी वर्षेनु

अथश्रीजिनश्रुवनने विषे चोराशी आशातना न करवी, तेनां नाम लखीयें ठेयें.

- १ बडखो न नाखवो.
- २ हिंचोलादि क्रीडान०
- ३ कलहप्रमुखन करवो.
- ४ धनुष्कलादि न करवी.
- ५ पाणीना कोगला न०
- ६ तांबूलालिक न खावां.
- ७ तांबूल शुकवां नही.
- ८ मुखथीगालो न देवी.
- ९ मूत्रविष्टा न नाखवी.
- १० शरीर न धोवुं.
- ११ बाल न उत्तराववा.
- १२ नख न उत्तराववा.
- १३ रुधिर न नाखवुं.
- १४ सुखडी न खावी.
- १५ चामडी न नाखवी.
- १६ पित्त वमन न करवुं.
- १७ वमन न करवुं.
- १८ दांत नाखवा अथवा समारवा नही.
- १९ विश्रामण न करवो.
- २० गाय प्रमुख न बांधवी.
- २१ दांतनोमेलननाखवो

- २२ आंखनोमेलननाखवो
- २३ नखनोमेलननाखवो.
- २४ गंमस्थलनो मेल न०
- २५ नाकनोमेलननाखवो.
- २६ माथानोमेलननाखवो
- २७ काननोमेलननाखवो.
- २८ शरीरनी चामडीनो मेल न नाखवो.
- २९ मित्रसार्थेमसलतन०
- ३० विवादार्थे एकठानथवुं.
- ३१ नामुं न लखवुं.
- ३२ कोश्चीज वेचवी नही.
- ३३ थापण न मूकवी.
- ३४ माठेआसने न बेसवुं.
- ३५ ठाणां थापवां नही.
- ३६ कपडांसूकववांनही.
- ३७ धान्य सूकववांनही.
- ३८ पापड सूकववा नही.
- ३९ वडीयो करवी नही
- ४० राजनयादिकेंद्रूपवुंन०
- ४१ रुदन करवुं नही.
- ४२ विकथा करवी नही.

- ४३ शस्त्र घडवां नही.  
 ४४ तिर्येच बांधवा नही.  
 ४५ तापणी करवी नही.  
 ४६ अन्नादिक रांधवुं नही.  
 ४७ नाणुं परखवुं नही.  
 ४८ निसिहीजांगवी नही.  
 ४९ ठत्र धरवुं नही.  
 ५० खासडां मूकवां नही.  
 ५१ शस्त्र मूकवां नही.  
 ५२ चामर धरावुं नही.  
 ५३ मन एकाग्र करवुं.  
 ५४ तेलादिकनचोपडवां.  
 ५५ सचित्तजोग त्यजवो.  
 ५६ अयोग्यअचेतत्यजवो  
 ५७ जिनपीठेंहाथजोडवा  
 ५८ एकसाडीउत्तरासणक.  
 ५९ मुकुटधारण न करवो.  
 ६० पाघंडीनो अविवेक.  
 ६१ तोरादिक न घालवा.  
 ६२ होड न करवी.  
 ६३ गेमीदडे रमवुं नही.  
 ६४ जुहारसलामनकरवी.  
 ६५ नांम चेष्टा नकरवी.  
 ६६ तुंकार रेकार नकहेवो  
 ६७ धरणे बेसवुं नही.  
 ६८ युद्ध करवुं नही.  
 ६९ चोटलादिसमारवान०  
 ७० पलोठीयें बेसवुं नही  
 ७१ चांखडीपेहेरवी नही  
 ७२ लांबे पगे बेसवुंनही  
 ७३ पुडपुडीवगाडवी नही  
 ७४ कादव न करवो.  
 ७५ अंगनी रज उमावीन.  
 ७६ मैथुन सेववुं नही.  
 ७७ जुगुटुं रमवुं नही.  
 ७८ जोजन करवुं नही.  
 ७९ मद्ययुद्ध करवुंनही.  
 ८० वैद्यकर्म करवुं नही.  
 ८१ व्यापार करवो नही.  
 ८२ शय्यापाथरवीनही.  
 ८३ आहार राखवो नही  
 ८४ स्नान करवुं नही.

ए चोराशी आशातना ते जिनपूजादिक कार्यविना शरीर शुश्रूषादिकने अर्थें करे तो आशातना जाणवी.

( ५९३ )

माटे तेनो त्याग करी आझारुचि थऽ आशातना र  
हित थका जिनमंदिरने विषे प्रवर्त्तवुं.

सात नयनां नाम.

- १ नैगम नय. २ संग्रह नय. ३ व्यवहार नय.  
४ रुजुसूत्र नय. ५ शब्द नय. ६ समनिरूढनय.  
७ एवंजुत नय.

चार निक्षेपनां नाम.

- १ नाम निक्षेप. २ इव्य निक्षेप.  
३ स्थापना निक्षेप. ४ जाव निक्षेप.

चार कारणनां नाम.

- १ उपादान कारण. २ असाधारण कारण.  
३ निमित्त कारण. ४ अपेक्षा कारण.

आठ मदनां नाम.

- १ जातिमद. २ कुलमद. ३ बलमद.  
४ रूपमद. ५ श्रुतमद. ६ तपोमद.  
७ लाजमद. ८ ऐश्वर्यमद.

अष्ट मांगलिकनां नाम.

- १ आरीसो. २ जडासन. ३ वर्धमान.  
४ श्रीवत्स. ५ मत्स्ययुग्म. ६ प्रधानकुंज  
७ साथीउ. ८ नंदावर्त्त.

श्रावकनां बारव्रतनां नाम.

- १ स्थूलप्राणातिपातवि० २ स्थूलअदत्तादानवि०  
३ स्थूलमृषावादविरमण ४ मैथुन विरमण व्रत.

( ५९४ )

- ५ परिग्रह परिमाण व्रत.      ६ दिक् परिमाण व्रत.  
 ७ जोगोपजोगपरिमाण.      ८ अनर्थदंमविरमणव्रत  
 ९ सामायिक व्रत.      १० देशावगाशिकव्रत.  
 ११ पौषधोपवास व्रत.      १२ अतिथिसंविजागव्रत.

चौद गुणगणानां नाम.

- |                      |                         |
|----------------------|-------------------------|
| १ मिथ्यात्व गुणगणं.  | ८ निवृत्तिबादर गुणगण    |
| २ सास्वादन गुणगणं    | ९ अनिवृत्तिबादर गुण     |
| ३ मिश्र गुणगणं.      | १० सूक्ष्मसंपराय गुणगण. |
| ४ अविरतिसम्यग्दृष्टि | ११ उपशान्तमोह गुणगण     |
| ५ देशविरति गुणगणं    | १२ क्षीणमोह गुणगण.      |
| ६ प्रमत्त गुणगणं.    | १३ सयोगीकेवली गुणगण     |
| ७ अप्रमत्त गुणगणं.   | १४ अयोगीकेवली गुणगण     |

समूर्द्धिम मनुष्यने उपजवना चौद स्थानक.

- |                    |                          |
|--------------------|--------------------------|
| १ वडिनीतिमांहे.    | ८ रक्तमांहे.             |
| २ लघुनीतिमांहे.    | ९ शुक्रपुञ्जलमांहे.      |
| ३ श्लेष्ममांहे.    | १० साडेसुवा वीर्यमांहे.  |
| ४ नासिकानामलमांहे. | ११ मृतकलेवर मांहे.       |
| ५ वमनमांहे.        | १२ स्त्रीपुरुषनेसंयोगें. |
| ६ पत्तमांहे.       | १३ नगरनाखालमांहे.        |
| ७ पिरूमांहे.       | १४ सर्वअशुचिस्थानमांहे.  |

साधुना सत्तावीस गुणनां नाम.

- ५ प्रणातिपात विरमणादिक पांच महाव्रत.  
 ६ रात्रिजोजनविरमण व्रत.

( ५९५ )

- १२ ढक्कायना जीवोनी रक्का करे, ते ठ गुण.
- १७ पांच इंद्रियोनो निग्रह करे, ते पांच गुण.
- १८ लोचनो जय.
- १९ कूमा राखे.
- २० नाव विशुद्धि एटले चित्तनिर्मलता.
- २१ पडिलेहण प्रजार्जन करवाथी विशुद्धि थाय.
- २२ संयमयोगयुक्तता.
- २५ अकुशल मन वचन अने कायानुं रुंधवुं, ए त्रण.
- २६ शीतादिक वेदनानुं सहन करवुं.
- २७ मरणांत उपसर्ग सहन करवा.

त्रीश अकर्मचूमि क्षेत्रनां नाम.

- ५ हेमवंत क्षेत्र. | ५ हरिवर्ष क्षेत्र. | ५ देवकुरु क्षेत्र.  
५ उत्तरकुरु क्षेत्र. | ५ रम्यक क्षेत्र. | ५ ऐरण्यवतक्षेत्र.

पंदर कर्मचूमि क्षेत्रनां नाम.

- ५ नरतक्षेत्र. ५ ऐरवतक्षेत्र. ५ महाविदेहक्षेत्र.

सिद्धना एकत्रीशगुणनां नाम.

- |                      |                  |
|----------------------|------------------|
| ५ पांच संस्थान रहित. | ३ त्रण वेद रहित. |
| ५ पांच वर्ण रहित.    | १ शरीर रहित.     |
| २ वे गंध रहित.       | १ संग रहित.      |
| ५ पांच रस रहित.      | १ जन्म रहित.     |
| ८ आठ फरस रहित.       |                  |

प्रकारांतरें वली सिद्धना एकत्रीश गुण कहे ठे.

- ५ पांच प्रकारनां ज्ञानावरणीय कर्मथी रहित.

( ५९६ )

- ए नव प्रकारनां दर्शनावरणीय कर्मथी रहित.  
१ बे प्रकारना वेदनीय कर्मथी रहित.  
२ बे प्रकारना मोहनीय कर्मथी रहित.  
४ चार प्रकारना आयु कर्मथी रहित.  
१ बे प्रकारना नाम कर्मथी रहित.  
२ बे प्रकारना गोत्र कर्मथी रहित.  
५ पांच प्रकारना अंतराय कर्मथी रहित.

सात जयनां नाम.

- १ हस्तिनो जय. २ सिंहनो जय.  
३ सर्पनो जय. ४ आग्नो जय.  
५ समुद्रादि जलनो जय. ६ राजानो जय.  
७ चोरनो जय.

संसारी जीवने सात महोटां सुख कह्यां ठे, तेनां नाम.

- १ रोगरहित शरीर होय.  
२ कोशुनो देणदार न होय.  
३ यात्रादिकविनाआजीविकार्थेपरदेश न जाय.  
४ घरमां स्त्री सुपात्र होय.  
५ पुत्रपौत्रादिकनुं सुख होय.  
६ सगा कुटुंबादिक चारे पढ़ेंकरी सहित होय.  
७ पंच महाजनमां प्रतिष्ठावान् होय.

ठ दर्शननां नाम.

- १ जैनदर्शन. २ मीमांसकदर्शन. ३ बौद्धदर्शन.  
४ नैयायिकदर्शन. ५ वैशेषिकदर्शन. ६ सांख्यदर्शन



( ५९७ )

सात जयनां नाम.

- १ इहलोक जय. २ परलोक जय. ३ आदान जय.
- ४ अकस्मात् जय. ५ वेदना जय. ६ मरण जय.
- ७ अपजय अपकीर्तिनो जय.

ठ जाषानां नाम.

- १ संस्कृत २ प्राकृत. ३ शौरसेनी.
- ४ मागधी. ५ पेशाचिकी. ६ अपभ्रंशी.

चक्रवर्तिनाचौदरत्नमां सात एकेंद्रियरत्न ठे, तेनां नाम.

- १ चक्ररत्न. २ ठत्र रत्न. ३ चर्म रत्न. ४ दंष्ट्र रत्न.
- ५ असि रत्न. ६ मणि रत्न. ७ कांगणी रत्न.

मात पंचेंद्रिय रत्ननां नाम.

- १ सेनापति रत्न. २ गाथापति रत्न. ३ सूत्रधार रत्न.
- ४ पुरोहित रत्न. ५ स्त्री रत्न. ६ अश्व रत्न.
- ७ गज रत्न.

॥ हवे जीवना प्रकार कहे ठे ॥

१ चेतना लक्षणें करी सर्व जीव एक प्रकारें ठे;  
केम के, कीडी कुंजर सर्वमां चैतन्य सरखुं ठे, माटे.

हवे सर्वजीवना बे बे प्रकार कहे ठे.

- १ सिद्धना जीव. १ सकषायीजीव ते संसारी
- २ संसारीजीव. २ अकषायीजीव सिद्धना.
- १ इन्द्रियसहित ते संसारी. १ सयोगीजीव ते संसारी
- २ इन्द्रियरहित ते सिद्धना. २ अयोगीते सिद्धना जीव

( ५९८ )

- १ सशरीरीजीवसंसारि. १ आहारीजीव ते संसारि  
२ अशरीरी जीवसिद्धना. २ अणाहारीजीव सिद्धना  
१ सवेदीजीवसंमारि. १ नासगाजीव.  
२ अवेदीतेसिद्धना जीव. २ अनासगाजीव.

हवे संसारि जीवना बे बे प्रकार अनेक रीतें कहे ठे.

- १ त्रस वेंडियादिकजीव. २ जेणे स्वयोग्यपर्याप्तिहजी  
२ स्थावर एकेंडिय जीव लीधी नथी पण लेशे, ते  
१ सूक्ष्मजीव. करण अपर्याप्ता जीव.  
२ बादरजीव. १ जेणे स्वयोग्यपर्याप्ति सर्व  
१ पर्याप्ताजीव. लीधी नथी पण लेशे ते  
२ अपर्याप्ताजीव. लब्धिपर्याप्ता जीव.  
१ जवसिद्धियाजीव. २ जे स्वयोग्य पर्याप्ति.  
२ अजवसिद्धिया जीव. पूर्ण पाम्यो ते करण  
१ जेस्वयोग्यपर्याप्ति नहीज पर्याप्ता जीव.  
लीयेतेलब्धिअपर्याप्ताजीव.

हवे संसारि जीवना त्रण त्रण प्रकार कहे ठे.

- १ पुरुषवेदी. २ स्त्रीवेदी. ३ नपुंसकवेदी.  
१ मन योगी. २ वचन योगी. ३ काययोगी.  
१ संयति. २ असंयति. ३ संयतासंयति  
१ सम्यग्दृष्टि. २ मिथ्यादृष्टि. ३ मिश्रदृष्टि.  
१ रुज्जुजड. २ रुज्जुप्राज्ञ. ३ वक्रजड.  
१ नव्यजीव. २ अजव्यजीव. ३ जातिनव्यजीव.

( ૫૯૯ )

સર્વ જીવના ત્રણ પ્રકાર.

૧ નવસિદ્ધિયા. ૨ અનવસિદ્ધિયા. ૩ નોનવ સિદ્ધિયા અને નો અનવ સિદ્ધિયા તે સિદ્ધના જીવ.

૧ પર્યાપ્તા. ૨ અપર્યાપ્તા. ૩ નોપર્યાપ્તા, નો અપર્યાપ્તા તે સિદ્ધના જીવ.

૧ સૂક્ષ્મજીવ. ૨ બાદરજીવ. ૩ નોસૂક્ષ્મ નો બાદર તે સિદ્ધના જીવ.

॥ ગતિઆશ્રી સર્વ જીવ ચાર પ્રકારેં છે ॥

૧ દેવગતિ, ૨ મનુષ્યગતિ, ૩ તિર્યંચગતિ, ૪ નરકગતિ.

॥ ઇન્દ્રિય આશ્રી સર્વ જીવ પાંચ પ્રકારેં છે ॥

૧ એકેન્દ્રિય ૨ બેન્દ્રિય, ૩ ત્રેન્દ્રિય ૪ ચૌરિન્દ્રિય ૫ પંચેન્દ્રિય.

॥ કાયઆશ્રી સર્વ જીવ ૭ પ્રકારેં છે ॥

૧ પૃથિવીકાય. ૨ અપ્કાય. ૩ તેત્તકાય.

૪ વાત્તકાય. ૫ વનસ્પતિકાય. ૬ ત્રસકાય.

॥ હવે પૂર્વોક્તથાવર જીવના પાંચ પ્રકાર કહે છે ॥

૧ પૃથિવી. ૨ અપ ૩ તેત્ત, ૪ વાત્ત, ૫ વનસ્પતિ,

॥ ત્રસ જીવ ચાર પ્રકારના છે ॥

૧ બેન્દ્રિય. ૨ ત્રેન્દ્રિય. ૩ ચૌરિન્દ્રિય. ૪ પંચેન્દ્રિય.

તિહાં બેન્દ્રિય ત્રેન્દ્રિય અને ચૌરિન્દ્રિયના જેદો સંદેષ પૃથ્વી આગલ દંમકના બોલોમાં લખાઈ ગયા છે, તથા પંચેન્દ્રિય જીવ નારકી, તિર્યંચ, મનુષ્ય અને દેવતા મલી ચાર પ્રકારના છે; તેના જેદ પણ સંદેષે આગલ દંમકના બોલોમાં લખાઈ ગયા છે. અહીયાં તેનું દેહ માન તથા આયુ કહે છે. તેમાં પ્રથમ ચાર પ્રકાર

રના દેવોનું ઉત્કૃષ્ટ દેહમાન તથા આયુ કહે છે ॥

પ્રથમ દશ નવનપતિની નિકાયમાં પહેલી અસુરકુમાર નિકાયના દક્ષણ શ્રેણિ તથા ઉત્તરશ્રેણિના મલી બે ઇંડો છે, તેમાં ઉત્તરશ્રેણિનો અધિપતિ બલીંડ છે, તે નું આયુ એકસાગરોપમ જાજેરું છે, અને દક્ષણ શ્રેણિનો અધિપતિ ચમરેંડ છે, તેનું આયુ એક સાગરોપમ છે, બાકી નવનિકાયના ઉત્તર શ્રેણિના ઇંડોનું આયુ બે પલ્યોપમ કાંઈક ઉઠેરું જાણવું, અને દક્ષણ શ્રેણિના નવનિકાયના ઇંડોનું આયુ દોઢ પલ્યોપમ જાણવું. તથા એ સર્વ દશેનિકાયના દેવોનું દેહમાન સાત હાથ પ્રમાણ જાણવું. રત્નપ્રજા પૃથિવીનો પિંદ્ર ( ૧૮૦૦૦૦ ) યોજન જાડો છે, તેમાંથી હજાર યોજન નીચે અને હજાર યોજન ઉપર મૂકી બાકીના ( ૧૭૮૦૦૦ ) યોજનમાં એ દશ નિકાયના દેવો છે.

બીજા વ્યંતર નિકાયના દેવો બે પ્રકારના છે, એ સર્વ દેવોનું દેહમાન સાત હાથનું છે, તથા જઘન્યાયુ દશ હજાર વર્ષનું અને ઉત્કૃષ્ટાયુ એક પલ્યોપમનું છે, એ રત્ન પ્રજાપૃથિવીના ઉપરલા હજાર યોજનમાંથી શો યોજન નીચે તથા શો યોજન ઉપર મૂકી બાકીના આઠશો યોજનમાં વ્યંતરદેવો વસે છે. તથા ઉપરના મૂકેલા શો યોજનમાંથી વલી દશ યોજન નીચે તથા દશ યોજન ઉપર મૂકીયેં, તેવારે બાકીના એંશી યોજનમાં વાણવ્યંતર દેવો વસે છે.

ત્રીજી જ્યોતિષી દેવતાઉની નિકાય પાંચ પ્રકારેં છે.

તે સંજૂતલ પૃથિવીથીકી ઉપર ૭૯૦ યોજનથી માં  
મીને નવસો યોજન પર્યંતના એકશો ને દશ યોજનમાં  
એમનાં વિમાન છે, તે સર્વનું દેહમાન સાત હાથ પ્રમા  
ણ છે. અને ઉત્કૃષ્ટાયુ નીચેં પ્રમાણે છે.

- ૧ ચંદ્રમાનું એક પલ્યોપમ ઉપર એક લાખ વર્ષાયુ છે.
  - ૨ સૂર્યનું એક પલ્યોપમ ઉપર એક હજાર વર્ષાયુ છે.
  - ૩ ગ્રહમંગલાદિકનું એક પલ્યોપમાયુ છે.
  - ૪ આશ્વિન્યાદિક નક્ષત્રનો અર્ધ પલ્યોપમાયુ છે.
  - ૫ તારાનું એક પલ્યોપમનો ચોથો જાગ આયુ છે.
- ચોથી વૈમાનિક દેવોની નિકાય બે પ્રકારે છે તેમાં પ્રથમ  
કલ્પવાલા દેવોનું ઉત્કૃષ્ટ દેહ માન અને આયુ કહે છે.  
દેવલોકનાં નામ દેહમાન આયુ.

- |              |                            |
|--------------|----------------------------|
| ૧ સૌધર્મ.    | સાત હાથ. બે સાગરોપમ.       |
| ૨ ઈશાન.      | સાત હાથ. બે સાગરોપમજાજેરા. |
| ૩ સનત્કુમાર. | ઠ હાથ. સાત સાગરોપમ.        |
| ૪ માર્દેંડ.  | ઠ હાથ. સાત સાગરોપમ જાજેરા  |
| ૫ બ્રહ્મ     | પાંચ હાથ. દશ સાગરોપમ.      |
| ૬ જાંતક.     | પાંચ હાથ. ચૌદ સાગરોપમ.     |
| ૭ શુક્ર.     | ચાર હાથ. સત્તર સાગરોપમ.    |
| ૮ સહસ્ત્રાર  | ચાર હાથ. અઠાર સાગરોપમ.     |
| ૯ આણત.       | ત્રણ હાથ. ઝંગણીશસાગરોપમ.   |
| ૧૦ પ્રાણત.   | ત્રણ હાથ. વીશ સાગરોપમ.     |
| ૧૧ આરણ.      | ત્રણહાથ. એકવીશસાગરોપમ.     |
| ૧૨ અચ્યુત.   | ત્રણહાથ. બાવીશસાગરોપમ.     |

હવે બારમા દેવલોક સુધી ચોશઠ ઇંડો છે, તે આવી રીતે  
 ૧૦ દશચુવનપતિની દશ નિકાય માંહેલી એકેકી  
 નિકાયને વિષે દક્ષિણ તથા ઉત્તર શ્રેણિનો પ્રત્યે  
 કે એકેક ઇંડ ગણતા વીશ ઇંડો ચુવનપતિના છે.  
 ૩૧ વ્યતર તથા વાણવ્યંતરની શોલ નિકાય માંહેલી  
 એકેકી નિકાયને વિષે દક્ષિણ તથા ઉત્તર શ્રેણિનો  
 પ્રત્યેકેકે એકેક ઇંડ ગણતાં બત્રીશ ઇંડવ્યતર દેવોના છે.  
 ૧ પાંચ જ્યોતપીના ચંડ અને સૂર્ય એ બે ઇંડ છે.  
 ૧૦ બાર દેવલોકમધ્યે આઠમા દેવલોક સુધી તો  
 એકેકા દેવલોકનો એકેક ઇંડ છે, તેવાર પઠી ન  
 વમા તથા દશમા મલીને બે દેવલોકનો એકજ ઇંડ  
 અને અગીઆરમા તથા ગારમા મલી બે દેવલોકનો  
 એકજ ઇંડ છે. એ રીતે દશ ઇંડ વૈમાનિક દેવોના છે.  
 એ સર્વ મલી ચોશઠ ઇંડ થયા.

હવે ઉપર ગ્રૈવેયક તથા અનુત્તરવિમાનને વિષે સ્વામી  
 સેવકપણું નથી, તેથી તિહાં ઇંડ પણ નથી, એ કલ્પાતીત  
 દેવો છે. ગ્રૈવેયકના દેવોનું દેહમાન તથા આયુ કહે છે.

પહેલાં કોઠામાં ગ્રૈવેયકનું નામ બીજા કોઠામાં જે  
 અંક માંમયો છે, તેટલા સાગરોપમનું આયુ જાણવું;  
 અને શરીર તો સર્વ ગ્રૈવેયકેં બે હાથ પ્રમાણ જાણી લેવું.

| પ્રથમ ત્રિક.    | બીજું ત્રિક. | ત્રીજું ત્રિક. |
|-----------------|--------------|----------------|
| સુદર્શન. ૧૩     | સર્વતોજડ. ૧૬ | સોમનસ્ય. ૧૯    |
| સુપ્રતિબદ્ધ. ૧૪ | વિશાલ. ૧૭    | પ્રીતિકર. ૨૦   |
| મનોરમ. ૧૫       | સુમનસ. ૧૮    | આદિત્ય. ૨૧     |

हवे पांचे अनुत्तर विमानें एक हाथनुं शरीर तथा जघन्य एकत्रीश अने उत्कृष्ट तेत्रीश सागरोपमनुं आयु चार विमानोने विषे जाणवुं, अने पांचमा सवार्थ सिद्धिने विषे जघन्योत्कृष्ट तेत्रीश सागरोपमायु.

हवे तिर्येचना उत्कृष्ट देहमान तथा आयु कहे ठे.

जीवजाति. देहमान आयु.

पृथिवीकाय अंगुलनो असंख्यजाग २२००० वर्ष.

अप्कायप्राणी अंगुलनो असंख्यजाग ७००० वर्ष.

अग्निकाय अंगुलअसंख्यजाग त्रण दिवसनुं आयु.

वायुकाय अंगुलअसंख्यजाग ३००० वर्षायु.

साधारणवनस्पति अंगुलासंख्यजाग अंतरमुहूर्त.

प्रत्येकवनस्पति हजारयोजनजाजेरां १०००० वर्ष.

बेंडियजीव. बार योजन. बार वर्ष.

तेंडियजीव. त्रण गाउ. ४९ दिवस.

चौरिंडिय जीव. चारगाउ. ठ महिना.

संमूर्द्धिममत्स्यादि. हजार योजन. क्रोड पूर्व.

सं०चतुष्पदादि. बेथी नव गाउ. ८४०००) वर्ष.

सं०खेचरनुं. बेथी नवधनुष. ७२०००) वर्ष.

सं०उरःपरिसर्प. बेथी नवयोजन. ५३०००) वर्ष.

सं०जुजपरिसर्प. बेथी नवधनुष. ४२०००) वर्ष.

गर्नजमत्स्यादिक. हजार योजन. क्रोड पूर्व.

गर्नजथलचर. ठ गाउ. त्रण पत्योपम.

गर्नजखेचरपंखी. बेथीनवधनुष पत्योपमासंख्य०

गर्नजउरःपरिसर्प. हजारयोजन क्रोडपूर्व.

ગર્જજહુજપરિસર્પ. બેથી નવગાઝ કોડપૂર્વ.

નારકીનાં ઝલ્કુષ્ટ દેહમાન તથા આયુ.

નામ. દેહમાન. આયુ.

૧ રત્નપ્રજા. ૭૥૥ ધનુષને ૬ અંગુલ એકસાગરોપમ

૨ શર્કરપ્રજા. ૧૫૥ ધનુષને ૧ અંગુલ ત્રણ સાગરોપમ

૩ વાલુપ્રજા. ૩૧૧ ધનુષ. સાત સાગરોપમ.

૪ પંકપ્રજા. ૬૨૧ ધનુષ. દશ સાગરોપમ.

૫ ધૂમપ્રજા. ૧૨૫ ધનુષ. સત્તર સાગરોપમ.

૬ તમપ્રજા. ૨૫૦ ધનુષ. બાવીશ સાગરોપમ.

૭ તમતમપ્રજા. ૫૦૦ ધનુષ. તેત્રીશ સાગરોપમ.

મનુષ્યનું ઝલ્કુષ્ટ દેહમાન ત્રણ ગાઝનું તથા ઝલ્કુષ્ટાયુ ત્રણ પલ્યોપમનું જાણવું. મનુષ્ય કર્મનૂમિ, અકર્મનૂમિ તથા અંતરદ્વીપના મલીને ત્રણ પ્રકારના છે તે વિષે કિંચિત્ વિસ્તારે વાત લેવીયેં થૈયેં.

તીર્થાલોકને વિષે અઢીસાગરોપમ કાલના જેટલા સમય થાય તે પ્રમાણે અસંખ્યાતા દ્વીપ અને સમુદ્ર છે, તે સર્વ દ્વીપ સમુદ્રની વચ્ચે આપણે જેમાં વસીયેં થૈયેં તેનું નામ જંબુદ્વીપ છે, તે એકલાખ યોજનનું છે, તેને ફરતો લવણ સમુદ્ર બે લાખ યોજનનો છે, તેને ફરતો ચાર લાખ યોજન પ્રમાણ ધાતકી રવંમનામા દ્વીપ ચૂડીને આકારે છે, તેને ફરતો આઠ લાખ યોજન પ્રમાણ કાલોદ સમુદ્ર છે, તેને ફરતો શોલ લાખ યોજન પ્રમાણ પુષ્કરવર દ્વીપ છે, તે દ્વીપના અર્ધા જાગના આઠ લાખ યોજનમાં મનુષ્યની વસ્તિ છે, એ બ



દા અઢીઢીપના બેઢુ બાહુના મલી પિસ્તાલીશ લાલ્લ યોજનમાં મનુષ્ય વસે ઢે, ડપરાંત બીજા સર્વ ઢીપ સ મુડોને વિષે તિર્યંચગતિના જીવોનો નિવાસ ઢે, તે જંબૂ ઢાપનો તથા અઢીઢીપનો જૂદો જૂદો નકાશો આ પુસ્ત કની આદિમાં ઢે તે જોવાથી તરત સમજાડ આવશે.

હવે ં અઢીઢીપને વિષે જે સ્વેત્રમાં મનુષ્યો રહે ઢે, તેનાં નામ પ્રત્યેક ઢીપ આશ્રયી લલ્લીયેં ઢેયેં.

તિહાં જંબૂઢીપમાં ંક જરત, બીજો મહાવિદેહ અને ત્રીજો ંરવત, ં ત્રણ સ્વેત્ર, તેમજ ઢાતકી સ્વંમ માં બે જરત, બે મહાવિદેહ અને બે ંરવત, મલીને ઢ સ્વેત્ર તથા તેવાજ નામેં ઢ સ્વેત્ર પુષ્કરાર્દમાં ઢે, સર્વ મલીને પંદર સ્વેત્રમાં કર્મજૂમિ મનુષ્ય વસે ઢે. ં દે ત્રોને વિષે ચોવીશ તીર્થંકરાદિક ત્રિષષ્ટિશિલાકા પુરુષો ડત્પન્ન થાય ઢે. તેના વર્ત્તમાન નામ, આયુ તથા દેહમા ના દિકનું યંત્ર આ પુસ્તકના અંતમાં દાલ્લ કલું ઢે.

વલી જંબૂઢીપમાં, ૧ હિમવંત, ૨ ંરણ્યવત, ૩ હરિ વર્ષ, ૪ રમ્યક, ૫ દેવકુરુ, ૬ ડત્તરકુરુ, ં ઢ દેત્ર તથા વલી ંવાજ નામેં બે બે દેત્ર ઢાતકી સ્વંમને વિષે ત થા બે બે સ્વેત્ર પુષ્કરાર્દને વિષે ઢે તેથી બાર દેત્ર ઢા તકીસ્વંમના તથા બાર દેત્ર પુષ્કરાર્દના તેની સાથે જંબૂઢીપના ઢ મેલવીયેં, તેવારેં ત્રીશ સ્વેત્ર અકર્મ જૂમિતે યુગલીયા મનુષ્યોને વસવાનાં ઢે, જેમાં અસી મસી અને કૃષિ, ં ત્રણ પ્રકારના ડદ્યમ નથી. ં મનુષ્યોની સ્થિ તિ વિષે હાલમાં અઢીઢીપનો નકાશો ઢાપેલો ઢે, તેની

સાથે તેની હકીગતનું પણ એક પુસ્તક ઠાપ્યું છે, તેમાં સ વિસ્તર અધિકાર છે, તેથી અહીંયાં સ્વલ્પ વાત લખી છે.

વલી આ જંબુદ્વીપનાં દક્ષણ બાજુના હિમવંત પર્વત અને ઉત્તર તરફના શિશ્વરી પર્વત, એ બે પર્વતની હાથીના દાંતના જેવી ચાર ચાર દાઢાઉં લવણ સમુદ્રમાં ગઈ છે, તે એકેકી દાઢ ઉપર સાત સાત અંતર દ્વીપ છે, તેવારેં બેદુ પર્વતની આઠ દાઢાઉં ઉપર ઠપન્ન અંતરદ્વીપ છે, તેમાં પણ પૂર્વોક્ત અસિ મસિ અને કૃષિ એ ત્રણ પ્રકારના ઉદ્યમ રહિત યુગલિક મનુષ્યો વસે છે, એ રીતેં સર્વ મલી ( ૧૦૧ ) પ્રકારના મનુષ્યો છે.

હવે બીજા સિદ્ધના જીવ પંદર જેદે છે, તેનાં નામ.

- ૧ જિનસિદ્ધ તે કૃષ્ણાદિ તીર્થંકર પોતેં જાણવા.
- ૨ અજિનસિદ્ધ તે પુંમરીકાદિ ગણધર જાણવા.
- ૩ તીર્થસિદ્ધ તે પ્રસન્નચંદ્રાદિક તથા ગણધરાદિ.
- ૪ અતીર્થસિદ્ધ તે મરુદેવ્યાદિક જાણવા.
- ૫ ગ્રહસ્થલિંગસિદ્ધ તે નરત ચક્રવર્ત્યાદિ.
- ૬ અન્યલિંગસિદ્ધ તે તાપસાદિવેર્ષેં વલ્કલચીરી.
- ૭ સ્વલિંગસિદ્ધ તે સાધુવેર્ષેં જંબુસ્વામી પ્રમુખ.
- ૮ સ્ત્રીલિંગસિદ્ધ તે સ્ત્રીલિંગેં રાજિમત્યાદિ.
- ૯ પુરુષલિંગસિદ્ધ તે ગુણાઢધરાજાદિક.
- ૧૦ નપુંસકલિંગસિદ્ધ તે કૃત્રિમનપુંસક ગાંગેયાદિક.
- ૧૧ પ્રત્યેકબુદ્ધસિદ્ધ તે કરકંકુરાજાઆદિક જાણવા.
- ૧૨ સ્વયંબુદ્ધસિદ્ધ તે કપિલાદિક.

- १३ बोधबोधित सिद्ध ते पंदरशें त्रण तापसादिक  
१४ एकसिद्ध ते गजसुकुमालादिक.  
१५ अनेक सिद्ध ते नरतपुत्रादिक घणा सिद्ध.

॥ अथ काल प्रमाण ॥

- १ प्रथम अति सूक्ष्मकालने एक समय कहियें.  
२ तेवा असंख्याता समयें एक आवलिका आय.  
३ तेवी (१६७७७२१६) आवलियें एक मुहूर्त आय.  
४ त्रीश मुहूर्त दिवस एटले एक अहोरात्र आय.  
५ पंदर अहोरात्रें एक पखवाडयुं आय.  
६ वे पखवाडीयें एक महिनो आय.  
७ बार महीने एक वर्ष आय  
८ तेवा (७०५६००००००००००) वर्षें एक पूर्व आय.  
९ तेवा असंख्याता पूर्वे एक पत्योपम आय, ते आ  
वीरीतें चार गाउ उंमो अने चार गाउ पोहलो वाट  
लाकारे त्रण योजन जाजेरी परिधिवालो एक पत्य  
कल्पवो, तेमां उत्तर कुरु खेत्रसंबंधी युगलियांना रोम  
एवा सुद्ध ठे के ते ४०९६ रोम एकठां करीयें, तेवारें क  
र्मनूमि मनुष्यनो एक वाल आय. एवा ते युगलीयाना  
सूक्ष्म रोम ठे, ते रोम लंबाश्यें एक तसुनो लश्ने तेना  
सात वखत आठ आठ कटका करीयें, तेवारें  
(२०९७१५२) कटका आय, तेवा कटके करी पूर्वोक्त  
पालो नरीने पढीं ते एकेक कटको शो शो वर्षने अंतरे  
काढतां जे वारें ते पत्य खाली आय, तेवारें संख्याता

वर्षे थाय, तेने बादर पढ्योपम कहीयें, अने ते पूर्वोक्त एकेका रोम खंमना असंख्याता खंम करीने तेवा खं में, ते पूर्वोक्त कूप एवी रीतें ठांसीने जरवो, के तेना उ परथी चक्रवर्त्तिनी सेना चाली जाय, तोपण ते दबा य नहीं, पढी ते एकेको सूक्ष्म खंम शो शो वर्षे का हाढतां असंख्याता पूर्व व्यतिक्रमे ठते ते पढ्य खा ली थाय, तेवारें एक पढ्योपम थायढे.

१० दश कोडाकोडी पढ्योपमें एक सागरोपम थाय.

११ दशकोडाकोडी सागरोपमें एक अवसर्पिणीथाय.

१.२ दशकोडाकोडी सागरोपमें एक उत्सर्पिणी थाय.

१३ उत्सर्पिणीअवसर्पिणी मली एक कालचक्र थाय.

१४ अनंता कालचक्रें एक पुञ्जलपरावर्त्ते थाय.

एवा अनंता पुञ्जलपरावर्त्ते, संसारमां परित्रमण करता जीवें व्यतिक्रम्याः.

श्रावकने नित्यप्रत्ये चौद नियम धारवा, तेनां नाम.

१ सचेत परिमाण.

७ वाहन परिमाण.

२ ड्व्य परिमाण.

८ शय्या परिमाण.

३ विगय परिमाण.

१० विलेपन परिमाण.

४ उपानह परिमाण.

११ ब्रह्मचर्य परिमाण.

५ तंबोल परिमाण.

१२ दिशि परिमाण.

६ वस्त्र परिमाण.

१३ स्नान परिमाण.

७ पुष्पजोग परिमाण.

१४ जातपीणीनुं परिमाण.

( ६०ए )

दश पञ्चस्काणनां नाम तथा ते पञ्चस्काण  
कस्याथी केटलुं नरकायु त्रूटे, ते कहे ठे.

पञ्चस्काणनां नाम. नरकायु त्रूटवानी संख्या.

- |                   |                                 |
|-------------------|---------------------------------|
| १ नवकारसीथी.      | एकशो वर्ष नरकायु त्रूटे.        |
| २ पोरिसीथी.       | एकहजार वर्ष नरकायु त्रूटे.      |
| ३ साट्टुपोरिसीथी. | दशहजार वर्षनरकायु त्रूटे.       |
| ४ पुरिमडूथी.      | एकलाख वर्ष नरकायु त्रूटे.       |
| ५ एकाशनथी.        | दशलाख वर्ष नरकायु त्रूटे.       |
| ६ नीवीथी.         | एकक्रोड वर्ष नरकायु त्रूटे.     |
| ७ एकलठाणाथी.      | दशक्रोड वर्ष नरकायु त्रूटे.     |
| ८ एकलदांतिथी.     | शो क्रोड वर्ष नरकायु त्रूटे.    |
| ९ आयंबिलथी.       | हजार क्रोड वर्ष नरकायु त्रूटे.  |
| १० उपवासथी.       | दशसहस्रक्रोडवर्ष नरकायु त्रूटे. |

अथ समवसरण मध्येनी बार परिषदानां नाम.

- |  |  |
|--|--|
| ३ एक गणधरनी, बीजी विमानवासी देवांगनानी.          | त्रीजी साध्वीनी. ए त्रण परिषदा अग्रिकूणें बेसे.  |
| ३ एक ज्योतिषीनी देवीनी, बीजी व्यंतरनी देवीनी,    | त्रीजी सुवनपतिनी देवीनी. ए त्रण पर्षदा नैर्कु०   |
| ३ एक ज्योतिषी देवोनी, बीजी व्यंतर देवोनी, त्रीजी | सुवनपति देवोनी. ए त्रण पर्षदा वायव्य कूणे बेसे.  |
| ३ एक वैमानिक देवतानी, बीजी मनुष्यनी त्रीजी म     | नुष्यनी स्त्रीउंनी. ए त्रण परखदा ईशान कूणे बेसे. |

अथ षट् तथा पांच सम्यक्त्वनां नाम.

- |                      |                      |
|----------------------|----------------------|
| १ इव्यसम्यक्त्व.     | २ नावसम्यक्त्व.      |
| ३ निश्चयसम्यक्त्व.   | ४ व्यवहारसम्यक्त्व.  |
| ५ निसर्गसम्यक्त्व.   | ६ उपदेशसम्यक्त्व.    |
| १ द्वायोपशमिक०       | २ उपशमिक० ३ द्वायिक० |
| ४ सास्वादनसम्यक्त्व. | ५ वेदकसम्यक्त्व.     |

अथ चार विकथानां नाम.

- १ स्त्रीकथा. २ नोजनकथा. ३ देशकथा. ४ राजकथा.

पांच समवायनां नाम.

- १ कालवादी. २ स्वजाववादी. ३ नियतिवादी.  
४ पूर्वकृतकर्मवादी. ५ पुरुषकार ते उद्यमवादी.  
दश श्रावकनां तथा तेमना ग्रामादिकनां नाम.

श्रावकनाम. ग्रामनाम. धनसंख्या. गोकुल, नार्यानाम.

- १ आनंद. वाणिज्यग्राम. १२ क्रोड. ४ शिवनंदा.  
२ कामदेव. चंपानगरी. १७ क्रोड. ६ जज्ञानार्या.  
३ चुलणिपित्त. वणारसी. २४ क्रोड. ७ सोमानार्या  
४ सुरादेव. वाराणसी. १७ क्रोड. ६ धन्नानार्या.  
५ चुल्लशतक. आलंजिका. १७ क्रोड. ६ बहुलाना०  
६ कुंमकोलियो. कंषिपुर. १७ क्रोड. ६ पूसानार्या  
७ सद्दालपुत्र. पोलासपुर. ३ क्रोड. १ अग्निमित्रा.  
७ महाशतक. राजगृही. २४ क्रोड. ७ रेवती आदिकतेर  
८ नंदिनीपिता. सावर्डी. १२ क्रोड. ४ अश्वनीनार्या.  
१० तेतलीपिता. सावर्डी. १२ क्रोड. ४ फगुणीनार्या.

॥ એ દશ શ્રાવકના ચાર, ઠ ઇત્યાદિક જે ગાયનાં મોકુલ કહ્યાં છે, તે એક ગોકુલ દશ સહસ્ર સંખ્યાનું જાણવું, તેમજ એ દશેના ધર્મગુરુ શ્રીમહાવીર સ્વામી છે, અને એમણે શ્રાવક ધર્મ વીશ વર્ષ પાલ્યો, તેમાં સા ડાચૌદ વર્ષ ઘરે રહ્યા, અને સાડાપાંચ વર્ષ પૌષધશા લામાં રહ્યા હતાં, અગીયાર પ્રતિમાધર હતા, અંતે એક માસની સંલેષણા કરી સૌધર્મદેવલોકે જૂદા જૂદા વિમાનોમાં ચાર ચાર પલ્યોપમાયુરેં ઝપના છે. તિહાંથી મહાવિદેહમાં સીઝો.

ધર્મમાં અંતરાય કરનારા તેર કાઠીયાનાં નામ.

- ૧ આલસ.      ૨ મોહ.      ૩ અવર્ણવાદબો.
- ૪ અહંકાર આણવો. ૫ ક્રોધ કરવો. ૬ પ્રમાદ કરવો.
- ૭ કૃપણતા.      ૮ ગુરુનય.      ૯ શોક રાખવો.
- ૧૦ અજ્ઞાન.    ૧૧ અચિરતા.    ૧૨ કુતૂહલ જોવું.
- ૧૩ તીવ્રવિષયાનિલાષ.

પાંચ પ્રકારેં મિથ્યાત્વનાં નામ. .

- ૧ આનિગ્રાહિક તે જે પોતાની મતિમાં આવ્યું તે સાચું.
- ૨ અનાનિગ્રાહિક તે સર્વ ધર્મ સારા છે, એવી બુદ્ધિ.
- ૩ આનિનિવેશિક તે જાણી બૂઝીને જૂઠું બોલવું.
- ૪ સાંશયિક તે સિદ્ધાંતવિચારવિષે સંદેહ રાખવો.
- ૫ અનાનોગિક તે અજાણપણેં કાંઈ સમજે નહીં, અથવા એકેંડિયાદિક સર્વ જીવને એ મિથ્યાત્વ છે.

સ્વાધ્યાયનાં પાંચ પ્રકાર કહે છે.

- ૧ જે ગુરુસમીપેં શિષ્યેં વાંચવું તે વાંચના.
- ૨ જે શુજનાવેં સૂત્રના વિચાર પૂઠિયેં તે પઠના.
- ૩ જણેના સૂત્રનું ગુણવું, તે પરિચટ્ટણા.
- ૪ જે હૃદયમાંહે સૂત્રના વિચાર ચિંતવવા, તે અનુપ્રેક્ષા.
- ૫ જે પરને ધર્મકથા સંજનાવીયેં તે ધર્મકથા.

પાંચ પ્રકારના દેવ કહ્યા છે, તેનાં નામ.

- ૧ પંચેંડિય, તિર્યંચ અથવા મનુષ્ય જેણેં દેવાયુ વાંધ્યું . હોય, તે દેવતાપણેં ઉપજશે, તેને ઇચ્છદેવ કહીયેં.
- ૨ જે ચક્રવર્તી હોય તેને નરદેવ કહીયેં.
- ૩ શ્રી અણગાર સાધુને ધર્મદેવ કહીયેં.
- ૪ શ્રી અરિહંત દેવને દેવાધિદેવ કહીયેં.
- ૫ જીવનપત્યાદિક ચાર નિંકાયના દેવ તે જાવદેવ.

એ પૂર્વોક્ત પાંચ પ્રકારના દેવોનું આયુષ્ય લખે છે.

- ૧ ઇચ્છદેવનું જયન્ય અંતરમુદૂર્તે ઉત્કૃષ્ટત્રણપત્યાપમ.
- ૨ નરદેવનું જયન્ય સાતસેંવર્ષે ઉત્કૃષ્ટચોરાસીલાસપૂર્વ.
- ૩ ધર્મદેવનું જયન્ય અંતરમુદૂર્તે ઉત્કૃષ્ટદેશેજ્ઞાનીપૂર્વકોડી.
- ૪ દેવાધિદેવનું જયન્ય વહોત્તેરવર્ષે ઉત્કૃષ્ટચોરાસીલાસ ૦
- ૫ જાવદેવનું જયન્ય દશ હજાર વર્ષે, ઉત્કૃષ્ટ તેત્રીશ સાગરોપમ.

ત્રણ પ્રકારેં જીવનું અલ્પાયુ થાય, તે કહે છે.

- ૧ જીવહિંસા કરતો થકો. ૨ જૂઠું બોલતો થકો.
- ૩ શ્રીસાધુને અનુષ્ણીય અપાસુ આહારાદિક દેતો થકો.



( ६१३ )

पांच प्रमादनां नाम.

१ मद्यपान, २ विषय, ३ कषाय, ४ निद्रा, ५ विकथा.

पांच आश्रवनां नाम.

१ मिथ्यात्व, २ अविरति, ३ प्रमाद, ४ कषाय, ५ योग.

पांच संवरनां नाम.

१ सम्यक्तवसंवर. २ विरतिसंवर. ३ अप्रमत्तसंवर.

४ अकषायसंवर. ५ अयोगसंवर.

पांच अजिगमनां नाम.

१ सचित्त इव्य जे शरीरजोगसंबंधि होय ते ठांमे.

२ अचित्त मुडादिक ठांमे. ३ मन एकत्र स्थानकें राखे.

४ एक साडिउ उत्तरासंग करे.

५ जिन दीठे मस्तकें करपांजली करे.

पांच राजचिन्ह जिनप्रांसादे जतां मूकियें तेनां नाम.

१ खड्ग, २ छत्र, ३ वाणही, ४ मुकुट, ५ चामर.

पांच स्थानकयी जीव नीकले ठे ते कहे ठे.

१ पग थकी नीकले, ते जीव नरक गतियें जाय.

२ जंघा थकी निकले, ते जीव तिर्यच गतियें जाय.

३ पेट थकी निकले, ते जीव मनुष्य थाय.

४ मस्तक थकी निकले, ते जीव देवता थाय.

५ सर्व अंग थकी निकले, ते जीव मोहें जाय.

पांच स्थानकें जीव दुर्जन बोधि पणुं करे, तेनां नाम.

१ श्रीअरिहंतनो अवर्णवाद बोलतो थको.

२ श्रीअरिहंतनाषित धर्मनो अवर्णवाद बोलतो थको.

૩ આચાર્યાદિકનો અવર્ણવાદ બોલતો થકો.

૪ ચતુર્વિધ શ્રીસંઘનો અવર્ણવાદ બોલતો થકો.

૫ જે તપ અને બ્રહ્મચર્ય પાળીને દેવ થયા છે, તે દેવોનો અવર્ણવાદ બોલતો થકો.

એજ શ્રીઅરિહંતાદિક પાંચની સ્તવના કરતો થકો  
જીવ સુલભબોધીપણું પણ ઉપાર્જીન કરે.

ત્રણ મુદ્દાનાં નામ.

૧ યોગમુદ્દા. ૨ જિનમુદ્દા. ૩ મુક્તાશુક્તિમુદ્દા.

સંસારી જીવનો આહાર ત્રણ પ્રકારે છે.

૧ ઝંજાહાર. ૨ લોમાહાર. ૩ પ્રદ્વેપાહાર.

સંસારી જીવની યોનિના ત્રણ પ્રકાર.

૧ સચિત્તયોનિ. ૨ અચિત્તયોનિ. ૩ મિશ્રયોનિ.

॥ અથ સાડા પચ્ચીશ આર્યદેશનાં નામ ॥

| દેશનામ.          | મુખ્યનગર.     | ગ્રામની સંખ્યા. |
|------------------|---------------|-----------------|
| ૧ મગધદેશ.        | રાજગૃહનગર.    | ૬૬૦૦૦૦૦         |
| ૨ અંગદેશ.        | ચંપાનગરી.     | ૫૦૦૦૦૦૦         |
| ૩ વંગદેશ.        | તામ્રલિસિનગર. | ૫૦૦૦૦૦          |
| ૪ કાલિંગદેશ.     | કાંચનપુરનગર.  | ૧૦૦૦૦૦૦         |
| ૫ કાશીદેશ.       | વણારસીનગરી.   | ૧૯૨૦૦૦          |
| ૬ કોશલદેશ.       | સાકેતપુરનગર.  | ૯૯૦૦૦           |
| ૭ કુરુદેશ.       | ગજપુરનગર.     | ૮૭૩૨૫           |
| ૮ કુશાવર્ત્તદેશ. | સૌરીપુરનગર.   | ૧૪૦૮૩           |
| ૯ પાંચાલદેશ.     | કાંપિલપુરનગર. | ૩૮૩૦૦૦          |

( ६१५ )

|                   |                  |         |
|-------------------|------------------|---------|
| १० जंगलदेश.       | अहिष्ठत्रानगरी.  | १४५०००  |
| ११ सौराष्ट्रदेश.  | धारावतीनगरी.     | ६८०५००० |
| १२ विदेहदेश.      | मिथिलानगरी.      | ८०००    |
| १३ वत्स्यदेश.     | कोसंबीनगरी.      | २८०००   |
| १४ शांमिल्यदेश.   | नंदीपुरनगर.      | १००००   |
| १५ मलयदेश.        | जदिलपुरनगर.      | ७०००००  |
| १६ मत्स्यदेश.     | वैराटनगरी.       | ८००००   |
| १७ वरुणदेश.       | अढापुरी.         | २४०००   |
| १८ दशार्णदेश.     | मृत्तिकावतीनगरी. | १८९२००० |
| १९ चेदिदेश.       | शुक्तिकावतीनगरी. | ६८००    |
| २० सिंधुसौवीरदेश. | वीतजयपत्तननगर.   | ६८५००   |
| २१ शूरसेनदेश.     | मथुरानगरी.       | ६८०००   |
| २२ मंगदेश.        | पावापुरीनगरी.    | ३६०००   |
| २३ मासदेश.        | पुरिवट्टानगरी.   | १४२५    |
| २४ कुणालदेश.      | सावन्नीनगरी.     | ६३०५३   |
| २५ लाटदेश.        | कोटीवर्षनगर.     | २१०३००० |

२५॥केकडदेश. श्वेतांबिकानगरी. ए देशनो अर्धआर्य ठे

ए साडापच्चीश आर्यदेश ते आ जरत क्षेत्रना द  
ह्मिणार्ध जागना मध्य खंमने विषे जाणवा, एमां ती  
र्थकरादिक त्रेशठ उत्तम पुरुषोत्तुं उपजवुं थाय ठे, ते  
मज शक अने यवनादिक ३१९७४॥ अनार्य देश  
ठे, तेमां बऱ्हा अनार्य लोको वसे ठे.

દશ દૃષ્ટાંતે મનુષ્ય જન્મ પામવો હર્ષજ ઢે, તેનાં નામ.

૧ નોજનનો દૃષ્ટાંત.

૬ સ્વપ્નનો દૃષ્ટાંત.

૨ પાસાનો દૃષ્ટાંત.

૭ રાધાવેધનો દૃષ્ટાંત.

૩ ધાન્યનો દૃષ્ટાંત.

૮ ડહાસેવાલનો દૃષ્ટાંત.

૪ જીવટાનો દૃષ્ટાંત.

૯ ધોંસરાનો દૃષ્ટાંત.

૫ રત્નનો દૃષ્ટાંત.

૧૦ પરમાણુનો દૃષ્ટાંત.

આ નીચે લખેલા બાર વાનાં પામવાં હર્ષજ.

૧ મનુષ્યજવ. ૨ આર્યક્ષેત્ર. ૩ માતાપિતાનો પદ્મશુભ.

૪ માર્ગાનુસારી. ૫ રૂપવંતપણું. ૬ નીરોગતા.

૭ પૂર્ણઆયુ. ૮ જલીબુદ્ધિ.

૯ ધર્મ સાંજલવો.

૧૦ ધર્મની રુચિ. ૧૧ સદ્દેહના. ૧૨ ધર્મને વિષે ઉદ્યમ.

અથ ટૂટક શીલામણ.

૧ અકાર્યને વિષે આલસુ થવું.

૨ પ્રાણવધને વિષે સદૈવ પાંગલા થવું.

૩ પારકી તાંતને વિષે બહેરા થવું.

૪ પરસ્ત્રી નિરીક્ષણને વિષે જાતિઅંધ થવું.

૫ કીર્તિ, કુલ, સુપુત્ર, કલા, મિત્ર, ગુણ અને સુ

શીલ, એ સાત વાનાં વધારવાથી ધર્મવૃદ્ધિ થાય.

૬ માનનો ત્યાગ, ગુરુજ્ઞાતિ, સુશીલતા, દયાધર્મ, સ

ત્ય, વિનય અને તપ એ સાત વાનાં ન મૂકવાં.

૭ સ્વલ માણસની સંગતિ, કુસ્ત્રી, સાત વ્યસન,

કુમાર્ગે ધનાગમ, અસમાધિ, રાગ દ્વેષ અને કષા

ય, એ સાત વાનાં ત્યાગવાં.

८ उपकार, गुरुवचन, सुजनता, जली विद्या, नियम,  
वीतराग अने नवकार. ए सात वानां हृदये धरवां.  
ए व्यसनासक्त, सर्प, मूर्ख, युवती, जल, अग्नि,  
अने पूर्वविरुद्ध, ए सातनो विश्वास न करवो.

१० विनय, जिनजक्ति, सुपात्रदान, सुसंयमनेविषे  
राग, माहापण, निःस्पृहता अने परोपकारपणुं,  
ए सात गुण महोटा जाणवा.

आ इस्कमा काल पांचमो आरो प्रवर्तते थके  
त्रीश बोल प्रगट थरो, तेनां नाम कहे ठे.

१ नगर ते गाम सरिखा थारो.

२ गाम ते समशान सरखां थारो.

३ राजा ते यमदंम सरखा थारो.

४ कुटुंबी पुरुष दास सरखा थारो.

५ प्रधान मंत्री लांचग्राही थारो.

६ सुखी जन निर्लज्ज थारो.

७ केटलीएक कुलवती स्त्रीयोने पण वेश्यानां आच  
रण प्रिय थारो.

८ पुत्र स्वहंदाचारी थारो.

९ शिष्य ते गुरुने प्रत्यनीक थारो.

१० डर्जन पुरुष सुखी अने रुद्धि सन्मान पामरो.

११ सज्जन जन ते दुःखीया अल्परुद्धिवाला अने  
अल्प मान महत्त्व पामवाना धणी थारो.

१२ देश ते परचक्र मर डर्निह्याक्रांत थारो.

- १३ पृथ्वी दुष्टसत्त्वाकुल यशे.
- १४ ब्राह्मण अस्वाध्यायी तथा अर्थलुब्ध यशे.
- १५ श्रमण महात्मा गुरुकुलवासत्यागी यशे.
- १६ यति मंदधर्मी तथा कषायकलुषितचित्तवाला ०
- १७ समकेतदृष्टी देव, मनुष्य अल्पबली यशे.
- १८ मिथ्यादृष्टी देव ने मनुष्य घणा बलवंत यशे.
- १९ मनुष्यने देवदर्शन नहीं यशे.
- २० विद्या, मंत्र तथा औषध्यादिकना प्रज्ञाव अल्प ०
- २१ गोरस, कपूर, शर्करादिद्रव्य वर्णादिहीन यशे.
- २२ बल, धन, आयुष्य, घणा हीन यशे.
- २३ मासकल्पयोग्य क्षेत्र कोइ रहशे नहीं.
- २४ अगीआर प्रतिमा रूप श्रावकधर्मनो विभेद यशे.
- २५ आचार्य, शिष्य प्रत्ये सम्यक् श्रुत जणावशे नहीं.
- २६ शिष्य पण कलहना करनार, ममरना करनार,  
असमाधि अनिवृत्तिकारक, मंदबुद्धिवाला यशे.
- २७ मुंढ घणा अने श्रमण स्वल्प यशे.
- २८ आचार्य सद्गु पोतपोताना गह्वनी सामाचारी  
जुदी जुदी प्रवर्त्तावशे, तथाविध मुग्धजनने मोह  
पमाडता उत्सूत्र जांखतां पोतानी प्रशंसा अने  
पारकी निंदा करता एवा केटलाएक कुमति यशे.
- २९ म्लेहनां राज्य बलवंत यशे.
- ३० आर्यदेशना राजा अल्पबलवंत यशे.  
ए जाव श्रीकल्पसूत्रनी निर्युक्तिमां कल्यां ठे.

( ६१९ )

अथ पच्चीश राज घरनां नाम,

- |              |                     |
|--------------|---------------------|
| १ प्रासाद,   | १४ अलंकारसना,       |
| २ विहार,     | १५ नायकगृह.         |
| ३ हर्म्य,    | १६ शत्रुकार,        |
| ४ हस्तिशाला, | १७ पानीयशाला,       |
| ५ अश्वशाला,  | १८ आश्रमक्रीडागृह,  |
| ६ जामागार,   | १९ महानसजोजनशाला    |
| ७ कोष्ठागार, | २० शांतिगृह,        |
| ८ नृमिगृह,   | २१ उटज अपवरकचं५०    |
| ९ धर्मशाला,  | २२ सूतिकागृह,       |
| १० दानशाला,  | २३ गोशाला,          |
| ११ सनाशाला,  | २४ पाकपूटिगतिकावपनी |
| १२ आयुधशाला, | शल्यशाला,           |
| १३ स्नानगृह, | २५ गंजापकणघोषनिष    |
|              | द्यामवशुचिस्थानम्.  |

अथ सात राज्यस्थानकनां नाम.

- |               |                |                    |
|---------------|----------------|--------------------|
| १ कुमार,      | २ आम्रात्य,    | ३ महान्त,          |
| ४ मंत्रीक,    | ५ बुद्धिपुरुष. | ६ धर्म्मधिकारस्था. |
| नसाहीदहपुरुष. | ७ अवसरज्ञसेवक. |                    |

अथ सप्तांग राज्यनां सात अंग.

हाथी, घोडा, रथ, पायक, जंमार, कोठार, गढ.

अथ बारप्रकारनां वाजित्रनां नाम.

हक्का, इक्का, ममरु, काहली, जेरि, जाण, ढोल,  
शंख, करड, पोग्रय, मादल, कंताल,

## अथ षट्त्रिंश राजकुलनां नाम.

|                 |                   |
|-----------------|-------------------|
| १ सूर्यवंश.     | १९ विदकवंश.       |
| २ सोमवंश.       | २० गुहिलवंश.      |
| ३ यादववंश.      | २१ गुहिलपुत्तवंश. |
| ४ कंदबवंश.      | २२ पौतिक.         |
| ५ परमारवंश.     | २३ मकुआणवंश.      |
| ६ इक्ष्वाकुवंश. | २४ धान्यपालकवंश.  |
| ७ चहुआण.        | २५ राजपालकवंश.    |
| ८ चौलुक्य.      | २६ अनंगलवंश.      |
| ९ मौरिकवंश.     | २७ निकुंनवंश.     |
| १० शोलारवंश.    | २८ दहिकरवंश.      |
| ११ सैंधववंश.    | २९ केलातुर        |
| १२ बिंदकवंश.    | ३० दूणवंश.        |
| १३ चापोत्कटवंश. | ३१ हरिवंश.        |
| १४ प्रतिहारवंश  | ३२ ढोढारवंश.      |
| १५ लुडकवंश.     | ३३ शकवंश.         |
| १६ राष्ट्रकूट.  | ३४ चंदेलवंश.      |
| १७ करटकवंश.     | ३५ शोलंकीवंश.     |
| १८ करटपालवंश.   | ३६ मारववंश.       |

## अथ षट्त्रिंश विनोदनां नाम.

|               |                  |
|---------------|------------------|
| १ दर्शनविनोद. | ४ नृत्यविनोद.    |
| २ श्रवणविनोद. | ५ लिखितविनोद.    |
| ३ गीतविनोद.   | ६ वक्तृत्वविनोद. |



|                  |                   |
|------------------|-------------------|
| ७ शास्त्रविनोद.  | २२ फलविनोद.       |
| ८ शस्त्रविनोद.   | २३ पुष्पविनोद.    |
| ९ करविनोद.       | २४ चित्रविनोद.    |
| १० बुद्धिविनोद.  | २५ पतितविनोद.     |
| ११ विद्याविनोद.  | २६ यात्राविनोद.   |
| १२ गणितविनोद.    | २७ कलत्रविनोद.    |
| १३ तुरंगमविनोद.  | २८ कथाविनोद.      |
| १४ गजविनोद.      | २९ युद्धविनोद.    |
| १५ रथविनोद.      | ३० कलाविनोद.      |
| १६ पक्षिविनोद.   | ३१ समस्याविनोद.   |
| १७ आखेटकविनोद.   | ३२ विज्ञानविनोद.  |
| १८ जलविनोद.      | ३३ वार्त्ताविनोद. |
| १९ यंत्रविनोद.   | ३४ क्रीडाविनोद.   |
| २० मंत्रविनोद.   | ३५ तत्त्वविनोद.   |
| २१ महोत्सवविनोद. | ३६ कवित्वविनोद.   |

### ॥ अथ चोराशी गह्वनां नाम ॥

|                    |                   |
|--------------------|-------------------|
| १ दो वंदनिक गह्व.  | ८ चित्रावाल गह्व. |
| २ धर्मघोषा गह्व.   | ९ उंसवाल गह्वथी त |
| ३ संमेरा गह्व.     | पागह्व थयो.       |
| ४ किन्नरसा गह्व.   | १० नाणावाल गह्व.  |
| ५ नागोरी तपा गह्व. | ११ पद्धिवाड गह्व. |
| ६ मल्लधारा गह्व.   | १२ आगमिया गह्व.   |
| ७ खडतपा गह्व.      | १३ बोकडीया गह्व.  |

- १४ निन्नमालिया गह्व.  
 १५ नागेंडा गह्व.  
 १६ सेवंतरीया गह्व.  
 १७ नंमेरा गह्व.  
 १८ जइलवाल गह्व.  
 १९ वडा खरतर गह्व.  
 २० लहुडा खरतर गह्व.  
 २१ नाणसोलिया गह्व.  
 २२ वड गह्वथी विधिपद्  
 गह्व थयो.  
 २३ तपाबिरुद गह्व.  
 २४ सूराणा गह्व.  
 २५ वडी पोशाल गह्व.  
 २६ जरुअह्वा गह्व.  
 २७ कत्तबपुरा गह्व.  
 २८ संखला गह्व.  
 २९ नावडहरा गह्व.  
 ३० जांखडीया गह्व.  
 ३१ कोरंटवाल गह्व.  
 ३२ ब्राह्मणिया गह्व.  
 ३३ मंमाहडा गह्व.  
 ३४ नीबलीया गह्व.  
 ३५ खेलाहरा गह्व.  
 ३६ उडिंतवाल गह्व.  
 ३७ रुदोलिया गह्व.  
 ३८ पंथेरवाल गह्व.  
 ३९ खेजडिया गह्व.  
 ४० वाडितवाल गह्व.  
 ४१ जीराउलिया गह्व.  
 ४२ जेसलमेरा गह्व.  
 ४३ जलवाणिया गह्व.  
 ४४ तातहड गह्व.  
 ४५ ठाजहड गह्व.  
 ४६ खंजायता गह्व.  
 ४७ शंखवालीया गह्व.  
 ४८ कमलकलशा गह्व.  
 ४९ सोजंतरिया गह्व.  
 ५० सोजतिया गह्व.  
 ५१ पांपलिया गह्व.  
 ५२ खीमसरा गह्व.  
 ५३ चोरवेडीया गह्व.  
 ५४ प्रामेचा गह्व.  
 ५५ बंजणिया गह्व.  
 ५६ गोयलवाल गह्व.  
 ५७ वग्घेरा गह्व.  
 ५८ नट्टेरा गह्व.  
 ५९ नाबरिया गह्व.  
 ६० बाहडमेरा गह्व.

|                     |                      |
|---------------------|----------------------|
| ६१ कक्करिया गह्व.   | ७३ वाडियगण गह्व.     |
| ६२ रंकवाल गह्व.     | ७४ उडवाडियगणगह्व.    |
| ६३ बोरसवा गह्व.     | ७५ माणवगण गह्व.      |
| ६४ वेगडा गह्व.      | ७६ उत्तरवालसह गह्व.  |
| ६५ वीसलपुरा गह्व.   | ७७ उदेहगण गह्व.      |
| ६६ संवाडिया गह्व.   | ७८ चारणगण गह्व.      |
| ६७ धुंधुकिया गह्व.  | ७९ आकोलिया गह्व.     |
| ६८ विद्याधरा गह्व.  | ८० लूणिया गह्व.      |
| ६९ आयरिया गह्व.     | ८१ साधुपूनमिया गह्व. |
| ७० हरसोरा गह्व.     | ८२ त्रांगडिया गह्व.  |
| ७१ कोटिकगणकुलगह्व.  | ८३ नीबजीया गह्व.     |
| ७२ वड्डीशाखानाबिरुद | ८४ साचोरा गह्व.      |

अथ सात निन्हव थयां तेनां नाम तथा मत.

- १ श्रीवीरजगवानने केवलज्ञान उपन्या पढी चौदमे वर्षे जमाली निन्हव थयो, जेणें एक समयें वस्तु उपजे नही, परंतु वस्तु उपजतां घणा समय लागे, एवी सदहणा राखी ते प्रथम निन्हव जाणवो.
- २ श्रीवीरने केवल उपन्या पढी शोलमे वर्षे तिष्यगुप्त थयो, जेणे आतमाना सर्व प्रदेशमां ठहेले प्रदेशो जीव रहे ठे; एवी सदहणा राखी ते बीजो निन्हव.
- ३ श्रीवीर निर्वाण पढी ११४ वर्षे आषाढाचार्य अ व्यक्तवादी थयो. जेणें संयत तथा असंयत इत्या दिक सर्व पदार्थ निश्चय नय करी अव्यक्त ठे, एवी सदहणा राखी ए त्रीजो अव्यक्तवादी निन्हव.

૪ શ્રીવીર નિર્વાણ પઠી ૨૨૦ વર્ષે અશ્વમિત્ર નામા નિન્હવ સમુદ્ધેદવાદિ થયો. જેણે સર્વ પદાર્થ ત્ર પન્યા પઠી મિમનો ઉદ્ધેદ થાય છે, એવી પ્રરૂપણા કરી સદ્દહણા રાખી, તે ચોથો નિન્હવ જાણવો.

૫ વીર નિર્વાણથી ૨૨૮ વર્ષે એક સમયે જીવ વે કિરિયા વેદે, એવી સદ્દહણાનો કરનાર એવો દો ક્રિયાવાદી ગંગસૂરિ નામે પાંચમો નિન્હવ થયો.

૬ વીર નિર્વાણથી ૫૪૪ વર્ષે જીવરાશિ, અજીવ રાશિ અને નોજીવ રાશિ એવા ત્રણ રાશિ મતનો સ્થાપક ઠાઠો નિન્હવ થયો.

૭ શ્રીવીર નિર્વાણથી ૫૮૪ વર્ષે અવઙ્ક સ્પષ્ટ કર્મવાદી સાતમો નિન્હવ થયો. એટલે કર્મ જે છે તે આત્માના પ્રદેશ સાર્થે (અવઙ્ક કેળ) મલ્યા નથી, પરંતુ સર્પકંચુકીની પેરેં ફરસમાત્ર છે, એવી પ્રરૂપણાનો કરનાર હતો. એ સર્વની કથા ગ્રંથાંતરથી જાણવી. હવે અયોધ્યાનગરીનું પ્રમાણ લખિયેં હૈયેં.

ઉત્સેધાંગુલ થકી પ્રમાણાંગુલ અઢીગણું મહોટું થાય છે; તે પ્રમાણેં વાર યોજન લાંબી અને નવ યોજન પહોલી એવી નગરીના પાંચશે પાંચશે ધનુષ્યના ચ ઝરૂણા ચોશાલા ( ૮૪૩૨૦ ) થાય તેવા એક ચતુશાલા માંહે પાંચશે ધનુષ્યના દેહધારી મનુષ્ય દશ જણ સૂઝ રહે તો ૧૮૪૩૨૦૦ મનુષ્ય સમાઈ શકે, એવી રીતેં ગણતાં ચક્રવર્તીની સેન્યાદિક પરિવારની ગણનાનો સમાવેશ થઈ શકતો નથી.

माटे उत्सेधांगुल थकी प्रमाणांगुल एक हजार गुणुं महोदुं ठे, तेनी साथें बार योजन लांबी अने नव योजन पहोली नगरीनो हिसाब गणीयें, तो उत्सेधांगुले पांच पांचशे धनुष्यना चोखूणा चोशाला १७६४८०००००० ) एटले सत्तावीश अञ्ज चोशठ कोडने एंशी लाख खंहुवा थाय. एवं नगर होय तो चक्रवर्तिनी सेन्या आदिक बीजी पण सर्व रुद्धिनो समावेश थइ शके. एवी रीतें अयोध्या नगरीनुं मान श्रीतीर्थकरने वचने श्रीअनुयोगद्वार तथा जंबुद्वीपपन्न ति ए सूत्र साथें मलतुं आवे ठे.

तथा बली कोइ एक एम कहे ठे के, उत्सेधांगुल थकी प्रमाणांगुल बरो पच्चाश गुणुं महोदुं ठे, तेमना मते अयोध्या नगरीना चउखूणा चोशाला गणीयें तो पण १७१८००००००० एक अञ्ज बहोत्तेर कोड ने एंशी लाख खंहुवा थाय. ए मानें गणता पण ठीक मलतुं नथी. कारण के, चक्रवर्तिना ठनुं कोड तो एक ला पायकज होय. ठे ते एकेका पायकनो परिवार स्त्री, पुत्रादिक गणीयें तो घणा जनोनो समूह थाय. ते सर्वने बेसवा उठवाने तथा सूवाने क्रीडा करवाने बाहेर नूमिकार्यें जवाने तेटली जगा पूरी पडे नही, माटे जाणीये ठैयें. जे एक प्रमाणांगुलना योजने एक हजार उत्सेधांगुल थाय ठे, अने एक प्रमाणांगुलना योजने एक हजार उत्सेधांगुलना योजन थाय ठे. ए प्रमाणें सूत्रोक्त बात खोटी थइ शके नही. उत्सेधांगुल

થકી શ્રીવીરજગવાનની અંગુલી બમણી મહોટી જાણ  
વી, અને શ્રીવીરજગવાનની અંગુલીથી શ્રીરૂષ્ણદેવ  
જગવાનની અંગુલી બરો ગુણી મહોટી જાણવી, અને  
શ્રીરૂષ્ણની અંગુલથી પ્રમાણાંગુલીઅઢી ગુણી મહોટી  
જાણવી.

હવે એકે પ્રમાણાંગુલે એક સહસ્ર ઉત્તેધાંગુલ થાય.  
તિહાં શ્રીરૂષ્ણદેવનું શરીર શ્રીરૂષ્ણદેવની આંગુલી  
થી એકશોને વીશ અંગુલની ડંચપણે છે, અને તેને  
ઉત્તેધાંગુલીયેં ગણતાં પાંચરો ધનુષ્યની ડંચાડ શ્રીરૂ  
ષ્ણદેવના શરીરની થાય, જે કારણે શ્રીરૂષ્ણદેવની  
એક આંગુલીયેં ચારરોં ઉત્તેધાંગુલ થાય, અને ચારરોં  
ઉત્તેધાંગુલીયેં ચાર ધનુષ્યને શોલ આંગુલ થાય, તેને  
એકશો વીશ ગુણા કરીયેં તેવારેં પાંચરો ધનુષ્ય  
પૂરણ થાય, તથા શ્રીવર્ધમાનં સ્વામીનું શરીર શ્રીવર્ધ  
માનને હાથે સાડા ત્રણ હાથ ડંચપણે છે, તે એકે હાથ  
ઉત્તેધાંગુલની ગણતીના બે હાથ થાય, તેવારેં શ્રીમ  
હાવીરનું શરીર સાત હાથ ડંચપણે જાણવું. ઇતિ.

॥ અથ અયોધ્યાવર્ણન ॥

વિનીતા નગરી નવ બારહી દેવતાયેં નીપજાવી. તે  
સર્વ દેવના યોજન જાણવા, અને તેનો કોટ બારરોં  
ધનુષ્ય ડંચો તથા આઠરોં યોજન ધરતી માંહે છે, ત  
થા ગઢ પ્રકાર એકશો ધનુષ્યના જાણવા, કોશીશા  
પાંચરોં ધનુષ્યના જાણવા. તથા ૪૦૦ પોલ જાણવી.  
શોલ હજારને આઠરોં બારી, પાંચ યોજન તલહટ્ટી,

बहोतेर लाख कोठा, चोराणुं लाख विजेहरा, बारिं  
 धनुष्य उंढी खाइ, गढमांहे ईशानकूणे नाजीराजा  
 नो समचउरस्त्र सुवर्णमय सातजूमिउं आवास कखो,  
 पूर्वदिशें वर्त्ताकारि सुवर्णमय, सर्वजइ मंदिर एवे नामें  
 सातजूमिउं आवास ते जरतेश्वरने अर्थे आवास क  
 खो, तथा अग्निखूणे बाहुबलनो आवास जाणवो,  
 बीजा अछाणुं नाइना अछाणुं आवास कखा, तेनी वञ्च  
 मां एकवीश जूमिमय त्रैलोक्यसुंदर नामें आवास  
 श्रीआदीश्वर जगवाननो कखो तेमां एक हजारने आठ  
 महोटा गोंख जाणवा. तेनी शंखावर्त्त पोल करी तथा  
 राणी सुमंगला अने सुनंदा जेटलो राजवर्ग तेटलो मां  
 हे लो गढ रच्यो. उत्तरादिशियें वणिकनो वास कखो, द  
 क्षिणदिशें क्षत्रीयोनो वास कखो, पश्चिमदिशें कारी  
 गर लोकोनो वास कखो, कारू, नारूग सर्व मध्यम  
 तलहट्टीयें वास्या, दक्षिणपोलें अयोध्या पूर्वली वि  
 नीताथी वसाव्यो. ए विनीता अने अयोध्या बेहुने  
 आठ पहोरमांहे विश्वकर्मायें नीपजाव्या.

नगरीनी चारे दिशायें चार वन कखां. तेमां पूर्व  
 दिशें सिद्धवन, दक्षिणदिशें श्रीवासवन, पश्चिमदि  
 पुष्पाकर वन अने उत्तरदिशें नंदनवन जाणवुं. नग  
 रीना वनमांहे चारेदिशें चार पर्वत रच्या. तिहां पूर्व  
 दिशायें अष्टापद पर्वत, दक्षिणदिशें महाशैल पर्वत,  
 पश्चिमदिशें पोडेढो पर्वत अने उत्तरदिशें उदयाचल  
 पर्वत रच्यो, तथा जरतनी बहेन ब्राह्मीने शास्त्रना

જંઘાર સોંપ્યા, અને બાહુબલિની બહેન સુંદરીને નવ નિધિ સોંપ્યા, તથા ચોરાશી વિજ્ઞાન અને બહોતેર કલા ઇત્યાદિક સોંપ્યા ઇત્યાદિ અધિકાર ઘણો છે તે શાસ્ત્રાંતરથી જાણવો.

અથ શ્રીસિદ્ધજગવાનના ચાર નિદેષા.

- ૧ નામસિદ્ધ તે નમો સિદ્ધાણં.
- ૨ થાપનાસિદ્ધ તે સિદ્ધાચતન સિદ્ધનું ઘર.
- ૩ ઇચ્છાસિદ્ધ તે જે કેવલિ થશે તે જીવ.
- ૪ નાવસિદ્ધ તે જે કર્મ સ્વપાવી મોહ પહોતા તે જાણવા

અથ શ્રીઅરિહંત જગવંતના ચાર નિદેષા.

- ૧ નામ અરિહંત તે કૃષ્ણદેવથી શ્રીમહાવીર પર્યંત ચોવીશ તીર્થંકરનાં નામ જાણવાં.
- ૨ થાપના અરિહંત તે કાષ્ઠ, પિત્તલ, પાષાણ, સુવર્ણ, રૂપ્ય, રત્ન, લેપાદિકની શ્રીતીર્થંકર પ્રતિમા જાણવી.
- ૩ ઇચ્છા અરિહંત છે જેદે છે. ? જગવાન મોહ પહોતા પછી જે તેમનું શરીર રહ્યું તે જાણંગ ઇચ્છા શરીર કહીયે.
- ૪ જે તીર્થંકર થવાનો છે તેનું શરીર તે જવિય ઇચ્છા શરીર કહીયે.

॥ ૭ લેશ્યાની કાલસ્થિતિ પ્રારંભઃ ॥

- ૧ કૃષ્ણલેશ્યા કાલ જયન્ય અંતર મુદૂર્ત્ત અને ઉત્કૃષ્ટા તેત્રીશ સાગરોપમ અંતર્મુદૂર્ત્ત અધિક જાણવી.
- ૨ નીલલેશ્યાનો કાલ જયન્ય અંતરમુદૂર્ત્ત અને ઉત્કૃષ્ટા દશ સાગરોપમ પલ્યોપમા સંસ્થેય જાગ અધિક.
- ૩ કાપોત લેશ્યાનો કાલ જયન્ય અંતરમુદૂર્ત્ત ઉત્કૃષ્ટ



ત્રણ સાગરોપમ પલ્યોપમના અસંખ્યાતમે નાગેંઅધિક.

૪ તેજોલેશ્યાનો કાલ જઘન્ય અંતરમુદૂર્ત્ત અને ઉત્કૃષ્ટ

બે સાગરોપમ પલ્યોપમને અસંખ્યાતમે નાગેં અધિક

૫ પદ્મલેશ્યાનો કાલ જઘન્ય અંતરમુદૂર્ત્ત અને ઉત્કૃષ્ટ

દશ સાગરોપમ પલ્યોપમના અસંખ્યાતમે નાગેં અધિક.

૬ શુક્લલેશ્યાનો કાલ જઘન્ય અંતરમુદૂર્ત્ત અને ઉત્કૃષ્ટ

તેત્રીશસાગરોપમ અંતરમુદૂર્ત્ત અધિક.

ત્રણ જણના કરેલા ઉપકાર વાલીને ડંશીગણ ન થઈ શકીયેં, તેનાં નામ કહે છે.

૭ એક તો પોતાના માતા પિતા હોય તેમને પ્રજાતેં

ઠીને સહસ્ર પાકાદિક ઉત્તમ પ્રકારના તેલેં ક

રી મર્દન કરીયેં, સુગંધિત ડબ્બેં કરી ડવટણું ક

રીયેં, સુગંધી પાણી, ડન્ડું પાણી તથા ટાડું પા

ણી એવા ત્રણ પ્રકારના પાણીયેં કરી ન્હવરાવી

યેં, પઠી વસ્ત્રાન્નરણાદિકેં કરી વિનૂષા કરીયેં, મ

ન ગમતાં મધુરાં ડોજન કરાવીયેં, ડાવઝીવ પ

ર્યેંત આપણી પીઠ ઉપર ડાંધે ચડાવી ફરાવીયેં

તેમની આઙામાં ડરા અંતઃકરણ પૂર્વક ડાંલીયેં,

અને બીઙા પણ જે જે સેવા કરવાના ઉત્તમ ઉ

પાય છે તે સર્વ ઉપાયેં કરી ડાવ ડક્તિ સહિત

સેવા ડાકરી કરીયેં, તો પણ તેમનાં ડંશીગણ થ

ઈ શકીયેં નહીં; પરંતુ ઙો પોતાના માતા પિતાને

કેવલિપ્રણીતં ધર્મ બૂઙવીને ધર્મ પમાડી ધર્મને

વિષે સ્થાપોયેં, તો ડંશીગણ થઈયેં.

ए कोइ एक महर्दिक पुरुष होय ते कोइ दारिडी पु  
 रुषनी उपर उपकार बुद्धि आणीने तेने महोदो  
 महर्दिक करे, पढी कालांतरें कदापि अशुच कर्मना  
 योगें ते उपकारनो करनार पुरुष दरिडी अवस्था  
 ने पामे, तेवारें तेणें जेना उपर प्रथम उपकार क  
 री महर्दिक कीधो ते, ते पुरुष पोताना स्वामीने इ  
 रिड आव्युं जाणी जो पोतानी समस्त लक्ष्मीसप्तांग  
 सहित आपी दीये तो पण तेनो उंसीगण न थाय,  
 परंतु केवलिप्रणीत धर्म पमाडे तो उंसीगण थाय.

१.० कोइक पुरुष साधु चारित्र्यादिकनी पासेंथी कोइ  
 जलुं धर्ममय सुवचन सांजली ते मनमांहे धरी  
 शुचध्यानमां रह्यो थको काल करी देवता पणे  
 उपजे; पढी ते देवता पोताना धर्माचार्य प्रत्यें हु  
 कालमांहे पड्यो जाणी तिहांथी अपहरी सुका  
 ल मांहे लावी मूके अथवा कांतार अटवी मांहे  
 पड्यो जाणीने वस्तिने स्थानकें आणी मूके, अ  
 थवा रोग आतंक पीडायें पराजव्यो जाणीने रोग  
 आतंकरहित निराबाध पणे करे, तो पण ते देव  
 ता पोताना धर्माचार्यनो उंसीगण न थाय; परंतु  
 कदापि ते धर्माचार्य अशुच कर्मना योगें केवलि  
 प्रणीत धर्म थकी त्रष्ट थाय, तेवारें तेने केवलिप्र  
 णीत धर्म बूजवे, धर्ममां थापे, तो उंसीगण थाय.

॥ अंगस्फुरण विचार. सबाय ॥

॥ चोपाइनी देशी ॥ श्रीश्रीहर्ष प्रभु गुरु वंदि, जो

डी करीश हुं चोपाइ ठंदि ॥ नर नारीनां अंग उपंग,  
 फुरके तास फलाफल चंग ॥ १ ॥ माये फुरके पुह  
 वीराज, पामी अविचल सारे काज ॥ नाजें फुरके  
 साजन वृद्धि, दिन दिन थाये रुद्धि समृद्धि ॥ २ ॥  
 पांपण फुरके सुख संपजे, थानक बेठा थाये वि  
 जे ॥ नाक आंख विच फरके जेह, प्रियसंगम हो  
 ये अविहड नेह ॥ ३ ॥ बेहू आंख्यो फुरके जाम,  
 मित्र मले अणचिंत्यो ताम ॥ नयण विचार कहुं हवे  
 जूठ, वेदागमनो लेई डुहो ॥ ४ ॥ जमणी आंख्यो  
 ऊपर फुरे, तो जस लाजने सुख अनुसरे ॥ हाण अ  
 ने क्य नय नीचले, फुरके व्रत आंखे महीयले  
 ॥ ५ ॥ सुख नोग संगम माबियें, नीचली फुरके फ  
 ल नावीयें ॥ उपरलीयें क्य डुःख थाय, इणि परें  
 नयण कहां विगताय ॥ ६ ॥ नाक तणी मांमी जब  
 फुरे, आतम संतोषी सुख करे ॥ टीगसी फुरके जब  
 नासिका, दीये जब जसनी तवि आसिका ॥ ७ ॥ ल  
 मणा फुरके लखमी लाठ, पामे दूध दही घी ठाश ॥  
 कान फुरके तो सुवचन सुणे, रूडी वात दिशो दिश सु  
 णे ॥ ८ ॥ गाल फुरके तो सयला नोग, अथवा नोजन  
 सासुर नोग ॥ होठ फुरके जब ऊपरे, तव अचिंत  
 कलियल नर करे ॥ ९ ॥ सुख मिष्टान्न फुरके लहे,  
 स्त्रीसंगम थिर गह गहे ॥ नोग लहीजें हिडकी  
 फुरी, होठे फुरके बोली खरी ॥ १० ॥ गलूं फुरके जब  
 नर नार, वस्त्रानरण लहे तेणि वार ॥ गावड फुरके

नय मरणरो, दाखवीयो फल शास्त्रें खरो ॥ ११ ॥  
 कलह फुरके हुवे तेहवे, लान जोग जसु फुरके खवे ॥  
 काख फुरके होवे धन हाण, वात कही ठे एहवी पुरा  
 ण ॥ १२ ॥ पसवाडा फुरके जिन जिसे, वध्नन वात  
 सुणावे तिसे ॥ पूंठ फुरके तो वयरी मरे, काज सवी  
 घर बेठां सरे ॥ १३ ॥ बांह फुरके प्रिय जो मले, कुं  
 हणी फुरके जयपद मले ॥ कर फुरके टाले आपदा,  
 फुरके हथेली दीये संपदा ॥ १४ ॥ पोहोचि फुरके  
 चित्तारे मित्त, अथवा किंपि वधारे प्रीत ॥ आंगुली  
 या पण तेह विचार, नख फुरके वयरी जयकार  
 ॥ १५ ॥ हीये फुरके लान प्रमाण, थण फुरके वि  
 शेष तसु जाण ॥ पेट फुरके वाधे तसु जंमार, ना  
 नि फुरके पाय विहार ॥ १६ ॥ आसन फुरके स्त्री  
 संतान, एहवुं सुणीयें लौकिक ज्ञान ॥ ढीचण फुरके  
 हरख निधान, अथवा पदवी लहे परधान ॥ १७ ॥  
 गुह्य फुरकतां रमणीरंग, पामे निश्चै उत्तम संग ॥ कटि  
 यें फुरके पहेरे वस्त्र, साथल फुरके बंधन शस्त्र ॥ १८ ॥  
 गूमे फुरके वाहण चडे, जंघा फुरके पंथे खडे ॥ गी  
 रीयें फुरके संपदा वधे, अथवा केइ अचिंतित सधे ॥  
 ॥ १९ ॥ पग उपर फुरके धन होय, पग तलीये सवि  
 शेषो जोय ॥ पग आंगुलीयें जिसें फुर फुरे, तव अ  
 नीष्ट घर आवी नरे ॥ २० ॥ पुरुष अंगुल लीजें  
 जिमणो, वाम आंगुल फल नारी तणो ॥ तुरत  
 फल आपे लुजगने, मध्यम फल आपे वीहिवने

॥ ११ ॥ दिवस तणुं फल बोड्युं क्रमें, वली विपरीत  
 कयुं निशि समे ॥ ब्रह्मचारीने बाल कुमार, राजा  
 प्रमुख फलापति सार ॥ १२ ॥ संवत नंद नवण र  
 स चंद, दसराह दिन महिमाणंद ॥ कही वात तन  
 फरकन तणी, आगम वाणी जिसि गुरु जणी ॥ १३ ॥  
 ॥ इति अंग फुरकन विचार मवाय समाप्त ॥

ठींक विचार स्वाध्याय प्रारंभः ॥ देशी चोपाइनी ॥

॥ ठींक शुक्रननो कहुं विचार, सुगुरु समीप सुण्यो में  
 सार ॥ आगलमां जो ठींकज होय, अशुन तणी जाणो  
 जे कोय ॥ १ ॥ पहेला शुक्रन दुआं शुन घणां, ठींक  
 दुआं निःफल तेह तणां ॥ ठींकज दूआ पढी जे जाण,  
 शुक्रन दुआं ते करो प्रमाण ॥ २ ॥ माबी ठींक होय  
 अर्द्धफल कहे, जमणी ठींक बुरी सहु कहे ॥  
 पूठे ठींक सुखदायक सही, घणी ठींक ते निःफल क  
 ही ॥ ३ ॥ हांसे नय उपाधियें करी, हठ घणो मन  
 मांहे धरी ॥ एह ठींक ते निःफल जाण, कुतर ठींक  
 तो निःखर आण ॥ ४ ॥ मंजार ठींक ते मरणज  
 करे, इसी ठींक कष्टकारी सरे ॥ वस्तु वेचतां ठींकज  
 होय, आयुं क्रियाणुं मोघुं होय ॥ ५ ॥ वस्तु लेतां  
 ठींकज होय, बमणो लाज सघलानो जोय ॥ गइ वस्तु  
 जो जोवा जाय, ठींक होय तो लाज न थाय ॥ ६ ॥  
 नवां वस्त्र वली पहेरतां, ठींक होये आगल अण  
 ठतां ॥ नोजन होम पूजानुं काम, मंगलिक जे धर्म  
 सुताम ॥ ७ ॥ काम एटला कीधानी अंत, वली

क्रिया करावे स्वतः ॥ रति स्नान करीने रहे, ठीक होय  
तो पुत्रज लहे ॥ ७ ॥ ऋतुवतीने दीधे दान, पढी  
होवे पुत्र निदान ॥ वैरी जीती जायुं जोय, ठीके  
वैरी सबलो होय ॥ ८ ॥ रोगीकाज वैद्य तेडवा, जातां  
ठीके जो नवनवा ॥ ते रोगीने मृत्यु जाणीयें, काम  
विना वैद्यें नाणीयें ॥ ९ ॥ वैद्य रोगीने घरें आव  
तां, ठीक होय औषध आपतां ॥ रोगी तणो रोग ते  
समे, आहार ले ते जमवुं गमे ॥ १० ॥ व्यापारें  
लीधे व्यापार, ठीक होय तो वृद्धि अपार ॥ लेखुं शुद्ध  
दीधुं रायने, ठीके फोक थाये तेहने ॥ ११ ॥ पाणी  
पीतां अथ प्रीसंवाद, ठीक दृष्टि दोष अनिवाद ॥  
नवे घरें वसवा आवीयें, ठीक होये तो उचालीयें ॥ १२ ॥  
व्याजें इव्य केहने आपतां, वली पृथिवीमां धन  
दाटतां ॥ कर्षण जोवा जातां वली, वृष्टि होय पुहवी  
मन रुली ॥ १३ ॥ ठीक शुक्ल नर जाणे जेह, पग  
पग संपद पामे तेह ॥ ठीक विचार जाणे जो कोइ,  
रुद्धि वृद्धि कल्याणक होइ ॥ १४ ॥ इति ठीक विचार ॥

दिशापरत्वे ठीकना फल जोवानो यंत्र.

| ईशानें      | पूर्वदिशें  | आग्निखुणें        |
|-------------|-------------|-------------------|
| १ हर्ष.     | ५ लाज.      | ९ लाज.            |
| २ नाश.      | ६ धनलाज.    | १० मित्रदर्शन.    |
| ३ मित्रलाज. | ७ मित्रलाज. | ११ शुक्लवार्त्ता. |
| ४ अग्निजय.  | ८ अग्निजय.  | १२ अग्निजय.       |

( ६३५ )

| उत्तर        |                  | दक्षिण          |
|--------------|------------------|-----------------|
| १ शत्रुजय.   | आठदिशा उने वि    | ५ लाज.          |
| २ रिपुसंगम.  | षे प्रहर प्रहरनी | ६ मृत्युजय.     |
| ३ लाज.       | ठिकोनुं शुजा शुज | ७ नाश.          |
| ४ जोजन.      | फल.              | ८ कलि.          |
| वायव्य       | पश्चिम           | नैरुत           |
| १ स्त्रीलाज. | ५ दूरगमन.        | ९ लाज.          |
| २ लाज.       | ६ हर्ष.          | १० मित्रदर्शन.  |
| ३ मित्रलाज.  | ७ कलह.           | ११ शुजवार्त्ता. |
| ४ दूरगमन.    | ८ चोरजय.         | १२ लाज.         |

अथ चक्रवर्त्तीनी रुदिसमृद्धिनुं प्रमाण.

- १ नरतक्षेत्रना ठ खंम. २ नव निधान. ३ चौद रत्न
- ४ शोल हजार यद्द इत्यपरे पञ्चीश हजार.
- ५ बत्रीश हजार मुकुटबद्ध राजा.
- ६ चौशठ हजार अंतेउरी राजकन्या परणेली.
- ७ एकेक अंतेउर सार्थे बेबे वारांगना तेवारें  
१२०००० वारांगना होय सर्वमली १९२०००
- ८ चोराशी लाख हाथी.
- ९ चोराशी लाख घोडा सामान्य उत्तम जागें.
- १० अठार कोडी महोटा अश्व.
- ११ चोराशी लाख रथ.
- १२ ठनुक्रोड पायक.
- १३ बत्रीश हजार बत्रीश बद्ध नाटक.

- १४ बत्रीश हजार महोटा देश.
- १५ बत्रीश हजार वेलावज.
- १६ चौद हजार जलपंथा.
- १७ एकवीश हजार सन्निवेश.
- १८ शोल हजार राजधानी.
- १९ ठपन्न अंतर द्वीप.
- २० नवाणुंहजार झोणमुख.
- २१ ठनुं क्रोड गाम.
- २२ उंगणपच्चाश हजार उद्यान.
- २३ अठार हजार श्रेणिकारू.
- २४ अठार हजार प्रश्रेणिकारूकरदाता.
- २५ एंशीहजार पंमित.
- २६ सात क्रोड कौंटुबिक.
- २७ बत्रीश कोडी कुल.
- २८ चौद हजार महोटा मंत्रीश्वर.
- २९ चौद हजार बुद्धिनिधान.
- ३० बत्रीश हजार नवबारही नगरी.
- ३१ उंगणपच्चाशर्षे कुराज्य आपातसंपातप्रत्यंतरराजा.
- ३२ शोल हजार म्लेच्छ राजा.
- ३३ चौवीश हजार कर्बट.
- ३४ चौवीश हजार मटब.
- ३५ चौवीश हजार संबाधन.
- ३६ शोल हजार रत्नाकर.
- ३७ वीश हजार आगर पत्यंतरें १६०००



- ३८ चोवीश हजार खेडाशून्य प्रत्यंतरे चौद हजार.  
३९ सतावीश हजार नगर अकर.  
४० शोल हजार द्वीप.  
४१ बहोतेर हजार पत्तन.  
४२ अडतालीश हजार पाटण प्रत्यंतरे. २४०००  
४३ पांच लाख दीवीधर दीवरीया पांचक्रो.  
४४ चोराशी लाख महोटा नीशान.  
४५ दश क्रोड पंचरंगी ध्वजापताका.  
४६ त्रण कोड नियोगी.  
४७ चोशठ हजार महाकल्याणकारक.  
४८ ठत्रीश क्रोड अंगमर्दक.  
४९ ठत्रीश क्रोड आनरणधारक.  
५० ठत्रीश हजार सूपकारक ते रसोइना करनार ठ  
त्रीशकोडी.  
५१ त्रणशें साठ मूल सूपकार तें पोताना रसोइया.  
५२ त्रणलाखनोजनस्थानक त्रणलाखसाथेनोजनकरे  
५३ एक क्रोड गोकुल.  
५४ त्रणक्रोड हलहल.  
५५ नवाणुं क्रोड माटंबिक.  
५६ नवाणुं क्रोड पौतार.  
५७ नवाणुं क्रोड दासीदास.  
५८ नवाणुं क्रोड ना यात  
५९ नवाणुं लाख अंगरदक.  
६० नवाणुं क्रोड जोइ कावडीया.

( ६३७ )

- ६१ नवाणुंक्रोड मसूरिया.  
 ६२ नवाणुंक्रोड पश्यायत.  
 ६३ नवाणुंक्रोड पटलतारक.  
 ६४ नवाणुंक्रोड पंमव.  
 ६५ नवाणुंक्रोड मीठाबोला.  
 ६६ एकक्रोड ऐंसीहजार रासन.  
 ६७ बारलाख नैजा.  
 ६८ त्रण क्रोड पायक विनोदी.  
 ६९ बार क्रोड सुखासन.  
 ७० साठ क्रोड तंबोली.  
 ७१ पञ्चाश क्रोड पखालीया पाणीनापोठीया.  
 तथा प्रतिहार इत्याद्यनेक रुद्धि चक्रवर्त्तिनी जाणवी.  
 अथ पद्धीपतनफलं लिख्यते.

तत्रप्रथमावयवपतनफलम्.

| अवयवना०   | फलानि.         | अवयवना०  | फलानि.      |
|-----------|----------------|----------|-------------|
| मस्तके    | राज्यलान ऐ०    | हृदये    | धनहानि सु०  |
| ललाटे     | ऐश्वर्यवृद्धि. | उदरे     | पुत्रलान.   |
| नेत्रे १  | जय उपजे.       | नाभौ     | सुखवृद्धि.  |
| कर्णे १   | अलंकार मिले.   | पृष्ठे   | महालान.     |
| नासिका. १ | सौभाग्य.       | पसवाडे १ | जयउपजावे.   |
| मुखे      | मिष्टान्नजोजन. | कटौ      | वस्त्रलान.  |
| कंठे      | प्रियसमागम.    | गुह्ये   | मित्रसमागम. |
| स्कंधे १  | जय पामे.       | जांघउपर  | इव्यनाश.    |
| शुजे १    | धनलान.         | साथलउ०   | वाहन पामे.  |

( ६३९ )

करे १ इव्यव्यय. गोठणउपरइव्यनोसंचय.  
स्तने १ सौजाग्य पामे. पगउपर त्रमण करावे.

अथ तिथिफलम्.

| तिथिनाम. | फलम्        | तिथिनाम. | फलम्          |
|----------|-------------|----------|---------------|
| पडवो०    | रोग करे.    | नवम०     | जयकष्ट०       |
| बीज०     | शुन करे.    | दशम०     | कष्ट०         |
| त्रीज०   | लाज करे.    | अग्यारस० | पुत्रलाज करे. |
| चोथ०     | रोग करे.    | बारस०    | धनलाज थाय.    |
| पांचम०   | धनप्राप्ति. | तेरस०    | हानि थाय.     |
| ठठ०      | कष्ट उपजे.  | चौदश०    | धनहानि थाय.   |
| सातम०    | इव्य मत्ते. | पूनम०    | बंधुनाश करे.  |
| आठम०     | कष्ट करे.   | अमावस०   | धननाश करे.    |

अथ वार फलम्

|         |           |           |          |
|---------|-----------|-----------|----------|
| रविवार० | कष्ट करे. | गुरुवार०  | जय पामे. |
| सोमवार० | शुन करे.  | शुक्रवार० | धन पामे. |
| मंगलवार | कष्ट करे. | शनिवार०   | जय उपजे. |
| बुधवार० | शुन करे.  |           | .        |

अथ नक्षत्रफलम्.

| नक्षत्र नाम. | फलम्         | नक्षत्र नाम. | फलम्               |
|--------------|--------------|--------------|--------------------|
| अश्विनी०     | रोगनाश करे.  | स्वाती०      | पुत्रप्राप्ति थाय. |
| जरणी०        | रागादिक थाय  | विशाखा०      | धनहानिथाय.         |
| कृत्तिका०    | धननाश.       | अनुराधा०     | धनपुत्रादि पामे    |
| रोहिणी०      | सत्कार पामे. | ज्येष्ठा०    | कष्ट पामे.         |
| मृगशिर०      | सुख पामे.०   | मूल०         | संतान सुखपा        |

|           |                |             |                  |
|-----------|----------------|-------------|------------------|
| आर्द्रा.  | रोग, कलहकरे    | पूर्वाषाढा० | सौजाग्यप्राप्ति  |
| पुनर्वसु. | धन पामे.       | उत्तराषाढा  | ग्रामांतरस्थीलान |
| पुष्य.    | पुत्रसुख पामे. | अजिजित्.    | सुख करे.         |
| अश्लेषा.  | जुंमीवात सां०  | श्रवण०      | हर्ष उपजावे.     |
| मघा.      | कल्याणथाय०     | धनिष्ठा०    | नय उपजावे.       |
| पूर्वा.   | कार्यसिद्धि.   | शततारका     | चोरनय.           |
| उत्तरा.   | प्रियसमागम.    | पूर्वाजा५०  | सुखलान.          |
| हस्त.     | मित्रसमागम.    | उत्तराजा०   | धन पामे.         |
| चित्रा.   | रोग उपजे.      | रेवती०      | रोगनाश थाय.      |

उपर कह्याप्रमाणें गिरला५ अंगउपर पडे तो त  
रत स्नान करवुं. तथा तिल अने अडदनुं दक्षिणास  
हित दान आपवुं. तेथी अजिष्ट मटे. इति पक्षिपतन॥

अथ अठार वर्णनां नाम.

- १ कंदोइ. २ पटेल. ३ कुंजार. ४ सोनार.  
५ माली. ६ तंबोली. ७ गंधर्व. ८ वैद्य.  
९ सतुआरा. १० नारू. ११ घांची. १२ मोची.  
१३ गांढा. १४ ठीपा. १५ ठंगारा. १६ ग्वाल.  
१७ दरजी. १८ कैवर्त्तक जिल्ल.

अथ वणिकजातिनां नाम. प्रथम सामान्यथी गा  
थायें करी कहीने तथा प्रकारांतरें कवित कहीने प  
ठी विशेषथी सर्व मली १० ए जातिनां नाम लख्यां ठे.

श्रीमाले उवएस नाम नगरे पृल्लीपुरे मेडते,  
वग्घेरे तहडी रुआण नगरे खम्होमके पुष्करे ॥ राज  
न हर्षपुरे नराण नगरे टिंटांडके जायले, खंमे खं

मिलके स्थिता दशमिता सार्द्धाद्यः पंक्तयः ॥ १ ॥  
 एवं बार एक पांति ॥ कवित्त ॥ श्रीश्रीमालिउसवाल,  
 प्रगट पोरवाल नणीजें ॥ गुर्जर नागर मोढसो, रठीया  
 हुंबड सुणीजें ॥ जालोहरा जगजला, वली वायडा  
 वखाणुं ॥ मीसावाल दीपि अधिक, ताहिं उपम अ  
 णुं ॥ मिंहुज लाड तिहां दीपता, दान सदा दूती दीये,  
 सारिज बार नातिसर, कवित्त एम कविजन कहे ॥ १ ॥

वणीकनी १०८ जातिनां नाम.

|                 |               |               |
|-----------------|---------------|---------------|
| १ श्रीश्रीमालि. | १६ बंबेरवाल.  | ३१ चित्रावाल. |
| २ श्रीमालि.     | १७ गुणदवाल.   | ३२ कपोल.      |
| ३ उंसवाल.       | १८ इसरवाल.    | ३३ हुंबड.     |
| ४ पोरवाड.       | १९ ढीलीवाल.   | ३४ मोढ.       |
| ५ गुर्जरपोर०    | २० ढोडवाल.    | ३५ मींहु.     |
| ६ जांगडा पो०    | २१ मेडतवाल.   | ३६ वायडा.     |
| ७ सोरठीयापो.    | २२ नोरणवाल.   | ३७ कंधार.     |
| ८ गुर्जर.       | २३ नराणावाल.  | ३८ आंबिला.    |
| ९ पल्लिवाड.     | २४ जाइलवाल.   | ३९ करिहा.     |
| १० देवणवाल.     | २५ महेशरवाल.  | ४० दसोरा.     |
| ११ अग्रवाल.     | २६ टिंटोडवाल. | ४१ इंदोरा.    |
| १२ धीरवाल.      | २७ पुष्करवाल. | ४२ नरसिंघोरा. |
| १३ मंमकवाल.     | २८ सिंसवाल.   | ४३ हरसोरा.    |
| १४ वग्घेरवाल.   | २९ खंमेलवाल.  | ४४ सिंदूरा.   |
| १५ जसवाल.       | ३० मीसावाल.   | ४५ अणहिलपुरा  |

|              |                |                  |
|--------------|----------------|------------------|
| ४६ जीराउला.  | ६७ कुंकुम्या.  | ८८ धूल्याकंधारा. |
| ४७ वडोघा.    | ६८ रोड.        | ८९ मरहठा.        |
| ४८ उजेण्या.  | ६९ पूरवीया.    | ९० श्रीगौड.      |
| ४९ बोड.      | ७० गोलाराडा.   | ९१ वधणोरा.       |
| ५० केसूरा.   | ७१ शंख.        | ९२ अनोला.        |
| ५१ पड्ठाणा.  | ७२ सोणिया.     | ९३ माढुरा.       |
| ५२ गराज.     | ७३ चित्रोडा.   | ९४ नीमा.         |
| ५३ उसाउला.   | ७४ ननेरा.      | ९५ वराड.         |
| ५४ लाड.      | ७५ नागदहा.     | ९६ ऊंब.          |
| ५५ पंचोरा.   | ७६ बीजापुरा.   | ९७ धाकड.         |
| ५६ लंबेचा.   | ७७ मालोधा.     | ९८ नमीयाडा.      |
| ५७ माघरा.    | ७८ कानडा.      | ९९ जट्टेउरा.     |
| ५८ गंगराडा.  | ७९ कनोज्या.    | १०० खटवड.        |
| ५९ मेम.      | ८० लखणावत्या.  | १०१ जहन्न.       |
| ६० खोहर.     | ८१ पदमावत्या.  | १०२ चउसखा.       |
| ६१ त्रिहारा. | ८२ जोजाहुत्या. | १०३ डुसखा.       |
| ६२ सिहारा.   | ८३ श्रीखंभा.   | १०४ आठसखा.       |
| ६३ चंदेल.    | ८४ अष्टवर्गी.  | १०५ खडास्ता.     |
| ६४ निजोधा.   | ८५ राहावर्गी.  | १०६ लिंगास्ता.   |
| ६५ नागर.     | ८६ बीजावर्गी.  | १०७ ढोसर.        |
| ६६ रोहण्या.  | ८७ हन्निणाउरा. | १०८ मुंगरवाल.    |

॥ इति वणिग्जाति चेदः॥

॥ अथ सूतक विचार प्रारंभः ॥

॥ प्रथम कोऽने घरे जन्म थाय ते विषे ॥

- १ पुत्रजन्मे दिन दशनुं सूतक तथा पुत्रीजन्मे दिन अगीयार अने रात्रे जन्मे तो दिन बारनुं सूतक.
- २ बार दिवस घरना माणस देव पूजा करे नही.
- ३ न्यारा जमता होय, ते बीजाना घरना पाणीथी जिन पूजा करे अने सूवावड करनारी तथा क रावनारीने तो नवकार गणवो पण सूजे नही.
- ४ तथा प्रसववाली स्त्री, मास एक सुधि जिनप्रतिमा ना दर्शन करे नही. तथा दिन (४०) सुधि जिन प्रतिमानी पूजा न करे, अने साधुने पण वोहोरा वे नही, एम विचारसारप्रकरण मध्ये कहुं ठे.
- ५ घरना गोत्रीने दिन पांचनुं सूतक जाणवुं.
- ६ व्यवहार जाण्यनी मलयगिरिकृत टीका मध्ये जन्मनुं सूतक दिन दशनुं कहुं ठे.
- ७ गाय, घोडी, उंटणी, जैष, घरमां प्रसवे, तो दिन बे नुं सूतक अने वनमां प्रसवे, तो दिन एकनुं सूतक.
- ८ जैष प्रसवे, तो दिन पंदर पढी तेनुं दूध कल्पे.
- ९ गाय प्रसवे, तो दिन दश पढी तेनुं दूध कल्पे.
- १० ठाली बकरी प्रसवे तो, दिन आठ पढी तेनुं दूध कल्पे.
- ११ उंटणी प्रसवे, तो दिन दश पढी तेनुं दूध कल्पे.
- १२ दास दासी के जेनो आपणेज आश्रये जन्म थाय, अने आपणीज नजर आगल रह्यां होय, तो ते नुं चोवीश पहोर सुधी सूतक जाणवुं.

॥ ऋतुवंती स्त्री संबंधि सूतक निर्णय ॥

- १ दिन त्रण सुधी जांमादिकने बुवे नही. दिन चार जगें पडिक्कमणादिक करे नही पण तपस्या करे, ते छेखे लागे. दिन पांच पढी जिनपूजा करे. रोगादिक कारणें त्रण दिवस वीत्या पढी पण जो रुधिर दीठामां आवे, तो तेनो दोष नथी. विवेकें करी पवित्र थई जिन प्रतिमादिक जिनदर्शन अग्रपूजादिक करे, तथा साधुने पडिलाजे, पण जिनप्रतिमानी अंग पूजा न करे. एम चर्चरीग्रंथमां कहुं ठे.

॥ मृत्यु संबंधी सूतकनो विचार ॥

- १ घरनुं कोइ मरण पामेलुं होय तो सूतक दिन बारनुं. तेने घरे साधु आहार लिये नही, तेना घरना अग्नि तथा जलथी जिन पूजा थाय नही, एम निशीथ चूर्णीमां कहुं ठे. निशीथ सूत्रना शोलमा उद्दे शामां जन्म तथा मरणनुं घर दुर्गठनिक कहुं ठे.
- २ मृत्युवाला पासें सुए तो दिन त्रण पूजा न करे.
- ३ कांधिया, देवदर्शन पडिक्कमणादिक त्रण दिन न करे. परंतु जो नवकारनुं ध्यान मनमां करे, तो तेनो कांइ पण बाध नथी.
- ४ मृतने अडक्या न होय तो स्नान कीधे शुद्धथाय.
- ५ अन्य पुरुष जो मृतने अडक्या होय तो ते शोल पहोर पर्यंत पडिक्कमणादि न करे.
- ६ जेने घरे जन्म तथा मरणनुं सूतक थाय, तेने घरे जमनारा दिन बार सुधी जिनपूजा करे नही.



- ७ वेषना पालटनारा आठ पहरा सूरतक पाले.  
 ८ जन्मे ते दिवसें मृत्यु थाय अथवा देशांतरें मर  
 ए पामे अथवा जति मरे तो दिन एकनुं सूरतक.  
 ९ आठ वर्षथी नानुं बालक मरण पामे, तो दिन  
 आठनुं सूरतक, विचारसार प्रकरणमां कहुं ठे.  
 १० गाय प्रमुखनुं मृत्यु थाय तो कलेवर घरथी बा  
 हेर लहि गया पढी दिन एक लगें सूरतक अने  
 अन्य तिर्येचनुं कलेवर पड्युं होय, तेने तो घरथी  
 बाहेर लइ जाय, तिहां सुधी सूरतक, पढी नहीं.  
 ११ दास दासी जे आपणी निष्ठायें घरमां रह्यां होय  
 तेनुं मृत्यु थाय, तो त्रण दिवस सूरतक लागे.  
 १२ जेटला महिनानो गर्ज पडे, तेटला दिवस सूरतक.  
 १३ परदेश गयेलानुं मरण थयुं सांजले तो एक तथा  
 बे दिवसनुं सूरतक लागे, एम कल्पजाप्यमां कहुं ठे.  
 १ गोमूत्रमां चोवीश पहरा पढी, जेषना मूत्रमां  
 शोल पहरा पढी, गामर, गधेडी तथा घोडीना  
 मूत्रमां आठ पहरा पढी अने नर नारीना मू  
 त्रमां चार पहरा पढी संमूर्द्धिम जीव उपजे ठे.

॥ अथ पीस्तालीश आगमनां नाम तथा तेनी मूल  
 श्लोक संख्या अने ते प्रत्येकनी उपर जुदा जुदा आचा  
 र्योनी करेली बृहद्वृत्तियो तथा लघुवृत्तियो, चूर्णियो,  
 निर्युक्तियो तथा जाप्यो वगेरेना श्लोकोनी संख्यानुं प्र  
 माण ए सर्व नीचें लखीयें ठैयें.

પ્રથમ શ્રીસુધર્મા સ્વામિનાં કરેલાં અગીઆર અંગ નાં નામ લખીયેં હૈયેં.

- ૧ શ્રીઆચારાંગ સૂત્ર અધ્યયન ૧૫, મૂલ શ્લોક ૧૫૦૦, શીલંગાચાર્ય કૃત ટીકા ૧૨૦૦૦, ચૂર્ણિ ૭૩૦૦, તથા શ્રીનિઝાદુસ્વામી કૃત નિર્યુક્તિની ગાથા ૩૬૮, શ્લોક ૪૫૦, જાણ્ય તથા લઘુવૃત્તિ નથી. સરવાલે શ્લોક ૨૩૨૫૦ છે.
- ૨ શ્રીસૂયગઢાંગ સૂત્ર અધ્યયન ૨૩, પાર્શ્વમત નિર્દલન રૂપ. મૂલ શ્લોક ૨૧૦૦, શીલંગાચાર્ય કૃત ટીકા ૧૨૮૫૦ તથા ચૂર્ણી ૧૦૦૦૦ શ્લોક છે, અને શ્રીનિઝાદુ સ્વામિકૃત નિર્યુક્તિની ગાથા ૨૦૮, શ્લોક ૨૫૦ છે, જાણ્ય નથી, સરવાલે શ્લોક ૨૫૨૦૦ તથા ૧૫૮૩ ની શાલમાં આધુનિક શ્રીહેમવિમલસૂરિયેં ૭૦૦૦ શ્લોકને આશરે દીપિકા કરેલી છે. પણ તે જૂની ટીપોમાં પૂર્વાચાર્યોની ગણતીમાં નથી.
- ૩ શ્રીઠાણાંગ સૂત્ર. એનાં દશ અધ્યયન છે. એના મૂલ શ્લોક ૩૭૭૦ છે, તેની ટીકા સંવત્ ૧૧૨૦ માં શ્રીઅજયદેવસૂરિકૃત ૧૫૨૫૦ શ્લોકની છે. સરવાલે ૧૯૦૨૦ શ્લોક છે.
- ૪ શ્રીસમવાયાંગ સૂત્ર. એના મૂલ શ્લોક ૧૬૬૭ છે, તેની ટીકા શ્રીઅજયદેવસૂરિકૃત ૩૭૭૬ શ્લોકની છે. એની ચૂર્ણિ પૂર્વાચાર્ય કૃત ૪૦૦ શ્લોક છે. સરવાલે ૫૮૪૩ ની સંખ્યા થઈ.

- ૫ શ્રીવિવાહપન્નતિ નગવતિસૂત્ર શતક ૪૧ છે, એ માં ઢત્રીશ સહસ્ર પ્રશ્ન ગૌતમના છે. મૂલ શ્લોક ૧૫૭૫૨, ટીકા સંવત્ ૧૧૨૭ માં શ્રીઅનયદેવસૂરિની કરેલી ડોણાચાર્યે શોધેલી ૧૭૬૧૬ શ્લોકની છે. એની ચૂર્ણિ ૪૦૦૦ શ્લોક પૂર્વાચાર્ય કૃત છે. સરવાલે ૩૭૩૬૭ ની સંખ્યા. તથા એ ની લઘુવૃત્તિ સંવત્ ૧૫૬૭ ના વર્ષમાં દાનશેખર ડપાધ્યાયની કરેલી ૧૨૦૦૦ શ્લોક સંખ્યા છે.
- ૬ શ્રીજ્ઞાતાધર્મ કથાંગ સૂત્ર અધ્યયન ૧૯, કથા ડંગણીશ સાંપ્રત દેશ્વાય છે. પ્રથમ સાડી ત્રણ કોટિ કથાડ પ્રસિદ્ધ છે, એની શ્લોક સંખ્યા ૫૫૦૦, તેની ટીકા શ્રીઅનયદેવસૂરિ કૃત ૪૨૫૨ શ્લોક છે.
- ૭ શ્રીડપાસક દશાંગ સૂત્ર દશ અધ્યયન. મૂલ શ્લોક ૭૧૨ એની ટીકા શ્રીઅનયદેવસૂરિ કૃત ૯૦૦ શ્લોક છે, સરવાલે ૧૭૧૨.
- ૭ અંતગડ દશાંગ સૂત્ર ૯૦ અધ્યયન છે. મૂલ શ્લોક ૯૦૦, તથા શ્રીઅનયદેવસૂરિકૃત ટીકા ૩૦૦ શ્લોક છે. સર્વસંખ્યા ૧૨૦૦
- ૯ અણુત્તરોવવાઈ સૂત્ર તેત્રીશ અધ્યયન મૂલ, શ્લોક. ૨૯૨. તથા શ્રીઅનયદેવસૂરિકૃત ટીકા ૧૦૦, શ્લોક છે, સર્વસંખ્યા ૩૯૨.
- ૧૦ શ્રીપ્રશ્નવ્યાકરણ સૂત્ર દશઅધ્યયન રૂપ, મૂલ શ્લોક ૧૬૫૦, શ્રીઅનયદેવસૂરિકૃત ટીકા ૪૬૦૦ સર્વ સંખ્યા ૫૭૫૦.

૧૧ શ્રીવિપાક સૂત્ર વીશ અધ્યયન છે. મૂલ શ્લોક  
૧૨૧૬, શ્રીઅન્નયદેવસૂરિ કૃત ટીકા ૯૦૦ શ્લો  
ક છે. સર્વસંખ્યા ૨૧૧૬.

સર્વ મલી અગીઆર અંગની મૂલ સંખ્યા ૩૫૬૫૯  
તથા ટીકા ૭૩૫૪૪ અને ચૂર્ણિ ૨૨૭૦૦ તથા નિર્યુ  
ક્તિ ૭૦૦ મલી ૧૨૨૬૦૩. તથા સૂયગડાંગની દીપિ  
કાની સંખ્યા જુદી છે. એમાં આચારાંગ તથા સૂયગડાંગ  
ની ટીકા શ્રીશીલંગાર્ય કૃત છે. બાકી નવ અંગની ટી  
કા અન્નયદેવસૂરિકૃત છે, માટે શ્રી અન્નયદેવસૂરિ, નવાં  
ગીવૃત્તિકારને નામે ઉલ્લેખાય છે.

હવે બાર ઉપાંગની સંખ્યા લખે છે.

૧ શ્રીઝવવાઙ ઉપાંગ આચારાંગ પ્રતિબદ્ધ, એની મૂલ  
સંખ્યા ૧૨૦૦ તથા શ્રીઅન્નયદેવસૂરિ કૃત ટીકા  
સંખ્યા ૩૧૨૫ સર્વ સંખ્યા ૪૩૨૫.

૨ શ્રીરાયપ્પસેણી ઉપાંગ સૂયગડાંગ પ્રતિબદ્ધ, એની  
મૂલ સંખ્યા ૨૦૭૮ તથા શ્રી મલયગિરિ કૃત ટીકા  
૩૭૦૦, સર્વ સંખ્યા ૫૭૭૮.

૩ શ્રીલીવાનિગમ ઉપાંગ ઠાણંગ પ્રતિબદ્ધ, એની મૂલ  
સંખ્યા ૪૭૦૦ તથા શ્રી મલયગિરિકૃત ટીકા  
૧૪૦૦૦ તથા લઘુવૃત્તિ ૧૧૦૦ તથા ચૂર્ણી શ્લોક  
૧૫૦૦ છે. સર્વ સંખ્યા ૨૧૩૦૦.

૪ શ્રીપન્નવણા ઉપાંગ, શ્રીશ્યામાચાર્યકૃત સમવા  
યાંગ પ્રતિબદ્ધ, એની મૂલ સંખ્યા ૭૭૮૭ તથા  
શ્રીમલયગિરિ મહારાજની કરેલી ટીકા ૧૬૦૦૦

તથા હરિનંદસૂરિ કૃત લઘુવૃત્તિ ૩૭૨૮ શ્લોક છે,  
સર્વ સંખ્યા ૩૭૫૧૫.

૫ શ્રીજંબૂદ્વીપ પન્નતિ ઉપાંગ જગવતિ પ્રતિબદ્ધ એની  
મૂલ સંખ્યા ૪૧૪૬ મલયગિરિકૃત ટીકા ૧૨૦૦૦  
તથા ચૂર્ણી ૧૮૬૦ છે. સર્વ સંખ્યા ૧૮૦૦૬.

૬ ચંદ્રપન્નતિસૂત્રજ્ઞાતાપ્રતિબદ્ધમૂલ સંખ્યા ૨૨૦૦  
તથા મલયગિરિકૃત ટીકા ૯૪૧૧ તથા લઘુ  
વૃત્તિ ૧૦૦૦ શ્લોક છે. એ સર્વ સંખ્યા ૧૨૬૧૧.

૭ સૂરપન્નતિ ઉપાંગ પૂર્વોક્ત ચંદ્રપન્નતિ તથા એ વેદુ  
મલી જ્ઞાતા પ્રતિબદ્ધ છે એની મૂલ સંખ્યા ૨૨૦૦  
તથા શ્રીમલયગિરિ કૃત ટીકા ૯૦૦૦ અને ચૂષ્મા  
૧૦૦૦ સર્વ સંખ્યા ૧૨૨૦૦.

૧૨ નિરયાવલિકા સૂત્ર અથવા નામાંતરે એક કપ્પિ  
યા અધ્યયન ૧૦, બીજું કપ્પવર્મિસિયા અધ્યય  
ન ૧૨, ત્રીજું પુષ્પિયા અધ્યયન ૧૦, ચોથું પુષ્પ  
ચૂલિયા અધ્યયન ૧૦, અને પાંચમું વન્હિદિસા  
એ પાંચ ઉપાંગનું નામ નિરયાવલિકા કહેવાય  
છે. એ કપ્પિયા પ્રમુખ પાંચ ઉપાંગની અધ્યયન  
સંખ્યા ૫૨ છે, તે અનુક્રમે સાતમા ઉપાસક દશાં  
ગાદિક પાંચ અંગ પ્રતિબદ્ધ છે. એ પાંચેની મલી શ્લો  
કસંખ્યા ૧૧૦૯ છે એ પાંચેની વૃત્તિ ૭૦૦ શ્લોક  
પ્રમાણ શ્રીચંદ્રસૂરિ કૃત છે. સર્વ સંખ્યા ૧૮૦૯  
એમ બાર ઉપાંગની સર્વ મલી મૂલ સંખ્યા ૨૫૪૨૦,  
તથા ટીકાની સંખ્યા ૬૭૯૩૬ અને લઘુ ટીકાની

સંખ્યા ૬૮૨૮ તથા ચૂર્ણીની સંખ્યા ૩૩૬૦, એ  
કંદર સરવાલે સંખ્યા ૧૦૩૫૪૪.

હવે દશ પચ્ચનાનાં નામ કહે છે.

- ૧ ચતુસરણપદ્મો ગાથા. ૬૩
- ૨ આઠરપચ્ચસ્કાણ પદ્મો ગાથા. ૮૪
- ૩ નત્તપદ્મો ગાથા. ૧૭૨
- ૪ સંચારગ પદ્મો ગાથા. ૧૨૨
- ૫ તંડુલવેયાલી પદ્મો ગાથા. ૪૦૦
- ૬ ચંદાવિઙ્ગ પદ્મો ગાથા. ૩૧૦
- ૭ દેવિંદ્રુત્ત પદ્મો ગાથા. ૨૦૦
- ૮ ગણિવિદ્યા પદ્મો ગાથા. ૧૦૦
- ૯ મહાપચ્ચસ્કાણ પદ્મો ગાથા. ૧૩૪
- ૧૦ મરણસમાધિ પદ્મો ગાથા. ૭૨૦

એ દશ પદ્મનાની ગાથા સંખ્યા ૨૩૦૫ થયે. પ્રત્યે  
કનાં અધ્યયન દશ દશ છે. એ દશ પદ્મના પીસ્તાલી  
શ આગમની ગણતિમાં છે. ઉપરાંત કેટલીક લખેલી  
પ્રતોમાં મહાપચ્ચસ્કાણને સ્થાનકે વીરસ્તવ પદ્મો ગા  
થા ૪૩ નો લખેલો છે. હવે ઉપર કહેલા દશથી ઉ  
પરાંત પદ્મના પણ હાલમાં છે, તેનું હાં પ્રયોજન ન  
થી, તથાપિ વાંચનારને વાકેબ થવા માટે નામ લખું હું.

- ૧ વીરસ્તવ પદ્મો ગાથા. ૪૩
- ૨ રૂષિનાથિતસૂત્ર સંખ્યા ૭૫૦
- ૩ સિદ્ધિપ્રાનૃતસૂત્ર સંખ્યા ૧૫૦, એની ૭૫૦ ટીકા છે.

૪ દીવસાગરપન્નતિ સંગ્રહણી સંખ્યા ૨૫૦, એની ટીકા ૨૫૦૦ છે.

૬ અંગવિદ્યાપદ્મો સંખ્યા ૮૮૦૦ એકટીપમાં લખ્યું છે.

૭ જ્યોતિષકરંમક પદ્મો સંખ્યા ૫૦૦, એની ટીકા શ્રીમલયગિરિ મહારાજની કરેલી ૫૦૦૦ સંખ્યા ની છે. તેમજ ગદ્યાચાર પ્રકરણ પ્રમુખ પણ છે. અંગ ચૂલિકાની વૃત્તિ ૮૦૦ શ્લોક છે, પરંતુ એ ચૂલિકા સૂત્રમાં છે કિંવા બીજા કોશમાં છે, તે મજ ઉપર લખેલા રૂષિનાથિત સૂત્ર તથા સિદ્ધિ પ્રાપ્ત સૂત્ર અને દીવસાગર પન્નતિ એ પણ જે સૂત્રોના અંગમાં હોય તેમાં ગણવાં.

હવે હ હેદ ગ્રંથનાં નામ કહે છે.

૧ શ્રીનિશીથહેદ સૂત્ર, અધ્યયન ૨૦, મૂલ જુની ટીપમાં ૮૧૫ શ્લોક છે. એનું લઘુનાખ્ય ૭૪૦૦ શ્લોક છે, તથા ચૂર્ણી ૨૮૦૦૦ શ્લોક છે. મહોટું નાખ્ય ૧૨૦૦૦ શ્લોક છે. તે ટીકાને નામે પણ કહેવાય છે. સર્વ સંખ્યા ૪૮૨૧૫ છે.

૨ મહા નિશીથહેદ સૂત્ર, અધ્યયન ૧૨, મૂલ ૪૫૦૦ શ્લોક છે, તથા મતાંતરે એની ત્રણ વાંચના છે, એક લઘુવાચના ૪૨૦૦, બીજી મધ્ય વાચના ૪૫૦૦, અને બૃહદ્વાચના ૧૧૮૦૦ છે.

૩ બૃહત્કલ્પહેદ સૂત્ર. અધ્યયન ૨૪, એની જુની ટીપમાં સંખ્યા ૪૭૨ ની છે. એની વૃત્તિ સંવત્ ૧૨૨૨ ના વર્ષમાં બૃહદ્વાલીય શ્રીદેવમકીર્તિસૂરિ

કૃત ૪૨૦૦૦ સંખ્યાની છે. તથા એનું જાણ્ય  
જુની ટીપમાં શ્લોક ૧૨૦૦૦ સંખ્યાનું છે. તથા  
લઘુજાણ્ય ૮૦૦૦ શ્લોકનું છે, અને એની ચૂર્ણિ  
૧૪૩૨૫ શ્લોકની છે. સર્વ સંખ્યા ૭૬૭૯૮૪૬.

૨ વ્યવહાર દશાકલ્પહેતુસૂત્ર. એનાં દશ અધ્યયન  
છે. એની મૂલ સંખ્યા જુની ટીપમાં ૬૦૦ ની  
છે. એની ટીકા શ્રીમત્તયગિરિ સૂરિકૃત શ્લોક  
૩૩૬૨૫ ની છે. તથા ચૂર્ણિ ૧૦૩૬૧ શ્લોકની  
છે. એનું જાણ્ય જુની ટીપમાં ૬૦૦૦ શ્લોકનું લખ્યું  
છે. સરવાલે સંખ્યા ૫૦૫૮૬ થઈ.

૪ પંચકલ્પહેતુ સૂત્ર. શોભ અધ્યયન છે. એની મૂલ  
સંખ્યા ૧૧૩૩ ની છે. એની ચૂર્ણિ ૨૧૩૦ શ્લો  
કની છે. બીજી ટીકામાં એની સંખ્યા ૩૩૦૦  
ની પણ લખી છે. તથા એનું જાણ્ય ૩૧૨૫ શ્લો  
કનું છે. સર્વ સંખ્યા ૬૩૮૮ તથા એમાં ગાથાસં  
ગ્રહ. ૨૦૦ છે.

૫ દશાશ્રુતસ્કંધહેતુ સૂત્ર. જેનું આઠમું અધ્યયન ક  
લ્પસૂત્ર છે. તેની મૂલ સંખ્યા ૧૮૩૫ છે, તથા  
ચૂર્ણિ ૨૨૪૫ શ્લોકની છે, અને નિર્યુક્તિ સંખ્યા  
૧૬૮ શ્લોક છે. સર્વ સંખ્યા ૪૨૪૮ થઈ.

૬ જિતકલ્પહેતુસૂત્ર. એની મૂલ સંખ્યા ૧૦૮ છે,  
એની ટીકા ૧૨૦૦૦ શ્લોક છે. તથા સેનકૃત  
ચૂર્ણિ ૧૦૦૦ શ્લોક છે, અને જાણ્ય. ૩૧૨૪  
શ્લોક છે. સર્વ સંખ્યા ૧૬૨૩૨ શ્લોક છે તથા



એની ચૂર્ણિનું વ્યાખ્યાન ૧૧૨૦ છે. તથા એની  
 લઘુવૃત્તિ શ્રીસાધુરત્નકૃત શ્લોક ૫૭૦૦ છે. ત  
 થા તિલકાચાર્ય કૃત વૃત્તિ ૧૫૦૦ શ્લોક છે.  
 ૬ સાધુજિત કલ્પ વિસ્તારે ૩૭૫ શ્લોક છે. એની  
 શ્રીધર્મઘોષસૂરિ કૃત વૃત્તિ ૨૬૫૦ શ્લોક છે.  
 તથા દશાશ્રુતસ્કંધનું આત્મું અધ્યયન કલ્પસૂત્ર  
 ૧૨૧૬ શ્લોક પ્રમાણ શ્રીનિંબાદુસ્વામિકૃત  
 છે. તેની ધૃત્વીચંડસૂરિ કૃત ટિપ્પણી ૬૭૦ શ્લો  
 ક છે, અને નિર્યુક્તિની ૧૬૮ ગાથા નિંબાદુસ્વા  
 મિકૃત છે. તથા એની ચૂર્ણિ અને ટીકાનું પણ  
 ઘણી છે. પરંતુ તે ઘણું કરી વિક્રમ સંવત્  
 ૧૨૦૦ ના પઠીની છે માટે ટીપ્પણમાં લખી નથી.

હવે ચાર મૂળ સૂત્રનાં નામ લખિયેં હેયેં.

- ૧ આવશ્યક સૂત્ર. મૂળ ૧૨૫ ગાથા છે. એની ટીકા  
 શ્રીહરિનિંબાદુસ્વામિકૃત ૨૨૦૦૦ શ્લોક છે. તથા  
 એની નિર્યુક્તિ શ્રીનિંબાદુસ્વામિકૃત ૩૧૦૦ શ્લો  
 ક છે. તથા ચૂર્ણિ ૧૮૦૦૦ શ્લોક છે. તથાં બીજી  
 આવશ્યકવૃત્તિ ( ચતુર્વિંશતિ સ્તવ ) ૨૨૦૦૦  
 છે. તથા એની લઘુવૃત્તિ તિલકાચાર્ય કૃત ૧૨૩૨૧  
 શ્લોક છે, અને અચલગઢાચાર્યકૃત દીપિકા  
 ૧૨૦૦૦ શ્લોક છે. તથા એનું જાણ્ય ૪૦૦૦  
 શ્લોક છે. તથા આવશ્યક ટીપ્પણિકા મહાધારી  
 શ્રીદેવચંડસૂરિ કૃત શ્લોક ૪૬૦૦ એકઠા કરતાં

- સરવાળે શ્લોક સંખ્યા ૯૮૧૪૬ થાય છે. તથા નિર્યુક્તિની ટીકા ૨૨૫૦૦, હરિનિઙ્સૂરિકૃત છે.
- ૧ વિશેષાવશ્યકસૂત્ર. એ આવશ્યક મૂલ સૂત્રનું વિશેષ પરિકર રૂપ છે. મૂલ ગ્રંથ. ૫૦૦૦ શ્લોક શ્રીજિનનિઙ્ગણિકમાશ્રમણ કૃત છે, એની લઘુવૃત્તિ. ૧૪૦૦૦, શ્લોકની ગ્રંથના અંતમાં કોટાચાર્ય કૃત લખી છે, અને ટીપમાં ડોણાચાર્યનું નામ છે. તથા એની વૃદ્ધવૃત્તિ ૧૮૦૦૦ શ્લોક પ્રમાણ મદ્ધધારી શ્રીદેમચંદ્રસૂરિકૃત છે. તેની ટીકા નર્કાનુવિદ્યા જૈનસ્થાપનાચાર્ય કૃત છે.
- ૨ પાશ્વી સૂત્ર મૂલ ૩૬૦ સંખ્યા છે, એની ટીકા સંવત્ ૧૧૮૦ માં શ્રીયશોદેવ સૂરિયેં કરેલી તેની શ્લોક સંખ્યા ૨૭૦૦ છે, તથા ચૂર્ણિ ૪૦૦ શ્લોક છે.
- ૩ યતિપ્રતિક્રમણ સૂત્ર વૃત્તિ શ્લોક સંખ્યા ૬૦૦ છે.
- ૪ દશવૈકાલિક સૂત્ર. શ્રીસિંચનવસૂરિકૃત મૂલ શ્લોકની ૭૦૦ સંખ્યા છે. એની વૃત્તિ તિલકાચાર્ય કૃત ૭૦૦૦ શ્લોક પ્રમાણ છે. તથા બીજી વૃત્તિ શ્રીહરિનિઙ્સૂરિકૃત ૬૮૧૦ શ્લોક છે. તથા શ્રીમલયગિરિ મહારાજ કૃત વૃત્તિ. ૭૭૦૦ શ્લોક છે. તથા ચૂર્ણિ ૭૫૦૦ શ્લોક છે. લઘુવૃત્તિ ૩૭૦૦ શ્લોક છે, તથા નિર્યુક્તિની ગાથા ૪૫૦ છે. તેમજ આધુનિક શ્રીસોમસુંદર સૂરિકૃત લઘુ ટીકા ૪૨૦૦, તથા શ્રીસમયસુંદર ઉપાધ્યાય કૃત લઘુટીકા ૨૬૦૦ છે.

૧ શ્રીપિંડનિર્યુક્તિસૂત્ર શ્રીજહ્વાદુસ્વામિકૃત એની મૂળ સંખ્યા ૭૦૦ ની છે. એની ટીકા શ્રીમલય ગિરિકૃત ૭૦૦૦ શ્લોક છે. પ્રત્યંતરે ૬૬૦૦ ની છે. તથા સંવત્ ૧૧૬૦ માં શ્રીવીરગણિ કૃત ટીકા ૭૫૦૦ શ્લોકની છે, તથા મહાસૂરિકૃત લઘુ વૃત્તિ ૪૦૦૦ શ્લોકની છે. સર્વ સંખ્યા ૧૯૨૦૦

૨ ઊધનિર્યુક્તિ શ્રીજહ્વાદુસ્વામિકૃત મૂળ ગાથા ૧૧૭૦ શ્લોક ૧૪૫૦ છે. ટીકા ડોણાચાર્યકૃત ૭૦૦૦ શ્લોકની છે. એનું જાણ્ય ૩૦૦૦ શ્લોક છે, તથા ચૂર્ણિ ૪૦૦૦ શ્લોક છે. સરવાળે સંખ્યા ૧૮૪૫૦

૪ શ્રીઉત્તરાધ્યયન સૂત્ર. એના ઠત્રીશ અધ્યયન વૈરાગ્યમય છે, એની મૂળ સંખ્યા ૨૦૦૦ છે, તથા બૃહદ્વૃત્તિ વાદિવેતાલ શ્રીશાંતિસૂરિકૃત ૧૮૦૦૦ છે. પ્રત્યંતરે ૧૭૬૪૫ પણ છે, તથા લઘુવૃત્તિ સંવત્ ૧૧૩૯ માં શ્રીનેમિચંડસૂરિકૃત ૧૩૬૦૦ શ્લોકની છે. એની નિર્યુક્તિ શ્રીજહ્વાદુ સ્વામિકૃત ગાથા ૬૦૭ શ્લોક ૭૦૦ છે તથા એની ચૂર્ણિ ૬૦૦૦ શ્લોકની છે. સરવાળે સંખ્યા ૪૦૩૦૦ છે.

હવે બે ચૂલિકા સૂત્રનાં નામ કહે છે.

૫ નંદીસૂત્ર શ્રી દેવર્ધિગણિક્ષમાશ્રમણ મૂળશ્લોક ૭૦૦ છે, એની વૃત્તિ ૭૭૩૫ શ્લોક પ્રમાણ શ્રીમલયગિરિકૃત છે, એની ચૂર્ણિ સંવત્ ૭૩૩ માં કરેલી ૨૦૦૦ શ્લોકની છે એની લઘુટીકા શ્રીહરિ

નડસૂરિકૃત શ્લોક ૨૨૧૨ છે, સરવાલે સંખ્યા  
૧૨૭૪૭ છે. તથા એની ટિપ્પણી શ્રીચંડસૂરિકૃત  
૩૦૦૦ શ્લોકની છે.

૬ શ્રી અનુયોગદ્વાર સૂત્ર. ગાથા ૧૬૦૦ શ્લોક ૧૮૦૦  
છે તથા મદ્વધારી શ્રીહેમચંડસૂરિકૃત વૃત્તિ સંખ્યા  
૬૦૦૦ છે, તથા શ્રીજિનદાસ મહત્તરકૃત ચૂર્ણિ  
૩૦૦૦ શ્લોકની છે, તથા શ્રીહરિનડસૂરિકૃત લ  
ઘુવૃત્તિ સંખ્યા ૩૫૦૦ છે. સર્વ સંખ્યા ૧૪૩૦૦

॥ એ પ્રમાણે અગીયાર અંગ, બાર ઉપાંગ, દશપય  
ન્ના, ૮ હેદસૂત્ર, ચાર મૂલસૂત્ર અને બે ચૂલિકાસૂત્ર,  
મલી પીસ્તાલીશની સંખ્યા હાલ ગણતીમાં છે. તેની  
મૂલ શ્લોક સંખ્યા ૮૦૩૪૦ તથા મુખ્ય મહોટી એકેક  
ટીકાઈની સરવાલે સંખ્યા ૩૩૪૩૪૦ છે, અને લઘુ  
ટીકાઈની સંખ્યા ૪૭૨૬૧ છે, તેમજ ચૂર્ણીની સંખ્યા  
૯૫૧૯૬ તથા નિર્યૂક્તિ ૫૧૧૮ અને જાણ્ય ૫૮૬૪૯  
છે. એ સર્વ એકઠા કરીયેં તેવારેં સર્વ સંખ્યા ૬૨૦૯૦૪  
થાય. તેની સાથેં શ્રીમહાનિશીથ સૂત્રની લઘુવાચના  
૪૨૦૦, મધ્યવાંચના ૪૫૦૦, અને બૃહદ્વાચના ૧૧૮૦૦  
એ ત્રણ વાંચનાના શ્લોક જેલીયેં તો ૬૪૧૪૦૪ થાય.  
એ મતાંતર જાણવું. આ કહેલી સંખ્યા માત્ર પૂર્વાચા  
ર્યોયેં પ્રમાણ કીધેલીજ સમજવી. તેથી વિશેષાવશ્ય  
કની લઘુ ટીકા ૧૪૦૦૦ છે. તે એમાં આવી નથી,  
તેમજ આવશ્યકની ટિપ્પણી ૪૦૦૦ શ્લોક છે, તે  
પણ આમાં ગણી નથી, અને વલી ઘણા સિદ્ધાંતોની

બીજી નવી ટીકાંતો તો અનેક છે, પરંતુ તે આધુનિક છે, માટે પૂર્વાચાર્યોએ તે પ્રમાણ કરેલી સમજવી નહીં. આમાં માત્ર પુરાતન ટીકાંતો પ્રમાણ કરેલી છે. તે મજાને લગતા કલ્પસૂત્રાદિકની સંખ્યા પણ એમાં ગણી નથી, માટે તેની સંખ્યા સર્વ જૂદી જાણવી.

આમાં આવશ્યક, આચારાંગ, સૂયગડાંગ, દશવૈકાલિક, ઉત્તરાધ્યયન તથા કલ્પસૂત્ર, એ ઠની નિર્યુક્તિ શ્રોત્વવાદુસ્વામિકૃત છે.

તથા નિશીથનાથ, વૃહત્કલ્પનું લઘુનાથ તથા વૃહદ્રાણ્ય, વ્યવહારનાથ, જિતકલ્પનાથ, પંચકલ્પનાથ અને ઉચ્ચનિર્યુક્તિ નાથ, એ સાત નાથ પૂર્વાચાર્યકૃત છે.

તથા આચારાંગ, સૂયગડાંગ, નગવતી, જંબુદ્વીપ પત્રાન્તિ, આવશ્યક, ઉત્તરાધ્યયન, દશવૈકાલિક, પાંચીસૂત્ર, અનુયોગદ્વાર, નંદી, નિશીથ, વૃહત્કલ્પ, વ્યવહાર, દશાશ્રુતસ્કંધ, પંચકલ્પ, જિતકલ્પ, એ શોલની ચૂર્ણિ પૂર્વાચાર્યકૃત છે.

અને ટીકાંતમાં ૭ સૂત્રની ટીકા શ્રીહરિજ્ઞસૂરિકૃત છે, નવ અંગ તથા ઊવવાડે ઉપાંગની ટીકા શ્રી અજયદેવ સૂરિકૃત છે, આચારાંગ અને સૂયગડાંગ એ બે અંગની ટીકા શીલિંગાચાર્ય કૃત છે, પાંચની ટીકા મલયગિરિજીમહારાજકૃત છે, તથા બીજી ટીકાંતો પૃથક્ પૃથક્ આચાર્યકૃત છે. સરવાલાની સંખ્યામાં સર્વ સૂત્રની પહેલી મહોટી, વૃત્તિ તથા લઘુવૃત્તિ જે પૂર્વાચાર્યકૃત છે, તેજ લીધેલી છે. બીજી લીધી નથી. એ

સંક્ષેપથી આગમસંખ્યા બાલજીવને સમજ માટે છે.

અથ નારકીની વેદનાનું સ્વરૂપ કહે છે.

॥ તિહાં પહેલી રત્નપ્રજા, બીજી શર્કરપ્રજા, ત્રીજી વાલુકાપ્રજા, ચોથી પંકપ્રજા, પાંચમી ધૂમપ્રજા, ષઠી તમઃપ્રજા, સાતમી તમસ્સપઃપ્રજા, એમ સાત પ્રકારની જૂમિયો નારકી જીવોને રહેવા માટે છે. એને વિષે જિહાં સુધી તે નારકી જીવો જીવે, તિહાં સુધી સદા સર્વદા નિરંતર પણે અત્યંત દુઃખ વેદે છે, પરંતુ આંસુ વીંચીને ડાહીયેં તેટલી વાર પણ વેદના નો ગચ્છા વિના રહેતા નથી. કારણ કે, તિહાં એકાંત દુઃખજ બાંધ્યું છે, તે વેદે છે. બીજો ઉદ્યમ કાંઈ નથી.

હવે તે નારકિયોને એક દ્વેષવેદના, બીજી અન્યોઽન્યવેદના, ત્રીજી પરમાધામિકૃત વેદના. એમ ત્રણ પ્રકારની વેદના હોય છે. તેનું કિંચિત્ સ્વરૂપ કહે છે.

પ્રથમ દ્વેષવેદના કહે છે. કે એક રત્નપ્રજાના તથા બીજા શર્કરપ્રજાના ત્રીજા વાલુકાપ્રજાના નારકી જીવો શીતયોનિયા છે, અને યોનિસ્થાનવિના બીજી જે નરકજૂમિકા છે તે સર્વ જેવા આગ્નિવર્ણ સ્થેરના અંગારા હોય તે કરતાં પણ અત્યંત ઊષ્ણ છે માટે તે શીત યોનિયા જીવ તે ઊષ્ણવેદના વેદે છે. એમ બીજા પણ નરકોનેવિષે જાવના જાણવી. પંકપ્રજા નરકજૂમિના ઊપરના ઘણા નરકાવાસા તો ઊષ્ણ છે, અને નીચલા થોડા નરકાવાસા શીત છે. ધૂમા નામા નરકજૂ

मिने विषे नरकावासामां जाजा शीतल ठे अने उष्ण थोडा ठे; तथा ठी अने सातमी ए बेहुनी एकांत शीतल जूमिकाउ ठे. अने तेमां रहेला नारकीयो उष्णयोनिया होय ठे. परंतु एक एक जूमिनी नीची नीची जूमियोमां अनुक्रमें तीव्र, तीव्रतर, तीव्रतम वेदनाउ ठे, तेनुं स्वरूप कहे ठे.

ग्रीष्मऋतुने अंतें मध्यान्हसमयें सूर्य प्राप्त थये ठते अने आकाश मेघ रहित ठते अत्यंत दुष्ट पित्त प्रकोपें करी व्याकुल अने वृत्ररहित चारे दिशियें प्र दीप्त थयेली जे अग्निज्वाला तेणेंकरी व्याप्त एवा कोइ पुरुषने जेवी वेदना थाय, तेथी अनंतगुणी उष्णवेदना नरकावामाने विषे रहेला नारकीजीवोने जाणवी.

शीतयोनिया नारकीने उष्णवेदनारूप नरकावा साथी लइने खेरना अंगारामां नाखीने कोइ धमे, तेवारें तो ते नारकी चंदन जेवी शीतलता पामी अत्यंत सुखी थया ठता ते अग्निमां निडा पामे. वली पोष तथा माघ महिनामां रात्रिने समयें शीतल वायु वाय, तेणें करी जेम हृदयादि कंपे, तथा हिमाचलमां वस्त्ररहित बेठा थकां उपरथी हिम पडतां जेवी शीतवेदना होय, तेथी अनंतगुणी शीतवेदना नरकावासामां होय. ते शीतवेदनायुक्त नरकावासामांथी ते नारकीने बाहेर काहाडी पूर्वोक्त हिमाचलादिक शीतल स्थलें जो स्थापन करीयें तो ते नारकी निरुपम सुखीया थया ठता निडाने पामे.

હવે તે નારકીના ડુઃખદાયી પુજ્જના પરિણામો  
 દશ પ્રકારે છે, તે કહે છે. પ્રથમ જે જે આહારાદિક  
 નાનાપ્રકારના પુજ્જનું જે બંધન તે પ્રદીપ્ત થયેલા અગ્નિ  
 કરતાં પણ અત્યંત દારુણ હોય. બીજી તે નારકીની  
 ગતિ પણ ઝંટ સરખી હોય, તે ગતિનું ડુઃખ તપાવેલા  
 લોહસરખી જૂમિપર ચલાવ્યાથી પણ અત્યંત વધારે થા  
 ય. ત્રીજું ઢુંકસંસ્થાન તે પાંચ ઢેદન થયેલા પક્ષી સ  
 માન ડુઃખદાયી થાય. જેને જોવાથી જોનારને અત્યં  
 ત ઝઘેગ ઉત્પન્ન થાય છે, ચોથા જિંતપ્રમુખના પુજ્જ જે  
 ઝડીને શરીરે લાગે, તે શસ્ત્ર અને સ્વદ્વધારા સરોસા  
 લાગે. પાંચમો તે નરકાવાસાનો વર્ણ સર્વત્ર અંધકાર  
 મય અને વિષ્ટા, મૂત્ર, શ્લેષ્મ, મલ, લોહી, વસા,  
 પરુ, અને મેદથી જસ્યો એવો તેના તલીયાનો જાગ  
 છે, તથા સ્મશાનની પતે તેકાંઈ તેકાંઈ માંસ, કેશ,  
 હાડ, નખ, દાંત, ચર્મ, પઙ્ચાં છે, એવો વર્ણ છે, ઠઠો  
 જેમાં કુતરાં, શીયાલ, સર્પ, માર્જાર, નોલીયા પ્રમુ  
 ખનાં મૃત કલેવર પડ્યાં હોય, તેના ગંધ કરતાં પણ  
 અત્યંતઘણો પુજ્જનો ડુર્ગંધ હોય. સાતમો નારકીના  
 પુજ્જનો રસ, તે કડવી તુંબડી કરતાં પણ અત્યંત  
 કડવો હોય. આઠમો નારકીના પુજ્જનો સ્પર્શ તે  
 વિંઠીના કાંટા સરખો અને ક્રોંચના રોમ કરતાં પણ  
 અત્યંત ઝુંમો જાણવો. નવમો અગુરુજઘુ પરિણામ  
 તે પણ અત્યંત ડુઃખના આવાસરૂપ જાણવો. દશ  
 મો અત્યંત વિલાપ, આક્રંદ ડુઃખકારી શબ્દના પુજ્જ



હોય. એમ દશ પ્રકારેં નારકીના પુજ્જલપરિણામ હોય.

હવે નારકીયોને દશપ્રકારની વેદના હોય, તે કહે છે. તેમાં શીતવેદના અને ઝષ્ણવેદના, એ બે પૂર્વેં કહી તે જાણવી. વલી ત્રીજી વેદના તે અઢીઢીપનાં અન્ન તથા ઘૃત જો આપીયેં, તો પણ નારકીને ચૂસ મટે નહિં; અને ચોથી વેદના તે સમસ્ત સમુદ્ અને ન દીનાં પાણી પાડ્યેં, તો પણ તૃષા મટે નહિં, તથા તા લવું હોવ સૂકાતાં રહે નહિં. પાંચમી વેદના તે ઊરી, કરવત, તેણેં કરી ચળતાં પણ જેની સ્વરજ મટે નહિં. ષઠી વેદના જે નિરંતર પરવશ રહે. સાતમી વેદના જે અહિયાં રહેનારા પુરુષો કરતાં અનંતો જ્વર સદા હોય, આઠમી વેદના તે શરીર તાપમય હોય, દાઘજ્વરમય હોય. નવમી વેદના તે અનંતો જય હોય. દશમી વેદના તે શોક, અત્રત્ય મનુષ્ય કરતાં અનંતગુણો હોય, અને વિજંગજ્ઞાન પણ સર્વત્ર ડુઃસ્વદાયી હોય; અને પરમા ધામી લોક પણ જાલાં તલવાર, તીર, પ્રમુખ હથીયા ર દેસાડીને મહાડુઃસ્વ દેનારા ત્યાં હોય છે. તેણેં કરીને અત્યંત ડુઃસ્વી હોય; અને નિરંતર શોક કરતા રહે. એમ નારકીને દશ પ્રકારની ક્ષેત્રવેદના કહી.

હવે નારકીમાં અન્યોઽન્યકૃત વેદના કહે છે. નાર કીના બે જેદ છે. એક મિષ્ટ્યાદૃષ્ટિ અને બીજા સમ્ય ગૃદૃષ્ટિ છે, તે જેમ નિદ્ર તથા વળજારા પ્રમુખનો કુતરો બીજા કુંતરાડને દેસી ક્રોધાંધ થયો થકો જડવા આવે, તેડ પરસ્પર દાંત તથા નસેં કરી યુદ્ધ

करे. तेम जे मिथ्यात्वी नारकी होय, ते पण विजंग ज्ञानें करी बीजा नारकीने दूरथकी आवतो देखी क्रोधें करी अत्यंत रौड एवुं नवुं वैक्रिय रूप करे, अ ने पोतपोताना नरकावासमां पृथ्वीना स्वजावोत्पन्न हथीयार अथवा नवां विवृर्था एवां त्रिशूल अने जालां प्रमुख अथवा हाथ, पग, दांत, अने नखें करी मांहो मांहे प्रहार करे. ते प्रहारें पीडा पा भेला एवा तेउ लोहीना कादवमां आलोटता आक्रंद करे, अने जे सम्यग्दृष्टि नारकी होय, ते पाताना पूर्वजवकृत पापने स्मरण करी बीजाथकी उत्पन्न थयेलुं एवुं दुःख सम्यक्प्रकारें सहन करे. परंतु बी जाने पीडा उपजावे नहिं. ए रीतें नारकीने अन्योऽन्य वेदना कही.

हवे नारकीयोने परमाधामी देवताकृतवेदना कहे ठे. नरकावासनी पहेली नित्तिने विपे निःकूट आला ठे, ते आला नारकीने उपजवानी योनि जाणवी. तिहां नारकी उपना पठी अंतरमुहूर्ते आलो न्हानो अने शरीर महोटुं तेथी तेमां समाय नही. तेवारें नीचें पडे. जेवो ते नीचें पडे के तुरत तेने पड्यो जाणीने परमाधामी त्यां आवे, ते आवीने पूर्वकृत पापक र्मेने अनुसारें कर्मोपचारीने दुःख आपे. ते कहे ठे.

मद्यपान करनारने तपावेलो तरुं पीवरावे. अ ने जे परस्त्रीसंगी होय, तेने अग्निमय लोहनी पूत लीनुं आलिंगन करावे; कूट शिमलाना वृक्ष उपर

बैसाडे. जोढाना घणा प्रकारना घात करे. वांसला यें करी ठेदे, दहतउपर द्वार मूके. उष्ण तेलमांहे तले; कुंत, जालामां शरीरने प्रोवे, तथा अग्निनी ज छिमांहे शेके, घाणीमांहे पीले, करवतें करी ठेदी नाखे; काक, घुअड, कुतरा अने सिंह प्रमुखें विकू र्वांने कदर्थना करावे, वैतरणी नदीमांहे ते नारकीने ज्वोले, असिपत्र वनमांहे वेश करावे, तप्तवेलुमां हे दोडावे. एवी विविध प्रकारनी वेदना उत्पन्न करी नारकीने दुःख आपे. पठी वज्रमय चंचूयेंकरी ते नारकीने पट्टीयो तोडे, तथा कांही धरतीयें पड्या रहेला नागने वाघ चूटे, खाय. एवा ते परमाधामी अधम, महा पापिष्ठ, क्रूरकर्मा के जेमने पंचाग्नि प्र मुख कष्ट क्रिया करवा थकी उपनुं एवुं जे क्रूर सुख ठे. एवा असुर परमाधामी ते कदर्थ्यमान एवा नार कीने मांहोमांहे पाडा, कूकडा अने मेंढानी पेरें जू ऊता देखी युद्ध प्रेक्षक मनुष्यनी पेरें ते परमाधामी हर्ष पामे, अट्टहास्य करे, चेलोट्क्षेप करे, पटह व गाडे, दादरी वजावे, जेम अहियांनां लोको नाटक देखी खुशी थाय, तेवा परमाधामी त्रणे जातनी कद र्थना नारकीने देखी खुशी थाय. घणुं शुं कहियें ! परंतु नारकीयोने दुःख देवामां तथा दुःखी देखीने खुशी थवामां परमाधामीयोने जेवी प्रीति होय ठे, तेवी प्रीति अत्यंतरम्य वस्तुने जोशने पण होय नही.

हवे पूर्वोक्त क्षेत्रवेदना, अन्योन्यवेदना, तथा

પરમાધામીકૃતવેદના મહિલી કઈ કઈ વેદના કયે કયે નરકેં હોય? તે કહે છે. સાતે નરકને વિષે ક્ષેત્રવેદના તે સ્વનાર્વે ક્ષેત્રથકી વેદના હોય. બીજી અન્યોન્ય કૃતવેદના તે બે પ્રકારેં છે, તે એક શરીર થકી અને બીજી પ્રહરણથકી તેમાં મરીરેં કરી અન્યોન્યવેદના સાતે નરક નૂમિને વિષે છે. અને પ્રહરણ કૃત વેદના પહેલાં પાંચ નરકને વિષે છે, તેમજ પહેલાં ત્રણ નરકને વિષે પરમાધામીકૃતવેદના છે; ઠછા તથા સાતમા નરકના નારકીયો રાતા કુંથુઆ જેવા અને જેનાં મુખ વજ્રમય હોય છે; વલી ઢાળના કીડા સરખા વિકૂર્વીને અન્યોન્ય શરીરમાં પ્રવેશ કરાવે. તેડ વેદના ઉદીરે, અને શરીરમાંહે પ્રવેશ કરી રવાય. વલી કોઈક ઠેકાણે અન્યોન્યકૃતવેદના ઠછી નરક પૃથ્વી સુધી છે. એવું કહ્યું છે. તે પરમાર્થ નથી જાણતા! શું જાણીયેં તેણે કયા હેતુથી કહ્યું હશે? એનાં હાવેદુબ ચિત્ર, આ પુસ્તકની આદિમાં છે, તિહાંથી જોવાં.

પહેલી રત્નપ્રજ્ઞા પૃથ્વીનું ગોત્ર. અર્થ સહિત નામ તે ગોત્ર કહિયેં. તિહાં પહેલે કાંમે ઘણાં રત્નો છે. તેથી તે નરકનૂમિનું રત્નપ્રજ્ઞાગોત્ર કહિયેં; અને તે પઢી ની ઠ નરકનૂમિ પૃથ્વીમય જાણવી. તિહાં બીજી નરકનૂમિયેં શર્કરા કાંકરા ઘણા છે, તેથી તેનું ગોત્ર, શર્કરપ્રજ્ઞા છે. ત્રીજી વાલુકપ્રજ્ઞાયેં વેલુ ઘણી છે, માટે તેનું વાલુકપ્રજ્ઞા ગોત્ર છે. ચોથો પંકપ્રજ્ઞાયેં કચરો ઘણો છે, તેથી તેનું ગોત્ર પંકપ્રજ્ઞા છે. પાંચમી

( ६६५ )

धूमप्रजायें धूम घणो ठे, माटे तेनुं गोत्र धूमप्रजा  
ठे. ठी तमःप्रजायें अंधकार घणो ठे तेथी तेनुं गो  
त्र तमःप्रजा पड्युं ठे. सातमी तमस्तमःप्रजायें अंध  
कारनुं बहुलपणुं ठे, माटे तेनुं गोत्र तमस्तमः प्रजा  
ठे. ए साते नमकजूमिनां गुणनिष्पन्न गोत्र कह्यां.

॥ अथ पुरुषना शोच शणगार ॥

॥ द्यौरं मङ्गनवस्त्रनालतिलकं, गात्रे सुगंधार्चनं,  
कर्णे कुंमलमुद्रिके च मुकुटं, पादौ च पादूयुतौ ॥  
हस्ते खड्गपटांबराणि बुरिका विद्याविनीतं मुखं, तां  
बूलं शुचि शीलकं च गुणिनां शृंगारकाः षोडश ॥

॥ अथ स्त्रीना शोच शणगार ॥

॥ आदौ मङ्गनचारुचीरतिलकं नेत्रांजनं कुंमले,  
नासामौक्तिकपुष्पहारनरणं ऊंकारकौ नूपुरौ ॥ अं  
गे चंदनलेपकं कुचमणिकुडावली घंटिका, तांबू  
लं करकंकणं चतुरता शृंगारकाः षोडश ॥१॥ इति॥

॥ सवैयो ॥ योगी सिद्ध कलंदर तापस, होत दि  
गंबर मार कसोटी ॥ पीर मुरिद मुसाफर मीरा, सेख  
वसे वनमांहि तंगोटी ॥ जे जपियां जप जाप जपे  
हैं, जांहिंकी कीरति देश महोटी ॥ सेवक हे स्वामि  
दास निरंजन, रोटि बिना सब बात हे खोटी ॥ १ ॥

योगि धरे योग ध्यान, पंमीत पढे पुराण, ज्ञानी  
कहियानपें, उदास जेख लीया हे ॥ केते शाह पात  
शाह, केते शाहजादे केते, वासुदेव चक्री पुनि करण दा

न दीया हे ॥ कवि कहे गंगदास, गंगाके निकट बी  
च, एक सेर अनाजने जगत जेर कीया हे ॥ १ ॥

॥ प्रास्ताविक संग्रह ॥

ज्ञानवंतने केवली, इव्यादिक अहिनाण ॥

वृहत्कल्पनी जाण्णमां, सरखा जाण्ण जाण ॥ १ ॥

क्रिया मात्र कृतकर्मक्षय, दडुरचुन्न समान ॥

ग्यान कह्युं उपदेश पद, तास ठार सम जान ॥ १ ॥

खजुआसम किरिया कही, ज्ञान जानसम जोर ॥

कलियुग एह पटंतरो, बूज विरला कोय ॥ ३ ॥

हुं.तुज पूहुं हे लढी, कृपण घरे कां जाय ॥

सूरा दाता चतुर नर, ते तुज कां न सुहाय ॥ ४ ॥

सूरा घर रंभापणुं, दाता दे परहब ॥

चतुरां घर मुज सोकडी, तिणे कृपण तणे लियो सड ॥

॥ सवैयो ॥ धीरज तात क्षमा जननी, परमारथ

मित्त महारुचि मासी ॥ ज्ञान सुपुत्त सुता करुणा

मति, पुत्र वधू समता प्रतिजासी ॥ उद्यम दास वि

वेक सहोदर, बुद्धि कलत्र शुनोदय दासी ॥ जावकु

टुंब सदां जिन्हके ढिग, सो मुनिकुं कहियें गृहवासी ॥

दोहा ॥ जीवदया गुणवेलडी, रोपी कृषज्जिणंद ॥

श्रावक कुल मारग चढी, सींचो नरत नरिंद ॥ १ ॥

क्रोध मान माया करी, लोच लग्यो महिलार ॥

वीतराग वाणी विना, किम पामे नव पार ॥ २ ॥

॥ ठप्पो ॥ मधुमाखी महुआल, रातदिन जतने राखे ॥

सदा करे संजाल, चांच नरि कदिय न चाखे ॥ नम

तो आब्यो निह्न,अग्नि करी माख उमाडी ॥ सखलो  
लीयो सहेत, मीण कज मालो पाडी ॥ १ ॥ पस्तावो  
करती पठे, घणुं हाथ माखी घसे ॥ कवि गंग कहे हो  
गुणियणो, रूपण तेम माया कसे ॥ ३ ॥

अथ अष्ट महासिद्धि स्वाध्याय ॥

॥ श्रुतदेवीनो लही पसाय, श्रीसङ्गुरुना प्रणमी पा  
य ॥ लक्षण अष्ट महासिद्धि तणां, कहुं शास्त्रथी सो  
हामणां ॥ १ ॥ महिमा सिद्धिथी मेरुसमान, रूप  
करण सामर्थ्य वखाण ॥ त्रिचुवनने पूजित पण होय,  
विष्णु कुमार तणीपरें जोय ॥ २ ॥ वशिता सिद्धि  
जग वश करे. जो मनमांहे तेहवुं धरे ॥ वायु थकी  
पण लघुतर रूप, लघुता सिद्धिथी करे अनूप  
॥ ३ ॥ जूमिपरें जल ऊपर जाय, जलपरें जूमें रुब  
की खाय ॥ विविध विषय जोक्ता पण कह्यो, प्राका  
म्य सिद्धिनो गुण ए लह्यो ॥ ४ ॥ अंगुलि अग्र क  
री रविचंद, मेरु अग्र फरशे आनंद ॥ प्राप्ति सिद्धि प्र  
गटे जेहने, एहवी शक्ति होवे तेहने ॥ ५ ॥ सूक्ष्म अक्ष  
विचरे आकाश, अणिमा सिद्धि तणो सुविज्ञास ॥  
जिहां इच्छा तिहां विचरे सही, कामावसाधि सिद्धि  
बल लही ॥ ६ ॥ तीर्थकर इंद्रादिक तणी, रुद्धि वि  
कुर्वण शक्ति जणी ॥ सिद्धि ईशिता नामें बली, त्रण  
लोक प्रभुताशुं फली ॥ ७ ॥ अष्टप्रकारें ए ऐश्वर्य,  
नामजेद जाखे मुनिवर्य ॥ योगसिद्धिनुं ए फल स  
हु, सिद्धि नाम पण जाखे बहु ॥ ८ ॥ लब्धितणे अ

धिकारें ग्रही, लब्धि नाम पण तेणें सही ॥ योग त  
 णां फल एम अनेक, योगीश्वर जाणे सुविवेक ॥९॥  
 योगवंत बहु लब्धिमहंत, श्रीगौतमगणधर उलसंत ॥ प्र  
 ह उठी तस ध्यावो रंग, जिम लहो लीलालढीसंग १ ०॥

॥ जुंवटुं नही रमवा आश्रयी उपदेश स्वाध्याय ॥  
 सुगुण सनेहा सांजल शीखडी, जाण विचारी जोय  
 रे रसिया ॥ चतुर विचक्षण धर्म कला तणी, रामत  
 रमीयो सोय रे रसीया ॥ १ ॥ मत कोइ रमजो रे सा  
 जन जूवटे, रमतां लागे रे पाप रे रसीया ॥ धर्म क  
 रमनां हो कारज वीसरे, खोजे माय ने बाप रे रसीया  
 ॥ म० ॥ १ ॥ व्यसनी रात दिवस रामत रमे, नवि लीये  
 प्रभुनुं नाम रे रसीया ॥ उंध बगाइ ने निझा नवि  
 करे, घरना विणसे हो काम रे रसीया ॥ म० ॥ ३ ॥  
 व्यसन विगूतो नजराय कुबेरंशुं, रमतापासा सार रें  
 रसीया ॥ धण कण कंचण राज गमावीशुं, होडे हारी  
 नार रे रसीया ॥ म० ॥ ४ ॥ पांढवे कौरवशुं क्रीडा  
 करी, जूवटे मीठी हार रे रसीया ॥ म० ॥ ५ ॥ वनवासें  
 रह्या वात अठे घणी, केहेतां न लाजे पार रे रसीया ॥  
 रंग रंगीला हो पासा सोगठां, सरस बनावे दाव रे  
 रसीया ॥ ठयल ठबीला खेले खांतशुं, होश धरी मन  
 मांय रे रसीया ॥ म० ॥ ६ ॥ ऊटकें पटकें कीडी  
 कुंथुआ, थाये एहनी घात रे रसीया ॥ मुख थकी मार  
 शबद वली उच्चरे, निगमे पुण्यनी वांत रे रसीया ॥  
 म० ॥ ७ ॥ जूतुं बोले हो रामत रमताशुं, कपटो



मेले हो तान रे रसीया ॥ चोरी शीखे निज पर घर  
 तणी, पर रमणीनुं हो ध्यान रे रसीया ॥ म० ॥ ७ ॥  
 पासे रमतां हो वली मानवी, होवे जूअरी हो तेह  
 रे रसीया ॥ सात व्यसन मांहे ए मुख्य ठे, धन्य जे  
 वरजे रे तेहरे रसीया ॥ म० ॥ ८ ॥ रमतां कलेश  
 करी उठे सही, राजा मागे दंभ रे रसीया ॥ आरंज  
 लागे हो वायुकायना, पापें जराये पिंभ रे रसीया ॥  
 म० ॥ ९ ॥ रामत मत मांमो घर आपणे, वदीयें न  
 कोशुं होड रे रसीया ॥ नजन करो तमे श्रीजगवंतनो, आ  
 णंद कहे करजोड रे रसीया ॥ म० ॥ १० ॥ इति ॥  
 ॥ अथ अजितजिनस्तवनं ॥ सुरती महीनानी देशी ॥

॥ सरसति सामणी विनवुं. मागुं अविरलवाण ॥ बी  
 जा जिनवर गायशुं, हरख घणो मन आण ॥ १ ॥  
 कोशल देश सोहामणो, नयरी अयोध्या रे ठाम ॥  
 राज करे तिहां राजवी, जितशत्रु एनुं नाम ॥ २ ॥  
 विजया रे राणी तेहनी, शीलवती अनिराम ॥ तेह  
 नी कूखें अवतखा, अजित जिनेसर स्वाम ॥ ३ ॥  
 साडा रे चारुं धनुष्यनी, कंचन वरणी काय ॥ बहों  
 तेर लाख पूरव कही, श्रीजिनवरनी आय ॥ ४ ॥ गज लं  
 ठन सोहामणुं, सेवे ठे नित पाय ॥ सुर नर मली  
 सेवा करे, आनंद अंग न माय ॥ ५ ॥ पुण्यसंयोगें हुं  
 पामियो, तुमने श्रीजिनराज ॥ पाप गयां सवे माह  
 रां, फलिया मनोरथ आज ॥ ६ ॥ दीन दयाल

दया करी, दीजें अविचल राज ॥ नित्य लाज कहे प्र  
भु माहरां, सारजो वंढित काज ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ रहनेमीनी सिखाय प्रारंभ ॥

॥ निंदा म करशो कोइनी पारकी रे ॥ ए देशी ॥  
॥ संजम लइ ध्यानं रह्या रे, ताणे रहनेमी गढ गिर  
नार रे ॥ चीर नीचोवतां महासती रे, देखी व्याकु  
ल थया मुनिराय रे ॥ १ ॥ रे रे रहनेमीने राजुल बू  
जवे रे ॥ अहो रे उत्तम अणगारने रे, चारित्रें लागे  
अतिचार रे ॥ रे रे० ॥ ए आंकणी ॥ हुं रे नारी  
नेमजी तणी रे, ताणे तुमें ठो देवर मुनिराज रे ॥ एरे  
वात जुगती नही रे, ताणे एवुं केम कीजें अकाज  
रे ॥ रे रे० ॥ २ ॥ एम सुणी रहनेमी बोलिया रे,  
ताणे तुं नारी हुं जरतार रे ॥ राज करीयें जुनागढ  
तणुं रे, ताणे सुख विलसो सहि सार रे ॥ रे रे० ॥ ३ ॥  
हां हां रे ए शुं मूरख बोलीया रे, ताणे जादव कुल ला  
गे लाज रे ॥ तुं रे बंधव हुं हुं बेनडी रे, ताणे जुगमां हां  
सी थाय रे ॥ रे रे० ॥ ४ ॥ नारीनो संग नवि कीजि  
यें रे, ताणे नारी ठे मोहनो पास रे ॥ नारीथको डु  
र्गति लहे रे, ताणे नीच पामो नरकावास रे ॥ रे रे० ॥  
॥ ५ ॥ रत्न चिंतामणि पामीने रे, ताणे ककर ग्रहे  
कोण हाथ रे ॥ गज ठोडी खर नवि चडे रे, ताणे पय  
मूकीने पिये कुण ठाठ रे ॥ रे रे० ॥ ६ ॥ विषयमां  
म राचो मुनिवरु रे, ताणे विष समं विषय विकार  
रे ॥ विष खावाथी मरीयें एकदा रे, ताणे विषय

अनंती वार रे ॥ रे रे० ॥ ७ ॥ अतिचारें आलोव  
तां रे, ताणे मनथकी मुनिराज रे ॥ निरतिचार  
पणे करी रे, मुनि ध्यान चड्या सजी साज रे ॥  
॥ रे रे० ॥ ८ ॥ रहनेमी हृदय विचारीने रे, में तो  
कीधो महा अपराध रे ॥ ए नारी बंधव तणी रे,  
ताणे धिक धिक ए हुं तो साध रे ॥ रे रे० ॥ ९ ॥  
एही वखत खमावतां रे, ताणे राजीमतीने तेणि वार  
रे ॥ नरकें पडतो मुजने राखीयो रे, तुं तो सर्व सतीमां  
शिरदार रे ॥ रे रे० ॥ १० ॥ इति ॥ (आमां ठेली गां  
थामां कर्त्तानुं नाम नथी तेथी अधूरी जणाय ठे.)

॥ सज्जन विषे दोहा ॥

॥ सज्जन हीरासैं अधिक, मूल न जाको होत ॥ क  
हुं परायो होत नहीं, दुःखमें होत उद्योत. ॥१॥ स  
ज्जनशुं अंतर नहीं, राखे कोई सुजान ॥ सज्जनसैं सुख  
होत है, यह निश्चे मन मान ॥२॥ सज्जन जगमें ब  
हु नहिं, बिरजो कहूं दिखात ॥ तिहि पिठान कीजें  
सुखद, जातें सब दुःख जात ॥३॥ सज्जन पर उपकार  
करि, लेत न कबु इह दाम ॥ देत सदा जो चाहियें,  
समयशुं आवत काम ॥४॥ सज्जन सम जगमें नहीं,  
अवर सुकोइ पुमान ॥ आप बहुत दुःख देखिकें, देत  
और सुख जान ॥५॥ सज्जन स्वभाव देखि के, आपहु  
ता सम होत ॥ सज्जनता सबतें अधिक, या सम और  
न कोउ ॥६॥ सज्जन नाम धरायकें, नटकत जगमें  
और ॥ पै लज्जन युत देखि के, संग कीजियें और ॥७॥

॥ अथ चोवीश तीर्थंकर, बार चक्रवर्ती, नव वासुदेव, नव प्रतिवासुदेव अने नव बल  
 नइ पद्म, ए त्रेशठ शिलाका पुरुष मांहेजा जे चक्रवर्ती अथवा वासुदेवादिक जे तीर्थ  
 करना वारामां थया, अथवा जे तीर्थकरने आंतरें थया, तेमनां नाम तथा शरी  
 रनी उंचाइनुं मान तथा तेना आयुष्यना प्रमाणनो यंत्र जूदा कोठा सहित नव्य  
 जनोने नामस्मरण राखवा माटे नीचें दाखल कखो हे.

| जिन १४        | चक्री १२ | केशव ए | प्रतिवासु० | तनुमान.  | आयुमान.    | बलदेव ० |
|---------------|----------|--------|------------|----------|------------|---------|
| १ कृष्ण १     | जरत १    | ०      | ०          | धनु० ५०० | पूर्वजद ५४ | ०       |
| २ अजित २      | सगर २    | ०      | ०          | ध० ४५०   | पूर्वजद ४२ | ०       |
| ३ संजव ३      | ०        | ०      | ०          | ध० ४००   | पूर्वजद ६० | ०       |
| ४ अजिनं ०४    | ०        | ०      | ०          | ध० ३५०   | पूर्वजद ५० | ०       |
| ५ सुमति ५     | ०        | ०      | ०          | ध० ३००   | पूर्वजद ४० | ०       |
| ६ पद्मप्रज ६  | ०        | ०      | ०          | ध० २५०   | पूर्वजद ३० | ०       |
| ७ सुपार्श्व ७ | ०        | ०      | ०          | ध० २००   | पूर्वजद २० | ०       |

| जिन                  | चक्री १२ | केशव ए       | प्रतिवसु०   | तनुमान. | आयुमान       | बलदेव.     |
|----------------------|----------|--------------|-------------|---------|--------------|------------|
| ० चंद्रप्रन ८        | ०        | ०            | ०           | ध० १५०  | पूर्वलक्ष १० | ०          |
| ए सुविधि ए           | ०        | ०            | ०           | ध० १००  | पूर्वलक्ष २  | ०          |
| १० शीतल १०           | ०        | ०            | ०           | ध० ९०   | पूर्वलक्ष १  | ०          |
| ११ श्रेयांस ११       | ०        | त्रिष्ट १    | अश्वग्रीव १ | ध० ८०   | वर्षलक्ष ८४  | अचल ८५     |
| १२ वासुपूज्य         | ०        | द्विष्ट २    | तारक २      | ध० ७०   | वर्षलक्ष ७२  | विजय ७३    |
| १३ विमल १३           | ०        | स्वयंभु ३    | मेरक ३      | ध० ६०   | वर्षलक्ष ६०  | सुनद्ध ६५  |
| १४ अनंत १४           | ०        | पुरुषोत्तम ४ | मधु. ४      | ध० ५०   | वर्षलक्ष ३०  | सुप्रन ५५  |
| १५ धर्म १५           | ०        | पुरुषसिंह ५  | निशुंज. ५   | ध० ४५   | वर्षलक्ष १०  | सुदर्शन १७ |
| १६ ०                 | मघवा ३   | ०            | ०           | ध० ४२॥  | वर्षलक्ष ५   | ०          |
| १७ ०                 | सनत ०    | ०            | ०           | ध० ४१॥  | वर्षलक्ष ३   | ०          |
| १८ शांति १६ शांति ०५ | ०        | ०            | ०           | ध० ४०   | वर्षलक्ष १   | ०          |
| १९ कुंशु १७ कुंशु ०६ | ०        | ०            | ०           | ध० ३५   | वर्षस ० ९५   | ०          |
| २० अर १८ अर ०७       | ०        | ०            | ०           | ध० ३०   | वर्षस ० ८४   | ०          |

| जिन | चक्री ११    | केशव ए     | प्रतिवसु ०  | तनुमान.     | आयु मान       | बलदेव.   |
|-----|-------------|------------|-------------|-------------|---------------|----------|
| ११  | ०           | ०          | पुरुषपुंम ० | बर्नेड. ६   | १९ वर्षस ० ६५ | आनंद ० १ |
| १२  | ०           | सुजूम ०    | ०           | ०           | १० वर्षस ० ६० | ०        |
| १३  | ०           | ०          | दत्त १      | प्रह्लाद. १ | १६ वर्षस ० ५६ | नंदन ६५  |
| १४  | मद्विजि १ ए | ०          | ०           | ०           | १५ वर्षस ० ५५ | ०        |
| १५  | मुनिसुव्रत. | महापद्म    | ०           | ०           | १० वर्षस ० ३० | ०        |
| १६  | ०           | ०          | लखमण ०      | रावण. ०     | १६ वर्षस ० ११ | पद्म १५  |
| १७  | नमि ११      | हरिण       | ०           | ०           | १५ वर्षस ० १० | ०        |
| १८  | ०           | जय ११      | ०           | ०           | ११ वर्षस ० ३० | ०        |
| १९  | नेमुनाथ १   | ०          | कृष्ण ए     | जरासंध.     | १० वर्षस ० १  | राम ११   |
| २०  | ०           | ब्रह्मदत्त | ०           | ०           | १ वर्षस ० १०० | ०        |
| २१  | पार्श्व १३  | ०          | ०           | ०           | ९ वर्ष १००    | ०        |
| २२  | महावीर      | ०          | ०           | ०           | १ वर्ष ११     | ०        |

॥ अथ श्रीआयंबिल तपनी उलिनो विधि ॥

॥ ए तप प्रथम आशोद्युदि सातमना दिवसथी मां  
मीने आशोद्युदि पूर्णिमा पर्यंत नव दिवस सुधी, तेम  
ज चैत्रद्युदि सातमथी मांमी पूर्णिमा पर्यंतना नव दि  
वस लगें नव नव आयंबिल करवां, एवी रीतें साडा  
चार वर्ष पर्यंतमां एक्याशी आयंबिल करे थके ए तप पू  
र्ण थाय ठे. हवे आयंबिल करवाना नव दिवस पर्यंत ब्र  
ह्मचर्य पालवुं. प्रतिदिन सांऊ, सवार मली बे वार पडि  
क्रमणां करवां, तथा एकेका दिवसें अनुक्रमें एकेका प  
दनी क्रिया करवी, तिहां जे पदना जेटला गुण होय,  
ते पदना तेटला साथीया काढवा, अने तेटलाज ते  
पदना ॐ ह्रीं पद सहित खमासमण देवां, तथा तेट  
लाज लोगस्सनो काउस्सग पण करवो, अने एकेक  
पदनां नामनी वीश वीश नोकरवाली गणवी, तथा  
ते ते पदना गुणनी स्तुति जावना पूर्वक जाववी जो  
श्यें, माटे ते नव पदनां नाम तथा गुण अने गण  
णुं गणवानी संख्या लखीयें तैयें.

| नव पदनां नाम.             | गुणनी संख्या. | गणणुं गणवुं. |
|---------------------------|---------------|--------------|
| ॐ ह्रीं नमो अरिहंताणं.    | १२            | १२००         |
| ॐ ह्रीं नमो सिद्धाणं.     | ८             | ८००          |
| ॐ ह्रीं नमो आयरियाणं.     | ३६            | ३६००         |
| ॐ ह्रीं नमो उवखायाणं.     | २५            | २५००         |
| ॐ ह्रीं नमो लोए सबसाहूणं. | २७            | २७००         |
| ॐ ह्रीं नमो नाणस्स.       | ५१            | ५००          |

|                         |    |      |
|-------------------------|----|------|
| ॐ ह्रीं नमो दंसणस्स.    | ६७ | १००० |
| ॐ ह्रीं नमो चारित्तस्स. | १७ | ५००  |
| ॐ ह्रीं नमो तवस्स.      | १२ | २००  |

॥ हवे नव पदनां खमासमण देवानो पाठ कहे ठे ॥

१ इहामि खमासमणो वंदीउं जावणिक्काए निसी  
हिआए मञ्जएण वंदामि ॥ ॐ ह्रीं नमो अरिहं  
ताणं, ए प्रथम पदे श्रीअरिहंतजी बार गुणें शोजित  
मध्यजागें बिराजमान, उज्ज्वल वर्ण सहित एवा  
श्रीअरिहंत जगवंतने महारी त्रिकाल वंदना होजो

२ इहामि० ॥ ॐ ह्रीं नमो सिद्धाणं, ए बीजे पदे  
श्रीसिद्धपरमात्मा आठ गुणें शोजित, पूर्वदिशें बि  
राजमान, रक्तवर्ण सहित, एवा श्रीसिद्ध जगवंत  
ने महारी त्रिकाल वंदना होजो.

३ इहामि० ॥ ॐ ह्रीं नमो आयरियाणं ए त्रीजे प  
दे श्रीआचार्यजी ठत्रीश गुणें शोजित, दक्षिणदिशें  
बिराजमान, पीतवर्ण सहित, एवा श्रीआचार्य ज  
गवाने महारी त्रिकाल वंदना होजो.

४ इहामि० ॥ ॐ ह्रीं नमो उवखायाणं ए चोथे प  
दे श्री उपाध्यायजी पच्चीश गुणें शोजित, पश्चिम  
दिशें बिराजमान, नीलवर्ण सहित एवा श्री उपा  
ध्यायजीने महारी त्रिकाल वंदना होजो.

५ इहामि० ॥ ॐ ह्रीं नमो लोए सबसाहूणं ए पां  
चमे पदे श्रीसाधुजी सत्तावीश गुणें शोजित, उत्त



रदिशें बिराजमान, कृष्ण वर्ण सहित. एवा सर्व साधुने महारी त्रिकाल वंदना होजो.

६ इहामि० ॥ ॐ ह्रीं नमो नाणस्स ए ठठे पदे श्री म्यक्कज्ञान एकावन चेदे शोजित, अग्निखूणे बिराजमान, श्वेत वर्ण सहित, एवा श्री ज्ञान पदने महारी त्रिकाल वंदना होजो.

७ इहामि० ॥ ॐ ह्रीं नमो दंसणस्स, ए सातमे पदे श्रीसम्यक् दर्शन सडशठ बोले शोजित, नैऋतखूणे बिराजमान, श्वेतवर्णसहित, एवा श्री दर्शन पदने महारी त्रिकाल वंदना होजो.

८ इहामि० ॐ ह्रीं नमो चारित्तस्स, ए आठमे पदे श्रीचारित्र सत्तर चेदे, शोजित, वायव्यखूणे बिराजमान, श्वेतवर्णसहित एवा श्री चारित्र पदने महारी त्रिकाल वंदना होजो.

९ इहामि० ॥ ॐ ह्रीं नमो तवस्स, ए नवमे पदे श्रीतप बारचेदे शोजित, ईशानखूणे बिराजमान, श्वेत वर्ण सहित, एवा श्रीतपपदने महारी त्रिकाल वंदना होजो. ए रीतें नव दिवस पर्यंत विधि करवो, ते अहींअं संक्षेपें कह्यो. विस्तारें गुर्वादि कथी जाणवो ॥ इति उलिनो संक्षेपविधि समाप्त ॥

हवे विशेषथी नवपद उलि करण आयंबिल तपनो विधि कहे ठे. आश्विन तथा चैत्र शुक्ल सप्तमीथी मां मीने पूर्णिमा पर्यंत नव दिवस लगण तप करें. तिहां

प्रथम तो नृत्ति शुद्ध करिने मांमणदिकथी चित्रित  
करे, पढी बाजोठ उपर श्रीसिद्धचक्रजीनी स्थापना  
करे, तिहां प्रजातसमयें रात्रि पडिक्कमणुं करी वस्त्र  
गडिलेही सिद्धचक्रजीनी स्थापना पासें आवी पांच  
शक्रस्तवें देव वांदे, पढी नव देरासरें अथवा नव प्रति  
माजी आगल नव चैत्यवंदन करे, वासद्धेय पूजा करे,  
केसरचंदनथी पूजा करे, पढी मध्यान्ह समयें पांच  
शक्रस्तवें देव वांदे, पढी एरुनी पासें आवी अष्टाष्टि  
मि खमावीने आयंबिलनं पञ्चस्काण करे, तिहां प्रथम  
दिवसें अरिहंत पदनो वी सपेत ठे, माटे आयंबिलमां  
चोखा अने गरम पाणी ए ते इव्य लेखुं, एम पञ्च  
स्कीने श्रीअरिहंत पदना बार गुणो ठे. ते मांहेज  
प्रत्येक गुणने चिंतवतो यको एकेक गुणें इहामि  
खमासमणो वंदितं० इत्यादि कहेतो बार गुणना बार  
नमस्कार करे, ते आ प्रमाणें:-

१ श्रीअशोकवृक्षप्रातिहार्यसंयुताय श्रीअरिहंताय नमः

२ सुरपुष्पवृष्टिप्रातिहार्यसंयुताय श्रीअरि० ॥

३ दिव्यध्वनिप्रातिहार्यसंयुताय श्रीअरि० ॥

४ चामरयुगलप्रातिहार्यसंयुताय श्रीअरि० ॥

५ स्वर्णसिंहासनप्रातिहार्य संयुताय श्रीअरि० ॥

६ नामंमलप्रातिहार्यसंयुताय श्रीअरि० ॥

७ डंडनिप्रातिहार्यसंयुताय श्रीअरि० ॥

८ वत्रत्रयप्रातिहार्यसंयुताय श्रीअरि० ॥

एकानातिशयप्रातिहार्यसंयुताय श्रीअरिहंताय नमः

१० पूजातिशयसंयुताय श्रीअरिहंताय नमः ॥

११ वचनातिशयसंयुताय श्रीअरिहंताय नमः ॥

१२ अपायापगमातिशय संयुताय श्रीअरि० ॥

इति द्वादश अरिहंतगुणाः ॥ नमस्कार ॥ ए बार गुणोने नमस्कार करीने अन्नढ उससिएणं कहीने बार लोगस्सनो काउस्सग्ग करे, पढी एकलोगस्स प्रगट कहे, पढी स्वस्थानकें जइ चैत्यवंदन करी पच्चस्काण पारीने आयंबिल करे, पहेलुं जेवारें पाणी पिये, तेवारें चैत्यवंदन करीने पीये, पढी फरी चैत्यवंदन करीने तिविहार पच्चस्काण करे, अने एमो अरिहंताणं ए पदनुं गुणणुं १००० गुणे. तथा नवपद महात्म्य आश्रयी श्रीश्रीपालराजार्जानुं चरित्र सांजले, अने जेवारें तें संपूर्ण एक प्रहर दिवस रहे, तेवारें त्रीजी वखत पांच शक्रस्तवें देव वांदे, पढी सामायिक लइने दिवस ठते पडिक्कमणुं करे, आरतिने समयें धूप दीप कुसुम पूजा करे, अथवा प्रथमथीज आरति अने पूजा प्रमुख करीने पढी पडिक्कमणुं करे, तेवार पढी सूवानी वखतें वली इरियावहि पडिक्कमी चैत्यवंदन करी राइ संथारानी गाथाउ गुणीने सूवे, अने जिहां सुधी निझा न आवे तिहां सुधी नवपदना गुण स्मरण करे॥इति॥

अथ द्वितीय दिवस विधि प्रारंजः ॥

॥ पहेला दिवसमां कहेली रीति प्रमाणें बीजा दिवसें पण प्रजातनी सर्व करणी करीने, श्रीसिद्धपदनो

लाल वर्ण ठे, माटे गहुंनी रोटलीनुं आयंबिल करे, अने  
“ॐ ह्रीं” एमो सिद्धाणं ए पदनुं गुणं बे हजार गुणे,  
तथा श्रीसिद्धपदना आठ गुण ठे. तेने चिंतवतो आठ  
नमस्कार करे, ते आ प्रमाणें:-

- १ श्रीअनंतज्ञानसंयुताय श्री सिद्धाय नमः॥
- २ श्रीअनंतदर्शनसंयुताय श्रीसिद्धाय नमः ॥
- ३ श्रीअव्याबाधगुणसंयुताय श्रीसिद्धाय नमः ॥
- ४ श्रीअनंतसम्यक्त्वचारित्रगुणसंयुताय श्रीसिद्धाय नमः॥
- ५ श्रीअक्षयस्थितिगुणसंयुताय श्रीसिद्धाय नमः ॥
- ६ श्रीअरूपिनिरंजनगुणसंयुताय श्रीसिद्धाय नमः॥
- ७ श्रीअगुरुलघुगुणसंयुताय श्रीसिद्धाय नमः ॥
- ८ श्रीअनंतवीर्यगुण संयुताय श्रीसिद्धाय नमः ॥

इति सिद्धस्याष्टौ गुणाः ॥ ए आठ नमस्कार करी,  
अन्नब्रह्मससिएणंनो पाठ कही आठ लोगस्सनो काठ  
स्सग करी एक लोगस्स प्रगट कही पारीने पढी प्र  
थम दिवसना विधिमां कह्या मुजबनी करणी सर्व अ  
नुक्रमथी करे ॥ इति द्वितीय दिवसविधिः ॥

॥ अथ तृतीय दिवस विधि प्रारंभः ॥

॥ पूर्वोक्त विधि पूर्वक प्रजातनुं कर्तव्य करी श्रीआ  
चार्यपद पीले वर्ण ठे, माटे चणानी दाजनुं आयंबि  
ल करे. “ ॐ ह्रीं एमो आयरियाणं ” ए पदनुं गुण  
ं बे हजार गुणे, अने आचार्य पदनी ठत्रीश गुण  
याद करीने ठत्रीश नमस्कार करे, ते आ प्रमाणें.

- १ प्रतिरूपगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
- २ सूर्यवत्तेजस्विगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
- ३ युगप्रधानागमसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
- ४ मधुरवाक्यगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
- ५ गांजीर्यगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
- ६ धैर्यगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
- ७ उपदेशगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
- ८ अपरिश्राविगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
- ९ सौम्यप्रकृतिगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
- १० शीलगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
- ११ अविग्रहगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
- १२ अविकथकगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
- १३ अचपलगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
- १४ प्रशांतवदनगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
- १५ कृमागुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
- १६ रुजुगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
- १७ मृडुगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
- १८ सर्वसंगमुक्तिगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
- १९ द्वादशविधतपोगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
- २० सप्तदशविधसंयमगुणसंयुताय श्रीआचार्याय ०
- २१ सत्यव्रतगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
- २२ शौचगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
- २३ अकिंचनगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
- २४ ब्रह्मचर्यगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥

- ૨૫ અનિત્યજાવનાજાવકાય શ્રીઆચાર્યાય નમઃ ॥  
 ૨૬ અશરણજાવનાજાવકાય શ્રીઆચાર્યાય નમઃ ॥  
 ૨૭ સંસારસ્વરૂપજાવનાજાવકાય શ્રીઆચાર્યાય ०  
 ૨૮ એકત્વસ્વરૂપજાવનાજાવકાય શ્રીઆચાર્યાય ०  
 ૨૯ અન્યત્વજાવનાજાવકાય શ્રીઆચાર્યાય નમઃ ॥  
 ૩૦ અશુચિજાવનાજાવકાય શ્રીઆચાર્યાય નમઃ ॥  
 ૩૧ આશ્રવજાવનાજાવકાય શ્રીઆચાર્યાય નમઃ ॥  
 ૩૨ સંવરજાવનાજાવકાય શ્રીઆચાર્યાય નમઃ ॥  
 ૩૩ નિર્ઝરાજાવનાજાવકાય શ્રીઆચાર્યાય નમઃ ॥  
 ૩૪ લોકસ્વરૂપજાવનાજાવકાય શ્રીઆચાર્યાય ० ॥  
 ૩૫ બોધિદુર્લભજાવનાજાવકાય શ્રીઆચાર્યાય ० ॥  
 ૩૬ ધર્મદુર્લભજાવનાજાવકાય શ્રીઆચાર્યાય નમઃ  
 ઇતિ પદત્રિંશદાચાર્યગુણાઃ ॥ એ ટ્રીશ નમસ્કાર ક  
 રી અન્નઢ ઉસસિણ્ણનો પાઠ કહી ટ્રીશ લોગસ્સનો  
 કાઠસ્સગ્ગ કરી એક લોગસ્સ પ્રગટ કહી પારીને બી  
 જી પણ પૂર્વોક્ત કરણી સર્વ અનુક્રમથી કરે ॥ ઇતિ ॥

• ॥ અથ ચતુર્થદિવસવિધિપ્રારંભઃ ॥

॥ ઇહાં પણ પ્રજાત સંબંધિ કર્તવ્ય કરી “ૐ હ્રીં એમો  
 ઉવઘાયાણં” એ પદનું બે હજાર ગુણાં ગુણે શ્રીઉપા  
 ધ્યાયજીનો હરિતવર્ણ તે માટે હરિતવર્ણ મગની દા  
 લ પ્રમુખનું આયંબિલ કરે, અને ઉપાધ્યાયજીના પ  
 ચ્ચીશ ગુણ યાદ કરીને પચ્ચીશ નમસ્કાર કરે, તે લ  
 સ્વીયે થાયે.

- १ आचारांगसूत्रपठनगुणयुक्तायश्रीउपाध्यायायनमः  
 २ सूयगडांगसूत्रपठनगुण ० ३ ठाणांगसूत्रपठनगु ०  
 ४ समवायांगसूत्रपठन ० ५ जगवतीसूत्रपठनगुण ०  
 ६ ज्ञातासूत्रपठनगुण ० ७ उपासकदशासूत्रपठन ०  
 ८ अंतगडदशासूत्रपठन ० ९ अणुत्तरोववाइसूत्रप ०  
 १० प्रभव्याकरणसूत्रप ० ११ विपाकसूत्रपठनगुण ०  
 १२ उत्पादपूर्वपठनगुण ० १३ अग्रायणीपूर्वप ०  
 १४ वीर्यप्रवादपूर्वप ० १५ अस्तिप्रवादपूर्वप ०  
 १६ ज्ञानप्रवादपूर्वपठ ० १७ सत्यप्रवादपूर्वप ०  
 १८ आत्मप्रवादपूर्वप ० १९ कर्मप्रवादपूर्वप ०  
 २० प्रत्याख्यानप्रवादपू ० २१ विद्याप्रवादपूर्वप ०  
 २२ अविध्यप्रवादपूर्व ० २३ प्राणायामप्रवादपूर्व ०  
 २४ क्रियाविशालपूर्वप ० २५ लोकविंडुसारपूर्व ०

इति पंचविंशति उपाध्याय गुणाः ॥ एम पच्चीश नम  
 स्कार करी उजा थइ अन्नञ्जउससिएणंनो पाठ कही  
 पच्चीश लोगस्सनो काउस्सग्ग करी एक लोगस्स प्रग  
 ट कही पारीने पूर्वोक्त करणी अनुक्रमथी करे ॥इति॥

॥ अथ पंचमदिवसविधि प्रारंजः ॥

॥ पूर्वली रीतें प्रजातविधि करी “उँ” ह्रीं एमो लो  
 ए सवसाहूणं ” ए पदनुं बे हजार गुणणुं गुणो. सा  
 धुपद काले वणैं ठे, माटे अडदनुं आर्यबिल करे,  
 अने सर्व साधुपंदना सत्तावीश गुण चिंतवतो सत्ता  
 वीश नमस्कार करे, ते आ प्रमाणें:—

- १ प्राणातिपातविग्मपात्रतयुक्ताय श्रीसाधवे नमः ॥  
 २ मृषावादविरमणव्रत ० ३ अदत्तादानविरमणव्रत ०  
 ४ मैथुनविरमणव्रत ० ५ परिग्रहविरमणव्रत ०  
 ६ रात्रिजोजनविग्मपात्रत ० ७ पृथ्वीकायरक्षकाय ०  
 ८ अप्पकायरक्षकाय ० ९ तेजकायरक्षकाय ०  
 १० वायुकायरक्षकाय ० ११ वनस्पतिकायरक्षकाय ०  
 १२ त्रसकायरक्षकाय ० १३ ऐकेंडियजीवरक्षकाय ०  
 १४ वैडियजीवरक्षकाय ० १५ त्रेंडियजीवरक्षकाय ०  
 १६ चौरिंडियजीवरक्षकाय ० १७ पंचिंडियजीवरक्षकाय ०  
 १८ लोचननिग्रहकायश्रीसा ० १९ एहमागुणयुक्तायश्री ०  
 २० शुभनावनानावकाय ० २१ प्रतिलेखनादिक्रियाशुभ  
 २२ संयमयोग्ययुक्ताय ० २३ मनोगुप्तियुक्ताय ०  
 २४ वचनगुप्तियुक्ताय ० २५ कायगुप्तियुक्ताय श्रीसा ०  
 २६ शीतादि द्वाविंशति परिसह सहन तत्परायश्री ०  
 २७ मरणांतउपसर्ग सहन तत्परायश्रीसाधवे नमः

॥ इति सप्तविंशति साधु गुणाः॥ ए रीतें सत्तावीश  
 नमस्कार करी उन्नो थइ अन्नन्नउससिएणंनो पाठ  
 कही सत्तावीश लोगस्सनो काउस्सग करी एक लोग  
 स्स प्रगट कही पारे. पढी पूर्वोक्त करणी क्रमथी करे.  
 ए पांच परमेष्ठीना सर्व मली एकशो अष्टावीश गुण  
 थाय माटे नोकारवालीना पण १०० मणीया होय ठे॥

॥ अथ पष्ठदिवसविधिप्रारंभः ॥

॥ पूर्वली रीतें प्रजातसंबंधि विधि करीने “ॐ ह्रीं



एमो दंसणस्स ” ए पदनुं बे हजार गुणणुं गुणे,  
तथा दर्शनपद सपेत वर्ये ठे, माटे तांदूलनुं आयंबिल  
करे, अने सम्यक्त्वना सडशठ गुं चिंतवतो सडशठ  
नमस्कार करे ते कहे ठे.

- १ परमार्थ संस्तरूप श्रीसद्दर्शनाय नमः
- २ परमार्थज्ञानसेवनरूप श्रीस०
- ३ व्यापन्नदर्शनवर्जनरूप श्रीस०
- ४ कुदर्शन वर्जनरूप श्रीस० ५ शुश्रूषारूप श्रीस० .
- ६ धर्मरागरूप श्रीस० ७ त्रैयावृत्त्यरूप श्रीस०
- ८ अर्हद्विनयरूप स० ९ सिद्धविनयरूप स०
- १० चैत्यविनय रूप स० ११ श्रुतविनय रूप स०
- १२ धर्मविनय रूप स० १३ साधुवर्ग विनय रूप०
- १४ आचार्यविनयरूप० १५ उपाध्यायविनयरूप स०
- १६ प्रवचनविनयरूपस० १७ दर्शनविनय रूपस०
- १८ संसारे श्री जिनसार मिति चिंतनरूप स०
- १९ संसारे श्रीजिनमति सारमितिचिंतन०
- २० संसारे जिन मतिस्थित साध्वादिसार मितिचिंत०
- २१ शंकादूषणरहिताय० २२ कांक्षादूषणरहिताय० .
- २३ विचिकित्सारूपदूषणरहिताय सद्दर्शनायनमः ॥
- २४ कुदृष्टिप्रशंसादूषणरहितायसद्दर्शनायनमः ॥
- २५ तत्परिचय दूषण रहितायसद्दर्शनायनमः ॥
- २६ प्रवचनप्रज्ञावकरूपस० २७ धर्मकथाप्रज्ञावकरूप०
- २८ वादिप्रज्ञावकरूपस० २९ नैमित्तिकप्रज्ञावकरूप०

- ३० तपस्वि प्रजावक रूप स०  
 ३१ प्रज्ञप्त्यादि विद्यानृप प्रजावक रूप स०  
 ३२ चूर्णजनादि सिद्ध प्रजावक रूप स०  
 ३३ कविप्रजावक रूप सद्वर्जनायनमः ॥  
 ३४ जिनशासने कौशल्यनृपण रूप स०  
 ३५ प्रजावनानृषण रूप०  
 ३६ तीर्थसेवा नृषण रूप०  
 ३७ स्थैर्यनृषण रूप स०  
 ३८ जिनशासने नक्ति नृषण रूप स०  
 ३९ उपशम गुणरूप स०  
 ४० संवेग गुणरूप स० ४१ निर्वेद गुणरूप स०  
 ४२ अनुकंपा गुणरूप० ४३ आस्तिक्य गुण रूप०  
 ४४ परतीर्थिकादि वंदन वर्जनरूप स०  
 ४५ परतीर्थिकादि नमस्कार वर्जनरूप स०  
 ४६ परतीर्थिकादि आलाप वर्जनरूप सद्वर्जनाय०  
 ४७ परतीर्थिकादि संलाप वर्जनरूप स०  
 ४८ परतीर्थिकादि अशनादि दानवर्जनरूप स०  
 ४९ परतीर्थिकादि गंध पुष्पादि प्रेषण वर्जन रूप०  
 ५० राजानियोगाकार युक्त स०  
 ५१ गणानियोगाकार युक्त स०  
 ५२ बलानियोगाकारयुक्त० ५३ सुरानियोगाकारयुक्त०  
 ५४ कांतारवृत्त्याकारयुक्त० ५५ गुरुनिग्रहकारयुक्त०  
 ५६ सम्यक्त्वचारित्रं धर्मस्य मूलमिति चिंतनरूप० ॥  
 ५७ चारित्रं धर्मपुरस्य द्वारमिति चिंतनरूपस०

- ५८ चारित्रं धर्मस्य प्रतिष्ठानमिति चिंतन रूप०  
 ५९ चारित्रं धर्मस्याधार इति चिंतन रूपस०  
 ६० चारित्रं धर्मस्य नाजनमिति चिंतनरूप०  
 ६१ चारित्रं धर्मस्य निधिसन्निधिमिति चिंतनश्रीस०  
 ६२ अस्ति जीव इति श्रद्धानस्थानयुक्ताय श्रीस०  
 ६३ सच जीवो नित्य इति श्रद्धानस्थानयुक्तायस०  
 ६४ सच जीवः कर्माणि करोतीति श्रद्धानस्थानयुक्ताय  
 ६५ स च जीवः कृतकर्माणि वेदयतीति श्रद्धानस्था०  
 ६६ जीवस्यातिनिर्वाणमिति श्रद्धानस्थानयुक्तायस०  
 ६७ अस्ति पुनर्मोक्षोपाय इति श्रद्धानस्थानयुक्तायस०

इति सप्तषष्टिर्दर्शनस्य गुणाः ॥ ए रीतें सडशठ नम  
 स्कार करी उजो थइ अन्नठ उससिएणंनो पाठ कही  
 सडशठ लोगस्स अथवा शक्तिने अजावें सात लोगस्स  
 नो काउस्सग करी एकलोगस्स प्रगट कही पारीने  
 पढी पूर्वोक्त करणी करे ॥ इति पष्ठदिवस विधिः ॥

॥ अथ सप्तम दिवस विधि प्रारंभः ॥

॥ प्रजात संबंधि विधि करी “उँझी एमो नांणस्स”  
 ए पदनुं बे हजार गुणणुं गुणे, ज्ञानपद उज्ज्वल वण्णिंते.  
 माटे तंदूजनुं आयंबिल करे, पढी ज्ञानपदना एका  
 वन जेदचिंतवतो नमस्कार करे, ते लखीयें ठैयें.

१ स्पर्शनेन्द्रियव्यंजनावग्रहमतिज्ञानाय नमः ॥

२ रसनेन्द्रियव्यंजनावग्रह मतिज्ञानाय नमः ॥

३ घ्राणेन्द्रियव्यंजनावग्रह मतिज्ञानाय नमः ॥

- ४ श्रोत्रेन्द्रियव्यञ्जनावग्रह मतिज्ञानाय नमः ॥  
 ५ स्पर्शनेन्द्रियअर्थावग्रह मतिज्ञानाय नमः ॥  
 ६ रसनेन्द्रिय अर्थावग्रह मतिज्ञानायनमः ॥  
 ७ घ्राणेन्द्रिय अर्थावग्रह मतिज्ञानायनमः ॥  
 ८ चक्षुरिन्द्रिय अर्थावग्रह मतिज्ञानायथमः ॥  
 ९ श्रोत्रेन्द्रिय अर्थावग्रह मतिज्ञानायनमः ॥  
 १० मनोरथावग्रहमति० ११ स्पर्शनेन्द्रियईहामति०  
 १२ रसनेन्द्रिय ईहामति० १३ घ्राणेन्द्रियईहामति०  
 १४ चक्षुरिन्द्रिय ईहा मति० १५ श्रोत्रेन्द्रियईहामति०  
 १६ मनोरिन्द्रियईहामति० १७ स्पर्शनेन्द्रियअपायम०  
 १८ रसनेन्द्रियअपायमति० १९ घ्राणेन्द्रियअपायम०  
 २० चक्षुरिन्द्रियअपायमति० २१ श्रोत्रेन्द्रियअपायम०  
 २२ मनोरिन्द्रियअपायमति० २३ स्पर्शनेन्द्रियधारणा०  
 २४ रसनेन्द्रियधारणाम० २५ घ्राणेन्द्रियधारणाम०  
 २६ चक्षुरिन्द्रियधारणाम० २७ श्रोत्रेन्द्रियधारणा म०  
 २८ मनोधारणामति० २९ अक्षरश्रुतज्ञानायनमः  
 ३० अनक्षरश्रुतज्ञाना० ३१ संज्ञिश्रुतज्ञानायनम०  
 ३२ असंज्ञिश्रुतज्ञा० ३३ अम्यक् श्रुतज्ञाय०  
 ३४ मिथ्याश्रुतज्ञानायन० ३५ सादिश्रुतज्ञानायन०  
 ३६ अनादि श्रुतज्ञाना० ३७ सपर्यवसितश्रुतज्ञा०  
 ३८ अपर्यवसित श्रुतज्ञा० ३९ गमिक श्रुतज्ञाना०  
 ४० अगमिक श्रुतज्ञा० ४१ अंगप्रविष्ट श्रुतज्ञा०  
 ४२ अनंगप्रविष्टश्रुत० ४३ अनुगामिअवधिज्ञानायनमः  
 ४४ अननुगामि अवधि० ४५ वट्टमाण अवधि०

४६ हीयमान अवधिज्ञा० ४७प्रतिपाति अवधिज्ञा०  
४८ अप्रतिपाति अव० ४९ कृजुमति मनःपर्यव झा०  
५० विपुलमति मनःपर्यवज्ञानाय नमः ॥  
५१ लोकालोकप्रकाशक श्रीकेवलज्ञानाय नमः ॥

॥ इति एकपंचाशत् ज्ञानजेदाः ॥ ए रीते एकावन न  
मस्कार करी कजा थइ अन्नत्त उससिएणंनो पाठ  
कही एकावन लोगस्सनो काउस्सग्ग करी प्रगट लो  
गस्स कही पारीने पढी सर्व पूर्वोक्त करणी करे. इति ॥

॥ अथ अष्टमदिवसविधिप्रारंभः ॥

॥ प्रथम प्रजात संबंधि विधि करीने “<sup>०</sup>उँझी एमो  
चारित्तस्स” ए पदनुं बे हजार गुणणं गुणे, अने चारित्र  
पद उज्ज्वलवर्णे ठे, माटे तंडुलनुं आयंबिल करे, तथा  
सित्तेर जेदना सित्तेर नमस्कार करे, ते कहे ठे.

- १ प्राणातिपात विरमण रूप चारित्राय नमः ॥
- २ मृषावादविरमणरूपचारित्राय नमः ॥
- ३ अदत्तादानविरमणरूपचारित्राय नमः ॥
- ४ मैथुनविरमणरूपचारित्राय नमः ॥
- ५ परिग्रहविरमणरूपचारित्राय नमः ॥
- ६ क्लृमाधर्मरूपचारित्राय नमः ॥
- ७ आर्यवधर्मरूपचारि० ८ मृडुताधर्मरूपचारि०
- ९ मुक्तिधर्मरूपचारि० १० तपोधर्मरूपचारि०
- ११ संयमधर्मरूपचारि० १२ सत्यधर्मरूपचारि०
- १३ शौचधर्मरूपचारि० १४ अकिंचनधर्मरूपचारि०

- १५ वंजधर्मरूपचारि० १६ पृथ्वीरक्षासंयमचारि०  
१७ उदगरक्षासंयमचारि० १८ तेजस्वरक्षासंयमचारि०  
१९ वातरक्षासंयमचारि० २० वनस्पतिरक्षासं०चा०  
२१ वैदियरक्षासं०चारि० २२ तैदियरक्षासं०चा०  
२३ चौरिंदियरक्षा सं०चा० २४ पंचैदियरक्षा सं०  
२५ अजीवरक्षासं०चा० २६ प्रेक्षासंयमचारित्रा०  
२७ उपेक्षासंयमचारित्रायनमः ॥  
२८ अतिरक्तवस्त्रजक्तादिपरउणत्यागरूपसंयमचा०  
२९ प्रमाज्जनरूप सं०चा० ३० मनःसंयम चारि०  
३१ वचनसंयम चारि० ३२ कायसंयम चारि०  
३३ आचार्यवैयावृत्यरूप संयमचारित्रायनमः ॥  
३४ उपाध्यायवैयावृत्यरूपसंयमचारित्रायनमः ॥  
३५ तपस्विवैयावृत्यरूपसंयमचारित्रायनमः ॥  
३६ लघुशिष्यादि वैया० ३७ गिलाणसाधुवैया०  
३८ साधुवैयावृत्यरूप० ३९ श्रमणोपासकवैया०  
४० श्रीसंघवैयावृत्यरूप० ४१ कुलवैयावृत्यरूप०  
४२ गणवैयावृत्यरूप चारित्रायनमः ॥  
४३ पशुपैमगादिरहितवसतिवसान् ब्रह्मगुप्तिचारि०  
४४ स्त्रीहास्यादिविकथावर्जन ब्रह्मगुप्तिचारित्राय०  
४५ स्त्रीआसन वर्जनब्रह्मगुप्ति चारित्राय नमः ॥  
४६ स्त्री अंगोपांगनिरीक्षण वर्जन ब्रह्मगुप्त चारि०  
४७ कुमयंतरसहित स्त्री हाव जाव श्रवण वर्जनब्र०  
४८ पूर्वस्त्रीसंजोगचिंतनवर्जन ब्रह्मगुप्तिचारित्रा०  
४९ अतिसरसआहारवर्जनब्रह्मगुप्तिचारित्राय नमः॥

( ६९१ )

५० अतिआहारकरणवर्जनब्रह्मगुप्तिचारित्राय नमः॥

५१ अंगविनूषावर्जनब्रह्मगुप्तिचारित्राय नमः ॥

५२ अणसणतपोरूपचा० ५३ ऊणोदरीतपोरूपचा०

५४ वित्तिसंखेवतपोरूप० ५५ रसत्यागतपोरूप०

५६ कायकिलेसतपोरूप० ५७ संलेषणातपो रूप०

५८ प्रायश्चित्ततपोरूप० ५९ विनयतपोरूपचा०

६० वेचावच्चतपोरूपचा० ६१ सञ्जायतपोरूपचा०

६२ ध्यानतपोरूप चा० ६३ उपसर्गतपोरूप चा०

६४ अनंतज्ञानसंयुक्तचा० ६५ अनंतदर्शनसंयुक्तचा०

६६ अनंतचारित्रसंयुक्तचारित्राय नमः ॥

६७ क्रोधनिग्रहकरणचा० ६८ माननिग्रहकरणचा०

६९ मायानिग्रहकरणचा० ७० लोभनिग्रहकरणचा०

॥ इति सप्ततिश्चारित्रचेदाः ॥ ए रीतें सित्तेर नमः ॥

स्कार करे;पढी उजो यइ अन्नढुउससिएणंनो पाठ कही  
सित्तेर लोगस्सनो काउस्सग्ग करी प्रगट लोगस्स कही,  
पारीने पूर्वोक्त करणी सर्व करे॥इत्यष्टम दिवस विधिः ॥

॥ अथ नवमदिवसविधिप्रारंजः ॥

॥ प्रथमप्रजात संबंधि विधि करी रह्या पढी “ॐ  
झूँ एमो तवस्स” ए पदनुं बे हजार गुणणुं गुणे,तथा  
तपपदनो उज्ज्वल वर्ण ठे, माटे तडुलनुं आयंबिल करे,  
अने तपना पञ्चास चेदना नमस्कार करे, ते लखें ठे.

१ यावत्कथकंतपसे नमः २ इत्वरतपोचेदतपसे नमः

३ बाह्यऊणोदरितपोचेदतपसे नमः ॥

( ६९२ )

- ४ अन्यंतर ऊणोदरि तपोनेद तपसे नमः ॥  
५ इव्यतपो वृत्तिसंक्षेप तपोनेद तपसे नमः ॥  
६ क्षेत्रतपोवृत्तिसंक्षेप तपोनेद तपसे नमः ॥  
७ कालतपोवृत्तिसंक्षेप तपोनेद तपसे नमः ॥  
८ नावतपोवृत्तिसंक्षेप तपोनेद तपसे नमः ॥  
९ कायक्लेश तपोनेद तपसे नमः ॥  
१० रसत्याग तपोनेद तपसे नमः ॥  
११ इन्द्रियकषाययोग विषयकसंलीनता तपसे नमः ॥  
१२ स्त्रीपशुपुंमकादिवर्जितस्थानअवस्थित संलीनता०  
१३ आलोचन प्रायश्चित्त तपसे नमः ॥  
१४ प्रतिक्रमण प्रायश्चित्त तपसे नमः ॥  
१५ मिश्रप्रायश्चित्ततपसेन० १६ विवेक प्रायश्चित्ततप०  
१७ उपसर्गप्रायश्चित्ततप० १८ तपःप्रायश्चित्ततप०  
१९ नेदप्रायश्चित्त तप० २० मूलप्रायश्चित्ततप०  
२१ अनवस्थितप्रायश्चित्ततप० २२ पारंचियप्रायश्चित्त०  
२३ ज्ञानविनयरूप तप० २४ दर्शनविनय रूप तप०  
२५ चारित्रविनयरूप० २६ गुर्वादिकमनोविनयरूपत०  
२७ वचनविनयरूपतपसे० २८ कायविनयरूपतपसे०  
२९ उपचारकविनयरूपत० ३० आचार्यवेयावच्चत०  
३१ उपाध्यायवेयावच्च त० ३२ साधुवेयावच्च त०  
३३ तपस्विवेयावच्चत० ३४ लघुशिष्यादिवेयावच्चत०  
३५ गिलाणसाधुवेया० ३६ श्रमणोपासकवेया०  
३७ संघवेयावच्च त० ३८ कुलवेयावच्च त०  
३९ गणवेयावच्च त० ४० वायणातपसे नमः ॥



( ६९३ )

४१ पृष्ठनातपसे नमः ४२ परावर्त्तनातपसे नमः ॥

४३ अनुप्रेक्षातपसे नमः ४४ धर्मकथातपसे नमः

४५ आर्त्तध्याननिवृत्त त० ४६ रौद्रध्याननिवृत्त त०

४७ धर्मध्यानचिंतन त० ४८ शुक्ल ध्यान चिंतन त०

४९ बाह्य उपसर्ग त० ५० अन्यंतर उपसर्ग त०

॥ इति पंचाशत् तपोनेदाः ॥

॥ ए रीतें पच्चास नमस्कार करे, पढी उजो थइने अन्नब्र उससिएणंनो पाठ कही पच्चास लोगस्सनो का. उससग करी एक लोगस्स प्रगट कही पढी प्रथम दिव समां लख्या मुजब सर्व विधि अनुक्रमें करे. ए विधि लखवामां पृष्ठ ६७८ मध्ये प्रथम दिवसें श्रीअरिहंत पदमां नवमो नमस्कार करतां ज्ञानातिशय संयुताय जोइयें तेने ठेकाणे नूलथी ज्ञानातिशयप्रतिहार्यसंयुता य एम ठपाइ गयेजुं ठे. तथा गुणणुं बे हजारने स्था नकें १ ० ० ० ठपाई गयुं ठे, ते सुधारी वांचवुं ॥

॥ हवे ए नवपदनुं तप ग्रहण करवा माटे गुरु पासें केवी रीतें जवुं, तेनो विधि कहे ठे.

॥ प्रथम शुज दिवस शुज घडी शुज मूहूर्त जोइने सुंदर वस्त्र आजूषण पहेरी ललाटें तिलक करी मान अने सरशव मस्तकें धारण करी हाथमां मौलि बांधी अकृत, सोपारी, श्रीफलादिक अने यथाशक्ति रोकड ना णुं लेइ नवकार गुणतो थको श्रीगुरुनी पासें जइ द्वादशावर्त्त वंदन करी ज्ञान पूजा करे, पढी घणोज प्र

मोदवंत थइ गुरुना मुखयकी उली तप ग्रहण करे. ए तपस्याग्रहणवखतपोशाजें गुरुपासेंजवानोविधिकह्यो.

॥ अथ श्रीवीशस्थानक तपनो विधि सामान्यथी  
लखीयें ठैयें ॥

॥तिहां प्रथम वैशाख,आषाढ,मार्गशीर्ष अने फागुण ए चार महिना मांहेला कोइ पण महिनामां शुन नि दोष मुहूर्त जोइ शुन दिवसें नंदीस्थापनापूर्वक सुविहित गुरुनी समीपें वीशस्थानक तप विधिपूर्वक उच्चरे.

एनी एक उली वे महीने अथवा ठ महिने पूर्ण करे, कदाचित् ठ महिनामां पूर्ण करी न शके तो ते उली गणतीमां न गणाय,फरीथी नवी करवी पडे.

हवे एक उली करतां एना वीश पद ठे,माटे कोइक तो वीश दिवसमां वीश पद प्रत्येक दिवसें जूदां जूदां गणो, अने कोइक तो वीशे दिवस सुधी एकज पद गणो, अने वली बीजा वीश दिवसमां बीजुं पद गणो, एवी रीतें वीश पदनी वीश उली करे.

तेमां पद आराधननादिवसें जो प्रबल शक्तिमान् होय तो अछम तप करीने आराधे, एवी वीश अछ में एक उली पूर्ण करे, तेनी चारशो अछमें वीशे उली पूर्ण थाय. एवी रीतें उत्कृष्टतप आराधे.

तेथी हीनशक्तिवालो होय तो ठछ ठछ तप करी ने आराधे, वली तेथी हीनशक्तिमान् होय तो चउ विहार उपवासेंकरी आराधे, तेथी हीनशक्तिमंत

होय तो तिविहार उपवासें करी आराधे, तेथी हीन शक्तिवालो होय तो आंबिले करी आराधे, तेथी हीनशक्तिवालो होय तो नीवीयें करी आराधे, तेथी हीनशक्तिवंत एकासणें करी आराधे.

तिहां शक्तिमान् प्राणी सर्व पदाराधनने दिवसें अहोरात्र एटले आठ पहोर पोसह करे, तेथी हीन शक्तिवालो दिवसनो चार पहोरनो पोसह करे. एवी रीतें बीजे पद पोसहथी आराधे, अने जो सर्व पदोने आराधवाना दिवसें पोसह करवानी शक्ति न होय तो पण एक आचार्य पदें, बीजा उपाध्याय पदें, त्रीजा शिविर पदें, चोथा साधु पदें, पांचमा चारित्र पदें ठा गौतम पदें, अने सातमा तीर्थपदें. ए सात थान कें तो पोतें पोतानी हीनता जावतो पोसह करीनेज आराधे, ते पण शक्ति न होय तो ते दिवसें देशावकाशिक करे, सावद्य व्यापारनो त्याग करे, ते पण न थऱ शके तो यथाशक्ति तप करी आराधे.

तथा मृतक जातकना सूतकमां जे उपवासादिक तप करे ते गणतीमां गणे नही; अने स्त्री पण ऋतुसमर्थें तप करे ते गणतीमां गणे नहीं. तथा तपस्याने दिवसें जो पोसहसहित करे, तो बहुज श्रेयस्कर जाणुं. तेम न बनी शके तो उजयटंक पडिक्कमणा करे.

त्रणे टंक देववंदन करे, एक पदना बे हजार जाप करे, ब्रह्मचर्य पाले, जूमिशयन करे, तपस्याना दि

वसें अत्यंत सावध आरंभ न करे, असत्य न बोले, आखो दिवस तपपदनुं गुणकीर्त्तन करतो रहे.

तथा तपना दिवसें पोसह करे, तो पारणाना दिवसें श्रीजिनजक्ति करीने पारणुं करे, अने जो तपना दिवसें पोसह न करे तो ते दिवसें श्रीजिनजक्ति करे, करावे जावना जावे तथा तपना दिवसें जे पदनुं आराधन करतो होय ते पदना जेटला गुणजेद होय ते संख्या प्रमाणें काउस्सग करे, अने तावन्मात्र तद्गुण स्मरणपूर्वक खमासमण देइ वंदना करे ते पदनो महिमा गुण याद करीने उदात्त स्वरें स्तवना करे, हर्षित थको रहे. एवा प्रकारना विधिथी वीज्ञे उली करवी, तथा वीज्ञे उलीमां एकेका पदना उत्सव. महोत्सव, प्रजावना, उजमणां वगेरे श्रीजिनशासननी उन्नतिना हेतुयें करवां जोश्यें, एण जो पदे पदे उजमणादि करवानी शक्ति न होय; तो एक उली तो विशेष उत्सव उजमणादिक सहित अवश्य करवी जोश्यें. ए सामान्यथी विधि कह्यो.

हवे इहां स्थानक पद आराधक सज्जनोने जाणवाने अर्थे प्रथम श्रीअरिहंत पद आद्यमां ठे, माटे तेने आराधवानो विशेष विधि लखी देखाडियें ठैयें.

जे दिवसें श्रीवीशस्थानक तप सामान्य प्रकारें उच्चरे, ते दिवसेंज प्रथम श्रीअरिहंत पद विधिपूर्वक उच्चरे, माटे ते दिवसें श्रीजिनेश्वरनी महोटी जक्ति करे.

इहां प्रथम पदे “ एमो अरिहंताणं ” ए पदनी

वीश नोकरवाली गुणी बे हजार गुणणुं गुणवुं, अने पूर्वोक्त विधि सर्व करवो, तथा श्रीअरिहंतना बार गुण ठे ते एकेका गुणने याद करी ते ते गुणना ना मोच्चारपूर्वक खमासमणा देइ बार नमस्कार करवा, ते आवी रीतें:-

- १ श्रीअशोकवृक्ष प्रातिहार्यशोनिताय श्रीमदर्हते ०
- २ जानुदघ्नपंचवर्ण पुष्पप्रकरप्रातिहार्यशोनिताय ०
- ३ अतिमधुरइव्यमाधुर्यतोपि मधुरतमदिव्यध्वनिप्रा ०
- ४ हेमरत्नदंढस्थितजडितअत्युज्ज्वलचामरयुगल वीजितव्यजनक्रिया युक्तसत्प्रातिहार्यशोनिताय ०
- ५ सुवर्णरत्नजडित सदासहचारिसिंहासनसत्प्राति ०
- ६ तरुणतरणितेजसोऽप्यतिनास्वरतरतेजोयुक्तनामं मलसत्प्रातिहार्यशोनिताय श्रीमदर्हते नमः ॥
- ७ डुंडुनिप्रनृत्यनेकआकाशस्थितवादितवाजित्रवाद नरूपसत्प्रातिहार्यशोनिताय श्रीमदर्हते नमः ॥
- ८ मुक्ताजालकुंवनकयुक्तवत्रयसत्प्रातिहार्यशो ०
- ९ स्वपरापायनिवारकातिशयधराय श्रीमदर्हते नमः
- १० पचत्रिंशजुणयुक्तायसुरासुरदेवेंडनरेंडाणां पूजाति शयधराय श्रीमदर्हते नमः ॥
- ११ सर्वनाषानुगामिसकलसंशयोद्भेदकवचनातिशयध राय श्रीमदर्हते नमः ॥
- १२ लोकालोकप्रकाशकेवलज्ञानरूपज्ञानातिशयैश्वर्य धराय श्रीमदर्हते नमः ॥

( ६९८ )

एवी रीतें बार खमासमण देइने वांदें. पढी अरि  
हंतनी स्तवना करे, ते कहे ठे.

जय, श्रीअरिहंत, अरुहंत, अर्हंत, देवाधिदेव, परमे  
श्वर, परमकरुणानिधान, महागोप, महामाहण, महा  
निर्यामक, महासब्बवाह, जगद्वैद्य, जिनेश्वर, तीर्थंकर,  
विश्वंजर, विश्वपति, विश्वोत्तम, त्रिकालवित्, सर्वज्ञ,  
सर्वदर्शी, देवाधिदेव, एरुपोत्तम, वीतराग, जगन्नाथ,  
जगद्वंधु, जगत्तारण, बुद्ध, जगवंत, विश्वानंदी, सहजा  
नंदी, शुद्धचेतनाधर्ममय, अक्षस्वजावमय, धर्मरत्नगत्ता  
कर, धर्मदेशक, जावधर्मदातार, परमात्मा, परमदर्शी  
परमगुरु, परमोपकारी, परमसंसारतारक, अशरणशरण  
तरणतारण, नवजयहरण. इत्यादि श्रीअरिहंतनां स  
हस्र नाम ठे, तेनो पाठ करे.

एम अगणितगुणगणालंकृत एवा श्रीमदर्हंत  
जीने प्रतिहृणें महारी वंदना हो; त्राण शरण गति  
मति स्थिति सर्व श्रीअरिहंतजी ठे. एहज श्रद्धा म  
हारी सफल हो, एवी रीतिथी स्तवना करे.

तथा तेज दिवसें बार गुण ठे माटे बार लोगस्स  
नो काउस्सग करे, रात्रि दिवस व्यवहारें ए श्रीअरि  
हंतनो श्वेतवर्ण ध्यावे, अरिहंतना गुण कीर्तनमां  
रहे, पारणाने दिवसें बहुइव्य निष्पन्न यथाशक्ति अ  
ष्टप्रकारी, सत्तरप्रकारी, एकवीशप्रकारी, अष्टोत्तरी प्र  
मुख पूजा नक्तिपूर्वक करे, नवा मुकुटकुंमलादि  
नूपण चढावे, रत्नतिलक चढावे, अंगजूहणां, चंडुआ

( ६९९ )

चढावे, समवसरण रचना करे, त्रिगडा उपर प्रभु  
जीने बिराजमान करे, मंत्रपवित्र धान्यें करी प्राकार  
समवसरण रचना करे, इंध्वजा चढावे, रूप्यमय  
अद्भुतमय अष्टमांगलिक चढावे, शुजवर्ण शुजगंधवालां  
पुष्पादिक चढावे, इव्यजंमारामां मूके, केवलज्ञाननो  
उत्सव करे, विविध प्रकारनां पक्वान्न ढोवे, जिनबिंब  
जरावे, चैत्य करावे, एवा धिधेयें करी ठ मासपर्यंत  
त श्रीअरिहंत पदने आराधे. इति प्रथम पदाराधना॥.

ए प्रथम पदनो विधि कह्यो. एबीज रीतें विधि  
प्रपाग्रंथ उपरथी अत्यंत विस्तारपूर्वक चौदमा पद सु  
धीनो विधि तो पूर्वे कोइ महापुरुषनो रचेलो ग्रंथ महा  
री पासें ठे, तेमां लखेलो ठे; अने पाठला ठ पदनो विधि  
कोइ गीतार्थना सहायथी लखी तैयार करत, पण  
तेटलो विधि आमां दाखल करवाथी आ पुस्तकना  
सुमारे १२५ पृष्ठ जराइ जात; तेथी ग्रंथ घणो म  
होटो थइ जाय; तेमज एटला विधि पूर्वक तपश्चर्या  
करनार श्रावक जाइउनी संख्या पण स्वल्प ठे, माटे  
थोडानेज खपमां आवे; एवा हेतुथी ते विधि आ.  
पुस्तकना पाठल ठापवामां आवनारा बीजा अथ  
वा त्रीजा जागमां दाखल करवानो विचार राखी  
ने हालमां बीजो पदनो संक्षेपविधि नीचें दाखल करे  
लो ठे. विस्तार विधिना इहक नव्यजीवोएं पद पद  
नो विधि गुरुमुखथी धारीने तप आराधन करवुं.

॥ अथ वीश स्थानकनुं गुणणुं तथा काउस्सग प्रमाण आदिक संक्षेप विधि प्रारंजः ॥

- १ 'एमो अरिहंताणं' ए पदनुं गुणणुं बेहजार गुणवुं. श्रीअरिहंतजीनी त्रिकाल अष्टप्रकारी, सत्तरप्रकारी, एकवीशप्रकारी, अष्टोत्तरी, स्नात्र प्रमुख पूजा यथाशक्ति करवी, नवीन प्रतिमा जराववी, चोवीश अंगलूहणां चोवीश वालाकूंची प्रमुख मूकवी, प्रतिमाजीनो नकरो करवो; तथा श्रीअरिहंतजीना बार गुण ठे, माटे बार लोगस्सनो काउस्सग करवो, अने बारगुण चिंतवी बार नमस्कार करवा.
- २ 'एमो सिद्धाणं' ए पदनुं गुणणुं बेहजार गुणवुं, श्रीसिद्धजगवाननुं ध्यान करवुं, त्रिकाल पूजा करवी, उजय काल पडिक्कमणुं करवुं, पुंमरीकादिक गौतमप्रमुखनी पूजा करवी; तथा श्रीसिद्धक्षेत्र तीर्थ निमित्तें डव्य खरचवुं, अने श्रीसिद्ध पन्नर प्रकार ना ठे, माटे पन्नर लोगस्सनो काउस्सग करवो; अथवा श्रीसिद्धना आठ गुण ठे, माटे आठ लोगस्सनो काउसग करवो. स्नात्रपूजा वासक्षेप पूजा करे.
- ३ 'एमो पवयणस्स' ए पदनुं गुणणुं बे हजार गुणवुं, सिद्धांत जक्ति करवी, पुस्तक लखाववां, वींटां गण पाठां प्रमुख ज्ञानोपकरण अछावीश उपवासें आपवा, ज्ञाननी जक्ति करवी, विद्यमान आगमनी बरासें करी जक्ति करवी, आगमोनां नाम लक्ष दर्शन करवां, अथवा जो पुस्तक होय तो पुस्तको



નાં દર્શન કરવાં, ગુરુને સિદ્ધાંત વહોરાવવા, સાત લોગસ્સનો કાઝસ્સગ્ગ કરવો, અને સિદ્ધાંતની પાંચ ગાથા નિત્ય ગુરુમુખે સાંજલવી.

૪ ‘ણમો આયરિયાણં’ એ પદનું બે હજાર ગુણણું ગુણવું, આચાર્યની જ્ઞાતિ વીસામણા કરવી; તથા વસ્ત્ર પાત્રાદિક આપવાં; અને આચાર્યનો વિનય કરવો, આપનાચાર્યની બરાસે પૂજા કરવી; તથા આપનાચાર્યને માટે ઉપકરણ મૂકવાં; અને આચાર્યજીના ઠત્રીશ ગુણ છે, માટે ઠત્રીશ લોગ સ્સનો કાઝસ્સગ્ગ કરવો.

૫ ‘ણમો ચેરાણં’ એ પદનું બે હજાર ગુણણું ગુણવું, ચિવિર ગિલાન તપોધનાદિક વહેરાની જ્ઞાતિ વીસામણ કરવી, અશન પાન સ્વાદિમ સ્વાદિમ ઔષધાદિક આણી આપવું; તથા દશ પ્રકારના ચિવિર છે, માટે દશ લોગસ્સનો કાઝસ્સગ્ગ કરવો. કોઈ પ્રતમાં પન્નર લોગસ્સનો કાઝસ્સગ્ગ કરવો કહ્યો છે.

૬ ‘ણમો ઉવઘાયાણં’ એ પદનું બે હજાર ગુણણું ગુણવું, બહુશ્રુત શ્રીઉપાધ્યાયજીની જ્ઞાતિ કરવી, ગુરુની આજ્ઞા રૂઢીરીતે માનવી, અંગપૂજા કરવી, અને એમના પચ્ચીશ ગુણ છે, માટે પચ્ચીશ લોગ સ્સનો કાઝસ્સગ્ગ કરવો.

૭ ‘ણમો લોએ. સવસાદ્દુણં’ એ પદનું ગુણણું બે હજાર ગુણવું. તપસ્વી સર્વ સાધુ સાધવીની અન્ન વસ્ત્રાદિકે વિશેષજ્ઞાતિ કરવી, વિસામણ કરવી, અ

तिथि संविज्ञाग करवो; तथा एमना सत्तावीश गुण ठे, माटे सत्तावीश लोगस्सनो काउस्सग करीयें.

७ ' एमो नाणस्स ' ए पदनुं बे हजार गुणणुं गुणवुं, ज्ञान जणवुं जणावुं, ज्ञाननी जक्ति विशेष करवी, वखाण सांजलवां, पाठादिक आगलनां पदोनुं आगधन करती वखतें लइ राखेलां होय ते तिहां न देवाणां होय तो आ पा आराधननी वखतें आपी देवां. ज्ञाननो विज्ञाग क हाडवो, तथा ज्ञानना मत्यादिक पांच जेद ठे, माटे पांच लोगस्सनो काउस्सग करवो.

८ ' एमो दंसणस्स ' ए पदनुं बे हजार गुणणुं गुणवुं, शंकादि दूषण टाली शुद्धमनें शुद्ध सन्न कित पालवुं, आरंज वडवो, कायायें करीने सचित्त वस्तु आजडवी नहं, अन्य तीर्थीना देव, गुरु अने धर्मना सन्मान सत्कार पूजा अनुमोदना करवानो त्याग करवो, यथाशक्ति मोदक देवा, तथा ए पदना सडशठ जेद ठे, माटे सडशठ लोगस्सनो काउस्सग करवो.

१० ' एमो विणय संपन्नाणं ' ए पदनुं बे हजार गुणणुं गुणवुं, आचार्य, उपाध्याय, साधु, तपस्वी, गिलाण प्रमुख वडेरांनो अन्युष्ठानादिकें विनय करवो, काउस्सग दश लोगस्सनो करवो.

११ ' एमो चारित्तस्स ' ए पदनुं बे हजार गुणणुं गुणवुं, उजयकाल पडिक्कमणुं करवुं, वारंवार

- सामायक विशेष पञ्चस्काण करवुं, चारित्रनां उप  
करण जे उधो, मुहपत्ति, दशी, पडघा प्रमुख ते य  
थाशक्तियें आपवां, काउस्सग ल लोगस्सनो करवो.
- १२ ' एमो बंनवयधारिणं , ए पदनुं गुणणुं बे हजार  
र गुणीयें तथा नववाड विगुह त्रिकरण शुद्धे  
करी ब्रह्मचर्य पालियें, सूधुं शील पालीयें, स्त्री  
साहामुं दृष्टें पण जोवुं नही, विकथा निडा  
लवी, ब्रह्मव्रत धारकने जमाडवा, तथा यथाश  
क्तियें वस्त्रादिकनी पहेरामणी करवी, काउस्सग  
नव लोगस्सनो करवो.
- १३ ' एमो किरियाणं ' ए पदनुं गुणणुं बे हजार  
गुणवुं, अहोरात्र खरो पोसह पालवो, निडा  
विकथा न करवी, पारणे गुरुने किरियाणुं देवुं,  
काउस्सग पच्चीश लोगस्सनो करवो.
- १४ ' एमो तवस्सीणं ' ए पदनुं गुणणुं बे हजार  
गुणवुं, विशेष तप करवुं, पारणें सचित्त वस्तु  
टालवी, तपस्वीनी नक्ति वीसामणा करवी; का  
उस्सग बार लोगस्सनो करवो.
- १५ ' एमो गोयमस्स ' ए पदनुं गुणणुं बे हजार  
गुणवुं, सात क्षेत्रें यथाशक्तियें डव्य खरचवुं, गु  
रुने पडगो वोहोराववो, श्रीगौतमस्वामीनी पूजा  
वासद्धेयथी करवी, प्रथम पारणे पडगो पूजीने  
खीर खांमनुं नोजन करवुं, यथाशक्तियें साहामि  
वात्सल, संघपूजा करवी, तथा अष्टावीश लब्धिठे,

माटे अठावीश लोगस्सनो काउस्सग करवो,  
अथवा चारित्रना गुण आश्रयी सत्तर लोगस्स  
नो काउस्सग करवो.

१६ ' एमो जिणानं ' ए पदनुं गुणणुं बे हजार गु  
णवुं, देव, गुरु, तथा पोसहना करनार वडा प्र  
मुखनुं वेयावच्च करवुं, सत्तरनेदी पूजा करवी,  
देव आगल साथीया दश करवा, जिनवर आ  
दिक दशना वेयावच्च आश्रयी दश नेद ठे, माटे  
दश लोगस्सनो काउस्सग करवो.

१७ ' एमो चरणस्स ' ए पदनुं गुणणुं बे हजार गु  
णवुं, इहां सर्व समाधिविशेष समताजाव जा  
वतां खरुं सामायिक करीयें, बीजाने करावीयें,  
काउस्सग लोगस्स अगीयारनो करवो.

१८ ' एमो नाणस्स ' ए पदनुं गुणणुं बे हजार गु  
णवुं, ए पद आराधन करतां नवा नवा ग्रंथ अव  
श्य जणवा. अपूर्व अपूर्व ज्ञान जणवुं, जो वधु  
न जणाय तो बे चार गाथाज जणवी. नव नवा  
तवनादिकनी रचना करवी, श्रुतज्ञाननुं आराध  
न करवुं, एमां काउस्सग पांच लोगस्सनो करवो.

१९ ' एमो सुयनाणस्स ' ए पदनुं बे हजार गुणणुं  
गुणवुं, ए पद आराधतां थकां साधु, साधवी,  
श्रावक, श्राविका, ए रीतें चतुर्विध श्रीसंघनी न  
क्ति करवी, यथाशक्तियें पुस्तकोनी पूजा करवी.  
पुस्तकना वीटांमणां १०, पाठां १०, चाबखी

२४ ठवणी आदिक देवां, काउस्सर्ग दश लो  
गस्सनो करवो, अने सूत्रना पीस्तालीश जेद आ  
श्रयी पीस्तालीश लोगस्सनो काउस्सर्ग जो थई  
शके तो उत्कृष्ट जांगे ते पण करवो.

२० ' एमो तिब्बस्स ' ए पदनुं गुणणुं बै हजार गुण  
वुं. श्रीजिनशासननी प्रजावना करवी, सिद्धांत  
ना व्याख्यानावसरें प्रजावना करवी, दिवसनो  
पोसह करवो, पुंमरीकगिरिकादिक पांच तीर्थ  
माटे पांच लोगस्सनो काउस्सर्ग करवो.

ए रीतें जो गुरुनो योग होय तो तेमना मुखयी  
समजण लइने विस्तार सहित वीश स्थानक पदनुं  
आराधन विधि पूर्वक करे, अने जो गुरुनो योग न  
होय तो महोटा विवेक सहित आ प्रमाणेंनी लखे  
ली सूचनाने अनुसारें विधि जोइने करे, वीश स्थान  
कना तवन जणे अथवा सांजले, वीश स्थानकनी  
पूजा करे, वीश वीश बधी जातिनां ज्ञानना पुस्तको  
तथा ज्ञानना उपकरणो करावे, जे देवपदसंबंधि हो  
य ते देवपदखाते खरचे, अने ज्ञानपदनुं होय ते  
ज्ञानखाते लगावे, तथा गुरुपदनुं गुरुखाते लगा  
वे. सर्व तीर्थोनी यात्रा यथाशक्ति करे, नही कां  
पण उलीयो पूर्ण थाय पढी ठ महिनामांहे तो तीर्थ  
यात्रा अवश्य करे, साहामीवात्सल्य करे. ए रीतें इव्य  
जावयुक्त शुद्ध जावयी जे जव्य जीव वीश स्थानक प  
दनुं सेवन करे, ते जीव श्रीजिननामकर्म उपार्जन

કરી ત્રીજે નવે અનંત સુખ જિહાં છે એહવું મોહરૂપ  
સ્થાનક પામે ॥ ઇતિ વીસસ્થાનક તપ વિધિઃ સમાપ્તઃ ॥

અથ નવ્યજીવોને આદરવા યોગ્ય બીજા પણ  
કેટલાએક તપના પ્રકાર લખીયેં છેયેં.

॥ જે અશુનકર્મોને તપાવે, તેને તપ કહિયેં. તે તપ  
અનેક પ્રકારેં છે, તેમાંથી કેટલાએક પ્રકારેં હાં લ  
ખીયેં છેયેં. સર્વ તપમાં મૂલ ઇંદ્રિયજયનામા તપ છે.  
કારણ કે, શ્રીવીતરાગનો ધર્મ પણ એવેજ નામેં છે,  
યદ્યપિ શ્રીજિનશાસનને વિષે જે જે પ્રકારનાં તપ છે,  
તે તે સર્વ ઇંદ્રિયના જયનાં કરનારાંજ છે, તથાપિ પૂ  
ર્વાચાર્યેં સર્વ તપમાં પ્રથમ ઇંદ્રિયજય એવે નામેં તપ ક  
હું છે, માટે તેનું સ્વરૂપ આદિમાં લખીયેં છેયેં.

૧ ઇંદ્રિયજયતપઃ— એ લોકપ્રસિદ્ધ છે. એમાં પહેલે  
દિવસેં પુરિમટ્ટ, બીજે દિવસેં એકાસણું, ત્રીજે દિવસેં  
નીવી, ચોથે દિવસેં આયંબિલ, અને પાંચમે દિવસેં ઝ  
પવાસ, એ પાંચ દિવસેં એક ઇંદ્રિયના જયને માટે  
એક ઝંલી થાય. એવીજ રીતેં પાંચે ઇંદ્રિયનું દમન કરવા  
માટે પાંચ ઝંલી કરવાથી એ તપ પચ્ચીશ દિવસેં પૂર્ણ  
થાય છે. ઝજમણે પચ્ચીશ લાડુ પુસ્તક આગલ મૂ  
કીયેં, યથાશક્તિયેં પુસ્તકને પહેરામણી કરીયેં.

એ રીતેં ઇંદ્રિયજય કહ્યા ઉપરાંત મનાદિક ત્ર  
ણ યોગના વ્યાપારની શુદ્ધિ એટલે નિરવદ્ય પણું ક  
રવું જોઈયેં, માટે બીજું યોગશુદ્ધિનામા તપ કહે છે.

१ योगशुद्धि तपः—पहेले दिवसें नीवी,बीजे दिवसें आयंबिल अने त्रीजे दिवसें उपवास,एवी त्रण उली ला गठ करियें,तेवारें नव दिवसें तप पूर्ण थाय, उजमणें देवपूजा तथा पुस्तकपूजा करवी. अष्टमांगलिक करवां.

हवे योगशुद्धि थयेथी ज्ञान, दर्शन अने चारित्रनी प्राप्ति थाय, तो जली जाणवी, माटे ज्ञानादिक त्रणनुं तप कहे ठे.तेमां ज्ञान मुख्य ठे माटे ते प्रथम कहियें ठे.

२ ज्ञान तपः—अष्टम तप करवुं,अने शक्ति न होय तो एकांतरे त्रण उपवासनी उली एक करवी. उज मणें सिद्धांतपुस्तकनी पूजा करवी, पुस्तकने वीट णा प्रमुखनी पहेरामणी करवी. ज्ञानवंत पुरुषनी वस्त्र पात्र अन्नपानादिकें नक्ति करवी. सूत्र सिद्धांत प्रकरण लखाववाने माटे डव्य खरचवुं.

४ दर्शन तपः—अष्टम तप करवुं, शक्तिने अनावें एकांतरे त्रण उपवासनी एक उली करवी, उजमणे जगवंतनी पूजा करवी. दर्शन प्रनावक संमत्यादिक महान् ग्रंथोनी पूजा करवी.

५ चारित्र तपः—अष्टम तप करवुं, शक्तिने अनावें एकांतरे त्रण उपवासनी एक उली करवी; उजमणें गुरुनी नवांगें पूजा करवी, चारित्र्यानी नक्ति करवी.

हवे ज्ञानादिक त्रणनो धणी क्रोधादिक चार कषायनो जय करे, तो जलुं, माटे कषायजयनामा तप करे, ते कहे ठे.

૬ કષાયજય તપઃ— પ્રથમ દિવસેં એકાસણું, બીજે દિવસેં નીવી, ત્રીજે દિવસેં આયંબિલ અને ચોથે દિવસેં ઉપવાસ, એવી એક ડંલીયેં એક કષાયનો જય કરતાં ચાર ડંલીયેં ચતુઃકષાયજયનામા તપ શોભ દિવસેં પૂર્ણ થાય. ડંડમણે દેવની આગલ શોભ લાડુ મૂકવા.

હવે જ્ઞાનાદિક ત્રણનો ધણી ચાર કષાયનો જય કરીને પઠી વિવિધ પ્રકારનાં તપ કરે, તે માંહેલું પ્રથમ કર્મસૂદનનામા તપ કહે છે.

૭ અષ્ટકર્મસૂદન તપઃ— પહેલે દિવસેં ઉપવાસ, બીજે દિવસેં એકાસણું, ત્રીજે દિવસેં એકલ સીથું, ચોથે દિવસેં એકલઠાણું, પાંચમે દિવસેં એકલદત્તિ, ષઠે દિવસેં નીવી, સાતમે દિવસેં આયંબિલ, આઠમે દિવસેં આઠ કવલ, એવી આઠ કર્મને સૂડવાને આઠ ડંલી કરીયેં તેવારેં ચોશઠ દિવસેં એ તપ પૂર્ણ થાય. એના ડંડમણામાં રૂપાનું વૃદ્ધ તથા સોનાનો કૂહાડો દેવની આગલ કર્મરૂપ તરુવર ઢેડવાને અર્થે ઢોડ્યેં, પુસ્તકપૂજા કરિયેં, યતિને દાન આપિયેં.

૮ લઘુસિંહનિઃક્રીડિતતપઃ— જેમ સિંહ ચાલ્યો જતો હોય તે વલી કાંશક દૂર જડને ફરી પાઠો આગલા પ્રદેશ તરફ મહોટું કરીને જૂએ છે, તેની પરેં સ્થાં પણ જે તપ પ્રથમ કરચું હોય, તેનું પારણું કરીને વલી પણ ફરી આગલા તપનું આસેવન કરે, માટે એને સિંહનિઃક્રીડિત તપ કહિયેં. અને એની આગલેં જે મહા સિંહનિઃક્રીડિત તપ કહેજો તેની અપેહાયેં એ ન્હાનું છે,



माटे ए लघुसिंहनिःक्रीडित कहियें, ते आ प्रमाणेः—  
 प्रथम एक उपवास करी पारणुं करे, वली बे उ  
 पवास करी पारणुं करे, एम सर्वत्र उपवासें आग  
 ल पारणुं समजी लेवुं. पढी एक उपवास, त्रण, बे,  
 चार, त्रण, पांच, चार, ठ, पांच, सात, ठ, आठ,  
 सात, नव, आठ, नव, सात, आठ, ठ, सात, पांच,  
 ठ, चार, पांच, त्रण, चार, बे, त्रण, एक, बे, एक, एवी  
 रीतें उपवासो करवाथी एकशो ने चोपन दिवस उप  
 वासना थाय, अने तेत्रीश पारणाना दिवसो थाय.  
 जुमले दिन १८९ ना ठ महीना अने सात दिवसें  
 एक परिपाटीयें एक श्रेणी थाय. एवी चार श्रेणी क  
 रीयें तेवारे बे वर्षने अठावीश दिवसें ए तप पूर्ण  
 थाय ठे. तिहां पारणाने दिवसें पहेली श्रेणियें वि  
 गयसहित सर्वकामगुणित रसोपेत जमे, बीजी श्रे  
 णियें नीवी जमे, त्रीजी श्रेणियें जे चोज खातां थ  
 कां हस्त पात्र प्रमुखनें लेप लागे नही, एवी अलेप  
 कारी चीज बाल चणकादिक जमे, अने चोथी श्रेणि  
 ना पारणाने दिवसें आर्यंबिल करे. इति लघुसिंह० ॥

ए महासिंहनिःक्रीडिततप कहे ठेः—एमां पण पू  
 र्वोक्त लघुसिंहनिःक्रीडित तपनी पेटें एक, बे, एक, त्रण,  
 बे, चार, त्रण, पांच, चार, ठ, पांच, सात, ठ, आठ,  
 सात, नव, आठ, दश, नव, अगीआर, दश, बार,  
 अगीआर, तेर, बार, चौद, तेर, पन्नर, चौद, शोल,  
 पन्नर अने शोल उपवास. एनेज वली पाठा विपरीत

करवा, एटले जेम चढता कख्या तेमज वली पूर्वली रीतें चौदथी पाठा वलतां पण करवा. एम करतां ठेहडे एक उपवास आवे. इहा एकथी चढतां अने चौदथी पाठा वलता एवी रीतें उपवास करतां एक परिपाटीयें बद्दा आंक चार चार वखत आवे ठे. मात्र शोलनो आंक वे वखत आवे, तथा पन्नरनो आंक त्रण वखत आवे ठे. बद्दा मली ४९७ दिवस उपवासना आय. तथा ६१ दिवस पारणाना आय. सर्व मली ५५८ दिवसें एक लता आय. एवी चार लताउ करतां ए तप ४ वर्षे बे मासने बार दिवसें पूर्ण आय.

१० मुक्तावलीनामा तप कहे ठे:—एक उपवास. करी पारणुं करीयें, पढी बे उपवास करी पारणुं करीयें, वली एक उपवास करी पारणुं करीयें, पढी त्रण उपवास करी पारणुं करीयें, पढी वली एक उपवास करीयें, पढी चार उपवास, पढी वली एक उपवास, पढी पांच उपवास, वली एक उपवास, एम चढतां चढतां एकेकने आंत रें यावत शोल उपवास सूधी करियें. पढी शोल उपवास नुं पारणुं करी पाठा फरीयें, ते आवी रीतें के, शोल उपवास करी पारणुं करीयें, वली एक उपवासने पारणुं करीयें, वली पन्नर उपवास, वली एक उपवास फरी चौद उपवास, फरी एक उपवास, फरी तेर उपवास, फरी एक उपवास, बार उपवास, वली एक उपवास, एवी रीतें पाठा आवतां ठेहडे एक उपवासने पारणुं करीयें, एम एक उपवासने आंतरे वध

तां शोल उपवास सुधी चढतां करीयें, तेवारें अर्ध मुक्तावली एटले अर्धमोतीनी माला थाय, अने पाठा फरतां पूर्ण मुक्तावली थाय. एमां सर्व मली त्रणजे उपवास अने शाठ पारणां ए एक परिपाटी थाय. एवी चार परिपाटी करतां पूरा चार वर्षे ए तप पूर्ण थाय. उजमणे मोतीनोहार जिनेसर आगल ढोकवो. ए मोतीना हारनी पेरें मुक्तावली तप ठे ते कह्युं.

११ रत्नावली नामा तप कहे ठे:—जेम रत्नावली ने आचरणविशेष कहे ठे. तेम रत्ननी पंक्ति समान जे तप करवुं, तेने रत्नावली तप कहियें. एटले जेम रत्ननी पंक्ति बे बाजुयें प्रथम सूक्ष्म अने पढी स्थूल एवा विनागें करी काहलिका नामें आचरण सुवर्ण ना बे अवयवें करी युक्त होय ठे, तेमज दाडिमना पुष्पोयें करी बन्ने बाजुयें शोजित ठतां बन्ने तरफनी बाजुनी जे सखो तेणें करी शोजनारुं अने नीचें ना जागने विषे स्थापन करेला पदकें करी अत्यंत अलंकृत एवं जे पट्टकादिकने विषे बतावेला आ कारने धारण करनारुं तप तेने रत्नावली तप कहियें.

हवे ए तप केवी रीतें करीयें ? के जेयकी पूर्वोक्त आ चूषणना आकारने धारण करे एवी स्थापना सिद्ध थाय, ते कहे ठे. प्रथम एक उपवास करीने पारणुं करीयें, तेवार पढी बे उपवास, पढी त्रण उपवास एणें करी एक काहलिका उपरना जागनी उत्पन्न थाय. ते पढी आठ अष्टम एटले आठ वखत त्रण

ત્રણ ઉપવાસ કરવા. એળેં કરી કાહલિકાની નીચેં  
 ઢાડિમ પુષ્પ ઉત્પન્ન થાય છે. ત્યાર પઠી એક ઉપવા  
 સ કરીયેં. પઠી બે, ત્રણ, ચાર, પાંચ, ઠ, સાત, આઠ,  
 નવ, દશ, અગીયાર, બાર, તેર, ચૌદ, પન્નર અને શો  
 લ, એવી રીતેં એકથી માંમીને ચડતે ચડતે શોલ પર્યે  
 ત ઉપવાસ કરવા થકી ઢાડિમના પુષ્પની નીચેં એક  
 સેરિકા થાય છે. ત્યાર પઠી ચોત્રીશ અઠમ એટલે  
 ચોત્રીશ વસ્ત ત્રણ ત્રણ ઉપવાસ કરવા થકી ની  
 ચેનું એક પદક ઉત્પન્ન થાય છે. તેવાર પઠી વલી  
 શોલ ઉપવાસ, પન્નર, ચૌદ, તેર, બાર, અગીઆર,  
 દશ, નવ, આઠ, સાત, ઠ, પાંચ, ચાર, ત્રણ, બે અને  
 એક પર્યેંત ઉપવાસ કરવાથકી બીજી બાજુની સેર  
 થાય છે, તેવાર પઠી વલી આઠ અઠમ કરવાથકી  
 બીજા ઢાડિમનાં પુષ્પ ઉત્પન્ન થાય છે, પઠી વલી ત્રણ  
 ઉપવાસ, બે ઉપવાસ અને એક ઉપવાસ કરવાથકી  
 બીજી કાહલિકા ઉત્પન્ન થાય છે. એવા આન્નૂષણાકાર  
 થયે ઠતે પ રિપૂર્ણ રત્નાવલીતપ સિઠ્ઠ થાય છે. એ  
 તપને વિષે સર્વ મલી કાહલિકાના તપના દિવસ બા  
 ર, તથા બે બાજુના ઢાડિમના પુષ્પ સંબંધિ તપના દિ  
 વસ અડતાલીશ, તથા બે બાજુની બે સેર સંબંધિ ત  
 પના દિવસ ૨૭૨ થાય છે. તથા પદકને વિષે ચો  
 ત્રીશ અઠમના દિવસ ૧૦૨ એ સર્વ એકઠા કરતાં  
 ૪૩૪ દિવસ તપના થાય છે. તથા ૮૮ દિવસ પાર  
 ણાંના થાય છે, સર્વ મલી ૫૨૨ દિવસેં એક પરિપાટી

थाय. एवी चार परिपाटीयें ए तप पूर्ण थाय. तेवारें पांच वर्ष, नव मास अने अठार दिवसनी संख्या थाय ठे. उजमणे रत्नमय हार आपवो ॥ इति ॥

१२ कनकावलि तप कहे ठे:— ए पण सुवर्णमय मणिउथी उत्पन्न अयेलुं नूषण होय तेने कनकावली कह्यें. एनी थापना पण रत्नावलिना तपनी पेंठेंज करवी; परंतु एटलुं विशेष जे मात्र दाडिमना पुष्प अने पदकने विषे जे त्रण त्रण उपवासनी स्थापना करीं ठे, ते स्थानकें आमां बे बे उपवासनी स्थापना करवी, एनी पण चार परिपाटी करतां पांच वर्ष बे मास ने अठावीश दिवस उपर थतां ए तप पूर्ण थाय उजमणे सुवर्णमय हार अने सुवर्ण अक्षर मय पुस्तक करवां. इहां प्रथम लघुसिंहनिःक्रीडित तथा महासिंहनिःक्रीडित नामा जे तप कह्युं, तेमां जे प्रमाणें पारणानो विधि कह्यो, तेहज विधि ए मुक्तावलि तथा रत्नावलि अने कनकावलि ए त्रणे तपने विषे जाणवो. ए पांचे तपनो पारणासंबंधि विधि सरखो जाणवो.

१३ हवे नड्प्रतिमा संबंधि तप कहे ठे:—प्रथम एक उपवास पढी बे, त्रण, चार अने पांच, एम पन्नर उपवासें एक लता थाय. हवे बीजी उंलीमां त्रण, चार, पांच, एक, बे, एवं पन्नर उपवास थाय. तथा त्रीजी उंलीमां पांच, एक, बे, त्रण, चार एम पन्नर उपवास थाय, तथा चोथी लतामां बे, त्रण, चार, पांच अने एक एवं पन्नर उपवास थाय. तेम

ज पांचमी उंलीमां चार, पांच, एक, बे अने त्रण, एवं पन्नर उपवास थाय. सरवाले पांच उंलीना पंचो तेर उपवास अने एकेकी लतायें पांच पांच पारणां थाय, तेथी पच्चीश पारणां थाय. मली एकशो दिव सें नइप्रतिमातप पूर्ण थाय.

१४ महानइप्रतिमा तप कहे ठे:—एक, बे, त्रण, चार, पांच, ठ अने सात, ए २७ दिवसें प्रथम उंली थइ. पढी चार, पांच, ठ, सात, एक, बे अने त्रण ए २७ दिवसें बीजी उंली थाय; पढी सात, एक, बे, त्रण, चार, पांच अने ठ, ए त्रीजी उंली. पढी त्रण, चार, पांच, ठ, सात, एक अने बे ए चोथी उंली थइ. पढी ठ, सात, एक, बे, त्रण, चार अने पांच ए पांचमी उंली. ते पढी बे, त्रण, चार, पांच, ठ, सात अने एक, ए ठछी उंली. ते पढी पांच, ठ, सात, एक, बे, त्रण, अने चार ए सातमी उंली थइ. ए सात उंली तपनी करीयें, तेवारें एकेक उंलीमां अछावीश अछावीश उपवास अने सात सात पारणांना दिवसो गणतां सर्व १९६ उपवास तथा ४९ पारणांना मली २४३ दिवसें तप पूर्ण थाय.

१५ हवे नइोत्तरप्रतिमा तप कहे ठे:—तिहां पोंच, ठ, सात, आठ, अने नव, ए पांत्रीश उपवासें प्रथम उंली जाणवी. तथा सात, आठ, नव, पांच अने ठ, एटला उपवासें बीजी उंली जाणवी. तथा नव, पांच, ठ, सात अने आठ, एटला उपवासें त्रीजी

उंली जाणवी. तथा ठ सात, आठ, नव अने पांच, ए चोथी उंली जाणवी. तथा आठ, नव, पांच, ठ अने सात, ए पांचमी उंली जाणवी. एम एकेक उंलीयें पांत्रीश उपवास अने पांच पांच पारणां थाय. तेवारें १७५ उपवास थाय. पच्चीश दिवस पारणांना मली बसो दिवसें ए तप पूर्ण थाय ठे ॥ इति ॥

१६ सर्वतोन्नद प्रतिमानुं तप कहे ठे:—एने विषे पांच, ठ, सात, आठ, नव, दश अने अगीयार, ए ठपन्न उपवासें प्रथम पंक्ति जाणवी. तथा आठ, नव, दश, अगीआर, पांच, ठ अने सात, ए बीजी पंक्ति जाणवी; तथा अगीआर, पांच, ठ, सात, आठ, नव अने दश, ए त्रीजी पंक्ति जाणवी. तथा सात, आठ, नव, दश, अगीआर, पांच, अने ठ, ए चोथी पंक्ति जाणवी; तथा दश, अगीआर, पांच, ठ, सात, आठ अने नव, ए पांचमी पंक्ति जाणवी; तथा ठ, सात, आठ, नव, दश, अगीआर अने पांच, ए ठछी पंक्ति जाणवी. तथा नव, दश, अगीयार, पांच, ठ, सात अने आठ ए सातमी पंक्ति जाणवी. एमां ए केक पंक्तियें ठपन्न ठपन्न उपवास अने सात सात पारणां करतां सात उंलीमां ३९१ उपवास तथा ४९ पारणांना दिवस मली ४४१ दिवसें तप पूर्ण थाय. ए नद्वदिक तपने विषे जे पारणां करवां, ते पूर्वोक्त पांचे तपनी पेरें प्रत्येकें जाणवां. अने चतुर्विधपणुं पण प्रत्येकें जाणवुं.

૧૭ હવે સર્વસંપત્તિસુખ નામા તપ કહે છે:— જેના આસેવવા થકી સર્વ કોઈ વસ્તુની સંપત્તિ થાય, સમ સ્ત પ્રકારનાં સુખ સંપત્તિની પ્રાપ્તિ થાય, માટે એને સર્વ સંપત્તિ સુખ એવે નામે તપ કહિયે. એ તપનો શુક્લપદ્મ અથવા કૃષ્ણપદ્મના પડવાના દિવસથી આરંભ કરી યે, તિહાં પડવાને દિવસેં એક ઉપવાસ કરીયે, વલી બીજા પદ્મના બીજના દિવસથી બે ઉપવાસ કરીયે, વલી ત્રીજા પદ્મના ત્રીજના દિવસથી ત્રણ ઉપવાસ કરવા. એમ જ્યાંસુધી બહેલા પૂર્ણિમાના અથવા અમાવાસ્યા ના દિવસથી જેવારેં પન્નર ઉપવાસ કરીયે, તેવારેં સર્વ મલી એકશોને વીશ ઉપવાસેં એ તપ પૂર્ણ થાય. એમાં જે તિથી જૂલે તે તિથીને વિષે ફરીથી ઉપવાસ કરવો. ઝજમણેં ૧૨૦ લાઢૂ મંદિરેં ચઢાવે; સ્નાત્રમહોત્સવ કરે.

૧૮ રોહિણી નામે તપ કહે છે:— સત્તાવીશ નક્ષત્ર છે, તેમાં પ્રથમ અશ્વિની નક્ષત્રથી રોહિણી નામા નક્ષત્ર તે ચોથું છે, એ રોહિણી નક્ષત્ર જે દિવસેં આવે, તે દિવસેં રોહિણી નામક દેવતા વિશેષના આરાધવા ને અર્થે સાત વર્ષ અને સાત મહિના સુધી શ્રીવાસુપૂજ્ય સ્વામીની પ્રતિમાની પ્રતિષ્ઠા પૂજા પૂર્વક જે જે દિવસેં રોહિણી નક્ષત્ર આવે, તે તે દિવસેં ઉપવાસ કરીને એ તપ કરીયે. એ તપ અદ્વય તૃતીયાનેદિવસેં રોહિણી નક્ષત્ર આવે, તે દિવસથી કરાય છે. ઝજમણે અશોકવૃક્ષયુક્ત શ્રીવાસુપૂજ્યસ્વામિની પ્રતિમા કરાવી પ્રતિષ્ઠિત કરી દેવગૃહે સ્થાપવી. એકશોને એક મોદકઢોકવા.



१९ मौनएकादशी नामा तप कहे ठे:- अगीआर शुक्ल एकादशी सुधी निरंतर एक उपवासें करी, श्रुतदेवतानी पूजा पूर्वक मौनपणुं धारण करी श्रुतदेवी आराधवाने अर्थें ए तप करीयें, उजमणें रूपाना घंट अगीयार तथा जातिजातिनां फल ढोश्यें.

२० सर्वगसुंदर नामा तप कहे ठे:- जेनुं आराधन करवाथी समस्त अंगने विषे प्रधान सुंदर पणुं होय तेने सर्वगसुंदर तप कहियें. एने विषे चांदरडा पढ्कने विषे श्रीवीतरागनी पूजापूर्वक आठ उपवासं एकांतरें आयंबिल सहित करीयें, अने द्दमा, मर्दव, आर्ज्जवादिक नियमोनो पण परिचय करीयें. उजमणे चतुर्विध श्रीसंघ, देव, अने ज्ञाननी जक्ति करवी.

२१ निरुजशिख नामा तप कहे ठे:- निरुज एटले नीरोगपणुं तेज जेना फलनी विवद्दायें शिखा एटले चोटलीनी पेरें ठे, अर्थात् जेनाथी निरोगीपणानी प्राप्ति थाय तेने निरुजशिख नामा तप कहियें. एने विषे अंधारा पखवाडीयामां एकांतरें आठ आयंबिल अने उपवास आठ करीयें, शोलदिवसें तप पूरुं थाय, अने गिलाननुं वेचावच्च करवानो अजिग्रह करीयें.

२२ परमनूषण तप कहे ठे:- जेना करवा थकी चक्रवर्ती आदिक महा पुरुषोने पहेरवा योग्य एवा उत्कृष्ट हार, कुंमल, केयूरादिक आचरण पामीयें, तेने परमनूषण तप कहियें. एनेविषे निरंतर बत्तीश आयंबिल करीयें, जो निरंतर न थड शके, तो ए

कांतरें पारणां करीने बत्रीश आयंबिल पूर्ण करीयें. उजमणे पोतानी शक्तिने अनुसारें श्रीवीतरागदेवने योग्य मुकुट तिलकादिक नूषण चढावीयें.

१३ आयतिजनक तप कहे ठे:- जेणें करी आयतिशब्दें पारजवें जे विशिष्टफलतुं जनक एटले उ पजावनार थाय, तेथी एतु नाम पण आयतिजनक तप ठे. एमां पण पूर्वोक्तरीतें लागत बत्रीश आयंबिल करीयें, जो लागत न थाय तो एक दिवस पारणुं अने एक दिवस आयंबिल एम करीने बत्रीश पूरां करे, अने समस्त वंदनक पडिक्कमण, स्वाध्याय, साधु साध्वीनुं वेयावच्च, इत्यादिक धर्मक्रियाने विषे बल अने वीर्यनी प्रवृत्ति सहित रहे, बल वीर्य गोपवे नही, ए रीतें करे. उजमणे देवपूजा, पडिक्कमण, संघवेयावच्च करे.

१४ सौजाग्यकल्पवृद्ध नामा तप कहे ठे:- जे सौजाग्यफलना दानने विषे कल्पवृद्ध समान होय तेने सौजाग्यकल्पवृद्ध तप कहीयें. एकांतरें उपवास, पन्नर उपवास अने पन्नर एकासणां करियें, एकासणांना दिवसें सर्वरस कामगुणित जमवुं. उजमणुं चैत्रमासें करी कल्पवृद्धनां फल ढोकियें, तथा ए तप पूर्ण थये थके पोतानी शक्तिने अनुसारें एक था लमां नानाप्रकारनां फल तेणें करी विलसित जे शाखा, तेणे युक्त एवुं चोखानुं कल्पवृद्ध करीने श्रीवीतराग आगल मूकीयें.

१५ तीर्थंकर मातृतप कहे ठे:- श्रीतीर्थंकरनी मा

તાની પૂજાપૂર્વક એ તપ જાદરવા શુદ્ધિ સાતમથી માંની ને જાદરવા શુદ્ધિ તેરશ સૂધી લાગત સાત એકાસણાં કરવાં. એમ સાત વર્ષ પર્યંત કરવાં. કોણક આચાર્ય ત્રણ વર્ષ લગણ સાત એકાસણાં કરવાં કહે છે. ઝજમણામાં પ્રધાન ચોવીશ પક્કાન્નના ચાલ આપવા. જે પુત્ર સહિત સ્ત્રી હોય, એવી ચોવીશ શ્રાવિકાઝને જમાડવી. પીલાં વસ્ત્ર કરી આપવાં, મહોટો મહોત્સવ કરવો. એ જિનમાતા નામા તપ જાદરવા મહિનામાં કરિયેં. .

૨૬ સમોસરણ તપ કહે છે:— એ તપમાં એક એકાસણું, ઉપર એક નીવી પઠી એક આયંબિલ, પઠી ઉપવાસ કરવો. એમ કરવાથી એક શ્રેણી થાય. એવી ચાર ઝંજી કરવી તેવારેં શોલ દિવસ થાય. એમાં ઢેલ્લો ઉપવાસ પંજોસણના દિવસેં આવે, એવી રીતેં એ તપ કરવું, એ તપ સમોમરણની પૂજા પૂર્વક ચાર વર્ષ પર્યંત કીધે ઠતે ચોસઠ દિવસેં પૂર્ણ થાય. એવી રીતેં સમોસરણના એકેક દ્વારનો આશ્રય કરીને પ્રત્યેક દ્વારને સ્થાનકેં ચાર ચાર દિવસનું તપ શ્રાવણવદિ ૧ થી કરે ॥ ઝજમણે સમોસરણ પૂજા, નવેદ્ય ચાલચાર ઢોકે.

૨૭ નંદીશ્વર નામા તપ કહે છે:— નંદીસર દ્વીપ સંબંધિ જે પ્રાસાદ છે, તે પટ્ટ ઉપર લક્ષ્મીને નંદીશ્વરના પટ્ટની પૂજા પૂર્વક પોતાની શક્તિ માફક તપ કરવું. એમાં દીવાલીની અમાવસ્યાથી આરંજી ઉપવાસ કરીયેં. એમ પ્રત્યેક અમાવાસ્યાયેં તપ કરતાં ફરી દીવાલીની અમાવસ્યા સૂધી નંદીશ્વરદ્વીપનાં એક દિશાનાં તેર ચૈ

त्यनी अपेक्षायेँ तेर उपवास थाय. फरी बीजी दीवा  
लीनी अमावास्याथी बीजी दिशिनी अपेक्षायेँ तेर उप  
वास करवा, माटे प्रत्येक महिनानी अमावास्यायेँ  
एकेको उपवास करे. एवी रीतेँ चार दिशाउना बावन  
चैत्य आथी सात वर्षने बे महीने ए तप पूर्ण थाय.  
हमणांना काले दीवालीनी अमावास्या तथा पूनम  
ना बे बे उपवास करी एक वर्षमां पण ए तप पूर्ण  
करे ठे. उजमणे नंदीश्वर छीपनुं मंमल बनावे, पूजा  
करावे, ज्ञानपूजा करे, गुरुजक्ति करे, मंमलनी पूजा  
करे, बावन बावन फल नालीयेर पूगी फलादिक व  
स्तु ढोके, बावन लोगस्सनो काउस्सग्न करे.

१७ पुंमरीकनामें तप कहे ठे:— चैत्री पूनमना  
दिवसेँ पुंमरीक गणधरने केवलज्ञान उपनुं ठे, माटे ए  
दिवसेँ एक उपवास अथवा एकासणादिक तप करियेँ.  
यथाशक्तियेँ श्रीपुंमरीक गणधरनी पूजापूर्वक जक्ति क  
रीयेँ. ए तप सात वर्ष पर्यंत करवानुं कहे ठे. उजम  
णे नणद पुत्रिकाउने अथवा अन्यने अगणित मंम  
क जमाडंवा, साधु साध्वीने उधो, मुहपत्ति, वस्त्र त  
था अगणित मंमक वहोराववा, सात घरने विषे  
अगणित मंमकनी लाणी करवी.

१८ अक्षयनिधि तप कहे ठे:— घर देरासरें श्रीजिन  
देव आगल अथवा बीजा कोइ उत्तम स्थानकेँ चित्र स  
हित घट थापियेँ. पढी तेमां प्रतिदिवसेँ मूठि जर चोखा  
नाखतां जइयेँ अने प्रति दिवसेँ पोतानी शक्तिने अनु

सारें एकासणुं बियासणुं प्रमुख तप करीयें. श्रीपर्युष एथकी पन्नर दिवस आगल ए तप मांमियें. ते पन्नर दिवस पर्यंत करतां पंजोसणने दिवसें ते कलश पूराइ जाय, अने तप पण पूर्ण आय, तेवारें ते कलश उपर नालियेर राखी महोत्सव पूर्वक मंदिरमां लावी देव आगल राखी स्नात्र पूजा करे, ज्ञानपूजा करे. एम चार वर्ष पर्यंत करे. उजमणे त्रिपक्षिणी करी देव आगल मूकियें. गीतवाजित्र करियें.

३० हवे चांडायण तपः—ते यवमध्य अने वज्र मध्य एवा वे जेदें ठे. तिहां जेम चंडमा शुक्लपक्षमां एकमना दिवसथी प्रतिदिवस एकेकी कलायें वधतो जाय ठे; तेम पडवाना दिवसें एक केवल, बीजना दिवसें वे कवल, एम चांडणे पखवाडे प्रतिदिन एकेको कवल वधारतां पूनमना दिवसें पन्नर कवलनो आहार थाय. पढी अंधारिये पखवाडीयें चंडमा पण प्रतिदिवस एकेक कलायें हीन थतो जाय. तेम इहां पण पडवाना दिवसें पन्नर कवल लही बीजना दिवसें चौद कवल लहीयें, तेमज बीजना दिवसें तेर कवल. एवी रीतें प्रतिदिवसें एकेको कवल उठो करतो अमा वास्यायें एक कवलनो आहार करे. ए यवमध्य प्रतिमा एक मास प्रमाणनी थाय. उजमणे रूपानो चंडमा अने सोनाना बत्रीश यव ढोइयें.

३१ हवे वज्रमध्य प्रतिमा तप कहे ठेः—अंधारे पखवाडिये पडवाना दिवसें पन्नर कवल, बीजना दि

वसें चौद कवल, त्रीजना तेर, एम एकेकनी हानि करतां अमावास्यायें एक कवलनो आहार थाय. फरी अजवालिये पखवाडिये पडवाना दिवसें एक केवल, बीजना बे केवल, त्रीजे त्रण कवल, एम दिवसें दिवसें एकेका कवलनी वृद्धि करतां पूर्णिमायें पन्नर कवलनो आहार थाय. एम एक मासें वज्रमध्य प्रतिमा तप पूर्ण थाय. उजमणे रूपानो चंडमा अने सोनानुं वज्र आपवुं. कवलनी संख्या प्रमाणें मोदक आपवा. देवपूजा, पुस्तकपूजा अने श्रीसंघनुं वात्सल्य वेदु तपमध्ये यथाशक्तियें करवुं.

३१ आयंबिल वर्धमान नामा तप कहे ठे:—प्रथम एक आंबिल करी बीजे दिवसें पारणे उपवास करे, पढी बे आंबिल उपर एक उपवास पढी त्रण आंबिल उपर एक उपवास, पढी चार आंबिल उपर एक उपवास, एम वधतां वधतां ठेव्वा एक शो आयंबिल करीने तेने पारणे एक उपवास करे. तेवारें सर्व मली एक शो उपवास थाय, अने पांच हजार ने पचास आयंबिल थाय. ए महातपनुं आसेवन चौद वर्ष उपर त्रण महीनाने बीश दिवसें पूर्ण थाय.

३२ गुणरत्न संवत्सर नामा तप कहे ठे:—ए तपनुं आसेवन करतां दिवसें उकडू आसनें रहेवुं, अने रात्रियें वीरासने रहेवुं, वस्त्र रहित थवुं, ए तप शोल मास पर्यंत करवुं. तिहां प्रथम महीने एकांतरें उपवास करवा, एटले एकेक उपवास अने उपर पारणुं

કરવું, એમ બીજા માસેં વે વે ઉપવાસની ઉપર પારણું કરવું, ત્રીજા માસેં ત્રણ ત્રણ ઉપવાસની ઉપર પારણું કરવું, ચોથા માસેં ચાર ચાર ઉપવાસની ઉપર પારણું કરવું, તેવારેં આઠવા ચોથા મહીનામાં ચોવીશ દિવસ ઉપવાસના થાય, અને ઠ દિવસ પારણાંના થાય. એમ માસેં માસેં એકેકા ચઢતા ઉપવાસેં પારણું કરતાં યા વત્ શોલ મહીના સુધી એ તપ કરીયેં, તેવારેં પન્નર, વીશ, ચોવીશ, ચોવીશ, પચ્ચીશ, ચોવીશ, એકવીશ, ચોવીશ, સત્તાવીશ, ત્રીશ, તેત્રીશ, ચોવીશ, ઠવીશ, અઠાવીશ, ત્રીશ, વત્રીશ, એ અનુક્રમેં શોલ મહીનાંને વિષે ૪૦૭ તપના દિવસો થાય ઠે. હવે પારણાના દિવસો પ્રત્યેક મહીના મહીનાના કહે ઠે. પન્નર, દશ, આઠ, ઠ, પાંચ, ચાર, ત્રણ, ત્રણ, ત્રણ, ત્રણ, ત્રણ, વે, વે, વે, વે, વે, સરવાલે ૭૩ પારણાં શોલ મહીનામાં થાય. જે મહીનામાં અષ્ટમાદિક તપના દિવસ પૂરાય નહી, તેવારેં આગલા મહીનાના દિવસો લેવા. સરવાલે ૪૮૦ દિવસના શોલ મહીના થાય. નિર્ઝેરાદિ જે ગુણ તડૂપ જે રત્ન તે એને વિષે રહ્યા ઠે, માટે એને ગુણરત્નસંવત્સર તપ કહીયેં ॥ ૬તિ ॥

૩૪ શ્રીચોવીશ તીર્થકરના અવન, જન્મ, દીક્ષા, જ્ઞાન અને નિર્વાણ, એ પાંચ કલ્યાણિકના એકશો ને વીશ દિવસોને વિષે ઉપવાસાદિ તપ યથા શક્તિયેં કરવું. એ તપ પૂર્ણ થયાથી ઉજમણે કનકસિંહરાજાની પરેં ચોવીશે જિનોની પ્રતિમાઉ કરાવવી, તિલક ચો

वीश कराववां, पक्कान्न चोवीश, ठाजी, कूंपी, कचो ली प्रमुख पूजानां उपकरण ढोकवां. च्यवन कल्याणकें परमेष्ठिने नमः ए जाप १००० करवो. जन्में अर्हते नमः एनो जाप १००० करवो, दीक्षाये नाथाय नमः एनो जाप १००० करवो, ज्ञानें सर्वज्ञाय नमः एनो जाप १००० करवो. अने निर्वाणने दिवसें पारंगताय नमः ए जाप १००० करवो. तथा च्यवने साधर्मिकनी वात्सल्यता. जन्में गोल घृत आपीयें. दीक्षाये टोपरा गोल वेचीयें. ज्ञानें संघपूजा. अने निर्वाणने दिवसें महोटी पूजा रचावीयें ॥

३५ लघु पंचमी तपः—पोष अने चैत्रमास वार्जिने अन्य महीनाउ मांहेला गमे ते महीनामां साधु, साध्वी, श्रावक तथा श्राविकायें लघु पंचमी तप ग्रहण करी शुक्ल तथा कृष्ण पंचमीना दिवसें उपवास करतां एक वर्षमां पच्चीश पंचमीयो करवी. उजमणुं ज्ञानपंचमीना तप प्रमाणें करवुं.

३६ ज्ञान पंचमी तपः—ए तप पांच वर्षे अने पांच मास पर्यंत प्रत्येक महिनानी शुक्ल पंचमीयें उपवास करवो. तेवारें पांशठ उपवासें ए तप पूर्ण थाय. ए तप मागशिर, माघ, फाल्गुन, वैशाख, ज्येष्ठ अने आषाढ, एठ महिना मांहेली गमे ते मासनी शुक्ल पंचमीयें ग्रहण करवुं. उजमणे पच्चीश पुस्तक, चोग वा जोडा पच्चीश, मिशांजणां पच्चीश, उतरी, वाटी, कमली, पाटी, नवकरवाली, पूंजणी, वासकूंपी, पीत



लनां वतरणां, ऊरमरजोला, लेखण, कातरणी, पाली,  
 कांबी, चंडुआ, चित्रित पाठांनां जोडां, सोनेरी बिंब, पा  
 नां, सूर्यकांत, ठवणी, नेहरणी, ए सर्व पच्चीश पच्चीश  
 तथा नाणामां सोनऱ्या, रूपऱ्या, वऱ् फदियां, ठक्कड,  
 डुर्गा, सर्व पांच पांच करतां पच्चीश नाणां, पुस्तक आगल  
 ढोकवां. तथा पट्टसूत्रना दोरा पच्चीश. इत्यादिक ज्ञानोप  
 करण ढोकवां. तथा पक्कान्न, नीलां सूकां जाति जाति  
 नां फल, नालियेर, कदली, दाडिम, डाह्या, साकर,  
 खांम, अंगलूहणां, धूपधाणां, ठत्र, चामर, कलश,  
 आरतिमंगल, जाह्नर, घंटा, पडह, जेरी, मृदंग,  
 दांमियादिक, तथा शिलामय, पित्तलमय, रत्नमय,  
 सुवर्णमय, मुक्तामय, विडुममय, इत्यादिक धातुना न  
 विन बिंब जराववां. ए सर्व वस्तु पांच पांच एकठी  
 करीयें. ए देव आश्रयी कह्युं. हवे पोपधशालाउ करा  
 ववी, तथा पांच दीह्या महोत्सव कराववा, पांच ध्वजा  
 रोपण, पांच कनककलश, पांच प्रतिष्ठा, पांच यात्रा,  
 पांच वार संघपति पद, आचार्यपद, सिंहासन, त्रांबा  
 कुंमी, त्रांबाना हांमा, धोतीजोडा पच्चीश, तथा कचो  
 ली, आरीसा, उरशीया, दीवा, थाल, कंसाज, तिं  
 लक, कुंमल, मुकुट, चक्रु, बहेरखा, कचोलां, बीजपू  
 र, तंडुल, पूगीफल, चरवला, मुहपत्ती, ए सर्व पच्चीश  
 पच्चीश ढोकवां. संघपूजा, साधार्मिकवात्सल्य, रात्रिजा  
 गरण, संघने वस्त्रदान, पहेरामणी, धवलगीत गान,  
 आविकाउने साडीनी पहेरामणी, शृंगारदान इत्यादिक

જ્ઞાનોપજોગ્ય તથા દેવોપજોગ્ય અને સંધોપજોગ્યને માટે સર્વસાર સાર વસ્તુ લેવી. તથા સર્વ પ્રકારનાં ધાન્ય અને સુવર્ણ, રૂપ્ય, મણિ, આદિક દ્રવ્ય, ઢોકવાં. મતિજ્ઞાન, શ્રુતજ્ઞાન, અવિજ્ઞાન. મનઃપર્યવ જ્ઞાન આરાધનાર્થે કરેમિ કાવસ્મર્ગ્ગં અન્નહૃણ કહી પચ્ચીશ લોગસ્સનો કાવસ્સગ્ગ કરવો

૩૭ શ્રીમહાવીર તપઃ—જહોંતેઁ અર્ધમાસી, નવ ચતુમાસી, એકઠ માસી, બે ત્રિમાસી, બે અઢિમાસી, ઠે વે માસી, બે દોઢ માસી, બાર એકમાસી, જડ પ્રતિ મા.દિન બે, મહાજડપ્રતિમા દિન ચાર, સર્વજડપ્રતિમા દિન દશ, એમ જડાદિ પ્રતિમાના ઉપવાસ શોભ તથા અનિગ્રહ સહિત પાંચ દિવસે કણી ઠમાસી એક, વ રોને ઝંગણત્રીશ ઠઠ, બાર અઠમ, એ રીતે શ્રીમહાવીર સ્વામીયે ઠઘ્ઘસ્થાવસ્થામાં બાર વર્ષે ને સાડા ઠમાસ તપ કહ્યું, તેમાં પારણાં ૩૪૯૯ કહ્યાં, તે રીતે તપ કરી ને પઠી ઝજમણે અષ્ટપ્રકારી પૂજા, ગોધૂમ મણ એક, ઘૂત મણ અડધો, તથા યથાશક્તે શ્રીસંઘનું વાત્સલ્ય કરવું.

૩૮ ગૌતમ પડઘો તપઃ—પન્નર પૂર્ણિમા પર્યંત એ કાશનાદિ તપ યથાશક્તિયે કરવાં. ગૌતમ સ્વામીને દૂધપાકનું નૈવેદ્ય ધરવું. અષ્ટપ્રકારી પૂજા કરવી. શ્રી ગૌતમજીની પ્રતિમાને અજાવે શ્રીમહાવીર પ્રતિમાની પૂજા કરવી. ઉદ્યાપને રૂપાનો પડઘો સ્વીરેં જરીને શ્રી ગૌતમ અથવા વીરની પ્રતિમા આગલ ઢોકવો. શ્રીગુરુને જોલી અને પાત્રાં આપવાં.

३९ श्रीतीर्थकर च्यवन जन्म कल्याणक तपः—एकेक तीर्थकरना च्यवन दिवसें एकेको उपवास करीयें. तेमज जन्म आश्रयी पण पृथक् पृथक् उपवास करतां चोवीश ड अडतालीश उपवास थाय.

४० श्रीतीर्थकर दीक्षा तपः—वीश तीर्थकरें ठछ तप कखां, माटे तेमनी दीक्षाने दिवसें ठछ ठछ तप करवां. उपवास चालीश थाय, अने श्रीवासुपूज्य आश्री उपवास एक तथा श्रीमत्त्रिनाथ अने पार्श्वनाथ आश्री उपवास त्रण त्रण करवा. एवं ४७ उपवास तथा श्रीसुमतिनाथ आश्री एकासणं करवुं. उजमणे एकासणा पूर्वक मोदक ४८ तथा फल ४८ ढोकवां, अने अष्टप्रकारी पूजा करवी.

४१ श्रीतीर्थकर केवलज्ञान तपः—श्रीआदिनाथ, मत्त्रिनाथ, नेमिनाथ, पार्श्वनाथ, ए चार तीर्थकर आश्री उपवास, त्रण त्रण करवा. अने श्रीवासुपूज्य आश्री एक उपवास तथा शेष उगणीश तीर्थकर आश्री वे वे उपवास करवा. सरवाले ५१ उपवास करवा. उजमणे मोदक बावन तथा नैवेद्य, बलि, फलादि, पट्विकृति ढोकवां. अष्टप्रकारी पूजा करवी.

४२ तीर्थकर निर्वाणतपः—श्रीआदिनाथ निर्वाणने दिवसें उपवास ठ करवा. श्रीवीरप्रभु निर्वाणें उपवास वे, अने शेष तीर्थकरने निर्वाणें एकांतरे उपवास त्रीशं त्रीश करवा. उजमणे तिलक चोवीश, पक्वान्न चोवीश, फल चोवीश, श्रीजिन आगल

ढोकवां, तथा यथाशक्तियें श्रीसंघनी पूजा करवी.

४३ मोक्ष दंभकतपः—गुरुना हाथमां दांमो हो य ठे, तेने मुष्टियें करी जरीयें, जेटली मुष्टि थाय, तेटला एकांतरें उपवास करवा. अथवा बीजो विधि कहे ठें:—एकासण वार, नीनी नव, आयंबिल पांच, उपवास एक. एवं सत्तावीश दिवस तप करवुं. ठेहडे उपवासने दिवसें परिधायनिका चोखानो थाल तथा नालिकेरादिक फलथी, दांमानी पूजा करवी. उजमणे गुरुने वस्त्रदान आपवुं.

४४ दमयंती तपः—ए तप नलराजानी स्त्रीयें आगल्या वीरमतीने जवें आदखुं हतुं, ते आवी रीतें के:—एकेक जिन आश्री वीश आयंबिलनी एकेक उली करीयें. तेवी चोवीश उली थाय अने ए महोटुं तप ठे ते जणी एनी साथें एक उली. शासन देवतानी मली पच्चीश उलीनां पांचगें आयंबिल थाय, पारणाना दिन चोवीश थाय. उजमणे चोवीश जिन पूजा पूर्वक चोवीश तिलक तथा स्नात्रादि पूजा विशेष करवी. श्रीजिन आगल पांचगें ने चार मोदक ढोकवा, अथवा चोवीश जिन प्रत्यें एकेक मोदक ढोकवो.

४५ ऊणोदरी तपः—इहां पुरुषने बत्रीश कवलनो आहार, अने स्त्रीने अठावीश कवल आहार कह्यो ठे, तेमांथी न्यून करीने आहार लीये, ते लोक प्रवाहें ऊणोदरी तप जाणवुं. तिहां पुरुषें प्रथम दिवसें आठ कवल. बीजे दिवसें बार कवल, त्रीजे दिवसें शोल,

चोथे दिवसें चोवीश अने पांचमे दिवसें एकत्रीश कवलनो आहार करवो. एम एकाणुं कवल पुरुषने तथा स्त्रीने ८७ कवल लेवा. उजमणे जिनपूजा पूर्वक कवल संख्या प्रमाणें मोदक ढोकवा.

४६ मौन एकादशी तपः—मार्गशिर शुद्धि ११ ने दिवसें एक उपवास करीयें, एवा अगीयार वर्ष पर्यंत अगीआर उपवास करीने उजमणे अगीयार अगीयार वस्तु अने फलादिक पण तेटलांज ढोईयें ॥

४७ अगीआर अंग तपः—अगीयार शुक्ल पद्धतीं अगीयारशें एकेक उपवास अगीयार महीना पर्यंत श्रुतदेवता आराधवाने अर्थे करीयें. उजमणे रूपा ना घंट अगीयार तथा अगीयार अगीयार फल. ज्ञानपंचमीना तपमां जे लख्यां ठे ते सर्व ढोकवां.

४८ द्वादशांगी तपः—द्वादशांगी तप पण तेमज शुक्ल पद्धती बार बारश पर्यंत बार महीना करवुं, उजमणे बार बार वस्तु ढोकवी.

४९ चौद पूर्व तपः—चौद शुक्ल चतुर्दशी पर्यंत एके क उपवास निरंतर करीयें, महीने महीने ज्ञान अने ज्ञानवंतनी पूजा करीयें, एम चौद मास तप कख्या पठी उजमणे पाटी, पोथी, ठवणी, कवली, वीटांग णां प्रमुख ज्ञानोपकरण सर्व चौद चौद आपीयें ॥

५० धर्मचक्रवाल तपः—चोवीश आयंबिल निरंतर करीयें, उजमणे रौप्यमय चक्र आपीयें.

५१ अष्टापद तपः—आशोवदि अमावास्याथी ए

कांतरें आठ उपवास करीयें, पारणो एकासणुं करीयें, एम आठ वर्षे तप करीयें. उजमणे अष्टापदनी पूजा तथा घृत मय गिरिनी रचना. सुवर्णमय निसरणी आठ पावडीनी आठ, तथा पक्कान्न चोवीश तथा फलादि सर्व जातिनां चोवीश चोवीश ढोकवां. बीजी सर्व वस्तु संख्यायें आठ आठ ढोकवी ॥

५१ वडुं समोसरण तपः—प्रथम उपवास चार करी पारणो एकासणुं अथवा वेआसणुं करवुं. एवा चार वखत चार चार उपवास करीयें, पंजोसणने दिवसें ए तप पूर्ण करीयें. एम चार वर्षे सीम करतां चोशठ उपवासें ए तप पूर्ण थाय.

५२ पंच मेरु तपः—एमां एकेका मेरु आश्री पांच पांच उपवास एकांतरे निरंतर करतां पच्चीश उपवास अने पच्चीश पारणां मली पच्चास दिवसें ए तप पूर्ण थाय. उजमणे सोनानो मेरु करीयें, अने पच्चीश जेदें पक्कान्न ढोइयें.

५४ अडुःख दुःखित तपः—प्रथम शुक्लपद्मना पडवाने दिवसें एक उपवास करवो, वली बीजा शुक्लपद्मनी बीजने दिवसें एक उपवास करवो, वली त्रीजा शुक्लपद्मनी त्रीजने दिवसें एक उपवास करवो. एम पांच वखत आराधन करवाथी पन्नर उपवास थाय. तपने दिवसें श्रीऋषज्जिनने अखंम माला चडाववी. नविन नविन नैवेद्य ढोकवुं. अने जो ए पन्नर दिवसना उपवासमांथी कोइ पण उपवास चूलीयें, तो ते

सर्व तप व्यर्थ थाय. फरीथी करवुं पडे. उजमणामां रूपानुं वृद्ध कराववुं, तेनी शाखामां सोनानुं पालणुं करावीने मूकवुं. तेने रेशमनी पाटीथी जरी उपर रेशमी वस्त्रनी तलाऽ नाखीने तेमां सुवर्णमय पूतली करीने सुवारवी. श्रीरूपजदेवनी पूजा करवी.

५५ सत्तरीसयजिन तपः—एकेका जिन आश्रयी एकेका उपवास एकाशनादिक तप एकांतरें करतां १७० एकाशनादिक करवां, उद्यापने जिनपूजा पूर्व क १७० श्राविकाने जोजनादि आपवुं, तथा लाडुं १७० ढोकवा. शक्तिने अजावें एकांतरें उपवास. अथवा एकाशनादिक न थऽ शके तो तूटक करवा.

५६ अमृताष्टमी तपः—शुक्लपद्मनी आठ अष्टमी योने दिवसें आयंबिल करवां. देवपूजा करवी, उजमणे दूधें जरेला घृतनो कलश एक, कापडुं एक, एक मण मोदक, जल गाडुं एक, ढोकवां.

५७ अश्विन दशमी तपः—दश शुक्लपद्मनी दश दशमीने दिवसें एकाशनादिक तप करवुं. अश्विन अन्ननुं जोजन करवुं. उजमणे धान्य दश जातिनां तथा फलादि अश्विन देवगृहे ढोकवां. कोरुं वस्त्र, संधपूजां तथा यथाशक्ति साधुने दान वगेरे आपवां.

॥ हवे जिह्वा नियम तप चार प्रकारें कहे ठे ॥

५८ सप्त सप्तमिका तपः—एमां सात दिवसनी एक उंली. एवी सात उंली करवाथी ४९ दिवसें पूर्ण थाय. दाति १९६ ए वे प्रकारें ठे तेमां पहेला सप्त

कमां प्रतिदिन एक जिह्वा लेवी. बीजा सप्तकमां प्रतिदिन वे जिह्वा लेवी. एम प्रत्येक सप्तकें एकेक जिह्वा वधारतां सातमा सप्तकें प्रतिदिन सात सात जिह्वा लेवी, तेवारें सरवाले १९६ दाति आय.

५९ अष्टाष्टमिका तपः—एमां पण पूर्वोक्त रीतें प्रत्येक अष्टकें एकेक जिह्वा वधारतां तप दिन ६४ अने दाति २०० आय. ए वे प्रकार जाणवा.

६० नवम नवमिका तपः—एमां पण उक्त रीतें तप दिन ८१ अने दाति ४०५ आय. ए वे प्रकार ॥

६१ दशम दशमिका तपः—ए पण उक्त प्रकारें तप दिन १०० अने दाती ५५० ए चारे तपमां कल्या प्रमाणें जिह्वा लेवी. नही कां तपनो जंग आय.

६२ कर्म चतुर्थ तपः—प्रथम एक अष्ठम करी पढी एकांतरें शाठ उपवास करीने वली ठेहलुं एक अष्ठम एटले त्रण उपवास करी पारणुं करीयें, तेवारें ठाशठ उपवास अने बाशठ पारणां मली चार मास ने आठ दिवसें तप पूर्ण आय ठे, उजमणे आठ शाखा सहित रूपानुं वृद्ध तथा सोनानो कूहाडो मूकवो अने श्रीसंघनुं वात्सल्य करवुं.

६३ शिवकुमार बेला तपः—एमां बार बेलां लागठ अथवा बूटक करीयें. पारणें आयंबिल करीयें.

६४ कर्मचक्र तपः—प्रथम एक अष्ठम करी पढी एकशठ उपवास एकांतरें करवा. अने अंतें एक अष्ठम



करीयें, तेवारें ६७ उपवास अने ६३ पारणें मली चार मास ने दश दिवसें ए तप पूर्ण थाय ॥

६५ बत्रीश कल्याणक तपः—प्रथम एक अष्ठम करीने पठी एकांतरें बत्रीश उपवास करवा. वली अंत मां एक अष्ठम करीयें, तेवारें आडत्रीश उपवास अने चोत्रीश पारणां मली बे मदीनाने बार दिवसें ए तप पूर्ण थाय, उजमणे जिनगृह मध्ये बत्रीश बत्रीश वस्तु ढोकवी. ए तप वसुदेवहिंममां कहुं ठे.

६६ लघुधर्मचक्रवाल तपः— एमां प्रथम एक अष्ठम करी पठी साडत्रीश एकांतरें उपवास करवाः अने ठेहडे पण एक अष्ठम करवुं. एम त्रेंताली उपवास अने ३९ पारणां मली ७२ दिवसें ए तप पूर्ण थाय, उजमणे जिनपूजा पूर्वक रौप्य सुवर्णमय धर्मचक्र ढोकवुं, संघजक्ति, साधुदान, ज्ञानपूजा करवी.

६७ एकावलि तपः—दिन ३३४ पारणां ७७. ए तप रत्नावली तपना यंत्रनी पेटें करवुं, पण एटलुं विशेष जे आठ आठ ठठने स्थानकें चोथ करवी. तथा पदकनी चोत्रीश ठठने स्थानकें एकेक उपवास करवो, ए तप शुक्लपद्मयी प्रारंज कराय ठे.

६८ नवकार पदाक्षर मान तपः—प्रथम पदें सात अक्षरना सात उपवास, बीजे पदें पांच, त्रीजे सात, चोथे सात, पांचमे नव, ठठे आठ, सातमे आठ, आठमे आठ, अने नवमे आठ. एवं सर्व मली अडशठ उपवास, एकांतरें करवा. उजमणे रूपानां पत्रां उपर

सुवर्ण अक्षरें पंचपरमेष्टि लिखित, प्रणव नमः पूर्वक  
ढोकवुं, तेमज लाडु ६७ तथा शासन अधिष्ठाधिकने  
मोदक एक, एवं ६७ मोदक ढोकवा ॥

६९ दश प्रकारें यतिधर्म तपः—शुक्लपद्में एकांतरें  
दश उपवास करवा. देवपूजा करवी. साधुने ठ विगय.

७० पंच परमेष्टि तपः—प्रथम दिवसें उपवास, बी  
जे दिवसें एकलगाणुं, त्रीजे दिवसें आयंबिल, चौथे  
दिवसें एकासणुं, पांचमे दिवसें नीवी, ठेठे दिवसें पु  
रिमट्ट, सातमे दिवसें वियासणुं, ए सात दिवसें एक  
उली थाय. एवी पांच उली करवाथी पांत्रीश दिवसें  
तप पूर्ण थाय. उजमणे पंचतीर्थी बिंव जराववुं. अरि  
हंत, सिद्ध, आचार्य उपाध्याय अने साधुनी नक्ति कर  
वी. मोदक पांत्रीश तथा बीजी वस्तु पांच पांच ढोकवी.

७१ चतुर्विध श्रीसंघतपः—प्रथम वे उपवास क  
रीने पढी एकांतरें शाठ उपवास करवा, उजमणे  
चतुर्विध श्रीसंघनी पूजा करवी.

७२ निर्वाण दीपक तपः—ए तप त्रण वर्ष पर्यंत प्र  
त्येक दीवालीयें चौदश तथा अमावास्यायें मली वे वे  
उपवास करवा, एवं ठ उपवास थाय. अहोरात्र श्रीवीर  
आगल घृतनो दीपक सूर्यास्तथी उदय अने उदयथी  
अस्त पर्यंत करवो. रात्रि जागरण करवो, उजमणे  
साधर्मिकनुं वात्सल्य करवुं. साधुने दान आपवुं, ए  
तप करनार जन्मांतरें पण अंध थाय नही.

७३ घन तपः—तिहां द्वि पर्यंत घन तपमां प्रथम

एक उपवास, पढी बे उपवास, वली एक, पढी बे, वली बे, पढी एक, वली एक, पढी बे, एम बार उपवास अने आठ पारणां मली वीश दिवसें ए तप पूर्ण आय, जिनपूजा पूर्वक तप करवुं. मोदक वीश ठोक वा. एवी रीतें त्रिपर्यंतादिक अनेक प्रकारें घन तप करवुं. ते सर्वयंत्रोनी स्थापनाद' जोड़ने करवां.

७४ श्रेणि तपः—एक उपवास करीन पारणुं करवुं. पढी बे उपवास करीने पारणुं करवुं. तेवारें त्रण. उपवास अने बे पारणां प्रथम श्रेणियें आय. बीजी श्रेणियें एक, बे, त्रण, त्रीजी श्रेणियें एक, बे, त्रण, चार, चोथी श्रेणियें एक, बे, त्रण, चार, पांच, पांचमी श्रेणियें एक, बे, त्रण, चार, पांच, ष. षष्ठी श्रेणियें एक, बे, त्रण, चार, पांच, ष, सात. एवं ष श्रेणीना उपवास ७३ अने पारणां २७ मली ११० दिवसें तप पूर्ण थया पढी उजमणे रूपानुं सात खूणुं धवलगृह करवुं अने सुवर्णमय निसरणी करवी.

७५ वर्ग तपः—एक, बे, बे, एक, बे, एक, एक, बे, ए बार उपवासें प्रथम उली जाणवी. पढी

१, १, १, २, १, २, २, १, ए बीजी पंक्ति जाणवी. पढी

२, १, १, २, १, २, २, १, ए त्रीजी पंक्ति जाणवी. पढी

१, २, २, १, २, १, १, २, ए चोथी पंक्ति जाणवी. पढी

२, १, १, २, १, २, २, १, ए पांचमी पंक्ति जाणवी. पढी

१, २, २, १, २, १, १, २, ए षष्ठी पंक्ति जाणवी. पढी

१, २, २, १, २, १, १, २, ए सातमी पंक्ति जाणवी. पढी

१, १, १, २, १, २, २, १, ए आठमी पंक्ति जाणवी. ए द्विपर्यंत वर्ग तपोदिन ए६ अने पारणां चोशठ, सर्व मली मास पांच ने दिन दश आय. उजमणे जिनपूजा, करवी मोदक १६० ठोकवा. साधु अने संघनुं वात्सल्य करवुं.

७६ परतपालि तपः—पंच वर्ष यावत् श्रीवीरकल्याणिकथी आरंजी उपवास त्रण करवा. पढी बत्रीश नीवी करवी. ठेहले उपवास त्रण करवा. वर्ष वर्ष प्रत्येक एक सइनी लापसी स्थाले पोलि करीने तेमां विविध सुरजि घृत शेर एक प्रक्षेपीने ठोकवुं.

७७ त्रिपर्यंत घन तपः—१, २, ३. ए प्रथम पंक्ति १, १, ३. ए बीजी पंक्ति, ३, २, १. ए त्रीजी पंक्ति १, ३, २. ए चोथी पंक्ति, २, ३, १. ए पांचमी पंक्ति, ३, १, २. ए षष्ठी पंक्ति, १, २, ३. ए सातमी पंक्ति, ३, २, १. ए आठमी पंक्ति, २, ३, १. ए नवमी पंक्ति. सरवाले तप दिन ५४ पारणां २७ सर्व दिन ८१ उजमणे साधुनी जक्ति तथा श्रीसंघनी जक्ति करवी.

७८ लाखी पडवे तपः—श्रीवर्द्धमानना शिष्य गौतमनुं उपवासादिकें करी आराधन करवुं. कार्तिकशुद्धि एकमने दिवसें ए तप करवुं. ते प्रत्येक प्रतिपदायें एकवर्ष पर्यंत करवुं. उजमणामां चोखा माणां पांच अने पाली बे, तथा मग सेई एक अने पाली बे, मठ सेई एक उपर पाली बे, अडद माणां पांच, जवार माणां ठ ने पाली बे, गोधूम सेई बे, चोला सेई त्रण, चणा सेई पांच, तिल पाली सात, जव सेई सात,

વાલ સેઠ આઠ, કાંગ માણાં ત્રણ, કોડવા માણાં ત્રણ ઢોકવાં. યથાશક્તિ દાન પૂજા વગેરે કરવાં.

૭૯ લઘુ સંસાર તારણ તપઃ—પ્રથમ ત્રણ આયં બિલ કરી ચોથા દિવસેં ઉપવાસ કરવો, એવી રીતેં નિરંતર ત્રણ વાર કરતાં, બાર દિવસેં તપ પૂર્ણ થાય.

૮૦ વૃદ્ધ સંસાર તારણ તપઃ—ઉપવાસ ત્રણ કરી ને પારણેં આયંબિલ કરીયેં, એમ નિરંતર ત્રણ વાર કરીયેં, તેવારેં નવ ઉપવાસ અને ત્રણ પારણાં થાય, સર્વ મલિને બાર દિવસેં તપ પૂર્ણ થાય. ઝઝમણે રૂપામય વહાણ ક્ષીર સમુદ્રમાં તરતું મૂકવાને બદલે દૂધમાં તરતું મૂકવું. માંહે મોતી વિડુમ જરવાં.

૮૧ અહવદશમિ તપઃ—પ્રત્યેકવર્ષની જાદરવા શુદ્ધિ દશમીના દિવસેં યથાશક્તિયેં ઉપવાસાદિક કરીને અંબિકા દેવી પાસેં સંગીતાદિકચી રાત્રિજાગરણ કરવું. નાલિયેર, કેરી, મોદકાદિક અંબાજી પાસેં ઢોકવાં, બીજે દિવસેં સાધર્મિકને જમાડી સાધુને દાન આપી પારણું કરે. અંબા દેવીને કંકુની પીલ કરવી, અંજન કરવું. તેમ પોતાનેપણ અંજન કરવું. અને રેશમી ચંરણીયો, કાંચલી, ચંડુત તથા ચઢુ દેવીને ચડાવીયેં, દીપક કરવા. તપ કરવું, તે દિવસેં બ્રહ્મચર્ય પાલવું. એમ દશ વર્ષ પર્યંત કરવું. તેમાં એટલું વિશેષ જે ફલાદિક પહેલા વર્ષે ચડાવીયેં, તે કરતાં બીજે વર્ષેં બમણાં, ત્રીજે વર્ષેં ત્રિગુણા એમ યાવત્ દશમે વર્ષેં દશ ગુણાં ઢોકવાં.

૮૨ હારતપઃ—પ્રથમ વે ઉપવાસ કરીને પઠી

एकाशनांतरित उपवास सात करवा, वली उपवास  
त्रण करीने फरी एकाशनांतरित उपवास सात करवा.  
प्रांते उपवास बे करवा. एवं तपोदिन एकवीश अने  
पारणां सत्तर थाय. उजमणे सुवर्ण, माणिक, मुक्ता  
फल, विडुम, रजत, चोखला, पदक काहलिका संयुत  
हार श्रीवर्द्धमानजिन आगल ढोकवो. अथवा टंका  
वली आनूपण श्री माहावीरने कंठें धरवुं.

૮૩ અષ્ટકર્મોત્તર પ્રકૃતિ તપઃ—આઠ કર્મમાં જ્ઞાના  
વરણીયની ઉત્તર પ્રકૃતિ પાંચ, દર્શનાવરણીયની નવ,  
વેદનીયની બે, મોહનીયની અઠાવીશ, આયુઃકર્મની  
ચાર, નામકર્મની એકશો ને ત્રણ, ગોત્રકર્મની બે, અંતરા  
યકર્મની પાંચ, સર્વ મલી ૧૫૮ પ્રકૃતિના ૧૫૮ ઉપવાસ  
एकाशनांतरें करवा. एटले एक उपवास पढी एक  
एकासणું એમ ૧૫૮ ઉપવાસેં એક ડંલી થાય. તેવી  
આઠ ડંલી કરવી. ઉજમણે એક શો અઘાવન્ન અઘાવન્ન  
વસ્તુ તથા ૧૫૮ મોદક ઢોકવા. જ્ઞાનની પૂજા કરવી,  
સાધુને દાન આપવું.

૮૪ કૃષ્ણ સંવત્સરી તપઃ—एकाशनांतरित ૩૬૦  
ઉપવાસ કરવા, ઉજમણે રૂપાનો ઘટ જોલડીના રસથી  
જરીને દેવ આગલ ઢોકવો. અંને મધ્યના બાવીશ તીર્થ  
કર આશ્રયી ૨૪૦ ઉપવાસ એકાશનાંતરિત કરવા.

૮૫ અષ્ટમાસિક તપઃ—એમાં એકાશનાંતરિત ૨૪૦  
ઉપવાસ કરવા, ઉજમણે ૨૪૦ મોદક ઢોકવા.

૮૬ ષટ્માસી તપઃ—एकाशनांतरित यथाशक्ते ૮૦

उपवास जेवी रीतें निर्वाह आय, तेवी रीतें करवा, उद्या पनने विषे १०० मोदक ढोकवा.

७७ क्षीरसमुद्रतपः—ए तप पर्युषण पहेलां आ दरीयें एकासणां आठ, उपर एक उपवास करवो. उज मणे खीर खांम अने घूतें जरेलो याल ढोकवो, सा धर्मिकनुं वात्सल्य, साधुने दान तथा ज्ञानपूजा करवी.

७८ सात सौख्य, आठ मोक्ष तपः—एकासणां सात करी उपर एक उपवास करीयें, उजमणे आठ मोदक अर्पण करवा. तेमां आठमो मोदक चतुर्गुणो करवो. शोल खाद्य ढोकवां, ज्ञानपूजा करवी.

७९ शत्रुंजय मोदक तपः—पुरीमट्ट, एकासणुं, नी बी, आयंबिल, उपवास, ए पांच वानां पांच दिवसें करी तप पूर्ण करीयें, उजमणे पांच मांणाना मोदक पांच मुद्रासहित देव आगल ढोकवा, ज्ञानपूजा करवी.

८० मतांतरें दश पञ्चस्काणतपः—एक उपवास, एकासणुं, एकलशीशुं, नीवी, एक कवल, एकलठाणुं, एक दित्ति, आयंबिल, एक घरुं, एक अलेवाडो नीवी, एम दश दिवस पर्यंत तप करवो उजमणे मोदक दश लावंवा, अष्ट प्रकारी पूजा करवी, ज्ञानपूजा करवी.

८१ स्वर्ग स्वस्तिक तपः—एमां चार एकासणां करी उपर एक उपवास करीयें. उजमणे पांच धान्यनो स्वस्तिक पूरवो, पांच धान्य मण मण लेवां. ज्ञान पूजा करी.

८२ मतांतरें घनतपः—द्विपर्यंत दिन बार, पारणां आठ सर्व दिन वीश. त्रिपर्यंत दिन चोपन, पारणां स

त्तावीश, सर्वदिन एकाशी. चतुःपर्यंत दिन १६०. पारणां ६४. सर्वदिन २२४. पंचपर्यंत घनतप दिन ३७५. पारणां १२५. सर्वदिन ५००. षट्पर्यंत दिन ७५६ ने पारणां २१६. सर्वदिन ९७२. पारणां नीविथी करवां.

ए३ मुकुटसप्तमी तपः—आपाठ वदि सातमने दिवसें प्रथम उपवास करी श्रीविमलनाथनी पूजा करवी. बीजो कार्तिक वदि सातमे उपवास करी श्री आदिनाथनी पूजा करवी. मागशिर वदि सातमे उपवास करी श्रीमहावीरनी पूजा करवी. पौष वदि सातमें उपवास करी श्रीपार्श्वनाथनी स्नात्रपूर्वक पूजा करवी. उजमणे लोकनालिनी पूजा करी उपर मुकुटस्थानें रहेला शिवक्षेत्रनी जिनावलीने सुवर्ण रत्नघडित मुकुट धराववो. जिनजिनप्रत्ये सात सात फोफल, तथा सात सात लाडु ढोकवा, गुरुनी पूजा करवी, तथा ज्ञानपूजा करवी.

ए४ अंबिका तपः—पांच कृष्ण पंचमीयें श्रीनेमीश्वर पूजा पूर्वक अंबिकानी पूजा करी यथाशक्तियें एकाशनादिक तप करवुं. नैवेद्य तथा फल ढोकवां. उजमणे साधुने नवां वस्त्र, अन्न, पान, आपी प्रति लाजवा. अंबानी मूर्ति बे पुत्र सहित तथा आभ्रवृक्ष सहित कराववी. पढी तेनुं पूजन करवुं.

ए५ श्रुतदेवता तपः—शुक्लपक्षनी एकादशीने दिवसें उपवास करवो. एवी अगीयार एकादशी पर्यंत करवो. जे दिवसें तप करवुं, ते दिवसें मौन रहेवुं.



શ્રુતદેવતાની પૂજા કરવી. ઝજમણે પૂજા પરિધાયનિ  
કા કરવી. પોતાને ઘેર શ્રુતદેવતાની મૂર્તિ પ્રતિષ્ઠિત  
કરીને પૂજવી, ઠ વિગય ઢોકવાં.

૯૬ માણિક પ્રસ્તારિકા તપઃ—આશોશુદિ અગીયા  
રજોં ઉપવાસ, બારજોં એકાસણું, તેરજોં નીવી, ચૌદજોં  
આયંબિલ, પૂનમેં ઉપવાસ કરવો. એ પ્રથમરીતિ કહી.  
હવે બીજી રીતિ કહે છે. આશોશુદિ બારજોં આયંબિલ,  
તેરજોં દિવસેં નીવી, ચૌદજોં એકાસણું અને પૂર્ણિ  
માયેં પણ એકાસણું કરવું. તે પૂનમને દિવસેં પ્રજાતેં  
સૂર્યોદય થયા પહેલાં પ્રાતઃકાલમાં સ્નાન કરીને  
પોતાના હાથના ઘોંઘામાં જૂષણ, એક નાલિયેર,  
અદ્ધત લડને મહોત્સવ પૂર્વક જિનપ્રાસાદને વિષે  
પ્રથમ પ્રદક્ષિણા કરીને જિનવરપાસેં ઘોંઘામાં રહેલી  
સર્વવસ્તુ ઢોકવી. બીજી પ્રદક્ષિણામાં બીજોરું ઢોકવું,  
ત્રીજી પ્રદક્ષિણામાં સપત્ર પૂગીફલ ઢોકવું. ચોથી પ્ર  
દક્ષિણામાં ઠકમ્મો ઢોકવો. સાત ધાન્ય ઢોકવાં. તથા  
લવણ, કાપડ, કુસુંબ, કપાસ, સુંહાલી ૧૦૮, બેહેડું  
એક, એકશો શોલ દીવા કરવા. જમણે રૂપાદું કોડિયું  
અને સોનાની વાટ કરાવવી.

૯૭ ગણધર તપઃ—શ્રીવર્ધ્ધમાન જિનના ગૌતમ પ્ર  
મુખ અગીયાર ગણધરને અગીયાર ઉપવાસ અથવા  
અગીયાર આયંબિલેં કરી આરાધવા. ઝજમણે ગુરુને  
અગીયાર વેશ આપવા. સંઘપૂજા કરવી.

૯૮ પદ્મોત્તરતપઃ—નવ કમલ એટલે પદ્મ છે. તે એ

केक पद्मे आठ आठ उपवास करवा. उजमणे आठ दलनुं सुवर्ण कमल करा. तेनी उपरें गौतमस्वामी आ लेखीने देव आगल मूक्या. ज्ञानपूजा करवी.

एए अंगविमोहित तपः—आयंबिल त्रण, नीवी त्रण, एकासणां त्रण अने उपवास एक करवा. उजमणे तेर मोदक पुस्तक आगल ढोकवा.

१०० आगमोक्त केवल तपः—आयंबिल दश अ ने उपवास एक करवा. उजमणे मोदक अंगीयार, नाजीयर अंगीयार, तथा कापडुं एक, ए सर्व पुस्तक आगल ढोकवां. श्रीजिननी अष्टप्रकारी पूजा करवी.

१०१ रत्नरोहण तपः—एकाशन एक, नीवी एक, आयंबिल एक, उपवास एक, ए प्रथम उंली, पढी नीवी, आयंबिल, उपवास अने एकाशन. ए बीजी उंली. पढी आयंबिल, उपवास, एकासन, नीवी, ए त्रीजी उंली. पढी उपवास, एकासन, नीवी, आयंबिल, ए चोथी उंली अऽ. अने प्रांतें ठेहली एक उपवास, एक विकृति एकासन, एक नीवीता रहित नीवी, एक आयंबिल, ए पांचमी उंलीयें तप पूर्ण थ या पढी उजमणे रत्नमय नोकरवाली पांच, रत्नमय स्थापनाचार्य पांच, रत्नमय बिंब पांच, मोदक बीश, एटलां वानां पुस्तक आगल ढोकवां. ए तप करवाने दिवमें ब्रह्मचर्यसहित ज्ञान, दर्शने अने चारित्रनुं आराधन करवुं. पारणाने विपे गुरुनी अंगपूजा य आशक्तियें करवी. तथा अष्टप्रकारी पूजा करवी. ए

तप करवाथी संतानप्राप्ति, निर्मलनेत्र अने तप कर नारनी स्त्रीने गर्जस्त्राव थाय नहिं ए तप त्रण वर्ष प र्थत करवुं. एनो आरंज आशो शुदि पंचमीथी करवो.

१०२ सिद्धिवधूकंठानरण तपः—प्रथम बे उपवास, पढी एक, त्रण, एक, बे, एम नव उपवास करी उजमणे नव मुक्ताफल ढोकवां. ज्ञानजक्ति करवी.

१०३ पदकडी तपः—प्रथम एक उपवास, पढी बे उपवास, पढी एक उपवास. एव चार उपवास करी उजमणे मोती अने परवालां ढोकवां.

१०४ ठठ तपः—ठठ २२ए करवां तेवारे ४५७ .उ पवास थाय उजमणे ४५७ मोदक ढोकवा.

१०५ कल्याणिक तपः—जिन जन्मकल्याणकथी आरंजीने एकांतरादि उपवास तेम दीक्षादिकल्याणकें पण करीयें. जेम ठेहलो उपवास कल्याणक तिथियें आवे. तेम करीयें. उजमणे थाल चोवीश, पहेरामणी चोवीश, नहुण चोवीश, तिलक चोवीश ढोकवां.

१०६ मेरु कल्याणक तपः—श्रीआदीश्वरनुं. एमां ठ उपवास एवी रीतें करीयें, के जे वर्षे मेरुकल्याणक करीयें, ते वर्षे प्रथम तो लागठ त्रण तेलां करीयें, अ ने पारणे पारणे बियासणुं करीयें. पढी वली लागठ एकांतरें उपवास ठ करीयें. जो त्रण तेलां पहेलां करी शके नही, तो पहेलां बे तेलां करीने पढी मेरु कल्याणक महाशुदि मध्ये त्रीजुं तेलुं तेहीज वर्षे करे.

१०७ कमलनी उली तपः—एकांतरें आठ उपवा

सनी एक उली एवी नव उलि एकज वर्षमां करवी. उ जमणे रूपानां तथा सोनानां नव नव कमल ढोइयें.

१०८ अशोकवृद्ध तपः—आशो मासें उपवास पन्नर एकासणां पन्नर करीयें. उजमणे अशोकवृद्ध करावीयें.

१०९ चांडायण तपः—शुक्ल पडवाथी आरंजीने दिन पन्नर सीम एकेक उपवास अने एकेक आयंबिल करीयें. उजमणे लाडु पन्नर तथा रूपानो चंड आपीयें.

११० सूरायण तपः—रुष्ण पडवाथी आरंजीने दिन पन्नर लगें एकेक उपवास अने एकेक आयंबिल करीयें. उजमणे लाडु पन्नर तथा रूपानो सूर्य आपीयें.

१११ तीर्थकर श्रीवर्द्धमान तपः—पहेला तीर्थकरनुं आयंबिल अथवा नीवी एक करवी. एम बीजा तीर्थकरनी बे करवी. एम अनुक्रमें वधारतां चोवीश मांनी चोवीश नीवी करवी. फरी पाठा वलतां चोवीश मांनी एक करवी, तो पार्श्वनाथनी बे करवी. एम उत्क्रष्ट में वधारतां वधारतां यावत् प्रथम तीर्थकरनी चोवीश करवी. अने ते ते दिवसोमां ते ते तीर्थकरोनी विशेष पूजा करीयें, एम ठसो नीवी अथवा आयंबिल थाय.

११२ लहू नमस्कार जाप विधि कहियें ठैयें. पूर्वे अष्टप्रकारी पूजा करीने देव वांदिने जिननी पासें पंच परमेष्ठिनां गुणणां गुणवानो प्रारंज करवो, प्रथमपद जप पूर्ण थाय, त्यारें चंदननुं तिलक नगावानने करवुं, द्वितीय पदने विषे पुष्पमाला, तृतीयपदने विषे कपूरनी पूजा करवी. चतुर्थ पदने विषे अद्भुत ढोकवा.

पंचमपदने विषै धूप धाणुं करवुं. नमस्कार पूरा थाय  
त्यारें जगवानने तिलक करवुं. एम ज्यारें हजार जप सं  
पूर्ण थाय, त्यारें शक्रस्तव पूर्वक अर्द्धत नैवेद्यादिक दान  
करवुं. एम पञ्चीश सहस्र पूर्ण थये ठते साधु संविनाग  
अने साधर्मिक नक्ति करवी. एम नूमिशयन एकाशन  
पञ्चस्काण त्रिविधाहार, ब्रह्मचर्य पालन पूर्वक लक्ष्म  
जप करवो, अने ज्यारें सहस्र जप थाय, त्यारें नालि  
येर जगवान पासें ढोकवुं. अर्द्धत दान वगेरें करवुं,  
साहामिवाह्व्य तथा जागरण करवुं.

११३ अष्टापद पाहुडी तपः—आशोशुदि आठमथी  
पूर्णिमा पर्यंत ते आठ दिवससुधी एकाशनादिक तप  
करवुं. उजमणे पूजा करवी. नैवेद्य ढोकवां.

११४ जैनजनक तपः—निरंतर आयंबिल बत्रीश  
करवां, उजमणे जिनपूजा करवी.

११५ निगोदरस तपः—प्रथम एक उपवासने एका  
सणुं, पढी बे उपवासने एकासणुं, पढी त्रण उपवा  
सने एकासणुं, फरी बे उपवास ने एकासणुं, वली  
एक उपवास ने एकासणुं उजमणे चौद मांदक आप  
वा. एथी निगोदायु ह्य थाय ॥

११६ अष्टमी तपः—आठम आठमने दिवसें उप  
वास अथवा आयंबिल करी आराधीयें, उजमणे दूधें  
नरेला कलशनी उपर धोलुं वस्त्र ढांकी ते उपर साक  
रना महोटा मोदक आठ तेने ज्ञानोपकरण सहित  
कर्मह्य निमित्तें प्रतिमा वा पुस्तक आगल ढोकवा.

११७ मोक्ष करंम तपः—उपवास, आर्यंबिल, नीवी, एकासणं, पुरिमट्ट, ए एक उली अइ. एवी पांच उली करतां पच्चीश दिवसें ए तप पूर्ण थाय.

११८ स्वर्ग करंम तपः—एकासणां बार, नीवी नव, आर्यंबिल पांच, उपवास एक एवं २७ दिवसें पूर्ण थाय.

११९ सौजाग्य सुंदर तपः—एक उपवास अने एक आर्यंबिल एम वत्रीश दिवस करवाथी तप पूर्ण थाय.

१२० चतुःषष्टि तपः—एक एकासण, एक आर्यंबिल, एम वत्रीश दिवस करवां, एकासणें फासु पाणी त्रिविहार पञ्चस्काण करवुं ॥

१२१ जडादि प्रतिमा तपः—जइ प्रतिमा तपमां वे उपवास करीयें, अने महाजइ प्रतिमामां चार उपवास करीयें, सर्वतो जइ प्रतिमाभां दश उपवास करीयें.

१२२ अष्टाहिका तपः—एमां एकेक जिन आश्रयी पांच कल्याणिक आदें देइ चालीश चालीश एकासणां करतां चोवीश जिननां ए६० एकासणां थाय, उजमणे पक्कान्न चोवीश, तिलक चोवीश, ढो कवा. अने संघ पूजा करवी.

१२३ ठनुजिन तपः—एमां अतीत, अनागत अने वर्त्तमान मली त्रण चोवीश, तथा सीमंधरादिक वीश विचरता जिन अने श्रीरूपज्ञानन, चंडानन, वर्द्धमान तथा वारीपेण ए चार शाश्वतजिन मली ठनु जिन आश्रयी एकेक उपवास वखतने अनुकूले तूटा तूटा करतां ठनुं उपवासें तप पूर्ण थाय.

### અથાજનવ્યકુલકં પ્રારન્યતે

જે અજનવ્ય જીવ હોય, તે નીચેં લખેલાં સ્થાનક  
ક્યારેં પણ ફરસે નહીં તેનાં નામ કહે છે.

૪ ઇંડ્રપણું તથા પાંચ અનુત્તર વિમાનનું દેવપણું.  
ત્રેશઠ શિલાકા પુરુષની પદવી તથા નવ નારદ પણું

૬ કેવલી જગવાન તથા ગણધરજીને હાથે દીક્ષા.

૭ શ્રીતીર્થંકરજી વરસી દાન આપે તે દાન ન પામે.

૧૩ શ્રીજિનશાસનના અથવા પ્રવચનના અધિ  
ષ્ઠાધિક જે દેવ દેવીયો છે, તેની પદવી. તથા નવ લો  
કાંતિક દેવપણું અને દેવનું સ્વામીપણું તથા તૈંત્રીશ  
ગુરુ સ્થાનકીયાનું દેવપણું વલી પન્નર જાતિના પર  
માધામિ પણું, અને યુગલિક મનુષ્યપણું એ સર્વ ન પામે.

૨૨ સંનિન્નશ્રોત્રલબ્ધિ તથા પૂર્વધરની લબ્ધિ  
તથા આહારકલબ્ધિ તથા પુલાક લબ્ધિ. તથા મતિ  
જ્ઞાન, શ્રુતજ્ઞાનાદિકની લબ્ધિ ન પામે.

૨૯ જાવસહિત સુપાત્રને દાન આપવા પણું તથા  
સમાધિપણે મરણ અને વિદ્યાચારણ તથા જંઘાચાર  
ણની લબ્ધિ, મધુરાસવ, સ્વીરાસવ લબ્ધિ, તથા અઢી  
ણમહાણસી ગોતમજી જેવી લબ્ધિ ન પામે.

૩૧ શ્રીતીર્થંકર તથા તીર્થંકરની પ્રતિમા સંબંધિ  
શરીરના જોગાદિકના કારણમાં પણ નાવે જો પૃથ્વી  
કાયાદિકપણના જાવ પામે તોપણ તીર્થંકરના શરી  
રાદિપણુ ન પામે અથવા જોગમાં નાવે.

૩૨ ચક્રવર્તિના ચૌદરત્ન પણું ન પામે.

३३ विमाननुं स्वामिपणुं न पामे.

३६ समकित,सम्यक्ज्ञान तथासम्यक् चारित्रपणुं.

३७ तपादिक गुणना बाह्यान्त्यंतर जाव तेने न पामे

३९ अनुजवसहित गुणगुणीनी जावसहित जक्ति.

४१ श्रीजिनाज्ञा पूर्वक सम्मान धर्मीनी तथा श्री  
संघनी वात्सल्य सेवा जक्ति सहाय साधी शके नही.

४३ संसार दुःखनी खाण ठे, एवो संविज्ञ पणा  
नो जाव नही थाय. तथा शुक्लपद्मीयो न थाय.

४९ श्रीतीर्थकरना पितापणे, मातापणे, स्त्रीपणे,  
यद्द यद्दणी पणे न थाय, तथा युग प्रधान न थाय.

५१ आचार्य, उपाध्याय, साधु, चतुर्विध श्रीसंघ,  
थविर, कुल,गण,ए दशनो विनय न करे, तथा ए दशनुं  
परमार्थ उत्कृष्ट गुणें अधिक पणुं न पामे.

५३ अनुबंधहिंसा, हेतुहिंसा अने स्वरूपहिंसा  
एज त्रण प्रकारें वली अहिंसा श्रीतीर्थकरें कही ठे, ते  
त्रणे प्रकारनी अहिंसाने इव्यथी तथा जावथी एवा  
वे प्रकारें अजव्य जीव न पामे. ए सर्व वात अजव्य  
कुलक उपरंथी लखी ठे ॥ इति अजव्य कुलकं समाप्तम्॥

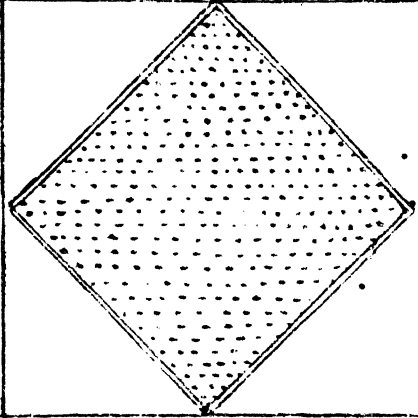
॥ इति श्री जैनप्रबोध पुस्तकस्य

प्रथमजागः समाप्तः ॥

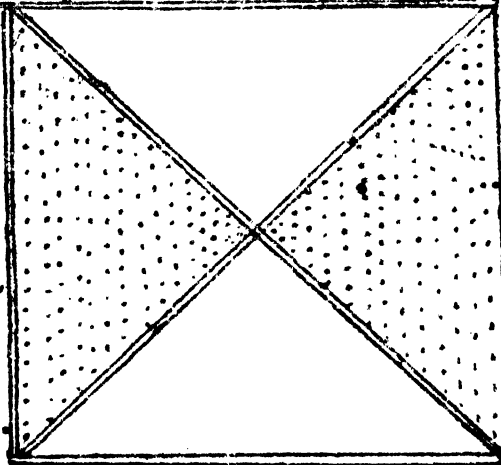








वहू मध्यचंद्रप्रतिभासप्रतिपदि ।  
 पारनेकदलपततएकैकदाया  
 अमावास्याकवलततः शुक्लप



तिमदि २ ए वञ्जवउहुइयांमवल  
२ ए वञ्जिमायांमिपनामः यवद्वारग  
हुइ २७

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

[illegible]

(७५२)

सप्तसप्तमीयातपसितपोदिन  
१०८ पारणादध एव सर्वसं  
संख्या ॥ २४५ ॥

॥ अष्ट अष्टमीयातपसितपोदि  
न १०८ पारणादध एव सर्वसं  
ख्या ॥ ३५२ ॥

|   |   |   |   |   |   |   |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ |

|   |   |   |   |   |   |   |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ |

महासप्ततपःयंत्रस्थापना ॥

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८

|   |   |   |   |   |   |   |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ |
| ४ | ५ | ६ | ७ | १ | २ | ३ |
| ७ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ |
| ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | १ | २ |
| ६ | ७ | १ | २ | ३ | ४ | ५ |
| २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | १ |
| ५ | ६ | ७ | १ | २ | ३ | ४ |

२ १ १ १ १ १ १ १

हारतपोदिन २२ पारणा १०

२ १ १ १ १ १ १ १

नवनवमीयातप पाठ्य ६०

|   |   |   |   |   |   |   |   |   |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ |

सप्ततपोदिन ७५ पारणा

|   |   |   |   |   |
|---|---|---|---|---|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ |
| ३ | ४ | ५ | १ | २ |
| ५ | १ | २ | ३ | ४ |
| २ | ३ | ४ | ५ | १ |
| ४ | ५ | १ | २ | ३ |

तपोदिन ४०५ पारणादध सर्वसंख्या

(७५३)

दशदशमीयातके दिन ५५० वा १००  
सर्वदिन ६५०

॥ सर्वतोन्नतपोदिन  
३९२ पारणा ४९५ म-४४९

|   |   |   |   |   |   |   |   |   |    |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० |

|    |    |    |    |    |    |    |
|----|----|----|----|----|----|----|
| ५  | ६  | ७  | ८  | ९  | १० | ११ |
| ६  | ७  | ८  | ९  | १० | ११ | ५  |
| ११ | ५  | ६  | ७  | ८  | ९  | १० |
| ७  | ८  | ९  | १० | ११ | ५  | ६  |
| १० | ११ | ५  | ६  | ७  | ८  | ९  |
| ६  | ७  | ८  | ९  | १० | ११ | ५  |
| ९  | १० | ११ | ५  | ६  | ७  | ८  |

अथाहरेकोटी सहित तपः ॥ ११ ॥ प्रातकोटी सहित तपः ॥ ३॥

कवल १ एका १ कवल १  
कवल २ एका १ कवल २  
कवल ३ एका १ कवल ३  
कवल ४ एका १ कवल ४  
कवल ५ एका १ कवल ५  
कवल ६ एका १ कवल ६  
कवल ७ एका १ कवल ७  
कवल ८ एका १ कवल ८

कवल १७ अंबिल १ कवल १७  
कवल १८ अंबिल १ कवल १८  
कवल १९ अंबिल १ कवल १९  
कवल २० अंबिल १ कवल २०  
कवल २१ अंबिल १ कवल २१  
कवल २२ अंबिल १ कवल २२  
कवल २३ अंबिल १ कवल २३  
कवल २४ अंबिल १ कवल २४

दशमीकोटी सहित तपः ॥ २॥

किंदूनानकोटी सहित तपः ॥ ३॥

कवल ९ नीवी १ कवल ९  
कवल १० नीवी १ कवल १०  
कवल ११ नीवी १ कवल ११  
कवल १२ नीवी १ कवल १२  
कवल १३ नीवी १ कवल १३  
कवल १४ नीवी १ कवल १४  
कवल १५ नीवी १ कवल १५  
कवल १६ नीवी १ कवल १६

कवल २५ उपवास १ कवल २५  
कवल २६ उपवास १ कवल २६  
कवल २७ उपवास १ कवल २७  
कवल २८ उपवास १ कवल २८  
कवल २९ उपवास १ कवल २९  
कवल ३० उपवास १ कवल ३०  
कवल ३१ उपवास १ कवल ३१  
कवल ३२ उपवास १ कवल ३२

(RHE)

॥ षट् प्रयंतितपादि यंत्रस्थापना ॥ तयोदिन ७५६ पार  
णा २१६ उन्नयं वर्ष २ मास ८ दिन १२ ॥ सर्वदि ९७५

|   |   |   |   |   |   |
|---|---|---|---|---|---|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ |
| २ | ३ | ४ | ५ | ६ | १ |
| ३ | ४ | ५ | ६ | १ | २ |
| ४ | ५ | ६ | १ | २ | ३ |
| ५ | ६ | १ | २ | ३ | ४ |
| ६ | १ | २ | ३ | ४ | ५ |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ |
| २ | ३ | ४ | ५ | ६ | १ |
| ३ | ४ | ५ | ६ | १ | २ |
| ४ | ५ | ६ | १ | २ | ३ |
| ५ | ६ | १ | २ | ३ | ४ |
| ६ | १ | २ | ३ | ४ | ५ |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ |
| २ | ३ | ४ | ५ | ६ | १ |
| ३ | ४ | ५ | ६ | १ | २ |
| ४ | ५ | ६ | १ | २ | ३ |
| ५ | ६ | १ | २ | ३ | ४ |
| ६ | १ | २ | ३ | ४ | ५ |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ |
| २ | ३ | ४ | ५ | ६ | १ |
| ३ | ४ | ५ | ६ | १ | २ |
| ४ | ५ | ६ | १ | २ | ३ |
| ५ | ६ | १ | २ | ३ | ४ |
| ६ | १ | २ | ३ | ४ | ५ |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ |
| २ | ३ | ४ | ५ | ६ | १ |

॥ अंबिनवर्द्धमानतपः अंबिन १ उपवास २ अंबिन २ उपवास ३  
अंबिन ४ उपवास ५ एवं तादृह्यितं यथा वत् अंबिन ६ उपवास ७  
एवं अंबिन ८ उपवास ९ एवं तादृह्यितं यथा वत् अंबिन १० उपवास ११  
मनः कलाय जगतां दशदिशा ॥

व

बत्रीसकल्याणकेतयेदिन३८ पणणां  
३४ एवंदिनमर्क७२॥

|   |   |   |       |   |   |   |
|---|---|---|-------|---|---|---|
| ३ | २ | २ | २     | २ | २ | २ |
| २ | २ | २ | २     | २ | २ | २ |
| २ | २ | २ | श्रीः | २ | २ | २ |
| २ | २ | २ | २     | २ | २ | २ |
| २ | २ | २ | २     | २ | २ | ३ |

[illegible]



